ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह



शंकरदानजी नाहटा

(ग्रन्थ प्रकाशक)



परम सहृदय, उदार एवं धर्मनिष्ठ

पूज्य ज्येष्ठ भ्राताजी

श्रीमान् दानमलजी नाहटा

की

स्वर्गस्थ आत्माको

सादर समर्पित ।

—शङ्करदान नाहटा

(ग्रंथ प्रकाशक)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह 

खरतरगच्छ पट्टावली

(जसलमेर भाण्डागारीय सं० ११?
लि० ताड़पत्रीय प्रतिका द्वितीय पृष्ठ)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

प्राक्कथन

जैनोंका प्राचीन इतिहास अस्तव्यस्त बिखरा हुआ है। ताम्रपत्र और शिलालेखोंके अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत और लोकभाषाके काव्योंमें भी प्रचुर इतिहाससामग्री उपलब्ध होती है, उन सबको संग्रहकर प्रकाशित करना नितान्त आवश्यक है। आर्य्यसंस्कृतिमें गुरुका पद बहुत ऊंचा माना गया है उनकी भक्तिका महात्म्य अतिविशाल है। धर्माचार्य्योंका इतिवृत्ति या जीवनचरित्र उनके भक्त शिष्यगुणानुवादरूप काव्योंमें लिखा करते हैं, ऐसे काव्य जैन-साहित्यमें हजारोंकी संख्यामें हैं परन्तु खेद है कि शोधके अभावसे अधिकांश (अमुद्रित काव्य) प्राचीन ज्ञानभण्डारोंमें पडे-पडे नष्ट हो रहे हैं और अद्यावधि जैसा चाहिए वैसा इस दिशामें प्रयत्न हुआ ज्ञात नहीं होता।

अद्यावधि प्रकाशित ऐ० काव्यसंग्रह

ऐतिहासिक भाषा काव्योंके संग्रहरूपसे अद्यावधि प्रकाशित ग्रन्थ हमारे समक्ष केवल ७ ही हैं। जिनमें "ऐतिहासिक राससंग्रह" नामक ४ भाग और "ऐतिहासिक सज्झायमाला भा० १" श्रीविजयधर्मसूरिजी और उनके शिष्य श्री विद्याविजयजी सम्पादित एवं श्री जिनविजयजी सम्पादित "जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय" और मोहनलाल दलीचन्द देसाई B A L L B संशोधित "जैन ऐतिहासिक रासमाला" नामसे प्रकाशित हुए हैं।

जेसलमेरु थुंभ जाणियइ, प्रगट प्रभाव पुहवि माणीयइ ।
दरसण दीठइ अति उछाह, समरणि सवि टालइ दुखदाह ॥९॥
खास सास जर पमुहज रोग, नाम लियइ नवि आए सोग ।
अधिक प्रताप सलहियइ आज, जो प्रणमइ तसु सारइ काज ॥१०॥
थाल विसाल थापना करी, निरमल नेवज आगलि धरी ।
केसरि चन्दन पूज रसाल, विरची चाढइ कुसमह माल ॥११॥
मृगमद मेलि अगर घनसार, भोग ऊगाहउ अतिहि उदार ।
करि साथियउ अखंड तंदु लइ, सुगुणगान कीजइ तिह वलइ ॥१२॥
चित्त तणी सहि चिंता टलइ, मनह मनोरथ ततखिण फलइ ।
खरतरगणगयणिहि ससि समउ, भाविकलोक करिजोड़ी नमउ ॥१३॥
गुरु श्रीदेवतिलक उवझाय, प्रणम्यइ बाधइ सुह समवाय ।
अरि करि केसरि विसहर चोर, समर्यउ असिव निवारइ घोर ॥१४॥
ए चउपई सदा जे गुणइ, उठि प्रभाति सुगुरु गुण थुणइ ।
कहइ "पदममंदिर" मनशुद्धि, तसु थाए सुख संपति रिद्धि ॥१५॥



इनके अतिरिक्त कई ऐतिहासिक काव्य स्वतन्त्र-ग्रन्थ[1] रूपमें[2] मासिकपत्रोंमें और कतिपय उनके रास-संग्रहोंमें भी प्रकाशित हुए हैं।

ऐसे रास अभी तक बहुत अधिक प्रमाणमें अप्रकाशित हैं उन्हें शीघ्र प्रकाशित करना आवश्यक है जिससे ऐतिहासिक क्षेत्रमें नया प्रकाश पडे। आचार्यों एवं विद्वानोंके अतिरिक्त कतिपय सुश्रावकोंके ऐ० काव्य भी उपरोक्त संग्रहोंमें प्रकाशित हुए हैं। तीर्थोंके सम्बन्धमें भी ऐसे अनेकों काव्य उपलब्ध हैं जिनका संग्रह भी मुनिराज श्रीविद्याविजयजी सम्पादित "प्राचीन तीर्थमाला" और "पाटणचैत्य परिपाटी" आदि पुस्तकोंमें छपा है एवं "जैनयुग" के अंकोंमें भी कई स्थानोंको चैत्यपरिपाटियाँ और तीर्थमालाएं प्रकाशित हुई हैं। हमारे संग्रहमें भी ऐसे अप्रकाशित अनेकों ऐतिहासिक काव्य हैं जिन्हें यथावकाश प्रकाशित किया जायगा।

आवश्यकीय स्पष्टीकरण

प्रस्तुत संग्रहमें अधिकांश काव्य खरतरगच्छीय ही हैं, इससे कोई यह समझनेकी भूल न कर बैठे कि सम्पादकोंको अन्यगच्छीय काव्य प्रकाशित करना इष्ट नहीं था। हमने तपागच्छीय खोज-शोधप्रेमी विद्वान् मुनिवर्योंको तपागच्छीय अप्रकाशित काव्य भेजनेको विज्ञप्ति भी की थी, पर खेद है कि किसीकी ओरसे कोई सामग्री नहीं मिली। तब यथोपलब्ध सामग्रीको ही प्रकाशित करना पडा।

१ यशोविजयरास, कल्याणसागरसूरिरास, देवविलास। २ जैनयुगके अङ्कोंमें। ३ प्राचीन गूर्जरकाव्यसंग्रहमें, रास संग्रहमें।

युगप्रधान जिनचन्द्र सूरिजीको हस्तलिपि

(सं० १६११ लि० कर्मस्तव वृत्तिका अन्तिम पत्र

राजपूताना प्रान्त बीकानेरमें विशेषकर खरतरगच्छका ही प्रचार और प्रभाव रहा है। अतएव हमें अधिकांश काव्य इसी गच्छके प्राप्त हुए हैं। तपागच्छीय काव्य एकमात्र "श्रीविजयसिंह सूरि विजयप्रकाश रास" उपलब्ध हुआ था वह और तत्पश्चात् उपाध्यायजी श्रीसुखसागरजी महाराजने पालीतानेसे "शिवचूला गणिनी विज्ञप्तिगीत" भेजा था उन दोनोंको भी प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित कर दिया है। हमारे संग्रहमें कतिपय पार्श्वचंद्रगच्छीय ऐ० काव्य हैं, जिन्हें प्रकाशनार्थं मुनिवर्य्य जगत्चंद्रजी कनकचंद्रजीने नकल करली है अतः हमने इस संग्रहमें देना अनावश्यक समझा।

प्रस्तुत ग्रन्थमें अधिकांश खरतरगच्छीय भिन्न-भिन्न शाखाओंके काव्योंका संग्रह है, एकही ग्रन्थमें एक विषयकी प्रचुर सामग्री मिलनेसे इतिहास लेखकको सामग्री जुटानेमें समय और परिश्रमकी बडी भारी बचत होती है। इस विशेषताकी ओर लक्ष्य देकर हमने अद्यावधि उपलब्ध सारे खरतरगच्छीय ऐ० काव्य प्रस्तुत संग्रहमें प्रकाशित कर दिये हैं, जिससे प्रत्युत विषयमें यह ग्रन्थ पूर्ण सहायक हो गया है। मूल पुस्तक छप जानेके पश्चात् श्रीजिनकुशलसूरि कृत श्रीजिनचन्द्रसूरि चतुःसप्ततिका और श्रीसूरचन्द्रगणि कृत श्रीजिनसिंहसूरिरास उपलब्ध हुए हैं, ग्रन्थके बडे हो जानेके कारण उनको मूल प्रकाशित न करके ऐतिहासिकसार यथास्थान दे दिया है। संग्रहकी दृष्टिसे और शुद्ध प्रतियें मिल जानेसे पाठान्तर भेद सहित कतिपय अन्यत्र प्रकाशित काव्य भी इस ग्रन्थमें प्रकाशित किये हैं।*

* देखें प्रति परिचय।

ढाल १ (पुरन्दरनी चौपाइनी)

'मरुधर' देसि मझार 'मेडतो' सहर भलोरी ।
'आसकरण' 'ओसवाल', 'चोपड़ा' वंश तिलोरी ॥ १ ॥
पद ठवणो करि पूज्य, अवसर एह लही री ।
खरचे द्रव्य अनेक, सुकृत ठाम सही री ॥ २ ॥
सूरि मंत्र लह्यो शुद्ध, सद्गुरु तेणि समे री ।
श्री 'जिनसागर सूरि' इन्द्रिय पाच दमे री ॥ ३ ॥
मोटो साधु महन्त, करणी कठिन करे री ।
श्री 'जिनसिंह' के पाट, खरतर गच्छ खरेरी ॥ ४ ॥
पालि पंच आचार, तारण तरण तरी री ।
पंच सुमति प्रतिपाल, खप संयम की खरी री ॥ ५ ॥
पृथिवी करिय पवित्र, साथि साधु भला री ।
अप्रतिबद्ध विहार, दिन दिन अधिक कला री ॥ ६ ॥
'चौरासी गच्छ' माहि, जाकी शोभ भली री ।
चतुर्विध संघ सनूर, संपद गच्छ मिली री ॥ ७ ॥

ढाल २ (मनड़ो मान्यो रे गौड़ी पासजी रे)

मनडुं रे मोह्यु माहरुं पूजजी रे, श्री 'जिनसागर सूरि' ।
वड़ भागी भट्टारक ए भला जी, दिन दिन गच्छ पडूरि ॥ १ ॥
सखर गीतारथ साधु भला भलाजी, मानइ मानइ पूज्य नी आण ।
'समयसुन्दर' जी,पाठक परगड़ाजी, पाठक 'पुण्य प्रधान' रे ॥ २ ॥

कई महत्वपूर्ण त्रुटक और अपूर्ण कृतियां१ थी जो हमें उपलब्ध हुईं प्रकाशित कर दी गई हैं, यदि किसी सज्जनको उनकी पूर्ण प्रतियां मिले तो हमें अवश्य सूचित करें।

ऐ० काव्योंकी प्रचुरता

जैसलमेर भण्डारकी सूची २ से ज्ञात होता है कि वहां भी एक त्रु० प्रति ३ में श्रीजिनपतिसूरि, जिनवल्लभसूरिके अपभ्रंश भाषामें वर्णन, जिनप्रबोध मुनिवर्णन, जिनकुशलसूरि वर्णन (प्रति नं० ५२२ में) शेप श्रीजिनपतिसूरि स्तूपकलश (नं० २५८ के अन्तमें) और श्रीजिनलब्धिसूरि गुरुगीत (पत्र २ नं० १५८६ में) विद्यमान हैं, परन्तु अद्यावधि हमें ये उपलब्ध नहीं हुए, सम्भव है कि कुछ कृतियां वेही हों जो इस ग्रन्थमें प्रकाशित हैं*।

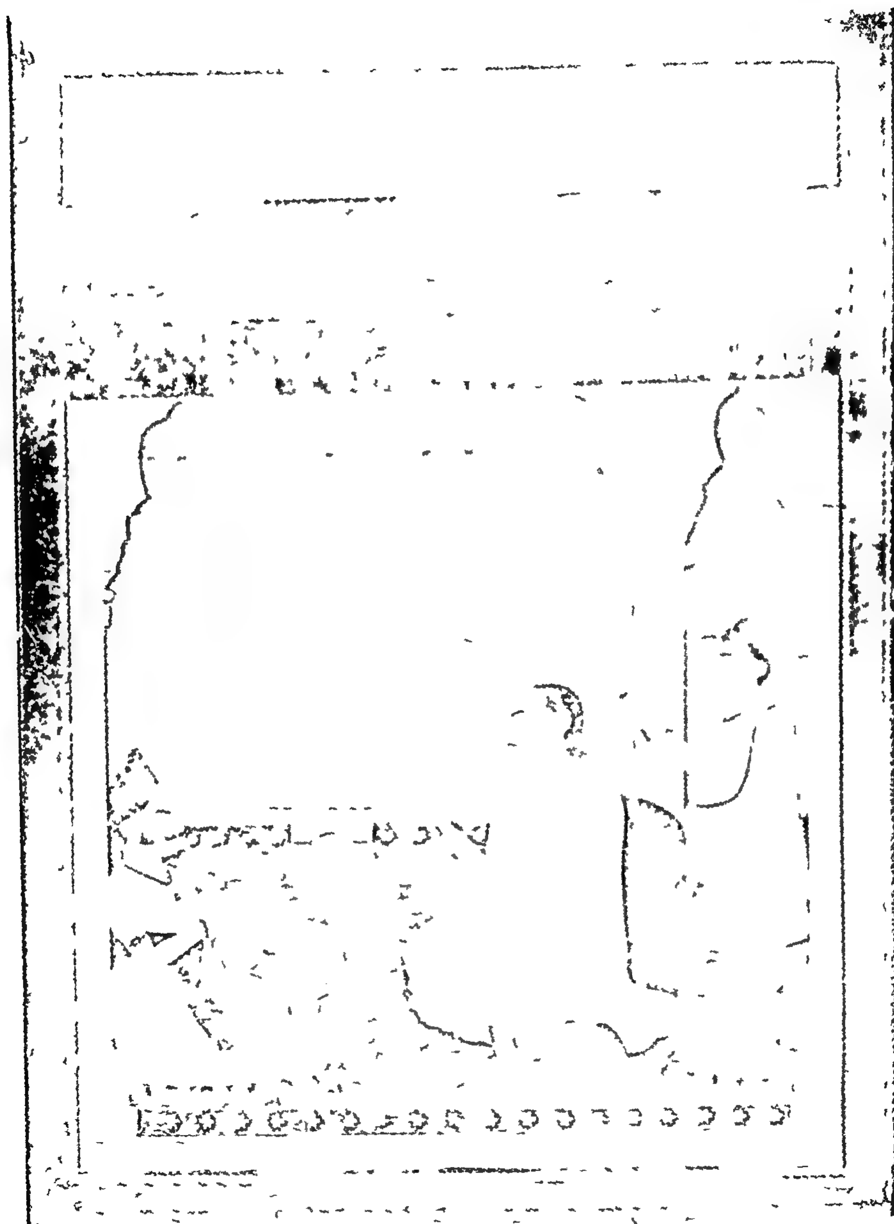
खरतरगच्छका काव्य साहित्य बहुत विशाल है। अपनी-अपनी शाखाका साहित्य उनके श्रीपूज्योंके पास है आचपक्षीय

१ श्रीजिनराजसूरिरास आदिकी गा० ९ (पृ० १५०), श्रीजिनदत्तसूरि छप्पय आदि अन्त विहीन (पृ० ३७३), श्रीकीर्तिरत्नसूरिफाग आदिकी गा० २७ (पृ० ४०१), श्रीजिनचन्द्रसूरिगीत अपूर्ण (पृ० १०१), विद्यासिद्धिगीत आदि त्रुटक (पृ० २१४)।

२ जेसलमेरके यतिवर्य लक्ष्मीचंदजी प्रेपित।

३ खरतरगच्छके आचार्योंके ऐतिहासिक गुण वर्णनात्मक काव्योंकी अन्य एक महत्वपूर्ण प्रति अजीमगंजके भंडारमें थी, पर खेद है कि बहुत खोजनेपर भी वह उपलब्ध नहीं हुई।

* देखें "जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास" पृ० ९३७ से ९४६।



श्री जिनसुखसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

(पाली), लघु आचार्य, मावदर्शी और लखनऊ वालोंके पास खरतरगच्छका बहुतसा ऐतिहासिक साहित्य प्राप्त होनेकी सम्भावना है।

हमारे संग्रहमें इधरमें और भी कई ऐतिहासिक काव्य उपलब्ध हुए हैं जो यथावकाश प्रकट किये जायँगे।

प्रस्तुत ग्रन्थकी उपयोगिता।

यह ग्रन्थ दृष्टिकोणद्वयसे विशेष उपयोगी है। एक तो ऐतिहासिक और दूसरा भाषासाहित्य। कतिपय साधारण काव्योंके अतिरिक्त प्राय सभी काव्य ऐतिहासिक दृष्टिसे संग्रह किये हैं, गुण वर्णनात्मक अनेक गीत, गहूलियें, अष्टक प्रभृति हमारे संग्रहमें है, परन्तु उनमेंसे ऐतिहासिक काव्योंको ही चुन चुनकर प्रस्तुत संग्रहमें स्थान दिया गया है। अद्यावधि प्रकाशित संग्रहोंसे भाषा साहित्यकी दृष्टिसे यह संग्रह सर्वाधिक उपयोगी है, क्योंकि इसमें बारहवी शताब्दीसे लेकर बीसवीं शताब्दी तक लगभग ८०० वर्षोंके, प्रत्येक शताब्दीके थोडे बहुत काव्य अवश्य संग्रहीत हैं।* जिनसे भाषाविज्ञानके अभ्यासियोंको शताब्दीवार भाषाओंके अतिरिक्त कई प्रान्तीय भाषाओंका भी अच्छा ज्ञान हो सकता है। कतिपय काव्य हिन्दी, कई राजस्थानी और कुछ गुजराती प्रभृति हैं। अपभ्रंश भाषाके लिये तो यह संग्रह विशेष महत्वका ही है, किन्तु नमूनेके तौरपर कुछ संस्कृत और प्राकृतके काव्य भी दे दिये गये है।

काव्यकी दृष्टिसे जिनेश्वरसूरि, जिनोदयसूरि, जिनकुशलसूरि, जिनपतिसूरि, जिनराजसूरि, विजयसिंहसूरि आदिके रास, विवाहला

* शताब्दीवार काव्योंका संक्षिप्त वर्गीकरण अन्य स्थानमें मुद्रित है।

चउदसमइ 'जिनपद्म सूरिस', 'लब्धि सूरि' 'जिनचंद' मुणीश ।
सतर(स)मइ 'जिनोदय' सूरि, श्री 'जिनराज सूरि' गुण भूरि ।११।
पाटि प्रभाकर मुकुट समान, श्री 'जिनवर्द्धन सूरि' सुजाण ।
शीलइ सुदरसण जंबू कुमार, जसु महिमा नवि लाभइ पार ॥१२॥
श्री 'जिनचंद सूरि' वीसमइ, समता समर (स) इंद्री दमइ ।
वंदो श्री 'जिनसागर सूरि', जास पसाइ विघन सवि दूरि ॥१३॥
चउरासी प्रतिष्टा कीद्ध, 'अहमदावाद' थूभ सुप्रसिद्ध ।
तासु पदइ 'जिनसुंदर सूरि', श्री 'जिनहर्ष सूरि' सुख पूरि ॥१४॥
पंचवीस मइ 'जिनचंद्र सूरिंद', तेज करि नइ जाणइ चंद ।
श्री 'जिनशील सूरि' भावइ नमो, संकट विकट थकी उपसमउ ॥१५॥
श्री 'जिनकीर्त्ति' सूरि सुरीश, जग थलउ जसु करइ प्रशंस ।
श्री 'जिनसिंह' सूरि तसु पट्टइ भणुं, धन आवइ समरंता घणुं ॥१६॥
वर्त्तमान वंदो गुरुपाय, श्री 'जिनचंद' सूरिसर राय ।
जिन शासन उदयउ ए भाण, वादी भंजण सिंह समाण ॥१७॥
ए खरतर गुरु पट्टावली, कोधी चउपइ मन नी रली ।
ओगणत्रीश ए गुरुना नाम, लेतो मनवंछित थाये काम ॥१८॥
प्रह उठी नरनारी जेह, भणइ गुणइ रिद्धि पामइ तेह ।
'राजसुंदर' मुनिवर इम भणइ, संघ सहु नइ आणंद करइ ॥१९॥

इति श्री गुरु पट्टावली चउपइ समाप्त ॥ श्रा० कीइाइ पठनार्थे ॥ मो० द० दे० ॥

यह पट्टावली श्री जिनचंदके शिष्य पं० राजसुंदरने देवकुल पाटनमे सं० १६६६ वैशाख वदि ६ सोम श्रा० थोभणदे के लिये लिखी है। (देवकुलपाटक तृतीयावृत्ति पृ० १६)

बडे सुन्दर और अलङ्कारिक भाषामे है। जिनको पढ़नेसे प्राचीन काव्योंके सृजन, सौष्ठव, सुन्दर शब्द-विन्यास और फबती हुई उपमाओके साथ साथ अनेक शब्दोंका अनुभव होता है।

इस संग्रहमे प्रकाशित प्राय सभी काव्य समसामयिक लिपिबद्ध प्रतियोसे ही सम्पादित किये गये है। इसका विशेष स्पष्टीकरण प्रति-परिचयमे कर दिया गया है।

शृङ्खलामें अव्यवस्थाका कारण

लगभग २॥ वर्ष पूर्व जब इस ग्रन्थको छपाना प्रारम्भ किया था तब जितने काव्य हमारे पास थे, सबको रचनाकालकी शृङ्खलानुसार ही प्रकाशित करना प्रारम्भ किया था, परन्तु उसके पश्चात् ज्यों-ज्यों नवीन सामग्री मिलती गई त्यों-त्यों इससे शामिल करते गये। अतः जैसा चाहिये काव्योंका अनुक्रम ठीक न रह सका। फिर भी हमने पीछेसे ग्रन्थको चार विभागोंमे विभक्त कर चतुर्थ विभाग-मे अवशेष प्राचीन काव्योंको दे दिया है। रचना समयकी अपेक्षासे काव्य जिस शृङ्खलासे सम्पादन होने चाहिये उनकी स्वतन्त्र तालिका दे दी है, ताकि पाठकोंको शताब्दीवार भाषाओंका अभ्यास करनेमें सुगमता और अनुकूलता मिले। ऐतिहासिक सार-लेखन (शाखा वार) क्रमिक पद्धतिसे ही हुआ है।

प्रस्तुत ग्रन्थको सर्वाङ्ग सुन्दर और विशेष उपयोगी बनानेका भरसक प्रयत्न किया गया है। जो लोग प्राचीन राजस्थानी और अपभ्रंश भाषासे अनभिज्ञ हों उनके लिये "कठिन शब्दकोश" और शृङ्खलाबद्ध ऐतिहासिकसार दे दिया है। इसके अतिरिक्त स्थान-

'गुण विजय' कहइ श्री'सिद्धगिरि', ध्यान धरत गत पाप।
बलवन्त वडो जिहा धणी, 'बाहुबलि' नु बाप ॥ २६ ॥
जे नर घरि बइठा करइ, श्रीशत्रुंजय जाप।
'गुणविजय' कहइ तेहना टलइ, सहस पल्योपम पाप ॥ ३० ॥
'गुणविजय' कहइ सेत्रुंज तणी, आगइ मोटो मर्म।
लाख पल्योपम संचिया, टलइ निकाचित कर्म ॥ ३१ ॥
'गुणविजय' कहइ 'विमलाचलि', पंचकोडि परिवार।
चैत्री दिन केवल लहइ, 'पुण्डरीक' गणधार ॥३२॥
'गुणविजय' कहइ जग मा वडा, 'शत्रुंजय' 'गिरिनारि'।
एक गिरि 'आदिसर' चढ्यइ, इक गिरि 'नेमि' कुमार ॥ ३३ ॥

ढाल राग सामेरी

'शत्रुंजय' जिनवर वंदइ, गुरुजी निज पाप निकंदइ।
दुइ 'दीव' करी चोमास, पूरी 'सोरठनी' आस ॥ ३४ ॥
'हीरजी' नी परि पूजाणो, तिहा 'तप गच्छ' केरो राणउ।
'गिरनार' देखी(दु.ख) मेटइ, राजलि (धि?) राजा जिन भेटइ ॥३५॥
वलि 'नवइ नगरि' गुरु आवइ, सामहिआं संघ करावइ।
जामी दुइ सहस वखाणी, इक साम्हेलि खरचाणी ॥ ३६ ॥
तिहा थी वलि (चलि?) पूज्य पधारइ,' शत्रुंजय' देव जुहारइ।
'खंभाइति' अति उल्लासि, तिहा थी आव्या चउमासइ ॥ ३७ ॥
तिहा त्रिण प्रतिष्ठा सार, रुपइआ चउद हजार।
खरच्या 'खंभाइत' माहि, श्रीसंघ अधिक उछाहि ॥ ३८ ॥

स्थानपर प्राचीन सुन्दर चित्र, विशेष नाम सूची, अनेक आवश्यक बातोका स्पष्टीकरण (प्रति परिचय, कवि परिचय, चित्र परिचय आदि) कर दिया गया है।

अशुद्धियोका आधिक्य

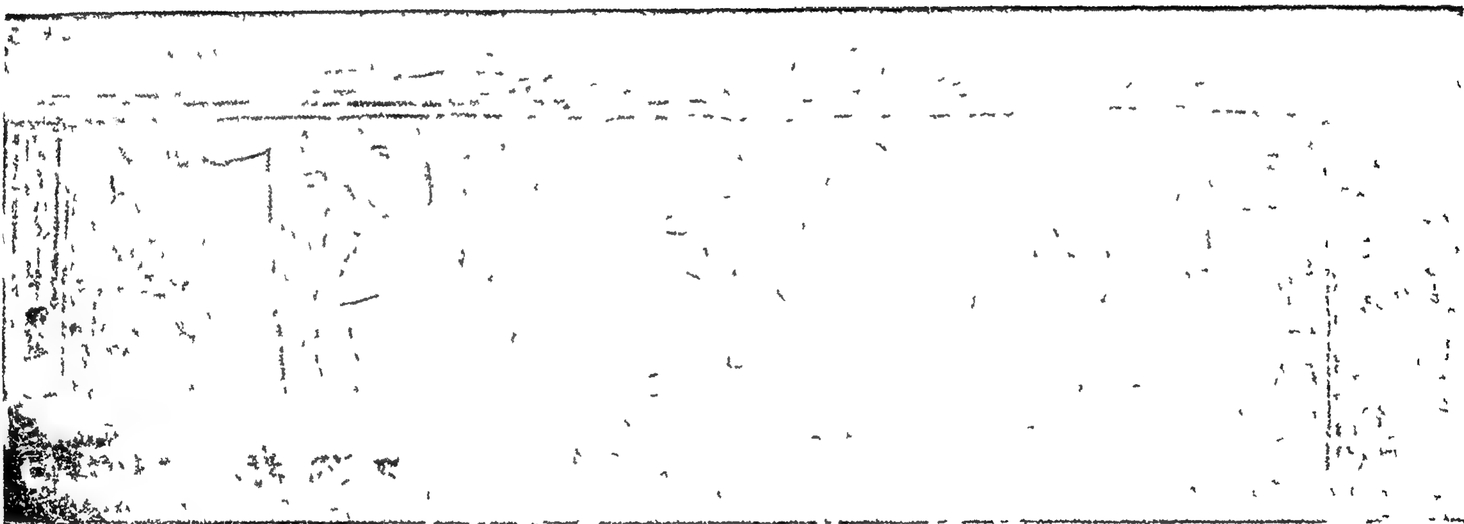
काव्योको यथाशक्ति सशोधन पूर्वक प्रकाशित करनेपर भी इस ग्रन्थमे अशुद्धियोका आधिक्य है। इसका प्रधान कारण अधिकाश काव्योकी एक-एक प्रतिका ही उपलब्ध होना है। जिनकी एकसे अधिक प्रतिये प्राप्त हुई हैं वे पाठान्तर भेदोके साथ साथ प्राय शुद्ध ही छपे हैं। खेद है कि कतिपय अशुद्धिया प्रेस दोष और दृष्टि दोषसे भी रह गयी हैं। शुद्धिपत्र पीछे दे दिया गया है, पाठकोसे अनुरोध है कि उससे सुधारकर पढे। अधिकाश शुद्धिपत्र जालोरसे पुरातत्त्व-वेत्ता मुनिराज श्री कल्याणविजयजीने बनाकर भेजा था। अतएव हम पूज्यश्रीके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते है।

रास सार

काव्योका ऐतिहासिक सार अति सक्षिप्त और सारगर्भित लिखा गया है। पहले हमारा यह विचार था कि काव्यीके अतिरिक्त इतर सामग्रीका सम्पूर्ण उपयोग कर सार-परिचय विस्तृत लिखा जाय, परन्तु ग्रन्थ बहुत बडा हो जानेके कारण ऐसा न करके सक्षेपसे ही लिखना पडा।

अयोग्यता

यह ग्रन्थ किसी विद्वानके सम्पादकत्वमे प्रकट होता तो विशेष



विद्वत् शिरोमणि जिन वल्लभसूरिजी

(जैसलमेर भाण्डागारीय प्राचीन ताड-
पत्रीय प्रतिके काष्टफलक पर चित्रित)

सुन्दर होता, क्योंकि हमारेमें एतद् विषयक ज्ञान और अनुभवका अभाव है, परन्तु अनुभवी विद्वानका सहयोग प्राप्त न होनेपर हमने अपनी अत्यधिक साहित्यरुचि और अदम्य उत्साहसे प्रेरित हो यथासाध्य सम्पादन किया है। इस कार्यमें हमें कहां तक सफलता मिली है, यह निर्णय विद्वान पाठकों पर ही निर्भर है। हम विद्वान नहीं है, अभ्यासी हैं, अत भूलोंका होना अनिवार्य है। अतएव अनुभवी विद्वानोंसे योग्य सूचना चाहते हुए क्षमा प्रार्थना करते हैं।

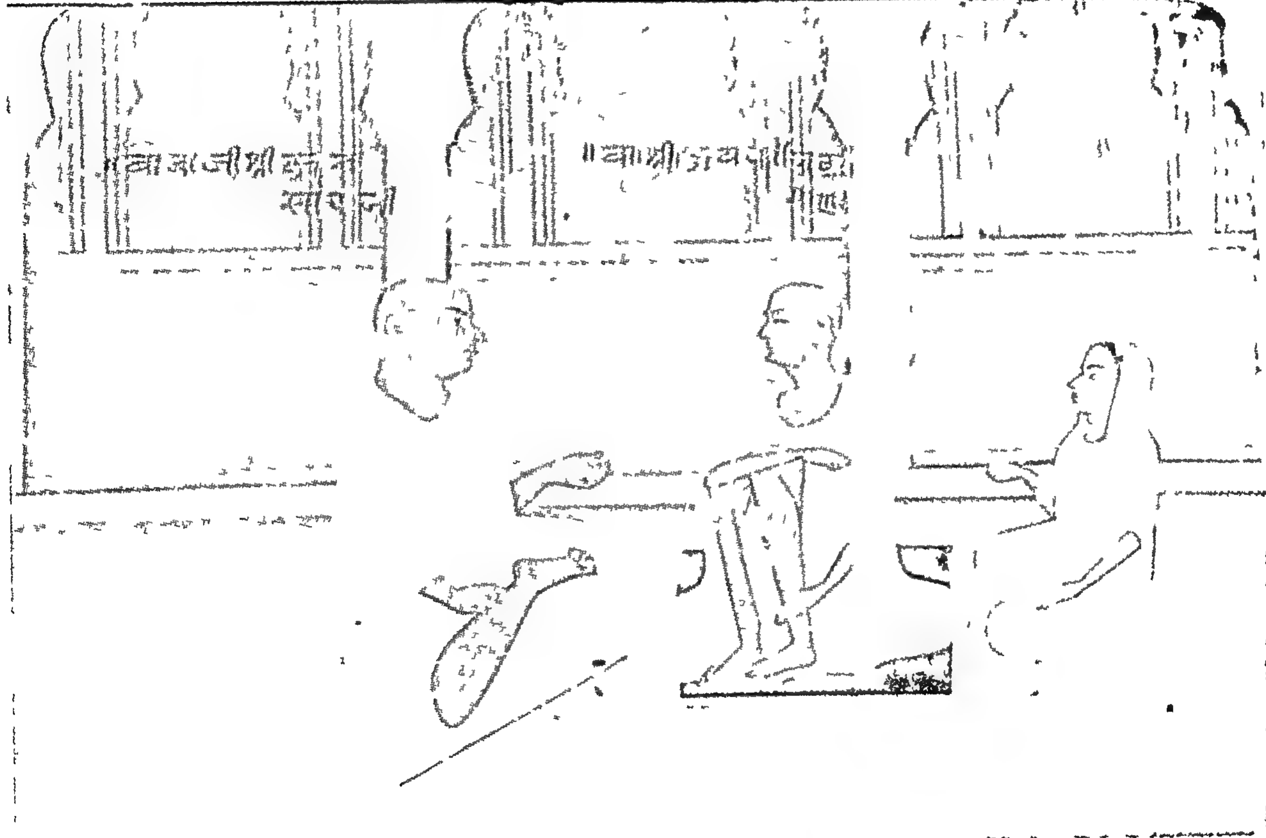
प्रकाशनमें विलम्ब

प्रस्तुत ग्रंथका "युगप्रधान जिनचंद्रसूरि" ग्रंथके साथ ही मुद्रण प्रारम्भ हुआ था परन्तु हमारे व्यापारिक कार्योंमें व्यस्त रहने व अन्यान्य असुविधाओंके कारण प्रकाशनमें विलम्ब हुआ है। अपने व्यवसायिक कार्योंसे समय कम मिलनेसे हम इसका सम्पादन मनोज्ञ और सुचारु नहीं कर सके। यदि इसकी द्वितीयावृत्तिका अवसर मिला तो ग्रंथकी सुसम्पादित व्यवस्थित आवृत्ति की जायगी।

आभार प्रदर्शन

इसकी प्रस्तावना श्रीयुक्त हीरालालजी जैन M.A L L B (प्रोफेसर एडवर्ड कालेज, अमरावती) महोदयने लिख भेजनेकी कृपा की है, अतएव हम आपके विशेष आभारी है।

इस ग्रन्थके "कठिन शब्द कोष" का निर्माण करनेमें माननीय ठाकुर साहेब रामसिंहजी M A विशारद और स्वामी नरोत्तम दासजी M A विशारदसे पूर्ण सहायता मिली है। सोलहवीं शताब्दी-के पहलेके काव्योंका अन्तिम प्रूफ संशोधन श्रीमान् पं० हरगोविन्द



मस्तयोगी ज्ञानसारजी व वाचक जयकीर्तिजी
(मूल चित्र—श्रीजिन कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भंडार-बीकानेर)

दासजी सेठ "न्याय व्याकरणतीर्थ" ने कर देनेकी कृपा की है। श्रीयुत मिश्रीलालजी पालरचा महोदयसे भी हमें संशोधनमें पूर्ण सहायता मिली है। श्रीयुत मोहनलाल दलीचन्द देसाई B A L L B (वकील हाईकोर्ट, बम्बई) ने भी समय समयपर सत्परामर्श द्वारा सहायता पहुचाइ हैं। इसी प्रकार कतिपय काव्य उ० सुखसागरजी, मुनिवर्य रत्नमुनिजी, लब्धिमुनिजी एवं जैसलमेरवाले यतिवर्य लक्ष्मीचन्दजीने और कतिपय चित्र-ब्लाक विजयसिंहजी नाहर, साराभाइ नवाब, मुनि पुण्यविजयजी आदिकी कृपासे प्राप्त हुए हैं, एतदर्थ उन सभी, जिनके द्वारा यत्किञ्चित भी सहायता मिली हो, सहायक पूज्यों व मित्रोंके चिर कृतज्ञ है।

निवेदक—

अगरचन्द नाहटा,

भवरलाल नाहटा।



छउा	३७७	छटा, छांटा
छप्पा	३५२	षट्पद, छप्पय
छयल	१५०,३५०	रसिक
छलियइ	३७९	छलना
छविह	२४	छ प्रकार
छातिया	१०४	छाती, वक्षस्थल
ज		
जइणा	२४	यतना
जईसर	३१२	यतीश्वर
जईसू	१६	यतीश
जउस	८२	आनंद, विश्राम
जगत्र	३१८	जगत
जगीश	८२,१०७,४१०	इच्छा
जत्थ	२४	जहाँ
जमाडि	२८९	जिमाकर
जम्पइ	१६३, ३३९	कहता है
जम्बुय	३४	गीदड
जम्मक्खणि	३४	जन्मक्षण
जम्मु	२३	जन्म
जयतसिरी	१०९	रागका नाम
जयपत्तु	२	जयपत्र
जसु	३६९	जिसका
जाइगा	३७६	जगह
जागरि	१९३	जागरण
जान	४१२	बरात
जानउत्र	३८०	बरात
जानह	३८०	बरातको
जामणहि	३१	यामिनी (रात्रि) में
जालवइण	११३	जलाना
जालवीजइ	३९३	सुरक्षित रखना सम्भालना
जिउ	३७०	जिसके
जिणवर	३६९	जिनवर
जिणवइ	२९	जिनपति
जिणिंदु	३६६	जिनेश्वर देव
जीपइ	३५२	जीतता है
जीह	२९८	जिह्वा
जुग पवरु	३	युग प्रवर
जुग पहाणु	२२	युगप्रधान
जुगवर	२४	युगमेंश्रेष्ठउत्तम
जैत्र	९७	जय सूचक
जोइणि	२	योगिनी
जोडली	३६२	युगल, जोड़ी
ज्ञ		
ज्ञानावरणी	३२३	कर्मका नाम, ज्ञानको आवरण करनेवाला
झड़हड	३६९	गिरना झडना
झाह्वो	३३०	झांकी, आभास
झाझेरड़ा	१२०,३२६	अधिक, विशेष
झाडाया (ला)	१००	छुड़ाया
झाण	१	ध्यान
झायहु	३८९	ध्यावो
झालर	३११	झालर, वस्त्र विशेष
झाला	३०२	जाति विशेष

काव्यरचनाकालका संक्षिप्त शताब्दी अनुक्रम*

१२ वींका शेषार्द्ध।

कवि पाल्ह कृत खरतर पट्टावली (पृष्ठ ३६५ से ३६८)।

१३ वींका शेषार्द्ध।

जिनवल्लभसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३६६ से ३७२),

जिनपतिसूरिधवल गीतादि (पृष्ठ ६ से १०)।

१४ वींका पूर्वार्द्ध।

जिनेश्वरसूरिरास (पृष्ठ ३७७ से ३८३), गुरुगुणषट्पद (पृष्ठ १ से ३)।

शेषार्द्ध :

जिनकुशलसूरिरास (पृष्ठ १५ से १८), जिनपद्मसूरिरास (पृष्ठ २० से २३), जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरिगीत (पृष्ठ ११ से १४)।

१५ वींका पूर्वार्द्ध।

जिनोदयसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३६ से ४०), जिनोदयसूरि रासद्वय (पृ० ३८४ से ३८६), जिनप्रभसूरि गुर्वावली (पृ० ४१-४२)।

शेषार्द्ध :

खरतरगुरुगुणछप्पय (पृ० २४ से ३८), खरतरगच्छगुर्वावली (पृ० ४३ से ४८), कीर्तिरत्नसूरि फाग (पृ० ४०१-२),भाव-

* कई कृतियोंका रचनाकाल अनुमानिक है।

प्रभसूरिगीत (पृ० ४६ ५०), शिवचूला विज्ञप्ति (पृ० ३३६), वेगडपट्टावली (पृ० ३१२)।

१६ वींका पूर्वार्द्ध ।

क्षेमराजगीत (पृ० १३४)।

१६ वीं का शेषार्द्ध—

जिनदत्त स्तुति (पृ० ४), जिनचद्र अष्टक (पृ० ५), कीर्त्तिरत्नसूरि चौ० (पृ० ५१), जिनहससूरि गीत (पृ० ५३), क्षेमहस कृत गुर्वावली (पृ० २१५ से २१७)

१७ वीं का पूर्वार्द्ध—

देवतिलकोपाध्याय चौ० (पृ० ५५), भावहर्ष गीत (पृ० १३५), पुण्यसागर गीत (पृ० ६७), पुण्यवाहण गीतादि (पृ० ८६, ६४ ११० से ११७), जयतपदवेलि आदि साधुकीर्त्ति गीत (पृ० ३७ से ४५), खरतर गुर्वावलि (पृ० २१८ से २७), कीर्त्तिरत्न सूरि गीत (पृ० ४०३), दयातिलक (पृ० ४१६), यशकुशल, करमसी गीतादि (पृ० १८६, २०४), आदि।

शेषार्द्ध—

जिनचद्रसूरि, जिनसिंह, जिनराज, जिनसागर सूरि गीत रासादि (पृ० ५८ से १३२, १५० से २३०, ३३४, ४१७), खरतर गुर्वावलि (पृ० २२८), पि० खर० पट्टावली (पृ० ३१६), गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध (पृ० ४२३), विजयसिंह सूरि रास (पृ० ३४१), पद्महेम (पृ० ४२), समयसुन्दर गीत (पृ० १४६), छप्पय (पृ० ३७३ आदि।

१८ वीं का पूर्वार्द्ध—

जिनरंग (पृ० २३१), जिनरत्नसूरि (पृ० [illegible], ४१८), जिनचन्द्रसूरि गीत (पृ० [illegible]), जिनराजसूरि (पृ० ३१४), कीर्त्तिरत्न सूरि छन्द (पृ० ४०५), जिनचंद (पृ० २३०), जिनधर्म (पृ० ३३५), भावप्रमोद (पृ० २५८), गुणसागर (पृ० २५३), समयसुन्दर गीत (पृ० १४८) आदि।

शेषार्द्ध

जिनसुख-जिनहर्षसूरि (पृ० २६१ से २६३), शिवचंद्रसूरि रास (पृ० ३२१), जिनचन्द्र (पृ० ३३७), कीर्त्तिरत्न सूरि (पृ० ४१३) आदि।

१९ वीं का पूर्वार्द्ध

देवविलास (पृ० २६४ से २९२), जिनलाभ-जिनचंद्र (पृ० २९३ से २९९ तथा ४१४ से ४१६) जयमाणिक्य छंद (पृ० ३१०) आदि।

शेषार्द्ध

जिनहर्ष, जिनसौभाग्य, जिनमहेन्द्रसूरि गीत (पृ० ३०० से ३०४), ज्ञानसार (पृ० ४३३) आदि।



ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

—की—

प्रस्तावना

जैन-धर्म भारतवर्षका एक प्राचीनतम धर्म है। इस धर्मके अनुयायियोंने दर्शन ज्ञान-विज्ञान, समाज, कला-कौशलआदि वैशिष्ट्यके विकासमें बड़ा भाग लिया है। मनुष्यमात्र, नहीं-नहीं प्राणीमात्रमें परमात्मतत्त्वकी योग्यता रखनेवाला जीव विद्यमान है। और प्रत्येक प्राणी, गिरते-उठते उसी परमात्मतत्वकी ओर अग्रसर हो रहा है। इस प्रकार सिद्धान्तपर इस धर्मका विश्वप्रेम और विश्वबन्धुत्व स्थिर है। भिन्न-भिन्न धर्मोंके विरोधी मतों और सिद्धान्तोंके बीच यह धर्म अपने स्याद्वाद नयके द्वारा सामञ्जस्य उपस्थित कर देता है। यह भौतिक और आध्यात्मिक उन्नतिमें सब जीवोंके समान अधिकारका पक्षपाती है तथा सांसारिक लाभोंके लिये कलह और विद्वेषको उसने पारलौकिक सुखकी श्रेष्ठता द्वारा मिटानेका प्रयत्न किया है।

जैन-धर्मकी यह विशेषता केवल सिद्धान्तोंमें ही सीमित नहीं रही। जैन आचार्योंने उच्च-नीच, जाति-पातका भेद न करके अपना उदार उपदेश सब मनुष्योंको सुनाया और 'अहिंसा परमो

धर्मः' के मन्त्र द्वारा उन्हें इतर प्राणियोंकी भी रक्षाके लिये तत्पर बना दिया। स्याद्वाद नयकी उदारता द्वारा जैनियोंने सभीकी सहानुभूति प्राप्त कर ली। अनेक राजाओं और सम्राटोंने इस धर्मको स्वीकार किया और उसकी उदार नीतिको व्यवहारसे उतारकर चरितार्थ कर दिखाया। इन्ही कारणोंसे अनेक संकट आनेपर भी यह धर्म आज भी प्रतिष्ठित है।

किन्तु दुखकी बात है कि धार्मिक विचारोंमे उदारता और धर्म प्रचारमे तत्परताके लिये जैनी कभी इतने प्रसिद्ध थे, वे ही आज इन बातोंमें सबसे अधिक पिछडे हुए हैं। विश्वभरमे बन्धुत्व और प्रेम स्थापित करनेका दावा रखनेवाले जैनी आज अपने ही समाजके भीतर प्रेम और मेल नहीं रख सकते। मनुष्यमात्रको अपनेमें मिलाकर मोक्षका मार्ग दिखानेवाले जैनी आज जात-पांतकी तंग कोठरियोंमें अलग-अलग बैठ गये है, एक दूसरेको अपनाना पाप समझते हैं। अन्य धर्मोंके विरोधोंको भी दूर कर उनमे सामञ्जस्य उपस्थित करनेवाले आज एक ही सिद्धान्तको मानते हुए भी छोटी-छोटी-सी बातोंमे परस्पर लड़-भिड़कर अपनी अपरिमित हानि कर रहे हैं।

ऐसी परिस्थितिमें यह स्वाभाविक है कि जैन-धर्मकी कुछ अनुपम निधिया भी दृष्टिके ओझल हो जावे और उनपर किसीका ध्यान न जावे। जैनियोंका प्राचीन साहित्य बहुत विशाल, अनेकांगपूर्ण ओर उत्तम है। दर्शन और सदाचारके अतिरिक्त, इतिहासकी दृष्टिसे भी जैन-साहित्य कम महत्वका नही है। भारतके न जाने

कितने अन्धकारपूर्ण ऐतिहासिक कालोपर जैन-कथा साहित्य, पट्टावलियों आदि द्वारा प्रकाश पडता है। लोक-प्रचारकी दृष्टिसे जैन-साहित्य कभी किसी एक ही भाषामें सीमित नहीं रहा। भिन्न-भिन्न समयकी, भिन्न-भिन्न प्रान्तकी भिन्न-भिन्न भाषाओं-में यह साहित्य खूब प्रचुर प्रमाणमें मिलता है। अर्धमागधी, शौर-सेनी, महाराष्ट्री आदि प्राकृत भाषाओंका जैसा सजीव और विशाल रूप जैन-साहित्यमें मिलता है वैसा अन्यत्र नहीं। किन्तु आज स्वयं जैनी भी इस बातको अच्छी तरह नहीं जानते कि उन-का साहित्य कितना महत्वपूर्ण है। उसका पठन-पाठन व परिशीलन उतना नहीं हो रहा है, जितना होना चाहिये। इस अज्ञान और उपेक्षाके फलस्वरूप उसका अधिकांश भाग अभीतक प्रकाशमें ही नहीं आया।

वर्तमान संग्रह जैन-गीति काव्यका है। इसमें सैकडों गीत-संग्रह हैं, जो किसी समय कहीं-कहीं अवश्य लोकप्रिय रहे हैं और शायद घर-घरमें या तीर्थ-यात्राओंके समय गाये जाते रहे हैं। विशेषता यह है कि इन गीतोंका विषय-शृङ्गार नहीं, भक्ति है, प्रिय-प्रेयसी-चिन्तन नहीं, महापुरुष-कीर्ति-स्मरण है और इसलिये पाप-बन्धका कारण नहीं, पुण्य-निबन्ध हेतु है। ये गीत भिन्न-भिन्न सरस मनोहर राग-रागणियोंके रसास्वादके साथ-साथ परमार्थ और सदाचारमें मनकी गतिको ले जानेवाले हैं। इस संग्रहको सम्पादकोंने 'ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह' नाम दिया है, जो सर्वथा सार्थक है, क्योंकि इन गीतोंमें जिन सत्पुरुषोंका स्मरण किया गया

हैं, वे सब ऐतिहासिक हैं। जो घटनायें वर्णन की गयी हैं, वे सत्य हैं और हमारी ऐतिहासिक दृष्टिसे भी नापकी हैं। इन गुरुओं और मुनियोंने समय-समयपर जो धर्म प्रभावना की, राजाओं-महाराजाओं और सम्राटोंपर अपने धर्मकी उपासनाकी धाक बढ़ायी और समाजके लिये अनेक धार्मिक अधिकार प्राप्त किये उनके उल्लेख इन गीतोंमें पद-पदपर मिलते हैं। विशेष ध्यान देने योग्य वे उल्लेख हैं, जिनमें मुसलमानी बादशाहोंपर प्रभाव पड़नेकी बात कही गयी है। उदाहरणार्थ

जिनप्रभसूरिके विषयमें कहा गया है कि उन्होंने अश्वपति (असपति) कुतुबुद्दीनके चित्तको प्रसन्न किया था। कुतुबुद्दीनने उनसे जैन-शासनके विषयमें अनेक प्रश्न किये थे और फिर सन्तुष्ट होकर सुल्तानने गाँव और हाथियोंकी भेंट देकर उनका सम्मान करना चाहा था, पर सूरिजीने इन्हें स्वीकार नहीं किया। (पृष्ठ १२, पद्य ४, ५)।

इन्हीं सूरीश्वरने संवत् १३८५ (ईस्वी सन् १३२८) की पौष सुदी ८ शनिवारको दिल्लीमें अश्वपति मुहम्मद शाहसे भेंट की थी। सुल्तानने इन्हें अपने समीप आसन दिया और नमस्कार किया। इन्होंने अपने व्याख्यान द्वारा सुल्तानका मन मोह लिया। सुल्तानने भी ग्राम, हाथी, घोड़े व धन तथा यथेच्छ वस्तु देकर सूरीश्वरका सम्मान करना चाहा, पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया। सुल्तानने उनकी बड़ी भक्ति की, फरमान निकाला और जलूस निकाला तथा 'वसति' निर्माण कराई। (पृ० १३, पद्य २-६) ऐसे ही उल्लेख पृ० १४ पद्य २, व पृ० १६ पद्य ६, ७ में भी है।

उपर्युक्त दोनो बादशाह खिलजी वंशका कुतुबुद्दीन मुबारिकशाह और तुगलक वंशका मुहम्मद तुगलक होना चाहिये। जो क्रमश सन् १३१६ और १३२५ ईस्वीमे गद्दीपर बैठे थे। इसी समयके बीच खिलजी वंशका पतन और तुगलक वंशका उत्थान हुआ था। सूरीश्वरके प्रभावसे दोनो राजवंशोमे जैन-धर्मकी प्रभावना रही।

एक दूसरे गीतमे उल्लेख है कि जिनदत्तसूरिने बादशाह सिक-न्दरशाहको अपनी करामात दिखाई और ५०० बन्दियोको मुक्त कराया (पृ० ५४, पद्य ११ आदि)। ये सम्भवत बहलोल लोधीके उत्तराधिकारी पुत्र सिकन्दरशाह लोधी थे, जो सन् १४८६ ईस्वीमे दिल्लीके तख्तपर बैठे और जिन्होने पहले-पहल आगराको राजधानी बनाया।

श्री जिनचद्रसूरिके दर्शनकी सुप्रसिद्ध मुगल-सम्राट् अकबरको बडी अभिलाषा हुई। उन्होने सूरीश्वरको गुजरातसे बडे आग्रह और सन्मानसे बुलवाया। सूरिजीने आकर उन्हे उपदेश दिया और सम्राट्ने उनकी बडी आव भगत की। (पृ० ५८) यह रास संवत् १६२८ मे अहमदाबादमे लिखा गया।

बादशाह सलेमशाह 'दरसणिया' दीवानपर बहुत कुपित हो गये थे, तब फिर इन्हीं सूरीश्वरने गुजरातसे आकर बादशाह-का क्रोध शान्त कराया और धर्मकी महिमा बढाई। (पृ० ८१-८२) ये सूरीश्वर मुलतान भी गये और वहाके खान मलिकने उनका बडा सत्कार किया (पृ० ६६, पद्य ४)

इस प्रकारके अनेक उल्लेख इन गीतोंमें पाये जाते हैं, जो इतिहासके लिये बहुत ही उपयोगी हैं।

पर इससे भी अधिक महत्व इस संग्रहका भाषाकी दृष्टिसे है। इन कविताओंसे हिन्दीकी उत्पत्ति और क्रमविकासके इतिहासमे बहुत बडी सहायता मिल सकती है। इसमे बारहवीं-तेरहवीं शताब्दिसे लगाकर उन्नीसवी सदीतक अर्थात् सात-आठ सौ वर्ष की रचनाये है, जो भिन्न-भिन्न समयके व्याकरणके रूपोंपर प्रकाश डालती है। प्राचीन हिन्दी साहित्य अभीतक बहुत कम प्रकाशित हुआ है। हिन्दीकी उत्पत्ति अपभ्रंश भाषासे मानी जाती है। इस अपभ्रंश भाषाका अबसे बीस वर्ष पूर्व कोई साहित्य ही उपलब्ध नही था। जब सन् १९१४ में जर्मनीके सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० हर्मन याकोबी इस देशमें आये, तब उन्होंने इस भाषाके ग्रंथ प्राप्त करनेका बहुत प्रयत्न किया। सुदैवसे उन्हे एक पूर्ण स्वतन्त्र ग्रन्थ मिल गया। वह था 'भविसत्तकहा' (भविष्यदत्त कथा), जिसको उन्होंने बड़े परिश्रमसे सम्पादित करके १९१८ में जर्मनीमें ही छपाया। उसके पठन-पाठनसे हिन्दी और गुजराती आदि प्रचलित भाषाओंके पूर्व इतिहासपर बहुत कुछ प्रकाश पड़ा। यही एक स्वतंत्र और पूर्ण ग्रन्थ इस भाषाके प्रचारमे आ सका था। सन् १९२४ मे मुझे मध्यप्रान्तीय संस्कृत प्राकृत और हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची तैयार करनेके सम्बन्धमें बरार प्रांतान्तर्गत कारंजाके दिगम्बर जैनशास्त्र भण्डारोंको देखनेका अवसर मिला। यहा मुझे अपभ्रंश भाषा के लगभग एक दर्जन ग्रंथ बड़े और छोटे देखने

को मिले, जिनका सविस्तर वर्णन अवतरणों सहित मैंने उस सूची मे दिया जो Catalogue of Sanskrit and Prakrit MSS in C P & Berar के नाम से सन् १९२६ मे मध्य प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रकाशित हुई। उस परिचय से विद्वत् ससार की दृष्टि इस साहित्य की ओर विशेष रूपसे आकर्षित हुई। इससे प्रोत्साहित होकर मैने इस साहित्यको प्रकाशित करने तथा और साहित्यकी खोज लगानेका खूब प्रयत्न किया। हर्षका विषय है कि उस प्रयत्नके फलस्वरूप कारंजा जैन सीरीज द्वारा इस साहित्यके अब तक पाच ग्रथ दशवी ग्यारहवीं शताब्दिके बने हुए उत्तम रीतिसे प्रकाशित हो चुके हैं। तथा जयपुर, दिल्ली, आगरा, जसवतनगर आदि स्थानोके शास्त्र-भण्डारोंसे इसी अपभ्रश भाषाके कोई ४०-५० अन्य ग्रथोंका पता चल गया है। यह साहित्य उसकी धार्मिक व ऐतिहासिक सामग्रीके अतिरिक्त भाषाकी दृष्टिसे बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह भाषा प्रचीन मागधी, अर्द्धमागधी, शौरसेनी आदि प्राकृतो तथा आधुनिक हिन्दी, गुजराती, मराठी, बगाली आदि प्रातीय भाषाओंके बीचकी कडी है। यह साहित्य जैनियोके शास्त्र-भण्डारोंमे बहुत सगृहीत है। यथार्थमे यह जैनियोकी एक अनुपम निधि है, क्योंकि जैन साहित्यके अतिरिक्त अन्यत्र इस भाषाके ग्रथ बहुत ही कम पाये जाते है। भाषा विज्ञानके अध्येताओंको इन ग्रन्थोंका अवलोकन अनिवार्य है। पर जैनियोंका इस ओर अभी तक भी दुर्लक्ष्य है। यह साहित्य गुजरात, राज-

पूताना और मालवामे विशेष रूपसे पाया जाता है। इसमे हिन्दी और गुजराती दोनो भाषाओंका पूर्वरूप गुंथा हुआ है। इस भाषाके अध्ययनसे पता चल जाता है कि ये दोनों भाषाये तो मूलतः एक ही हैं।

प्रस्तुत संग्रहमे अपभ्रंशका और भी विकसित रूप पाया जाता है और उसका सिलसिला प्रायः वर्तमान कालकी भाषासे आ जुड़ता है। ये उदाहरण डिंगल भाषाके विकास पर बहुत प्रकाश डालते है। भाषाकी दृष्टिसे इन अवतरणोंका संशोधन और भी अधिक सावधानीसे हो सकता तो अच्छा था। किन्तु अधिकाश संग्रह शायद एक-एक ही मूल प्रति परसे किये गये हैं। अब इस ग्रंथकी ऐतिहासिक व भाषा सम्बन्धी सामग्रीका विशेष रूपसे अध्ययन किये जानेकी आवश्यकता है। आशा है नाहटाजीका यह संग्रह एक नये पथ-प्रदर्शकका काम देगा। ऐसे ऐसे अनेक संग्रह अब प्रकाशमें आवेंगे और उनके द्वारा देशके इतिहास और भाषा विकासका सुख उज्ज्वल होगा। यह प्रयत्न अत्यन्त स्तुत्य है।

किंग एडवर्ड कालेज,
अमरावती।
२१-४-३७

हीरालाल जैन
एम० ए०, एल० एल० बी०,
प्रोफेसर आफ संस्कृत।

प्रति परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित काव्योंकी मूल प्रतियाँ कबकी लिखी हुई और कहापर हैं? इसका उल्लेख कई कृतियोंके अन्तमें यथा स्थान मुद्रित हो चुका है। अवशेष काव्योंके प्रतियोंका परिचय इस प्रकार है —

(अ) १ गुरुगुण षट्पद, २ जिनपति सूरि धवलगीत, ३ जिनपतिसूरि स्तूप कलश, ४ जिनकुशलसूरि पट्टाभिषेकरास, ५ जिनपद्मसूरिपट्टाभिषेकरास, ६ खरतर गुरुगुण वर्णन छप्पय, ७ जिनेश्वरसूरि विवाहलो, ८ जिनोदयसूरि विवाहलो, ९ जिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रास, १० जिनोदयसूरि गुण वर्णन छप्पय, ये कृतियाँ हमारे संग्रहकी सं० १४९३ लि० शिवकुंजरके स्वाध्याय पुस्तक* (पत्र ५२१) की प्रतिसे नकल की गयी है।

(आ) १ जिनपति सूरीणाम् गीतम्, २ मानप्रभसूरि गीत, ये दो कृतियें हमारे संग्रहकी १६ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्धकी लिखित प्रतिसे नकल की गयी हैं।

(इ) जिनप्रभसूरि गीत नं० १, २, ३, जिनदेवसूरि गीत और

* ॥९०॥ संवत् १४९३ वर्षे वैशाख मासे प्रथम पक्षे ८ दिने सोमे श्री बृहत् खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि गुरौ विजयमाने श्रीकीर्तिरत्नसूरीणां शिष्येण शिवकुंजर मुनिना निज पुण्यार्थं स्वाध्याय पुस्तिका लिखिता चिरं नंदतात् ॥ श्री योगिनीपुरे ॥ श्री ॥

जिनप्रभसूरि परम्परा गुर्वावलीकी मूल प्रति बीकानेर बृहत् ज्ञानभण्डारमें (१५ वीं शताब्दीके पूर्वार्धकी लि०) है।

(ई) खरतर-गुरु-गुण-वर्णन-छप्पयकी द्वितीय प्रति, १७ वीं शताब्दी लि० हमारे संग्रहमें है।

(उ) पृ० ४३ मे मुद्रित खरतरगच्छ पट्टावलीकी मूलप्रति तत्कालीन लि०, पत्र १ हमारे संग्रहमें है। यह पत्र कहीं कहीं उदेइ भक्षित है, अत: कही कही पाठ त्रुटकथा, उसे जिनकृपाचन्द्र-सूरि ज्ञानभण्डारस्थ गुटकाकार प्रतिसे पूर्ण किया गया है। हमारे संग्रहका पत्र, सुन्दर और शुद्ध लिखा हुआ है।

(ऊ) देवतिलकोपाध्याय चौ०, क्षेमराजगीत, राजसोम, अमृत धर्म क्षमाकल्याण अष्टक-स्तव, जिनरंगसूरि युगप्रधान पद प्राप्ति गीतकी प्रतिये तत्कालीन लि० बीकानेर बृहत् ज्ञानभण्डारमें विद्यमान है।

(ए) अकबर प्रतिबोध रासकी प्रति जयचन्द्रजीके भण्डारमें सुरक्षित है।

(ऐ) कीर्तिरत्नसूरि गीत नं० २ से ६, कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भण्डा-रस्थ गुटकाकार प्रतिसे नकल किये गये हैं।

(ओ) अन्य प्रेषित प्रतियोंकी नकलें :

(a) गुणप्रभसूरि प्रबन्ध, जिनचन्द्रसूरि, जिनसमुद्रसूरि गीत (४२३ से ४३२), जैसलमेरके भण्डारसे नकल-कर यतिवर्य लक्ष्मीचन्द्रजीने भेजी है।

(b) जिनहंससूरिगीत, समयसुन्दरकृत ३६ रागिणी गर्भित

जिनचन्द्रसूरिगीत, जिनमहेन्द्रसूरि और गणिनी शिवचूला विज्ञप्तिगीतकी नकल पालीताणेसे उ० सुखसागर जीने भेजी थी।

(c) जिनवल्लभसूरि गुणवर्णनकी नकल रत्नमुनिजी, जिनचन्द्र सूरिरासकी प्रति लब्धि मुनिजी (यह प्रति अभी हमारे संग्रहमें है), रत्ननिधान कृत जिनचन्द्रसूरि गीतकी नकल (पृ० १०७), सूरत भण्डारसे प० कचनार मुनिजीने भेजी है।

(d) जिनहर्ष गीतद्वय, पाटणसे साहित्य प्रेमी मुनि यशविजयजीसे प्राप्त हुए हैं।

(ओ) नीचे लिखी हुई कृतियोके सम्पादनमें मुद्रित ग्रन्थोकी सहायता ली गयी है।

(a) देवविलास तो अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मण्डलकी ओर से प्रकाशित ग्रन्थसे ही सम्पादन किया गया है।

(b) पल्ह कृत जिनदत्तसूरि स्तुति, अपभ्रंश काव्यत्रयी और गणधर सार्द्धशतक भाषान्तर ग्रन्थ द्वयसे पाठान्तर नोधकर प्रकाशित की गई है।

(c) वेगड गुर्वावली आदि (पृ० ३१७ से ३१८) की जैन श्वेताम्बर कॉन्फरेन्स हेरल्डसे नकल की गई है।

(d) पिप्पलक खरतर पट्टावली, जैं० गु० क० भा० ? और देवकुल पाटक दोनों ग्रन्थोसे मिलान कर प्रकाशित की गई है।

(अं) "श्रीजिनोदयसूरि वीवाहलउ" की ४ प्रतिया प्राप्त हुई है।
जिनके समस्त पाठान्तर नीचे लिखे संकेतोंसे लिये गये हैं।

(a) प्रति जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० २३३)

(b) प्रति प्राचीन प्रति (सं० १४९३ लि० शिवकुञ्जर स्वाध्याय पुस्तकात्) हमारे संग्रहमें।

(c) प्रति बीकानेर स्टेट लाइब्रेरी नं० ४९८७ पत्र ३, प्राचीन प्रति

(d) प्रति ऐतिहासिक रास संग्रह भा० ३ + (पृ० ७९)

(e) प्रति के अन्तमें निम्नोक्त श्लोक लिखा है -

वर्षे बाण मुनि त्रिचन्द्र गणिते, येषां प्रसूणां जनि,
पक्षाष्टे प्रमिते व्रतं गुरुपदं पंचैक वेदैकके
स्वर्गा श्री चरणं१ च नेत्र शिवहक् संख्ये वसूवादसुतं।
ते श्री सूरि जिनोदया. सुगुरव: कुर्वंतु मे मङ्गलम् ॥१॥

श्रीजिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रासकी २ प्रतिया

(a) प्रति उपरोक्त (सं० १४९३ लि०)

(b) प्रति जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ०२२८)

श्रीजिनेश्वरसूरि वीवाहलउ की ३ प्रते

(a) प्रति उपरोक्त (सं० १४९३ लि०)

(b) प्रति प्राचीन प्रति (हमारे संग्रहमें)

(c) प्रति जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० २२४)

(अः) इनके अतिरिक्त और सभी काव्योंकी प्रतियां जिनके अन्तमें अन्य स्थानका उल्लेख नही है, वे सब प्रतिया हमारे संग्रहमें (तत्कालीन लिखित) है।

चित्र परिचय

१—ग्रन्थ प्रकाशक श्री शंकरदानजी नाहटा—सम्पादकके पितामह हैं।

२—खरतरपट्टावली —इसी ग्रन्थमें पृ० ३६५से ६८में स० ११७०-७१ के लि० प्रतिसे मुद्रित की गई है। इसमें स० ११७१ लि० प्रतिका फोटु बडौदेसे उ० सुखसागरजीने भिजवाये थे उसमें खरतर विरुद प्राप्ति सम्बन्धी उल्लेखवाले पत्रका ब्लोक बनवाकर प्रस्तुत ग्रन्थमें दिया गया है। खरतर विरुद प्राप्ति प्रश्नपर यह पट्टावली बहुत महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है।

३-४-जिन वल्लभसूरी और जिनदत्तसूरीजीके प्रस्तुत चित्र, जैसलमेर भंडारके प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिके काष्टफलक पर चित्रित थे, उसके ब्लाक बनवाकर (अपभ्रंश काव्यत्रयीमें मुद्रित) दिये गये हैं।

५—जिनचन्द्रसूरिजीका चित्र खम्भातके शांतिनाथ भंडारकी ताडपत्रीय पर्युषणाकल्प (पत्र ८७) की प्रति, जोकि लिपि आदिके दर्शनसे १३ वीं शताब्दी लि० प्रतीत होती है, के आधारसे जैन चित्र कल्पद्रुम (चित्र नं० १०४) में मुद्रित हुआ है। श्री साराभाई नवाबके सौजन्यसे हमें इसको प्रकाशित करनेका सुअवसर मिला एतदर्थ उनके आभारी हैं। उक्त ग्रंथमें इस चित्रका परिचय पृ० १४३ में इस प्रकार दिया है —

"प्रस्तुत चित्रसे वीजा जिनेश्वरसूरिके जेओ श्री जिनपति सूरिना शिष्य हता, तेओनो होय एम लागे छे। श्रीजिनेश्वरसूरि सिहासन उपर बेठेलाछे तेओना जमणा हाथ मा मुहपति छे अने डावो हाथ अभय मुद्राए छे। जमणी बाजुनो तेओश्रीनो खभो खुलो छे। ऊपरना छतनां भागमा चंदरवो बांधेलो छे सिंहासन नी पाछल एक शिष्य उभो छे अने तेओनी सन्मुख एक शिष्य वाचना लेतो बेठो छे। चित्रनी जमणीबाजूए एक सत्त श्रावक बे हाथनी अंजलि जोडीने गुरुमहाराजनो उपदेश सांभलतो होय एम लागे छे।

६ योगविधि पत्र १३ की प्रति (सं० १५११ लि०)के अन्तिम पत्रसे ब्लाक बनाया गया है। प्रशस्ति इस प्रकार है. "सं वत् १५११ वर्षे अषाढ़ वदी १४ चतुर्दश्या बुधे श्री खरतर गच्छेश श्री श्री जिनभद्र सूरिभिर्लिखितमिदं ॥१॥ वा० साधुतिलक गणि-भ्यो वाचनाय प्रसादी कृतेयं प्रति।

७ - जिनचन्द्रसूरि मूर्ति: बीकानेरके ऋषभ जिनालयमें युगप्रधान आचार्यश्रीकी सं० १६८६ जिनराजसूरि प्रतिष्ठित मूर्ति है उसीका यह ब्लोक है, लेख नकल देखे युग प्रधान जिन चन्द्रसूरि पृ० १५७।५८।

८ जिनचंदसूरि हस्तलिपि: स्व० बाबू पूरणचन्द्रजी नाहरके संग्रह (गुलाब कुमारी लाइब्रेरी) की नं. ११८ कर्मस्तववृत्तिकी प्रतिसे ब्लाक बनवाया गया है, पुष्पिका लेख इस प्रकार है:

संवत १६११ वर्षे श्री जेसलमेरु महादुर्गे। राउल श्री

माल्द्वे विजयिनि । श्री बृहत्खरतरगच्छे। श्रीजिनमाणिक्यसूरि पुरन्दराणां विनेय सुमतिधीरेण लेखि स्ववाचनाय ॥ श्रावण सुदि त्रयोदश्यां । शनिवार ॥श्रीरस्तात्॥ ॥कल्याणमोभोतु ॥ छ० ॥

६—जिनराज सूरि-जिनरत्नसूरि —यतिवर्य्य श्री सूर्यमलजीने संग्रह (फल+रो)मे शालिभद्र चौपई पत्र ७४ की सचित्र प्रतिके अन्तिम पत्रमे यह चित्र है । लिपिलेखककी प्रशस्ति इसप्रकार है—

सं० १८५७ मि० फाल्गुण कृष्ण १७ रविवार श्री बृहत्खरतर गच्छे उपाध्यायजी श्री विद्याधीरजी गणि शिष्य मुरव वा० मति कुमार ग० । शिष्य लि । प० किस्तूरचन्द मु ।

प्रति यद्यपि समकालीन नहीं है तोभी इसकी मूल आधार भूत प्रतिका समकालीन होना विशेष संभव है ।

१०--जिनहर्ष हस्तलिपि —पाटण भंडारमे कविवरके रचित एवं स्वयं लि० स्तवनादिको पत्र ८० की प्रतिके फोटु मुनिवर्य पुण्य विजयजीने भेजे थे उन्हींसे ब्लाक बनवाकर मुद्रित की गई है । मुनिश्रीने हमे उक्त प्रतिकी नकल करा भेजनेकी भी कृपा की है ।

११--ज्ञानसार हस्तलिपि —हमारे संग्रहके एक पत्रका ब्लोक बनवाकर दिया गया है ।

खरतर गच्छके आचार्यो एवं विद्वानोंके और भी बहुत चित्र उपलब्ध हैं, जिन्हे हो सका तो खरतरगच्छ इतिहासमे प्रकट करनेकी इच्छा है ।

* आचार्य पद प्राप्तिके पूर्व मुनि अवस्थाका नाम । देखे यु० जिन चन्द्रसूरि पृ० २३ ।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

रास सार सूची।



चित्र सूची ।

चित्र-सूचीमें परिवर्तन

चित्रोंको प्रथम रास सारमें देनेका विचार था, पर फिर मूलमें देना उचित समझ वैसा किया गया है, तथा चित्रोंकी सख्या पूर्व १२ थी पर फिर कई अन्य आवश्यक चित्र प्राप्त हो जानेसे ६ और बढ़ा दिये गये हैं। कुल १८ चित्रोंकी सूची इस प्रकार है —

इन चित्रोंके बढ़ जानेसे मूल्यमें भी ११) के स्थानमें ११॥) करना पड़ा पुस्तकके अन्तमें भी दो नीचे लिखी बातें और जोड़ दी गई हैं —

मूल काव्य-अनुक्रमणिका ।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (द्वितीय विभाग)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (तृतीय विभाग)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (चतुर्थ विभाग)

परिशिष्ट

—

सिंहगिरि	२३	मानतुंग	नागार्जुन	३३	रविप्रभ
वयर स्वामी	२४	वीर सूरि	गोविन्दवाचक	३४	यशोभद्र
आर्य रक्षित	२५	जयदेव सूरि	संभूतिदिन्न	३५	जिनभद्र
दुर्बलिकापुष्य	२६	देवानन्द	लोकहित	३६	हरिभद्र
आर्य नंदि	२७	विक्रमसूरि	दुष्यगणि	३७	देवचन्द्र
नागहस्ति	२८	नरसिंहसूरि	उमास्वाति	३८	नेमिचंद्र
रेवंत	२९	समुद्र सूरि	जिनभद्र	३९	उद्योतन
ब्रह्मदीपी	३०	मानदेव	हरिभद्र		
संडिल्ल	३१	विबुधप्रभ	देवाचार्य		
हेमवंत	३२	जयानन्द	नेमिचन्द्र		
			उद्योतन —		

* यहांतकका क्रम भिन्न २ पट्टावलियोंमें भिन्न भिन्न प्रकारसे पाया जाता है। पर इसके पश्चात्का क्रम सभी खरतर गच्छकी पट्टावलियोंमें एक समान है। नं० ५ की पट्टावलीका (संशोधित) क्रम वज्रसेन तकका नंदिसूत्र स्थिरावली आदि प्राचीन प्रमाणोंसे प्रमाणित है, पीछेके क्रमको ऐतिहासिक दृष्टिसे परीक्षा करना परमावश्यक है अतएव विद्वानोंका हम इस ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

× यहां तकके आचार्योंका गुर्वावलियोंमे नाममात्र ही उल्लेख है। ऐतिहासिक परिचय नहीं। फिर भी इनके नामोंके साथ जो ऐ० विशेषण दिये गये हैं, वे ये है —जम्बूः--९९ कोटि द्रव्य त्याग, संयम ग्रहण। स्थूलिभद्रः-कोश्या प्रतिबोधक, महागिरी -- जिन कल्प तुलन। कारक, सुहस्ति---संप्रति नृपके गुरु, श्यामाचार्यः--पन्नवणा कर्त्ता, वज्रसेन --१६वर्षायु व्रत ग्रहण, वृद्धदेवः— कुमदचन्द्र विजेता, मानदेवः--शान्ति स्तव कर्त्ता, मानतुंगः-भक्तामर, भयहर स्तोत्रकर्त्ता, वयर स्वामीः १०पूर्वधर, उमास्वाति --५०० प्रकरणकर्त्ता।

वर्द्धमान सूरि

(पृ० ८४)

उपरोक्त उद्योतन सूरिजीके आप मुख्य शिष्य थे। आपने आबू गिरिपर ३ महीनेके तपस्या करके सूरि मन्त्रकी साधना (शुद्धि) की, पातालवासी धरणेन्द्रदेव प्रगट हुआ, उसके सूचनानुसार वहाँ आदि-जिनकी वज्रमय प्रतिमा प्रगट हुई। इससे मन्त्री श्र विमल दण्ड नायकको अति ही आनन्द हुआ और गुरुश्रीके उपदेशसे उन्होंने वहा नदीश्वर प्रसादके समान, चिरस्मरणीय यश पुञ्ज स्वरूप 'विमल वसही' बनाई। पूज्य श्रीके अतिशय प्रभावसे मिथ्यात्वी लोगों आदि हतप्रभाव हुए और जैन शासनका जयनाद फैला, आपका विशेष परिचय गणधर सार्द्धशतक वृहद् वृत्ति, पट्टावलियों और युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि (पृ० ६) मे देखना चाहिये।

जिनेश्वर सूरि

(पृ० ८४)

श्री वर्द्धमान सूरिजीके आप सुशिष्य थे। आपने गुजरातके अणहिल्लपाटणके भूपति दुर्लभराजके सभामे ८४ मठपति (चैत्यवासी) आचार्योको, जो कि मन्दिरोंमे रहा करते थे, परास्त कर चैत्य-वासका उत्थापन और वसतिवास-सुविहित मुनिमार्ग का स्थापन किया था। नृपति दुर्लभराज आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर कहने लगे कि — इस कलिकालमे कठिन और खर चारित्रधारक साधु आप ही हैं। नृपतिके वचनानुसार तभीसे खरतर विरुदकी प्रसिद्धि हुई।

विशेष चरित्र सामग्री और ग्रन्थ निर्माणकी सूचि देखे —युग प्रधान जिनचन्द्र सूरि पृ० १०

अभय देवसूरि

(पृष्ठ ४५)

आप श्री जिनेश्वर सूरिजीके शिष्य थे। आपने ६ अंग-सूत्रों पर वृत्ति बनाई और जयतिहूअण स्तोत्रकी रचना कर स्तंभन-पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा प्रकट की। श्रीमंधर स्वामीने आपके गुणोंकी प्रशंसा की और धरणेन्द्र, पद्मावती आपकी सेवा करते थे। विशेष देखे: यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १२

जिनवल्लभसूरि

पृ० १,४६

आप अभयदेवसूरजीके पट्टधर थे। पिन्डविशुद्धि प्रकरणकी आपने रचना की थी एवं वागड देशमे धर्म प्रचार कर १० हजार (नये) जैनश्रावक बनाये थे। चितौडमे चमुंडा देवीको आपने प्रतिबोध दिया था। सं० ११६७ के आषाढ शुक्ला षष्ठीको चित्तौडके महावीर चैत्यमे आपको देवभद्र सूरिजीने आचार्य पद प्रदान कर श्रीजिन अभयदेव सूरिके पदपर स्थापित किया।

विशेष चरित्रके लिये गण० शा० वृत्ति और कृतियोके लिये युगप्रधान जिनचन्द सूरि पृष्ट १२ देखना चाहिये।

जिनदत्त सूरि

(पृ० १४, ४६, ३७३)

वाछिग मन्त्री (धुन्धुका वास्तव्य) की धर्मपत्नी वाहड़ देवीकी कुक्षीसे सं० ११३२ मे आपका जन्म हुआ। सं० ११४१ मे दीक्षा ग्रहण की। सं ११६९ वै० कृ० ६ चित्तौड़के वीर जिनालयमें

जिनवल्लभ सूरिजीने पश्चात् देवभद्राचार्यने (पद) स्थापना की। उज्जयन्त पर अम्बिका देवीने अम्बड (नाग देव) श्रावकने आराधन करनेपर उसके हाथमें स्वर्णाक्षर लिख दिये और कहा कि जो इन्हें पढ सकेगा उन्हींको युगप्रधान जानना। अम्बड सर्वत्र घूमा, पर उन अक्षरोंको कोई भी आचार्य न पढ सके। आखिर पाटणमें जिनदत्त सूरिजीने अम्बडके हाथपर वासक्षेपका प्रक्षेपन कर उन अक्षरोंको शिष्य द्वारा पढ सुनाये, तभीसे आप युगप्रधान विरुदसे प्रसिद्ध हुए।

आपने चौसठ योगिनी और बावन वीरों (क्षेत्रपाल) को जीता था और भूत-प्रेत आदि तो आपके नामस्मरण मात्रसे पास नहीं आ सकते। सूरि मन्त्रके प्रभावसे धरणेन्द्रको साधन किया था और एक लाख श्रावक श्राविकाओंको प्रतिबोध दिया था। विक्रमपुरमें सर्व संघको मारि रोग निवारण कर अभय दान दिया और ऋषभ जिनालयकी प्रतिष्ठा की। त्रिभुवन गिरिके नृपति कुमारपालको प्रतिबोध दिया।५०० व्यक्तियोंको जैनमुनियोंको दीक्षा दी। उज्जैनीमें योगिनी (६४) चक्रको ध्यानबलसे प्रतिबोधा। आज भी आपके चमत्कार प्रत्यक्ष हैं और स्मरण मात्रसे मन-वांछित फल प्रदान करते हैं। साभर (अजमेर) नरेश (अर्णोराज) को जैन-धर्मका प्रतिबोध दिया था। आपके हस्त दीक्षित साधुओंकी संख्या १५०० थी (पृ ४६)। इस प्रकार आप-अपने महान व्यक्तित्वसे यशस्वी जीवन द्वारा चिरस्मरणीय होकर सं १२११ के आषाढ शुक्ला ११ को अजमेर नगरमें स्वर्ग सिधारे।

पृ०३७३ से ३७३में प्रकाशित अज्ञात छप्पयोंके अपूर्ण (आदि अंत त्रु०) होनेके कारण वर्णित विषयका स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। अत अन्य साधनोंके आधारसे उस विषयमें जो कुछ जाना गया है, उसका अति संक्षिप्त सार यहां दिया जाता है

कनौजमें सीहोजी+ नामक भूपति राजा राज्य करते थे. एक बार उन्होंने यात्रार्थ द्वारिका जानेका विचार कर राज्यभार अपने छोटे भाईको देकर कुंअर आसथान (जो कि उनके यदुवंशी राणीके पुत्र थे) एवं ५०० सैनिकोंके साथ प्रस्थान किया। सिहाजी जब मारवाड पधारे तो राणीने एक स्वप्न देखा। × × ×

इधर मारवाड प्रान्तके पाली शहरमे ब्राह्मण यशोधर राज्य करते थे। उस समय खेड नगरके गुहलवंशी राजा महेशने पालीपर चढाई कर दी, इससे भयभ्रान्त हो यशोधर नगर रक्षणका उपाय सोचने लगे कि किसी सिद्ध पुरुषकी शरण ली जाय। परामर्श करनेपर ज्ञात हुआ कि खरतर गच्छ नायक श्री जिनदत्त सूरिजीका यही चतुर्मास है और वे वडे ही चमत्कारी हैं। उनके मुख्य कार्य कलाप ये है .

×छप्पयोंकी पूर्ण प्रति किसी सज्जनको कहीं प्राप्त हो तो हमे भेजनेकी कृपा करें। छप्पयोंकी आदि अन्तकी संख्या, सम्बन्ध व प्रतिके पत्रसंख्याके हिसाबसे यह बर्णन बहुत बड़ा होना सम्भव है।

+आधुनिक इतिहासकारोंके मतसे सींहोजीका जन्म सं० १२०६ कन्नौजसे आना १२६८ और स्वर्ग सं० १३३० है। अत जिनदत्तसूरिका उनके साथ सम्बन्ध होना कहांतक ठीक है, नही कहा जा सकता।

१ —मुलतानमें पांच नदीके पांचो पीर आपके सेवक बने। माणिभद्र यक्ष एवं बावन वीर भी आपकी सेवामें हाजिर रहा करते थे।

२ —मुलतानमें नन्दोत्सव समय (भीड़में कुचलकर) मुगलपुत्र मर गया था, उसे आपने पुनः जीवित कर सबको आश्चर्यान्वित कर दिया।

३ —चौसठ योगनियोंने स्त्री रूप धारण कर व्याख्यानमें छलनेको आने पर उन्हें मन्त्रित पाटों पर बैठाकर, कीलित कर दिया। आखिर वे गुरुजीसे प्रार्थना कर मुक्त हो, जाते समय ७ वरदान दे गई जो इस प्रकार हैं —

(१) प्रत्येक ग्राम और नगरमें एक श्रावक ऋद्धिवान होगा।

(२) आपके नाम लेनेवालेपर बिजली नहीं गिरेगी।

(३) सिन्धु देशमें आपके श्रावकोंको विशेष लाभ होगा।

(४) आपके नाम स्मरणसे भूत-प्रेत एवं चौरादिका भय, ज्वरादि रोग दूर होंगे। एवं शाकिनी नहीं छल सकेगी।

(५) खरतर श्रावक प्रायः निर्धन न होगा और कुमरणसे नहीं मरेगा।

(६) आपके स्मरणसे जलसे पार उतर जायगा, पानीमें नहीं डूबेगा।

(७) बालब्रह्मचारिणी साध्वीको ऋतुधर्म नहीं आवेगा।

४ : उज्जैनीके स्तम्भमेंसे ध्यानबलसे विद्यामन्त्रकी पुस्तक ग्रहण की, उसमेंसे स्वर्णसिद्धि आदि विद्यायें ग्रहण कर चित्तौड़के भंडारमें स्थापित की। उस पुस्तकको हेमचन्द्राचार्यके कथनसे कुमारपाल नृपतिने मंगाई, पर उसे खोलनेका (ग्रन्थके ऊपर) निषेध लिखा हुआ होनेपर भी हेमचन्द्राचार्यकी वर्जित-मोल्योंके पुस्तकके पन्डलको खोलनेपर वे नेत्रहीन हो गयीं और पुस्तके उड़कर जेसलमेरके भण्डारमें जा गिरी। वहां चोसठ योगनियां उनकी रक्षा करती हैं।

५ : प्रतिक्रमणके समय पडती हुई विजलीको रोक दी।

६ : विक्रमपुरमें मृगीके उपद्रव होनेपर 'तंजयउ' स्तोत्र रचकर शांति की। वहां महेश्वरी, डागा, लुणिया आदि १५०० श्रावकोंको प्रतिबोध दिया।

इस प्रकार गुरुजीकी प्रशंसा सुनकर उनसे यशोधरने राज्य रक्षण की प्रार्थना की। गुरुजीने उपरोक्त सिहोजीको वहांका राज्य दिलवाकर उस राज्यकी रक्षा की, तभीसे राठोड, खरतर आचार्योंको अपना गुरु मानने लगे।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० ५)

सं० ११९७ भाद्र शुक्ला ८ को रासलकी पत्नी देहल्णदेकी कुक्षिसे आप जन्मे थे। सं० १२०३ फाल्गुन शुक्ला ९ को ६ वर्षकी लघुवयमें ही जिनदत्त सूरिके समीप दीक्षा ग्रहण की। सं० १२०५ वैशाख शुक्ला षष्ठीको विक्रमपुरमे श्री जिनदत्त सूरजीने अपने पट्टे-

पर स्थापित किया था। कहा जाता है कि आपके भालस्थलपर मणि थी। अतः नरमणिमण्डित (भाल स्थल) नाम (मना) से आपकी सर्वत्र प्रसिद्धि है।

सं० १२२३ भाद्र कृष्ण चतुर्दशीको दिल्लीमें आपका स्वर्गवास हुआ।

जिनपति सूरि

(पृ० ६ से १०)

मरुस्थलके विक्रमपुर निवासी मालू यशोवर्द्धनकी भार्या सूहवदेवीकी कुक्षिसे सं० १२१० चैत्र कृष्णा अष्टमीके दिन आपका जन्म हुआ था। आपका जन्मका शुभ नाम 'नरपति' रखा गया। सं० १२१८ फाल्गुन कृष्ण १० को जिनचन्द्र सूरिजीके पास भीमपल्लीमें आपने दीक्षा ग्रहण कर सब सिद्धान्तोंका अध्ययन किया।

सं० १२२३ कार्तिक शुक्ला १३ बब्बेरकपुरमें जयदेवाचार्यने श्री जिनचन्द्र सूरिके पदपर स्थापन कर आपका नाम जिनपति सूरि रखा, इसके पश्चात् आपने अपनी अद्वितीय मेधा व प्रतिभासे ३६ वादोंमें अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज एवं जयसिंह आदिके राज्य-सभामें विजय प्राप्त की। वादी रूपी हस्तियोंके विदीर्णार्थ आप सिंहके समान थे। आपने बहुतसे शिष्योंको दीक्षा दी। अनेकों जिन बिम्बों आदिकी प्रतिष्ठायें कीं। शासन देवी आपके पादपद्मोंकी सेवा करती थी और जालन्धरा देवीको आपने रञ्जित किया था। खरतर गच्छकी समाचारी (विधि) आपने ही सुव्यवस्थित की थी।

मरुकोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रजी (षष्टि शतककर्त्ता) सद्गुरुके शोधमे १२ वर्ष तक पर्यटन करते हुए पाटण पधारे और आपके सद्गुणोंसे प्रतिबोधको प्राप्त हुए। इतना ही नहीं, भण्डारीजीके पुत्रने आपके पास दीक्षा ग्रहण की थी। वास्तवमें आप युग-प्रधान आचार्य थे।

इस प्रकार स्वपर कल्याण करते हुए सं० १२७७ आषाढ शुक्ला १० को पाल्हणपुरमे स्वर्ग सिधारे। वहाँ संघने स्तूप बनवाया।

जिनेश्वर सूरि

(पृ० ३७७)

मरुस्थलके शिरोमणि मरोट कोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रकी भार्या लक्ष्मणीकी कुक्षिसे सं० १२४५ मार्गशीर्ष शुक्ला ११ को आपका जन्म हुआ था। अम्बिका देवीके स्वप्नानुसार आपका जन्म नाम 'अम्बड़' रखा गया।

श्री जिनपति सूरिजीके सदुपदेशसे वैराग्य वासित होकर आपने अपने माता-पितासे प्रवज्या ग्रहण करनेकी आज्ञा मांगी, माताश्रीने संयमकी दुर्द्धरता बतलाई पर उत्कट वैराग्यवानको वह असार ज्ञात हुई, क्योंकि आपका ज्ञान-गर्भित वैराग्य संसारके दुखोंसे विलग होनेके लिये ही हुआ था।

सं० १२५८ चैत्र कृष्णा २ खेड नगरके शान्ति जिनालयमे श्री जिनपति सूरजीने दीक्षित कर आपका नाम वीरप्रभ रखा, आप सर्वसिद्धान्तोंका अवगाहन कर श्री जिनपति सूरिके पदपर सुशोभित हुए। आचार्य पद प्राप्तिके पश्चात् आप जिनेश्वर सूरि नामसे

प्रसिद्ध हुए। आपने अनेक देशोंमें विहार कर बहुतसे भव्यात्माओं-को प्रतिबोध दिया। इस प्रकार धर्म प्रचार करते हुए आप जालोर पधारे और अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर अपने सुशिष्य वाचनाचार्य प्रबोध मूर्तिको अपने पदपर स्थापित कर जिनप्रबोध सूरि नाम स्थापना की और वहीं अनशन आराधना कर स० १३३१ के आश्विन कृष्णा ६ को स्वर्ग सिधारे।

जिन प्रबोध सूरि उल्लेख —गुर्वावलियोंमें

जिनचन्द्र सूरि " "

श्री जिन कुशलसूरिजी विरचित 'जिनचन्द्र सूरि चतु सप्ततिका' प्राप्त हुई है। ग्रन्थ विस्तार भयसे उसे प्रगट नहीं की गयी, मात्र उसका सार नीचे दिया जाता है।

मारवाड़ प्रान्तमें समीयाणा (सम्माणयणि) नगरके मन्त्री देवराजकी पत्नी कोमल देवीकी रत्नगर्भा कुक्षिसे स० १३२४ मार्ग-शीर्ष शुक्ला ४ को आपका जन्म हुआ था। आपका जन्म नाम खंभराय रखा गया। खंभराय क्रमशः बढ़ते साथ-साथ गुणोंसे भी बढ़ते हुए जब ६ वर्षके हुए तब श्री जिनप्रबोध सूरिकी देशना श्रवणका सुअवसर मिला। उनके उपदेशसे प्रतिबोध कर स० १३३२ के जेठ शुक्ला ३ को गुरुश्रीके समीप प्रव्रज्या ग्रहण की। पूज्य श्रीने आपका नाम "क्षेमकीर्त्ति" रखा। दीक्षाके अनन्तर आपने व्याकरण, छंद, नाटक, सिद्धान्त आदिका अध्ययन कर विद्वत्ता प्राप्त की।

विक्रमपुर स्थित महावीर प्रतिमाके ध्यान बलसे अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर श्री जिनप्रबोधसूरिजी जावालपुर पधारे और वहा क्षेमकीर्त्तिजीको स्वहस्त कमलसे सं० १३४१ वै० शु० ३ अक्षय तृतीयाको वीर चैत्यमे बडे महोत्सवपूर्वक आचार्य पद प्रदान कर गच्छभार सौंपकर जिनप्रबोधसूरिजी स्वर्ग सिधारे। आचार्य पदके अनन्तर आपका शुभ नाम जिनचन्द्रसूरि प्रसिद्ध किया गया। आपके रूप लावण्य और गुण सचमुच सराहनीय थे। श्रीकर्णदेव जैत्रसिह, और समरसिहजी भूपति त्रय आपकी सेवा करनेमे अपना अहोभाग्य समझते थे। आपने बिम्ब प्रतिष्ठा, दीक्षा एवं पद प्रदानादि कर अनेकानेक धर्मप्रभावनाकी। शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थोंकी यात्रा की। एवं गुजरात, सिन्ध, मारवाड, सवालक्षदेश, वागड़, दिल्ली आदि देशोंमें विहार कर धर्म प्रचार किया। स० १३७६ के आषाढ़ शुक्ल ६ को राजेन्द्रचन्द्र सूरिजीको अपने पदपर कुशल कीर्त्तिको स्थापन करने आदिकी शिक्षा देकर अनशन आराधनापूर्वक स्वर्ग सिधारे।

जिनकुशल सूरि

(पृ० १५ से १६)

अणहिल्ल पटणाधीश दुर्लभराज (की सभामे चैत्यवासियोंको परास्त कर) के समय बसतिमार्गप्रकाशक जिनेश्वर सूरि (प्रथम) के पट्टपर संवेगरंगशालाके कर्त्ता जिनचन्द्र सूरि, नवांगीवृत्तिकर्त्ता अभयदेव सूरि कि जिन्होंने (स्तम्भन) पार्श्वनाथके प्रसादसे धरणेन्द्र पद्मावती आदि देवोंको साधित किये, उनके पट्टपर संवेगीशिरोमणि

और चितौडस्थ चामुण्डा देवीको प्रतिबोध देनेवाले जिनवल्लभसूरि और उनके पट्टधर योगिराज जिनदत्त सूरि हुए कि जिन्होंने ज्ञानध्यानके प्रभावसे योगिनियां आदि दुष्ट देवोंको किंकर बना लिये थे। उनके पदपर सकल कला-सम्पन्न जिनचन्द्र सूरि और उनके पट्टधर-वादियों रूप गजोंके विदारणमें सिंह मानन्द (वादी मानमर्दन) जिनपति सूरिजी हुए।

जिनपति सूरिके जिनेश्वर सूरि उनके पट्टधर जिनप्रबोध सूरि और उनके पट्टधर जिनचन्द्र सूरि हुए, जिन्होंने बहुत देशोंमें सुविहित विहारकर त्रिभुवनमें प्रसिद्धी प्राप्त की एवं सुरताण (सम्राट्) कुतुबुद्दीनको रंजित किया था, उनके पट्टधर जिनकुशलसूरि हुए, जिनके पदस्थापनाका वृतान्त इस प्रकार है —

दीनोद्धारक कल्पतरु और महान् राज्य प्रसादप्राप्त मन्त्री देवराजके पुत्र जेल्हेकी पत्नि जयतश्रीके पुत्ररत्न कि जिनका दीक्षित नाम वाचनाचार्य कुशलकीर्ति था, को राजेन्द्रचन्द्र सूरिने पाटणमें जिनचन्द्र सूरिके पदपर स्थापित किया। उस समय दिल्ली वास्तव्य महतीयाण ठक्कुर विजय सिंह एवं पाटणके ओसवाल तेजपाल व उनका लघुभ्राता रुद्रपालने श्रीराजेन्द्रचन्द्र सूरि और विवेकसमुद्रोपाध्यायसे पद महोत्सव करनेका आदेश मांगा और उनकी आज्ञा प्राप्तकर सर्वत्र कुंकुम-पत्रिकाएं प्रेषित कर बड़ा महोत्सव प्रारम्भ किया। सं० १३७७ के ज्येष्ठ कृष्णा एकादशीके दिन जिनालयको देवविमानके सादृश सुशोभित कर जिनेश्वर प्रभुके समक्ष राजेन्द्रचन्द्र सूरिने वा० कुशलकीर्त्तिको जिनचन्द्र सूरिके पदपर स्थापित कर 'जिनकुशल

सूरि' नाम स्थापना की। उस समय अनेक देशोंके संघ आये और अ. वाजित्रोंके नादसे आकाशमण्डल व्याप्त हो गया था। मन्त्रीश्वर विजय सिंहने खूब गुरुभक्ति की, देश-विदेश निवासी स्वधर्मियोंकी वीरदेवने स्वधर्मीवात्सल्य किया। उस समय ७०० साधु, २७०० साध्वीयोंको तेजपाल, रुद्रपालने अपने घर आमंत्रित कर वस्त्र परि-धापन किया। अणहिल्ल पाटणकी शोभा उस समय बडी दर्शनीय और चित्ताकर्षक थी। महोत्सव करनेवाले तेजपालको सभी लोग बडी उत्सुकतासे देख रहे थे। इस प्रकार युगप्रधान पद महोत्सव कर सचमुच तेजपालने बडी ख्याति प्राप्त की।

आपका विशेष परिचय खरतरगच्छ गुर्वावली और पट्टावलियोंमें पाया जाता है। उक्त गुर्वावली यथावसर हमारी ओरसे सानुवाद प्रकाशित होगी। आपकी रचित "चैत्यवंदन कुलक वृत्ति" प्रकाशित हो चुकी है।

जिनपद्मसूरि

(पृ० २० से २३)

उपरोक्त श्री जिनकुशल सूरिजी महिमंडलमें विचरते हुए देराउर पधारे। वहा व्रत ग्रहण, मालाग्रहण, पदस्थापन आदि अनेक धर्मकृत्य हुए। सूरिजीने अपना आयुष्यका अन्त निकट ज्ञातकर (तरुणप्रभ) आचार्यको अपने पद (स्थापन) आदि की समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। इसी समय सिन्धु देशके राणु नगर वास्तव्य रीहड श्रावक पुनचन्दके पुत्र हरिपाल देराउर पधारे और युगप्रधान पद-महोत्सव करनेकी आज्ञाके लिये तरुणप्रभाचार्यसे विनीत प्रार्थना की और आज्ञा प्राप्त

कर दर्शोनियोंको संघको कुंकुम-पत्रीयों द्वारा आमंत्रित किये, संघ आये।

प्रसिद्ध श्रीमाल कुल लक्ष्मीधरके पुत्र आमाशाहकी पत्नीकी कुक्षि सरोवरसे उत्पन्न राजहंस सादृश पद्मसूरिजी को सं०१३८६ ज्येष्ठ शुक्ला छठी सोमवारको ध्वजा पताका, तोरण वंदनमालादिसे अलंकृत आदीश्वर जिनालयमें नान्दिस्थापन विधिसह श्री सरस्वती कंठाभरण तरुणप्रभाचार्य (षडावश्यक बालावबोधकर्त्ता) ने जिन-कुशलसूरिजीके पदपर स्थापित कर जिनपद्म सूरि नाम प्रसिद्ध किया। उस समय चारों ओर जयजय शब्द हो रहा था। रमणियां हर्षसे नृत्य कर रहीं थीं। लोगोंके हृदयमें हर्षका पार न था। शाह हरिपालने संघभक्ति (स्वामिवात्सल्यादि) एवं गुरुभक्ति (वस्त्रदानादि) के साथ युगप्रधान पद महोत्सव बड़े समारोहके साथ किया।

पाटण संघने आपको (बालधवल) कुर्चाल सरस्वती विरुद दिया। (पृ० ४७)

जिनचन्द्र सूरि (उ० गुर्वावलिमें)

जिनोदय सूरि (पृ० ३८८से ३६४)

चन्द्रगच्छ और वज्रशाखामें श्री अभयदेवसूरिजी हुए उनके पट्टानुक्रममें सरस्वती कण्ठाभरण जिनवल्लभ सूरि, विधिमार्ग प्रकाशक जिनदत्तसूरि, कामदेव सादृश रूपवान् जिनचन्द्रसूरि, वादिगज केशरी जिनपति सूरि, भव्यजन कल्पवृक्ष जिनेश्वर सूरि, सकल कला सम्पन्न जिनप्रबोध सूरि, भवोदधिपोत जिनचन्द्र सूरि, सिन्धुदेशमें विहित

विहार कर जिनधर्म प्रचारक जिनकुशल सूरि, सुरगुरु अवतार जिनपद्म सूरि, शासन श्रृङ्गार जिनलब्धि सूरिके पट्ट प्रभाकर तेजस्वी जिनचन्द्रसूरि ज्ञाननीर वर्षाते हुए खंभाते पधारे और (आयुष्यका अन्त जान, तरुण प्रभ) आचार्य को गच्छ और पद स्थापनादिकी समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे।

इसी समय दिल्ली वास्तव्य श्रीमाल रुद्रपाल, नींवा संघराके पुत्र संघवी रतना पूनिग सद्गुरुवर्यको वन्दनार्थ खंभात आये और उन्होंने श्रीतरुणप्रभाचार्यको वन्दनकर पद महोत्सवकी आज्ञा ले ली। सं० १४१५ के आषाढ़ कृष्ण १३ को हजारों लोगोंके समक्ष अजित-जिनालयमें आचार्यश्रीने वाचनाचार्य सोमप्रभको गच्छनायक पद देकर जिनोदय सूरि नाम स्थापनाकी। संघवी रतना, पूनाने उस समय बड़ा भारी उत्सव किया। लोगोंके जयजयारवसे गगन मण्डल व्याप्त हो गया। वाजित्र बजने लगे, याचक लोग कलरव (शोर) करने लगे, कही सुन्दर रास (खेल) हो रहे थे, कही मृदुभाषिणी कुलाङ्गनाये मङ्गल गीत गा रही थी। इस प्रकार वह उत्सव अतिशय नयनाभिराम था। संघवी रतना पूना और शाह वस्तपालने याचकोंको वाछित दान दिया, चतुर्विध संघकी बड़ी भक्ति और विनयसे पूजाकी, साधर्मी वात्सल्यादि सत्कार्योंमें अपनी चपला लक्ष्मीको खुले हाथ व्ययकर जीवनको सार्थक बनाया, उस समय सालिहग और गुणराजने भी याचकोंको बहुत दान दिये। उपरोक्त वर्णन ज्ञानकलश कृत रासके अनुसार लिखा गया है।

मेरुनंदन कृत विवाहलेके अनुसार श्रीजिनोदयसूरिका विशेष परिचय इस प्रकार है—

गूर्जरधरा रूपी सुन्दरीके हृदयपर रत्नोंके हारकी भांति पाल्हणपुर नगर है। उसमें व्यापारी मुख्य मालू शाखाके (शाह रतनिग कुल मण्डल) रुद्रपाल श्रेष्ठि निवास करते थे। सं० १३७५ में उनकी भार्या धारल देवीके कुक्षि सरोवरसे राजहंसके सदृश पुत्र उत्पन्न हुआ। माता पिताने उसका शुभ नाम समरा रखा। चन्द्रकलाकी भांति समरा कुमर दिनोंदिन वृद्धिको प्राप्त होने लगा।

इधर पाल्हणपुरमें किसी समय श्री जिनकुशलसूरिजी का शुभागमन हुआ। धर्म-प्रेमी रुद्रपालने सपरिवार गुरुजीको वन्दन कर धर्म श्रवण किया। सूरिजीने समरा कुमरके शुभ लक्षणोंको देख (आनन्दित होकर) रुद्रपालको उसे दीक्षित करनेका उपदेश देकर आप भीमपल्ली पधारे। इधर माताके खोलेमें बैठे कुमरने सूरिजीके पास दिक्षा कुमारीसे विवाह करानेकी प्रार्थना की। माताने सयम पालनकी दुष्करता, उसकी लघु अवस्था आदि बतला-कर बहुत समझाया, पर वैरागी समराने अपना दृढ निश्चय प्रगट किया। अत इच्छा नहीं होते हुए भी पुत्रके अत्याग्रहसे रुद्रपालने सपरिवार भीमपल्ली जाकर वीर जिनालयमें नांदिस्थापन कर जिन-कुशलसूरिके हस्तकमलसे समरा कुमरको सं० १३८२ में दीक्षा दिलाई। कालिकाचार्यके साथ सरस्वती बहनने दीक्षा ग्रहण की थी उसी प्रकार समराकुमरके साथ उसकी बहिन कील्हूने दीक्षा ग्रहण की। गुरुने समरकुमरका नाम 'सोमप्रभ' रखा। सोमप्रभ मुनि अब बड़े

मनोयोगसे विद्याध्ययन करने लगे और समस्त शास्त्रोंके पारंगत बने। सोमप्रभकी योग्यतासे प्रसन्न हो गुरुश्रीने सं० १४०३ में जैसलमेरमें 'वाचनाचार्य' पद प्रदान किया। वाचनाचार्यजी सुविहित विहार करते हुए धर्म प्रचार करने लगे।

इस प्रकार धर्मोन्नति करते हुए सोमप्रभजीको सं० १४१५ आषाढ कृष्ण त्रयोदशीको खंभातमें श्री तरुणप्रभाचार्यने जिन चंद्रसूरिके पदपर स्थापित किये। पदस्थापनका विशेष वर्णन ऊपर आ ही चुका है।

आचार्यपद प्राप्तके अनन्तर श्री जिनोदय सूरिजीने सिन्ध, गुजरात, मेवाड़ आदि देशोंमें विहार कर सुविहित मार्गका प्रचार किया। पांच स्थानोंमें बड़ी प्रतिष्ठायें की, २४ शिष्यों १४ शिष्यणियोंको दीक्षित किये, अनेकोंको संघवी, आचार्य, उपाध्याय, वाचनाचार्य महत्तरा आदि पदसे अलंकृत किये। इस प्रकार धर्म प्रभावना करते हुए सं० १४३२ के भाद्र कृष्णा एकादशीको पाटणमें लोकहिताचार्यको शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। संघने आपके अन्तक्रिया स्थलपर सुन्दर स्तूप बनाकर भक्ति प्रदर्शित की।

जिनराज सूरि उ० गुर्वावलियोंमे

जिनभद्र सूरि "

जिनचन्द्र सूरि पृ० ४८

साहु शाखाके वच्छराजकी भार्या स्याणीके कुक्षिसे आप जन्मे थे।

जिन समुद्रसूरि उ० गुर्वावलियोंमें

खरतर गुरुगुण छप्पय और गुरुगुण षट्पदका सार

प० १ से ३ पत्र २४ से ४०

नाम	पदस्थापनासंवत मिती	स्थान	जिनालय	पददाता
जिनवल्लभ	सं० ११६७ आषाढ शुक्ला ६	चित्तोड़,	महावीर,	देवभद्रसूरि
जिनदत्त	सं० ११६६ वैशाख कृष्णा ६	,,	,,	,,
जिनचन्द्र	सं० १२०५ वैशाख शुक्ला ६	विक्रमपुर,	,,	जिनदत्तसूरि
जिनपति	सं० १२२३ कार्तिक शुक्ला १३	बब्बरपुर,		जयदेवसूरि
जिनेश्वर	सं० १२७८ माह शुक्ला ६	जालोर,	,	सर्वदेवसूरि
जिनप्रबोध	सं० १३३१ आश्विन (कृष्णा) ५	,,		
जिनचन्द्र	सं० १३४१ वैशाख शुक्ला ३	,,		
जिनकुशल	सं० १३७७ ज्येष्ठ कृष्णा ११	पाटण,		
जिनपद्मसूरि	सं० १३६० ज्येष्ठ शु० ६	देराउर,		
जिनलब्धि	सं० १४०० आषाढ कृष्णा १			
जिनचन्द्र	सं० १४०६ माह शुक्ला १०	जैसलमेर,		
जिनोदय	सं० १४१५ आषाढ कृष्णा १३	खंभात,	अजित	
जिनराज	१४३३ फाल्गुन कृष्णा ६	पाटण	शांति,	लोकहिताचार्य
जिनभद्र	सं० १४७५ माह (शु० १५)	भाणशालि,	अजित,	सागरचन्द्राचार्य

अन्य महत्वके उल्लेख —(गा २०) सं० १०८० पाटण दुर्लभ सभा चैत्यवासी विजय, जिनेश्वर सूरिको खरतर विरुद प्राप्ति,(गा० २१) गोतमके १५०० तापसोंका प्रतिबोध, (द्वि०गा २२) कालिकाचार्यका चतुर्थीको पर्यूषण करना,(गा २३)में जिनदत्त सूरिका युगप्रधानपद,(गा० २०)में दशारणभद्रका

जिनहंससूरि

पृ० ४३

जिनहंस सूरिजीका सूरिपद महोत्सव करमसिंहने एक लाख पीरोजी खरचकर बडे समारोहसे किया। आचार्य पद प्राप्तिके अनन्तर अनेक देशोंमें विहार करते हुए आप आगरे पधारे। श्रीमाल डुंगरसी और उनके भ्राता पामदत्तने अतिशय हर्षोत्साहसे प्रवेशोत्सव बडे धूमधामसे किया, सजावट बडी दर्शनीय की गई, लोगोंकी भीड़से मार्ग संकीर्ण हो गये, पातशाह स्वयं हाथीके होदे उम्बर खान, वजीर इत्यादि राज्यके अमलदारोंके साथ सामने आये, वाजित्र बज रहे थे। श्राविकायें मंगलकलश मस्तकपर धारण कर गुरुश्रीको मोतियोंसे वधा रही थी। रजत मुद्रा (रुपये) के साथ पान (ताम्बूल) दिये गये, इससे बडा यश फैला और दिल्लीपति सिकन्दर पातशाहको यह जान बड़ा आश्चर्य उत्पन्न हुआ। उन्होंने सूरिजीको राजसभा (दीवानखाना) मे आमंत्रित कर करामात दिखाने को कहा, क्योंकि सम्राटके खरतर जिनप्रभसूरिजीके करामात (चमत्कार) की बातें, पहिले लोगोंसे सुनी हुई थी। पूज्यश्रीने तपस्याके साथ ध्यान करना प्रारम्भ किया, यथासमय जिनदत्तसूरिजीके प्रसाद एवं ६४ योगिनीयोंके सानिध्यसे किसी चमत्कार विशेषसे सिकन्दर

वीर वन्दन (गा० २३) पीछेकी १ गाथामे सं० १४१२ फा० व १४ अभयतिलकके रचनाका लेख है, (द्वि० गा० २३) में जिनलब्धि सूरिको नवलक्षगोत्रीय धणसिंहके भार्या खेताहोके कुक्षिसे उत्पन्न होना और बाल्यवयमें व्रत लेना, लिखा है।

पात।हिका चित्त चमत्कृत कर ५०० वन्दीजनोंको कारावास (वासरमी) से छुडाकर मगन सुयश प्राप्त किया।

कवि भत्तिलाभन गुरुभक्तिसे प्रेरित होकर इस य ।गीतकी रचना की। जि० आपर रचित आचाराङ्गदीपिका (स० १५८२ बीकानेर) उपलब्ध है।

जिनमाणिक्य सूरि (उ० गुर्वावलियोंमे)

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि (पृ० ५८ से १२४)

जिनसिंह सूरि (पृ० १२५स १३३)

श्री जिनचन्द्र सूरिजी एव जिनसिंह सूरिजीक सम्बन्धी गीत, रास आदि काव्योंका मन भाराश "युगप्रधान जिनचन्द सूरि" मे दिया है। अत यहा दुहराकर ग्रन्थक कलवरको बढाना उचित नहीं समझा गया।

जिनचन्द्र सूरि सम्बन्धी दो वडे रास हैं, उनमेंसे "अकबर-प्रतिबोध रासका सार उक्त ग्रन्थक छठें, सातवे प्रकरणमे एव निर्वाण रासका सार ११, १२ वे प्रकरणमे दे दिया गया है।

श्री जिनसिंह सूरिजीका ऐतिहासिक परिचय उक्त ग्रन्थक पृ० १५४ से १८२ तकमे लिखा गया है। आपक सम्बन्धमे हमें सूरचन्द कृत एक रास अभी और नया उपलब्ध हुआ है, पर उसमे हमारे लि० चरित्रक अतिरिक्त कोई विशेष नवीनता नहीं, और ग्रन्थ वहुत वढा हो जानेक कारण उसे प्रकाशित नहीं किया गया।

सूरचन्द्र कृत रासमे नवीन वाते ये हैं —

(१) जिनसिंह सूरिजीके पिताका निवास स्थान 'चीठावास' लिखा है।

(२) पाटणमे धर्मसागर कृत ग्रन्थको अप्रमाणित सिद्ध किया। संघवी सोमजीके संघ सह शत्रुंजय यात्रा की।

(३) इनके पदमहोत्सवपर श्रीमाल-टाक गोत्रीय राजपालने १८०० घोडे दान किये थे।

(४) अकबर सभामे ब्राह्मणोंको गंगा नदीके जलकी पवित्रता एवं सूर्यकी मान्यतापर प्रत्युत्तर देकर, विजय किया था।

जिनराज सूरि

(पृ० १५० से १७७, ४१७)

राजस्थानमे बीकानेर एक सुसमृद्ध नगर है, वहा राजा रायसिह जी राज्य करते थे, उनके मन्त्री करमचन्दजी वच्छावत थे। जिन्होंने सं० १६३५ के दुष्कालमें सत्रूकार (दानशाला) स्थापित कर डोलती हुई पृथ्वीको (दान देकर) स्थिर कर दी थी, एवं लाहोरमे जिनचन्द सूरिजीके युग प्रधान पद एवं जिनसिह सूरिजीके आचार्य पदके महोत्सवपर क्रोड द्रव्य और नव ग्राम, नव हाथी आदिका महान दान किया था।

उस समय बीकानेरमे बोथरा कुलोत्पन्न धर्मशी शाह निवास करते थे, उनकी धर्मपत्नीका शुभ नाम धारल देवी था। सांसारिक भोगोंको भोगते हुए दम्पत्ति सुखसे काल निर्गमन करते थे।

हमारे संग्रहके प्रबन्धमें आपके ७ भाइयोंके नाम इस प्रकार हैं
१ राम, २ गेहा, ३ खेतसी, ४ भैरव, ५ केशव, ६ कपूर, ७ सातड,

इस प्रकार विषय भोगोंको भोगते हुए धारल देवीकी कुक्षिमें सिंह स्वप्न सूचित एक पुण्यवान जीव अवतरित हुआ।

ज्योतिषियोंको स्वप्न फल पूछनेपर उन्होंने सौभाग्यशाली पुत्र उत्पन्न होनेकी सूचना दी। यथा समय (गर्भ वृद्धि होनेके साथ-साथ अच्छे-अच्छे दोहद उत्पन्न होने लगे, अनुक्रमसे गर्भ स्थिति परिपूर्ण होनेसे) सं० १६२७ वैसाख सुदी ७ बुधवार, छत्र योग श्रवण नक्षत्रमें धारलदेवीने पुत्र जन्मा।

दशूठण उत्सव अनन्तर नवजात शिशुका नाम खेतसी रखा गया, वृद्धिमान होते हुए खेतसी * कलाभ्यास करने लगा अनुक्रमसे ६ भाषा, १८ लिपि, १४ विद्या, ७२ कला, ३६ राग और चाणक्यादि शास्त्रोंका अध्ययन कर प्रवीण हो गया। इसी समय अकबर प्रतिबोधक प्रशंसित जिन सिंह सूरिजी बीकानेर पधारे। लोक बड़े हर्षित हुए और सूरिजीका धर्मोपदेश श्रवणार्थ सभी लोग आने लगे, (अपने पिताके साथ) खेतसी कुमार भी व्याख्यानमें पधारे। और धर्म श्रवणकर वैराग्यवासित होकर घर आकर अपनी माताजी से दीक्षा की अनुमति मांगी। पर पुत्रका स्नेह सहज कैसे छूट सकता था। माताने अनेक प्रकारसे समझाया पर खेतसी कुमार अपने दृढ़ निश्चयसे विचलित नहीं हुए और सं० १६५६ मार्गशीर्ष शुक्ला १३ को जिनसिंह सूरीजीके समीप दीक्षा ग्रहण की। इस समय धर्मसी शाहने दीक्षाका बड़ा उत्सव किया, नव दीक्षित मुनि अब गुरुश्री के प्रदत्त राजसिंह नामसे परिचित होने लगे।

* एक पट्टावलीमें लिखा है कि आपके लघु भ्राता भैरवदन भी आपके साथ दीक्षा ली।

दीक्षाके अनन्तर सूरिजी शीघ्र ही अन्यत्र विहार कर गये। मान सिंहके मण्डलतप वहन कर चुकनेके पश्चात पाटन श्री जिनचन्द्र सूरिजीने उन्हे वडी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय) दी और नाम राजसमुद्र प्रसिद्ध किया।

राजसमुद्र थोडे ही समयमें कुशाग्र बुद्धिबलसे ग्रंथोंको पढकर गीतार्थ हो गये। श्री जिन सिंह सूरिजी स्वयं आपको शिक्षा देते थे, श्री जिनचन्द्र सूरिजीने आपको वाचनाचार्य पदसे अलंकृत किया। आपके प्रबल पुन्योदयसे अम्बिकादेवी प्रत्यक्ष हुई। जिसके प्रत्यक्ष फलस्वरूप घंघाणीके (प्राचीन) लिपीको आपने पढ डाली। जेसलमेरमे राउल भीमके समक्ष आपने तपागच्छीयों को परास्त किये थे।

इधर सम्राट जहागीरने मान सिंह (जिन सिंह सूरि) से प्रेम होनेसे उन्हे निमन्त्रणार्थ, अपने वजीरोंको फरमान-पत्रके साथ बीकानेर भेजा। वे बीकानेर आये और फरमान पत्र सूरिजीकी सेवामे रखा। सङ्घने पढा तो सूरिजीको सम्राट्ने आमन्त्रित किया जानकर सभी प्रसन्न हुए।

सम्राटके आमन्त्रणसे सूरिजी विहार कर मेड़ते पधारे। वहा एक महीनेकी अवस्थिति की, फिर वहासे एक प्रयाण किया पर आयुका अन्त निकट ही आ चुका था, अतः मेडते पधारे और वहीं

* हमारे संग्रहके प्रबन्धमे जन्मका वार बुधकी जगह शुक्र और दीक्षा सं० १६९७ मोगसर सुदी १ बीकानेर, लिखा है। बणारसपद सं० १६६८ आसाउलमें लिखा है।

स्वय मथारा उच्चारण कर स० १६७८ पोष शुक्ला १३ को प्रथम देवलोक सिधारे।

सबने एकत्र हो पट्टधर्व योग्य कौन है इसका विचार कर राजसमुद्रजीको योग्य विदित कर उन्हें गच्छनायक और सूरि जीके अन्य शिष्य सिद्धसेन मुनिको आचार्य पदसे विभूषित किये। ये दोनों जिनराज सूरि और जिनसागर सूरिजीके नामसे प्रसिद्ध हुए। पदमहोत्सवपर सबवी आसकरण चोपडेने बहुत द्रव्य व्यय किया। १६७४ फाल्गुन शुक्ला ७ को पदस्थापना बडे समारोहसे हुई।

गच्छनायक पद प्राप्ति अनन्तर आपने अनेक जगह विहार कर अनेकानेक धर्म प्रभावनायें की, जिनमेंसे कुछ ये हैं —(स० १६७५ मिगसर सुदी १२ को) जेसलमेर (लोद्रव) गढमें (भणसाली थाहरू-कारित) सहस्रफणापार्श्वनाथकी प्रतिष्ठा की। (स० १६७५ वै० शु० १३ को) शत्रुंजय पर (सोमजी पुत्र रूपजी कारित) अष्टमोद्धारके ७०० प्रतिमाओंकी प्रतिष्ठा की। भाणवडमें वाफणा चापसी कारित अमीझरा पार्श्वनाथजीकी प्रतिष्ठा की, मेडतमें चोपडा आसकरण कारित शान्ति जिनालयकी (स० १६७७ जे० कृ० ५) प्रतिष्ठा की। अम्बिका देवी एवं ५२ वीर आपके प्रत्यक्ष थे, सिन्धमें विहार कर (पांच नदीके) पाँच पीरोंको आपने साधित किये। ठाणांग सूत्रकी विषम पदार्थ वृत्ति बनाई।

* रास में उपाध्याय सोमविजयका नाम भी है।

+ रास में द्वितीया लिखा है। सूरिमन्त्र पुनमीया हेमाचार्यने दिया लिखा है।

इस प्रकार शासनका उद्योत करनेवाले गच्छनायकके गुण-कीर्तन रूप यह रास श्रीसार कविने सं० १६८१ आषाढ कृष्णा १३ को सेत्रावामे रचा। क्षेमशाखीय रत्नहर्षके शिष्य हेमकीर्त्तिने यह प्रबन्ध बनवाया। गच्छ नायकके गुणगान करते समय (वर्षा) भी अच्छी हुई। उपरोक्त रास रचनाके पश्चात् (सं० १६८६ मार्गशीर्ष कृष्णा ४ रविवारको आगरेमे सम्राट शाहजहांसे आप मिले थे और वहा ब्राह्मणोंको वादमे परास्त किये एवं दर्शनी लोगोंके विहारका जहा कहीं प्रतिबंध था वह खुला करवा कर शासनोन्नति की। राजा गजसिंहजी, सूरसिंहजी, असफखान, आलमदीवान आदिने आपकी वडी प्रशंसा की।

यह सवैये (पृ० १७३) से स्पष्ट है। गीत नं० ५ मे लिखा है कि मुकरबखान ने आपके शुद्ध और कठिन साध्वाचारकी वडी प्रशंसा की।

आपके रचित १ शालिभद्र चौ० २ गजसुकमाल चौ० ३ चौवीसी ४ बीशी ५ प्रश्नोत्तर-रत्नमाला वीशी ६ कर्म बतीसी ७ शील बतीसी बालावबोध ८ गुणस्थानस्त और अनेक पद उपलब्ध हैं। नैषध-काव्य पर भी आपके ३६ हजारी वृत्ति बनानेका उल्लेख है। डेकन कालेजमे इसकी दो प्रतिया विद्यमान है।*

---

* हमारे संग्रहके जिनराज सूरि प्रवंधमें विशेष बातें यह हैं :-

आपने ६ मुनियोंको उपाध्याय, ४१ को वाचक पद और १ साध्वीजी को प्रवर्तनी पद दिया, ८ बार शत्रुञ्जयकी यात्रा की, पाटणके संघके साथ गौडीपार्श्वनाथ, गिरनार, आबू, राणकपुरकी यात्रा की, नवानगरके

जिनरतन सूरि

(पृ० २३८ से २४७)

मरुधर देशके सेरुणा गाममें ओसवाल लूणिया गोत्रीय तिलोकसी शाहकी पत्नी तारा देवीकी कुक्षिसे (सं० १६७०) में आपका जन्म हुआ था। आठ वर्षकी लघुवयमें ही आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और जिनराज सूरिके पास अपने बान्धव और माताके साथ (सं० १६८४) में दीक्षा ग्रहण की। थोड़े दिनोंमें ही शास्त्रोंका अध्ययन कर देश-विदेशोंमें विहार कर भव्य जनोंको प्रतिबोध देने लगे। ×आपके गुणोंसे योग्यताका निर्णय कर जिनराज सूरिजीने अहमदाबाद बुलाकर आपको उपाध्याय पदसे अलंकृत किया। इस समय जयमल, तेजसीने बहुत-सा द्रव्य व्यय कर उत्सव किया था।

सं० १७०० में जिनराजसूरिजीका चतुर्मास पाटण था। उन्होंने स्वहस्तसे जिनरतन सूरिजीको पद स्थापना की, और अषाढ़ शुद्धा ६ को वे स्वर्ग सिधारे।

चतुर्मासके समयमें दोसी माधवादिने ३६००० जमसाई व्यय की, आगरेमें १६ वर्षकी अवस्थामें चिन्तामणि शास्त्रका पूर्ण अध्ययन किया, पालीमें प्रतिष्ठा की, रावल कल्याणदास और राय कुंवर मनोहरदासके आमन्त्रणसे जैसलमेर पधारे सबने धाड़ेसन प्रवेशोत्सव किया। आपके शिष्य प्रशिष्यों की संख्या ४१ थी।

× १ नाहटा थे (देखो पृ० २४६ में)

× गीत नं० ५ में तेजसी हैं। देखो पृ० २४७ × गीत नं० ४ में सदामी लिखा है।

पाटणसे विहार कर जिनरतन सूरिजी पाल्हणपुर पधारे, वहा संघने हर्षित हो उत्सव किया। वहांसे स्वर्णगिरिके संघके आग्रहसे वहां पधारे। श्रेष्ठिपीथेने प्रवेशोत्सव किया, वहासे मरुस्थलमें विहार करते संघके आग्रहसे बीकानेर पधारे, नथमल वेणेने बहुत-सा द्रव्य व्यय कर (प्रवेश-) उत्सव किया, वहासे उग्र विहार विचरते वीरमपुरमे (सं० १७०१) में संघाग्रहसे चतुर्मास किया।

चतुर्मास समाप्त होते ही बाहड़मेर (सं० १७०२) मे आये, संघके आग्रहसे चतुर्मास वही किया। वहासे विहार कर कोटडमें(सं० १७०३) चौमासा किया। चौमासा समाप्त होनेपर वहासे जेसलमेरके श्रावकोंके आग्रहसे जैसलमेर पधारे, शाह गोपाने प्रवेशोत्सव किया एवं याचकों को दान दे अपनी चंचल लक्ष्मीको सार्थक की। जेसलमेरके संघका धर्मानुराग और आग्रह सविशेष देख आचार्य श्रीने चार चतुर्मास (सं० १७०४ से १७०७ तक) वही किये। इसके पश्चात् आगरे संघके अत्याग्रहसे वहां पधारे। संघ बड़ा हर्षित हुआ, मानसिंहने बेगमकी आज्ञा प्राप्त कर प्रवेशोत्सव बड़े समारोहसे किया। व्रतग्रहणादि धर्मध्यान अधिकाधिक होने लगे। तीन चौमासा (सं० १७०८ से १७१०) करनेके पश्चात् चौथे चतुर्मासको (सं० १७११) भी संघने आग्रह कर वही रखे। वहा अशुभ कर्मोदयसे असमाधि उत्पन्न हुई। अषाढ शुक्ला १० से तो वेदना क्रमशः वृद्धि होनेसे औषधोपचार कराया गया, पर निष्फल देख आपने अपने आयुष्यका अन्त ज्ञात कर अपने मुखसे अनशनोच्चार एवं ८४ लाख जीवयोनियोंसे क्षमत क्षमणा कर समाधिपूर्वक श्रावण बदी ७ सोमवारको

हर्षलाभको पदस्थापन कर स्वर्गवासी हुए। सर्वत्र शोक छा गया, पर भावीपर जोर भी नहीं चल सकता। आखिर अन्त्येष्टि क्रिया बडी धूमधामसे कर दाहस्थलपर सुन्दर स्तूप निर्माण कर श्रावक संघने गुरुभक्तिका आदर्श परिचय दिया, भक्ति स्मृतिको चीरजीवन की। (जिनराज सूरि शिष्य) मानविजयने जिन कमलदर्शन भी सं० १७११ श्रावण शुद्धा ११ शनिवारको आगरेमें यह निर्वाण रास रचकर गुरु-भक्ति द्वारा कवित्व सफल किया।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० २४५ से २४८)

बीकानेर निवासी गणधर-चोपडा गोत्रीय सहसमल (सहसकरण) की पत्नी राजलदे (सुपीयारदे) के आप पुत्ररत्न थे। आपने १२ वर्षकी लघुवयमें वैराग्यवासित होकर जिनरत्न सूरिके हाथसे जेसलमेरमें दीक्षा ग्रहण की। श्रीसंघने उत्सव किया, १८ वर्षकी वयमें (सं० १७११) जिनरत्न सूरिजी आगरेमें थे और आप राजनगरमें थे, वहां) जिनरत्न सूरिके वचनानुसार पद प्राप्त हुआ और नाहटा जयमल, तेजसी (जिनरत्नपद महोत्सवकर्त्ता) की माता कस्तूरांने पदोत्सव किया। (गीत नं० २)

नं० ५ कवित्तसे ज्ञात होता है कि आपने पंचनदी साधन की थी। आपके रचित कई स्तवनादि हमारे संग्रहमें हैं। सं० १७३५ आषाढ शुक्ला ८ खम्भातमें आपने २० स्थानक तप करना प्रारम्भ किया था। तत्कालीन गच्छके यतियोंमें प्रविष्ट शिथि-

लताको निवारणार्थ सं० १७१८ आसू सुदी १० सोमवार बीकानेरमे (१४ बोलोंकी) व्यवस्था की थी, प्रस्तुत व्यवस्थापत्र हमारे संग्रहमे है।

जिनसुख सूरि

(पृ० २४६ से २५१)

बोहरा गोत्रीय (पीचानख) रूपचन्द शाहकी भार्या रतनादे (सरूप दे) की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। आपने लघुवयमे दीक्षा ग्रहण की थी। सं० १७६२ आषाढ़ शुक्ला ११ को सूरतमे जिनचन्द सूरिने आपको स्वहस्तसे श्री संघ समक्ष गच्छनायक पद प्रधान किया था। उस समय पारख सामीदास, सूरदासने पद महोत्सव बडे धूमसे किया था। रात्रिजागरण श्रावकस्वामीवात्सल्य यति वस्त्र परिधापनादिमे उन्होंने बहुत-सा द्रव्य व्ययकर भक्ति प्रदर्शित की।

सं० १७८० के ज्येष्ठ कृष्णाको अनशन आराधन कर रिणीमे जिनभक्ति सूरजीको अपने हाथसे गच्छनायक पद प्रदानकर स्वर्ग सिधारे। श्री संघने अन्त्येष्टि क्रियाके स्थानपर स्तूप बनाया और उसकी माघ शुक्ला षष्टीको जिनभक्तिसूरिजीने प्रतिष्ठा की थी। आपके रचित जेसलमेर-चैत्यपरिपाटी स्तवनादि एवं गद्य (भाषा) मे (सं० १७६७ मे पाटणमे रचित) जेसलमेर श्रावकोंके प्रश्नोंके उत्तरमय सिद्धान्तीय विचार (पत्र ३५ जय० सं०) नामक ग्रन्थ उपलब्ध है।

जिनभक्तिसूरि

(पृ० २५७)

सेठिया हरचन्दकी पत्नी हरसुखदे की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। आपने छोटी उम्रमे ही चारित्र लेकर सद्गुरुको प्रसन्न किया था। जिनसुख सूरिजीने आपको स० १७७६ ज्येष्ठ कृष्णा तृतीयाको रिणीमे स्वहस्तसे गच्छनायक पद प्रदान किया था। उस समय रिणी सघने पद-महोत्सव किया। आपके रचित कई स्तवनादि प्राप्त हैं।

जिनलाभसूरि

(पृ० २६३ से २६६ एव ४१४ से ४१६)

विक्रमपुरनिवासी बोथरे पचाननकी धर्मपत्नी पदमा दे ने आपको जन्म दिया। आपने लघु वयमे जिनभक्ति सूरिजीके पास दीक्षा ग्रहण की। आपके गुणोसे प्रसन्न होकर सूरिजीने माडवी बन्दरमे आपको अपने पदपर स्थापन किया था।

स० १८०४ भुज, वहासे गुढ होकर १८०५ मे जेसलमेर पधारे, वहा १८०८।१० तक रहे। उसके पीछे बीकानेरमे (१८१० से १८१५ तक) ५ वर्ष रहकर स० १८१५ को वहासे निकलकर गारवदेसर शहरमे (१८१५) चोमासा किया। वहा ८ महीने विराजकर पश्चात् (मि० मि० ३) विहारकर थली प्रदेशको बदाते हुए जेसलमेरमे प्रवेश किया। वहा (१८१६-१७-१८-१६) ४ वर्ष अवस्थितीकर लोद्रव तीर्थमे सहस्त्रफणा पार्श्वनाथजीकी यात्रा की। वहासे पश्चिमकी ओर विहारकर गोडीपार्श्वनाथकी यात्रा कर

गुढे (सं० १८२०) मे चौमासा किया। चतुर्मासके अनन्तर शीघ्र विहारकर महेवा प्रदेशको वंदाकर महेवेमे नाकोडे पार्श्वनाथकी यात्रा की, वहासे विहारकर जलोलमे (सं० १८२१) मे चतुर्मास किया। वहासे खेजडले, खारिया रह कर रोहीठ, मंडोवर, जोधपुर, तिमरी होकर मेडते (१८२३) पधारे। वहा ४ महीने रहकर जैपुर शहर पधारे, वह शहर क्या था मानो स्वर्ग ही पृथ्वीपर उतर आया हो, वहा वर्ष दिनकी भाति और दिन घडीकी भाति व्यतीत होते थे। जैपुरके संघका अत्याग्रह होनेपर भी पूज्यश्री वहा नही ठहरे और मेवाडकी ओर विहारकर यश प्राप्त किया। उदयपुरसे १८ कोसपर स्थित धूलेवामे ऋषभेशकी यात्राकर उदयपुर (१८२४) पधारे और विशेष विनतीसे पालीवालै (१८२५) पाट विराजे नागोर (का संघ) बीचमे अवश्य आयगा, यह जानते हुए भी साचौर (अपने मनकी तीव्र इच्छासे (१८२६) पधारे। इस समय सूरतके धनाढ्योंने योग्य अवसर जानकर विनती पत्र भेजा और पूज्यश्री भी उस ओर विहार करनेसे अधिक लाभ जान, (१८२७) सूरत पधारे।

वहाके श्रावकोंको प्रसन्न कर आप पैदल विचरते हुए (१८२८) राजनगर पधारे। वहा तालेवरने बहुत उछव किये और २ वर्ष तक रात दिन सेवा की। वहासे श्रावक संघके साथ शत्रुजय गिरनारकी यात्रा कर (१८३०) वेलाउलके संघको वंदाया। वहासे मांडवी (१८३१) पधारे। वहा अनेकों कोट्याधीश और लक्षाधिपति व्यापारी निवास करते थे। समुद्रसे उनका व्यापार चलता

मार्गशीर्ष महिनेमें आबूगिरिकी यात्रा कर चतुर्मास बीलाड़े (१८२३) रहे।

था। उन्होने १ वर्ष तक खूब द्रव्य किया। वहासे अच्छे महूर्तमे विहार कर भुज (१८३२) आये। वहाव सघने भी श्रेष्ट भक्ति की। इस प्रकार १८ वर्ष नवीन नवीन देशोमे विचर। कवि कहता है कि अब तो बीकानेर शीघ्र पधारिये। अन्य साधनोसे ज्ञात होता है, कि भुजसे विहार कर १८३३ का चोमासा मनरा-बन्दर कर स० १८३४ का चोमासा गुढा किया और वहीं स्वर्ग सिधारे (गीत न० ४)।

गहुली न० १ मे पूज्यश्रीके पधारनेपर बीकानेरमे उत्सव हुआ, उसका वर्णन है।

गहुली न० २ म कवि कहता है कि कच्छसे आप यहा पधारत थे, पर जेसलमेरी सघने बीचमे ही रोक लिया। वहाके लोग बडे मुह मीठे होते हैं, अत पूज्यजीको लुभा लिया। पर बीकानेर अब शीघ्र आवें।

आत्म-प्रबोध ग्रन्थ आपका रचित कहा जाता है। आपके रचित कइ स्तवनादि हमारे सग्रहमे हैं, और दो चोवीसीये प्रकाशित भी हो चुकी हैं।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० २९७ से २९९)

रूपचन्दकी भार्या केशरदेके आप पुत्र थे। आपने मरुस्थलमे लघु वयमे ही दीक्षा ली थी और गुढेमे जिनलाभ सूरिजीने स्वहस्तसे आपको गच्छनायक पद प्रदान किया था, उस समय श्रीसघने उत्सव किया था।

गहुली सं० १ [illegible] [illegible] सं० १८३४ माघव माससे बनाई [illegible]।

गहुली सं० २ चारित्रनन्दनकी सं० १८[illegible] [illegible] ८ शु० [illegible] बीकानेरमे बनाई है। उस समय पूज्यश्री [illegible] थे, गहुलीमे उसके पूर्व [illegible] [illegible] किया गया है, एवं बीकानेर पधारने[illegible] [illegible] की गयी है।

जिनहर्ष सूरि

(पृ० ३००)

बोहरा गोत्रीय श्रेष्ठि तिलोकचन्दकी भार्या तारादेके कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। कवि मतिमानने आपके बीकानेर पधारनेके समयके उत्सव वर्णनात्मक यह गहुली रची है। गहुलीमे बीकानेरके प्रसिद्ध देवालय चिन्तामणि और आदीश्वरजीके दर्शन करनेको कहा गया है।

जिनसौभाग्य सूरि

(पृ० ३०१)

आप कोठारी कर्मचन्दकी पत्नी करणदेवीकी कुक्षिसे उत्पन्न हुए थे। सं० १८९२ मार्गशीर्ष शुक्ला ७ गुरुवारको जिनहर्षसूरिजीके पद पर नृपवर्य रत्नसिंहजी आदिके प्रयत्नसे विराजमान हुए थे। उस समय खजानची लालचन्दने पद स्थापनाका उत्सव किया था, और याचकोंको दान दिया था।

हमारे संग्रहके एक पत्रमे लिखा है कि जिनहर्षसूरिजीके स्वर्ग सिधारनेके पश्चात् पद किसको दिया जाय, इसपर विवाद हुआ। जिन-सौभाग्य सूरिजी उनके दीक्षित शिष्य थे और

महेन्द्र सूरिजी अन्य यतीके शिष्य थे, पर जिनहर्षसूरिजीने उन्हें अपने पास रख लिया था। अत अन्तमें यह निर्णय किया गया कि दोनोंके नामकी चिट्ठियां डाल दी जॉय, जिसके नामसे चिट्ठी उठे उसे ही पद दिया जाय। यह बात निश्चित होने-पर सौभाग्य सूरिजी वयोवृद्ध और गच्छके मुख्य यतियोंको लेनेके लिये बीकानेर आये। पीछेसे चिट्ठी डालनेके निश्चित दिनके पूर्व ही कुछ यतीओ और श्रावकोंके पक्षपातसे जिनमहेन्द्र सूरिजीको पद दे दिया गया। इधर आप मुख्य यतियोंके साथ मंडोवर पहुचे और वहाका वृतान्त ज्ञात कर बीकानेर वापिस पधारे। यहांके यतियों श्रावकों और राजा रत्नसिंहजीका पहलेसे ही इन्हें पद देनेका पक्ष था, अत दे दिया गया। इन्हीं बातोंके सबत इस गहुलीमें पाये जाते हैं।

इनके पश्चात् पट्टधरोंका क्रम इस प्रकार है —

जिनहंससूरि—जिनचद्रसूरि—जिनकीर्त्तिसूरि, इनके पट्टधर जिनचारित्रसूरिजी अभी विद्यमान हैं।

भूल सुधार

जिनेश्वरसूरि (प्रथम) के शि० जिनचद्रसूरिजीका नाम छूट गया है। उनका रचित 'सवेग-रगशाला' ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

भावप्रभसूरि

(पृ० ४६)

साल्हू शाखाके लुणिग कुलमें मच्छ शाहकी भार्या राजलदेके आप पुत्र रत्न थे। श्री जिनराज सूरि (प्रथम) के आप (दीक्षित) सुशिष्य तथा सागरचन्द्रसूरिजीके पट्टधर थे, आप साध्वाचारका प्रशंसनीय पालन करते थे और अनेक सद्गुणोंके निवासस्थान थे।

कीर्त्तिरत्न सूरि

(पृ० ५१-५२, पृ० ४०१-४१३)

ओसवंशके संखवाल गोत्रमे शाह कोचर बड़े प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं, उनके सन्तानीय (वंशज) आपमल्ल और देपा हुए। इनमे देपाके देवलदे नामक धर्मपत्नी थी, जिसकी कुक्षिसे लक्खा, भादा, केल्हा, देल्हा ये चार पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें देल्हा कुंवरका जन्म सं० १४४६ मे हुआ था, १४ वर्षकी लघु वयमें (सं० १४६३ आषाढ़ वदी ११) मे आपने दीक्षा ग्रहण की थी। श्री जिनवर्द्धन सूरिजीने आपका शुभ नाम 'कीर्त्तिराज' रखा और शास्त्रोंका अध्ययन भी स्वयं आचार्यश्रीने कराया। विद्वान होनेके पश्चात् सं० १४७० में वाचनाचार्य पद (जिनवर्द्धन सूरिजीने) और सं० १४८० मे उपाध्याय पद महेवेमे जिनभद्र सूरिजीने प्रदान किया, अतः माता देवलदेको बड़ा हर्ष हुआ। सिन्धु और पूर्वदेशोंकी तरफ विहार करते

हुए आप जैसलमेर पधारें। वहा गच्छनायक जिनभद्र सूरिजीने योग्य जानकर स० १४९७ माघ शुक्ला १० को आचार्य पद प्रदान किया और "कीर्तिरत्न सूरि" के नामसे प्रसिद्धि की। उस समय आपके भ्राता लक्खा और केल्हाने विस्तारसे पद महोत्सव किया।

स० १५२५ वैशाख वदी ५ को २५ दिनकी अनशन आराधना कर समाधिपूर्वक वीरमपुरमे आप स्वर्ग सिधारे। जिस समय आपका स्वर्गवास हुआ, आपके अतिशयसे वहाके वीर जिनालयमे देवोने दीपक किये और मन्दिरके दरवाजे बन्द हो गये। वहा पूर्व दिशामें सबने स्तूप बनवाया जो अब भी विद्यमान है। वीरमपुर, महेवके अतिरिक्त जोधपुर, आबू आदि स्थानोंमे भी आपकी चरणपादुकाए स्थापित की गयीं। जयकीर्त्ति और अभैविलास कृत गीत न० ७-८ से ज्ञात होता है कि स० १८७९ वैशाख (आषाढ) कृ० ११ १० को गडाले (नाल-बीकानेरसे ४ कोस) में आपका प्रासाद बनवाया गया था।

गीत न० ५ (सुमतिरंग कृत छंद) और न० ८ मे कुछ नवीन बातोंके साथ विस्तारसे वर्णन हैं जिनका सार यह है —

जालधर देशके सेसवाली नगरीमे कोचर शाह निवास करते थे, उनके दो भार्यायें थीं, जिनमे लघु पत्नीके रोलू नामक पुत्र हुआ, उसे एक दिन अर्द्ध रात्रिके समय काले सर्पने डक मारा। विषसे अचेतन होनेसे कुटम्बीजन उसे दहनार्थ, स्मशान ले गये, इसी समय खरतर गच्छनायक जिनेश्वरसूरिजी वहीं थे उन्होने अपने आत्मबलसे उसे निर्विष कर दिया। रोलू सचेत हो

घर आया, कुटम्बमें आनन्द छा गया और कोचर शाह तभीसे (सं० १३१३) खरतर गच्छानुयायी श्रावक हो गये और उन्होंने जिनेश्वरसूरिजीके हस्तकमलसे जिनालयकी प्रतिष्ठा करवाई। इसके बाद कोचर शाह कोरंटमें जा बसे, वहां उनके कुलगुरु (पूर्वके गुरु, अन्य गच्छीय) के पुनः अपने गच्छमें आनेके लिये बहुत अनुरोध करनेपर भी आप विचलित न हुए।

वहां सत्कार-दानादि शुभ कृत्य करते हुए आनन्दपूर्वक रहने लगे। रोलूके आपमल्ल और देपमल्ल नामक दो पुत्र हुए। उनमें देपमल्लकी भार्या देवलदेकी कुक्षिसे १ लक्खा, २ भादा, ३ केल्हो, ४ देल्हा ये ४ पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें लक्खोको लक्ष्मीने प्रसन्न हो ७ पीढ़ियोंतक रहनेका वरदान दिया और वे वीसलपुरमें रहने लगे भादा जैसलमेर, केल्हा महेवा रहने लगा और चौथे लघु पुत्र देल्हेका वृतांत यह है: सं० १४४९ मे आपका जन्म हुआ, १३ वर्षकी अवस्थामे विवाह करनेके लिये आप वरात लेकर राडद्रह जाने लगे। मार्गमें खीमजथलके समीप जान (वरात) ठहरी वहां एक खेजड़ीका वृक्ष था उसे देखकर एक राजपूतने कहा कि इस वृक्षके ऊपरसे जो बरछी निकाल देगा मैं उससे अपनी पुत्रीका पाणिग्रहण कर दूंगा। देल्हे कुमारके इशारेसे उनके सेवक (नाई) ने राजपूतके कथनानुसार कर दिखाया पर इस कार्यको करनेमे अधिक परिश्रम लगनेसे उसका प्राणान्त हो गया, इस घटनासे

*अन्य प्रमाणोंमें इसका कारण और ही पाया जाता है पर उन सबका विचार स्वतंत्र निबंधमें करेंगे।

देल्ह-कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया और (खरतर) श्री क्षेमकीर्तिजीको वदनाकर (अपने) दीक्षा ग्रहण करनेके भाव प्रकट किये। एव उनके कथनानुसार जिनवर्द्धन सूरिजीके पास स० १४६३ मे दीक्षा ग्रहण की, दीक्षा ग्रहण करनेके अनन्तर आपने शास्त्रोका अध्ययन कर गीतार्थता प्राप्त की। स० १४७० मे आपकी योग्यता देखकर जिनवद्धनसूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया।

इधर जैसलमेरके जिनालयसे क्षेत्रपालके स्थानान्तर करनेके कारण जिनवर्द्धनसूरिजीसे गच्छभेद हुआ और उनकी शाखा पीपलिया नामसे प्रसिद्ध हुई, बादमें जिनभद्र सूरिजीको स्थापित किया जिनवर्द्धन सूरिजीने कीर्तिराजजी (देल्हकुमार) को अपने पास बुलाया, पर आपको अर्द्धरात्रिके समय वीर (देवता) ने कहा कि उनका आयुष्य तो मात्र ६ महीनेका ही है और जिनभद्र सूरिजीकी भावी उन्नति होने वाली है। इससे आपने जिनवर्द्धन सूरिजीके पास न जाकर चार चतुमास महेवमे ही किये। इसके पश्चात् जिनभद्र सूरिजीके बुलानेपर आप उनके पास पधारे। उन्होने स० १४८० मे आपको पाठक पद प्रदान किया। शाह लखा और केल्हा महेवेसे जैसलमेर आये और गच्छनायकको आमत्रित कर उन्होने स० १४९७ मे कीर्तिराजजीको सूरि पद दिलवाया। लखा और केल्हाने प्रचुर द्रव्य व्यय कर, महोत्सव किया। उन्होने नलेश्वर, गिरनार, गोडीपार्श्वनाथ और सोरठ (सत्रुजय आदि) के चैत्यालयोकी यात्रा की, स्वधर्म लाहिण की एव आचार्य श्रीको चातुर्मास कराया। कीर्ति-

रत्न सूरिजीके ५१ शिष्य थे, सं० १५८५ चै० शु० ५ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपने अपने कुटम्बियोंको ७ शिक्षायें दीं जो इस प्रकार हैं: १ मालवा, थट्टा, सिंध और संखवाली नगरी न जाना, २ गच्छभेदमें शामिल न होना, ३ पाटपन्त होना, ४ दीक्षा न लेना, ५ कोरटे और जैसलमेरमे देहरे बनवाना, ६ जहां बसो, नगरके चौराहेसे दाहिनी ओर बसना ७........ ....। आपके रचित 'नेमिनाथ काव्य' प्रकाशित है एवं और भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं। आपकी शाखामें अभी जिनकृपाचन्द्र सूरिजी एवं कई यतिगण विद्यमान है।

उ० जयसागर

(पृ० ४००)

उज्जयंत शिखर पर नरपाल संघपतिने 'लक्ष्मी तिलक' नामक विहार बनाना प्रारम्भ किया, तब अम्बा देवी, श्री देवी आपके प्रत्यक्ष हुई और सरसा पार्श्व जिनालयमे श्रीशेष, पद्मावती सह प्रत्यक्ष हुआ था। मेदपाट-देशवर्ती नागद्रहके नवखण्डा-पार्श्वचैत्यालय में श्री सरस्वती देवी आप पर प्रसन्न हुई थी। श्री जिनकुशल सूरि जी आदि देवता भी आप पर प्रसन्न थे, आपने पूर्वमे राजगृह नगर (उदंड) विहारादि, उत्तरमें नगरकोट्टादि, पश्चिममे नागद्रह आदि की राज सभाओंमे वादिवृन्दोंको परास्त कर विजय प्राप्त की थी आपने संदेहदोलावली वृत्ति, पृथ्वीचन्द्र चरित्र, पर्वरत्नावली, ऋषभ स्तव, भावारिवारण वृत्ति एवं संस्कृत प्राकृतके हजारों

स्तवनादि बनाये। अनेको श्रावकोको सघपति बनाये और अनेक शिष्योको पढाकर विद्वान बनाये।

वि० आपके शिष्यगुरु श्री जिनराज सूरिजी और विद्यागुरु जिनवर्द्धन सूरिजी थे। स० १४७५ के लगभग जिनभद्र सूरजीने आपको उपाध्याय पद दिया था। आपने अनेको देशोमें विहार किया और अनेको कृतिया रची थीं, जिनमें मुख्य ये हैं —

(१) पर्वरत्नावली कथा (१४७८ पाटण, गा० ३२१) (२) विज्ञप्ति त्रिवेणी (स० १४८४ सिन्धु देश मल्लिकवाहणपुरसे पाटण सूरिजीको प्रेषित), (३) पृथ्वीचन्द्र चरित्र (स० १५०३ प्रल्हादनपुर शि० सत्यरुचिकी प्रार्थनासे रचित), (४) सदेहदोलावली लघुवृत्ति स० १४९५, (५-६-७) गुरुपारतन्त्र्य वृत्ति, उपसर्गहर, भावारिवारणवृत्ति (८) भाषामें—वयरस्वामी रास (गा० ३६ स० १४९०) (९), कुशलसूरि चौ० (१४८१ मल्लिकवाहणपुर) और सस्कृत भाषाके स्तवनादि (स० १५०३ लि० पत्र १२ जय० भ०) भी अनेको उपलब्ध हैं। आपके शिष्य परम्परादिके लिये देखें —विज्ञप्ति त्रिवेणी, जैनसाहित्यनोसक्षिप्तइतिहास और युगप्रधान—जिनचन्द्र सूरि (पृ० २०३), जैनस्तोत्रसन्दोह भा० २। प्रस्तुत ग्रन्थके पृ० ३३ में मुद्रित खरतर पट्टावली भी आपके आदेशसे रचित है।

क्षेमराजोपाध्याय

(पृ० १३४)

छाजहड गोत्रीय शाह लीलाकी पत्नी लीलादेवीके आप पुत्र थे।

सं० १५१६ से गच्छ नायक जिनचन्द्र सूरिजीने आपको दिक्षा दी थी। वा० सोमध्वजके आप सुशिष्य थे और उन्होंने ही आपको विद्याध्ययन कराया था। आपके रचित साहित्यकी संक्षिप्त सूची इस प्रकार है :

(१) उपदेश सप्ततिका (सं० १५४७ हिसारकोट वास्तव्य श्रीमाली पद्ध पर्पट दोदाके आग्रहसे रचित, जैनधर्म प्रसारक सभासे प्रकाशित) ।

(२) इक्षुकार चौ० गा० ५० (६५) हमारे संग्रहमे नं० २५०

(३) श्रावक विधि चौ० गा० ७० (सं० १५४६) हमारे संग्रहमे नं० ७६४ ।

(४) पार्श्वनाथ रास (गा० २५) ५ श्रीमंधरस्तवन, जीरावलास्त०, पार्श्व १०८ नाम स्तोत्र, वरकाणास्त०, ज्ञानपंचमीस्त०, वीरस्त०, समवसरण स्तवन, उत्तराध्ययन सज्झायादि उपलब्ध हैं ।

सं० १५६६ आश्विन सु० २ को इनके पास कोटड़ा वास्तव्य मं० लोला श्रावकने व्रत ग्रहण किये थे, जिसकी नोंध १ गुटकेमे है। अन्य साधनोंसे आपकी परम्परा इस प्रकार ज्ञात होती है :

(१) जिनकुशल सूरि, (२) विनयप्रभ (३) विजय तिलक (४) क्षेमकीर्ति (इन्होने जीरावला पार्श्वनाथके प्रसाद ११० शिष्य किये) इनके नामसे क्षेम शाखा प्रसिद्ध हुई, (५) क्षेमहंस, (६) सोमध्वजजीके (७) आप शिष्य थे। आपके मुख्य ३ शिष्य थे, जिनमेसे प्रमोदमाणिक्य शि० जयसोम और उनके शि० गुणविनयके लिये देखे युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि (पृ० १६७)

देवतिलकोपाध्याय

[पृ० ५५]

भरतक्षेत्रके अयोध्या-बाहड गिरि नामक प्रसिद्ध स्थानमे ओसवाल वंशीय भणशाली गोत्रके शाह करमचन्द निवास करते थे और उनकी सुहागादे नामक पत्नीसे आपका जन्म हुआ था। ज्योतिषीने आपका जन्म नाम 'देदो' रखा। देदा कुमर अनुक्रमसे बडे होने लगे और ८ वर्षकी वयमें स० १५४१ मे दीक्षा ग्रहण की एवं सिद्धान्तोंका अध्ययन कर स० १५६७ मे उपाध्याय पदसे विभूषित हुए।

स० १६०३ मार्गशीर्ष शुक्ला ५ को जैसलमेरमे अनशन आराधनापूर्वक आपकी सद्गति हुई। अग्नि-संस्कारके स्थलपर आपका स्तूप बनाया गया, जो कि बडा प्रभावशाली और रोगादि दुःखोंको विनाश करनेवाला है।

स० १५८३-८५ मे आपने दो शिलालेख-प्रशस्तियें रची थी, देखे जै० ले० स० न० २१५४।५५

आपके लिखित एवं संशोधित अनेको प्रतियां बीकानेरके कई भण्डारोंमे विद्यमान हैं। आपके हस्ताक्षर बडे सुन्दर और सुवाच्य थे।

आपके सुशिष्य हर्षप्रभ शि० हीरकलशकृत कृतियोंके लिये देखें यु० जिनचन्द्र सूरि चरित्र पृ० २०६ एवं आपके शि० विजयराज शि० पद्ममन्दिरकृत प्रवचनसारोद्धार बालावबोध (स० १६५१) श्री पूज्यजीके संग्रहमें उपलब्ध है।

श्री देवतिलकोपाध्यायजीकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी। सागरचन्द्र सूरि (१५ वीं) शि० महिमराज शि० दयासागरजी के शि० ज्ञानमन्दिरजीके आप सुशिष्य थे। महिमराजके शि० सोमसुन्दरकी परम्परामें सुखनिधान हुए, जिनका परिचय आगे लिखा जायगा।

दयातिलकजी

[पृ० ४१६]

आप उपरोक्त क्षेमराजोपाध्यायजीके शिष्य थे। आपके पिताका नाम वच्छाशाह और माताका वाल्हादेवी था। आप नव-विध परिग्रहके त्यागी और निर्मल पंचमहाव्रतोंके पालनेमे शूरवीर थे।

महोपाध्याय पुण्यसागर

[पृ० ५७]

उदयसिंहजीकी भार्या उत्तम दे ने आपको जन्म दिया था। श्रीजिनहंस सूरिजीने स्वहस्तकमलसे आपको दीक्षा दी थी।

आप समर्थ विद्वान और गीतार्थ थे। आपके एवं आपके शिष्य पद्मराज कृत कृतियों आदि का परिचय युगप्रधान जिनचंद्र सूरि ग्रन्थके पृष्ट १८९ मे दिया गया है।

उपाध्याय साधुकीर्त्तिजी

[पृ० १३७]

ओशवाल वंशीय सचिंती गोत्रके शाह वस्तिगकी पत्नी खेमलदेके आप पुत्र थे। दयाकलशजीके शिष्य अमरमाणिक्यजीके आप

सुशिष्य थे। आप बड़े विद्वान थे। सं० १६२५ मि० व० १२ आगरेमें अकबर सभामें तपागच्छवालोंको पोपटकी चर्चामें निरुत्तर किया था और विद्वानोंने आपकी बड़ी प्रशंसा की थी, संस्कृतमें आपका भाषण बड़ा मनोहर होता था।

सं० १६३२ माधव (वैशाख) शुक्ला १५ को जिनचन्द्र सूरि जीने आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था और अनेक स्थानोंमें विहार कर अनेक भव्य आत्माओंको आपने सन्मार्गगामी बनाया था।

सं० १६८६ में आपका शुभागमन जालोर हुआ, वहां माह कृष्ण पंचम आयुष्यकी अल्पताको जानकर अनशन उच्चारण पूर्वक आराधना की और चतुर्दशीको स्वर्ग सिधारे। आपके पुनीत गुणोंकी स्मृतिमें वहां स्तूप निर्माण कराया गया उसे अद्यावधि जैन समुदाय वन्दन करता है।

सं० १६२२ के शास्त्रार्थ विजयका विशद वृत्तांत आपके सतीर्थ कनक सोम कृत जयतपदवेलिमें विस्तारसे है। सरल और विरोधी होनेसे इसका सार यहां नहीं दिया गया, जिज्ञासुओंको मूल वेलि पढ़ लेनी चाहिये।

आपके एवं आपके शिष्य प्रशिष्योंकी कृतियोंकी सूची यु० जिनचन्द्र सूरि ग्रन्थके पृ० १९२ में दी गयी है। आपकी परम्परामें कविवर धर्मवर्धन अच्छे कवि हो गये हैं, जिनका परिचय "राजस्थान" पत्र (वर्ष २ अंक २) में विस्तारसे दिया गया है।

महोपाध्याय समयसुन्दर

(पृ० १८६ से १४८)

पोरवाड ज्ञातीय रूपसी शाहकी भार्या लीलादेकी कुक्षिसे

सांचोरसे आपका जन्म हुआ था। नवयौवनावस्थामें युग जिनचन्द्र सूरिजीके हस्तकमलसे आप दीक्षित हुए थे। श्री सकलचन्द्रजीके आप शिष्य थे और तर्क व्याकरण एवं जैनागमोंका उत्तम अभ्यास कर (गीतार्थता-)पांडित्य प्राप्त किया था। सम्राट अकबरको एक पद (राजा नो ददते सौख्यम्) चमत्कृत ८ लाख अर्थ बतलाकर के (रञ्जित) किया था। विद्वद् समाज और श्री संघमें आपकी असाधारण ख्याति थी। लाहोरमें जिनचन्द्र सूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया था। आपके महत्वपूर्ण कार्यकलाप ये है.

(१) जैसलमेरके रावल भीमको प्रसन्न कर सवणों द्वारा मारे जानेवाले सांडा-जीवोंको छुड़ाया था।

(२) शीतपुर (सिद्धपुर) में मखनूम महमद शेखको प्रतिबोध देकर पांच नदीके (जलचर) जीवों विशेषतया गायोंकी रक्षाका पटह बजवानेका प्रशंसनीय कार्य किया था।

(३) मंडोवराधिपतिको रञ्जित कर मेडतेमें वाजे बजवाने द्वारा शासन प्रभावना की थी।

(४) परोपकारार्थ अनेकों ग्रन्थों भाषा काव्योंकी (वृत्तिये, गीत, छन्द) प्रचुर प्रमाणमें रचना की थी।

(५) गच्छके सभी मुनियोंको (गच्छ) पहिरामणी की थी।

(६) सं० १६९१ में क्रिया-उद्धारकर कठिन साध्वाचार पालनका आदर्श उपस्थित किया था।

(७) आपका शिष्य-परिवार बड़ा विशाल और विद्वान् था। वादी हर्ष नन्दन जसे आपके उद्भट विद्वान् शिष्य थे। श्री जिनसिंह

सूरिजीने लवेरमे आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था। स० १७०२ के चैत्र शुक्ला त्रयोदशीको अहमदाबादमे अनशन आराधना-पूर्वक आप स्वर्ग सिधारे। आपके विस्तृत कृति-कलापकी संक्षिप्त सूची यु० जिनचन्द्र सूरि ग्रन्थके पृ० १६८ मे दी गयी है।

यश कुशल

(पृ० १४६)

श्री कनकसोमजीके आप शिष्य थे। हमारे सग्रहके (अन्य) गीत द्वयसे ज्ञात होता है कि हाजीखानडेरे (सिंध) में आपका स्वर्गवास हुआ था। वहा आपका स्मृति मदिर है आपके शिष्य भुवनसोम शि० राजसागरके गीतानुसार आप वडे चमत्कारी थे और आपके परचे (चमत्कार) प्रत्यक्ष और प्रसिद्ध हैं। राजसागरने स० १७५६ फाल्गुन शुक्ला ११ को वहाकी यात्रा की। आपके गुरु कनकसोम-जीका परिचय देखे —युग० जिनचन्द्र सूरि पृ० १९४।

करमसी

(पृ० २०४)

आपकी जन्मभूमि जेसलमेर है। आपके पिताका नाम चापा शाह, माताका चापल दे और गोत्र चोपडा था। आप वडे तपस्वी थे। २५० वले (छट्ठ भक्त याने २ उपवास) और निवी आम्बि-लादि तो अनेको किये थे। वैशाख शुक्ला ७ को आपने सथारा किया था और आपका गच्छ खरतर था।

सुखनिधान

(पृ० २३६)

आप हुंबड गोत्रीय और श्री समयकलशजीके सुशिष्य थे। आपके लिखित अनेकों प्रतिया हमारे संग्रहमे हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि-सन्तानीय थे। आपकी परम्पराके नाम ये है: (१) सागरचन्द्रसूरि, (२) वा० महिमराज, (३) वा० सोम-सुन्दर, (४) वा० साधुलाभ, (५) वा० चारुधर्म, (६) वा० समय-कलशजीके आप शिष्य थे। आपके शिष्य गुणसेनजीके रचित भी कई स्तवनादि उपलब्ध है और उनके शिष्य यशोलाभजी तो अच्छे कवि हो गये है। उनके लिखित और रचित अनेकों कृतियां हमारे संग्रहमे है। विशेष परिचय यथावकाश स्वतन्त्र लेखमे दिया जायगा।

वाचनाचार्य पद्महेम

(पृ० ४२०)

आप गोलछा गोत्रीय चोलगशाहकी पत्नी चांगादेकी कुक्षिसे अव-तरित हुए थे। आपको लघुवयमे युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजीने अपने कर-कमलोंसे दीक्षित कर श्री० तिलककमलजीके शिष्य बनाए। ३७ वर्ष पर्य्यन्त निर्मल चारित्र-रत्नका पालन करते हुए सं० १६६१ मे वालसीसर पधारे, चातुर्मास वहीपर किया। ज्ञानबलसे अपना अन्त समय निकट जानकर विशेष रूपसे आराधना और पञ्च-परमेष्टिका ध्यान करते हुए छः प्रहरका अनशन व्रत पालनकर मिती भाद्रव कृष्णा १५ को मध्याह्नके समय स्वर्गलोकको प्रयाण कर गए।

लब्धिकल्लोल

(पृ० २०६)

श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखाके विमलरंगजीके आप शिष्य थे। आप श्रीमाली लाडण शाहकी पत्नी लाडिमदेके पुत्र थे। सं० १६८१ में गच्छपतिके आदेशसे आप भुज पधारे। वहां कार्त्तिक कृष्णा षष्ठीको अनशन आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ। शाह पीमा-हाथी-रामसिंह माटण आदि भुज नगरके श्रीमान श्रावकोंने उनसे पूर्व दिशाकी ओर आपकी चरणपादुकाएं मार्गशीर्ष कृष्णा ७ को स्थापित की गयी।

आपका विशेषपरिचय यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६में दिया गया है।

विमलकीर्त्ति

(पृ० २०८)

हुंबड गोत्रीय श्रीचन्द्रशाहकी पत्नी गवरादेवी आपकी जन्मदात्री थी। आपने सं० १६५२ माह सुदी ७ को साधुसुन्दरोपाध्यायके पास दीक्षा ग्रहण की। श्रीजिनराजसूरिजीने आपको वाचक पदसे अलंकृत किया था।

सं० १६९२ में (मुलतान चतुर्मास आये) किरहोर-सिन्धमें आप स्वर्ग सिधारे।

आपकी कृतियोंकी सूची युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १९३ में दी गई है। सं० १६७६ मि० सु० ६ जिनराजसूरिजीके उपदेशसे वा० विमलकीर्तिजीके पास श्राविका पमाने १२ व्रत ग्रहण किये।

वाचनाचार्य सुखसागर

(पृ० २५३)

वाचनाचार्यजी साध्वाचारकी कठिन क्रियाओंको पालन करनेमे बड़ा यत्न करते थे। सं० १७२५ मे गच्छनायकके आदेशसे और स्तम्भ तीर्थकी यात्राके लिये खम्भातमे चतुर्मास किया। चतुर्मास सानन्द पूर्ण हुआ। सर्व नर-नारी आपके वचनकलासे प्रसन्न थे। चतुर्मासके अनन्तर ज्ञानबलसे अपना आयुष्य अल्प ज्ञातकर अनशन आराधना पूर्वक मार्गशीर्ष कृष्णा १४ सोमवारको स्वर्ग सिधारे। उस समय आप सावचेतीके साथ उत्तराध्ययन सूत्रका श्रवण कर रहे थे, श्रावक समुदाय आपके सन्मुख बैठा था। स्वर्गप्राप्तिके पश्चात् वहां आपकी पादुकाएं स्थापित की गई।

वा० हीरकीर्ति

(पृ० २५६)

युग० श्रीजिनचन्द्रसूरिके शिष्य वा० तिलककमल शि० पद्महेमके शिष्य दानराज, निलयसुन्दर, हर्षराजादि थे। इनमे दानराजजीके शिष्य हीरकीर्ति गोलछा गोत्रीय थे। सं० १७२६मे जोधपुरमे आपका चतुर्मास था। वही श्रावण शुक्ला १४ को ८४ लाख जीवायोनियोंसे क्षमतक्षामणाकी, दो प्रहरके अणशण आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ।

आपकी स्मृतिमे इसी संवतमे माघ कृष्णा १३ सोमवारको (१) पद्महेम, (२) दानराज, (३) निलयसुन्दर, (४) हर्षराजकी पादुकाओंके साथ आपकी पादुकाएं भी स्थापित की गई।

आपकी परम्परादिके विषयमें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि ग्रन्थ (पृ० १७३) देखना चाहिये।

उ० भावप्रमोद

(पृ० २५८)

श्रीजिनराजसूरि (द्वितीय) के शि० भावविजयके शिष्य भावविनयजीके आप सुशिष्य थे। बाल्यावस्थामें ही आपने चारित्रको ग्रहण किया था। श्रीजिनरत्नसूरिजीने आपके निर्मलमतिकी प्रशंसा की थी और उनके पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरिजी तो आपको (विद्वतादि गुणोंके कारण) अपने साथ ही रखते थे। आप बड़े प्रभावशाली और उपाध्याय पदसे अलंकृत थे। सं० १७४४ माघ कृष्णा ५ गुरुवारके पिछले प्रहर, अनशन (भवचरिम-पचक्खाण) द्वारा समाधिपूर्वक आप स्वर्ग सिधारे।

आपके शि० भावसागर रचित सप्तपदार्थी वृत्ति (१७३० भा० सु० वेनातट, पत्र ३७) कृपाचन्द्र सूरि भं० (बं० नं० ४६ नं० ६११) में उपलब्ध हैं।

चंद्रकीर्ति

(पृ० ४२१)

सं० १७०७ पोष कृष्ण १ को निलाडेमें आपका अनशन आराधन सह स्वर्गवास हुआ। यह कवित्त आपके शि० सुमतिरंगने रचा है, जो कि अच्छे कवि थे। देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६, ३१५

कविवर जिनहर्ष

(पृ० २६१)

खरतर गच्छीय शान्तिहर्षजीके शिष्य कविवर जिनहर्ष अठ्ठा-

१८वी शताब्दीके सुप्रसिद्ध कवि थे। आपने मंद-बुद्धियोंके लाभार्थ शत्रुंजय-महात्म्य जैसे अनेकों विशाल ग्रंथोंकी भाषा चौपाई रचकर वहुत उपगार किया। आप साध्वाचार पालनेमें सदा उद्यम करते रहते थे, और आपके व्रत नियम अन्तिम अवस्था तक अखंडित थे। आपके अनेकानेक सद्गुणोंमे १ गच्छममत्वका त्याग। (जिनके उदाहरण स्वरूप सत्यविजय पन्यास रास प्रकाशित ही है) २ जन समुदाय अनुवृत्तिका त्याग। ३ ऋजुता ४ राग द्वेषका उपशम आदि मुख्य है। आप रास चौपाई आदि भाषा काव्योंके निर्माण करनेमे अप्रमत्त रह, ज्ञानका वडा विस्तार करते रहते थे।

आपके गच्छममत्व परित्यागके सद्गुणसे तपागच्छीय वृद्धि-विजयजीने आपके व्याधि उत्पन्न होनेके समयसे वड़ी सेवा-भक्ति और वैयावच्चकी थी और अन्तिम आराधना भी उन्होंने ही कराइ थी। पाटणमे आप वहुत वर्षों तक रहे थे, आपका स्वर्गवास भी वही हुआ, श्रावकोंने अंत-क्रिया (माडवी रचनादि) वड़ी भक्तिसे की। आपके विशाल कृतियों नोंघ जै० गु० क० भा० २ मे देखनी चाहिये। उसके अतिरिक्त और भी कइ रास आदि हमे उपलब्ध है, उनमे मुख्य ये है. १ मृगापुत्रचौ०(१७१५ मा० व० १० सत्यपुर) (२) कुसम श्री रास (१७१७ मि० १३) (३) यशोधर रास (१७४७ वै० सु० ८ पाटण) (४) कनकावती रास (अपूर्ण) ५ श्रीमतीरास (१७६१ .मा० सु० १० पाटण, ढाल १४, रामलालजी यतिका संग्रह) और स्तवन सज्झायादि अनेक उपलब्ध है।

कवि अमरविजय

(पृ० २४८)

आप वाचक उदय तिलक (जिनचंद्रसूरिशि०) के शिष्य थे। आप अच्छे विद्वान और सुकवि थे, आपके रचित कृतियोंकी संक्षिप्त नोंध इस प्रकार है

१ रात्रि भोजन चौ० (सं० १७८७ द्वि० भा० सु० ८ गु० नापासर, शांतिविजय आनंद)

२ सुमंगलारास (प्रमाद विजय) सं० १७७१ ऋतुराय पूर्णतिथि।

३ कालावेली चौ० (१७६७ आसातीज, राजपुर

४ धर्मदत्त चौ० (१८०३ धनतेरस राहसर, पत्र ६६)

५ सुदर्शनसेठ चौ० (१७६८ भा० सु० ५ नापासर)

६ मेनाराज चौ० (१७८६ श्रा० सु० १३ सरसा) जय० भं०

७ सुकमाल चौ० (बृहत् ज्ञानभंडार-बीकानेर)

८ सम्यक्त्व ६७ बोलसज्झाय (सं० १८००) जय० भं०

६ अरिहंत १२ गुणस्तवन (१७६५) गा० १३ जय० भं०

१० सिद्धाचल स्तवन (१७६६) गा० १५ जय० भं०

११ सुप्रतिष्ठ चौ० (१७६४ मि० मरोट) जै० गु० कविओ भा० २ पृ० ५८२

१२ केशी चौ० (१८०६ विजयदशमी गारवदेसर) रामलाल-जी संग्रह।

१३ मुच्छ मासड कथा पत्र ६ (सं० १७७८ विजयदशमी) हमारे संग्रहमें नं० २२८।

श्री अमर विजयजीके शि० लक्ष्मीचन्द कृत सुबोधिनीवंचकादि ग्रन्थ उपलब्ध है और द्वि० शि० उ० ज्ञानवर्द्धन शि० कुशलकल्याण शि० दयामेरुकृत ब्रह्मसेन चौ० (सं० १८८० जेठ सु० १ बु, भावनगर) उपलब्ध है। आपकी परम्परामे यतिवर्य जयचंदजी अभी विद्यमान है।

सुगुरुवंशावली

(पृ० २०७)

जिनभद्र-जिनचन्द्र, जिनसमुद्र-जिनहंससूरिजीके पट्टधर जिनमाणिक्यसूरिजी थे। उनके पारखवंशीय वा० कल्याणधीर नामक शिष्य थे। उनके भणशाली गोत्रीय वा० कल्याण लाभ और कल्याणलाभके उ० कुशललाभ नामक विद्वान शिष्य थे। इनका विशेप परिचय यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६४ मे देखना चाहिये।

श्रीमद् देवचन्द्रजी

(पृ० २६४)

बीकानेर नगरके समीपवर्ती एक रमणीय ग्राम था, वहा लुणिया शाह तुलसीदासजी निवास करते थे, उनके धनबाइ नामक शीलवती पत्नी थी। एक समय खरतर वा० राजसागरजी वहा पधारे। दम्पतिने भावसे उन्हे वंदना की और धनबाइने जो कि उस समय गर्भवती थी, कहा कि यदि मेरे पुत्र होगा तो आपको वहरा दूंगी। गर्भ दिनों-दिन बढने लगा, उत्तम गर्भके प्रभावसे असाधारण स्वप्न और उत्तम दौहद उत्पन्न होने लगे। इसी समय वहां जिनचन्द्र सूरिजी का शुभागमन हुआ इस समय धन बाइके एक पुत्र तो विद्यमान

था और गर्भवती थी। लक्षणोंसे गुरुश्रीने उनके फिर भी पुत्र होने का निश्चय किया और "इस द्वितीय पुत्रको हमे देना" कहा, पर धनबाई वाचकश्रीको इससे पूर्व ही वचन दे चुकी थी।

सं० १७४६ मे पुत्र उत्पन्न हुआ, गर्भके समय स्वप्नमे इन्द्र आदि देवो द्वारा मेरु पर्वतपर प्रभुका स्नात्र महोत्सव किये जानेका दृश्य देखा था। उसीके स्मृति सूचक नवजात बालकका शुभ नाम 'देवचन्द्र' रखा। अनुक्रमसे वृद्धि पाते हुए जब वह बालक ८ वर्षका हुआ, उस समय वा० राजसागरजीका फिर वहीं शुभागमन हुआ दम्पत्ति (धनाशाह) ने अपने वचनानुसार अपने होनहार बालकको गुरु श्रीके समर्पण कर दिया। गुरु श्रीने शुभ मुहूर्त देख सं० १७५६ मे लघु दीक्षा दी। यथासमय जिनचन्द्र सूरिजीके पास बडी दीक्षा दिलाई गई, सूरिजीने नव दीक्षित मुनिका नाम 'राजविमल' रखा। राजसागरजीने प्रसन्न होकर आपको सरस्वती मन्त्र प्रदान किया, श्रीदेवचन्द्रजीने वेनातट (बिलाडा) नामके भूमिगृहमे रहकर उस का साधन किया, देवी सरस्वती आपपर प्रसन्न हुई जिसके फल स्वरूप थोडे ही समयमे आप गीतार्थ हो गये।

गुरुश्रीने स्वपरमतके सभी आवश्यक और उपयोगी शास्त्र पढाकर आपके प्रतिभामे अभिवृद्धि की। उन शास्त्रोमे उल्लेखनीय ये हैं—षडावश्यकादि जैन आगम, व्याकरण, पञ्चकल्प, नैषध, नाटक, ज्योतिष, १८ कोष, कौमुदीमहाभाष्य, मनोरमा, पिङ्गल, स्वरोदय, तत्वार्थ आवश्यक बृहद्वृत्ति, हेमचन्द्रसूरि, हरिभद्रसूरि और यशोविजयजी कृत ग्रन्थ समूह, ६ कर्म ग्रन्थ, कर्म प्रकृति इत्यादि।

सं० १७७४ मे वाचक राजसागर और १७७५ मे उपाध्याय ज्ञानधर्मजी स्वर्ग सिधारे। मरोटमें देवचन्दजीने विमलदासजी की पुत्री माइजी, अमाइजीके लिये 'आगमसार' ग्रन्थ बनाया।

सं० १७७७ में आप गुजरात-पाटण पधारे, वहा तत्वज्ञानमय स्यादवाद युक्त आपके व्याख्यान श्रवणार्थ अनेकों लोग आने लगे। इसी समय श्रीमाली ज्ञातीय नगरसेठ तेजसी दोसीने जो कि पूर्णिमा गच्छीय श्रावक थे, अपने गुरु श्रीभावप्रभसूरि (जिनके पास विशाल ग्रन्थ भण्डार था, और अनेकों शिष्य पढ़ते थे) के उपदेशसे सहस्त्रकूट जिनालय निर्माण कराया था। एक बार देवचन्द्र जी उक्त नगरसेठजीके घर पधारे और उनसे सहस्त्रकूटके १००० जिनोंके नाम आपने अपने गुरुश्रीसे श्रवण किये होंगे ? पूछा। श्रेष्ठिने चमत्कृत होकर प्रत्युत्तर दिया कि भगवन् ! नही सुने। इसी अवसरपर ज्ञानविमल सूरिजी पधारे। श्रेष्टिने उन्हे वन्दन कर सहस्त्रकूटके १००० नाम पूछे। उन्होंने नाम व उल्लेख-स्थान फिर कभी बतलानेका कहकर श्रेष्ठिकी जिज्ञासा शान्ति की। अन्यदा पाटण-साहीपोलके चौमुख वाड़ी पार्श्वनाथजीके मन्दिरमे सतरह भेदी पूजा पढ़ाई गई उसमे श्रीदेवचन्द्रजी और ज्ञानविमल सूरिजी भी सम्मिलित हुए। इसी समय सेठ श्री दर्शनार्थ वहा पधारे और सूरिजीको देख फिर पूर्व जिज्ञासा जागृत हुई, अतः सूरिजीको सहस्र-कूट जिन के नामोंकी पृच्छा की, उन्होंने उत्तरमे 'प्राय. सहस्त्रकूट जिन नामोंकी नास्ति (विच्छेद) ज्ञात होती है, सम्भव है कोई शास्त्रमे हो, कहा'। इन बचनोंको श्रवण कर देवचन्द्रजीने उनसे कहा

कि आप तो श्रेष्ठ विद्वान कहलाते हैं फिर ऐसे अयथार्थ कैसे कहते हैं, और ऐसे वचनोंसे श्रावकोंको प्रतीति भी कैसे हो सकती है।

यह सुनकर ज्ञानविमलसूरिजी कुछ तड़ककर बोले—तुम मरुस्थलके वासी हो, शास्त्रके रहस्यको क्या जानो! जिसने शास्त्रोंका अभ्यास किया है, वही जान सकता है। इसी समय श्रेष्ठिने कहा, सूरिजी मुझे इस बातका निर्णय करना है। तब सूरिजीने देवचन्द्रजीसे कहा कि तुम्हें व्यर्थका विवाद पसन्द ज्ञात होता है। (मारवाड़ी कहावत "नेवती लड़ाई मोल लेन") अन्यथा यदि तुम्हें सहस्रकूटके नाम ज्ञात हो तो बतलाओ। देवचन्द्रजीने शिष्यकी ओर देखा, तब विनयी शिष्य मनरूपजीने रजोहरणसे सहस्रकूटके नामोंका पत्र निकालकर गुरुश्रीके हाथमें दिया। ज्ञान विमलसूरिजीने उसे पढ़कर आश्चर्यान्वित हो देवचन्द्रजीसे पूछा कि आपके गुरुश्रीका नाम शुभ नाम क्या है ? उत्तर—उपाध्याय—राजसागरजी। तब सूरिजीने कहा, आपकी परम्परा (घराना) तो विद्वत् परम्परा है, तब भला आप विद्वान कैसे नहीं होंगे, इत्यादि मृदुवाक्यों द्वारा बहुमान किया। श्रेष्ठि तजसीका मनोरथ पूर्ण हुआ, सहस्रकूट नामोंकी देवचन्द्रजीने प्रसिद्धि की। प्रतिष्ठादि अनेक उत्सव हुए।

इसके बाद देवचन्द्रजीने परिग्रहका सर्वथा परित्याग कर क्रिया-उद्धार किया। सं० १७७७ में आप अहमदाबाद पधारे, नागोरी सरायमें अवस्थिति की। आपकी अध्यात्म रसमय देशना श्रवण कर श्रोताओंको अपूर्व आल्हाद उत्पन्न हुआ। श्रीमद् देवचन्द्रजी

भगवती सूत्रके गम्भीर रहस्योंको उद्घाटन करने लगे। आपके उपदेशसे माणिकलालजी ढूढियेने मूर्त्ति पूजा स्वीकार की, इतना ही नहीं उन्होंने नवीन चैत्य कराके गुरुश्रीके हाथसे प्रतिष्ठा भी करवाई। श्रीमद्‌ने शान्तिनाथ पोलके भूमिगृहमें सहस्त्रफणादि अनेकों बिम्बों की प्रतिष्ठा की, इन प्रतिष्ठादि कार्योंमें प्रचुर द्रव्य खर्च किया गया और जैन धर्मकी महती महिमा हुई।

सं० १७७६ मे आपने खम्भातमे चौमासा कर अनेक भव्योंको प्रतिबोध दिया। व्याख्यानमे आपने शत्रुञ्जय तीर्थकी महिमा बतलाई, इससे श्रावकोंने शत्रुंजयपर कारखाना स्थापित कर नवीन चैत्य और जीर्णोद्धार करवाना आरम्भ किया। सं० १७८१-८२-८३ मे कारीगरोंने वहा चित्रकारी आदिका बडा ही सुन्दर काम किया। (वहासे विहार कर) राजनगर आये, चातुर्मासके लिये सूरतकी विशेप आग्रहपूर्वक विनती होनेसे आप सूरत पधारे। सं० १७८५-८६-८७ मे पालीताने एवं शत्रुजंयमे बघुशाह कारित चैत्योंकी देवचन्द्रजीने प्रतिष्ठा की और पुनः राजनगर आकर सं० १७८८ का चतुर्मास वहा किया। इस समय वाचक दीपचंदजीके व्याधि उत्पन्न हुई और आषाढ शुक्ला २ को वे स्वर्ग सिधारे। तपागच्छीय विनयी विवेकविजयजीको आप विद्याध्ययन कराने लगे और उन्होंने भी आपकी वैयावच्च-सेवा-भक्ति कर गुरु-कृपा प्राप्त की।

अहमदाबादमे शाह आणन्दरामजी जो कि रतन भंडारीके अग्रेश्वरी थे, गुरुश्रीसे नित्य धर्म-चर्चा किया करते थे और गुरुश्रीके ज्ञानकी गरिमासे चमत्कृत हो उन्होंने रतन भंडारीके आगे आप-

की तामा की, कि मरुस्थलीक ज्ञानी साधु पधारे हैं। उनके वचनोंसे रत्नसिंह भी आपको वन्दनार्थ पधारे और गुरुश्रीसे ज्ञान सुधाका सेवन कर बड़े प्रसन्न हुए। देवचन्द्रजीके उपदेशसे रतन भंडारी नित्य जिन पूजनादि करने लगे, एवं वहा बिम्ब प्रतिष्ठा, १७ भेदी पूजा आदि अनेकानेक धर्मकृत्य हुआ करते, उनमें भी भंडारीजी सम्मिलित होने लगे।

एक बार राजनगरमें मृगीका उपद्रव हुआ, तब भंडारीजीने उसे निवारणार्थ गुरुश्रीसे विनयपूर्वक विज्ञप्ति की। आपने शासन प्रभावनादि लाभ जानकर जैन मन्त्राम्नायसे उस निवारण कर मनुष्यों का कष्ट दूर किया। इससे जिन-शासन और देवचन्द्रजीकी सर्वत्र सविशेष प्रशंसा होने लगी।

इसी समय रणकुजी बहुत सेना लेकर रत्नभंडारीसे युद्ध करने आये। भंडारीजी तत्काल गुरुश्रीके पास आये, क्योंकि उन्हें गुरुश्रीका पूरा विश्वास था व अपने सहायक और सर्वस्व एकमात्र आपको ही मानते थे। अतः गुरुश्रीसे निवेदन किया कि सैन्य बहुत आया है, युद्धमें विजय अब आपके ही हाथ है। गुरुश्रीने आश्वासन देकर जैनमन्त्राम्नायका प्रयोग किया, अतः युद्धमें रणकुजी हारे और भंडारीजीकी विजय हुई।

धोलकाके वास्तव्य श्रेष्ठि जयचंदने पुरुषोत्तम योगीको गुरुश्रीके चरण कमलोंमें नमन कराया। गुरुश्रीने योगीके मिथ्यात्व शल्यको निवारण कर उसे जैनशासनानुरागी बनाया। सं० १७६५ पालीताने और १७६६ ६७ में नवानगरमें चतुर्मास किया। वहा आपने ढूंढकोंके

टोलोंको विजय कर नवानगरके चैत्योंकी पूजा, जिसे ढूंढकोंने बन्द करा दी थी पुनः सञ्चालित की। परधरी ग्रामके ठाकुरको आपने प्रतिबोध दिया और वे गुरु आज्ञामें चलने लगे। फिर पाली-ताना और पुनः नवानगर चतुर्मास कर १८०२-३ में राणावावमें पधारे। वहांके अधिपतिके भंगदर रोगको नष्ट किया, अतः वह भी आपका भक्त हो गया।

सं० १८०४ में भावनगर पधारे, वहां मेहता ठाकुरसी कट्टर ढुढ़कानुयायी थे, उन्हें प्रतिबोध दिया एवं वहांके ठाकुरको भी जैन-मतानुरागी बनाया। सं० १८०४ में पालीतानेके मृगी उपद्रवको भी आपने नष्ट किया। सं० १८०५ में लींबड़ी पधारे और वहांके श्रावक डोसो वोहरा, शाह धारसी, शाह जयचन्द, जेठा, रहीक-पासी आदिको विद्याध्ययन कराया। लींवडी, ध्रांगंद्रा, चूडा इन तीन गावोंमे ३ प्रतिष्ठाएं की। ध्रांगंद्रामें प्रतिष्ठाके समय सुखानन्दजी आपसे मिले थे।

आपके उपदेशसे सं० १८०८ में गुजरातसे शत्रुजंय सङ्घ निकला। गिरिराजपर बड़े उत्सव हुए। बहुतसे द्रव्यका सद्व्यय हुआ। सं० १८०८-९ का चतुर्मास गुजरातमें किया।

१८१० में कचराशाहने शत्रुजंयका सङ्घ निकाला, श्रीदेवचन्द्रजी भी उसके साथ पधारे थे। शाह मोतीया और लालचन्द जैन धर्म मे प्रवीण और दानेश्वरी थे। शत्रुञ्जयपर गुरुश्रीने प्रतिष्ठायें की। शाह कचरा, कीकाने ६० हजार रुपये व्यय किये।

सं० १८११ मे लींवडीमे प्रतिष्ठा की। वर्द्धवाणके ढुढ़क श्रावको

को प्रतिबोध देकर मूर्तिपूजक बनायें। उन्होने सुन्दर चैत्य निर्माण कराये और उनमे अनेकानेक पूजाय होन लगीं।

श्री देवचन्द्रजीके पास विचक्षण शिष्य मनरूपजी, वादी-विजेता विजयचन्द्रजी (एव अन्य गच्छीय साधु भी आपके पास विद्याध्ययन करते थे) एव मनरूपजीके वक्तुजी और रायचदजी नामक शिष्यद्वय रहते थे, एव गुरु आज्ञामे रहकर गुरुश्रीकी सवाभक्ति किया करते थे।

स० १८१२ मे श्रीमद देवचन्द्रजी राजनगर पधारे, वहा गच्छ-नायक श्रीपूज्यजीको आमन्त्रित कर उनके द्वारा श्रावक समुदायने बडे उत्सवसे आपको वाचक पदसे अलकृत किया।

वा० श्री देवचन्दजीकी देशना अमृतके समान थी। आप हरि-भद्रसूरि, यशोविजयजीने एव दिगम्बर गोमट्टसारादि तत्त्व ज्ञानके ग्रन्थोका उपदेश देते थे, श्रोताओकी उपस्थित दिनोदिन बढने लगी। श्रीमद्ने मुल्ताण, बीकानेर आदि स्थानोमे चतुर्मास किये एव अनेको नये ग्रन्थोकी रचना की, जिनमे दशनासार, नयचक्र, ज्ञानसार अष्टक-टीका कर्मग्रन्थ टीका, आदि मुख्य हैं।

इस प्रकार शासन उद्योत करते हुए राजनगरके दोसी वाडेमे आप विराज रहे थे, उस समय अकस्मात वायु कोपसे वमनादिकी व्याधि उत्पन्न हुई। श्रीमद्ने अपना आयुष्य निकट ज्ञातकर विनयी शिष्य मनरूपजी और उनके विद्यमान सुशिष्य श्री रायचन्द्रजी (रूपचन्दजी) एव द्वितीय शिष्य वादी विजयचन्दजी उनके शिष्य द्वय सभाचद और विवेकचद्रको योग्य शिक्षा देकर उत्तराध्ययन, दशवै-

कालिकादि सूत्र श्रवण करते हुए आत्माराधना कर सं० १८१२ भाद्र कृष्ण अमावस्याको एक प्रहर रात्रि जानेपर स्वर्गवासी हुए। सभी गच्छके श्रावकोंने मिलकर बड़े उत्सवके साथ आपके पवित्र देहका अग्नि-संस्कार किया, गुरुभक्तिमें बहुत द्रव्य व्यय किया गया। श्रीमद्के कार्य और आत्म-जागृतिको देखकर कवि कहता है कि आपको मोक्ष सन्निकट है। ७-८ भवोंके पश्चात् तो अवश्य ही सिद्धिगतिको प्राप्त करेंगे। आपके स्वर्गगमनके समाचारों से देश विदेशमें शोक छा गया। कविके कथनानुसार आपके मस्तक में मणि थी, वह दहन समय उछल कर पृथ्वीमें समा गई। किसी के हाथ नहीं आई। श्रावक संघने स्तूप बनाकर आपकी पादुओंकी स्थापना की।

आपके शिष्य मनरूपजी भी गुरु विरहसे आकुल हो थोड़े ही दिनोंमे आपसे स्वर्गमें जा मिले। अभी (रासरचनाके समयमें) भी रायचन्द्रजी योग्यतानुसार व्याख्यानादि देकर धर्म प्रचार करते है। उन्होंने अपने गुरुकी प्रशंसा स्वयं करने से अतिशयोक्ति आदिका सम्भव देख प्रस्तुत रास रचनेके लिये कविसे कहा और कविने सं० १८२५ के आश्विन शुक्ला ८ रविवारको यह 'देवविलास रास' बनाया।

आपकी कृतियों श्रीमद् देवचन्द्र भा० १-२ मे प्रकाशित है। उनके अतिरिक्तके लिये देखे युं० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८६ और ३११।

महोपाध्याय राजसोम

(पृ० ३०५)

१६ वीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध विद्वान क्षमाकल्याणजीके आप विद्यागुरु थे, अतः उन्होंने आपके गुण गर्भित यह अष्टक बनाया है। प्रस्तुत अष्टकमें गुणोंकी नामावलीके अतिरिक्त इतिवृत्त कुछ भी नहीं है।

अन्य साधनोंके आधारसे आपका ज्ञातव्य परिचय इस प्रकार है—आपके रचित (१) ज्ञान पंचमी पूजा सं० (२) सिद्धाचलस्तवन सं० १७६७ फा० व० ७ (३) नवकरवाली १०८ गुणस्तवन आदि उपलब्ध हैं, और आपके लि० कई प्रतियें भी प्राप्त हैं।

आप क्षेमकीर्ति शाखाके विद्वान थे, परम्पराका नामानुक्रम इस प्रकार है —

(१) जिन कुशल सूरि (२) विनय प्रभ (३) उ० विजय तिलक (४) उ० क्षेमकीर्ति (५) तपोरत्न (६) तेजराज (७) वा० भुवनकीर्ति (८) हर्ष कुंजर (९) वा० लब्धिमंडण (१०) उ० लक्ष्मीकीर्ति ११ सोमहर्ष (गुरु भ्राता, प्रसिद्ध विद्वान लक्ष्मीवल्लभ) १२ वा० लक्ष्मी समुद्र (१३) कपूर प्रियजीके १४ शि० आप थे। आपकी परम्परामें (१५) वा० तत्व वल्लभ (१६) प्रीतिविलास (१७) पं० धर्म सुन्दर (१८) वा० लाभ समुद्र (१९) मुनिसिंह (२०) अमृत रंग (अबीरचन्द) हुए, जोकि सं० १९७१ में स्वर्ग सिधारे।

वा० अमृत धर्म

(पृ० ३०७)

उपाध्याय क्षमाकल्याणजीके आप गुरुवर्य थे, अतः पाठकजीने

अपने गुरुजीकी भक्ति सूचक इस अष्टककी रचना की है। इसका ऐतिहासिक सार इस प्रकार है.

कच्छ देशमे उपकेश वंशकी वृद्ध शाखामे आपका जन्म हुआ था, श्री जिनभक्तिसूरिजीके शिष्य प्रीतसागरजी (जिनलाभ सूरिके सतीर्थ-गुरु भ्राता) के आप शिष्य थे। आपने शत्रुंजयादितीर्थों की यात्रा थी एवं सिद्धातोंका योगोद्वहन किया था। संवेगरंगसे आपकी आत्मा ओतप्रोत थी (इसीसे आपने परिग्रहका त्याग कर दिया था)। पूर्व देशमें आपके उपदेशसे स्वर्णदंडध्वज कलशवाले जिनालय निर्माण हुए थे। अनेक भव्यात्माओंको प्रतिबोध देते हुए आप जैसलमेर पधारे, और वही स० १८५१ माघ शुक्ला ८ को समाधिसे आपको मृत्यु हुई। स्थानाग सूत्रके अनुसार आपकी आत्मा मुखसे निर्गत होनेके कारण, आप देवगतिको प्राप्त हुए ज्ञात होते हैं। आप आप वाचनाचार्य पदसे विभूषित थे। विशेष परिचय उ० क्षमा-कल्याणजीके स्वतंत्र चरित्रमे दिया जायगा।

उ० क्षमाकल्याण

(पृ० ३०८)

गुरुभक्त शिष्यने आपके परलोकवासी होनेपर विरहात्मक और गुणवर्णनात्मक इस अष्टक और स्तवको रचा है। स्तवका ऐतिहासिक सार यही है, कि सं० १८७३ पोष कृष्णा १४ को बीकानेरमें आप स्वर्ग सिधारे थे।

१९ वी शताब्दीके खरतर विद्वानोंमें आप अग्रगण्य थे। आपका ऐ० चरित्र हम स्वतंत्र पुस्तकाकार प्रकाशित करनेवाले है, अतः यहा विशेष नही लिखा गया।

३० जयमाणिक्य
(पृ० ३१०)

यति हरखचन्दजीके शिष्य जीवणदासजीके आप सुशिष्य थे। १६ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्धमें आपकी अच्छी ख्याति थी। सेवक सरूपचन्दने छंदमें स० १८७५ वैसाखसुदि ६ को आपने (?) जिनचैत्यकी प्रतिष्ठा करवाई, उसका उल्लेख किया है। आपके सुन्दरदास, वस्तपाल, दीपचन्द अरजुनादि कई शिष्य थे, आपका बाल्यावस्थाका नाम 'धमडा' था। आप कीर्तिरत्न सूरि शाखाके थे।

हमारे संग्रहमें आपके (स० १८५५ मिगसर वदी ३ बीकानेरमें) जीवराशि क्षमापनाकी टीप है। अतः यथा संभव इसके कुछ दिनों बाद ही बीकानेरमें आपका स्वर्गवास हुआ होगा। आपको लिखे हुए आदेशपत्र और अन्य यतियोंके दिये हुए अनेकों पत्र हमारे संग्रहमें हैं।

श्रीमद् ज्ञानसार जी
(पृ० ४३३)

जंगलेवास वास्तव्य साड ज्ञातीय उदैचन्दजीकी पत्नी जीवणदेने स० १८०१ में आपको जन्म दिया था, स० १८१२ बीकानेरमें श्री जिनलाभ सूरिजीके शिष्य रायचन्द (रत्नराज) जीके आप शिष्य हुए। बीकानेर नरेश सूरतसिंहजी आपके परम भक्त थे। राजा रत्नसिंहजी भी आपको बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। आपके सदासुखजी नामक सुशिष्य थे।

आप मस्तयोगी, उत्तमकवि और राजमान्य महापुरुष थे। आपके रचित समस्त ग्रन्थोंकी हमने नकलें कर ली हैं जिसे विस्तृत ऐतिहासिक जीवन चरित्रके साथ यथावकाश प्रकाशित करेंगे।

खरतरगच्छ आर्यामण्डल

लावण्य सिद्धी

(पृ० २१०)

वीकराज शाहकी पत्नी गुजरदेकी आप पुत्री थी। पहुतणी रत्नसिद्धिकी आप पट्टधर थी, साध्वाचारको सुचारुरूपसे पालन करती हुई यु० जिनचन्द्रसूरिजीके आदेशसे आप वीकानेर पधारी और वही अनशन आराधना कर सं० १६६२ में स्वर्ग सिधारी। वहा आपके स्मृतिमे थुंभ (स्तूप) बनाया गया। हेमसिद्धि साध्वीने यह गुणगर्भित गीत बनाया है।

सोमसिद्धि

(पृ० २१२)

नाहर गोत्रीय नरपालकी पत्नी सिघादेकी आप पुत्री थी, आपका जन्म नाम 'संगारी' था, यौवनावस्था आनेपर पिताश्रीने बोथरा जेठाशाहके पुत्र राजसीसे आपका पाणिग्रहण कर दिया। १८ वर्षकी अवस्थामें धर्म-उपदेशके श्रवण करते हुए आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और श्वास-श्वसुरसे अनुमति ले दीक्षा ग्रहण की। दीक्षित होनेपर आपका नाम 'सोमसिद्धि' रखा गया, आपने आर्या लावन्यसिद्धिके समीप सूत्र-सिद्धान्तोंका अध्ययन किया था और उनने आपको अपने पदपर स्थापित की थी। शत्रुंजय आदि तीर्थोंकी आपने यात्रा की थी। श्रावण कृष्णा १४ वृहस्पतिवारको अनशनकर आप स्वर्ग



सिधारी। पहुत्तणी (सभवत आपकी पदस्थ) हेमसिद्धिने आपकी स्मृतिमे यह गीत बनाया।

गुरुणी विमलसिद्धि

(पृ० ४२२)

आप मुलतान निवासी माल्हू गोत्रीय शाह जयतसीकी पत्नी जुगतादे की पुत्री-रत्न थीं। लघुवयमे ब्रह्मचर्य व्रतके धारक अपने पितृव्य गोपाशाहके प्रयत्नसे प्रतिबोध पाकर आपने साध्वी श्री लावण्यसिद्धिके समीप प्रव्रज्या स्वीकार की थी। निमल चारित्रको पालन कर अनशन करते हुए बीकानेरमे स्वर्ग सिधारी। उपाध्याय श्रीललितकीर्त्तिजीने स्तूपके अन्दर आपके सुन्दर चरणोकी स्थापना कर प्रतिष्ठा की। साध्वी विनकसिद्धिने यह गीत रचा।

गुरुणी गीत

(पृ० २१४)

आदिकी ११। गाथा नही मिलनेसे आर्याश्रीका नाम अज्ञात है।

साउसुखा गोत्रीय कर्मचन्दकी ये पुत्री थीं। श्री जिनसिंह सूरिजीने आपको पहुतणी पद दिया था और स० १६६६ भाद्रकृष्ण २ को विद्यासिद्धि साध्वीने यह गुरुणीगीत बनाया है।



खरतर गच्छ शाखायें

जिनप्रभसूरि परम्परा

(पृ० ११, १३, १४, ४१, ४२,)

वीर सुधर्म-जम्बू-प्रभव-शय्यंभद्र यशोभद्र-आर्यसंभूति-भद्रबाहु स्थूलिभद्र-आर्यमहागिरि-आर्यसुहस्ती-शांतिसूरि-हरिभद्रसूरि संडिल्लसूरि-आर्यसमुद्र,-आर्यमंगू-आर्यधर्म-भद्रगुप्त-वज्रस्वामी-आर्यरक्षित-आर्यनन्दि-आर्यनागहस्ति-रेवंत-खण्डिल-हिमवन्त नागार्जुन-गोविन्द-भूतदिन्न लोहादित्य-दूष्यसूरि-उमास्वातिवाचक-जिनभद्रसूरि-हरिभद्रसूरि-देवसूरि-नेमिचन्द्रसूरि उद्योतनसूरि-वर्द्धमानसूरि-जिनेश्वरसूरि-जिनचन्द्रसूरि-अभयदेवसूरि-जिनवल्लभसूरि-जिनदत्तसूरि- जिनचन्द्रसूरि-जिनपतिसूरि-जिनेश्वरसूरि-यहा तक तो अनुक्रम सादृश ही है।

इसके पश्चात् जिनेश्वरसूरिके पट्टधर जिनसिंहसूरि-जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरि-जिनमेरुसूरि (पृ० ११) अनुक्रमसे उनके पट्टधर जिनहितसूरि तकका नाम आता है (पृ० ४२) इनमे जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरिका विशेष परिचय गीतोंमे इस प्रकार है

जिनप्रभसूरि

जिनप्रभसूरिजीने महम्मद पतिशाहको दिल्लीमे अपने गुण समूहसे रंजित किया।

अठाही, अष्टमी चतुर्थीको सम्राट उन्हे सभामे आमन्त्रित करते थे, कुतुबुद्दीन भी आपके दर्शनसे बड़े प्रसन्न हुए थे।

पतिशाह महम्मद शाह आपसे दिल्लीमे सं० १३८५ पौष शुक्ला ८

शनिवारको मिले थे, सुलताणने आदरसहित नमनकर आपको अपने पास बिठाया, और उनके मृदु भाषणोंसे प्रसन्न होकर हाथी, घोडे, ग्राम, धन, देश आमादि जो कुछ इच्छा हो, लेनेके लिये विनती करने लगा। पर साध्वाचारके विपरीत होनसे आपने किसी भी वस्तुके लेनेसे इनकार कर दिया।

आपकी निरीहताकी सुलतानने बडी प्रशंसाकी और वस्त्रादिसे पूजा की। अपने हाथकी निशानी (मोहर छाप) वाला फरमान देकर नवीन वसति-उपाश्रय बनवा दिया और अपने पट्टहस्ति (जिसपर बादशाह स्वयं बैठता है) पर आरोहन कराके मीर मालिकोंके साथ पोषध-शाला बडे उत्सवके साथ पहुंचाया। बाजिंत्र बाजते और युवतियोंके नृत्य करते हुए बडे उत्सवसे पूज्यश्री वसतीमें पधारे। पद्मावती देवीके सानिध्यसे आपकी धवल कीर्ति दशों दिशा व्याप्त हो गई।

आप बडे चमत्कारी और प्रभावक आचार्य थे। आपके चमत्कारों मे १ आकाशसे कुल्ह (टोपी-घडा) को ओघे (रजोहरण) के द्वारा नीचे लाना। २ महिष (भैंस) के मुखसे वाद करना ३ पतिशाहके साथ वड (वट) वृक्षको चलाना। ४ शत्रुंजयके रायण वृक्षसे दुग्ध वरसाना। ५ दोरडेसे मुद्रिका प्रगट करना ६ जिन प्रतिमासे वचन बुलवाने आदि मुख्य हैं।

आपके विषयमें स्वतन्त्र निबन्ध (ला० म० गांधी लिखित) प्रकाशित होनेवाला है उसे, और जैनस्तोत्र सन्दोह भा० २प्रस्तावना पृ० २४ से ५२ एवं ही० रसिक० सम्पादित ग्रन्थ देखना चाहिये।

जिनदेवसूरि

(पृ० १४)

जिनप्रभसूरिजीके पट्टपर आप सूर्यके समान तेजस्वी थे। सं० मंडल-दिल्लीमें आपके वचनामृतसे सु० महमद शाहने कन्नाणापुर (कन्यायनीय) मंडण वीरप्रभुको शुभलग्नमें स्थापित किया था। ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशलके आप भण्डार थे एवं लक्षण, छन्द, नाटक आदिके आप वेत्ता थे।

कुलधर (शाह) के कुलमें वीरणी नामक नारि-रत्नके कुक्षिसे आपका जन्म हुवा था, जिनसिंहसूरिजीके पास आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आपके पीछेके आचार्योंकी नामावलीका पता (१६ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्ध तकका) हमारे संग्रहके एक पत्र एवं ग्रन्थ प्रशस्तियों से लगा है। जिसका विवरण इस प्रकार है :

जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरि पट्टधरद्वय १ जिनमेरुसूरि २ जिनचन्द्रसूरि, इनमे जिनमेरुसूरिके पट्टधर जिनहितसूरि जिन-सर्वसूरि जिनचन्द्रसूरि जिनसमुद्रसूरि जिनतिलकसूरि (सं० १५११) जिनराजसूरि जिनचंद्रसूरि (सं० १५८५) पट्टधर-द्वय १ जिनमेरुसूरि और २ जिनभद्रसूरि (स० १६००) जिनभानुसूरि (सं० १६४१)



वेगड़ खरतरशाखा
(पृ० ३१२ से ३१८)

गुर्वावलीमे जिनलब्धिसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि तक क्रम एक समान ही है, जिनचन्द्रसूरिके पट्टापर भट्टारक शाखाकी और जिनराजसूरि पट्टधर हुए। वे माल्हू गोत्रीय थे, इसीसे वेगड गच्छवाले उनकी परम्पराको माल्हूशाखा कहते है। उधर द्वितीय पट्टधर जिनेश्वरसूरि हुए, जो इस शाखाके आदि पुरुष हैं। जिनेश्वरसूरिजी आदिका विशेष परिचय गीतोंमे इस प्रकार है —

जिनेश्वरसूरिजो

छाजहड गोत्रीय झांझणके आप पुत्र थे, आपकी माताका नाम झबकु था, और वेगड विरुदसे आपकी प्रसिद्ध थी। माल्हू गोत्रीय गुरु भ्राताके मानको चूर्ण कर अपने गुरु श्री जिनचन्द्रसूरिका पाट आपने लिया। आपने वाराही विद्याको आराधना किया था और धरणेन्द्र भी आपके प्रत्यक्ष था, अणहिल्लवाडे (पाटण) मे खानका परचा पूरण कर महाजन वन्द (वन्दियों) को छुडाया था। राजनगरमे विहार कर महम्मद बादशाहको प्रतिबोध दिया था और उसने आपका पदस्थापना महोत्सव किया था। आपने भ्राताने ५०० घोडोंका (आपके दर्शनपर) दान किया और १ करोड द्रव्य व्यय किया था इससे महम्मद शाहने हर्षित हो "वेगडा" विरुद्ध प्रदान किया था, (या उसने कहा आपके श्रावक भी वेगड और आप भी वगड हैं)। एक वार आप साचोर पधारे, जगड और थूल्ग दोनों गोत्र परस्पर मिले, (वहा) राडद्रहसे लखमीसिंह मन्त्रीने सङ्घ सहित आकर गुरु श्री को वन्दन किया।

लक्ष्मीसिंहने सरस नामक अपने पुत्रको गुरुश्रीको वहराया और चार चौमासे वही रक्खे। सं० १४३० मे संथारा कर शान्तिपुर (जोधपुर) मे आप स्वर्ग पधारे और वहाँ आपका स्तूप (थुंभा) बनाया गया, वह बड़ा चमत्कारी है, हजारों मनुष्य वहां दर्शनार्थ आते है। स्वर्गगमन पश्चात भी आपने तिलोकसी शाहको ६ पुत्रियोंके ऊपर (पश्चात्) १ पुत्र देकर उसके वंशकी वृद्धि की। पौष शुक्ला १३ को जिनसमुद्रसूरिने स्तूपकी यात्राकर यह गीत बनाया।

गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

(पृ० ४२३)

गुणप्रभसूरि प्रबन्ध और हमारे संग्रहकी पट्टावलीके अनुसार श्री जिनेश्वरसूरिजीका पट्टानुक्रम इस प्रकार है :

१ श्री जिनशेखरसूरि २ श्री जिनधर्मसूरि ३ श्री जिनचन्द्रसूरि ४ श्री जिनमेरुसूरि ५ श्री गुणप्रभसूरि हुए। इनका विशेष परिचय इस प्रकार है :

सं० १५७२ में श्री जिनमेरुसूरिजीका स्वर्गवास हो जानेपर मण्डलाचार्य श्री जयसिंहसूरिने भट्टारक पदपर स्थापित करनेके लिए छाजहड़ गोत्रीय व्यक्तिकी गवेषणा की। अन्तमे जूठिल शाखा के मंत्री भोदेवरुके बुद्धिशाली पुत्र नगराज श्रावककी गृहिणी गणपति शाहकी पुत्री नागिलदेके पुत्र वच्छराजने धर्मका लाभ जानकर अपने पुत्र भोजको समर्पण किया। उनका जन्म सं० १५६५ (शाके १४३१) मिगसर शुक्ला ४ गुरुवारके रात्रिमें उत्तराषाढा नक्षत्र, ऋपियोग, कर्क लग्न, गण वर्गमे हुआ, सं० १५७५मे सूरिजीने

दीक्षा दी। दीक्षित होनेके अनन्तर भोजकुमार गुरुश्रीसे विद्याभ्यास करते हुए संयम मार्गमें विशेष रूपसे प्रवृत्त हुए।

इधर जोधपुरमें राठोर राजा गंगराज राज्य करते थे, वहां छाजहड गोत्रीय नागावत राजसिंह, सत्ता, पत्ता, नेतागर आदि निवास करते थे। सत्ताके पुत्र दुल्हण और सहजपाल थे, सहजपाल के पुत्र मानसिंह, पृथ्वीराज, सुरताण थे। जिनकी माताका नाम कस्तूरदे था। सुरताणकी भार्या लीलादेकी कुक्षिसे जेत, प्रताप और चापसिंह तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे। उपरोक्त कुटुम्बने विचारकर गंग नरेशसे (नेतागरने) प्रार्थना की, कि हम लोगोंको गुरु महाराजके पट्टोत्सव करनेके लिए आज्ञा प्रदान करें। नृपवर्यका आदेश पाकर देश-विदेशमें चारों तरफ आमन्त्रण पत्रिका भेजी गई, बहुत जगहका संघ एकत्र हुआ और खूब उत्सवपूर्वक सं० १५८७ फाल्गुन शु० ४ श्रीजिनमेरुसूरिके पट्टपर श्री जिनगुणप्रभ सूरिजीको स्थापित किया गया। उन्हें बड गच्छीय श्रीपुण्यप्रभ सूरिने सूरि मंत्र दिया संघने गंगरायको सन्मानित किया और राजाने भी संघ और पूज्यश्रीको बहुमान दिया।

सं० १५८९ में सूरिवर्यने संघके साथ तीर्थाधिराज सिद्धाचल जीकी यात्रा की, जोधपुरमें बहुतसे भव्योंको प्रतिबोध दिया। इस प्रकार क्रमशः १२ चतुर्मास होनेके पश्चात् जेसलमेरके श्रावक देवपाल, सदारंग, जीया, वस्ता, रायमल्ल, श्रीरंग, हुटा, भोजा आदि संघने एकत्र होकर गुरु दर्शनकी उत्कंठासे पांच प्रधान पुरुषोंके साथ वीनति-पत्र भेजा, उनके विशेष आग्रहसे सूरिजी विहारकर जैसलमेर

आये, सं० १५८७ आषाढ वदी १३ को समारोहके साथ पुर प्रवेश कर पौषधशालामे पधारे। व्याख्यानादि धर्म कृत्य होने लगे। सं० १५६४ मे राउल श्री लूणकर्णने जलके अभावमे अपनी प्रजाको महान कष्ट पाते देखकर दुष्कालकी सम्भावनामें गच्छनायकको वर्षा होनेके उपाय करनेकी नम्र विज्ञप्ति की। राउलजीकी प्रार्थना से सूरिजीने उपाश्रयमे अष्टम तप पूर्वक मंत्र साधना प्रारम्भ की, उसके प्रभावसे मेघमाली देवने घनघोर वर्षा वर्षाई, जिससे भादवा सुदि १ को प्रथम प्रहरमे सारे तालाव-जलाशय भर गए। सुकाल हो जानेसे लोगोंके दिलमे परमानंद छा गया, सूरि महाराजकी सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा हुई, राउलजीने गुरु महाराजके उपदेशसे वणिक वन्दियोंको मुक्त कर दिया और पंच शब्द वाजित्र आदिके वजवाते हुए वड़े समारोह पूर्वक उपाश्रयमें पहुंचाये।

इस प्रकार सूरिजीने शासनकी वडी प्रभावनाकी थी, सं० १६५५ मे ज्ञानवलसे अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर राधा (वैशाख) कृष्णा ८ को तीन आहारके त्यागरूप अनशन ग्रहण किया, एकादशीको संघके समक्ष प्रत्याख्यानादि कर डाभके संथारेपर संलेखना कर दी, शत्रु और मित्रपर समभाव रखते हुए, अर्हन्तादि पदोंका ध्यान करते हुए, १५ दिनकी संलेखना पूर्णकर वैशाख सुदि ६ को ६० वर्ष ५ मास और ५ दिनका आयुष्य पूर्ण कर स्वर्ग सिधारे। श्री जिनेश्वर सूरिजी ने इनका प्रवन्ध बनाया।

जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ४३०, ३१६)

श्री गुणप्रभसूरिजीके शिष्य श्री जिनेश्वर सूरिजीके पट्टधर श्री जिनचन्द्रसूरि हुए जिनका परिचय इस प्रकार है।

बीकानेर निवासी बाफणा गोत्रीय रूपजी शाहकी भार्या रूपादे की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था, आपका जन्म नाम बीरजी था, लघु वयमे समता रसमे स्वलीन देखकर जैसलमेरमे श्री जिनेश्वर सूरिजीने आपको दीक्षितकर, वीर विजय अभिधान दिया। आप पढ़-लिख खूब विद्वान् और प्रतापी हुए, आपको श्रीजिनेश्वर सूरिजीने स्वयं अपने पट्टपर स्थापित किये। जैन शासनकी प्रभावनाकरके स० १७१३ पोष मासकी ११ भृगुवारको अनशन पूर्वक आप स्वर्ग सिधारे। महिमा-समुद्रजीने आपके दो गीत रचे, अन्य एक गीतमें समुद्रसूरिजीने आपके साचोर पधारनेपर उत्सव हुआ, उसका संक्षिप्त वर्णन किया है।

जिनसमुद्रसूरि
(पृ० ३१७ ४३०)

आप श्रीश्रीमाल हरराजकी भार्या लखमादेवीके पुत्र थे, श्री जिनचन्द्रसूरिजीके पट्टपर स्थापित होनेके पश्चात आप सूरत और मास नगरमे पधारे, जिनका वर्णन माइदास और महिमाहर्षके गीतमे है। सूरतमे छत्तराज शाहने महोत्सव आदि किया था।

जिनसमुद्रसूरिके पश्चात पट्टधरोंके नाम ये हैं —जिनसुन्दर सूरि—जिनउदयसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनेश्वरसूरि (स० १८६१) इनके पट्टधरका नाम नहीं मिलता। अन्तिम आचार्य जिनप्रेमचन्द्र सूरि स० १९०७ मे स्वर्ग सिधारे।

पिप्पलक शाखा
(पृ० ३१९)

गुर्वावली*मे जिनराजसूरि (प्रथम)तक तो क्रम एक सा ही

*गुर्वावलीमे नवीन ज्ञातव्य यह है कि —जिन वर्द्धमान सूरिजीने श्री

है। उनके पट्टधर जिनवर्द्धनसूरिजीसे यह शाखा भिन्न हुई थी, उनके पट्टधर आचार्योंका नामानुक्रम इस प्रकार है

जिनवर्द्धन सूरि--जिनचन्द्रसूरि जिन सागर सूरि- (जिन्होंने ८४ प्रतिष्ठाये की थी और उनका थुंभ अहमदाबादमें प्रसिद्ध है)। जिन सुन्दर सूरि जिनहर्षसूरि जिनचन्द्र सूरि जिनशील सूरि जिनकीर्तिसूरि जिनसिंहसूरि जिनचन्द्रसूरि (सं० १६६६ विद्यमान) तकका राजसुन्दरने उल्लेख किया है हमारे संग्रह की पट्टावली आदिसे इस शाखाके पश्चानुवर्ती पट्टधरोंका अनुक्रम यह ज्ञात होता है: जिनरत्नसूरि जिनवद्धमानसूरि जिनधर्म सूरि जिनचन्द्र सूरि (अपर नाम शिवचन्द्र सूरि) इनमे जिनरत्न सूरिके पीछेके नाम प्रस्तुत शिवचन्द्र सूरि रासमे भी पाये जाते है। अब रासके अनुसार जिन (शिव) चन्द्र सूरिजीका विशेष परिचय नीचे दिया जाता है:

जिन शिवचन्द्रसूरि ×

(पृ० ३२१)

मरुधर देशके भिन्नमाल नगरमे अजीतसिह भूपतिके राज्यमे ओसवाल रांका गोत्रीय शाह पदमसी रहते थे। उनकी धर्मपत्नीका नाम पदमा था। उसके शुभ मुहूर्तमे एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और

मंधर स्वामीसे सूरि मंत्र संशोधन कराया। श्रीमंधर स्वामीने आचार्योंके नासकी आदिमें जिन विशेषण लगानेकी सूचना दी, इसीसे पट्टधर आचार्यों ने नामके आगे जिन विशेषण दिया जाता है।

×गृहे १३ साधुपर्याय १३ गच्छ नायक १८ इस प्रकार कुल ४४ वर्ष का आयुष्य पाया।

उसका नाम शिवचन्द रखा गया। कुँवर दिनादिन वृद्धि प्राप्त होने लगा और जब उसकी अवस्था १३ वर्षकी हुई, उस समय उसी नगरमें गच्छनायक जिनधर्मसूरिका शुभागमन हुआ। संघने बड़ा ो-त्सव किया, और अनेक लोग गुरु श्रीके व्याख्यानमें नित्य आने लगे। सूरिजीके व्याख्यान श्रवणार्थ पद्मसी और शिवचन्द कुमार भी जाने लगे और संसारकी अनित्यताके उपदेशसे कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया, याने माता पिताके पास आग्रह पूर्वक अनुमति लेकर सं० १७६३ में गुरु श्रीके पास दीक्षा ग्रहण की। मासकल्पके परिपूर्ण हो जानेसे सूरिजी नवदीक्षित शिवचन्द्रके साथ विहार कर गये। ज्ञानावर्णी कर्मके क्षयोपशमसे नवदीक्षित मुनिने व्याकरण, न्याय, तर्क और आगम ग्रन्थोंका शीघ्र अध्ययन कर विद्वत्ता प्राप्त की।

जिनधर्म सूरिजी उदयपुर पधारे और वहां शारीरिक वेदना उत्पन्न होनेसे आयुष्यकी पूर्णाहुतिका समय ज्ञातकर सं० १७७६ वैसाख शुक्ला ७ को शिवचन्दजीको गच्छनायक पद देकर (वहीं) स्वर्ग सिधारे। आचार्यपदका नाम नियमानुसार जिनचन्द्रसूरि रखा गया। उस समय (राणा संग्राम राज्ये) उदयपुरके श्रावक दोसी भीखा सुत कुशलने पद महोत्सव किया और पहरावणी, याचकोंको दान आदि कार्योंमें बहुतसा द्रव्यका व्यय कर सुयश प्राप्त किया। आचार्य पद प्राप्तिके पश्चात् आपने, शिष्य हरिसागरके आग्रहसे वहीं चतु-मास किया, धर्मप्रभावना अच्छी हुई। चौमासा पूर्ण होने पर आपने गुजरातकी ओर विहार कर दिया। सं० १७७८ में (गच्छनायकने) परिग्रहका त्यागकर शिथिल वैराग्य भावसे क्रियोद्धार किया और

आत्म गुणोंकी साधना करते हुए भव्योंको उपदेश प्रदान आदि द्वारा स्वपर हित साधनमे तत्पर हुए।

गुजरातमे विचरते हुए शत्रुंजय तीर्थ पधारे और वहा ४ महीने की अवस्थित कर ९९ यात्राएं की। वहांसे गिरनारमे नेमनाथकी यात्राकर जूनागढ़की यात्रा करते हुए खंभात पधारे, वहाकी यात्रा कर चतुर्मास भी वही किया। वहा धरम-ध्यान सविशेष हुआ। वहासे मारवाड़की ओर विहारकर आबू तीर्थकी यात्रा करके तीर्थाधिराज सम्मेतशिखर पधारे। वहा वीश तीर्थकरोंके निर्वाण स्थानों की यात्रा करके, विचरते हुए बनारसमे पार्श्वनाथजी की यात्राकी। रास्तेमे पावापुरी, चम्पापुरी, राजग्रही, वैभारगिरिकी भी संघके साथ यात्राकी और हस्तिनापुरमे शान्ति, कुन्थु और अरिनाथप्रभु की यात्रा कर दिल्ली पधारे, वहा चतुर्मास करके विहार करते हुए पुन. गुजरातमे पदार्पण किया। वहां भणशाली कपूरके पास एक चतुर्मास किया और पंचमाङ्ग भगवतीसूत्रका व्याख्यान देने लगे, इति उपद्रव दूरकर सुयश प्राप्त किया। ज्ञान-भक्ति और धर्म प्रभावना अच्छी हुई, शत्रुंजयतीर्थकी यात्रा की, यात्राकी भावना पुन. उत्पन्न होनेसे राजनगरसे विहारकर शत्रुंजय और गिरनारतीर्थकी यात्राकर दीवबंदरमे चौमासे रहे। वहासे फिर शत्रुंजयकी यात्रा करके घोवाबंदर, भावनगर आदिकी यात्रा करते हुए भी १७९४ के माह महीनेमे खम्भात पधारे। वहाके गुणानुरागी श्रावकोंने आपका अतिशय बहुमान किया, उनके उपकारार्थ आप भी धर्मदेशना देने लगे।

इसी समय किसी दुष्ट प्रकृति पुरुषने वहाके यवनाधिपके समक्ष

कोई चुगली खाई, अत उसने अपने सेवकोंको आचार्यजीके पास भेजे। राज्य सेवकोंने पूज्यश्रीको बुलाकर "आपके पास धन है वह हमें दें" कहा, पर सूरिजी तो बहुत पहलेही परिग्रहका सर्वथा त्याग कर चुके थे, अत स्पष्ट शब्दोंमें प्रत्युत्तर दिया कि भाई हमारे पास तो भगवन् नाम स्मरणके अतिरिक्त कोई धन माल नहीं है, पर वे अर्थ लोभी भला कब माननेवाले थे। उन्होंने सूरिजीको तंग करना शुरू किया। इतनाही नहीं राज्यसत्ताके बलपर अंधे होकर यवनाधिपतिने सूरिजीकी खाल उतारनेकी आज्ञा दे दी। सूरिजीने यह सब अपने पूर्व सचित अशुभ कर्मोंके उदयका ही फल है, विचारकर मरणान्त कष्ट देनेवाले दुष्टोंपर तनिक भी क्रोध नहीं किया। धन्य है! ऐसे समभावी उच्च आत्म साधक महापुरुषोंको!! रात्रिके समय दुष्ट यवनने क्रोधित होकर बडे दुःख देने आरम्भ किये। मार्मिक स्थानोंमें बडे जोरोंसे मारने (दंड-प्रहार करने) लगा और उस पापीष्टने इतनेमें ही न रुककर सूरिजीके हाथ पैरके जीवित नखोंको उतार असह्य वेदना उत्पन्न की। वेदना क्रमशः बढने लगी और मरणान्त अवस्था आ पहुची, पर उन महापुरुषने समभाव के निर्मल सरोवरमें पैठ आत्मरमणतामें तल्लीनता कर दी। अपने पूर्वके सनत्कुमार-गजसुकुमाल-दृढप्रहारी आदि महापुरुषोंके चरित्रोंका स्मृति चित्र अपने आखोंके सामने खडाकर पुद्गल और आत्माके भिन्नत्व विचाररूप, भेद ज्ञानसे उस असह्य वेदनाका अनुभव करने लगे।

यह वृत्तांत ज्ञात होते ही प्रातःकाल श्रावकगण सूरिजीके पास आये, तब यवन भी सूरिजीका धैर्य देख और अपनी सारी दुष्टवृत्ति

की इतिश्री होनेसे रुकता गया। और श्रावकोंको उन्हें अपने स्थान ले जानेको कहा। रूपा वो०रा उन्हें अपने घर लाया। नगरमे सर्वत्र हाहाकार मच गया।

इस समय नाय (न्याय ?) सागरजीने सूरिजीका अन्तिम समय ज्ञातकर उत्तराध्ययन आदि सूत्रोंका श्रवण कराके अनशन आराधना करवाई। श्रावकोंने यथाशक्ति चतुर्थ व्रत, हरित त्याग, १२ व्रतादि के यथाशक्ति नियम लिये। आचार्यजीने गच्छकी शिक्षा अपने शिष्य हीरसागरको देकर, सं० १७६४ वैशाख ६ रविवार सिद्धयोग के प्रथम प्रहरमे जिनेश्वरका ध्यान करते इस नश्वर देहका परित्यागकर (प्रायः) देवके दिव्य रूपको धारण किया। श्रावकोंने उत्सवके साथ अन्त क्रिया की, और रूपा वोहरेने वहा स्तूप कराया। इसी तरह राजनगरके वहिरामपुरमे भी स्तूप वनवाया गया। हीरसागरके आग्रहसे कडुआमती शाह लाधाने सं० १७६५ के आश्विन शुक्ला ५ बृहस्पतिवारको राजनगरमे इस रासकी रचना की।



आद्यपक्षीय शाखा

जिनहर्षसूरि

(पृ० ३३३)

आद्य पक्षीय खरतर शाखा (भेद) स० १५६६ में जिनदेव सूरिजीसे निर्गत हुई थी। हमे प्राप्त पट्टावलीके अनुसार इस शाखा की पट्ट-परम्परा इस प्रकार है —

जिनवर्द्धनसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनसमुद्रसूरि—पट्टधर जिन देवसूरि (इस शाखाके आदि पुरुष) जिनसिंहसूरि—जिनचन्द्रसूरि (पचायण भट्टारक) व शिष्य जिनहर्षसूरिजी थे। गीतके अनुसार आप ढोसी वजन भाणाजीकी भाया अमतादेके पुत्र थे।

अन्य साधनोसे आपका विशेप वृत्तान्त निम्नोक्त ज्ञात हुआ है — स० १६६३ मे जैतारणमे जिनचन्द्रसूरिका स्वर्गवास हुआ। भडारी गोत्रीय नारायणने पद महोत्सवकर आपको उनके पट्टपर स्थापित किये जैतारणमे आपने हाथीको कीलित किया, जिसका वृत्तान्त इस प्रकार है —स० १७१७ वर्षे खरतर गच्छ वृद्धाआचार्य क्षेमधाड शाखा पचानण भट्टारक रे पाट साप्रत विजयमान भ० श्रीजिनहर्षसूरि जी सोजत शहरमे हाथी कील्यो, तपा गच्छ हुती बोल उपर आण्यो इण वातरो सोजत शहर सिगलो साक्षीभूत थे। हाथी रे ठिकाने अजे सगिडो पूजीजे छे कोटवाली चोतरा कने माडी निचमे × × × (इनके शिष्य सुमतिहसकृत कालिकाचार्य कथा बालावबोध पत्र १४, यतिवर्य सूर्यमलजी के सग्रहमे)।

१७२५ चैत्र कृष्णा ११ को जेतारणमे आपका स्वर्गवास हुआ। इनके पश्चातके पट्टधरोंका क्रम यह है: १ जिनलब्धि-जिनमाणिक्य-जिनचन्द्र-जिनोदय-जिनसंभव-जिनधर्म-जिनचन्द्र-जिनकीर्ति-जिन बुद्धिवल्लभ-जिनक्षमारत्नसूरिके पट्टधर जिनचन्द्रसूरिजी पालीमे अभी विद्यमान है।

भावहर्षीय शाखा

भावहर्षजी उपाध्याय

(पृ० १३५)

शाह कोड़ाकी पत्नी कोड़मदेके आप पुत्र थे। श्रीकुलतिलकजी के आप सुशिष्य थे। संयमके प्रतिपालनमे आप विशेप सावधान रहा करते थे, और सरस्वती देवीने प्रसन्न होकर आपको शुभाशीप दी थी। माह शुक्ला १० को जैसलमेरमें गच्छनायक जिनमाणिक्य-सूरिजीने (सं० १५८३ और १६१२ के मध्यमे) आपको उपाध्याय पद दिया था।

अन्य साधनोंसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि शाखाके वा० साधुचन्द्रके शिष्य कुलतिलकजीके शिष्य थे। आप स्वयं अच्छे कवि थे। आपके रचित स्तवनादि बहुतसे मिलते है। सं० १६०६ में आपने उ० कनकतिलकादिके साथ कठिन क्रिया-उद्धार किया था। आपके हेमसार आदि कई विद्वान् और कवि शिष्य थे, आपके द्वारा खरतर गच्छ मे ७ वां गच्छ भेद हुआ। और आपके नामसे वह शाखा भावहर्षीय कहलाई। बालोतरेमे इस शाखाकी गद्दी अब भी विद्यमान है। आपके शाखाकी पट्ट-परम्परा इस प्रकार

है —भावहर्षसूरि—जिनतिलक—जिनोदय—जिनचन्द्र—जिनसमुद्र—जिनरत्न—जिनप्रमोद—जिनचन्द्र—जिनसुख—जिनक्षमा-जिनपद्म—जिनचन्द्र—जिनफतन्द्रसूरि हुए, आपकी शाखामें अभी यतिवर्य नेमिचन्द्रजी बालोतरमें विद्यमान हैं।—विशेष विचार खरतर गच्छ इतिहासमें करेंगे।

जिनसागर सूरि शाखा [लघु आचार्य]

जिनसागरसूरि

(पृ० १७८-२०३-३३४)

मरुधर जंगल देशके बीकानेर नगरमें राजा रायसिंहजी राज्य करते थे। उस नगरमें बोथरा गोत्रीय शाह वच्छा निवास करते थे, उनकी भार्या मृगादेकी कुक्षिसे सं० १६५२ कार्तिक शुक्ला १४ रविवारको अश्विन नक्षत्रमें आपका जन्म हुआ था। आप जब गर्भमें अवतरित हुए थे, तब माताको रक्त चोल रत्नावलीका स्वप्न आया था, उसीके अनुसार आपका नाम "चोला" रक्खा गया, पर लाड (अतिशय प्रेम) के नाम सामलसे ही आपकी प्रसिद्धि हुई।

एकबार श्रीजिनसिंहसूरिजीका वहां शुभागमन हुआ और उनके उपदेशसे सामल कुमारको वैराग्य उत्पन्न हुआ। उसने अपनी मातुश्रीसे दीक्षाकी अनुमति मांगी। इसपर माताने भी साथ ही दीक्षा लेनेका निश्चय प्रकट किया। इधर श्री जिनसिंह सूरिजी विहारकर अमरसर पधारे। तब वहां जाकर सामलकुमारने अपने बड़े भाइ विक्रम और माताके साथ सं० १६६१ माह सुदी

७ को सूरिजीने दीक्षा प्रदान की । उस समय अकबरके श्रीमाली थानसिंहने दीक्षा महोत्सव किया ।

नवदीक्षित मुनिके साथ जिनसिंहसूरिजी ग्रामानुग्राम विहार करते हुए राजनगर पधारे । वहां युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी को वंदना की, सूरिजीने नवदीक्षित मानसिंह मुनिको (मांडलके तप वहन कर लिये, जानकर) बड़ी दीक्षा देकर नाम स्थापना "सिद्धसेन" की । उसके पश्चात सिद्धसेन मुनि आगमके उपधान (तपादि) वहन करने लगे और बीकानेरमें छः मासी तप किया । विनय सहित आगमादिका अध्ययन करने लगे । युगप्रधान गुरुश्री आपके गुणोंसे बड़े प्रसन्न थे । कविवर समयसुन्दरके सुप्रसिद्ध शिष्य वादी हर्षनन्दनने आपको विद्याध्ययन बड़े मनोयोगसे कराया ।

इस प्रकार विद्याध्ययन और संयम पालन करते हुए श्री जिन-सिंहसूरिजीके साथ संघवी आसकरणके संघ सह शत्रुंजयतीर्थकी यात्रा की । वहांसे विहारकर खंभात, अहमदाबाद, पाटण होते हुए वडलीमे जिनदत्तसूरिजीकी यात्रा की । वहांसे विहारकर सिरोही पधारे । वहांके राजा राजसिंहने बहुत सम्मान किया और संघने प्रवेशोत्सव किया । वहांसे जालोर, खंडप, दूणाडा होते हुए घंघाणी के प्राचीन जिन बिम्बोंके दर्शन कर बीकानेर पधारे । मं० बाघ-मलने प्रवेशोत्सव किया । जिनसिंहसूरिजीने चतुर्मास वहीं किया । इसी चतुर्मासके समय उन्हे सम्राट् सलेमने मेवड़े दूत भेजकर आमन्त्रित

* निर्वाण रासमें मृगादेका दीक्षित नाम माणिक्यमाला और वीकेका नाम विवेक कल्याण लिखा ।

किये। सम्राट्की विज्ञप्ति अनुसार वहासे विहार कर वे मेडते पधार, वहा शारीरिक व्याधि उत्पन्न होनेसे आराधना पूर्वक स्वर्ग सिधार।

इस प्रकार जिनसिंहसूरिजीकी अचानक मृत्यु होनेसे सघको बडा शोक हुआ। पर कालके आग कर भी क्या सकते थे, आखिर शोक निवर्तन करके सघने राजसी (राज समुद्र) जी को भट्टारक (गच्छ नायक) पद और सिद्धसेन (सामल) जीको *आचार्य पदसे अलकृत किये।

सघपति (चोपडा) आसकरण, अमीपाल, कपूरचन्द, ऋषभदास और सूरदासने पद महोत्सव बडे समारोहसे किया। (पूनमीया गच्छीय)हेमसुरिजीने सूरिमत्र देकर स०१६७४ फाल्गुन शुक्ला ७को शुभ मुहूर्तमे जिनराजसुरि और जिनसागरसूरि नाम स्थापना की।

आचार्य पद प्राप्तिके अनन्तर आपने मेडतसे विहार कर राणकपुर, वरकाणा, तिमरी (पार्श्वनाथजीकी), ओसिया और घवाणीकी यात्राकर चतुर्मास मेडत किया। वहासे जैसलमेर पधारे। वहा राउल कल्याण और श्रीसघने वदन किया और भणसाली जीनराजने (प्रवेश) उत्सव किया। वहा श्रीसघको ११ अगोका श्रवण कराया। शाह कुशलेने मिश्री सहित रुपयोकी लाहण की। वहासे सघके साथ लोद्रवा पधारे। (भणसाली) श्रीमल सुत थाहरुशाहने स्वामी—वात्सल्यादिमे प्रचुर द्रव्य व्यय किया। वहासे आचार्य जिनसागरसूरि फलवधी पधारे। ज्ञानक मानेन प्रवशोत्सव किया और

* निर्वाण रास गा० ९ और जयकीर्ति कृत गीतके कथनानुसार आपको आचार्य पद, युग प्रधान जिनचन्द्रसूरिजीके वचनानुसार मिला था।

याचकोंको दान दिया। संघने बड़ी भक्ति की। वहांसे विहार कर नगुं-अड पधारे, वहां संघने भक्तिसे वंदना की। उक्त प्रकार विहार करते हुए बीकानेर पधारे, वहां पासाणीने संघके साथ प्रवेशोत्सव किया एवं (मंत्रीश्वर कर्मचन्द्रके पुत्र) भागचन्द्रके पुत्र मनोहरदास आदि सामहीयेमे पधारे।

बीकानेरसे विहारकर (लूनकरण) सर चतुर्मास कर शाल्य-सर पधारे। वहां मंत्री भगवन्तदासने बड़े उत्सवके साथ पूज्यश्रीको वंदन किया, वहांसे डीडवाणेके संघको वंदाते हुए नुरपुर एवं मालपुर आये, वहां भी धर्म-ध्यान सविशेष हुआ। इस प्रकार विहार करते हुए बीलाडेमे चौमासा किया। वहांके कटारिये श्रावक खरतर गच्छके अनन्य अनुरागी थे, उन्होंने उत्सव किया।

बीलाड़ेसे विहार कर मेड़ते आये वहां गोलछा रायमलके पुत्र अमीपालके भ्राता नेतसिंह भ्रातृपुत्र-राजसिंहने बड़े समारोहसे नान्दि स्थापन कर व्रतोच्चारण किये, श्रीफल नालेरादिके साथ रुपयोंकी लाहण (प्रभावना) की। वहांके रेखाउत श्रीमल, वीरदास मांडण, तेजा, रीहड़ दरडाने भी धार्मिक कार्योंमे बहुतसा द्रव्यका सद्-व्यय किया। आचार्य श्री वहांसे विहारकर राणपुर और कुम्भलमेरके जिनालयोंको वंदन कर मेवाड़ प्रदेश होते हुए उदयपुर पधारे। वहां-के राजा करणने आपका सम्मान किया। और मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र पुत्र लक्ष्मीचन्द्रके पुत्र रामचन्द और रुघनाथके साथ अजायबदेने वन्दन किया। वहांसे विहार कर स्वर्णगिरि पधारे, वहां संघने बड़ा उत्सव किया। साचोर संघने एवं हाथीशाहने बहुत आग्रह कर चतुर्मास साचोरमे कराया।

इस प्रकार उपरोक्त सारे वर्णनात्मक इस रासको कवि धर्मकीर्ति (यु० जिनचन्द्रसूरि उपाध्याय धर्मनिधानके शि०) ने स० १६८१ के पौष कृ ०।। ५ को बनाया।

उपरोक्त रास रचनेके पश्चात् स० १६८६ मे गच्छ नायक जिनराजसूरि और आचार्य जिनसागरसूरिके किसी अज्ञात कारण विशेषसे मनोमालिन्य या वैमनस्य* उत्पन्न हुआ।

फलस्वरूप दोनोंकी शाखायें (शिष्यपरिवार आदि) भिन्न २ हो गइ। और तभीसे जिनराजसूरिजीकी परम्परा भट्टारकीया एवं जिनसागरसूरिजीकी परम्परा आचारजीया नामसे प्रसिद्ध हुइ, जो आज भी उन्हीं नामोंसे प्रख्यात है।

शाखा भेद होने पर जिनसागरसूरिजीके पक्षमे कौनसे विद्वान और कहाका सघ आज्ञानुयायी रहा। इसका वर्णन निर्वाण रासमें इस प्रकार है —

श्रीजिनसागरजीके आज्ञानुवर्ती साधु सघमे उपाध्याय समय-सुन्दरजी (की सम्पूर्ण शिष्य परम्परा), पुण्य-प्रधानादि युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजीके सभी शिष्य, और श्रावक समुदायमे अहमदाबाद, बीकानेर, पाटण, खम्भात, मुल्तान, जैसलमेरके सघ नायक सख-वालादि, मेडतेके गोलछे, आगरेके ओसवाल, बीलाडेके सघवी कटारिये एव जयतारण, जालौर, पचियास, पाल्हनपुर, मुज्ज, सूरत, दिल्ली, लाहोर, लुणकरणसर, सिन्ध प्रान्तोमे मरोट, थट्टा, डेरा, मारवाडमे फलोधी, पोकरण आदिके (ओशवाल-अच्छे २

*जयकीर्तिके गीतके अनुसार यह कारण अहमदाबादमें हुआ था।

पदाधिकारी) थे।* उनमेंसे मुख्य श्रावकोंके धर्मकृत्य इस प्रकार है :

करमसी शाह संवत्सरीको महामहो (मुद्रा) देते और उनके पुत्र लालचन्द प्रत्येक वर्ष संवत्सरीको संघमें श्रीफलोंकी प्रभावना किया करते थे। लालचन्दकी विद्यमान माता धनादेने पृथिवीके उपर के खण्डकी पीटणीको समराइ (जीर्णोद्धारित की) और उसकी भार्या कपूरदेने जो कि उग्रसेनकी माता थी, धर्मकार्योंमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया।

शाह शान्तिदासने भ्राता कपूरचन्दके साथ आचार्यश्रीको स्वर्णके वेलिये दिये थे, एवं २॥ हजार रुपयोंका खर्च कर सुयश प्राप्त किया था। उनकी माता मानवाइने उपाश्रयके १ खण्डकी पीटणी करा दी थी और प्रत्येक वर्ष आषाढ़ चतुर्मासीके पोषधोपवासी श्रावकोंको पोषण करनेका वचन दिया था।

शाहमनजीके दीप्तमान कुटुम्बमे शाह उदयकरण, हाथी, जेठमल और सोमजी मुख्य थे। उनमे हाथीशाहने तो रायचन्दी-छोड का विरुद प्राप्त किया था। उनके सुपुत्र पनजी भी सुयशके पात्र थे। मूलजी, संघजी पुत्र वीरजी एवं परीख सोनपाल सूरजीने २४ पाक्षिकोंको भोजन कराया था। आचार्य श्रीकी आज्ञामे परीख चन्द्रभाण, लालू,

*समयसुन्दरजी कृत अष्टकमें आपके आज्ञानुयायिओंकी सूची मै इनके अतिरिक्त भटनेर, मेवाड़, जोधपुर, नागौर, वीरमपुर, साचोर, किरहोर, सिद्धपुर, महाजन, रिणी, सांगानेर, मालपुर, सरसा, धींगोटक, भरुच, राधनपुर वाराणपुर आदिके संघोंके भी नाम भी आते है।

अमरसी शाह, मधजी कचरमल, परीख असा, वाछडा देवकर्ण, शाह गुणराजक पुत्र रायचन्द गुलालचन्द, इस प्रकार राजनगरका नामनीय संघ था और धर्मकृत्य करनेमे खम्भातके भणसाली वधुका पुत्र ऋषभदास भी उल्लेखनीय था।

हर्षनन्दनके गीतानुसार मुकरबखान (नवाब) भी आपको सन्मान देता था। इस प्रकार आचार्य श्रीका परिवार उदयवन्त था, गीतार्थ शिष्योंको आचार्यश्रीने यथायोग्य वाचक उपाध्यायादि पद प्रदान किये थे और अपने पदपर स्वहस्तसे अहमदाबादमे जिनधर्मसूरिजीको (प्रथम पछेवडी ओढाकर) स्थापन किया। उस समय भणसाली वधूकी भार्या विमलादे, भणसाली सधुआकी पत्नी सहिजलदे (जिसने पूर्व भी शत्रुंजय संघ निकाला और बहुतसे धर्मकृत्य किये थे) और श्रा० देवकीने पदमहोत्सव बड़े समारोहसे किया।

पदस्थापनाके अनन्तर जिनसागरसूरिके रोगोत्पत्ति होनेके कारण आपने वैशाख शुक्ला ३ को शिष्यादिको गच्छकी शिक्षामण दे, गच्छ भार छोड़ा। वैशाख सुदी ८ को अनशन उच्चारण किया। उस समय आपके पास उपाध्याय राजसोम, राजसार, सुमतिगणि, दयाकुशल वाचक, धर्ममंदिर, समयनिधान, ज्ञानधर्म, सुमतिवल्लभ आदि थे। सं० १७१६ जेष्टकृष्णा ३ शुक्रवारको आप स्वर्ग सिधारे और हाथीशाहने अग्नि संस्कारादि अन्त-क्रिया धूमसे की। इसके पश्चात् संघने एकत्र होकर गायें, पाडे बकरीयें आदि जीवोंकी २००) रुपये खर्चा कर रक्षा की और शान्ति जिनालयमे देववन्दन कर शोकका परित्याग किया।

उपरोक्त (वर्णनवाले) रासकी रचना सुमतिवल्लभने (सुमतिसमुद्र शिष्यके साथ) सं १७२० श्रावण शुक्ला १५ को की। आचार्य श्रीके रचित चौबीसी एवं स्तवनादि उपलब्ध हैं।

जिनधर्मसूरि

(पृ० ३३५-३६)

आप भणशाली गोत्रीय (रिणमल्ल) की पत्नी मृगादेके पुत्र थे। पद स्थापनाका उल्लेख ऊपर आही चुका है। ज्ञानहर्षके गीतानुसार आप बीकानेर पधारे, उस समय गिरधरशाहने प्रवेशोत्सव बड़े समारोहसे किया था। विशेष ज्ञातव्य देखें: खरतरगच्छपट्टावली संग्रह।

जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ३३७)

आप जिनधर्मसूरिजीके पट्टधर थे। बुहरा वंशीय सावलशाह आपके पिता और साहिबदे आपकी माता थी। विशेष ज्ञातव्य देखें खरतरगच्छपट्टावलीसंग्रह।

जिनयुक्ति सूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ३३७-३८)

उपरोक्त जिनचन्द्रसूरिके (पश्चात् पट्टावलीके अनुसार) पट्टधर जिनविजयसूरिके पट्टधर जिनकीर्तिसूरिके पट्टधर जिनयुक्तिसूरिजी हुए, उनके पट्टधर आप थे। रीहड़ गोत्रीय शा० भागचन्दकी भार्या यशोदाकी कुक्षिसे आप अवतरित हुए। बीलाड़े चतुर्मासके समय कवि आलमने यह गीत रचा था। गीतमे प्रवेशोत्सवके समयकी भक्तिका संक्षिप्त वर्णन है।

जिनचन्द्रसूरिजीके पट्टधर जिन -न-जिनहेम-जिनसिद्धसूरिके पट्टधर जिनचन्द्रसूरि अभी विद्यमान हैं। विशेष ज्ञातव्य देखें — (खरतरगच्छपट्टावलीसंग्रह)।

रंगविजयशाखा

जिनरंगसूरि

(पृ० २३१-३३)

श्रीजिनराजसूरि (द्वि०) के आप शिष्य थे। श्रीमाली, सिन्धूड गोत्रीय साकरसिंहकी भार्या सिन्दूरदेकी कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। सं० १६७८ फाल्गुन कृष्णा ७ को जैसलमेरमें आपने दीक्षा ली थी, दीक्षितावस्थाका नाम रंगविजय रखा गया। श्रीजिनराजसूरिजीने आपको उपाध्याय पद दिया था। ज्ञानकुशलकृत गीत और जिनराजसूरि गीत नं० ६ में आपको युवराज पदसे सबोधन किया गया है जोकि महत्वका है।

कमलरत्नके गीतानुसार पातिसाह (शाहजहां ?) ने आपकी परीक्षाकी थी और ७ सूबोंमें (इनका) वचन प्रमाण करनेका फरमान दिया था। उसने पाटनीपुर दारासको सुल्ताणने आपको 'युगप्रधान' पदका निसाण दिया था। सिन्धुड नेमीदास-पचायणने प्रवेशोत्सव (शाही निसाणके साथ ?) बड़े समारोहसे किया, सर्व महाजन संघको नालेरकी प्रभावना दी गई। सं० १७१० मालपुरेमें महोत्सवके साथ 'युगप्रधान' पद-स्थापन हुआ था।

आपके रचित अनेकों स्तवनादि उपलब्ध हैं। उनमेसे कई दिल्लीसे (१ छोटासे ग्रन्थमें) यतिरामपालजीने प्रकाशित किये हैं।

आपके रचित कृतियोंमे १ सौभाग्यपंचमी चौ०, २ नवतत्त्वबाला० (श्राविका कनकादेवीके लिये रचित श्रीपूजजी सं० नं० ४११); ३ बहुत्तरी आदि मुख्य हैं। आपके लि० एक प्रति अजीमगंज भंडारसे है।

जिनरंगसूरिजीके पट्टधर आचार्योंकी नामावलीका क्रम इस प्रकार है. जिनरंगसूरि-जिनचंद्रसूरि-जिनविमलसूरि-जिनललित-सूरि-जिनअक्षयसूरि-जिनचंद्रसूरि-जिननन्दिवर्द्धनसूरि-जिनजयशे-खरसूरि-जिनकल्याणसूरि-जिनचंद्रसूरिजीके पट्टधर जिनरत्नसूरि सं० १९९२ वै० व० १५ को लखनऊमे स्वर्ग सिधारे। इस शाखाकी गद्दी लखनऊमे है।

मंडोवरा शाखा

जिनमहेन्द्रसूरि

(पृ ३०२ से ३०४)

शाह रुघनाथकी पत्नी सुन्दरा देवीकी कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था, श्रीजिनहर्षसूरिजीके आप पट्टधर थे। गीतमें कवि राजकरणने पूज्यश्रीके मरुदेश पधारने पर जो हर्ष हुआ और प्रवशोत्सवकी भक्ति की गई, उसका सुन्दर चित्र अंकित किया है। गहुंली नं० १मे उदयपुर नरेशने आपको वहा पधारनेके लिये विनती स्वरूप परवाना भेजने और मेड़ते, अम्बेरगढ़, बीकानेर जैसलमेर संघकी भी विज्ञप्तिये जानेका सूचित किया है। एवं कविने अपनी ओरसे एक बार जोध-पुर पधारनेकी विनती की है।

आपके चरित्रके विषयमे विशेष विचार फिर कभी करेंगे। आपके पट्टधर जिनमुक्तिसूरिजीके पट्टधर जिनचंद्रसूरिजी अभी जयपुरमे विद्यमान है। उनके पट्टधर युवराज धरणेन्द्रसूरि विचरते है।

तपागच्छीयकाव्यसार
शिवचूला गणिनी
(पृ० ३३६)

पोरवाड गहाकी पत्नी विल्हणदकी कुक्षिसे जिनकीर्तिसूरि उत्पन्न हुए, उनकी बहिन नर्वर्तिनी राजलक्ष्मी थी।

स० १४६३ वैशाख कृष्णा १४ को मवाडन देवलवाडेमे शिवचूला साध्वीको महत्तरा पद दिया गया, उस समय महाजन सघवीन महोत्सव किया, सोमसुन्दरसूरिने वासक्षेप दिया। रत्नसेखरको वाचक पद दिया गया। और भी पन्यास गणीज स्थापित किए गए दीक्षा महोत्सव हुए। याचकोंको दान दिया गया, पताकाओंस नगर सजाया गया और वाजित्र बजने लगे।

श्री विजयसिंहसूरि
(पृ० ३४१ से ३६८)

कवि गुणविजयने सब प्रथम सिरोही मण्डण आदिनाथ, ओसवालोंक जिनालयमे श्रीहीरविजयसूरि प्रतिष्ठित श्रीअजितनाथ, शिवपुरीय स्वामी शान्तिनाथ, जीराउला तीर्थपति पार्श्वनाथ, ब्रमणवाड व वीरवाडक मण्डन श्रीमहावीर एव सरस्वती और गुरु श्रीकमलविजयक चरणोमे नमस्कार करक श्रीहीरविजयसूरिक पट्टधर जेसिंघजी (विजयसेनसूरि) क पट्टाधीश विजयदेवसूरिक शिष्य विजयसिंहसूरिक विजयप्रकाश रासकी रचना प्रारम्भकी हैं, जिन्हे विजयदेवसूरिने अपने पट्टधर स्थापित किया था।

श्रीआदिनाथके पुत्र मरुदेवके बसाया हुआ मरु नामक देश है जहां ईति, भीति, अनीति, चोरी-चकारी और डकायतीका नामो-निशान भी नही है, बड़े-बडे व्यापारी निवास करते हैं और वेरोक-टोक सत्राकार खोल रखे है। राजा लोग भी धर्मिष्ठ है, परमेश्वर की पूजा कराते है, जीवोंका "अमारि" नियम पलाते हैं एवं शिकार भी नही खेलते। वहांके सुभट शूर-वीर, लम्बी मूंछोंवाले हैं उनके हाथमे कृपाणी चमकती है, व्यापारी प्रसन्न वदन रहते हैं और घर-घरमे सुभिक्ष सुकाल है।

जिस प्रकार मारवाड़ मोटा देश है वैसे वहांके कोश भी लम्बे है, निवासी भद्र प्रकृतिके है मनमे रोष नही रखते, कमरमे कटारी बांधते है। वणिक लोग भी जबरे योद्धा है हथियार धारण किये रहते है। रणभूमिमे पैर पीछा नही फेरते स्वधर्मियोंको धर्ममें स्थिर करते है। निष्कपट वृद्धाएं भी लम्बा घूंघट रखती है, सादगी जीवन और रसोईमें राबकी प्रधानता है, विधवाएं भी हाथमे चूड़िया रखती हैं। वाहणमें ऊंठकी प्रधानता है, पथिक लोग जहां थकते है वही विश्राम लेते है परन्तु चोरीका भय नहीं है। शत्रुओंसे अभेद्य मार-वाड़के ये ६ कोट है. १ मण्डोवर (जोधपुर) २ आबू ३ जालोर ४ वाहड़मेर ५ पारकर ६ जैसलमेर ७ कोटड़ा ८ अजमेर ६ पुष्कर या फलौदी।

धन्य है मंडोवर देश जहां मंडोवरा पार्श्वनाथ और फलवद्धि पार्श्वनाथका तीर्थ है, कवि कहता है कि उनके दर्शनोंसे मैं सफल और सनाथ हो गया।

मरु मंडलमे यशस्वी मेडता नगर है इसकी उत्पत्तिके लिये यह लोककथा प्रसिद्ध है कि जैसे जैनशासनमे भरतादि चक्रवर्ती हुए वैसे शिवशासनमे मान्धाता नामक प्रथम चक्री हुआ उसकी माताका देहान्त हो जानेसे वह इन्द्रकी देखरेखमे बडा होकर महाप्रतापी चक्रवर्ती हुआ उसका आयुष्य कोडा कोडी वर्षोका था। उसके लिये कृत युगमे इन्द्रने राज्य स्थापना करके मेडता नगर बसाया।

मेडता नगर अति समृद्धिशाली था, सरोवरादिका वर्णन कविने रासमे अच्छा किया है। निकटवर्ती फलवद्धि पार्श्वनाथका तीर्थ महामहिमाशाली है, पोष दसमीको मेलेमे जहा एक लाख जनता एकत्र होती है—दूर-दूर देशोसे यात्री आते हैं।

उस मेडतमे ओसवाल जातिके चोरडिया गोत्रीय शाह माडण का पुत्र नयमल निवास करता था, उसकी पत्नीका नाम नायकदे था। उसके घरमे लक्ष्मीका निवास था सामग्री भरपूर थी, (उसकी) दादी फूला धर्म कार्योमे धनका अच्छा सदुपयोग किया करती थी। नयमलके १ जेसो २ कमो ३ कर्मचन्द ४ कपूरचन्द और ५ पचायण नामक पाच पुत्र थे, पाचो पुत्रोमे तृतीय कर्मचन्द हमारे चरित्र नायक हैं उनका जन्म वि० स० १६४८ (शक १५०६) फाल्गुन शुक्ला २ रविवारको उत्तरभद्रपदाके चतुर्थ चरण और राजयोगमे हुआ था।

एकवार रात्रिमे सेठ नयमल सुख शय्यापर सोये हुए थे, जाग्रत होकर ससारके सुखोके मिलनेका कारण विचार करते हुए वैराग्य वासित होकर सुगुरुका सयोग प्राप्त होनेपर कृत पापोकी-आलोयणा लेनेका विचार किया। दैवयोगसे तपा गच्छके श्रीकमलविजयजी म०

५५ ठाणोंसे विचरते हुए मेडता पधारे, उनके समक्ष श्रेष्ठिने आकर आलोयणा लेनेकी इच्छा प्रगट करनेपर मुनिवरने गच्छनायकसे आलोयणा लेनेकी राय दी परन्तु आखिर नथमलजीका अत्याग्रह देखकर २१ अष्टम तप और बहुतसे बेले और उपवासोंकी आलोयणा दी।

आलोयणाके अनन्तर विशेष वैराग्य वासित होकर अपनी स्त्री नायकदे और भ्राता सुरताणको भी महाव्रत लेनेके लिए उपदेश देकर, दीक्षाका परामर्श किया, सबके साथ कर्मचन्द आदि पुत्रोंने भी स्वीकृति दी। सेठने गच्छनायकके मिलनेपर दीक्षा लेना निश्चित किया।

इसी अवसरपर लाहोरमें दो चातुर्मास करके विजयसेनसूरि मेडता पधारे। नाथू शाह पांचों पुत्रोंके साथ गुरुश्रीको वन्दनार्थ आया। शुभ लक्षणवाले कर्मचन्दको देखकर गच्छनायकने सोचा कि अगर यह चरित्र ले, तो वडा विचक्षण होगा। गुरुश्रीने नाथू शाहसे कहा कि अभी हम हीरविजयसूरिजीके दर्शनार्थ जा रहे हैं तुम यथावसर कर्मचन्द्रादिके साथ आ जाना, ऐसा कहकर मेड़तासे सोजड़ी, पर्युषणाके पारणेपर राणकपुर, वरकाणा तीर्थकी यात्रा करते हुए जालोर पधारे वहा कमलविजयजीने उन्हे वन्दना की, वीजोवाका संघ भी आया। वहासे विहारकर श्री विजयसेनसूरि सिरोही होकर पाटण पधारे और हीरविजयसूरिजीका निर्वाण हुआ जानकर वही ठहरे।

इधर मेड़तेमे कर्मचन्द आदि दीक्षाकी तैयारिया करने लगे, वहुतसे धर्मकृत्योंको करते हुए जेसा और पञ्चायणको गृह भार संभलाकर १ नाथू २ सुरताण ३ कर्मचन्द्र ४ केसा ५ कपूरचन्द्र

(६ नामकर्ण) ६ व्यक्तियोंने स० १६५२ माघ (शुक्ल) २ को पाटणमे विजयसेनसूरिके पास दीक्षा ग्रहण की। उनके दीक्षाके नाम इस प्रकार रखे गए—नाथू=नयविजय, सुरताण=सूरविजय, कमचन्द्र=कनकविजय, कगा=कीर्तिविजय, कपूरचन्द्र=कुंवरविजय, इनमें कनकविजयको सुयोग्य समझकर विजयसेनसूरिने सानिध्य विजयदेवसूरिको साप दिया, उन्होंने इनको विद्याध्ययन कराया, श्रीविजयसेनसूरिने अहमदाबादमे स० १६७० मे पण्डितपद से विभूषित किया। वीसा और वणान महोत्सव किया। खंभातमे श्रीविजयसेनसूरिका स्वर्गवास हो जानेसे उनके पट्टधर विजयदेवसूरि हुए, उन्होंने स० १६७३ मे पाटणमे चोमासा किया, पोष वदी ६ को लाली श्राविकाने इनके हाथसे प्रतिष्ठा करवाई, इसी समय कनकविजयको उपाध्याय पद भी दिया गया।

सम्राट जहांगीर विजयदेवसूरिसे माण्डवगढमे मिले और प्रसन्न होकर "महातपा" पद दिया। विजयदेवसूरिने गुर्जर देशमे विहार करते हुए श्री शत्रुंजयकी यात्रा की, उसके पश्चात् दो चौमासे दीवमे करके गिरनारकी यात्रा कर नवानगर पधारे, वहा सबने २०००) नामी व्ययकर साम्हेला किया। तत्पश्चात् उन्होने पुन शत्रुंजयकी यात्राकर खंभात चातुर्मास किया, वहा तीन प्रतिष्ठाओमे चौदह हजार खर्च हुए। वहासे माघ शुक्ला ६ को सावली पधारे। ३ मास तक मौन रहे, वहा सोनी रतनजीने अमारि पालन कराई, उस समय उ० कनकविजयजी ही व्याख्यान देते थे। गुरुने बहुतसे छट्ठ अट्ठमादि किए और वे आंबिल करके पूर्वदिशिकी ओर ध्यान

किया करते थे। सूरि मंत्रके आराधनसे वैशाखमें स्वप्नमें देवने कनकविजयजीको पद स्थापनका निर्देश किया, उसके बाद पूज्य सावली और ईडर पधारे। वहां दो चौमासे किये, प्रासाद प्रतिष्ठा हुई। उसके बाद राजनगर चातुर्मास करके एक चातुर्मास बीबीपुरमे किया। चातुर्मासके अनन्तर सीरोहीके पंजावत तेजपाल और राय अखेराजके पोरवाड़-मंत्री तेजपालने गुरु वन्दना की, गुरुश्री पुनः श्री सिद्धाचलजीकी यात्राकर कमीपुर पधारे। तेजपालने पारस्परिक झगड़ा मिटाकर मेल कर लेनेकी विज्ञप्ति की उन्होंने भी स्वीकार कर समझौतेका पत्र लिखा, आचार्य विजयानन्दसूरि उ० नन्दि-विजय वा० धनविजय, धर्मविजय आदिने विजयदेवसूरिकी पुनः आज्ञा शिरोधार्य की, तेजपाल पूज्यश्रीको सिरोही पधारनेकी विज्ञप्तिकर वापिस आ गया। पूज्यश्री राजनगरसे विहारकर ईडर आये, वहां तपागच्छीय संघके आग्रहसे श्री उ० कनकविजयजीको वै० शु० ६ सोमवारको पुष्य नक्षत्रके दिन सूरिपद देकर स्वपट्ट पर स्थापन किया। उस समय ईडर संघ मुख्य सोनपाल, सोमचन्द्र, सूरजीके पुत्र सार्दूल, सहसमल, सुन्दर, सहजू, सोमा, धनजी मन-जी, इन्दुजी और अमीचंद, राजनगरके संघवी कमलसिह, अहमद-पुरके पारख वेलाके पुत्र चापसी, पारख देवजी, सूरजी, थानसिह, रायसिह, सा० भामा, तोला, चतुर्भुज, सिह, जागा, जसु, जेठा जो गुरुश्रीके भाई थे, कोठारी वच्छराज, रहीआ, कर्मसिह, धर्मसी, तेजपाल, अखयराज मंत्री समरथ मं० लखू भीमजी, भामा, भोजा, फड़िया मालजी भाणजी लखा चौथिया, गांधी वीरजी, मेघजी

सा० वीरजी, देवकरण, पारस जस्सू, माणजी, सूरजी, तेजपाल इत्यादि इडरका संघ सम्मिलित हुआ इसी प्रकार धावड और अहिमनगरका संघ एवं सावलीका संघ पदमसी, चादसी आदि एकत्र हुए, सा० नाकर पुत्र सहजून चतुर्विध संघके साथ पदप्रदानके लिये तपागच्छ नायकको एवं उ० धर्मविजय वा० लावण्यविजय वा० चारित्रविजय प० कु शलविजय इन चारोंको बुलाया गया। पदस्थापनाके अनन्तर कनकविजयका नाम विजयसिंहसूरि रखा गया, प० कीर्तिविजय, लावण्यविजयको वाचकपद और अन्य ८ साधुओंको पंडित पद दिया गया। इस उत्सवमे सहजून पाच हजार महम्मदी व्यय किये, इडर नरेश कल्याणमल प्रसन्न हुए। ज्येष्ठ मासमे बिम्ब प्रतिष्ठा हुई, शाह श्रइयान उत्सव किया, दूसर पक्षमे अमराउतने सुयश लिया, पारस देवजीके घर पूज्यश्रीने प्रतिष्ठा की, इस प्रकार स० १६८१मे बडे ही आनन्दोत्सव हुए। राय कल्याणने दोनों आचार्यों को इडरमे चोमासेके लिए रखा।

सीरोहीके शाह तेजपालकी विनप्तिसे चैत्र मासमें सूरिजी आबू पधारे, म० महाजल दोसी, जोधा सन्मुख आए। आबूकी यात्राकी। वमणवाडके वीर प्रभुकी यात्रा कर चातुर्मासार्थ सीरोही पधारे। सा० तेजपालादिने वहुतसे सुकृत किये। इसी समय विजयानन्दसूरी स० १६८३ को यह विजयप्रकाश रास कमलविजयके शिष्य विद्या-विजयके शिष्य गुणविजयने रचा।

ऐतिहासिक सज्झायमाला भा० १ पृ० ७७ (सज्झाय न० ४८ लालकुशलरचित) मे कई बातोंका अन्तर व विशेषताएं हैं।

१ पुत्रोंके नाममें ५ वे पंचायणके स्थानमें प्रथम जेठाका नाम है।

२ पाचही व्यक्तियोंके दीक्षा लेनेका लिखा है, सुरताण-सूरविजय का उल्लेख नहीं है। नायकदेका दीक्षा नाम नयश्री लिखा है, एवं दीक्षा सं० १६५४ लिखा है।

विशेष सं० १६८४ पोष शुक्ल ६ बुधवार जालोरके मंत्री जयमलने गुणानुज्ञाका नन्दिमहोत्सव कराया, उस समय जससागर के शिष्य जयसागरको और विजयसिंहसूरिके भाई कीर्तिविजयको वाचक पद दिया। आचार्य विजयसिंहसूरिने राणा जगतसिंहको प्रतिबोध दिया, मेडतेमें आगरा निवासी बादशाहके मुख्य व्यवहारी हीराचंदकी भार्या मनीने इनके हाथसे प्रतिष्ठा कराई, इसी प्रकार किसनगढमें राठोर रूपसिंहके महामन्त्री रायसिंहके आग्रहसे चातुर्मास कर प्रतिष्ठा की। सं० १७०६ असाढ़ सुदि २ अहमदाबादके नवीनपुरामें उनका स्वर्गवास हुआ।



संक्षिप्त कविपरिचय

अक्षरानुक्रमसे कवियोके नामोकी सूची

अभयतिलक (३०) जिनपतिसूरि पट्टधर जिनेश्वरसूरिके शिष्य थे, आपके रचित १ स० १३१२ पालणपुरमे हेमचन्द्रसूरि कृत द्याश्रय (२० सर्ग) का वृत्ति २ न्यायालङ्कार टिप्पन (पञ्चप्रस्थ न्यायतर्क व्याख्या) ३ वीररास (स० १३१७) विशेष परिचय देखें —जैनयुग वर्ष २ पृ० १५६ ला० भ० का लेख।

१ अमैविलास (४१३) श्रीपालचरित्र कर्ता जयकीर्त्तिजीके शिष्य प्रतापसौभाग्यजीके आप शिष्य थे। आपकी परम्परामे अभी कृपाचन्द्रसूरि विद्यमान हैं।

२ आनन्द (१७७)।

३ आनन्दविजय (२०६)।

४ आलम (३३८) कविवर समयसुन्दरकी परम्परामे आसकरणजीके शिष्य थे, आप अच्छे कवि थे, आपके रचित १ मौन एकादशी चौ० (१८१४ मकसूदावाद) २ सम्यक्त्व कौमुदी चौ० ३ जीवविचारस्तवन आदि उपलब्ध हैं।

५ कनक (१३४) आप सम्भवतः उ० क्षेमराजजीके शिष्य थे, आपका पूरा नाम 'कनकतिलक' होगा।

६ कल्याणकमल (१००) देखे. युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १७२।

७ कल्याणचंद्र (५२) कीर्तिरत्नसूरिजीके शिष्य थे। सं० १५१७मे सूरिजीसे आपने आचारागकी वाचना ली जिसकी प्रति जे० भं० मे (नं० २) अव भी विद्यमान हैं।

८ कल्याणहर्ष (२४७)

६ कविदास (१७४)

१० कवीयण (२६३-२६२)।

११ कनकसिंह (२४३) शिवनिधान शिष्य, देखे यु० जि० सू० पृ० ३१३।

१२ कमलरत्न (२३३) देखें यु० जि० सू० पृ० ३१५।

१३ कमलहर्ष (२४०) श्रीजिनराजसूरि शिष्य मानविजयजी के आप शिष्य थे, आपके रचित ' १ पाडवरास (१७२८ आ० व० २ र० मेड़ता) २ धना चौ० (१७२५ आ० सु० ६ सोजत)' ३ अंजना चौ० (१७३३ भा० सु० २) ४ रात्रि भोजन चौ० (१७५० मि० लूणकरणसर) ५ आदिनाथ चौढा० ६ दशवैकालिक सज्झाये इत्यादि उपलब्ध है।

१४ कनकधर्म (२६६)।

१५ कनकसोम (६०-१४४) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १६४

१६ करमसी (२४७)

१७ कीर्तिवर्द्धन (३३३) जिनहर्ष (आचपक्षी) सूरिजीके शिष्य दयारत्न (कापरहेडारास कर्त्ता १६६५) के आप शिष्य थे, आपके रचित सदयवत्ससावलिंगा चौ० (१६९७ विजयदशमी) प्राप्त हैं।

१८ कुशलधीर (२०७) देखें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १६४।

१९ कुशललाभ (११७) „ „ „ „ १९६।

२० खरपति (१३८)

२१ खेमहंस (२१७) क्षेमकीर्त्ति (शाखाके आदि पुरुष) जीके शिष्य थे, आपकी रचित मेघदूत दीपिका उपलब्ध है। जयसोम, गुणविनय आपहीकी परम्परामें थे।

२२ खेमहर्ष (२४२-४३) आपके रचित कई स्तवन हमारे संग्रहमें हैं।

२३ गुणविजय (३६४) आपके रचित १ विजयप्रशस्ति काव्यके अन्तिम ५ सर्गमूल और समग्रमन्थपर टीका २ कल्पलता टीका ३ सातसौ बीस जिन स्त० आदि उपलब्ध हैं।

२४ गुणविनय (६३-६६-१००-१२५-१७२-२३०) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २००।

२५ गुणसेन (१३६) सागरचन्द्रसूरि शाखाके वा० सुखनिधानजी के आप शिष्य थे आपके रचित कई स्तवन हमारे संग्रहमें हैं। आपके यशोलाभ नामक शिष्य थे जो अच्छे कवि थे।

२६ चारित्रनंदन (२६७)।

२७ चारित्रसिंह (२२५) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १९७।

२८ चन्द्रकीर्ति (४०६) देखें युग जिनचंद्रसूरि पृ० २०८।

२९ जयकीर्ति (३३४) कविवर समयसुन्दरजीके शि० वादी हर्षनंदनजीके शिष्य थे।

३० जयकीर्ति द्वि० (४११-१२) आप कीर्त्तिरत्नसूरि शाखाके अमरविमल शि० अमृत सुन्दरजीके शिष्य थे, आपके रचित १ श्रीपाल चारित्र (१८६८ जेसलमेर) २ चैत्रीपूनम व्याख्यान आदि उपलब्ध हैं।

३१ जयनिधान (१४५) देखें युग जिनचंद्रसूरि पृ० २०९।

३२ जयसोम (११८) देखे युग ,, पृ० १९७।

३३ जल्ह (१३८)।

३४ जिनचन्द्रसूरि (४१८) उसी ग्रन्थमे राससार पृ० २६९

३५ जिनसमुद्रसूरि (३१५-१६) देखे इसी ग्रन्थमे राससार पृ० ७५

३६ जिनेश्वरसूरि (४३०) वेगड़ गुणप्रभसूरि शि०

३७ देवकमल (१३९) इनका नाम जइतपदवेलिमे आता है अतः साधुकीर्तिजीके गुरु-भ्राता होना सम्भव है।

३८ देवचंद (२९४)।

३९ देवीदास (१४७)।

४० धर्मकलश (१९)।

४१ धर्मकीर्ति (१८९) देखें युग जिनचंद्रसूरि पृ० १८३।

४२ धर्मसी (२५०-५२) देखें राजस्थान पत्र वर्ष २ अंक २ में प्र० मेरा लेख।

४३ नयरंग (२२६) देखे युग जिनचंद्रसूरि पृ० १९५।

४४ नेमिचद भडारी (३७७) षष्टीशतक कर्त्ता, जिनपति शिष्य जिनेश्वरसूरिके पिता।

४५ पुण्यसागर (५) देख युग० जिनचद्रसूरि पृ० १८८।

४६ पुण्य (३३७) यथासम्भव आप समयसुन्दरजीक परम्परामे (कविवर विनयचद्रके प्रगुरु) होगे और पूरा नाम (पुण्यचद शि०) पुण्यविलास होगा।

४७ पदमराज (६७) देखें युग० जिनचद्रसूरि पृ० १६०।

४८ पद्ममन्दिर (५६) आपके रचित १ प्रवचनसारोद्धार बाला० (१५६३) उपलब्ध हैं।

४६ पहराज (४०)

५० पल्ह (३६८) इनका नामोल्लेख चर्चरी टीका (अपभ्रश काव्यत्रयी पृ० १७) में आता है, आप दिगम्बर भक्त और (जिन दत्तसूरिके) अभिनवप्रबुद्ध श्राद्ध थे, लिखा है।

५१ भत्तउ (६)।

५२ भक्तिलाभ (५४)उ०जयसागरजीके शि०रत्नचद्रजीक आप सुशिष्य थे, आपके रचित १ कल्पातरवाच्य २ लघुजातक कारिका-टीका (१५७१ विक्रमपुर) ३ जीरावला पार्श्वस्त०सस्कृत स्तोत्र प०३, ४ सीमधरस्तवनादि उपलब्ध हैं। आपके शि० चारुचद्रजी कृत १ उत्तम कुमारचरित्र २ रतिसार चौ० ३ हरिबल चौ० (१५८१ आ० सु० ३) ४ नदनमणियारसन्धि (१५८७) आदि उपलब्ध हैं आपकी परम्परामे श्रीवल्लभोपाध्याय हो गये हैं, देखे युग० चरित्र पृ० २०३।

५३ महिमा समुद्र (४३१-३२) वेगडशाखा

५४ महिमहर्ष (४३२) वेगड शाखा, अच्छे कवि थे ।

५५ महिमाहंस (३००)

५६ माडदास (३१८)

५७ माणक (२६४)

५८ माधव (३३६)

५९ मेरुनन्दन (३९९) जिनोदयसूरि आपके दीक्षागुरु थे। आपके रचित अजितशान्तिस्तवनादि उपलब्ध है।

६० रयणशाह (७)

६१ रत्ननिधान (१०३-१२३) देखे युο जिनचन्द्रसूरि पृο १०४

६२ राजकरण (३०३-३०४)

६३ राजलछी (३४०)

६४ राजलाभ (२५५-२५७) देखे युο जिनचंद्रसूरि पृο १७३

६५ राजसमुद्र (१३२) आचार्य पदके अनन्तर नाम जिनराजसूरि, देखे इसी ग्रन्थमे राससार पृο २२

६६ राजसुन्दर (३२०) प्रशस्तिसे स्पष्ट है कि आप (जिनसिंहपट्टे) पिप्पलक जिनचन्द्रसूरिजीके शिष्य थे।

६७ राजसोम (१४९) कविवर समयसुन्दरजीके शिο हर्षनन्दन शिο जयकीर्त्तिजीके शिष्य थे। आपके रचित श्रावकाराधना (भाषा) २ कल्पसूत्र (१४ स्वप्न) व्याख्यान (सं० १७०६ आ० सु० ६ जेसलमेर, जिनसागरसूरि शि० जसवीर प्र०) ३ इरियावही मिथ्यादुष्कृतस्त०बाला० ४ फारसी स्त० आदि उपलब्ध है।

६८ राजहंस (२३१)

६६ रूपहंस (२४१) आप राजविजयजीके शि ष्य थे।

७० लब्धिकल्लोल(७८-१२१ १२२)देखें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७१ लब्धिशेखर (६८)

७२ ललितकीर्त्ति (२०७-४०५) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७३ लाधा शाह (३२१) कडुआमती (कडुआ सीमो-वीरो-जीवराज तेजपाल रत्नपाल—जिनदास-तेज-कल्याण-लधुजी थोभणशि०) थे। आपके रचित, १ जम्बूरास (१७६४का० सु० २ गुरु सोहीगाम) २ सूरत चैत्य परिपाटी (१७६३ मि० व० १० गु० सूरत) ३ पृथ्वी-चन्द्रगुणसागर चरित्रबालाव० (१८०७ मि० सु०५ रवि० राधणपुर) प्राप्त है।

७४ वसतो (२६५) आपके रचित् १ लोद्रवास्त० (१८१७ मि० व ५ र०) २ वीशस्थानक स्त० गा० १६, ३ रात्रिभोजन सझाय, ४ पार्श्वनाथ स्तवनादि उपलब्ध हैं।

७५ विमलरत्न (२०८)

७६ विद्याविलास (२४५) आपके रचित कई संस्कृत अष्टक आदि हमारे सग्रहमे है।

७७ विद्यासिद्धि (२१४)

७८ वेलजी (२५१)

७६ श्रीसार (६१-६४) देखें युगप्रधान जिनचन्दसूरि पृ० २०७

८० श्रीसुन्दर (१७१) „ „ पृ० १७२

८१ समयप्रमोद (८६-६६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १७२

८२ समयसुन्दर (८८-१०६-७ ८-६-२६-२७-२८-२६-३१-

२००-२२७) देखे उपरोक्त पृ० १६७ और राससार पृ० ४५।

८३ समयहर्ष (२५४)

८४ सहजकीर्ति (१७५-७६) देखे यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

८५ सारमूर्त्ति (२३)

८६ साधुकीर्त्ति(६२-६७-४०४)देखे यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६२

८७ सुखरत्न (१४६)

८८ सुमतिकाल्लोल (६४) ,, पृ० १०५

८९ सुमतिवल्लभ (१६८)

९० सुमतिविजय (१७७)

९१ सुमति विमल (२५०)

९२ सुमतिरंग (४१०-४२१) देखे यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० ३१५

९३ विवेकसिद्धि (४२२)

९४ सोमकुंजर (४८) आप उ० जयसागरजीके विद्वान शिष्य थे। विज्ञप्तित्रिवेणी पृ० ६१ से ६३) में आपके रचित कई अलंकारिक पद्य भी पाये जाते है।

९५ सोममूर्त्ति (३८७) जिनपतिसूरि शि० जिनेश्वरसूरिजीके आप सुशिष्य थे और उ० अभयतिलकजीके आप सतीर्थ थे। देखे जैनयुग वर्ष २ पृ० १६४।

९६ हर्षकुल (५७) महो०-पुण्यसागरजीके शिष्य थे, उल्लेख यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६०

९७ हर्षचन्द (२४६) रूपहर्ष शि०, आपके रचित अन्य एक गहुंली भी संग्रहमें है।

९८ हर्षनन्दन(१२४-३२-३३-१४६-२०१-२०३)देखें यु-पृ० १७८

९९ हर्षवल्लभ (४१७) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८५

१०० सेवकसुन्दर (४२०)

१०१ क्षमासिद्धि (२११-१३)

१०२ क्षमाकल्याण (२६६-३०६-७) देखें इसी ग्रन्थमें राससार पृ० ६४

१०३ ज्ञानकलश (३२६)

१०४ ज्ञानकुशल (२३२)

१०५ ज्ञानहर्ष (३३५-३७८) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० ३०५

कवियोंके नामके आगे प्रस्तुत संग्रह (मूल) के पृष्ठोंकी संख्या दी गई है। कई कवि एकही नामसे एकही समयमें कई हो गये हैं अतः संदिग्ध परिचय देना उचित नहीं ज्ञात हुआ ।





प्रगट प्रभावी योगीन्द्र युगप्रधानजी जिनदत्त सूरिजी

(जैसलमेर भाण्डागारीयप्राचीन ताडपत्रीय प्रतिके काष्ठफलकपर चित्रित)

॥ अर्हम् ॥

॥ श्री गुरु गुण षट्पद ॥

जिणवल्लह पमुहाण, सुगुरुण जो पढइ वर-कप्प ।
मंगल दीवमि कए, सो पावइ मंगल विमल ॥१॥
इग्यारह सइ सट्ठुत्तर समहिय संवच्छरि ।
आसाढह सिय छट्ठि चित्तकोटंमि पवरपुरि ।
महावीर जिणभवणिट्ठिय सठिउ जिणवल्लह ।
जिणि उज्जोयउ चहु गछु पडिय जिणवल्लह ।
गुरु तप कव्व नाडय पमुह, विज्जा वास पसिद्ध घर ।
परिहरवि आवि विहि पयड कइ, पुहवि पसंसिज्जइ सुपरपरि ॥२॥
इग्यारह गुणहत्तरइ किसण वैसाख छट्ठि दिणि ।
चित्तउडह वर नयरि सघु मिलियउ आणंदिणि ।
वद्धमाण जिणभवणि भयउ तहि घणउ महोछवु ।
देवभद्दि सठियउ सूरि जिणदत्त सुनिच्छवु ।
आयस पुणति सूरि भिड, जिम झाण नाण संतुट्ठ मण ।
जिणदत्त सूरि पहु सुर गुरवि, थुणवि न सक्कइ तुम्ह गुण ॥३॥
अज्जवि जसु जस पसर महि छहलइ धरत्तिहि ।
अज्जवि जसु गुण निवरू थुणहि पडिय बहु भत्तिहि ।
अज्जवि सुमरिज्जंतु विग्घु अवहरइ पवित्तण ।
नाम ग्रहणि कुगति जसु अज्जवि भवियण दिण ।

अज्जवि जु देवु लोइ ट्ठियउ, संघ मणछिउ देइ फलु ।
जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरूवि, धम्मु पयासिउ जिण अमलु ॥३॥
अभयदाणु जिणि दिनु सयल संघह विक्कमपुरि ।
किय पयट्ठ जिण उसभ भुवणि वहुविह उछवु भरि ।
जिणि पडिवोहउ कुमरपालु नरवय तिहुयण गिरि ।
पंचसत्त मुणि नेमि जेणि वारिउ देसण करि ।
उज्जेणी वर्क्कु जोइणि तणउं, जिणि पडिवोहउ झाण वलि ।
जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरवि, हुयउ न होइ सइ इत्थु कलि ॥ ४ ॥
बारह पंचुत्तरइ धवल वैसाख छट्ठि दिणि ।
सइ जिणदत्त मुणिंद ठविउ जिनचंदु पट्टि तहि (? जिणि) ॥
विक्कमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय मणु मोहइ ।
गणहरु जेम सुहंम सामि भवियण दिण वोहइ ।
जिणचन्द सूरि जसु चन्दु सम, अज्जवि उज्जोयइउ गयणु जिणि ।
.... ॥ ५ ॥
बारह सइ तेवीस समइ कत्तिय सिय तेरसि ।
बवेरपुरि ठविउ सूरि जिणपत्ति महा रिसि ॥
मंतुं दिनु जयदेव सूरि सूरहि सुपवित्तिण,
....
अत्थाणु पहुविरायह तणउ जिणि रंजवि जयपत्तु लियउ ।
खरहरय सद्दि जगि पयडिउ, जुग पहाणु पहुविप्पयउ ॥ ६ ॥
बारअट्ठहतरइ माह सिय छट्ठि भणिज्जइ ।
जिणेसर सूरि पइसरइ संघु सयलु विविह सज्जइ ।

सूरिमंतु सिरि सव्वदेवसूरिहि जसु दिन्नउ ।
जालउरहि जिणवीर भुवणि बहु उच्छव (की) नउ ॥
कसाल ताल झलरि पडह, वेण वसु रलियामणउ ।
सुपढति भट्ट सुमहि गहिर, जय जय सद्द सुहावणउ ॥७॥
जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचंदु जु जिणवइ ।
तुय सुगुरु आसीस दिंति जिणेसरसूरि मुणिवइ ।
जहि जाम जलु रहइ गयणि जाम मह दिणेसरु ।
ताम पयासिउ सूरि धमु जुगपवरु जिणेसर ॥
विहि संघु स नंदउ चिगणदिणु, वीर तित्थु थिरु होउ धर ।
पूजन्ति मणोरह सयल तहि, भणन्त पढति नारि नर ॥ ८ ॥
[इति षट्पदम्]



॥श्री जिणदत्तसूरि स्तुति॥

सिरि सुयदेवि पसाउ करे, गुरु श्रीजिणदत्त सूरि।
वन्निसु खरतर गग गयणि, सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥
संवत इग्यारह वरसि, वतीसइ जसु जम्म।
वाछिग मंत्री पिता जणणि, वाह (ड) देवि सुरम्म ॥ २ ॥
इगतालइ जिणवय गहिय, गुणहुत्तरइ जसु पाट।
वइसाखइ वदि छट्ठि दिणि, पय पणमी सुर थाट ॥ ३ ॥
अंवड सावय कर लिहिय, सोवन अखर अंवि।
जुग पहाण जगि पयडियउ ए, सिरि सोहम पडिविंव ॥४॥
जिण चोसठि जोगिणी जितिय, खित्तवाल वावन्न।
डाइणि साइणि विभूसीय, पहुवइ नाम न अन्न ॥ ५ ॥
सूरि मंत्र वलि कर सहिय, साहिय जिण धरणिंद।
सावय सविय लख इग, पडिवोहिय जण वृन्द ॥ ६ ॥
अरि करि केसरी दुद्ददल, चउविह देव निकाय।
आण न लोपि कोइ जगि, जसु पणमइ नरराय ॥ ७ ॥
संवत बारह इग्यार समइ, अजयमेरुपुर ठाण।
इग्यारसि आसाढ़ सुदि, सग्गिपत्त सुह झाणि ॥ ८ ॥
श्री जिणवलह सूरि पए, श्रीजिणदत्त मुणिंदु।
विग्घ हरण मङ्गलकरण, करउ पुण्य आणंदु ॥ ९ ॥

श्री पुण्यसागर कृत

॥ श्री जिनचन्द्रसूरि अष्टकम् ॥

श्रीजिनदत्त सुरिन्द्रपय, श्रीजिनचन्द्र मुणिन्द ।
नय (?)र मणि मंडित भाल यस, कुसल कुमुद वणचंद॥१॥
मवन मिव सत्ताणवय, सद्दुमि सुदि जम्मु ।
रासल तात सुमातु जसु, दल्हण देवि सुधम्म ॥ २ ॥
सवत धार निरोत्तरय, फागुण नवमि विसुद्ध ।
पंच महव्वय भरि धरिय, बालत्तणि पडिबुद्ध ॥ ३ ॥
बारह सइ पचोतरइ ए, वैशाखह सुदि छट्ठि ।
थापिउ विक्कमपुर नयरि, जिणदत्त सूरि सुपट्टि ॥ ४ ॥
तेविसइ भाद्रव कसिणि, चउदसि सुह परिणामि ।
सुरपुरि पत्तउ मुणिपवर, श्री जोयणिपुर ठामि ॥ ५ ॥
सुह गुरु पूजा जह करइ ए, नासय तासु किलेस ।
रोग सोग आरति टलइ ए, मिलइ लच्छि सुविसेस ॥६॥
नाम मंत्र जे मुख जपइ ए, मगु तणु सुद्धि तिसझ ।
मनवछित मवि तसु हुवइ, कज्जारंभ अवझ ॥ ७ ॥
जासु सुजसु जगि झिगमिगे ए, चदुज्जल निकलंक ।
प्रभु प्रताप गुण विप्फुरइ हरइ डमर अरि संक ॥ ८ ॥
इय श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, सथिणिउ गुणि पुन्न ।
श्री "पुण्यसागर" वीनवइ, सहगुरु होउ सुप्रसन्न ॥ ६ ॥

इति श्रीजिनचन्द्रसूरि महाप्रभावीक अष्टक संपूर्णम् ।
(गुलाबकुमारी लायब्रेरीके गु का न० १२६ से उद्धृत)

शाह रयण कृत

श्रीजिनपतिसूरि धवल गीतम्

वीर जिणेसर नमइ सुरेसर, तस पह पणमिय पय कमले ।
युगवर जिनपति सूरि गुण गाइसो, भत्तिभर हरसिहि मनिरमले ॥१॥
तिहुअण तारण सिव सुख कारण, वंछिय पूरण कल्पतरो ।
विघन विणासण पाव पणासण, दुरित तिमिर भर सहस करो ॥२॥
पुहवि पसिद्धउ सूरि सूरिश्वर, शम दम संयम सिरि तिलउ ए ।
इणि कलिकालहि एह जो जुगपवर, जिणवइ सूरि महिमा निलउ ए॥३॥
अत्थि मरुमण्डले नयर विक्कमपुरे, जसोवर्द्धनु जगि जाणिइ ए ।
तासुवर गेहिणी सूहव देविय, जासु वर पुत्त वखाणिइ ए ॥ ४ ॥
विक (म) संवच्छरे वार दहोतरे, चैत्र धुरि आठमि जो जाईयउ ए ।
नयर नर नारि नय(व?)रंग भरि गायो, जसोवरधनु वधावियउ ए॥५॥
तिणि सुह दिवसहि निय मणि रंगहि, उच्छव करिय नव नविय परे ।
निरुपम "नरपति" नामु तसु किज्जए, क्रमि क्रमि बाधइ तात घरे॥६॥
वार अढार ए वीर जिणालए, फागुण वदि दसमिय पवरे ।
वरीय संजम सिरीय भीमपल्लीपुरे, नन्दि वर ठविय जिणचंदसूरे ॥७॥
अह सयल सार सिद्धांत अवगाहए, सजणमण नयण आणंदणउ ए ।
नाण गुण चरण गुण पयासए, चउ विह संघ सोहामणउ ए ॥८॥

वार नेवीसए नयरि वन्नेरए, कातिय सुदी दिन तरसीए।
श्री जिणचन्दसूरि पाटि सठाविउ, श्रीजयन्व सूरि आयरीए ॥६॥
गुरय नामेग जिनपति सूरि उन्यउ, चन्द्र कुलनर चन्दलउ ए।
विहरए सयल दसमि गुण भरिउ,समइ सरोरुह (? वर) हसरुउए॥१०॥
पत्ति किरि रूव लावन गुण आयार, जण जण जपए मनि धरी ए।
सिरि माल्हून कुले कमल दिवानर, वादीय गय घड वसरी ए ॥११॥
पामी- जेनु छनीस विवादिहि, जयसिंह पडविय परपद (इ) ए।
नोहिय पुहविय पमुह नरिन्दह जासु वयणि जिण आदर(इ)ए ॥१२॥
दीखिय बहु सीस पयट्ठिय बहु जिन, थापिय रीति खरतर तणी ए।
जासु पय पणमा सामणा दवि, दवि जालवरा रजिवी ए ॥१३॥
अह मरुकोटहि नेमुचन्द निवमए,(गुरु)गुरु दखि मनु नवि गम(इ)ए।
जासु मनि निवसए खरउ जिण धम्मु, खरउ आचारि गुरु
मनि गम (इ) ए ॥१४॥
तायणु सोपुरि(पुर) नयरि गामागर, गुरु चि(वि?) रिय जोवइ अपारे
भमियउ बारह वरिस भण्डारिय, सुगुरु दरसतउ समय सारे ॥१५॥
अह अवर वासरे पट्टण पुरवर, श्रीयजिनपतिसूरि पेरिस करे।
तउ मनि मानिय सयणजण आणिय, आदिसीनउ गुरु हरिस भरे।१६।
तासु अगोल मुनियपय जोगि, जाणिय सयहत्थि दीखि कर।
तयण जिण सासण पभाव पयडतउ, पहुतउ पाल्हणपुर नयरे ॥१७॥
सुललित वाणि वखाणु करतउ, भविय बोहतउ विविह परे।
साह(?हू)सावन जण जस्स सेवा करइ, सेव सारइसुरसुपरि परे॥१८॥
अन्न दिगतर वार सतहोतरे, मास असाढि जिण अणसरी ए।
मन्न सुह झाणहि सिय दसमी दिवसहि, पहुतउ सूरि अमरापुरी ए।१६
एहु श्री जिणपति सूरि गुरु जुगपवरु साह "रयण" इम सथुणइ ए।
समरइ जे नर नारि निरंतर, तहा घर नवनिधि सपज(इ) ए ॥२०॥

कवि सधारु कृत

श्रीजिनपतिसूरीणां गीतम्

वीर जिणेसर नमीउ सुरेसर, तस पह पणमिय पय कमले ।
युगवर जिनपतिसूरि गुण मंडन, गुण गण गाइस्यो मनि रमले ।१।
तिहुअण तारण सिव सुह कारण, वंछिय पूरण कलपतरो ।
विघन विणासन पाव पणासन, दुरित तिमिर न(?भ)र सहस करो ।२।
काम धेनोत्तम काम कुम्भोपम, पूरण जेम चिन्तामणि ।
श्रीय जिण शासणि नव नव रंगिहि, अतुल प्रभाव प्रगटीयकरण ।३।
तिहुअण रंजण भव दुह भंजण, दंसण नाण चारित्तजुत्तो ।
सकल जिणागम सोहग सुन्दर, अभिनवउ गोयम उदयवंतो ।४।
पुहवि प्रसिद्धउ सूरि सूरीसर, चन्द्र कुलंबर चन्दलउ ए ।
कमल नयण मगल कुल कारण, गङ्गजल तासु जसु निरमलउ ए ।५।
इणि कलिकालिहि अवरु नवि सुणीइए, सिरि माल्हूय कुले सिर तिलउ ए
सोहम वंसिहि वयरह सारिखहि, जिणवइए सूरि महिमा निलउ ए ।६।
अवर वर वासुरि पुन्य भर भासुरे, मूल नक्षत्रि चडयइ जु सारो ।
थुणइं सुर नमइं नर चरण चूडामणि, जायउ पुत्र नरवय कुमारो ।७।
नर वर नारिय घरि वरे गायउ, जसोवर्द्धनु वधावीउ ए ।
तस घरणीय माणव मन हरणीय, उछव गरूअ करावीउ ए । ८ ।
देसि सुरसुण्डले नयरि विकम पुरे, जसो वरद्धनु जगि जाणीउ ए ।
सूहवदेविय उयरि ऊपन्नउ, तिहूयण सयलि वखाणीउ ए । ९ ।
विक्रम संवत्सरे बार दहोतरे, चैत्र वहुल आठमि (आठमि !) पवरे ।

नल्हीय जय "नरपति" इणि नामिहिं, ग्रमिनमि वाधइ ए तातवर ।१०
नार अट्ठारह ए वोर जिणालए, फागुण धुरि दसमीय पवर ।
वरीय मजमसिर गीमपल्लीय पुर, नाहि ठविय जिणचन्दसूर ।११।
पढय जिणागम पमुह निजागलीय, दरसणि त्रिभुवनु मोहीऊ ए ।
कमल दलानल दह सुकोमल, गुणमणि मन्दिर सोहीऊ ए ।१२।
रूव फला गण गुण रयणायर, तिहुअण नयण आणदयतो ।
महीयले मोहइ ए भविय जन मोहइ ए, चालइ ए मोह तिमर हरतो ।१३
नार तेत्रीसइ ए नयरि धनरइ ए, फागुण सुदि दिण तरमी ए ।
जाणीय जयदेव सूरिहिं थापिय, तिहुअण जण मण उल्हसी ए ।१४।
सिरि जिणचन्दह तणय सुपाटिहिं, उवसम रस भर पूरीय ए ।
सुवहीय चारु विहार करतउ, अजयमर नयरि समोसरिउ ए ।१५।
पामी नेतु उन्नीस विवादिहिं, जयसिंह पुहवीय परखइ ए ।
बोहिय पुन्विय पमुह नरिन्दह, त्रिभुणीय वयणि जिण धम्मु करइ ए ।१६।
नीसिन बहुगीम पयट्ठिन बहुविह निन, थापीय रीति खरतर तणीए ।
प्रभ पय वन्द ए निसि दिन सेवइ ए, इजी जालयर गजिवी ए ।१७।
सुललिन वाणि वखाण करंतउ, धवल असाढ सतहत्तरइ ए ।
मन सुह झाणिहिं दसमिय दिवसिहिं, पहुतउ सूरि अमरा पुरी ए ।१८।
चरण कमल नरवर सुर सेवहं, मङ्गल कलि निवास हु ए ।
नृमह रयण पाल्हणपुर नयरिहिं, तिहुअण पुरउ ए आस हु ए ।१९।
लीणउ कमलेहि भमर जिम "भत्तउ", पाय कमल पणमिय कहइ ।
समरइ ए जे नर नारि निरंतर, तिहा घरे रिद्धि नवनिहि लहइ ए।२०।

इति श्रीमज्जिनपति सूरीणा गीतम् ।

श्रीजिनपति सूरि स्तूप कलशः

जनितभुवनतोषं रम्यसम्यक्त्वपोपं,

घटितकलुषमोषं गात्रमत्यस्तदोषम् ।

प्रभुजिनपतिसूरेः प्रीणितप्राज्यसूरे-

र्व्यपगतमलगात्रैः सूत्र्यते पुण्यपात्रैः ॥ १ ॥

कनककलशपूरैः कान्तिनिर्धूतसूरैः

कलकमलपिधानैः पुष्पमालाप्रधानैः ।

जिनपतियतिमूले मज्जनं सज्जनाना,

जनयति भवनोदं विश्वविश्वप्रमोदम् ॥ २ ॥

श्रीमत्प्रह्लादनपुरवरे प्रोन्नतस्तूपरत्ने,

स्फूर्जन्मूर्त्ति जिनपतिगुरुं रत्नसानोजनंदा ।

क्षीरे नीरे स्नपय सुतरां भव्यलोका अशोकाः,

प्रेयः श्रेयः श्रियमनुपमा येन रम्या लभध्वे ॥३॥

इति जिनपतिसूरिर्गौतमः श्रीसुधर्मा,

प्रभुयुगवरजम्बूस्वामिवत्सप्रतापः ।

मथितकुपथदर्पो मज्जितः सज्जितश्रीः,

सकलकलशराध्या पातु संघाय लक्ष्मीः ॥४॥

॥इति श्रीजिनपतिसूरीणा स्तूपकलशः ॥

॥ श्री जिनप्रभसूरि गीतम् ॥

खरतर गच्छि वर्द्धमान-सूरि, जिणेसर सूरि गुरो ।
अभयदेवसूरि जिणवल्लह, सूरि जिणदत्त जुग पवरो ॥१॥
सुगुरु परंपर थुणहु तुम्हि, भवियहु भत्ति भरि ।
सिद्धि रमणि जिम वरइ सयवर नव नविय परि ॥आंचली॥
जिणचन्दसूरि जिणपतिसूरि जिणेसरु (१२) गुणनिधानु ।
तदणुक्रमि उपनउ सुगुरु, जिणसिंघ सूरि जुगपवानु ॥२॥
तासु पाटि उदयगिरि उदय ए, जिणप्रभसूरि भाणु ।
भविय कमल पडिबोहणु, मिछत तिमिर हरणु ॥ ३ ॥
राउ महमद साहि जिणि, निय गुणि रंजियउ ।
मेदमंडलि ढिल्लिय पुरि, जिण धरमु प्रकटु किउ ॥ ४ ॥
तसु गछ धुर धरणु भयलि, जिणदेवसूरि सूरिराउ ।
तिणि थापिउ जिणमेरुसूरि, नमइ जसु मनउ राउ ॥ ५ ॥
गीतु पवीतु जो गायए, सुगुरु परंपरह ।
सयल समीहि सिज्झहि, पुहविहि तसु नरह ॥ ६ ॥



॥ श्रीजिनप्रभसूरि गीतम् ॥

के सलहउ ढीली नयर हे, के वरनउ वखाणू ए।
जिनप्रभसूरि जग सलहीजइ, जिणि रंजिउ सुरताणू ॥१॥
चलु सखि वंदण जाह गुण, गरुवउ जिनप्रभसूरि।
रलियउ तसु गुण गाहि राय रंजणु पंडिय तिलउ। आंचली।
आगमु सिद्धंतु पुराणु वखाणिइ, पडिवोहइ सव्वलोइ ए।
जिणप्रभसूरि गुरु सारिखउ हो, विरला दीसउ कोइ ए ॥२॥
आठाही आठमिहि चउथी, तेडावइ सुरिताणु ए।
पुह सितु मुख जिणप्रभ सूरि चलियउ, जिमि ससि इंदुविमाणिए ॥३॥
"असपति" "कुतुवदीनु" मनि रंजिउ, दीठेलि जिणप्रभ सूरी ए।
एकंति हि मन सासउ पूछइ, राय मणोरह पूरी ए ॥ ४ ॥
गाम भूरिय पटोला गज वल, तूठउ देइ सुरिताणू ए।
जिणप्रभसूरि गुरु कंपिनई छइ, तिहुअणि अमलिय माणू ए ॥५॥
ढाल दमामा अरु नीसाणा, गहिरा वाजइ तूरा ए।
इणपरि जिणप्रभसूरि गुरु आवइ, संघ मणोरह पूरा ए ॥ ६ ॥



॥ श्रीजिनप्रभसूरीणां गीतम् ॥

उदय ले खरतर गछ गयणि, अभिनवउ सहस करो ।
सिरी जिणप्रभसूरि गणहरो, जंगम कप्पतरो ॥ १ ॥
वंदहु भविक जन जिणसासण, वण नव वसंतो ।
छतीस गुण संजुत्तो वाइय मयगल दलण सीहो ।आंचली।
तर पचासिअ पोस सुदि आठमि, सणिहि वारो ।
भेटिउ असपत "महमदो", सुगुरि ढीलिय नयर ॥ २ ॥
आपुगु पास वइसारइ, नमिवि आदरि नरिन्दो ।
अभिनव कवितु वखाणिवि, राय रंजइ मुणिंदो ॥ ३ ॥
हरसितु देइ राय गय तुरय, धण कणय देस गामा ।
भणइ अनेवि जे चाह हो, ते तुह दिउ इमा ॥ ४ ॥
लेइ णहु किंपि जिणप्रभसूरि, मुणिवरो अति निरीहो ।
श्रीमुखि सलहिउ पातसाहि, विविह परि मुणि सीहो॥५॥
पूजिवि सुगुर वस्त्रादिकहिं, करिवि सहिथि निसाणु ।
देइ फुरमाणु अनु कारवाइ, नव वसति राय सुजाणु ॥६॥
पाट हथि चाडिवि जुगपवर, जिणदेव सूरि समेतो ।
मोकलइ राउ पोसाल ह वहु, मलिक परि करीतो ॥७॥
वाजहि पंच सबुद गहिर सरि, नाचहि तरुण नारि ।
इदु जम गइदसहि तु, गुरु आवइ वसतिहिं मझारे ॥८॥
धम्म धुर धवल सयवउ सयल, जाचक जन दिंति दानु ।
संघ संजुत वहु भगति भरि, नमहिं गुरु गुणनिधानु ॥९॥
सानिधि पउमिणि देवि इम, जगि जुग जयवन्तो ।
नंदउ जिणप्रभसूरि गुरु, संजम सिरि तणउ कंतो ॥१०॥

॥ श्रीजिणदेवसूरि गीतं ॥

निरुपम गुण गण मणि निधानु संजमि प्रधानु ।
सुगुरु जिणप्रभसूरि पट उदयगिरि उदयले नवल भाणु ॥ १ ॥
वंदहु भविय हो सुगुरु जिणदेवसूरि ढिल्लिय वर नयरि देसणउ
अमियरसि वरिसए मुणिवरु जणु वणु ऊनविउ ॥ आंचली ॥
जेहि कन्नाणापुर मंडणु सामिउं वीर जिणु ।
महमद राइ समप्पिउं थापिउ सुभ लगनि सुभ दिवसि ॥ २ ॥
नाणि विन्नाणी कला कुसले विद्या वलि अजेउ ।
लखण छंद नाटक प्रमाण वखाणए आगमि गुण अमेउ ॥ ३ ॥
धनु कुल धरु जसु कुलि उपनुं इहु मुणि रयणु ।
धनु वीरिणि रमणि चूडामणि जिणि गुरु उरि धरिउ ॥ ४ ॥
धणु जिणसिंघ सूरि दिखियाउ धनु चंद्र गच्छु ।
धनु जिणप्रभसूरि निज गुरु जिणि निज पाटिहि थापियउ ॥५॥
हलि सखे धणउ सोहावणिय रलियावणिय ।
देसण जिणदेवसूरि मुणिराय हउं जाणउं नितु सुणउ ॥ ६ ॥
महि मंडलि धरमु समुधरए जिण शासणिहिं ।
अणुदिण प्रभावन करइ गणधरो, अवयरिउ वयइरसामि ॥७॥
वादिय मयगल दलण सीहो विमल सील धरु ।
छत्रीस गुणधर गुण कलिउ चिरु जयउ जिणदेव सूरि गुरु ॥८॥

॥ इति श्री आचार्याणा गीत पदानि ॥

श्रीधर्मकलशमुनि

कृत

श्रीजिनकुशलसूरि पट्टाभिषेक रास

सयल सुरासुर । धणी, पणमवि जिणेसरु ।
धम्माहिवु जिणचन्दसूरि, ॥ नयणु ।
ताम स होय दि गुरु जिहाग, गुरु गुण गाएसु ।
पाट ठवणु जिणकुसलसूरि वर रासु भणेसु ॥ १ ॥
आसि जिणसर सूरि पहु, अणहिल्लपुर पट्टणि ।
वसहि मग्ग पयडण, राय सभि "खरतर" जिणि ।
तासु पट्टि जिणचन्दसूरि, गुणमणि रोहण सम ।
विहिय जेण संवेग-रंग-साला आलोवम ॥ २ ॥
अभयदेव नव अंग वित्तिकरु, पासु पभावणु ।
पयडणवि धरणिंद पमुह, सुर साहिय सासणु ।
तउ जिणवल्लहसूरि तरणि, संवेगि सिरोमणि ।
सत्ताहिय चित्तउडि तणि, चामुंडा पडिमणि ॥ ३ ॥
जोगिराउ जिणदत्तसूरि, वन्दियउ सहसफार ।
नाण झाण जोइणिय दुट्ठ देविय किंकर घरु ।
रूवतु पच्चक्खु मयणु, जण नयणाणंदू ।

सयल कला संपुन्न वंदु, जिणचन्द मुणिंदु ॥ ४ ॥
वाइ करडि ,केसरि किसोरु, जिणपत्ति जईसू ।
पुणवि जिणेसर सूरि सिद्ध, आरंभिय सीसु ।
सयल शुद्ध सिद्धंत सलिल, सायर अप्पारू ।
जिणपवोह सूरि भविय कमल, सविया गणधारू ॥५॥
तयणं तरु गोयमह सामि, सम लद्धि समिद्धिउ ।
वहुय देसि सुविहिय विहारि, तिहुअणि सुपसिद्धउ ।
"कुतवदीन" सुरताण राउ, रंजिउ स मणोहरु ।
जगि पयडउ जिणचंदसूरि, सूरिहि सिर सेहरु ॥ ६ ॥

॥ घातः ॥

चंद कुल निहि चंद कुल निहि, तवइ जिम भाणु ।
नाण किरण उज्जोय करु, भविय कमल पडिवोह कारणु ।
कुग्गह गह मच्छिन्न पह, कोह लोह तमहर पणासणु ।
महि मंडलि अच्छरिय धरो, जिण रंजिउ सुरताणु ।
सूरि राउ सो सग्गहि गयउ, जाणिउ निय निरवाणु ॥ ७ ॥
त अह ढिल्लिय पुर वर नयरि, जिणिचंदसूरि गणधारु ।
त जयवल्लह गणि तेडियउ, मंतु कियउ सुविचारु ।
त विजयसीह ठक्कर पवरो, महंतियाण कुलि सारु ।
तउ नामु ठामि (सु)तसु अप्पियउ, तउ गोलइ(गोयम)सउं गणधारु॥८॥
त गुज्जरधर मंडणउ, अणहिलवाडउ नामु ।
त मिलिय संघु समुदाउ तहि, महतियाण अभिरामु ॥ ९ ॥
त उसवाल कुल मंडणउ, तेजपाल तहि साहु ।
त लहु बंधव रूदइ सहिउ, गुरु साहम्मि पसाउ ॥ १० ॥

राजेन्द्रचन्दसूरि, आचारिज वर राउ।
सुय समुद्द मुणिवर रयणु, विनउसमुद्द उवझाउ ॥ ११ ॥
रल गुरु विनवइ, तेजपालु सुविसेसु।
पाट महोच्छव कारविसु, दियइ सुगुरु आएसु ॥१२॥
वयणि आणंदियउ, जाल्हण तणउ मल्हारु।
त दस दिसतर पाठवइ, कुंकुमपत्री सुविचारु ॥ १३ ॥
उछवु अणहिल पुर, सुरभवन सुद गेह।
त सयल संघ तिकरणि मिलिय, पावसि जिम घण मेह ॥१४॥
गोलय सहिउ, गुरु आणा मजुत्तु।
वासवतु वाहड तणउ, विजयसीहु सपत्तु ॥ १५ ॥
ारउ सघह कियउ, वज्रहि वज्जतहि।
जिम रामहि अवहा नयरि, दय सुख पमुहेहि ॥ १६ ॥
हिय किरि कप्पतरो, राय पसाय महतु।
त धम्म महाधर धुरि धरगो, देवराज पवर मंत्रि ॥ १७ ॥
नन्दणु जेल्हा घरणि, जयतसिरी वखाणि।
कुमलकीरति तहि कुलि तिलकु, घग गुण रयणह खाणि ॥१८॥
य सत्तहत्तरइ ज्जिन्नग (?कृष्ण) इगारसि जिट्ठ।
सुर विमाणु किरि मडियउ, नदि भुवणि जिणि दिट्ठि ॥१६॥
न्द्रचन्द्रसूरि, जिणचन्दसूरिहि सीसु।
त कुशलकीरति पाटहि ठविउ, मणहर वाणारिस ॥ २० ॥
ठवियउ जिणकुशलसूरि वज्जिय नंदिय तूर।
त सतु सयलु आणंदियउ, मणह मणोरह पूर ॥ २१ ॥

घातः सयल संघह सयल संवह केलि आवासु ।
अणहिलपुर वर नयर गुजरात धर मुखह मंडणु ।
देस दिसंतरि तहि मिलिय, सयल संघ वरिसंत जिम घणु ।
पाट धुरन्धर संठविउ, मिलिय मिलावइ भूरि ।
संघ महोछवु काराबइ, वज्जंतइ घणतूरि ॥ २२ ॥
त आदहिए आदिजिणिंद भरहु, नेमि जिम नारायणु ।
पासह ए जिम धरणिंदु, जिम सेणिय गुरु वीर जिणु ।
तिण परि ए सुह गुरु भत्ति, महंतियाणि परि सलहिय ए ।
पडिवनए तहि परिपुन्न, विजयसीहु जगि जस लियइ ए ॥२३॥
संघवइ ए सामल वंशि, देसि विदेसहि जाणिय ए ।
घण जिम ए घणु वरिसंतु, वीरदेव वखाणिय ए ।
कारइए जीमणवार, साहंमिय वछल वर ।
संवह ए कप्पड वार, गुरुयभत्ति गुरु पूज कर ॥ २४ ॥
दीसई ए अहिणव बात, पाटणि दरिसण संख हूय ।
सूरिहि पसउ सउ-सात साहु, साहुणि चउवीस-सय ।
रुदई ए सउ तेजपालि घरि, तेडिउ पहिराविय‌इ ।
जइ सई ए दूसमकालि, चन्द्रहि नामउं लिहाविय‌इ ॥ २५ ॥
घर घरि ए मंगल चार, पुन्न कलस घर घरि ठविय ।
घर घरि ए वंदर वाल, घरि घरि गूडी ऊसविय ॥ २६ ॥
वज्जिय ए तूर गंभीर, अंबरू वहिरिउ पडिरमण ।
नाचहि ए अबलिय बाल, रञ्जिय सुर धवला रवेहि ॥ २७ ॥
अणहिलि ए पुर मंझारि, नर नारी जोवण मिलिय ।
किसउ सु तेजउ साहु, जसु एवडउ उछव रलिय ॥ २८ ॥

पुणरविए पुणवि सो माहु, मघ सयलि सम्मागिय ए।
आ गइ ए ठक्कुर माह, सिरि चन्द्र कुलि जगि जाणिय ए ॥२९॥
इण परि ए तडवि संघु, पाट महोच्छउ कारविउ।
जिण शासण नव नव भगि, सयल तिरथ सु समुद्धरिउ ॥३०॥
घात —धवल मंगल धवल मंगल कलयलारव।
वज्जत घण तूर वर महुर मद्दि नचइ पुरंधिय।
वसुधारहि वर सति नर कवि महु जेम मनहि रंजिय।
ठामि ठामि कल्लोल झुणि, महा महोछउ मोय।
जुगपहाण पयसठवणि, पूरिय मणगण लोय ॥ ३१ ॥
सयल संघ सुविहाण, जिण सासण उज्जोय करो।
कोह लोह मय मोह, पाव पंक निधसिकरो ॥ ३२ ॥
उदयाचल जिम भाणु, भविय कमल पडिबोह करो।
तिम जिणचंद सूरि पाटि, उदयउ सिरि जिण कुसल गुरो ॥३३॥
जिम उगइ रवि बिंबि नि, हरपुहोइ पथि अह कुलि।
जण मण नयणाणंदु, तिम दीठइ गुरु मुह कमलि ॥ ३४ ॥
अणहिलपुर मझारि, अहिणव गुरु देसण करइ।
नाण नीरु वरिसतु, पाव पंकु जिम घणु हरइ ॥ ३५ ॥
ता महि-मंडलि मेरु, गयणंगणि जा रवि तपए।
सिरि जिणकुशल मुणिंदु, जिण सासणि ता चिरु जयउ ॥३६॥
नन्दउ तिहि समुदाउ, तजपालु सावय पवरो।
साहमिय साधारु, दस दिसि पसरिउ कित्ति भरो ॥ ३७ ॥
गुणि गोयम गुरु एसु, पढहि सुणहि जे सगुणहि।
अमराउर तहि वासु, धम्मिय "धम्मकलसु" भणइ ॥ ३८ ॥

कवि सारमूर्ति मुनि कृत

॥श्री जिनपद्मसूरि पट्टाभिषेक रास॥

सुरतरु रिसह जिणिंद पाय, अनुसर सुयदेवी ।
सुगुरु राय जिणचन्दसूरि, गुरु चरण नमेवी ॥
अमिय सरिसु जिणपदम सूरि, पय ठवणह रासू ।
सवणंजल तुम्हि पियउ भविय, लहु सिद्धिहि तासू ॥ १ ॥
वीर तित्थ भर धरण धीर, सोहम्म गणिंदु ।
जंबूस्वामी तह पभव-सूरि, जिण नयणाणंदु ॥
सिज्जंभव जसभद्दु, अज्ज संभूय दिवायरू ।
भद्दबाहु सिरि थूलभद्द, गुणमणि रयणायरू ॥ २ ॥
इणि अनुक्रमि उदयउ वद्धमाणु, पुणु जिणेसर सूरी ।
तासु सीस जिणचन्द सूरि, अज्जिय गुण भूरी ॥
पासु पयासिउ अभय सूरि, थंभणपुरि मंडणु ।
जिणवल्लह सूरि पावरोग, दुखाचल खंडणु ॥ ३ ॥
तउ जिणदत्त जईसुनामि, उवसग्ग पणासइ ।
रूववंतु जिणचन्द सूरि, सावय आसासय ॥
वाई गय कंठीर सरिसु, जिणपत्ति जईसरू ।
सूरि जिणेसर जुग पहाणु, गुरु सिद्धाएसु ॥ ४ ॥
जिणपबोह पडिबोह तरणि, भविया गणवारू ।

निरुवम जिणचन्द सूरि, संघ मण वछिय कारू ॥
उदयउ तसु पट्टि सयल कला, संपत्तु संपूरू ।
सूरि मउड चूडामणिसु, जिण कुशल मुणिंदु ॥ ५ ॥
महि मण्डल विहरन्तु सुपरि, आयउ देराउरि ।
तत्थ विहिय वय गहण माल, पय ठवण विविह परि ।
निय आऊ पज्जतु सुगुरु, जिणकुसल मुणेइ ।
निय पय सिरु समग्ग, सुपरि आयरिह दइ ॥ ६ ॥

॥ घत्ता ॥

जेम दिनमणि जेम दिनमणि, धरणि पयडेय ।
तव तेय म्प्पिन तम सूरि मउडु, जिणकुशल गणहरू ।
दढ छद लक्षण सहिउ, पाव रोर मिच्छत तम हरू ।
चन्द गच्छ उज्जोय कर, महि मडलि मुणि राउ ।
अणुदिणु सो नर नमउ तुम्हि, जो तिहुपति वरभाउ ॥ ७ ॥
सिंधु देसि राणु नयर, कंचण रयण निहाणु ।
तहि रीहडु सावय हुउ, पुनचन्दु चन्द समाणु ॥ ८ ॥
तसु नन्णु उठन धवलो विहि सयह सजुत्तु ।
साहु राय हरिपाल वरो, देराउरि संपत्तु ॥ ६ ॥
सिरि तरुणप्पहु आयरिउ, नाण चरण आधारु ।
सु पहुचन्दि पुण विन्नवए, कर जोडवि हरिपालु ॥१०॥
पय ठवणुउव जुगवरह, कारावित्रसु वहु रंगि ।
ताम सुगुरु आइसु दियए, निसुणवि हरिसिउ अंगि ॥११॥
कुकुवत्रिय पाट ठवण, दस दिसि संघ हरेसु ।
सयल संघु मिलि आवियउ, वछरि करइ पवसु ॥१२॥

पुहवि पयडु खीमड कुलहि, लखमीधरु सुविचारु ।
तसु नन्दण आवड पवरो, दीण दुहिय साधारु ॥ १३ ॥
तासु घरणि कीकी उयरे, रायहंसु अवयरिउ ।
त पदमसूरि कुल कमलु रवे, बहु गुण विद्या भरिउ ॥१४॥
विक्कम निव संवच्छरिण, तेरह सइ नऊ एहिं ।
जिट्ठि मासि सिय छट्ठि तहि, सुह दिणि ससिवारेहिं ॥१५॥
आदि जिणेसर वर भुवणि, ठविय नन्दि सुविसाल ।
धय पडाग तोरण कलिय, चउदिसि वंदुरवाल ॥ १६ ॥
सिरि तरुणप्पह सूरि वरो, सरसइ कंठाभरणु ।
सुगुरु वयणि पट्टहि ठविउ, पदमसूरि ति मुणिरयणु ॥१७॥
जुगपहाणु जिणपदम सूरे, नामु ठविउ सुपवित्त ।
आणदिय सुर नर रमणि, जय जयकार करंति ॥ १८ ॥

॥ घत्ता ॥

मिलिउ दसदिसि मिलिउ दस दिसि, संघ अपारु ।
देराउरि वर नयरि तुर सद्दि गज्जंति अंबरु
नच्चंतिय वर रमणि ठामि ठामि पिखणय सुन्दर
पय ठवणुछवि जुगवरह विहसिउ मग्गण लोउ
जय जय सद्दु समुछलिउ तिहुअणि हुयउ पमोउ ॥ १९ ॥
धन्नु सुवासरु आजु, धन्नु एसु मुहुत्त वरो ।
अभिनव पुनम चन्दु, महिमंडलि उदयउ सुगुरु ॥ २० ॥
तिहुयणि जय जय कारु, पूरिउ महियलु तूर रवे ।
घणु वरिसइ वसुधार, नर नारिय अइ विविह परे ॥२१॥

सघ महिम गुरु पूय, गुरुआणदहि कारवए ।

साहम्मिय घण रगि, सम्माणइ नव नविय परे ॥ २२ ॥

वर वत्थाभरणेण, पूरिय मग्गण दीण जण ।

धनवन्तु सुवगु जसेण, सुपरि साहु हरिपालु जिम ॥ २३ ॥

नाचइ अवलीय बाल, पच सबद बाजहि सुपर ।

घरि घरि मगलचार, घरि घरि गुडिय ऊभविय ॥ २४ ॥

उदयउ फलि अकलकु, पाट तिलकु जिणकुशल सूरे ।

जिण सासणि आनदू, जयवन्तउ जिणपद्म सूर ॥ २५ ॥

जिम तारायणि चन्दु, सहस नयण उत्तिमु सुरह ।

चिंतामणि रयणाह, तिम सुहगुरु गुरुवउ गुणह ॥ २६ ॥

नवरस देसण वाणि, सवणजलि जे नर पियहि ।

मणुय जम्मु ससारि, सहलउ किउ इत्थु कलि तिहि ॥२७॥

जाम गयण ससि सूर, धरणि जाम थिरु मेरु गिरि ।

विहि सघह सजत्तु, ताम जयउ जिणपदम सूरे ॥ २८ ॥

इहु पय ठवणह रासु भाव भगति जे नर दियहि ।

ताह होइ सिव वास, "सारमुत्ति" मुणि इम भणइ ॥२९॥

॥ *इति श्रीजिनपद्मसूरि पट्टाभिषक रास* ॥



पुहवि पयडु खीमड कुलहि, लखमीधरू सुविचारू ।

तसु नन्दण आंबड पवरो, दीण दुहिय साधारु ॥ १३ ॥

तासु घरणि कीकी उयरे, नायहुसु अवयरिउ ।

त पदमसूरि कुल कमलु रवि, बहु गुण विद्या भरिउ ॥१४॥

विक्कम निव संवच्छरिण, तेरह सउ नउ एहिं ।

जिट्ठि मासि सिय छट्ठि तहि, सुह दिणि ससिवारेहिं ॥१५॥

आदि जिणेसर वर भुवणि, ठविय नन्दि सुविसाल ।

धय पडाग तोरण कलिय, चउदिसि वंदुरवाल ॥ १६ ॥

सिरि तरुणप्पह सूरि वरो, सरसइ कंठाभरणु ।

सुगुरु वयणि पट्टहि ठविउ, पदमसूरि ति मुणिरयणु ॥१७॥

जुगपहाणु जिणपदम सूरे, नामु ठविउ सुपवित्त ।

आणदिय सुर नर रमणि, जय जयकार करंति ॥ १८ ॥

॥ घत्ता ॥

मिलिउ दसदिसि मिलिउ दस दिसि, संघ अपारु ।

देराउरि वर नयरि तुर सद्दि गज्जंति अंबरु

नच्चंतिय वर रमणि ठामि ठामि पिखणय सुन्दर

पय ठवणुछवि जुगवरह विहसिउ मग्गण लोउ

जय जय सद्दु समुच्छलिउ तिहुअणि हुयउ पमोउ ॥ १९ ॥

धन्नु सुवासरु आजु, धन्नु एसु मुहुत्त वरो ।

अभिनव पुनम चन्दु, महिमंडलि उदयउ सुगुरु ॥ २० ॥

तिहुयणि जय जय कारू, पूरिउ महियलु तूर रवे ।

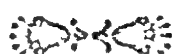
घणु वरिसइ वसुधार, नर नारिय अइ ।ववेह परे ॥२१॥

संघ महिम गुरु पूय, गुरु नागदहि कारवए।
साहम्मिय घण रंगि, सम्माणइ नव नविय पर ॥ २२ ॥
वर वत्थाभरणेण, पूरिय मग्गण दीण जण।
धवलइ भुवणु जसेण, सुपरि साहु हरिपालु जिम ॥ २३ ॥
नाचइ अनलीय बाल, पंच सबद वाजहि सुपर।
घरि घरि मंगलचार, घरि घरि गुडिय ऊभविय ॥ २४ ॥
उदयउ कलि अकलंकु, पाट तिलकु जिणकुशल सूर।
जिण सासणि मायडू, जयवन्तउ जिणपदम सूरे ॥ २५ ॥
जिम तारायणि चन्दु, सहस नयण उत्तिमु सुरह।
चिंतामणि रयणाह, तिम सुहगुरु गुरुनउ गुणह ॥ २६ ॥
नवरस देसण वाणि, सवणंजलि जे नर पियहि।
मणुय जम्मु ससारि, सहलउ किउ इत्थु कलि तिहि ॥२७॥
जाम गयण ससि सूर, धरणि जाम थिरु मेरु गिरि।
विहि संघह सजत्तु, ताम जयउ जिणपदम सूरे ॥ २८ ॥
इहु पय ठवणह रासु भाव भगति जे नर दियहि।
ताह होइ सिव वास, "सारमुत्ति" मुणि इम भणइ ॥२९॥

॥ इति श्रीजिनपद्मसूरि पट्टाभिषेक रास ॥



खरतर गुरुगुण वर्णन छप्पय



सो गुरु सुगुरु जु छविह जीव अप्पण सम जाणइ ।
सो गुरु सुगुरु जु सच्चरुव सिद्धंत वखाणइ ।
सो गुरु सुगुरु जु सील धम्म निम्मल परिपालइ ।
सो गुरु सुगुरु जु दव्व संग विभ्रम सम भणि टालइ ।
सो चेव सुगुरु जो मूल गुण, उत्तर गुण जइणा करइ ।
गुणवंत सुगुरु भो भवियणह, पर तारइ अप्पण तरइ ॥ १ ॥
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु जीव हणिज्जइ ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु कूड भणिज्जइ ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु चोरी किज्जइ ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ परत्थी न रमिज्जइ ।
सो धम्म रम्म जो गुण सहिय, दान सील तव भाव मउ ।
भो भविय लोय तुम्हि पर करिय, नरभव आलिम नीगमउ ॥२॥
सिरि वद्धमाण तित्थे जुगवर, सोहम्म सामि वंसंमि ।
सुविहिय चूडामणि मुणिणो, खरतर गुरुणो थुणस्सामि ॥३॥
सिरि उज्जोयण वद्धमाण सिरि सूरि जिणेसर ।
सिरि जिनचंद-मुणिंद[1] तिलउ सिरि अभय गणेसर ।

१ निलउ

जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचन्द नमिज्जइ।
जिणपत्ति जिणेसर जिणप्रबोह जिणचंद थुणिज्जइ।
जिणकुशल सूरि जिणपउम गुरु, जिणलद्धी जिणचंद गुरु।
जिणउदय पट्टि जिणराजवर, सपय सिरि जिणभद्दगुरु ॥४॥

इग्यारह सइ सतसठइ जिणवल्लह पद दिद्धउ।
इग्यारह गुणहत्तरइ तहइ जिणदत्त पसिद्धउ।
बारह पचग्गलइ तहवि जिणचन्द मुणीसरु।
बारइ तेवीसइ सहिय जिणपत्ति जईसर।
जोगीस जिणेसर सूरि गुरु, बारह अठहत्तरि वरसि।
जिणपबोह गच्छाह वइ, तरह इगतीसा वरसि ॥ ५ ॥

तेरह इगताला वरसि पट्ट जिणचन्दह लद्धउ।
तेरहसय सत्तहत्तरइ सहिय जिणकुशल पसिद्धउ।
तेरह नउया एम जाणि जिणपउम गणीसरु।
लद्ध नाम जिनलद्ध सूरि चहदय सय वछरि।
जिणचन्द सूरि गच्छह तिलउ, चउदह सय छडोत्तरइ।
जिणउदयसूरि उदयवतपहु, सय चौउहह पनरोत्तरइ ॥ ६ ॥

इग्यारह सतसठइ जेण वल्लह पद दिद्धउ।
आसाढ सिय छट्ठि चित्तकोटहि सुपसिद्धउ।
फिसण छट्ठि वइसाख इग्यारह गुणहत्तरि।
सूरि राउ जिणदत्त ठविय चित्तउडह उप्परि।

२ वइ, ३ लब्धि, ४ सूरि।

जिणचन्दसूरि वइग्गाखयउ, सुध छट्ठि विक्कमपुरहि।
जयवंत हुउ जिण सासणहि, सय बारह पंचत्तरहि ॥ ७ ॥
बब्बेरइ जिणपत्तिसूरि बारह तेवीसइ।
कत्तिय सिय तेरसिहि पट्ट जयवंतउ दीसइ।
माह छट्ठि जालउरि सुद्धतहि ठविय जिणेसर।
बारह अठहुत्तरइ रूप लावन्न मणोहर॥
जिणपबोह सूरि आसोज्ज पंचमि, जालउरय भयउ।
इकतीस वरसि अनुतरसइ, पट्ट तरु इणि परि लयउ ॥ ८ ॥
तेरह सय इगताल सुगुरु जिणचन्द सुणिज्जय।
वयसाखह सिय तीय नयरि जालउरि थुणज्जय॥
तेरह सय सत्तहत्तरइ सूरि जिणकुसल पसिद्धउ।
जिट्ठ कसिण इग्यारसहि पट्टु अणहिलपुरि दिट्ठउ॥
जिणपद्मसूरि तेहर (रह) नवइ, जिट्ठ मासि उच्छव भयउ।
तह सुद्ध छठि देराउरहि, सयल संघ आणंदयउ ॥ ९ ॥
सय चउदह जिण लवधि सूरि पट्टहि सुपसिद्धउ।
आसाढह वदि पडवि तहवि पट्टागम किद्धउ॥
तासु पट्टि इहु सुगुरु ठविय चउदह सय छडोत्तरि।
जेसलमेरह माह दसमि सुद्धइ सुह वासरि॥
नर नारि ताह मंगल करइ, जिण सासणि उछव भयउ।
जिणचन्द्र सूरि परिवार सउं, सयल संघ अणुदिणु जयउ ॥१०॥
खंभ नयरि मझारि चउद पनरोतर वरसहि।
दियइ मंतु आयरिय इंद आणंदिय सग्गहि॥

अजितनाथ वर भवण नदि महिय गुरु वारियरि ।
मयल सघ वह परि मिलिय रलिय पूरिय मनभितरि ॥
जिण कुशल सूरि सीसह तिलउ, जिणचन्दह पट्टुद्धरणु ।
जिणचंदसूरि भवियह नमउ, सयल सघ वद्धिय करणु ॥११॥
गुण गण वय मयक वरसि फागुण वदि छट्ठहि ।
अणहिल्लपुरि वरि नदि ठविय मतीसर दिट्ठिहि ॥
सिरि लोयआयरिय मतु अप्पिय सुमुहुत्तहि ।
सिरि जिणउदय मुणिंद पट्टु उद्धरिय धरित्तहि ॥
छतीस गुणावलि परिवरिय चन्द गच्छ उज्जोय कर ।
जिणराजसूरि गुरु जगि जयउ, सयल सघ आणंदयर ॥१२॥
पण सग वेय मयक[1] वरसि माहह छण वासरि ।
भाणुमरिल वर नयरि अजियनाहह जिण मदिरि ॥
नदि ठविय सिरि धारि सुगुरु सागरचन्द गणहरि ।
सूरि मतु जसु दिद्ध[2] किद्ध मगलु विवहु[3] प्परि ॥
जिणराजसूरि पट्टह तिलउ, जिणसासण उज्जोयकर ।
जा चन्द सूरि ता जगि जयउ, सिरि जिणभद्द मुणिंद वर ॥१३॥
मत मझि नवकार सार नाणह धुरि केवल ।
देव मझि अरिहन्त सव्व फुल्लह धुरि उप्पल ॥
रस मझि वर कप्पूरस सघह धुरि मुणिवर ।
पखि मझि जिम राजहस पव्वय धुरि मदिर ॥
जिणराजसूरि पट्टुद्धरण, भविय लोय पडिबोहयर ।
निम सयल सूरि चूडारयण, जिणभद्दप्पहु जुग पवर ॥१४॥

१ पुव्वय २ दिट्ठ ३ विवह

मंगल सिरि अरिहन्त देव, मंगल सिरि सिद्धह ।
मंगल सिरि जुगपवर सूरि, मंगल उवझायह ॥
मंगल सुविहिय सव्व साहु, मंगल जिणधम्मह ।
मङ्गलु विहरउ सव्व सङ्घ, मङ्गल सन्नाणह ॥
सुयणवि होइ मङ्गलु अमलु, मङ्गलु जिण सासण सुरह ।
वर सीसह जिणवय सुह गुरुह, मङ्गल सूरि जिणेसरह ॥१५॥
माल्हू साख सिंगार साह रतनिग कुलमंडणु ।
झूदाउत सुख संसि पुहवि धारल्दे नंदणु ॥
चउदह सय पनरेतिरइ कसिण आसाढ़ह तेरसि ।
पट्ट महोच्छव कियउ साह रतनागर वरसि ॥
खरतरह गच्छि उज्जोय करु, जिणचन्द सूरि पट्टु धरणु ।
जिणउदय सूरि नंदउ सुपहु, विहिसवह मङ्गल करणु ॥१६॥
जिम जलहरंमि मोर जिहा वसंतमि कोकिला हुंती ।
सूरउग्गमणे कमलु तह भविया तुह आगमणे ॥
जिम जलहर आगमणि मोर[1] हरसिय मण नचइ ।
जिम दिणियर उग्गमणि कमल वणसिरि सिरि विकसइ ॥
ससिहर संगम जेम सयल सायरु जल विकसइ ।
जिम वसंति महियलि हंसति कोयल मइ मचइ ॥
तिम सूरि राउ जिनउदय गुरु, पट्टाहिव रसि (?वि) उक्कासिय ।
जिनराजसूरि गुरुदंसणहि भविय नयण मण उल्हसिय ॥१७॥

१ देहलइ

वासिग उप्परि धरणि धरणि उप्परि जिम गिरिवर।
गिरिवर उप्परि मह मेरु उप्परि रवि ससिहर ॥
ससिहर उप्परि तियस तियस उप्परि जिम सुर[1] वर।
इदुप्परि नवगीय गीय उप्परि पचुत्तर ॥
सव्वट्ठसिद्धि तसु उप्परि, जिम तसु उप्परि मुत्त हलि।
तिम सूरि जिणेसर जुगपवर, सूरहिं उप्परि इत्थ फलि ॥१८॥
कुसल घडो ससार, कुसल सज्जण जण चाहइ।
कुसल० मङगल वारि लछि कुसलहि घरि आवइ।
कुसलहि घण वरसति कुसलि घण घन रवन्नउ।
कुसलहि घोड[2]घट्टि कुसलि पहिरिय सुवन्नउ ॥
एरिसउ नाम सुह गुरु तणउ, कुसलहि जग रलियामणउ।
जिण कुसल सूरि नाम ग्रहणि, घरि[3]घरि होइ वधामणउ ॥१६॥
दस सय चउवीसेहि नयरि पट्टणि अणहिल्लपुरि।
हूयउ वाद सुविहतह चेइवासी सउ बहु परि ॥
दुल्लभ नरवइ सभा समुखि जिण हेलइ जित्तउ।
चित्तवास उत्थप्पिय दस गुज्जरह वदित्तउ।
सुविहित्त गछि खरतर बिरुद, दुल्लभ नरव० तहि दियउ।
सिरि वद्धमाण पट्टह तिलउ, जिणेसर सूरि गुरु गहगहउ ॥२०॥
रवि किरणेहि वलग्गि चडिय अट्ठावय तित्थहि।
निय २ वन्न पमाण बिंब वदिय जिण भत्तिहि।

१ छप्परि २ घोडायट्ट ३ करि

पनरह सय तापस पबोह दिखिय जिण सत्तिहि ।
पारावइ जा पत्ति सव्व खीरह चिय खंडहि ॥
अखीण महाणसि लद्धिवर, गोडम सामिय गुण निलउ ।
जसु नामिण सिज्झइ कज्ज सवि, सो आयउ तिहुयण तिलउ ॥२१॥
सो जयउ जेण वहिय पचमि (वाउ) चउत्थिपजूसरण ।
पख चउद्दसि जाया सम्मत्तिया कालकाडरियो ॥
कालिकसूरि मुणिंद जयउ तिहुअण मण रंजण ।
उज्जेणी गद्दभिल्ल राय मूलह निकंदण ॥
सरसइ साहुणि कज्जि सिव लंछण जिणि रखिय ।
सोहम्माइवइंद सयल आडखड अखिय ॥
मरहट्ठदेसि पयठाणपुरि, सालवाहण अवरोहपर ।
सो कालिगसूरि संघह जयउ, चउत्थि पजूसरण विहिय धरि ॥२२॥
जिणदत्त नंदउ सुपहु जो भारहंमि जुगपवरो ।
अंबाएवि पसाया, विन्नाउ नागदेवेण ॥ १ ॥
नागदेव वर सावएण उज्जित[1] चडेविणु ।
पुछिय जुगवर अंब एवि उववास करे विणु ॥
तसु[2] सत्ति तुट्ठाय तीय, करि अखरि लिखिया ।
भणिउ [3]जवाईय पम्ह सय [4], जुगपवर सुघरिणय ॥
भमिऊण पहवि अणहिल्लपुरि, जुगपहाण तिणि जाणियउ ।
जिणदत्तसूरि नंदउ सुपहु, अम्बाएवि वखाणियउ ॥२३॥
गह धम्मो देव सिसी फुग्गण कन्नाय च (उ)दसी दिवसे ।
पंडिय वजयाणंदो निज्जणिय "अभयतिलकेण" ॥ १ ॥

१ उज्जित चंडेविणु २ तासु ३ सुवाइय ४ सेय

पाणि तणइ विशदि रज्ज जयसिंघ नरिन्द ।
उज्जेणी वर नयरि सुवणि पहु सती जिणन्ह ।
जिणवल्लभ जिणदत्त सूरि जिणचन्द जइसर ।
रजिय जिणचय सूरि धरह सिरि सूरि जिणेसर ॥
ता ? ७०३ सोयछु जनह जल्ल, फासूय यप्पिय निवहप्परि ।
निज्जिणिउ विग्नयाणद ति(लि)हि, अभयतिलकि चउपट्टि यरि ॥२४॥
रयणि रमन रमणि पवेसु न्हवणु नह निसहि
जिणेसर न दिन दोसा समय यलि न मन्नरिय विसरह ।
जहु जामणहि पनठरत्ति रहु भमइ नभमणह ।
नहु विहारि वक्षाणु जत्त तुगी भरि समणह ॥
अविवणहु जहिनइ त्तिय अवहि, तह सुयमि धुयरय करउ ।
तरु मोह मूल मूलण गयह, जिणवल्लह पय अणुसरउ ॥२५॥
जिणदत्त सूरि मगलु मगलु, जिणचन्द्रसूरि रायस्स ।
जिणवय सूरि जिगेसर, मगलु तह वद्धमाणस्स ॥ १ ॥
वद्धमाण घणगुणनिहाग मगलु कलि अमिलह ।
सुगुरु जिणेसर सूरि वसहि पयडण धुरि धवलह ।
मगलु पहु जिणचन्द अभयदेवह जिणवल्लह ।
मगलु गुरु जिणदत्त सूरि मगलु जिगचन्दह ॥
जिणपत्ति सूरि मगलु अमलु, जास सुजस पसरिय धरह ।
चउविह सुसव सल्लह कवि, मगल सूरि जिणेसरह ॥२६॥
कहस चन्द्र निम्मलह कहस तारायण निम्मल ।
कहस सुपवित्त कहस बगुलउ अय उज्जल ॥

कहस नीर सुरसरीय कहस वाहलीय पवित्तिय ।
पदमराग कह गुरुय कहस पवरिय रंगिय ॥
जिणपदम सूरि पट्टु पट्टुधर, अमिय वाणि देसण वरिस ।
तुडि कर सुजीह किनगलि पडिसि, जिनलब्धि सूरि गणहरसरसु॥२७॥
एने वेरि खज्जूरि जतइ सिरिविडि करि भखिय ।
एन अंब अम्बलिय दख दाडिम जं चखिय ।
एन जंब जंबूयह सयल पिप्पल जं असियह ।
वडआरू य उवरन एय एय पसर जवसिय ॥
पउमप्पह नारिग नह सु नयनिमल कोमल महूय ।
जिणपत्ति सूरि नालियर इह, अररि कोर वंच भंजेय तुय ॥२८॥
जिम नसि सोहइ चंद जेम कज्जलु तरुलछहि ।
हंस जेम सुरवरहि पुरिस सोहइ जिम लछिहि ।
कंचणुं जिम हीरेहि जेम कुल सोहइ पुत्तहि ।
रमणि जेम भत्तार राउ सोहइ सामतइ ।
सुर नाह जेम सोहइ सुरह, जगि सोहइ जिणधम्म मेरु ।
आयरिय मझि सिहासणहि, तिम सोहइ जिणचन्द गुरु ॥२६॥
दसणभद नरनाह वीर आगमि आणंदिय ।
पभणइ वंदिसु तेम जेम केणावि न वंदिय ।
रह सज्जिय गय गुडिय तुरिय पलरिय पलाणिय ।
सुखासण सय पंच वडवि चल्लि धितिहि राणिय ॥
बहु छत्त चमर परवारि सउं, जाम सपत्त समोसरणि ।
ताम इंद तसु मणु मणवि, अयरावइ आदसइ मणि ॥३०॥

इंद वयणि गय गुडिर सहस चउसट्ठि वेउव्विय ।
वारत्तर सय पच तीह इक्कह मुह किय ।
मुहि मुहि किय अड दत दतहि दतहि अड वाविय ।
वावि वावि अड कमल कमलि दल लग्घु लग न(?ना)विय ॥
बत्तीस बद्ध नाडय घड, पत्ति पत्ति नचइ रलिय ।
इयसिय रिद्धि पिखेवि कर, दसणभद्द मउ गउ(?य) गलिय ॥३१॥
दसगभद्द चिंतय अहह मइ सुकिय न किद्धउ ।
तउ मनि धरि सवेगि झत्ति तणि सयमु लिद्धउ ॥
वीरु पासि सु ज जाइ जामि मुणिराउ वइट्ठव ।
ताम भत्ति सुरराय नमिय सो गुणहि गरिट्ठउ ॥
भणय इदु तय जतु मुणिहु, उद्धारिय निब्भत मइ ।
ज करउ विनाण आणा थुणि, मइ नि होइ सजम किमइ ॥३२॥

॥ दूसरी प्रतिकी विशेष गाथाएँ ॥

अमर त जिणवरु गिर त मेर निसियरु तदसासणु,
तरु त अमरतरु धन त धनु महता पचाणणु ।
गढ त लक विसहर त सेसु गह गुरुय त दिवायरु,
अवल त द्रूयमणि नइ त गग जल वहुल त सायरु ।
जिणभुवण त नदीसर भणउ, तुगत्तणि तापरि गयणु,
पुणि राउत जगि जिणपत्ति गुरु सूरि मउड चूडारयणु ॥१७॥
जिम तरु सुरतरू महि रयण मज्झिहिं चिंतामणि,
धेणु मज्झि जिम कामधेणु गह मज्झि दिवामणि ।

उडगण सऊहिं चंदु इंदु जिम सग्गि पसिद्धउ,
गिरवर मझिहिं मेरु राउ जिम रह निरुत्तउ ।
तिम एह भूरि सूरिहिं पवरु जिणपवोहसूरि सीसवरु,
जिणचंदसूरि भवियहु नमहु, पहवि पसिद्धउ जुगपवरु ॥१८॥
जिण सासण वर रज्जि चंद गच्छिहिं समरंगणि,
वरण तुरंगमि चडवि खंतिक्खर खग्गु गहेविणु ।
जिण आणा सिरिसिरकु सीलि संनाहु सुसज्जिउ,
पंच महव्वय राय सवल मुणिपत्ति अगंजिउ ।
एरिसउ सुहडु जिनकुसल सूरि, पिखेविण रहरियतणु ।
अणमिडिउ मुडिउ मुणिपय पडिउ मयणमाणु मिल्हेवि पुण ॥१९॥
उत्तर दिसि भद्दवइ मासि जिम गज्जइ जलहरु,
जिम हत्थी गडयडइ जेम किन्नरि सरु मणहरु ।
सायरु जिम कल्लोल करइ जिम सीह गुंजारइ,
जिम फुल्लिय सहयार सिहरि कोइल टहकारइ ।
सघोस घंट जिण जम्मक्खणि, वज्जंतिय जिम त्रहत्रहइ,
जिणपदम सूरि सिद्धंत तिम, वखाणंतउ गहगहइ ॥ २१ ॥
जिम अन्तर गोइक दुद्धि अंतरु मणि सुरमणि,
जिम अंतरु सुरतरु पलास जिम जंबुय केसरि ।
जिम अंतरु वग रायहंस जिम दीवय दिणयर,
जिम अंतरु गो कामधेण जिम अंत(रु) सुरेसर,
जिणपदम सूरि तिम (अ)न्नगुरु, एवड अंतरु भविय मुणि ।
खरतरह गच्छि मुणवर तिलउ इथु जीह किम सकउ थुणि ॥२२॥

नवलक्ख कुलि धणसीहनंदणु सुप्रसिद्धउ,
खेताहि तिय कुक्खि जाउ बहु गुणह समिद्धउ।
बालकालि निज्जणवि मोह संजम सिरि रत्तउ,
गोयम चरिय पयास करणु इणि कालि निरुत्तउ।
जिणपद्म सूरि पट्टुद्धरणु, वयरसाह उन्नति करु।
जिनलब्धिसूरि भवियहु नमहु, चउगछि मुणि जुगपवरु ॥२३॥
उदय वडउ ससारि उदय सुरवर नर नदय,
उदय कितहु गह गयणि उदय सहसकर वन्य।
उदय लगो सवि कज्ज रज्ज सिझत प्रमाणइ,
उदउ अनुपम अचल उन्य यलि वलि वखाणइ।
धग धणय पुत्त परियण सयल, उदय(ल)गो जस वित्थरइ।
जिणउदय सूरि इणि कारिणहिं, उदउ सयल संघइ करइ ॥२४॥
जिम चिंतामणि रयण मज्झि उत्तम सलहिज्जइ,
जिम कणयाचल गिरिह मज्झि किरि धुरहि ठविज्जइ।
जिम गंगाजल जल्ह मज्झि सुपवित्त भणिज्जइ,
जिम सोह गह वत्थु मज्झि ससहर वन्निज्जइ।
जिम तरह मज्झि वछित्त करु, सुरतरु महिमा महमहइ।
जिम सूरि मज्झि जिणभद्दसूरि, जुगपहाण गुरु गहगहइ ॥२७॥
जिणि उम्मूलिय मोहजाल सुविसाल पयडिहिं,
जिणि सुजाणि किजाणि मयणु किउ खडो खडिहि।
जसु अगाइ मइ कोह लोह भड किमिहि न मटिहि,

गय जिम जिणि भव रुक्ख भग्ग तव मुंडा दंडिहि ।
सो गच्छनाह जिणभद्दगुरु, वछिय पूरण कप्पतरू,
कल्लाण वल्लि नवधार धरु, वसह मज्झि जयवंत चिरु ॥२८॥
जिणि दिणि दुल्लभ सभा सखर खरतर जे तिण दिणि,
पडिवोहिय चामुण्ड फुडवि खरतर जे तिणि दिणि ।
जिणीय वाद छट्ठमइ मासि फुड खरतर तिणिदिणि,
....

रंजिय नरवंम नरिंद जिहिं, धारनयर स्युं नरवरा ।
जिणभद्रसूरि ते तुझ सवि, अखिल खोणि खरतर खरा ॥३१॥
वशाखि (पि) का मदाति साख्य सोगत नैयायक,
मीमासक मुख मुखरवादि गुरु गर्व निवारक ।
उत्सूत्राविधि मार्ग्ग वर्ग्ग देशक यति व्रजा,
करटि घटांकुश कुल विशाल सौधोक्रल सुध्वज ।
जन नयन सुधाकर रुचिरकर, मदन महीधर कुलिशधर,
जय सूरि मुकुट गत कपट भट, गुरु जिणभद्द युगपवर ॥३२॥
सयल गरूय गुण गण गणिद गण सीस मउड़ मणि,
निय वयणिहिं पर वादि निद्धडइ सुलक्खणि ।
सवि आचार विचार सार विहिमग्ग पयासइ,
भविय जण मण विमल कमल रवि जेम पयासइ ।
पुरि नयरि देसि गामागरहि, विहरतउ सो होइ सुगुरु ।
सो जयउ जिणेसर सासणिहिं, श्रीजिणभद्र मुणिदवरु ॥३३॥

शासन प्रभावक श्री जिनभद्र सूरिजीकी हस्तलिपि

(सं० १४९१ लि० योगविधिका अन्तिम पत्र)

ताम तिमिर घरि फुरइ जाम दिणयर नहु उग्गइ ।
ना मयगल मयमत्त जाम केसरीय न लग्गइ ।
ताम चिडा चिगचिग जा न सिचाणउ दुगुइ ।
ता गज्जइ घणु गयणि जाम नहु पवण फुरक्कइ ।
तिम सयल वादि निय निय घरिहिं, ताम गज्ज पज्जइ चडइ ।
जिनभद्र सूरि सुह गुरु तणीय, इथु न जा पन्तिहिं पडइ ॥३४॥
घर पुर नयर निवासि जेय निय गज्ज पयासइ ।
वोलावना वहुय निरुद्द नहु किंपि विमासइ ।
पहुवि पयउ पमाग लरवण वर वखाणउ ।
वादि विवाद विनोदि सक निय चित्त न याणइ ।
परिस जि केवि सुवणिहिं भलइ, वादी मयगल गउयडउ ।
जिनभद्र सूरि केसरि हरिहिं त धुज्जवि धरणिहिं पडइ ॥३५॥
नाग कुमर नलाह सुग्नाहा जेण तिहुयणि जिन्ना ।
तिहुयण सल्लविरहो विव रयाउ एम भूवल्प १
भूवन्नमि पमिद्ध सिद्ध जो मकर भणिवउ ।
गोरी पयतलि रुलिय सोय इणि वाणिहि हणिवउ ।
दानव मानव असुर मरि हेलइ जो छिद्धउ ।
सो नारायण सोल सहस गोपी वसि किद्धउ ।
हिव एह अधिक भद्दि वाउलउ न मुणिलोयह कलिहिं ।
जिणभद्रसूरि इणि कारणिहि, मयण मल्लु जित्तउ वलिहि ।३६।

दुर्घट घटना घटित कुटिल कपटागम सूत्कट ।
वावाटोत्कट करटि करट पाटन सिंहोद्भट ।
न विट लंपट मुक्त निकट विन तारि भट स्फट,
हाटक सुघट किरीट कोटि घृस्ट क्रम नख तर जट,
विस्टप वाछित कामघट विघटित दुष्ट घट प्रकट
जिनभद्र सूरि गुरुवर किकट, सितपटसिरोमुकुट ॥२७॥

॥ इति समस्तदेव गुरु षट्पदानि ॥



॥ पद्मराज कवि कृत ॥

॥ जिनोदयसूरि गुण वर्णन ॥

किणि गुणि सोवन्नितनग, सिद्धिहिका भति तुम्ह हो मुणिग ।
ससार फरि डहण, दिसा वालाणए गहण ॥१॥
बालत्तणि वय गहण सुपुणि मुणिवर सभालिवउ ।
अट्ठ कम्म निज्जणावि गमण दुग्ग गइ टालिवउ ॥
उग्गु तवगु जिण तवउ वितु समतहि रहिउ ।
सजम फरिसु पहाणु मयण समरगणि चहिउ ।
जिणउ य सूरि पुय पय नमहि, ति नर मुक्ति रमणी रमइ ।
"पद्मराज" भणइ तुइ विन्नउ, अजउ भवगु किणि गुणि तवहि॥१॥
छील्यति सिद्धि पावहि जे नर पणमति एरिसा सुगुरु ।
मुणिवरह चित्त कलिउ नहु मन्नइ अन्न तियस्स ॥१॥
मुणिवर मनुमय फलिउ भत्ति जिणवरह मनावउ
अवर तरणि नहु गमइ सिद्धिरमणि इह भावइ ।
फरइ तवणि वहु भगि रगि आगम वखाणउ ।
भवुह जीव बोहत लैत सुमत्थह नाणय ॥
जिणउदय सूरि गच्छाहिवइ मुख मग्गि धोरि सुपह ।
"पद्मराज" भणइ सुपसाउ करि, सिव मारग दिखाल मह ॥२॥
सुगुरु गिरमग्ग जूय किय कला विसारह
मस मसण परिहरउ सुरा सिउ मेउ निवारइ ।
वेसन रस कउ पथ पाउ पारद्धहि अणतउ ।

चोरी म करि अयाण रखि दुग्गय जिउ जंतउ ॥
पर रमणि मिल्हि सत्तय वसणि, जीव दय दढ संग्रहयउ ।
जिणउदयसूरि सुहगुरु नमहु, सिद्धि रमणि लीलइ लहउ ॥३॥
सुगुरु सिद्धि इम भणइ किन्ति तूय तणी थुणिज्जइ ।
सुगुरु देव इम भणय लीह गणहरे तुय दिज्जय ।
सुगुरु सुविह गण चित्ति अचलु तुय नामहि लगाउ ।
तुहत पढइ सिद्धंत सुगुरु जिनभत्ति विलग्गउ ॥
जिणउदय सूरि जग जुगपवर, तुय गुण वनउं सहसि फणि ।
परसउ सुगुरु हो भवियणहु, कहय सिद्धि णाभन्तमणि ॥४॥
कवणि कवणि गुणि थुणउं कवणि किणि भेय वखाणउ ।
थूलभद्द तुह सील लव्वि गोयम तुहे जाणउ ।
पाव पंक मउ मलिउ दलिउ कन्दप्प निरुत्तउ ।
तुह मुनिवर सिरि तिलउ भविय कप्पयरु पहुत्तउ ॥
जिणउदयसूरि मणहर रयण, सुगुरु पट्टधर उद्धरणु ।
"पहुराज" भणइ इमजाणि करि, फलमनवंछिउ सुह करणु ॥५॥
फल मनवंछिउ होइ जि किवि तुइ नाम पयासय ।
तुझ नाम सुणि सुगुरु रोर दारिद पणासइ ।
नामगहणि तुय तणय सयल आवय उस्सासहि ।
.... ॥
जिणउदयसूरि गणहर रयणु, सुगुरु पट्टधर उद्धरणु ।
"पहुराज" भणइ इम जाणि करि, सयल संघ मंगलु करणु ॥६॥

श्री जिनप्रभसूरि परम्परा
गुर्वावली

वंदे सुहम सामिं, जंबू सामि च पभवसूरिं च ।
सिज्जंभव जसभद्द, अज्जसमूय तहा वंदे ॥ १ ॥
तह भद्द बाहु सामिं च, थूलभद्दजइ जिणवरिंद्द ।
अज्ज महइरि सूरिं, अज्ज सुहत्थिय च वंदामि ॥ २ ॥
तह संति सूरि हरिभद्द सूरिं, संडिल्ल सूरि जुगपवरं ।
अज्ज समुद्द तह अज्ज मगु, अज्ज धम्म अह वंदे ॥ ३ ॥
भद्दगुत्त च वइर च, अज्जरक्खिय मुणिवरं ।
अज्ज नंदि च वंदामि, अज्ज नागहत्थि तहा ॥ ४ ॥
रेवय खंडिल्ल हिमवंत, नाग उज्जोय सूरिणो वंद ।
गोविन्द भूअदिन्ने, लोहिचिय दूस सूरीअ ॥ ५ ॥
उमासाइवायगे वंदे, वंदे जिणभद्द सूरिणो ।
हरिभद्द सूरिणो वंद, वंदेहिं देवसूरिंपि ॥ ६ ॥
तह नमिचन्दसूरिं, उज्जोयण सूरि पज्जिइणो वंद ।
तह वद्धमाण सूरिं, सूरि सिरि जिणेसरं वंद ॥ ७ ॥
जिणचन्द अभयसूरिं, सूरि जिण वल्लह तहा वंदे ।
जिणदत्त जिणचंद, जिणवइय जिणेसर वंदे ॥ ८ ॥

संजम सरसइ निरुयसु, सुणीण तित्थमर च (ध) रणं ।
सुगुरुं गणहररयणं, वंदे जिणसिंह सूरिमहं ॥ ९ ॥
जिणपह सूरि मुणिंदो, पयडिय नीसेस तिहुऊयणाणंदो ।
संपइ जिणवर सिरि, वद्धमाण तित्थं पभावेइ ॥१०॥
सिरि जिणपह सूरीणं, पट्टंमि पइट्ठि ओगुण गरिट्ठो ।
जयइ जिणदेव सूरी, निय पन्ना विजय सूरसूरी ॥११॥
जिणदेव सूरि पहोदय, गिरि चूडाविभूसणे भाणू ।
जिण मेरु सूरि सुगुरु, जयउ जए सयल विज्जनिहिं ॥१२॥
जिणहित सूरि मुणिंदो, तप्पजेरविय कुमुयवण चंदो ।
मयणकरि कुम विहडण, दुद्धरपंचाणणो जयउ ॥१३॥
सुगुरु परंपरा गाहा, कुलय मिणजो पढेइ पच्चूसे ।
सो लहेइ मणोवंछिय, सिद्धि सव्वंपिभव्वजणे ॥१४॥

॥ श्री जिनप्रभसूरि छप्पय ॥

गयण थकी जिण कुलह आणि[1] ओवइ उत्तारी ।
कियो महिप[2] स्युं वाद सुपयउ[3] नगरी नववारी ॥
पातिसाह रंजियउ साथि[4] वड़ वृक्ष चलायउ ।
शत्रुंजय राइण[5] सरिस, वरिस दुद्धइ झड़ ल्यायउ ॥
जिण दोरड़इ मुद्रिका प्रकट कीय, जिन प्रतिमा बुल्लिय वयण ।
जिणप्रभसूरि खरतर सुगच्छि, भरतक्षेत्र मंडिय रयण ॥१॥
॥ इति गुरावली गाथा कुलकं समाप्तम् ॥

१ नांखि, २ मुख, ३ नयर पिक्खइ, ४ दिल्लीपति सुरताण पूठि ५ सिहरि ।

खरतरगच्छ पट्टावली



प्रथम श्री (धवल) राग

धन[1] धन जिण (शासन?) पातग नाशन, त्रिभुवन गरूअउ गहगहए।
जासु[2] तणउ जसुनाउ गंगाजल, निरमल महियले महमह[3] ए ॥१॥
श्रीवयरस्वामी गुरु अनुक्रमि चिहु दिसे, चन्द्रकुल[4] चउपट आणिइए।
गच्छ चउरासीय माहि अति गरुअउ, खरतरगच्छ वखाणिइए ॥२॥

छंद:—

वखाणिनइ गिरि माहि गरुअउ, जेम मेरु महीधरो।
मणि माहि गिरूयउ जेम सुरमणि, जेम ग्रह गणि दिणयरो ॥
जिम देव दानव माहि गरुअ, गज्जए अमरसरो।
तिम सयल गच्छह माहि गरुअउ, राजगच्छ सु खरतरो ॥३॥

राग देशाख:—

खरतरगच्छहिं खरउ ववहार, खरउ आचार मुनि आचरइ ए।
खरउ सिद्धात वखाणेइ सुहगुर, खरउ विधि मारग वापरइ ए ॥ ४ ॥
तसु गच्छ[5] मण्डण पाप विहडण, जे हुआ सुविहित सिरोमणि ए।
श्री जयसागर गुर उपदेसिहिं, गाइसु खरतर गच्छ धणी ए ॥ ५ ॥

१ श्रीजिनशासन २ तासु ३ गहगहए ४ कुमवउपट ५ गढ

छंदः

गुरु गच्छ धणी हुंउ हरखि गाउसु, प्रथम हरिभद्द सूरि गुरो ।
तसु वंसि क्रमि उदयउ मुणीसर, देवसूरि सुगणहरो ॥
सिरि नेमिचन्द मुणिंद सुंदर, पाट तसु उज्जयाल ए ।
सिरि सूरि उज्जोयण जईसर, पाव पंक पखालए ॥ ६ ॥

रागदेशाख छाया

आवुय ऊपरि मास छ सीम, साधिउ सूरिमंत्र लेइ (य) नीम ।
पायालह पहुतउ धरणिंदो, प्रगटियो वज्रमय आदिजिणंदो ॥ ७॥
मिथ्याती जे जोगी (य) जडिया, सुहगुरु अतिसइ ते सहुनडिया ।
जिणशासन हूउ जयवाउ,[1] विमल तणइ मनि आणंद जाउ ॥ ८ ॥
विमल सुवसहोय विमलि करावी (य),
जसु उवएसिहि (य) त्रिभुवनि भावी ।
जाणि कि नंदीसर परसादो, परतखि देउल मिसि जसवादो ॥९॥

॥ छंदः ॥

जसुवाउ जसु उवएसि लीवउ, विमलवर मंतीसरे ।
कारविय निरुपम विमल वसही, गरुअगिरि आबू सिरे ॥
सिरि सूरि मंत्र प्रभाव प्रगटिय, सुविहित मग्ग दिवायरो ।
सिरि वद्धमाण मुणिंद नंदउ, सयल गुण रयणायरो ॥१०॥

॥ राग राजवल्लभः ॥

गूजर देसिहि जाणियइ, पाटण अणहिलपुर नामी ए ।
राज करइ गजपति तिहा सिरि, दुल्लह नरवइ नामी ए ॥११॥
चउरासी मठपति तिहां, आचारिज छइ तिणि कालि ए ।
जिणवर मंदिरि ते वसइ, इक सुविहित मुनिवर टालि ए ॥१२॥

१ वाद ।

सुविहित नइ मठपति हुउ, ग (१रा)यगणि वसिहि विवादू ए।
सूरि जिणेसरि पामिउ, जग दखत जय जयवादू ए ॥१३॥
दससय चउवीसहिं गए, उथापिउ चेइयवासू ए।
श्रीजिनशासनि थापिउ वसतिहि, सुविहित मुनि(वर)वासू ए ॥१४॥
गुरु गुणि रंजिउ इम भणइ श्री सुरि दुल्ह नरनाह् ए।
इणि कलिकालिहि खरहरा, चारित्रधर एहजि साहु ए ॥१५॥

॥ छन्द. ॥

खरहरा चारित्रधर गुरु, एहु विरुद प्रकासिउ।
उथप्पिय चियवास[1] सुविहिय, सघ वसहि निवासिउ।
रंजइउ जिणि राउ दुल्लह, जयउ सूरि जिणेसरो।
तसु पाटि सिरि जिणचन्द गणहर, भविय लोअ दिणेसरो ॥१६॥

॥ राग धन्याश्री. ॥

श्रीजिन शासन उधरिउए,
नव अंगए तणइ[2] वखानि, श्री अभयदेवसूरिजुगपवरो
प्रगटिऊ थंभण पास, श्रीजयतिहुअणि जेण गुरो ॥१७॥

॥ छन्द ॥

गुरु गरुअ खरतर गच्छि उदयउ, अभयदेव गणेसरो।
जसु पायन वदइ देवि पदमावती, धरण सुरेवरो ॥
नियं वयण सीमधर जिणेसर, जासु गुण वक्खाण ए।
किम मु सरीसउ मूढ त गुरु, वरणवी जगि जाण ए ॥१८॥

१ उथरियपियवास २ बणइ।

जाणियइ सुविहित सिरोमणि ए।
तसु तण ए पाटि सिगार, पुह विहि "पिंडविशुद्धि" करो।
इणि जुगी ए एक जोगिंद, श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरो ॥१६॥

छंदः-

गुरु गुण तणउ भंडार गणहर, सयल संयम भर धरो।
वागडी देसि वखाणि जिणध्रम, दससहस श्रावक करो।
चीत्रउड ऊपरि देवि चामुंड, प्रसिद्ध जिणि प्रतिबोधिया।
तिणि सूरि जिण वल्लह जईसरि, कवण लोय न मोहिया ॥२०॥
श्रीजिनदत्त सूरि गुरु नमउ ए।
अम्बिका ए देवि आदेसि, जाणियइ चिहुं जुगे जुग प्रधान।
सयंभरी ए राय डइ जेहि, दीधउ श्रीजिनधर्म दान ॥२१॥

छंदः

जिनधर्म दानिहि पनरसय मुनि, दीखिया जिण निज करे।
वखाण सुणिवा देव आवइ, सेव सारइ बहु परे ॥
चउसट्ठि योगिणी नामि देवी, जासु आण न लंघ ए।
तसु गुरु तणइ सुपसाइ नंदउ, एहु खरतर संघ ए ॥२२॥
श्रीजिनचंद सूरि नर रयण।
नरमणी ए जासु निलाडि, झलहलइ जेम गयणहिं दिणंदो।
तसु तणइ ए पाटि प्रचंड, श्रीसूरिजिनपति सूरिइंदो ॥२३॥

छंद.—

सिर सुरिंद्र मुणिंद जिनपति, श्रीजिन[1] शासनि गज्ज ए।
छत्री वादइ जयपताका, विरद जसु जगि छज्ज ए॥
अहसि(जि)रि जिणसर सूरि वदउ, जिण प्रबोह मुनीसरो।
कलि काल केवलि विरुद गणहर, तयणु जिणचद सूरि गुरो॥२४॥

राग धन्याश्री भास.—

साहलीए नयरि दरबारि सुरतरु, सुगुरु वर श्रीजिनकुशल सुर।
साहेली ए थूभिहिं प्रणमइ तसुपय, भवियजन[2] भगति उगति सूरे।
साहेली ए तीह तणे जाइहि दोहग, दुरिअ दालिद दुहमयल दर।
साहेलीए तीह तणइ मन्दिर विलसइ, सपति सय वरसु भरि पूर॥२५॥

छंद—

भरि पूरि आनंद सयल सपय, भविय लोयह नितु घर।
जे थूभि श्री जिनकुसल सुह गुरु, पय नमइ देराउरे।
तसु पाटि सिरि जिणपदम गणहर, नमउ पुहवि प्रसिद्धउ।
"कूर्चालि सरसती" विरुद पाटणि जासु सघहिं दिद्धउ॥२६॥
साहली ए इणिगच्छि लब्धिहि गोयम गह गहइ श्रीजिनलब्धि सूर।
साहली ए चन्द्र गच्छे पूनिमचन्द जिम सोह ए श्रीजिनचद सूर॥
साहेली ए श्रीसघ उदयकर चदउ नदन श्रीजिनउदय सूर।
साहली ए सुरि पुरदर सुदर गुरअउ श्रीजिनराज सूरे॥२७॥

१ जैनपति २ जे

साहेली ए नितु नवतत्व वखाण ए जाण ए सयल सिद्धान्त सारो ।
साहेली ए मणहर रूपि अनोपम संजम निरमल गुण भंडारो ।
साहेली ए गोयम जंबु कि अभिनवउ अभिनवउ थूलभद्द वयर गुरि ।
साहेली ए संपइ[1] प्रणमउ गच्छपति श्रीजिनभद्रसूरि जुग पवरो ।२८।
साहुसाखह तिलउ बछराज साह मल्हारो ।
स्याणीय कुखंहि अवयरिउ छाजइ खरतर गच्छ भारो ।
साहेली ए संपय पणमउ गच्छपति श्रीजिनचन्द्र सूरि युगपवरो ।
दंसणि भवियण मोहए सोहइ सूरि गुणरयण धरो ।।२९।।

छंदः-

जुगवर तणा गुणरयण पूरी गरुअ एह गुरावली ।
श्रीसंघि भाविहि सामलो तो मन तणी पूरउ रली ।।
आराधतउ विधि खरतर सं......................... ।
इम भणइ भगतिहि सोमकुंजर जाम चंद दिणंदउ ।।३०।।
इति श्रीविधिपक्षालंकार श्रीखरतर गुरूणा गुर्वावली समाप्ता ।।

*

नोटः श्रीजिनकृपाचन्द्र सूरि ज्ञानभण्डारस्य गुटकेमें २९ वीं गाथा अतिरिक्त मिली है।

ज्ञात होता है उस प्रतिके लिखने के समय जिनचन्द्रसूरि विद्यमान होंगे अत. यह १ गाथा उसीमें वृद्धि कर दी है।

१ दंदइ गणधर गरूयउ

श्रीभावप्रभसूरि गीतम्

समरवि सुहगुरु पाय अहे, ज(सु) दरसणि मनु उल्हसइ ए।
थुणीयइ मुणिवर राय अहे, कलियुगे जसु महिमा वसइ ए ॥१॥
निरमल निय जम पूरि अहे, चन्दन वन जिम महिमहइ ए।
श्रीय भावप्रभसूरि अहे, श्रीयखरतरगछे गहगहइ ए ॥ २ ॥
अमिय समाणीय वाणि अहे, नवरस देसग जो करइ ए।
समय विवेक सुजाणि अहे, समकित रयण सो मनि धरइए ॥३॥
पच महव्वयभार अहे, पच विषय परि गजणू ए।
पालय पच आचार अहे, पचमि (गति) भजणू ए ॥ ४ ॥
भजणु मोह नरिंदो अहे, मयणु महाभडो वसि कीउ ए।
वसि कीउ कोहु गयदो अहे, मानु पचाननु वन (स?)कीउ ए ॥५॥
चमकीउ दलिउ कसाय अहे, लोभ भुजगमु निरजणिउ ए।
निजणिउ अरि रागाय अहे, सयल सुरा सुर सेवीयउ ए ॥ ६ ॥
सेवइ जसु पय माय अहे, पकय भ्रूभर रण उणइ ए।
धन धनु जे नरनारि अहे, नित नितु प्रभु गुण गण थुणइ ए ॥७॥
मगल छठि विलास अहे, पूरइ ए वछिय सुहकरू ए।
निरुपम उवसम वास अहे, रजण भविअण मुणिवरू ए ॥ ८ ॥
नव रस देसग वाणि अहे, घण जिम गाजइ ए गुहिर सरे।
मयग दवानल वारि अहे, नागिहिं जलि वरिसए सुसरे ॥ ६ ॥
विहरइ सुविही याचार अहे, कास कुसुम जसु निरमलउ ए।

माल्हूअ साख विशाल अहे, लूणिग कुलि महियलि तिलउ ए ॥१०॥
लब्धिहिं गोयम सामि अहे, सीयलिहिं माधु सुदरशनु ए ।
सञ्चउ साह मल्हार अहे, राजल देविय नंदनुं ए ॥११॥
निरमल गुण भंडारो अहे, श्रीय जिनराजसूरि शीस वरो ।
संयम सिरि उरि हारो अहे, सागरचन्द्रसूरि पाटु धरो ॥१२॥
सुमतगुरु-सुरतरु तेम अहे, सुकृत रसो भरि पूरीउ ए ।
गुणमणि रयणिहिं जेम अहे, लवणिम मंजरि अंकूरीउ ए ॥१३॥
दिणियर जिम सविकासो अहे, जस कीयरतिगुण विसतरीए ।
जगि जयवंतउ सूरि अहे, पूरव गुरु सवि उद्धरी ए ॥१४॥
उद्धरिय धीरिम मे(रु) गिरि जिम, चन्द्रगछि मुख मंडणो ।
पंच समतिहिं त्रिहुं गुपिति गुपतउ, दुरित भवभय खंडणो ।
सिरि आइरिय मुवर कांति दिणियर, भविक कमल सविकासणो ।
जयवंतु श्रीय गुरु भावप्रभसूरि, जाम ससि गयणंगणो ॥१५॥

॥ इति श्रीमदाचार्याणां गीतम् ॥

श्रीरागि ढाल ॥ छ ॥



श्रीकल्याणचन्द्रगणि कृत
श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि चउपइ

सरसति सरस वयण द्यउ देवि, निज गुरु गुण बोलिसु संखेवि ।
पीजइ अमीय रसायण जिम्ब, तउ हि सलोहिज हुइ गुण वृन्द ।।१।।
महि मंडण मरुधर धण रिद्धि, नयर महेवउ नर बहु बुद्धि ।।
ओसवंश अति घण तिणि ठाण, वसइ सुरद्रुम जिम पुण्यवान ।।२।।
तहि श्री संखवाल गुणवंत, उच्छव करत सारा धनवंत ।
कोचर साह तणइ सन्तान, आपमल्ल दीपा बहु मानि ।। ३ ।।
सीलिहि सीता रूपइ रंभ, दान दइ न करइ मनि दंभ ।।
दीपा घरणी देवलदे नारि, पुत्त रयण तिणि जनम्या च्यारि ।।४।।
लखउ भाण्डउ साह सुरंग, कल्हउ देल्हउ थघर चंग ।।
धनउ जेम धनवंत अनेक, धर्मकाजि जसु मनि सुविवेक ।।५।।
पणदह गुणपचासइ जम्मु, लिखिउ देल्ह नेमहइ रसु ।।
श्रीजिनवर्द्धनसूरिहि पास, कीतिराउ सीसविन सुपात्र ।।६।।
हिव वाणारीय पद ससरइ, पाठक पद अमीयउ ऊपरइ ।।
तयणंतरि आयरिह मतु, जोगि जाणि गुरि दीधउ मतु ।।७।।
लखउ पदठउ करइ विस्तारि, नयर जेसलमेर मझारि ।।
श्रीजिनभद्रसूरि सत्तागरइ, किया श्री कीर्तिरयण सूरिवइ ।।८।।
चाल्यो मइगल ता गड अडइ, जा गुरु पमरि दृष्टि नव चडइ ।।
जन किरि अम्ह गुरु बोलइ बोल, वादी मूकइ मान निटोल ।।९।।

जहि मस्तकि गुरु नियकरु ठवइ, तउ घरि नवनिद्धि संपद हवइ ।
सुह गुरु जेह भणावइ सीस, ते पंडित हुइ विस्वा वीस ॥१०॥
जिहा जिहा गुणवंता रहइ, तिहां श्रावक रिधिहि गहगहइ ॥
गाम नगर ते अविचल खेम, लवधिवंत जणिजइ एम ॥११॥
पनरह पणवीसइ वरसंमि, वइसाखा वदिदिण पंचमि ।
पंचवीस दिण अणसण पालि, सरगि पहुंता पाव पखालि ॥१२॥
रविजिम झगमगि झिगमिग करइ, नवउ तेज तनु अणसण धरइ ।
अतिसय जिम तित्थंकरतणा, गुरु अनुभवि हुया अतिघणा ॥१३॥
सुह गुरु अणसण सीधउं जांम, वीर विहारे दीविहि ताम ।
झल हलंत दीवो पुण कीध, जडिय किमाडिहि लोक प्रसिद्धि ॥१४॥
जिम उदयाचलि उगइ भाणु, तिमपूरव दिसि प्रगट प्रमाणु ।
थापिउ थूभ सुनिश्चलजाण, श्री वीरमपुर उत्तम ठाणि ॥१५॥
श्रीखरतर गणि सुरतर राय, जहि सिरि कित्तिरयण सूरि पाय ।
आराहउ भवियणइकचित्ति, ते मण वंछित पामइ झत्ति ॥१६॥
चिन्तामणि जिम पूरइ आस, पूजइ जे मनि धरिय उल्लास ।
तिणि कारणि गुरुचरण त्रिकाल, सेवइ नर नारि भूपाल ॥१७॥
श्री कीर्त्तिरतन सूरि चउपइ, प्रहउठी जे निश्चल थइ ।
भणइ गुणइ तिहि काज सरंति, "कल्याणचन्द्र" गणि भगतिभणंति ॥१८॥

॥ इति श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि चउपइ ॥

सं० १६३७ वर्षे शाके १५८२ प्र० ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे पेष्टा तिथौ गुरुवासरे । श्रीमहिमावती मध्ये श्रीवृहत्खरतर गच्छे श्रीजिन चन्द्रसूरि विजयराज्ये संखवाल गोत्रीय संघभार धुरन्धर साहकेल्हात-त्पुत्रसा० धन्ना तत्पुत्रसा० वरसिंघ तत्पुत्र सा० कुवरा तत्पुत्र सा० नल्वा तत्पुत्र सा० सुरताण तत्पुत्रसा० खेतसीह भातृ साह चांपसी पुस्तिका करापिता पुत्र पुत्रादि चिरनंद्यात् । शुभं भवतु ।

[श्रीपूज्यजीके संग्रहस्थ गुटकाके पृ० ४२ से]

श्रीमतिकलशोपाध्याय कृत

॥ श्रीजिनहंससूरि गुरुगीतम् ॥

सरसति मति दिउ अम्ह अतिघणी, सरस सुकोमल वाणि
श्रीमज्जिनहंससूरिगुरु गाइसिउं मन लीणउ गुण जाणि ॥१॥सर०
अति धणीयम्यिउ मति त्व सरसति, सुगुरु वदण जाइ ।
प्रहउठि श्रीजिनहंससूरि गुरु, भाव भगतिहिं गाइइ ॥२॥
पाट उत्सव लाग वधो (पिरोजी) घर, करमसिंह करावा ।
गुरु ठामि ठामि विहार करता, आगरा जव आवए ॥३॥
तव हरसिउ डुंगरसी घणो, धधन वली पासदत्त ।
श्रीमाल चतुर नर जाणियइ, खरतर गुरुगुण रत्त ॥४॥
तव हरसिउ डुंगरसी करावइ, सुगुरु पइसारा तणी ।
बहु परें मंडाइ सहु सुगण्यो, वात ए छे अति घणी ॥५॥
पाखरया हाथी पातसाह सुगुरु साम्हो सचरइ ।
गुरु पाय हेठइ कथीपानड, पटोला बहु पाथरइ ॥६॥
खानखान साहमो आविउ, उमर खान वजीर ।
लोक मिलिया पार न जाणियइ, मोरइ काच कपूर ॥७॥
आवीया साहमा पातसाह सव वाजा वाजए ।
जेण सरणाइ जहरि मरस वाजइ, मसरिम अवर गाजए ॥८॥
मोति वधावइ गीत गावइ, पुण्य कलस धरइ सिर ।
सिणगारसार सव नारी करइ, उच्छव घर घर ॥९॥

रूपटंका सहित तंबोल दियइ, वेंचिउ वित्त अपार।
इम पइसारो विस्तार कीयो, वरतिऔ जय जयकार ॥१०॥
तंबोल दियउ सुजस लीधउ, इसी बात घणो सुणी।
श्रीसिकन्दर बादशाह, वडइ दिल्लीनउ धणो ॥११॥
जिसी जिनप्रभसूरि किरामति, पादशाहे जणियइ।
एथी सहु लोकमाही, घणुं घणुं वखाणीयइ ॥१२॥
दीवान माहे तेडाविया, कीधी पूछ बहुत।
देखाडी किरामती आपणि, गुरुया गुरु गुणवंत ॥१३॥
दीवान माहे घोर तप नइ, जाप सुगुरु मन धरइ।
जिनदत्तसूरि पसायइ चौसठि, योगिनी सानिध करइ ॥१४॥
श्रीसिकंदर चित्त मानियउ, किरामत कांइ कही।
पांचसइ बंदी बाखरसी, छोडव्या इण गुरु सही ॥१५॥
बंदि छोडि विरुद मोटउ हुयउ, तप जप शील प्रमाणि
गुरु मोटा करम तणा धणी, जाणिउं इणउ इहनाणि ॥१६॥
बंदि छोडि मोटउ विरुदलाधउ, बादशाहे परखिया।
श्रीपासनाह जिणंद तुठउ, संघ सकेलइ हरखीया ॥१७॥
श्रीभक्तिलाभ उवझाय बोलइ, भगति आणी अति घणी।
श्रीजिणहंससूरि चिरकाल जीवउ, गच्छ खरतर सिरधणी ॥१८॥

इति गुरु गीतम्



न

र गुरु गीतम्

हुव

पमायजो।

त गाइसु मुणिरायजी ॥१॥

ार उनझाउ जी।

वछित सुखदाउ जी॥

म नउ चद जी।

ाद परमाणन्द जी ॥मन०॥२॥

न भण्डारो जा

मदन विकारो जी ॥३॥मन॥

नरवर राउ जी।

मुनिवर पाउ जी ॥४॥म०॥

॥म०॥

रुपटंका सहित तंबोल दियइ, वेचिउ वित्त अपार।
इम पइसारो विस्तार कीयो, वरतिओ जय जयकार ॥१०॥
तंबोल दियउ सुजस लीयउ, इसी वात घणो सुणी।
श्रीसिकन्दर बादशाह, वडइ दिल्लीनउ धणी ॥११॥
जिसी जिनप्रभसूरि किरामति, पादशाहे जणियइ।
तिथी सहु लोकमाही, घणुं घणुं वखाणीयइ ॥१२॥
दीवान माहे तेडाविया, कीधी पूछ वहुत।
देखाडी किरामती आपणि, गुरुया गुरु गुणवंत ॥१३॥
दीवान माहे घोर तप नइ, जाप सुगुरु मन धरइ।
जिनदत्तसूरि पसायइ चौसठि, योगिनी सानिध करइ ॥१४॥
श्रीसिकंदर चित्त मानियउ, किरामत कांइ कही।
पाचसइ बंदी वाखरसी, छोडव्या इण गुरु सही ॥१५॥
वंदि छोडि विरुद मोटउ हुयउ, तप जप शील प्रमाणि
गुरु मोटा करम तणा धणी, जाणिउं इणउ इहनाणि ॥१६॥
बंदि छोडि मोटउ विरुदलाधउ, बादशाहे परखिया।
श्रीपासनाह जिणंद तुठउ, संघ सकलइ हरखीया ॥१७॥
श्रीभक्तिलाभ उवझाय बोलइ, भगति आणी अति घणी।
श्रीजिणहंससूरि चिरकाल जीवउ, गच्छ खरतर सिरधणी ॥१८॥

इति गुरु गीतम्



श्री पद्ममन्दिर कवि कृत

॥ श्री देवतिलकोपाध्याय चौपई ॥

पास जिणेसर पय नमु, निरुपम कमला कंद ।
सुगुरुथुणता पामियइ, अविहड सुख आणंद ॥१॥
भारहवास अजोध्या ठाम, वाहड गिरि वहुवण अभिराम ।
चउदहसइ चम्माल प्रसिद्ध, निवसइ लोक घणा सुसमृद्ध ॥२॥
ओसवाल भणसाली वंश, निरमल उभय पक्ष ।
करमचंद सुहकरम निवास, तसुघरि जनम्या गुणह निवास॥३॥
तासु घरणि सोहग जाणियइ, सील सीत उपम आणीयइ ।
पनरहसइ तेत्रीसइ वास, तसु घरि जनम्या गुणह निवास ॥४॥
दीधउ जोसी देहो नाम, अनुक्रमि वाधइ गुण अभिराम ।
रामति रमतउ अति सुकमाल, माइ ताइ मन मोहइ वाल ॥५॥
श्रुतालइ संजम आदरि पाप जोग सगला परिहरी ।
भणीय सयल सिद्धांता सार, छासठ पद लह्यो उदार ॥६॥
श्रीदेवतिलक पाठक गहगहइ, महियलि महिमा सहुको कहइ ।
देस विदेसे करी विहार, भवियण नइ कीधा उपगार ॥७॥
इसनयण नभरस ससि वास, सेय पचमी मिगसर मास ।
करि अणसण आराहण ठाण, पाम्यउ अनिमिष तणउ विमाण ॥८॥

मुनि हर्षकुल कृत

महो० श्रीपुण्यसागर गुरु गीतम्

राग:---सूहव

श्रीजगगुरु पय वन्दीयइ, सारद तणइ पसायजी।
पचइंद्रिय जिणि वसिकीय, ते गाइसु मुणिरायजी ॥१॥
मन शुद्धि भविजण भाविय‍इ श्रीपुण्यसागर उवझाउ जी।
पालइ शील सुदृढ सदा, मन वंछित सुखदाउ जी ॥
विमल वदन जसु दीपतउ, जिम पूनम नउ चंद जी।
मधुर अमृत रस पीवता, थाइ परमाणन्द जी ॥मन०॥२॥
दस विधि साधु धरम धरइ, उपशम रस भण्डारो जी।
क्षमा खडग करि जिन हण्यउ, हल्दइ मन्न विकारो जी ॥३॥मन॥
ज्ञान क्रिया गुणि सोहतउ जसु, पणमइ नरवर राउ जी।
नाम० नव निधि संपजइ, सेवइ मुनिवर पाउ जी ॥४॥म०॥
धन उत्तम द उरि धरयउ, उदयसिंह कुल दिनकार जी।
जिन शासन माहि परगडउ, सुविहित गच्छ सिणगार जी ॥५॥म०॥
श्रीजिनहस सूरिसरइ सइ हथि दीखिय शीस जी।
हरषी "हरष कुल" इम भणइ, गुरु प्रतपउ कोडि वरीस जी ॥६॥म०॥

*

श्री जिनचन्द्रसूरि अकबर प्रतिबोध रास

दोहा : राग असावरी

जिनवर जग गुरु मन धरि, गोयम गुरु पणमेसु ।
सरस्वती सद्गुरु सानिधइ, श्री गुरु रास रचेसु ॥ १ ॥
वात सुणी जिम जन मुखइ, ते तिम कहिस जगीस ।
अधिको ओछो जो हुवइ, कोप(य?) करो मत रीस ॥ २ ॥
महावीर पाटइं प्रगट, श्री सोहम गणधार ।
तास पाटि चउसठ्ठिमइ, गच्छ खरतर जयकार ॥ ३ ॥
संवत सोल बारोत्तरइ, जैसलमेरु मंझार ।
श्री जिन माणिक सूरि ने, थापिउ पाट उदार ॥ ४ ॥
मानियो राउल माल दे, गुण गिरूओ गणधार ।
महीयलि जसु यश निरमलो, कोय न लोपइ कार ॥ ५ ॥
तेजि तपइ जिम दिनमणि, श्री जिनचन्द्र सूरीश ।
सुरपति नरपति मानत्री, सेव करइ निश दीश ॥ ॥
युगप्रधान जगि सुरतरु, सूरि शिरोमणि एह ।
श्री जिन शासनि सिरतिलौ, शील सुनिम्मल देह ॥ ७ ॥
पूरव पाटण पामियो, खरतर बिरुद अभंग ।
संवत सोल सतोतरे, उजवालइ गुरु रंगि ॥ ८ ॥
साधु विहारे विहरतां, आया गुरु गुजराति ।
करइ चउमासो पाटणे, उच्छव अधिक विख्यात ॥ ९ ॥

ढालि राग सामेरी

छम्मछर अधिक विख्यात, महोछवि मोटा अवदात ।
पाठक वाचक परिवार, जूथाधिपति जयकार ॥ १० ॥
इणि अवसरि वाचउ मोटो, मन जाणउ को नर खोटो ।
कुमति जे कीधउ ग्रन्थ, ते दुरगति केरउ पंथ ॥ ११ ॥
विखवाद घणा तिण कीधा, संघ पाटण नइ जस लीधा ।
कुमति नउ मोडिउ मान, जग माहि वधारिउ वान ॥ १२ ॥
पखी हरि साखा त्रासइ, गुरु नामइ कुमति नासइ ।
पूज्य पाटण जय पद पावइ, मोतीड़ नारि वधावइ ॥ १३ ॥
गामागर पुरि विचरन्ता, गुरु अहमदावादि पहुता ।
तिहां संघ चतुर्विध वन्दइ, गुरु दरसण करि चिर नन्दइ ॥ १४ ॥
उच्छव आडम्बर कीधउ, धन खरची लाहउ लीधउ ।
गुरु जाणी लाभ अनन्त, चउमासि करइ गुणवन्त ॥ १५ ॥
चउमासि तणइ परमाणि, सुगुरु पहुता खंभाति ।
चउमासि करइ गुरुराज, श्री संघ तणइ हितकाज ॥ १६ ॥
खरतर गच्छ गयण दिणन्द, अभयदेव मुणिंद ।
प्रगट्या जिण थंभण पास, जाणइ अतिसइ जसवास ॥ १७ ॥
श्री जिनचन्द सूरिन्द, भेटयउ प्रभु पास जिणन्द ।
श्री जिनकुशल सूरीस, वंदया मन धरि जगीस ॥ १८ ॥
हिव अहमदावाद सुरम्म, जोगीनाथ साह सुधम्म ।
शत्रुंजय भेटण रंगि, तेड्या गुरु वगि सुचंगि ॥ १९ ॥

मेली सहुसंघ गुरु साथि, परवल खरचइ निजआथि।
चाल्या भेटण गिरिराज, संघपति सोमजी सिरताज ॥ २० ॥

राग मल्हार दोहा

पूर्व पच्छिम उत्तरइ, दक्षिग चहु दिसि जाणि।
संघ चालिउ शैत्रुंज भणी, प्रगटी महीयलि वांणि ॥ २१ ॥
विक्रमपुर मण्डोवरउ, सिन्धु जेसलमेर।
सीरोही जालोर नउ, सोरठि चापानेर ॥ २२ ॥
संघ अनेक तिहा आविया, भेटण विमल गिरिन्द।
लोकतणी संख्या नहीं, साथि गुरु जिणचन्द ॥ २३ ॥
चोर चरड़ अरि भय हणी, वंदी आदि जिणंद।
कुशले निज घर आविया, सानिध श्री जिनचंद ॥ २४ ॥
पूज्य चउमासो सूरतइ, पहुंता वर्षा कालि।
संघ सकल हर्षित थयउ, फली मनोरथ मालि ॥ २५ ॥
वली चौमासो गुरु कीयउ, अहमदावादि रसाल।
अवर चौमासो पाटणे, कीधो मुनि भूपाल ॥ २६ ॥
अनुक्रमि आव्या खम्भपुरि, भेटण पास जिणंद।
संघ करइ आदर घणउ, करउ चउमासि मुणिद ॥ २७ ॥

राग धन्याश्री० ढालउलालानी

हिव विक्रमपुर ठाम, राजा रायसिंह नाम।
कर्मचन्द तसु परधान, साचउ बुद्धिनिधान ॥ २८ ॥
ओस महा वंश हीर, वच्छावत वड़ वीर।
दानइ करण समान, तेजि तपय जिम भाण ॥ २९ ॥

सुन्दर सकल सोभागी, खरतर गच्छ गुरु रागी ।
वड भागी वरवन्त, लघु वधव जसवन्त ॥ ३० ॥
श्रेणिक अभय कुमार, तासु तणइ अवतार ।
मुहतो मतिवन्त कहियइ, तसु गुण पार न लहियइ ॥ ३१ ॥
पिसुण तणइ परा फेर, मुको बीकम नयर ।
लाहोरि जइय उछाहि, सेव्यो श्री पातिशाह ॥ ३२ ॥
मोटउ भूपति अकबर, कउण करइ तसु सरभर ।
चिहु खण्ड वरतिय आण, सेवइ नर राय राण ॥ ३३ ॥
अरि गजण भजन सिंह, महीयलि जसु जस लीह ।
धरम करम गुण जाण, साचउ ▪ सुरताण ॥ ३४ ॥
बुद्धि महोदधि जाणी, श्रीजी निज मनि आणी ।
कर्मचन्द तेडीय पासि, राखइ मन उलासि ॥ ३५ ॥
मान महुत तसु दीधउ, मन्त्रि सिरोमणि कीधउ ।
कर्मचन्द शाहि सु प्रीत, चालइ उत्तम रीति ॥ ३६ ॥
मीर मलक खोजा खान, दीजइ राय राणा मान ।
मिलीया सकल दीवाणि, साहिब बोलइ सुरस वाणि ॥ ३७ ॥
मुहता काहि तुझ मर्म, देव कवण गुरू धर्म ।
भजइ मुझ मन भ्रन्ति, निज मनि करिय एकन्ति ॥ ३८ ॥

राग सोरठी दोहा ।

वलतउ मुहतउ विनवइ, सुणि साहब मुझ वात ।
देव दया पर जीव ने, ते अरिहंत विख्यात ॥ ३९ ॥

क्रोध मान माया तजी, नहीं जसु लोभ लगार ।
उपशम रस में झीलता, ते मुझ गुरु अणगार ॥ ४० ॥
शत्रु मित्र दोय सारिखा, दान शीयल तप भाव ।
जीव जतन जिहा कीजिय, धर्मह जाणि स्वभाव ॥ ४१ ॥
मइं जाण्या हइं वहुत गुरु, कुण' तेरउ गुरु पीर ।
मन्त्रि भणइ साहिब सुणउ, हम खरतर गुरु धीर ॥ ४२ ॥
जिनदत्त सूरि प्रगट हइ, श्री जिन कुशल मुणिन्द ।
तसु अनुक्रमि हइ सुगुण नर, श्रीजिनचन्द सुरिंद ॥ ४३ ॥
रूपइ मयण हरावित, निरुपम सुन्दर देह ।
सकल विद्यानिधि आगरु, गुण गण रयण सुगेह ॥ ४४ ॥
संभलि अकवर हरखियउ, कहा हइ ते गुरु आज ।
राजनगर छइं साम्प्रतइ, साभलि तुं महाराज ॥ ४५ ॥

राग धन्या श्री

वात सुणी ए पातिशाह, हरखियउ हीयइ अपार ।
हुकम कियो महुता भणी, तेडि गुरु लाय म वार ॥ ४६ ॥
मत वार लावइ सुगुरु तेडण, भेजि मेरा आदमी ।
अरदास इक साहिब आगइ, करइ मुहतउ सिर नमी ॥ ४७ ॥
अब धूप गाढि पाव चलिय, प्रवहण कुछ चडसे नहीं ।
गुजराति गुरु हइ डीलि गिरुआ, आवि न सकइ अवसही ॥४८॥
चलतउ कहइ मुहता भणी, तेडउ उसका सीस ।
दुइ जण गुरु नइ मुकीया, हित करी विश्वा वीस ॥ ४९ ॥
हितकरि मूंक्या वेगि दुइजण, मानसिंह इहा भेजीय ।
जिम शाहि अकवर तासु दरसणि, देखि नियमन रंजीय ॥५०॥

महिमराज वाचक साथ ठाणे, मुकीया लाहोर भणी ।
मुनि वेग पहुंता शाहि पासइ, देखि हरखिउ नरमणी ॥ ४७ ॥
साहि पूछइ वाचक प्रतइ, कब आवइ गुरु सोय ।
जिण दीठइ मन रंजीयइ, जास नमइ बहु लोय ॥
बहु लोय प्रणमइ जासु पयतलि, जगतगुरु छइ ओ घटा ।
तब शाहि अकबर सुगुरु तेडण, वेगि मुकइ मेवडा ॥
चउमासि नयडी अबही आवइ, चालवउ नवि गुरु तणउ ।
तब कहिइ अकबर सुणो मंत्री, लाभ थाअउ तसु घणउ ॥४८॥
पतशाहि जण आविया, सुह गुरु तेडण काजि ।
रजम फुरमान नवि करइ, गहगहीयउ गच्छराज ॥
गच्छराज दरसणि वेगि देखि, हूजि हियडइ हींस ए ।
अति हर्ष आणी साहि भणत, वार वार सलीम ए ॥
सुरताण श्रीजी मंत्रवीजी, लेख तुम्ह पठाविया ।
सिर नामी ते जण कहइ गुरु कु, शाहि मंत्री बोलाविया ॥४९॥
सुह गुरु कागल वाचिया, निज मन करइ विचार ।
हिव मुझ आवउ तिहा सही, संघ मिलिउ तिण वार ॥
तिणवार मिलियउ संघ सघलो, कहइ मन आलोच ए ।
चउमास आवी देश अलगउ, सुगुरु कहउ किम पहुंच ए ॥
समझावि श्रीसंघ खंभपुर थी, सुगुरु निज मन दृढ सही ।
मुनिसंग चाल्या शुद्ध नवमी, लाभ वर कारण लही ॥५०॥

राग सामेरी दूहा —

सुन्दर शकुन हुआ बहु, कता कहु तस नाम ।
मन मनोरथ जिण फलइ, सीझइ वंछित काम ॥५१॥

वदी वउलावी वलइ, हरखइ सव रसाल ।
भाग्यवली जिणचंद गुरु, जाणइ बाल गोपाल ॥५२॥
तेरसि पूज्य पधारिया, अमदाबाद मंझार ।
पइसारउ करि जस लीयउ, संघ मल्यो सुविचार ॥५३॥
हिव चउमासो आवियउ, किम हुइ साधु विहार ।
गुरु आलोचइ संघ सु, नावइ वात विचार ॥५४॥
तिण अवसरि फुरमाणि वलि, आव्या दोय अपार ।
वणुं २ मुहतइ लिख्यो, मत लावउ तिहां वार ॥५५॥
वर्षा कारण मत गिणउ, लोक तणउ अपवाद ।
निश्चय वहिला आवज्यो, जिम थाइ जसवाद ॥५६॥
गुरु कारण जाणी करी, होस्यइ लाभ असंख ।
संघ कहइ हिव जायवउ, कोय करउ मत कंख ॥५७॥

ढाल:गोडी (निंबीयानी) (आंकडी)

परम सोभागी सहगुरु वंदियइ, श्रीजिनचंद सूरिन्दो जी ।
मान दीयइ जस अकबर भूपति, चरण नमइ नरवृन्दो जी ॥५८॥
संघ वंदावी गुरुजी पागुरया, आया म्हेसाणे गामो जी ।
सिधपुर पहुंता खरतर गच्छ धणी, साह वनो तिण ठामो जी ॥
गुरु आडंबर पइसारो कियउ, खरचिउ गरथ अपारो जी ।
संघ पाटण नउ वेगि पधारियउ, गुरुवंदन अधिकारो जी ॥५९॥
पुज्य पाल्हण पुरि पहुंता शुभ दिनइ, संघ सकल उच्छाहो जी ।
संघ पाटण नउ गुरु वांदी वलिउ, लाहिण करिस्यइ लाहो जी ॥६०॥

महुर बधाउ आविउ मिनपुरि, हरखिउ सघ सुजाणो जी।
पाल्हणपुर श्रीपूज्य पधारिया, जाणिउ राव सुरताणो जी ॥६१॥५०
सत्र तडी न रावजी इम भणइ, आपु छु असवारो जी।
तहि आवउ वगि मुनिवर, मत लावउ तुम्ह वारो जी ॥६२॥
श्रीसघ राय जण पाल्हणपुरि जइ, तडी आवइ रगो जी।
गामागर पुर सुहगुरु विहरता, कहता धर्म सुचगो जी ॥६३॥

रागः देशाख ढाल (इकवीसा ढालियानी)

सीरोही र आवाजउ गुरु नो लही, नर नारी र आनद सान्हा उमही।
हरि कर रथ र पायक बहुला विस्तरइ,
फोणी(क) जिम र गुरु वदन सघ सचरइ ॥
सचरइ वर नीसाण नजा, मधुर मादल वज्ज ए।
पच शब्द बहरि सरा सुस्वर जाणि अबर गज्ज ए॥
भर भरइ भरी वलि नफेरी सुहव सिर धटकिज ए।
सुर असुर नर वर नारि किन्नर, दरिस दरसण रज ए ॥६४॥
वर सूहव र पूठि थकी गुण गावती, भरि थाली रे मुत्ताफल बधावती।
जय र स्वर र कवियण जण मुख उचरइ वर नयरी र माह इम गुरु सचरइ
सचरइ श्रावक साधु साधु, आदि जिन अभिनदिया।
सोवनगिरि श्रीसघ आवइ, उच्छव कर गुरु वदिया।
राय श्रीसुलतान आवी, वदि गुरु पय वीनवइ।
मुझ कृपा कीजइ वोल दीजइ, करउ पजुसण हिवइ ॥६५॥
र र जाणि र आग्रह राजा सघ नउ, पजुसण र करइ पूज्य सघ शुभ मनउ।
अठाही र पाली जीव दया खरी, जिनमदिर र पूजइ श्रावक हितकरी।

हितकारिय कहइ गुरु सुणउ नरपति, जीव हिंसा टालीयइ ॥
किण पर्व पूनिम दिद्ध मंड तुझ, अभय अविचल पालीयइ ।
गुरु संघ श्रीजावालपुर नइ वेगि पहुंता पारणइ ॥
अति उच्छव कियउ साह वन्नइ सुजस लीधो तिणि खिणइ ॥६६॥
मंत्री कर्मचन्द रे करि अरदास सुसाहिनइ ।
फुरमाणा रे मूंक्या दुइ जण पूज्य ने ॥
चउमासउ रे पूरउ करिय पधारजो ।
पण किण इक रे पछइ वार म लगाड़जो ।
म लगाड़िजो तिहा वार काइ, जहति जाणी अति धणी ॥
पारणइ पूज्य विहार कीधउ, जायवा लाहुर भणी ।
श्रीसंघ चउविह सुगुरु साथइ, पातिशाही जण वली ॥
गांधर्व भोजक भाट चारण मिला गुणियन मन रली ॥६७॥
हिव देछरे गाम सराणउ जाणियइ, समराणी रे खांडपरंगि वखाणियइ,
संघ आवी रे विक्रमपुर नो उमही ।
गुरु वंधारे महाजन मजलइ गहगही ॥
गहि गहीय लाहिण संघ कीवी नयर द्रुणाडइ गयो ।
श्रीसंघ जेसलमेरु नो तिहां वंदी गुरु हरखित थयो ।
रोहीठ नइरइ उच्छव बहु करि, पूज्य जी पधराविया ।
साह थिरइ मेरइ सुजस लाधा, दान बहु दवराविया ॥ ६८॥
संघ मोटउ रे, जोधपुरउ तिहां आवीयउ,
करि लाहिण रे शासनि शोभ चढ़ावियो ।
व्रत चोथौ रे, नांदी करी चिहुं उच्चर्यो ।

तिथि बारस र, मुक्‍तो ठाकुर जस वर्या ।
जस वर्या सघड नयर पाली, आडबर गुरु मंडियउ ।
पूज्य चादिया तिहा वादि माडी, मानि दालिद्र खडियउ ।
लाधिया आमइ लाभ जाणो, सूरि सोक्षित निरखिया ।
जिनराज मंदिर दस्सो सुन्दर, वनि श्रावक हरखिया ॥ ६६ ॥
नीलाडइ र, आनन्द पूज्य पधारीए ।
पइसारउ र, प्रगट फीरउ कट्टारीए ।
जइतारणि र, आव याजा वाजिया ।
गुरु वन्दी र, दान वलइ सघ गाजिया ॥
गाजियउ जिनचद्रसूरि गच्छपति, वीर शासनि ए वडो ।
कलिकाल गोतम स्वामि समवड़, नहीय को ए जेवडउ ।
विहरता मुनिवर वगि आव , नयर मोटइ मडतइ ।
परसरइ आया नयर वर, कहइ सघ मुहता प्रतइ ॥ ७० ॥

॥ राग गोडी धन्या श्री ॥

कर्मचन्द्र कुल सागर, उदया सुत दोय चन्द ।
भागचन्द मनोसर, बाधव लिखमीचन्द ।
हय गय रह पायक, मली बहु जन वृन्द ।
करि सबल दिवाजउ, वदइ श्री जिनचन्द ॥ ७१ ॥
पच शब्दउ झल्लरि, वाजइ ढोल नीसाण ।
भवियण जण गावइ, गुरु गुण मधुरि वाण ।
तिहा मिलीयो महाजन, दीजइ फोफल दान ।
सुन्दरी सुकलीणी, सूहव करइ गुण गान ॥ ७२ ॥

गज डम्बर सबलड, पूज्य पधार्या जाम ।
मन्त्री लाहिण कीधी, खरची बहुला दाम ।
याचक जन पोष्या, जग मे राख्यो नाम ।
धन धन ते मानव, करइ जउ उत्तम काम ॥ ७३ ॥
व्रत नन्दि महोत्सव, लाभ अधिक तिण ठाण ।
ततखिण पातशाहि, आव्या ले फुरमाण ।
चाल्या संघ साथइ, पहुता फलवधि ठाणि ।
श्री पास जिणेसर, वंद्या त्रिभुवन भाणि ॥ ७४ ॥
हिव नगर नागोरड रइं आया श्री गच्छराज ।
वाजित्र बहु हय गय मेली श्री सङ्घ साज ।
आवि पद वंदी करइ हम उत्तम आज ।
जउ पूज्य पधार्या तउ सरिया सब काज ॥७५॥
मन्त्रीसर वादइ मेहड मन नइ रङ्ग ।
पइसारो सारउ कीधो अति उच्छरङ्ग ।
गुरु दरसण देखि वधियो हर्ष कलोल ।
महीयलि जस व्यापिउ आपिउ वर तंबोल ॥७६॥
गुरु आगम ततखिण प्रगटियो पुन्य पडूर ।
संघ बीकानेरउ आविउ संघ सनूर ।
त्रिणसइं सिजवाला प्रवहण सइं वलि च्यार ।
धन खरचइ भवियण, भावइ वर नर नारि ॥७७॥
अनुक्रम पड़िहारइ, राजुलदेसर गामि ।
रस रंग रीणीपुर, पहुंता खरतर स्वामि ।

सघ उच्छव हुइ आडबर अभिराम ।
सघ आवियो वदण, महिम तणउ तिण ठाम ॥७८॥
खरची धन अरची श्री जिनराय विहार ।
गुरु वाणि सुणि चित्त हरखिउ सघ अपार ।
सघ वदी वलीयउ, पहुतउ महिम मझार ।
पाटणमरसइ वलि, कस्तूर हुयउ जयकार ॥७९॥
लाहुर महाजन वदन गुरु सुजगीस ।
मनसुख ते आविउ चाली कोस चालीस ।
आया हापाणइ श्रीजिनचन्द सूरीश ।
नर नारी पयतलि सेव करइ निसदीस ॥८०॥

राग गौडी दूहा:—

वेगि वधाउ आवियउ, कीयउ मत्रीसर जाण ।
क्रम २ पूज्य पधारिया, हापाणइ अहिठाण ॥८१॥
दीधी रसना हेम नी, कर कङ्कण कंकाण ।
दानिइ गालिद खुसियउ, तासु दीयउ बहुमान ॥८२॥
पूज्य पधाया जाण करि, मेली सब सघात ।
पहुता श्री गुरु वादिवा, सफल करइ निज आथ ॥८३॥
वडो डेरइ आण करि, कहइ साह नइ मन्त्रीस ।
जे तुम्ह सुगुरु बोलाविया ते आव्या सुरीस ॥८४॥
अकबर वलतो इम भणइ, तेडउ ते गणधार ।
दरसण तसु कउ चाहिये, जिम हुइ हरख अपार ॥८५॥

राग गौड़ी वाल्हूडानीः-

पंडित मोटा साथ मुनिवर जयसोम,
कनकसोम विद्या वरू ए।
महिमराज रत्ननिधान वाचक,
गुणविनय समयसुन्दर शोभा धरू ए ॥८६॥
इम मुनिवर इकतीस गुरु जी परिवर्या,
ज्ञान क्रिया गुण शोभता ए।
संघ चतुर्विध साथ याचक गुणी जण,
जय जय वाणी बोलता ए ॥८७॥
पहुंता गुरु दीवाण देखी अकबर,
आवइ साम्हा उमही ए।
वंदी गुरु ना पाय माहि पधारिया,
सइंहथि गुरु नौ कर ग्रही ए ॥८८॥
पहुंता दउढ़ी माहि, सुहगुरु साह जो
धरमवात रंगे करइ ए।
चिते श्रीजी देखी ए गुरु सेवता,
पाप ताप दूरइ हरइ ए ॥८९॥
गच्छपति द्ये उपदेश, अकबर आगलि
मधुर स्वर वाणी करी ए।
जे नर मारइ जीव ते दुख दुरगति,
पामइ पातक आचरी ए ॥९०॥

बोलइ वृद्ध वहुत त नर मध्यम,
इण परभवि दुख लहइ ए।
चोरी करम चण्डाल चिहु गति रोलवइ,
परम पुरुष इम कहइ ए ॥६१॥
पर रमणि रस रंगि सेवइ जे नर,
दुरगति दुख पावइ वही ए।
लोभ लगी दुखहोय जाणउ भूपति,
सुख संतोष हवइ सही ए ॥६२॥
पचइ आश्रव ए तजे नर सवरइ,
भवसायर हेला तरइ ए।
पामइ सुख अनन्त नर वइ सुरपद,
कुमारपाल तणी परइ ए ॥६३॥
इम सांभलि गुरु वाणि रंजिउ नरपति,
श्री गुरु न आदर करइ ए।
धण कञ्चन वर कोडि कापड बहु परि,
गुरु आगइ अकबर धरइ ए ॥६४॥
लिउ हुक इहु तुम्ह सामि जा कुछ चाहिये,
सुगुरु कहइ हम क्या करा ए।
देखि गुरु निरलोभ रंजिउ अकबर,
बोलइ ए गुरु अणुसरा ए ॥६५॥
श्रीपुज्य श्रीजी दोय आ या बाहिरि,
सुणउ दिवाणी काजीयो ए।

धरम धुरंधर धीर गिरुओ गुणनिधि,
जैन धर्म को राजीयो ग ॥६६॥

॥ राग धन्याश्री ॥

सफल ऋद्धि धन संपदा, कायम हम दिन आज।
गुरु देखी माहि हरखियो, जिम केकी घन गाज ॥६७॥
घणी भुई चाली करि, आया अब हम पासि।
पहुंचो तुम निज थानकै, संघमनि पूरी आस ॥६८॥
वाजित्र हयगय अम्ह तणा, मुंहना ले परिवार।
पूज्य उपासरइ पहुंचवउ, करि आडम्बर सार ॥६६॥
वलतउ गुरुजी इम भणइ, सांभलि तूं महाराय।
हम दीवाज क्या करा, साचउ पुन्य सखाय ॥१००॥
आग्रह अति अकबर करी, म्हेलइ सवि परिवार।
उच्छव अधिक उपासरइ, आवइ गुरु सुविचार ॥१०१॥

राग आशावरीः

हय गय पायक बहुपरि आगइ, वाजइ गुहिर निसाण।
धवल मंगल धइ सूहव रंगइ, मिलीया नर राय राण ॥२॥
भाव धरीने भवियण भेटउ, श्रीजिनचन्दसूरिन्द।
मन सुधि मानित साहि अकबर, प्रणमइ जास नरिन्द रे ॥भ०॥आ॥
श्री सङ्घ चउविह सुगुरु साथइ, मंत्रीश्वर कर्मचन्द।
पइसारो शाह परबत कीधउ, आणिमन आणंद रे ॥ ३ । भाव० ॥
उच्छव अधिक उपाश्रय आव्या, श्री गुरु द्यइ उपदेश।
अमीय समाणि वाणि सुणंता, भाजइ सयल किलेस रे ॥४॥भा०॥

भरि मुगताफल थाल मनोहर, सद्दव सुगुरु वधावइ ।
याचक हर्षइ गुरु गुण गाता, दान मान तन पावइ रे ॥५॥ भा०
फागुण सुदि बारस दिन पहुता, लाहुर नयर मझारि ।
मनवछित महुरत फलीया, वरत्या जय जयकार रे ॥६॥भा०॥
दिन प्रति श्रीजी सु वलि मिलता, वाधिउ अधिक सनेह।
गुरु नी सूरति दरिसण अकबर, कहइ जग धन धन एह रे ॥७॥ भा०
नइ क्रोधी ए लोभी कूडे, के मनि धरइ गुमान ।
षट् दरशन मइ नयण निहाले, नहीं कोइ एह समान रे ॥८॥भा०
हुकम कीयउ गुरु कु ताहि अकबर, दउढी महुल पधारउ ।
श्री जिनधर्म सुणावी मुझ कु, दुरमति दूरइ वारउ रे ॥९॥भा०
धरम वात (र) गइ नित करता, रजिउ श्री पातिसाहि ।
लाभ अधिक हु तुम कु आपीस, सुणि मनि हुयउ उच्छाहि रे ॥१०॥

राग' धन्याश्री । ढाल: सुणि सुणि जबू नी

अन्य दिवस वलि निज उलट भरइ, महुरस ऐकस गुरु आग धरइ।
इम धरइ श्री गुरु आगलि तिहाँ अकबर भूपति ।
गुरुराज जपइ सुणउ नरवर नवि ग्रहइ ए धन जति ।
ए वाणि सम्भलि शाहि हरख्यो, धन्य धन ए मुनिवरू ।
निरलोभ निरमम मोह वरजित रूपि रजित नरवरू ॥११॥
तत ते आपिउ धन मुहताभणी, धरम सुथानिक खरचउ ए गणी ।
ए गणीय खरचउ पुन्य सचउ कीयउ हुकम मुहता भणी ।
धरम ठामि नीधउ सुजस लीधउ वधी महिमा जग घणी ।

इम चैत्री पूनम दिवस सातिक, साहि हुकम मुंहनइ कीयउ।
जिनराज जिनचंदसूरि वंदी, दान याचक नइ दीयउ ॥ १२॥
सज करी सेना देस साधन भणी,
कास्मीर ऊपर चढ़ीयउ नर मणी।
गुरु भणीय आग्रह करीय तेड़या, मानसिह मुनि परवर्या।
संचर्या साथइ राय रांणा, उम्बरा ते गुणभर्या ॥
वलि मीर मिलक बहु खान खोज, साथि कर्मचन्द मंत्रवी।
सब सेन वाटइं वहइ सुत्रधइ, न्याय चलवइ सूत्रवी ॥ १३ ॥
श्री गुरु वाणि श्रीजी नितु सुणइ,
धर्म मूर्ति ए धन धन सुह भणइ ।
शुभ दिनइ रिपु बल हेलि भंजी, नयर श्रीपुरि ऊतरी।
अम्मारि तिहा दिन आठ पाली देश साधी जयवरी।
आवियउ भूपति नयर लाहुर, गुहिर वाजा वाजिया ।
गच्छराज जिनचंदसूरि देखी, दुख दूरइ भाजीया ॥ १४ ॥
जिनचन्दसूरि गुरु श्रीजी सुं आवि मिली,
एकान्तइ गुण गोठि करइ रली ।
गुण गोठि करता चित्त धरता सुणिवि जिनदत्तसूरि चरी।
हरखियउ अकवर सुगुरु उपरि प्रथम सइं मुख हितकरी।
जुगप्रधान पदवी दिद्ध गुरु कुं, विविध वाजा वाजिया।
वहु दान मानइ गुणह गानइ, संघ सवि मन गाजिया ॥ १५ ॥
गच्छपति प्रति बहु भूपति वीनवइ ।
सुणि अरदास हमारी तुं हिवइ ॥

अभिराम प्रभु अवधारि मंत्री, मंत्रि श्रीजो फरइ वली।
महिमराज न प्रभु पाटिथाप, गइ मुझ मन रङ्ग रली ॥
गुणनिधि रत्ननिधान गणिनइ, सुपद पाठक आपीयइ।
शुभ ध्यान वेला दिवस लेइ, यति इनकु थापिनइ ॥ १६ ॥
नरपति वाणी श्रीगुरु साभली,
फइइ मई मानी थानज ए भली ।
ए थान मानी सुगुरु वाणी, लगन सोभन आमरइ।
माहिरा उच्छव मंत्रि कर्मचन्द, मंलि महाजन बहुरई ॥
फागुन मास शुदि बीज थापिउ, सिंह सम मन भाविया ।
जिनसिंह सूरि सुगुरु थाप्या, सूरि रंग वधाविया ॥ १७ ॥
आचारज पद श्री गुरु आपिउ,
संघ चतुर्विध सानंद थापियउ ।
व्यापीउ निरमल सुजस महीयलि, सयल श्रीसंघ सुखकरू ।
चिरकाल जिनचन्द्रसूरि जिनसिंह, सपउ जिणि जगि दिनकरू ॥
जयसोम रत्ननिधान पाठ (क), दोय वाचक थापिया ।
गुणविनय सुन्दर, समयसुन्दर, सुगुरु तसु पद आपीया ॥ १८ ॥
धप मप धा धों मादल वाजिया,
तत्र तसु नादइ अम्बर गाजिया ।
वाजिया नाद कमाल तिवली, भरि वीणा भृगली।
अति हर्ष माचइ पात्र नाचइ, भगति भामिनी सवि मिली ।
मोतीया थाल भरवि उलटि, वार वार वधावती ।
इक रास भास उलासि दता, मधुर स्वर गुण गावती ॥ १६ ॥

कर्मचन्द परगट पद ठवणो कीयो,
संघ भगति करि सयण संतोपीयउ।
संतोपिया जाचक दान देइ, किद्ध कोडि पसाउ ग।
संग्राम मंत्री तणउ नन्दन, करइ निज मनि भाउ ग ॥
नव ग्राम गडंवर दिद्ध अनुक्रमि, रंग धरि मन्त्री वली।
मागता अश्व प्रधान आप्या, पाचसइ ते सवि मिली ॥ २० ॥
इण परि लाहुरि उच्छव अति घणा,
कीधा श्री संघ रंगि वधावणा ।
इम चोपडा शाखश्रृङ्गार गुणनिधि, साह चापा कुल तिलउ।
धन मात चापल देइ कहीय, जासु नन्दन गुण निलउ ॥
द्विधि वेद रस शशि मास फागुन, शुक्ल बीज सोहामणी।
थापी श्री जिनसिंह सूरि, गुरुयउ संघ वधामणी ॥ २१ ॥

राग धन्याश्री

ढाल (जीरावल मण्डण सामो लहिस जी)

अविहड़ि लाहुरि नयर वधामणाजी, वाज्या गुहिर निसाण।
पुरि पुरि जी (२) मंत्री वधाऊ मोकल्याजी ॥ २२ ॥
हर्ष धरी श्रीजी श्रीगुरु भणी जो, वगसइ दिवस सुसात।
वरतइ जी (२) आण हमारी, जां लगइ जी ॥ २३ ॥
मास असाढ़ अठाइ पालवो जी, आदर अधिक अमारी।
सघलइ जी (२) लिखि फुरमाण सु पाठवीजो ॥ २४ ॥
वरस दिवस, लगि जलचर मूकियाजी, खंभनगर अहिठाणि।
गुरु नइ जी (२) श्रीजी लाभ दीयउ घणउजी ॥ २५ ॥

घड आमीम दुनी महि मटल्ब०जी, प्रतिपड कोडि वरीम।
ए गुरुजो (?) जिण जगिजीव छुडाविया जो ॥२६॥

राग—धन्याश्री।

ढाल — (कनक कमल पगला ठवइ ए)

प्रगट प्रतापी परगडो ए, सूरि वडो जिणचन्द।
कुमति सवि दूर टल्या ए, सुन्दर सोहग कन्द ॥ २७ ॥

सदा सुहगुर नमोए, जइ अकबर जसु मान। स०। आंकणी।
जिनदत्तसूरि जग जागता ए, गच्छ सानिधकार। स०।
श्रीजिनकुशल सूरीश्वरू ए, वंछित फल दातार ॥स०॥ २८॥

गोहड वंशइ चंदलउ ए, श्रीवन्त शाह मल्हार। स०।
सिरीयादे उरि हंसलउ ए, माणिक्यसूरि पटधार ॥स०॥ २६॥

गुरु न लाभ हूया घणा ए, होस्यइ अवर अनन्त। स०।
धरम महानिधि विस्तरइ ए, जिहां विहरइ गुणवंत॥ स०॥३०॥

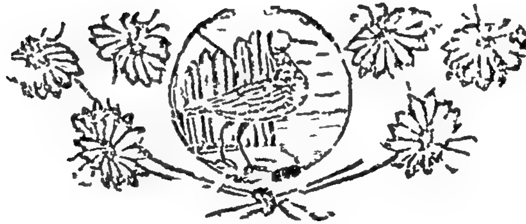
अकबर ममनदि राजीयउ ए, अवर न कोइ जाण।स०।
गच्छपति माहि गुणनिलउ ए, सूरि वडउ सुरताण ॥ स०॥३१॥

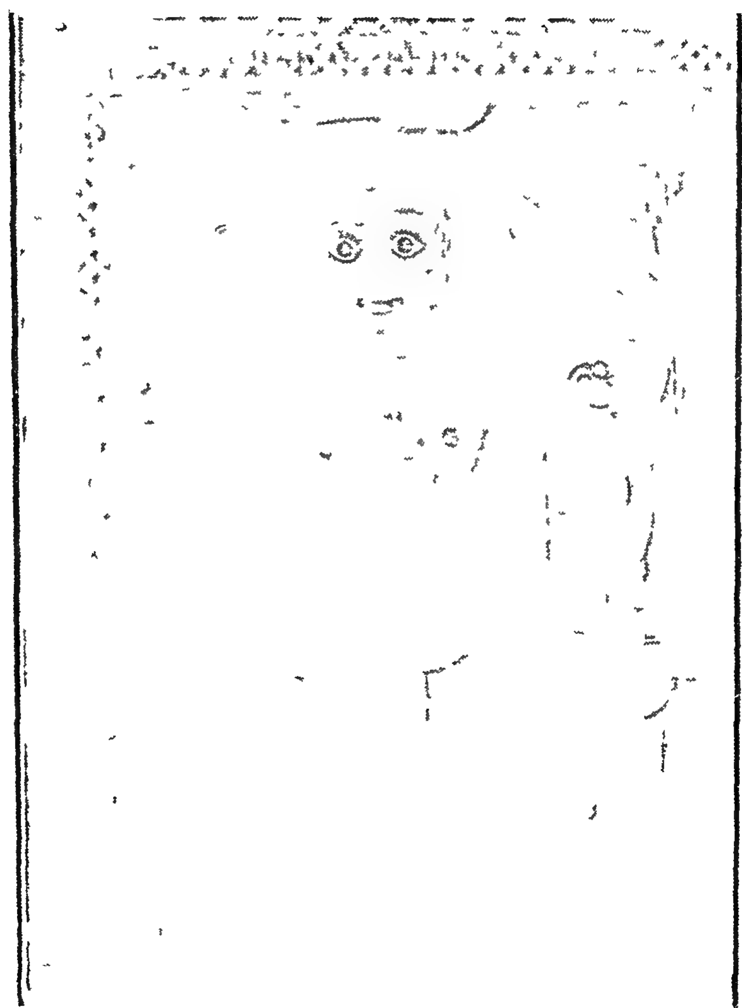
कवियण कहइ गुण केतलाए, जसु गुण मस न पार। स०।
चिरजीवउ गुरु नरवरू ए, जिन शासन आधार ॥स०॥३२॥

जिहां लगी महीयलि सुर गिरी ए, गयण तपइ शशि सूर।स०।
जिनचन्द्र सूरि तिहां लगइ, प्रतपउ पूण्य पडूर ॥३३॥स०॥

तसु युग रस शशि वच्छरइ ए, जेठ वदि तेरस जाणि ।स०।
शांति जिनेसर सानिधइ ए, रास चढ़िउ परमाणि ॥३४॥स०॥
आग्रह अति श्री संघ नइ ए, अहमदाबाद मंझारि ।स०।
रास रच्यो रलियामणउ ए, भवियण जण सुखकार ॥३५॥स०॥
पढइ गु(सु)णइ गुरु गुण रसी ए, पूजइ तास जगीस ।स०।
कर जोड़ी कवियण कहइ, विमल रंग मुनि सीस ॥३६॥स०॥

इति श्री युगप्रधान जिनचन्द्र सूरीश्वर रास समाप्ता मिति। लिखितं लब्धिकल्लोल मुनिभिः श्री स्तम्भ तीर्थे, पं० लक्ष्मीप्रमोद मुनि वाच्यमानं चिरं नंद्यात् यावचन्द्र दिवाकरौ। श्रीरस्तु।





युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजीकी मूर्त्ति

(बीकानेरके ऋषभ जिनालयमें
सं० १६८६ प्रतिष्ठित मूर्त्ति)

* कवि समयप्रमोद कृत *

॥ श्रीयुगप्रधान निर्वाण रास ॥



दोहा राग (आसावरी)

गुणनिधान गुरु[1] पाय नमि, वाग वाणि अनुसार (आधारि)।
युगप्रधान निर्वाण नी, महिमा कहिसु विचार ॥ १ ॥
युगप्रधान जंगम यति, गिरुआ गुणे गम्भीर।
श्री जिनचन्द सुरिन्दवर, धुरि धोरी ध्रम धीर ॥ २ ॥
संवत पनर पचाणूयइ रीहड कुलि अवतार।
श्रीवन्त सिरिया दे घरइ,[2] सुत सुलताण कुमार ॥ ३ ॥
संवत सोल चडोत्तरइ, श्री जिनमाणिक सूरि।
सइ हथि संयम आदर्युं, मोटइ महत पडूरि ॥ ४ ॥
महिपति जेसलमेर नइ, थाप्या रावल माल।
संवत सोल बारोत्तरइ, शत्रु तणइ सिर साल ॥ ५ ॥

ढाल (१) राग जयतसिरि

(करजोडी आगल रही एहनी ढाल)

आज बधावौ संघ मइ, दिन दिन चढत[4] वानइ रे।
पूज्य प्रताप वाधइ[3] घणौ, दुश्मन कीधा कानइ रे ॥६॥ आ०

१ गौतम २ देषीनइ ३ बाधइ ४ चढत

सुविहित पद उजवालियउ, पूज्य परिहरइ परिग्रह माया रे ।
उग्र विहारइ विहरता, पूज्य गुर्जर खंडइ आया रे ॥ ७ ॥

रिपिमतीया सुं तिहा थयउ, अति झूठी पोथी वादो रे ।
पुज्य वखत वल कुमतियां, परगट गाल्यउ नादो रे ॥८॥ आ०॥
पूज्य तणी महिमा सुणी, सन्मान्या अकवर शाहइ रे ।
युगप्रधान पद आपियउ, सह लाहउर उच्छाहइ रे ॥९॥ आ०॥
कोड़ि सवा धन खरचियउ, मंत्रि कर्मचन्द्रजी भूपालइ रे ।
आचारिज पद तिहां थयउ, संवत सोल अड़तालइ[1] रे ॥१०॥आ०॥
संवत सोलसइ बावनइ, पुज्य पंच नदी (सिन्धु) साधी रे ।
जित कासो जय पामियउ, करि गोतम ज्युं सिधि वाधी रे ।११।आ०।
राजा राणा मंडली, एतउ आइ नमे निज भावइ रे ।
श्रीजिनचंदसूरिसरु, पुज्य सुशब्द नित २ पावइ रे ॥१२॥आ०॥
संइ[2] हथि करि जे दीखिया, पूज्य शीश तणा परिवारो रे ।
ते आगम नइ अर्थे भर्या, मोटी पदवीधर[3] सुविचारो रे ।१३।आ०
जोगी, सोम, शिवा समा, पूज्य कोधा संघवी साचा रे ।
ए अवदात सुगुरु तणा, जाणि माणिक हीरा जाचा रे ।१४॥आ०।

१ इस रासकी ३ प्रतियें हमारे पास है जिनमें ऐसा ही लिखा है। मुद्रित, "गणधर सार्ध शतक" में भी इसी प्रकार है। किन्तु पट्टावलि आदि में सर्वत्र सं० १६४९ ही लिखा है।

२ आप तणइ ३ वलि

॥ दोहा सोरठो ॥

महा मुणीश्वर मुकुट मणि, दरसणिया दीवाण।
च्यारि असी गच्छि सेहरो, शासण नउ सुरताण ॥१५॥
अतिशय आगर आदि लगि, झूठ कहुं तउ नेम।
जिम अकबर सनमानिउ, तिम वलि शाहि सलेम ॥१६॥

ढाल (जतनी)

पातिसाहि सलेम सकोप, कियउ दरसणिया सु कोप।
ए कामगगारा कामो, दरबार थो दूरि हरामो ॥१७॥
एकन कु पाग बधावउ, एकन कु नाम अगावउ।
एकन कु दशकटो जगल दीजे, एकन कु पखालो फो कइ ॥१८॥
इम शाहि हुकुम सामलिया, तसु कोप (कउप) थका सळभलिया।
जनमान मिलो सयतना, दरहाल करइ गुरु जतना ॥१९॥
क नासि होइ पूठि पडोया, कइ मइनासइ जइ चडीया।
कइ जगल जाइ बइठा, कइ दोडि गुफा मांहि (माइ) पइठा ॥२०॥
जे नासत यवने झाल्या, त आणि भारसो घाल्या।
पाणी ने अनन पाल्या, वयरीडा वयर सु साल्या ॥२१॥
इम साभलि शासन होला, जिणवर सुरोश सुशीला।
गुजराति धरा थी पधारइ, जिन शासन वान वधारइ ॥२२॥
अति आसति वलि गुरु चालो, अपुरा भय दूरइ पालो।
उग्रसेनपुर पउधारइ, पुन्य शाहि तणइ दरबारइ ॥२३॥

४ कथु १ का २ हिंदु

पुज्य देखि दीवारइं मिलिया, पातिशाह तणा कोप गलीया।
गुजराति धरा क्युं आए, पातिशाहि गुरु वतलाए ॥२४॥
पातिशाहि कुं देण आशीश, हम आए शाहि जगीश।
काहे पाया दुःख शरीर, जाओ जउख करउ गुरु पीर ॥२५॥
एक शाहि हुकुम जउ पावां, वंदियड़ा वंदि[1] छुड़ावां।
पतिशाहि खयरात करीजइं, दरशणियां पूरु (दूवउ) दीजइं ॥ २६ ॥
पतिशाहि हुंतउ जे जूठउ, पूज्यभाग वलइ अति तूठउ।
जाउ विचरउ देश हमारे, तुम्ह फिरता कोइ न वारइ ॥ २७ ॥
धन धन खरतरगच्छ राया, दर्शनिया दण्ड[2] छुडाया।
पूज्य सुयश करि जगि छाया, फिरि सहरि मेडतइ[5] आया ॥२८॥

दूहा (धन्यासिरि)

श्रावक श्राविका[3] वहु परइ, भगति करइ सविशेष।
आण वहै गुरुराज नी, गौतम समवड़ देखि ॥ २९ ॥
धरमाचारिज धर्म गुरु, धरम तणउ आधार।
हिव चउमासउ जिहा करइ, ते निसुणौ सुविचार ॥ ३० ॥

ढाल (राग--धवल धन्यासिरी, चिन्तामणि पासपूजियै)

देश मंडोवर दीपतउ, तिहा बीलाड़ा नामौ रे।
नगर वसै विवहारिया, सुख संपद अभिरामौ रे ॥३१॥ दे० ॥
धोरी धवल जिसा[4] तिहां, खरतर संघ प्रधानो रे।
कुल दीपक कटारिया, जिहां घरि वहु धन धानो रे ॥३२॥दे०॥

१ बंध, २ दंद, ३ श्रावी, ४ जिहाँ रहै, ५ सहुरमतइ।

पच मिली आलोचिया, इहा पूज्य करै चौमासा रे।
जन्म जीवित सफलउ हुवइ, सयणा पूजइ च्यासो र ॥३३॥द०॥
इम मिली सघ तिहा थकी, आवइ पुज्य दिदारइ रे।
महिमा वधारइ मेड़ते, पूज्य वन्दी जन्म समारइ र ॥३४॥दे०॥
युगवर गुरु पउधारीयइ, सघ करइ अरदासो र।
नयर निलाडइ रग सु, पूज्यजो करउ चौमासो र ॥३५॥दे०॥
इम सुणि पूज्य पधारिया, निलाडइ रगरोल र।
सघ महोत्सव माडियउ, दीजै तुरत तबोल रे ॥ ३६ ॥ द० ॥

दोहा (राग गोडी)

पूज्य चउमासो आवियउ[१], श्री सघ हर्ष उत्साह।
विविध करइ परभावना, ल्ये लक्ष्मी नौ[२] लाह ॥ ३७ ॥
पूज्य दियइ नित्य देशना, श्रोसत्र सुणइ वखाण।
पासो पोसहिता जिमइ, धन जीवित सुप्रमाण ॥ ३८ ॥
विधि सु तप सिद्धान्त ना, साधु वहइ उपधान।
पूज्य पजूसण पडिक्कमै, जगम युगहप्रधान ॥ ३९ ॥
सवत सोलेसित्तरइ, आसू मास उदार।
सुर सपद सुह गुरु वरी, ते कहिसु अधिकार ॥ ४० ॥

(ढाल भावना री चदलियानी)

नाणे (नइ) निहालइ हो पूज्य जो आउखउ र, तेडी सघ प्रधान।
जुगवर आपे हो रूडी मोखडी र, सुणिज्यो "पुण्य प्रधान" ॥४१॥ना०॥

१ गहउ, २ रो

गुरु कुल वासे हो वसिज्यो चेलडा रे, मत लोपउ गुरु कार।
सार अनइ वलि संयम पालिज्यो रे, सूधो साधु आचार ॥४२॥ना०॥
संघ सहु नै धर्मलाभ कागलइ रे, लिखिज्यो देश विदेश।
गच्छ धुरा जिनसिंहसूरि निर्वाहिस्यै रे, करिज्यो तसु आदेश ॥४३॥ना०॥
साधु भणी इम सीख दे पूज्यजी रे, अरिहन्त सिद्ध सुसाखि।
संमुख अणसण पूज्य जो उचरइ रे, आसू पहिले पाखि ॥४४॥ना०॥
जीव चउरासि लख (राशि) खामिनै रे, कञ्चन तृण सम निन्द।
ममता नै वलि माया मोसउ परिहरी रे, इम निज पाप निकंद ॥४५॥ना०॥
वयर कुमार जिम अणसण उजलउ रे, पाली पहुर चियार।
सुख ने समाधे ध्यानै धरम नइ रे, पहुंचइ सरग मझार ॥४६॥ना०॥
इन्द्र तणो तिहा अपछर ओलगइ रे, सेव करइ सुर वृन्द।
साधु तणउ धर्म सूधौ पालियौ रे, तिण फलिया ते आणंद ॥४७॥ना०॥

दोहा (राग गौड़ी)

गंगोदक पावन जलइ, पूज्य पखाली अंग।
चोवा चन्दन अरगजा, संघ लगावइ रंग ॥ ४८ ॥
बाजा बाजइ जन मिलइ, पार विहूणा पात्र।
सुर नर आवै देखवा, पूज्य तणउ शुभ गात्र ॥४९॥
वेश बणावी साधु नउ, धूपि सयल शरीर।
बैसाड़ी पालखियइ, उपरि बहुत अबीर ॥ ५० ॥

ढाल राग–गउड़ो (श्रेणिक मनि अचरिज थयउ एहनी)

हाहाकार जगत्र हुयउ, मोटो पुरुष असमानो रे।
बड़ वखती विश्रामियउ, दीवइ जिउं बूझाणउ रे ॥ ५१ ॥

पुज्य पुज्य मुखि उचरइ, नयणि नीर नवि मायइ रे।
सद्गुरु सो(?सा)लइ सांभरइ, हियडु तिल तिल थायइ रे ॥५२॥पूज्य०॥
संघ साधु इम विलविलइ, हा! खरतर गच्छि चन्द रे।
हा! जिणशासण मामिया, हा! परताप दिगंदउ रे ॥५३॥पूज्य०॥
हा! सुन्दर सुख सागर, हा! मोहिम भंडारउ रे।
हा! रीहड कुल सेहरउ, हा! गिरुआ गणधारउ रे ॥५४॥पूज्य०॥
हा! मरजाद महोदधि, हा! शरणागत पाल रे।
हा! धरणीधर धीरमा, हा! नरपति सम भाल रे ॥५५॥पूज्य०॥
चहु वन सोहइ भूमिका, बाणगंगा नइ तीर रे।
आरोगी किसणागरइ, वाजइ सुरभि समीर रे ॥ पू० ५६ ॥
बावन्ना चंदन ठनो, सुरहा तल नी धार रे।
घृत वैश्वानर तर पिनइ, कीधउ तनु सस्कार रे ॥ पू०॥५७॥
वैश्वानर पेहनउ सगउ, पणि अतिसय संयोग।
ननि दाझी पुज्य मुहपत्ति, देखइ सघला लोग रे ॥ पू०॥५८॥
पुरुष रत्न विरहइ करी, साधि मरवउ न थावइ रे।
शान्तिनाथ समरण करी, संघ सहु घर आवइ रे ॥ पू०॥५९॥

राग—धन्यासिरी

(सुविचारी हो प्राणी निज मन थिर करि जोय)

ढाल.—

सुविचारी हो पूज्यजी, तुम्ह विनु घडी र ठ मास।
दरसण दिखाडउ आपणउ हो, सेवक पूजइ आस ॥६०॥ सुवि०

एकरसउ पउधारियइ हो, दीजइ दरसण रसाल ।
संघ उमाहु अति घणउ हो, वंदन चरण त्रिकाल ॥६१॥ सुवि०
वाल्हेसर रलियामणा हो, जे जगि साचा मीत ।
तिण थी पागरउ पूज्यजी रे, मो मनि ग परतीत ॥६२॥ सुवि०
इणि भवि भवे भवान्तरइ हो, तुं साहिब सिरताज ।
मातु पिता तुं देवता हो, तुं गिरूआ गच्छराज ॥६३॥ सुवि०
पूज्य चरण नित चरचता हो, वन्छत वंछित जोड ।
अलिअ विघन अलगा टरइ हो, पगि २ संपत होइ ॥६४॥ सुवि०
शांतिनाथ सुपसाउलइ हो, जिनदत्त कुशल सूरिन्द ।
तिम जुगवर गुरु सानिधइ हो, संघ सयल आणंद ॥६५॥ सुवि०
मीठा गुण श्रीपूज्य ना हो, जेहवी साकर द्राख ।
रंचक कूड़ इहा त(न?)ही हो, चन्दा सूरिज साख ॥६६॥ सुवि०
तासु पाटि महिमागरु हो, सोहग सुरतरु कन्द ।
सूर्य जेम चढती कला हो, श्री जिनसिंह सुरींद ॥६७॥ सुवि०
हो युगवर, नामइ जय जय कार ।
वंश वधावइ चोपड़ा हो, दिन दिन अधिकउ वान ।
पाटोधर पुहवी तिलउ हो, चिर नन्दउ श्रीमान् ॥६८॥ सुवि०
युगवर गुरु गुण गांवतां हो, नव नव रंग विनोद ।
एहनुं[1] आस्या फलइ हो, जंपइ "समयप्रमोद" ॥६९॥ सुवि०

॥ इति युगप्रधान जिनचन्द सूरि निर्वाणमिदं ॥

१ दूसरी हस्तलिखित प्रतिमें ऐहई है ।

॥ युगप्रधान आलजा गीतम् ॥



आसू मास वलि आवीयउ, पूज्यजी, आयउ दीवाली पर्व पू० ।
कातो चउमासो आवीयउ, पू० आया अवसर सर्व ॥१॥
तुम्हे आवो र नियाद का नदन, तुमे तिनु घडिय न जाय पू०।
तुम्हे तिन अल्गो जाय पूज्य० ॥ तुम्हे० ॥
शाहि सलेम वली उंबरा, पू० सभारइ सहु कोइ ।
धर्म सुणावउ आविनइ पू०, जीव दया लाभ होइ ॥तु०॥२॥
श्रावक आना वादिवा पू०, ओसवाल नइ श्रीमाल ।
दरसण द्यउ इक वार कउ, पू० वाणि सुणावउ विशाल ॥तु०॥३॥
वाजउठ माडयउ वैसणउ, पू० कमली माडी सुवाट ।
वखाण नी वेला थइ पू०, श्रीसघ जोयइ वाट ॥पू०॥तु०॥४॥
श्राविका मिलि आवो सहु, पू० वादण ध कर जोड ।
वदानी धर्मलाभ द्यो पू०, जिम पहुचइ मन कोडि ॥पू०॥तु०॥५॥
श्राविका उपधान सहु वहै पू०, माडयउ नदि मडाण ।
माल पहिरावउ आविनइ पू०, जिम हुवै जन्म प्रमाण ॥पू०॥तु०॥६॥
अभिग्रह वादण उपरि पूज्य०, कीधा हुता नर नार ।
ते पहुचावउ तहना, पू० वदावउ एक वार ॥पू०॥तु०॥७॥
परव पजूसण वहि गया पूज जी, लेख वाच्छै सहु कोय ।
मन मान्या आदेश द्यउ, पू० शिष्य सुखी जिम होय ॥पू०॥तु०॥८॥

तुम सरिखउ संसारमें पू०, देखुं नहिं को दीदार।
नयना तृप्ति पामइ नहीं, पू० संभारूं सौ वार ॥पू०॥तु०॥६॥
मुझ मिलवा अलजौ घणौ पूज्य०, तुम्हे तो अकल अलक्ष।
सुपनि में आवि वंदावज्या, पू० हुं जाणिसि परतक्षि ॥पू०॥तु०॥१०॥
युगप्रधान जगि जागतउ, पू० श्री जिनचन्द मुणिंद।
सानिधि करिज्यो संघ ने, पू० समयसुंदर आणंद ॥पू०॥तु०॥११॥

॥ इति श्री जिनचन्द्र सूरीश्वराणां आलजा गीतं ॥

सं० १६६६ वर्षे श्री समयसुं(द)र महोपाध्याय तच्छिष्यमुख्य श्री वाचनाचार्य श्रीमहिमासमुद्र ×गणि तच्छिष्य पं० विद्याविजय गणि शिष्य पं० वीरपालेनालेखि ॥ १ ॥ (पत्र ४ हमारे संग्रहमें)

× पाठक श्री समयसुन्दरजीगणि ने इनके आग्रहसे सं० १६६७ में "श्रावकाराधना" बनाई जिसकी अन्त्य प्रशस्ति इस प्रकार है :

आराधनां सुगम संस्कृत वार्तिकाभ्यां, चक्रे क्रमात् समयसुंदर आदरेण ।
उच्चाभिधान नगरे महिमासमुद्र शिष्याग्रहेण मुनि षड्रस चन्द्र वर्षे ॥



॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि गीतानि ॥

(१)

मन वरीय सामण माइ, तु मुझकरि सुपसाय,
मन वचन दृढ करिकाय, चिदानंद सु लयलाय
गायवा श्री गच्छराउ, मुझ उपज्यौ बहु भाउ ॥ १ ॥
धन धन खरतर गच्छ मंडण, श्रीजिनचद्रसूरि पय वदण । टेर ।
मारवाडि देस उदार, जिहा धरम को विस्तार ।
तिहा खेतसर मझारि, ओसवंश कउ सिणगार ।
सिरवंत साह उदार, तसु सिरीय देवी नार ॥ धन० ॥ २ ॥
सुख विलसता दिन दिन्न, पुण्यवंत गरभ उपन्न ।
नव मास जिहा पडिपुन्न, जनमीया पुत्र रतन्न ।
तिहा रस्चीया बहु धन्न, सब लोक कहइ धन धन्न ॥धन०॥३॥
नाम थापना सुल्तान, नितु नितु चढत वान ।
जग माह अमली मान, सूरिज तेज समान ।
मतिमत मन गुण जाण, रूप रजवइ वखाण ॥ धन० ॥ ४ ॥
तिहा विहरता माणिकसूरि, आविया आणद पूरि ।
देसणा दिद्ध सनूरी, निसुणइ भवियण भूर ।
पूरय पुण्य पडूरि, मोहनी कर्म करि चूरि ॥ धन० ॥ ५ ॥

सुलताण मनहि विचार, लेइवा संयम भार ।
सुणि मात निज परिवार, यहु अथिर सव संसार ।
अनुमति द्यो सुविचार, हम होंहिंगे अणगार ॥ धन० ॥ ६ ॥
सुणि पूत तूं सुकमाल, तेरो नव योवन सुरसाल ।
यहु मदन अति असराल, क्या जाणही तूं बाल ।
आपणि मति संभाल, तब पीछइ चारित्रपाल ॥ धन० ॥ ७ ॥
अब निसुणि मोरी मात, ए छोडि जूठी बात ।
चारित्र कउ व्याघात, नहु कीजइ कहि तात ।
संजम लेइ विख्यात, लइ जु नीको भाँति ॥ धन० ॥ ८ ॥
भणिया इम इग्यारह अंग, मन माहे आणि रंग ।
गुरु भालि अतिहि उत्तंग, गुरु रूपि विजित अनंग ।
परवादि वाद अभंग, गुरु वचन गंग तरंग ॥ धन० ॥ ६ ॥
सोलसइ संवत बार, जिनमाणिकसूरि पटधार ।
जिणि सूरि मन्त्र उचार, पामीयो पुण्य अवतार ।
सिरिवंत शाह मल्हार, सब लोक मानइ कार ॥ धन० ॥ १० ॥
सुखकरउ श्रीजिणचंद, सब साधु केरे वृन्द ।
जा लगि रवि ध्रू चन्द, ता लगि तूं चिरनन्द ।
कहइ कनकसोम मुणिंद, करउ संघ कूं आणंद ॥ धन० ॥ ११ ॥

॥ सं० १६२८ वर्षे पं० कनकसोमैर्विलेखि ॥

(२)

राग मल्हार

भलइ री भलइ आज पूज्य पधारइ, विहरंता गुरु साधु विहारइ ।भ०।
जुगवर श्रीजिन शासनि जागइ, महियलमोटइ भाग सोभागइ ॥भ०१॥

सोधिउ, पातिसाहि अकबर प्रतिबोधिउ ।भ०।
सूरिमन्त्र गुरु सानिध भलाइ, इफनइ रोज अमारि पलाइ ॥भ०॥२॥
सब दुनीया माहे कीधी धी, सब उदय काजि पचनगी साधी । भ० ।
परतिख पचे पीर आ ावइ, सूत्र सिद्धांत ना अरथि जणा०॥भ०॥३
वाणी अमृत वखाण सु ने वयणे, बलिहारी अणियाले नयणे ।भ०।
बलिहारी म्हारा पूज नूरइ, उदयवन्त गुरु अधिक पडूरइ॥भ०॥४॥
श्रीवन्तनन्दन सकल , ।भ०।
? ारी, वाचक श्रीसुन्दर सुखकारी ॥भ०॥५॥
श्रीजिनमाणिकसूरि पट

(३)

ने सुन्दर सोइ, जो मुझ वात जणावइ र ।
ए मेरउ साजणीयड सा ज्य पयारइ, श्रीगुरु सबहि सुहावइ र ।
किणि वाटडियइ मेरउ णि पुरि आव , तिणिपुरि सोह चढाव० ।
गुरु सबहि सुहावइ, जि धि आगी, पुण्य उदय स चढावइ ।
गुरु सोभागी, गुरु ट मुणी, जण कार न लोपइ कोइ ।
गच्छराउ गुणी जिनच जो जाणइ, मरउ साजण सोइ ॥१॥
आवा मउ गुरु कउ ोझ विनोदी, जिम घन दरसण मोरा र ।
ए जिम मइगलीयउ वण कि सुरगी, दरसण चन्द चकोरा र ।
रवि दसणियइ क तम अघोरा दरिस दरसण तोरा ।
जिम चन्द चकोरा र, इ पोषइ, अति हरषित मन मोरा ।
हित सतोषइ पुण्य पधारउ वगड होइ प्रमोदी ।
निरदन्दी श्रीजिनचन्द्र जिम वीझावण, मङ्गलीयउ सुविनोदी ॥२॥
तुम्हि देखि सहु जण

ए गुरु जोवणीयइ विधि मारगि लीणउ इणिगुरि लोहन मायारे।
कसि कंचणीयइ जेम परीखा, दिन दिनि वान सवाया रे।
नितु वान सवाया मोह न माया, मन्मथ आण मनाया।
पद सोहाया कोमल काया, श्री खरतर गच्छ राया।
लय लागी रंगीरसि जिउं रमतउ, अलि मकरंदइ पीणउ।
भाग बली गुणि वय जोवणि, जो विधि मारग लीणउ ॥३॥
ए मनि आणंदियइ साधु कीरति, बोलइ ए गुरु शील उदारा रे।
गुरु सहव दे कूखि मराला, श्रीवन्त साह मल्हारा रे।
सिरि वंत मल्हारा श्रीजयकारा, रीहडकुलि सिणगारा।
जग आधारा नितु अविकारा, माणिकसूरि पटधारा ॥
चउरासी गण महि गणी निहाल्या, कोइ नहीं इणि तोलइ।
चिरनंदउ जिणचन्द मुनेश्वर, साधुकीर्ति इम बोलइ ॥ ४ ॥

(४)

राग देशाख

श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वंदउ, सुललित वाणि करइ रे वखान।
युगप्रधान जिन शासनि सोहइ, अकब्बर शाहु दीयइ बहुमान ॥१॥
गुजर मंडलतें बोलाये, सतन मुखि सुनि जसु गुणगान।
बहुत पडूरि सुगुरु पाउधारइ, वखत योगि लाहोर सुथान ॥२॥श्री०॥
अरथ विचार पूछि सब विध विध, रीझे अकबर साहि सुजान।
बहुत २ दरसनि मइ देखे, कौन कहुं या सुगुरु समान ॥श्री०॥३॥
भाग सोभाग अधिक या गुरु कउ, सूरति पाक अमृत समवानि।
पेस करइ अकबर अणमांगये, सब दुनीयां महि अभयादान ।श्री०॥४॥

श्रीजिनमाणिक्यसूरि पटोधर, रीहड वंशि चढावत वान ।
कहइ गुणविनय पूजजो प्रतपउ, खरतरगच्छउदयाचलभान ।श्री०।५।

(६)

राग—सारंग

सरसति सामिणी विनवु, मागु एक पसाय । सखीरी ।
उलट आणी गाइसु, श्रीखरतर गच्छराय ॥ स० ॥ १ ॥
श्रीजिणचन्द सूरिईसरू, कलि गौतम अवतार । स० ।
सूरि सिरोमणि गुणभर्या, सकल कला भंडार ॥श्री०॥ २ ॥
ओसवंश सिरि सेहरउ रीहड कुलि सिणगार । स० ।
सिरियादे उरि जन्मीया, श्रीवंत शाह मल्हार ॥श्री०॥ ३ ॥
श्रीजिनशासन परगडउ, वड खरतरगच्छ हंस । स० ।
नर नारी नित जेहनउ, नाम जपइ निशदीस ॥श्री०॥ ४ ॥
श्रीजिनमाणिक्यसूरि नइ, पाटइ प्रगट्यउ भाण । स० ।
राय राणा मुनि मंडली, मानइ मोटा जाण ॥ श्री० ॥ ५ ॥
सोभागी महिमानिलउ, महियल मोहनवेलि । स० ।
अबूझजीव प्रतिबूझवइ, वाणि सुधारस रलि ॥श्री०॥ ६ ॥
जग सगले जस पामीयउ, प्रतिबोधी पातिशाह । स० ।
खंभाइत दधि माछली, राखी अधिक उच्छाह ॥ श्री० ॥ ७ ॥
आठ दिवस आषाढ के, अट्ठाही निरधारि । स० ।
सब दुनीया माहि सासती, पालावी अमारि ॥ श्री० ॥ ८ ॥
शील सुलक्षण सोहतउ सुन्दर साहस धीर । स० ।
सुविधि सुपरि करि साधीया, पचनदी पचपीर ॥श्री०॥ ६ ॥

सूधउ मारग उपदिसी, पाय लगाड्या लाख । स० ।
दरसण ज्ञान क्रिया धर, सविगच्छ पूरइ साख ॥श्री०॥१०॥
सइं हथि अकबर थापिया, सद्गुरु युगहप्रधान । स० ।
श्रीसुन्दर प्रभु चिरजयउ, दिन दिन चढ़तइ वान ॥श्री०॥११॥

(६)

श्री अकबर बहुमान, कीधउउ युगप्रधान ।
कर्मचन्द बुद्धिनिधान । मीर मलिक खोजा खान,
काजीमुला परधान । पयनमइ करि गुणगान, दिन चढ़ते वान ॥१॥
सब दिन मुझ मन खंति घणी, श्रिय जिणचन्द सूरिसेव तणी । आं ।
मारवाड़ गुजर बंग, मेवाड़ सिन्धु कलिंग ।
मालव अपूरव अंग, पूरव सुदेस तिलंग ।
सब देस मिलि मनरंग, गावइ सुगुरु गुण चंग ।
जिम केतकि वनभृङ्ग, तिम सुगुरु सुं मुझ रङ्ग ॥ २ ॥सब॥
कलि गोतमा अवतार, तजि मोह मदन विकार ।
निरमाय निरहंकार, धन धन्न ए अणगार ।
माणिक्यसूरि पटधार, अति रूप वयर कुमार ।
श्रीवंत शाह मल्हार, 'सुमतिकलोल' सुखकार ॥ ३ ॥सब०॥

(७)

अकबर भूपति मानीया, तिण मानइ सहु लोइ ।
जिनचन्दसूरि सुरीश्वरु, वन्दै वंछित होइ ।
वंदता वंछित होइ अहनिसि, देखतां चित हींस ए ।
श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि समवड़ि अवर कोइ न दीसए ।
सम्पति कारक, दुखनिवारक धर्मधारक महाव्रती ।
मन भाव आणी लाभ जाणी, नमइ अकबर भूपती ॥ १ ॥

असुरा गुरु प्रतिबोधीउ, दाखी धरम विचार।
शासन सोह चढावीयो, माणिकसूरि पट्टधार॥
पट्टधार माणिकसूरि नइ ए, रीहड वसइ दिन मणी।
श्रीवत श्रीयादेवी नदन, सुविहित साधु सिरोमणी॥
गुणरयण रोहण भविय मोहन, कम्म सोहण व्रत लीउ।
सुविचार सार उदार भावइ असुरा गुरु प्रतिबोधीयउ॥ २॥
पहवो गुरु वडो नहीं इणि जगि त अकयथ।
अकबर श्रीमुख इम कहइ, खरतर गच्छ मणिमय॥
मणिमय खरतर गच्छ मेरउ, अभिनवेरउ सुरतरु।
मन तणा कामित सयल पूरइ, रुप जेम पुरन्दर॥
जसु तणइ दरसणि दुरित नासइ, रिद्धि वासइ घर सही।
इम कहइ अकबर तह अकबर, जेणि गुरु वडो नहीं॥ ३॥
युगप्रधान पदवी भली, आपइ अकबर राज।
सइमुख हरखे इम कहइ, ए गुरु सव सिरताज।
सिरताज सव गच्छ एह सहगुरु, करइ बगसीस इम वली,
गुजरात खभायत मदरि करउ निरभय माछली।
वर्धमान सामि तणइ शासनि, करी उन्नति इम रली।
आपइ अकबर अधिक हरखे, युगप्रधान पदवी भली॥ ४॥
जा लगि अम्बर रवि शशि, जा सुर शैल नदीस।
ता नदउ ए राजियो, मानइ आण नरेस॥
जसु आण मानइ राव राणा, भाव बहु हियडै धरी।
नन्द जुविरस शशि वरसि चैत्रह नवमि तिहि अति गुण भरी।

इम विमल चित्तइ भगइ भत्तइ, समयप्रमोद समुल्लसा ।
युगपवर जिनचन्द्रसूरि वंदो, जाम अम्बर रवि शशि ॥ ५ ॥

(८)

॥ पंच नदी साधन गीत ॥

विक्रम (पुर) नयरे श्री संघ हरपियो एह नी ढाल ।

श्री गोयम गणधर प्रणमी करी आणी उ ग्ट अङ्ग ।
गुरु गुण गावण मुझ मन गह गहै, थायइ अति उच्छरङ्ग ॥१॥
धन श्रीजिनशासन सलहियै, खरतर गच्छ सिणगार ।
युगप्रधान जिनचन्द जतीसरु, गुरु गोयम अवतार ॥२॥धन०॥
लाभपुरे जिनधर्म सुणाविनै, बूझव्यो पातिसाह ।
श्री गुरु पंचनदी पति साधिवा, कीया मनहि उछाह ॥३॥धन॥
संघ साथि मुलताण पधारिया, पइसारो सविशेष ।
देख हरख्या सवि जन पय नमै, खान मलिक तिम सेख॥४॥धन०॥
ठामि ठामि हुकुमइ श्री शाहिनै, कहता धर्म विचार ।
अभयदान महियल वरतावनां, संघ उदय जयकार ॥५॥धन०॥
आया पंचनदी तट पत्तणइ, चन्द्रवेलि अभिधान ।
आंबिल अट्ठम तप गुरु आदरी, बैठा निश्चल ध्यान ॥६॥धन०॥
सोलसय वावनै वच्छरै, पुष्प सहित रविवार ।
माहधवल वारस तिथि निरमली, शुभ महूरत निणि वार ॥७॥धन०॥
वेड़ी वइसी पहुतां जिहा मिलै, पंचनदी भर नीर ।
अधरति निश्चल नाव तिहां रही, ध्यान धरै गुरु धीर ॥८॥धन०॥

शील सत्त तप जप पूजा वसै, माणिभद्र प्रमुख सुमन्न ।
यक्ष सहु जिनदत्तसूरि सानिधै, तेह थया सुप्रसन्न ॥९॥धन०॥
प्रहसमि गुरुजी पत्तणि अविया, वाज्या जेत्र निसाण ।
ठाम २ ना सघ मिल्या घणा, आपै दान सुजाण ॥१०॥धन०॥
धोरवाड वसे परगडा, नानिग सुत राजपाल ।
सपरिवार तिहा बहु धन खरचिनै, लीधो यश सुविशाल ॥११॥धन०॥
तिहा थी उच्चनगर गुरु आविया, वद्या शान्ति जिणद ।
देरावर प्रणम्या जग दीपता, श्रीजिनकुशल मुणिद ॥१२॥धन०
हिव तिहा थी मारग विचि आवता, सुन्दर थुम निवेश ।
पद पकज जिनमाणिकसूरिना, भेट्या तिणे प्रदेश ॥१३॥ध०॥
नवहर पाम जुहारो पधारिया, जेसलमेरु मझार ।
फागन सुदी बीजै सहु हरषोया, राउल सघ अपार ॥१४॥धन०॥
श्रीजिनचद यतीश्वर गुणनिलो, प्रतपो युग प्रधान ।
'पद्मराज' इम पभणइ मन रसइ दिन दिन वधतै वान ॥१५॥धन०॥

(९)

वनी है सद्गुरुकी ठकुराइ
श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वदो, जो कुछ हो चतुराइ ॥१॥वनी०॥
सकल सनूर हुकम सब मानति तें जिन्ह कु फुरमाई ।
अरु कछु दोष नहीं दिल अतरि, तिमि मनहीं मनिलाई ॥२॥वनी०॥
माणिकसूरि पाट महिमा वरो, लइ जिन स्यु वितणाइ ।
झिगमिग ज्योति सुगुरुको जागी, 'साधुकीरति' सुखदाइ ॥३॥वनी०॥

(१०) राग मल्हार

पूज्य आवाजउ साभलउ सहिए, हरख्या सगलालोक।
मोरउ मन पिण उलस्यउ सहिए, जिम हरि दंसण कोक ॥१॥
इण रे सुगुरु जी जग माहि जस पडहउ वजाडयउ ॥आ०॥
पहिलुं अकबर मानीया सहीए, ए गुरु हीरा खाणि।
युगप्रधान पद तिण दियउ सहिए, पय लागइ रायराणि ॥२॥इण०॥
गच्छ अनेक मइं जोइया सहिए, तुम सम अवर न कोइ।
हेलइ मयण वसी कीयउ सहिए, शीलइ थूलभद्र जोड ॥३॥इण०
अनुक्रमि श्रीगुरु विहरता सहीए, आव्या पाटण माहि।
चउमासउ प्रभु तिहां करइ सहीए, मन आणी उच्छाह ॥४॥इण०॥
लेख आयउ आगरा थको सहीए, जाणी सगली वात।
साहि सलेम कोपइ चढ़यइ सहीए, कुमतो बाध्या राति ॥५॥इण०॥
चउमासो करि पांगुर्या सहीए, करता देस विहार।
उग्रसेनपुर आविया सहीए, वरत्या जय जयकार ॥६॥इण०॥
श्रीपातिशाह बोलाविया सहीए, जंगमजुगहप्रधान।
धरम मरम कहि बूझव्यउ सहीए, तुरत दीया फुरमान ॥७॥इण०॥
जिण शासन उजवालियउ सहीए, साह श्रीवंत कुल चन्द।
साधु विहार मुगता कीया सहीए, खरतर पति जिणचन्द ॥८॥इण०
सिरिया दे उरि हंसलउ सहीए, तेजइ दीपइ भाण।
"लब्धिशेखर" मुनि इम भणइ सहीए, सेवक आपणउ जाणि ॥९॥इण०॥

(११)

राउल श्री भीम इम कहइ जी, जादव वंसि वदीत रे ॥ पूज जी ॥
पधारो जेसलमेरु नइ जी, प्रीति धरी निज चित्त रे ॥रा०॥१॥

वसत यहा गुजरपति ना जी, पूज पधार्या जेथ रे।
धन धन लोक सहुवलि रे, जेह वसइ छइ तथ र ॥२॥रा०॥
पूज तणइ जे श्रीमुखइ जी, निसुणइ अमृत वाणि र।
सेव करइ गुरु नी शाश्वती र, तेहनो जन्म प्रमाणि र ॥३॥रा०
दिवस घणा विचि वउलीया जी, आवण केरी आस रे।
हुसि अछइ माहरइ हियइ जी, इहा जइ करउ चउमासि र ॥४॥रा०॥
श्री जेसलगिरि संघ नी जो, अधिक अछइ मन कोडि र।
गुरुजी चरणइ लागिवा, र त्रिकरण शुद्ध कर जोडि र ॥५॥रा०॥
साधु नी संगति जउ मिलइ र, तउ पूजइ मन नी आस र।
चिंतामणि करि जउ चढयइ र, तउ चित्त थाइ उल्लास र ॥६॥रा०॥
मुझ मन हरख घणउ अछइ जी, तुम्ह मिलवा नु आज र।
तुम्ह आज्ञा सवि साध्यस्या र, अधिक धरम तणा काज र ॥७॥रा०॥
इहा विलम्ब नवि कीजियइ जी, श्री खरतर गणधार र।
श्री जिनचन्द्र गुणभणइ रे, "गुणविनय" गणि सुखकार र ॥८॥रा०॥
(स्वयलिखित-पत्र १ हमारे संग्रह में)

(१२) राग सामेरी

सुगुरु कइ दरसन कइ वलिहारी।
श्री खरतरगच्छ अगम सुरतरु, जिनचन्दसूरि सुखकारी ॥१॥सु०॥
अकबर शाहि हरख करि कीनउ, युगप्रधान पदधारी।
खंभायत मइ शाहि हुकम तइ, जलचर जीव उबारी ॥२॥सु०॥
सात दिवस जिनि सब जीवन की, हिंसा दूर निवारी।
देश देशि फुरमान पठाए, सब जग कु उपगारी ॥३॥सु०॥

जिनमाणिकसूरि पाट प्रभाकर, कलि गौतम अवतारी।
कहइ "गुणविनय" सकल गुण सुंदर, गावत सब नर-नारी ॥४॥सु०॥
(कवि के हस्तलिखित पत्र से उद्धृत)

(१३) राग धन्यासिरी मारुणी

सुगुरु मेरइ चिरि जीवउ चउमोल।
सम्भायत दरिया की मच्छली, बोलत बोल रसाल ॥१॥सु०॥
भाग हमारइ तिहां जावत हउ, लाभपुरइ भय टाल।
श्रीजी कुं अइसो अरज करेज्यो, जलचर कुं प्रतिपाल ॥२॥सु०॥
यह अरज निसुणी पूज्या तउ, रंज्यु वर भूपाल।
हुकम करि नइ छाप पठाइ, हरख्या बाल गोपाल ॥३॥सु०॥
युगप्रधान जिनचन्द यतीसर, छइ जसु नाम विशाल।
शाहि अकबर तसु फरमाइ, तिणि छाड़ाया जाल ॥४॥सु०॥
निशभरि नींद अवइ आवत हइ, मरण तणु भय टाल।
जय जय जय आशीस दियत हइ, मिलि जीवन की माल ॥५॥सु०॥
धन धन धोर हुमाऊं कुं नन्दन, जीवत दान दयाल।
धन धन श्रीखरतरगच्छ नायक, पटकाया रखवाल ॥६॥सु०॥
धन मन्त्री कर्मचन्द बछावत, उद्यम कीउ दरहाल।
साहिब नइ साचइ सुप्रसादइ, अलीय विघ्न सब टालि ॥७॥सु॥
धन ते संघ इणइ जे अवसर, परघल खरचइ माल।
तसु "कल्याण कमल" नो संपड, आपद न हुवइ बाल ॥८॥सु०

(१४) अपूर्ण

सरस वचन सरसति सुपसायइ, गाइसु श्री गुरुराय री माइ ।
युगप्रधान जिनचन्द यतीश्वर, सुर नर सेवे पाय री माइ।।
कलियुग कल्पवृक्ष अवतरियो सेवक जन सुखकार री माइ ।।आ।।
जिन शासन जिनचन्द तणो यश, प्रतपै पुहवि मझार री माई ।
प्रह्नम नित नित श्रीगुरु प्रणमो, श्रीखरतर गणधार री माइ ।।२।।
संवत पनर पचाणु वर्षे, रीहड कुल मनु भाण री माइ ।
श्रीवत शाह गृहणी सिरियादे, जनम्या श्री "सुरताण" री माई ।।३।।
संवत सोल चडोतर बरसे, लीधो संयम भार री माई ।
जिनमाणिक्यसूरि सैं हाथै दिक्षा, शिष्यरत्न सुविचाररी माई ।।४।।क०
लघु वय बुद्धि विनाणे जाण्यो, श्रुतसागर नौ सार री माई ।
अभिनव वयर कुमर अवतारै, सकल कला भंडार री माई ।।५।।क०।।
वसत संयोगे सोल बारोत्तर, जेशलमेर मझार री माई ।
पाम्यो सूरीश्वर पद नकट्यो, श्रीसंघ जय २ कार री माइ ।।६।।क०
उग्र विहार आदर्यो श्रीगुरु, कठिन क्रियाउद्धार री माई ।
चारित्र पात्र महंत मुनीश्वर, रत्नत्रय आधार री माइ ।।७।।क०।।
सतरोत्तर वर्षे पाटण में, अधिक बधारी माम री माइ ।
च्यार असी गच्छ साखै खरतर, विरुद दीपायो ताम री माई ।।८।।क०
हथगाउर सोरीपुर नामै, तीरथ विमलगिरिंद री माई ।
आबूगढ गिरनार सिखर तिहा, प्रणम्या श्रीजिनचन्दरी माई ।।९।।क०
आरासण तारंगे तीरथ, राणपुरै गुरुराज री माइ ।
चरकाणा संखेश्वर ग्रामे, प्रणम्या श्री जिनराजरी माइ ।।१०।।क०।।

अवर तीर्थ पण श्रीगुरु भेट्या, प्रतिबोध्यो पातिसाह री माई ।
अकबर अधिको आसति निरखी, दीधौ मोटौ लाह री माई ॥११॥
खम्भायत नो खाड़ी केरा, राख्या जीव अनेक री माई ।
बरस एक लगि श्री गुरु वचने, पाम्यो परम विवेक री माई ॥१२॥क०
सात दिवस लगि निज आणा में, वरतावी अमारि री माई ।
अकबर अवर अपूर्व कारिज, कीधा गुरु उपकार री माई ॥१३॥क०॥
पंचनदी पति परतिख साध्या, माणभद्र विख्यात री माई ।
.... ॥

(१८) श्री गुरुजी गीत

युगवर श्री जिनचन्दजी, जगि जिनशासनि चन्द रे ।
प्रहसमि उठी पूजियइ, कामित सुरतरु कंद रे ॥१॥जुग०॥
संवति पनर पंचाणुयइ, श्रीवंत साह मल्हार रे ।
मात सिरियादेवि जनमीयउ, रीहड़ कुल सिणगार रे ।२।जुग०।
संवत सोल चिडोत्तरइ, जाणी जिणि अथिर संसार रे ।
हाथि जिनमाणिकसूरि नइ, संग्रह्यउ संयम भार रे ॥३॥जुग०॥
वयरकुमार तणी परइ, लघुवइ बुद्धि भंडार रे ।
गुरुकुल वास वसि पामियउ, प्रवचन सागर पार रे ।४।जुग०।
संवत सोल बारोतरइ, जेसलमेरु मझारि रे ।
भाग्य बलि सूरि पदवी लही, हरखिया सवि नर नारि रे ।५।जुग०।
कठिण क्रिया जिण उद्धरि, मांडियउ उग्र विहार रे ।
सूरि जिणवल्लभ सारिखउ, चरण करण गुणधार रे ।६।जुग०।

पाटण सोल सतरोतरइ, च्यारि असी गच्छ सारि रे ।
खरतर बिरुद दीपावियउ, आगम अक्षर दाखि रे ॥ ७ ॥ जुग० ॥
सौरीपुर हथिणाउरे, विमलगिरि गढ गिरिनार रे ।
तारङ्ग अर्बुदि तीरथ०, यात्र करि बहु वारि रे ॥ ८ ॥ जुग० ॥
अकबर शाहि गुरु परिखीयउ, कसवटि कंचण जेम रे ।
पूज्यनी मधुर देसण सुणी, रंजियउ साहि सलेम रे ॥९॥ जुग० ॥
सात दिवस वरतावियउ, माहि दुनिया अभयदान रे ।
पच नदी पति साधिया, वाधियउ अति घणउ वान रे ॥१०॥जुग०॥
राजनगर प्रतिष्ठा करी, सबल मडाण गुरुराज रे ।
सघवी सोमजी उच्छिव, लाह लियइ तिणि ठाइ रे ॥११॥जुग०॥
सुप्रसन्न जेहन० मस्तक", गुरु धरइ दक्षिण पाणि रे ।
तह घरि वेलिकमला करइ सुखवसइ अचिर(ल) वाणि रे ॥१२॥जुग०॥
दरसनी जिन मुगता करी, सोल सित्तर वासि रे ।
अविना नगर बिलाडए, सुगुर रह्या चउमासि रे ॥१३॥जुग०॥
दिवस आसु वदि बीजनइ, उच्चरी अणशण सार रे ।
सुरपुरि सुगुर सिधारिया, सुर करइ जय जयकार रे ॥१४॥जुग०॥
नाम समरणि नवनिधि मिल , सवि फलइ सघनी आस रे ।
आधि नइ व्याधि दूरइ टलइ सपजइ लील विलास रे ॥१५॥जुग०॥
केशर चन्दन कुसुम सु, चरचता सहगुर पाय रे ।
पुत्र सतान परवलहुन", दिन दिन तेज सवाय रे ॥१६॥जुग०॥
श्रीजिनचन्दसूरीसरू, चिर जयउ जुगप्रधान रे ।
इणपरि गुरु गुण सथुणइ, पाठक 'रत्ननिधान' रे ॥१७॥जुग०॥
(श्री जिनदत्तसूरि ज्ञान भडार सूरतस्थ हस्त लिखित ग्रन्थात्
प्रेषक पन्यास केशरमुनिजी)

॥ इति श्री गुरुजी गीत ॥

(१६)

॥ ६ राग ३६ रागिणी गर्भित गीत ॥

कीजइ ओच्छव सन्ता सुगुरु केरउ (१)
सुललित वयण सुण सखि मेरउ (२)
कहउरी संदेस खरा गुरु आवतिया (३)
तिणवेला उलसी मेरी छातिया (४) ॥१॥

आएरी सखि श्रीवंतमल्हारा,
खरतर गच्छ शृङ्गारहारा। ए आंकड़ी (५)
अइसा रंग वधावन कीजइ (६)
गुरु अभिराम गिरा अमृत पीजइ (७)
ऐसे सुगुरु कुं नित्य उलाउरी (८)
सुन्दर शरीरा गच्छपति अउरी ॥ ९ ॥ आ० ॥२॥

दुःख के दार सुगुरु तुम हउ री (१०)
गाउं गुण गुरु केदारा गउरी (११)
सोरठगिरि की जात्रा करणकुं आपणरी गुरु पाय परउ (१२)
भाग्यफल्यो ओच्छव लोकणरओ (१३) ॥३॥
तुं कृपापर दउलति दे मोहि हुं तेरो भगत हुं री (१४)
गुरुजी तुं उपर जीव राखी रहुंरी (१५)
इहु सयनी गुरु मेरा ब्रह्मचारी (१६)
हुं चरण लागुं डर डमर वारी (१७) आ० ॥४॥

अहो निकेत नटनराजण कइ आगइ
अइसइ नृत्य करत गुरुके रागइ (१८)
ऐसे शुद्ध नाटक होता गावत सुदरी
वेणु वीणा मुरज वाजत घुमर धुघरी (१६) ॥५॥
रास मधु माधवइ देति रभा, सुगुरु गायति वायति भभा (२०)
तेजपुज जिमसे मेरुवी, जुगप्रधान गुरु पेखड भवि(२१)आ०॥६॥
सनहि ठउर त्री जयतसिरी (२२)
गुरुके गुण गावत गुजरी (२३)
मारुणि नारी मिली सब गावत सुन्दर रूप सोभागी रे (२४)
आज सखि पुन्य दिसा मेरी जागी (२५) ॥७॥
तोरी भक्ति मुज मन मा वसी री (२६)
साहि अकबर मानइ जसु वाचवसी (२७)
गुरुके वरणी तरमइसिधुया (२८)
इया सारी गुरुकी मूरतिया (२६) आ० ॥८॥
गुरुजी तुहिज कृपाल भूपाल कलानिधि तुहिज सबहि सिरताज(३०)
आवइ ए रीतइ गच्छराज (३१)
सकल भरण लाछन जिन सुप्रसन्न
जिनचदसूरि गुरु तुनतिकर (३२) ॥६॥
तेरी सुरतकी बलिहारी, तु पूरव आस हमारी,
तु जग सुरतरु ए (३३)
गुरु प्रणमइरी सुरनर किन्नर धोरणी र
मनवछित पूरण सुरमणी र (३४) ॥१०॥

मालवी गौडमिश्री अमृत थइ वचन मीठे गुरु तेरे हइ नाथइ (३५)

करइ वंदणा गुरुकुं त्रिकालइ हरउ पंच प्रमाद रे (३६)

सबउकुं कल्याण सुख सुगुरु प्रसाद रे (३७) आ० ॥११॥

बहु परभाति वउ उछव सार (३८)

पंचमहाव्रत धर गुरु उदार (३९)

हु आदेसकार प्रभुतेरा, जुगप्रधान जिनचन्द

मुनिसरा, तुं प्रभु साहिब मेरा (४०) ॥१२॥

दुरित मे वारउ गुरुजी सुख करउ रे श्रीसङ्घ पुरउ आस

नाम तुमारउ नवनिधि संपजइ रे लाभइ लील विलास (४१) ॥१३॥

धन्यासरी रागमाला रची उदार, छ. राग छत्रीसे भाषा भेद विचार,

सोलसइ बावन विजय दसमी दिने सुरगुरुवार,

थंभण पास पसायइ त्रंबावती मजार (२) ध०) ॥१४॥

जुगप्रधान जिनचन्द सूरींद सारा

चिर जयउ जिनसिंघसूरि सपरिवार (३ ध०)

सकलचन्द मुणीसर सीस उन्नतिकार,

"समयसुन्दर" सदा सुख अपार (६ ध०) ॥१५॥

इति श्रीयुगप्रधान जिनचन्दसूरीणां रागमाला सम्पूर्णा,

कृता च० समयसुन्दरगणिना लिखिता सं० १६५२ वर्षे

कार्तिक शुदि ४ दिने श्री स्तंभतीर्थ नगरे ।

(१७) राग.—आसावरी

पूज्यजी तुम्ह चरणे मेरउ मन लीणउ, ज्यु मधुकर अरविंद ।
मोहन वेलि सनइ मन मोहियउ, पेखत परमाणद रे ॥१॥ पूज्य०॥
सुललित वाणि वखाण सुणावति, श्रवति सुधा मकरंद रे ।
भविक भवोदधि तारण तरी, जनमन कुमदनी चदरे ॥२॥ पूज्य०॥
रीहड वंश सरोज दिवाकर, साह श्रीवन्त नंद रे ।
"समयसुन्दर" कहइ तु चिरप्रतपे, श्रीजिणचन्द मुणिंद रे ॥३॥ पूज्य०॥

(१८) आसावरी

भले री माइ श्री जिनचन्द्रसूरि आए ।
श्रीजिन धर्म मरम बूझण कू, अकबर शाहि बुलाए ॥ १ ॥
सद्गुरु वाणी सुणि शाहि अकबर, परमाणद मनि पाए ।
हफतहरोज अमारि पालन कु लिखि फुरमान पठाए ॥ २ ॥
श्री खरतर गच्छ उन्नति कीनी दुरजन दूर पुलाए ।
"समयसुन्दर" कहे श्रीजिनचन्दसूरि सब जनके मन भाए ॥३॥

(१९) आसावरी

सुगुरु चिर प्रतप तु कोडि वरीस ।
खंभायत बन्दर माछलडी, सब मिलि देत आशीस ॥ १ ॥ सु०
धन धन श्री खरतरगच्छनायक, अमृतवाणि वरीस ।
शाहि अकबर हमकु राखणकु, जासु करी वकशीस ॥ २ ॥
लिखि फुरमाण पठावत सबही, धन कर्मचन्द्र मत्रीश ।
"समयसुन्दर" प्रभु परम कृपा करि, पूरउ मनहि जगीश ॥३॥

(२०)

श्री खरतर गच्छ राजीयउ रे माणिक सूरि पटधारो रे।
सुन्दर साधु सिरोमणी रे, विनयवंत परिवारो ॥ १ ॥
विनयवंत परिवार तुम्हारउ, भाग फल्यउ सखी आज हमारो।
ए चन्द्रालउ छइ अति सारउ, श्रीपूज्यजी तुम्हे वेगि पधारो॥१॥
जिणचन्दसूरिजी रे, तुम्ह जग मोहण वेलि।
सुणज्यो वीनती रे, आवउ आम्हारइ दिसि, गिरुआ गच्छपतिरे ॥
वाट जोवता आवीया रे हरख्या सहु नर-नारो।
संघ सहु उच्छव करइ रे घरि २ मंगलाचारो ॥
घरिघरि मंगलचारो रे गोरी, सुगुरु वधावउ वहिनी मोरी।
ए चन्द्राउलउ सांभलज्योरी, हुं वलिहारी पूजजी तोरी॥२॥श्री०
अमृत सरिखा बोलड़ा रे, सांभलतो सुख थाज्यो।
श्रीपूज्य दरसण देखता रे, अलिय विघन सवि जाज्यो ॥
अलिय विघन सहु जायइ रे दूरइ, श्रीपूज्य वादु ऊगमते सूरइ।
ए चन्द्रालउ गाउ हजूरइ, तउ मुझ आस पूलइ सवि नूरइ ॥ ३ ॥
जिणदीठा मन उलसइ रे नयणे अमीय झरंति।
ते गुरुना गुण गावतां रे, वंछित काज सरंति ॥
वंछित काज सरंति सदाइ, श्रीजिणचन्दसूरि वांदउ माई।
ए चन्द्राउला भास मइंगाई, प्रीति "समयसुन्दर" मनिपाई ॥४॥श्री

(२१)

जिनचन्दसूरि आलीजा गीत राग: आस्या सिंधूडो

थिर अकबर तुं थापीयउ, युग प्रधान जग जोइ।
श्रीजिनचन्दसूरि सारिखउ, सारि० कलिमे न दीसइ कोय ॥१॥

उमाह धरी नइ तातजी हु आवियउर, हो एकरसउ तु आवि ।
मनका मनोरथ सहु फलइ माहरा रे,हो दरसणि मोहि दिखाउ ॥ २ ॥
जिनशासनि २म. थउ जिण२, डोल्तउ डमडोल ।
समझायउ श्री पातिसाह, सद्गुरु थाटयउ तइ सुनोल । ऊ० ॥३॥
आलेजो मिलवा अति घणउ, आयउ सिन्ध थी एथ ।
नगर गाम सहु निरखीया, कहो क्यु न दीसइ पूज्य थेथ ।उ० ॥४॥
शाहि सलेम सहु अवरा, भीम सूर भूपाल ।
चीतारइ तु नइ चाह सु, हो पूज्यजी पधारउ किरपाल । ऊ० ॥५॥
बावा आदिम बाहुबलि, वीर गौयम ज्यु विलाप ।
मेलउ न सरज्यउ माहरउ मा०, ते तउ रह्यो पछताप । ऊमा०।६।
साह वडउ हो सोमजी गाल्यउ कर्मचन्द राज ।
अकबर इंद्रपुरि आणीयउ हो, आस्तिक वादी गुरु आज । उमा०।७।
मूयइ कहइ त मूढनर, जीवइ जिणचन्दसूरि ।
जग जपइ जस जेहनउ, जेह० हो पुहवि कीरत पडूरि ।ऊमा०।८।
चतुर्विध सघ चीतारस्यइ, जा जीविसइ वा सीम ।
वीसार्या किम विसरइ,विस० हो निर्मल तप जप नीम ।ऊमा०।६।
पाटि तुम्हारइ प्रगटीयउ, श्री जिणसिंह सूरीस ।
शिष्य निवाज्या तइ सहु , तइ० र जतीया पूरी जगीस ।ऊमा०।१०।

समयसुन्दर कृत अपूर्ण—प्राप्त



कवि कुशल लाभ कृत

॥ श्रीपूज्य वाहण गीतम् ॥



राग आसावरी

पहिलो प्रणमुं प्रथमजिण, आदिनाथ अरिहंत।
नाभि नरेश्वर कुलतिलक, आपइ सुख अनंत ॥ १ ॥
चक्रवर्ती जे पांचमो, सरणागत साधारि।
शांति करण जिन सोलमो, शान्तिनाथ सुखकार ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी सिर मुकटमणि, यादव वंश जिणिंद।
नेमिनाथ भावइ नमुं, आणो मन आणंद ॥ ३ ॥
श्री खंभायत मंडणो, प्रणमुं थंभण पास।
एक मना आराधतां, पूरइ जन नी आस ॥ ४ ॥
शासननायक समरीयइं, वर्द्धमान वर वीर।
तीर्थंकर चौवीसमो, सोवन वर्ण शरीर ॥ ५ ॥
च्यारि तीर्थंकर शाश्वता, विहरमाण जिन वीश।
त्रिण चौवीशी जिन तणा, नाम जपूं निशदीस ॥ ६ ॥
श्रीगौतमगणधर सधर, नमिसुं लब्धिनिधान।
केवलिकमला करि वशइ, महिमा मेरु समान ॥ ७ ॥
समरूं शासनदेवता, प्रणमुं सदगुरु पाय।
तासु प्रसादे गाइस्युं, श्री खरतरगच्छ राय ॥ ८ ॥

सतर भेद सयम धरइ, गिरुआ गुण छत्रीस ।
अधिकी उत्कृष्टी क्रिया, ध्यान धरइ निसदीस ॥ ६ ॥
सूयगडाग सूत्रे कह्या, वीर स्तव अधिकार ।
भव समुद्र तारण तरण, वाहण जिम विस्तार ॥ १० ॥
आ भव सागर सारिखु, सुख दुख अत न पार ।
सद्गुरु वाहण नी परइ, उतारइ भवपार ॥ ११ ॥

ढाल' सामेरी

भवसागर समुद्र समान, राग द्वेष वि नेऊ थाण ? ।
ममता तृष्णा जल पूर, मिथ्यात मगर अति क्रूर ॥ १२ ॥
मोजा ऊचा अभिमान, विषयादिक वायु समान ।
ससार समुद्र मझारि, जीव भम्या अनत वारि ॥ १३ ॥
हिव पुण्य तणइ सजोग, पाम्यो सद्गुरु नो योग ।
भवसागर तारणहार, जिन धर्म तणउ आधार ॥ १४ ॥
वाहण नी परि निस्तारइ, जीव दुर्गति पडितो वारइ ।
कारवि जलि किहान छीपइ, पर वादी कोइ न जीपइ ॥ १५ ॥
इहनइ तोफान न लागइ, सुखि वायु वहइ वैरागइ ।
जल थल सविहु उपगारइ, भवियण जण हला तारइ ॥ १६ ॥

ढाल.—हुसेनो धन्यासिरी

श्रीजिनराय नीपाइयउ ए, वाहण समु जिनधर्म,
भविक जनतारवा ए ॥ १७ ॥

तारइ २ श्रीवंत शाह नो नन्दन वाहण तणी परइ ।
तारइ २ सिरियादे नो सुत कि, वाहण सिला मती ए ।
तारइ २ श्रीपूज्य सुसाधु, श्रीखरतरगच्छ गच्छपत्ति ए ॥ आ० ॥
अविहड़ वाहण ए सही ए, सविहुं सुख व्यापार ।
धर्म धन दायकू ए ॥ १८ ॥
तारइ तारइ श्री समकित अति निर्मलो ए ।
पहलउ ते पयठाण, सुमति सूत्रे धर्यो ए ॥ १९ ॥
ता० गुण छतीस सोहामणा ए ।
विहु दिसि वांक मंडाण, सुकृत दल मलिवा ए ॥ २० ॥
ता० कूया थुंभ चारित्र तणउ ए ।
जयणा जोडी संधि, सबल सढ तप तणउ ए ॥ २१ ॥
ता० शील डवू सो सोभतो ए ।
ले मत सुगुरु वखाण, दया गुण दोरड़ो ए ॥ २२ ॥
तारइ तारइ कलमी ते शुद्धी क्रियाए,
पुण्य करणी पंतास, संतोष जलइ भर्याउ रे ॥२३॥
ता० दशविध धर्म वेडूं गवी ए ।
संवर तेह जना रखि मासरि छत्रडी ए ॥२४॥
ता० सतर भेद संयम तणाए,
ते आउला अपार । संवेग सुं पंजरी ए ॥२५॥
ता० आज्ञा नालु अणी समोए ।
पंच समिति पर वांण, कीर्त्तिधज जह लहइ ए ॥२६॥
ता० विजइ बारह भावनाए ।
(दा) हांडा शुभ परिणाम, नागर नवतत्त्व तणाए ॥२७॥

ता० करुणा कोलइ लेपीउ ए, ज्ञान निरुपम नार ।
झोलउ समरस भर्योए ॥२८॥

ता० शासन नायक हू (क्रू) यउए, मालिम श्री गुरुराज ।
कराणि मुनिवरए ॥२६॥

ता० जिन भाषित मारग वहइ ए, वाजित्रनाद सिज्झाय ।
सुसाधु खलासीयाए ॥३०॥

तारइ २ ए मारग जिनधर्म तणउए, को डोलइ नहीं लगार ।
सदा सुखिया करइए ॥३१॥

ता० मल (चा ?) वारी त काठीया ए, कुमती चोर हीनोर ।
सहु भय टालताए ॥३२॥

ता० पुण्य क्रियाणे पूरीया ए, बहुरति वस्तु अनेक ।
सुजस पाखर खरीए ॥३३॥

ता० कषाय डूगर झालवइए, वइतउ ध्यान प्रवाह ।
सिलामति आवीयोए ॥३४॥

ढाल रामगिरी —

धर्ममारग उपदेशता, करता २ निधइ विहार रे ।
आव्याजी नगर त्रंबावती श्री सघ हर्ष अपार रे ॥३५॥

पूज्य आव्या त आसा फली, श्री खरतरगच्छ गणधार रे ।
श्री जिनचन्दसूरि वादीयइ, साथइ २ साधु परिवार रे ॥३६॥पू०॥

आगम सूत्र अर्थे भया, सुकृत क्रियाण त सार रे ।
चारित्र वखारि अति भली(यां), व्रत पचखाण विस्तार रे ॥३७॥

वस्त अपूर्व वहुरिवा, मिल्या २ भविक नर-नार रे।
विनय करि पूज्य नइ वीनवइ, आपउ २ वस्तु उदार रे ॥३८॥पू०॥
मोटा २ श्रावक श्राविका, करइ मंडाण अनेक रे।
महोत्सव अधिक प्रभावना, जाणइ २ विनय विवेक रे ॥३६॥पू०॥
ज्ञान दरशण चारित्र तणा, अमोलक रत्न महंत रे।
पुण्य व्यापारि आवि मिल्या, वहुरता लाभ अनन्त रे ॥४०॥पू०॥
दान गुण मोतीय निर्मला, पंच आचार ते पाच रे।
दश पचखाण ते कहरवउ, अगर तें शीतल वाच रे ॥४१॥पू०॥
सूफ ते सद्दहणा खरी, सुगुरु सेवा सिकलात रे।
पोत सुरासुर पोसहा, मकमल प्रवचन मात रे ॥४२॥पू०॥
हीर पेटी महोत्सव घणा, इ श्रा (त्रा ?) मी ते सूत्रनी साख रे।
भाव(जाच)परिवार लिय अति भलो, निवृति ते किसमिस दाख रे।४३पू।
श्रीफल श्रीगुरु देशणा, वीश थानिक कमखाव रे।
नादि उछव मलीयागरउ, पूज्यनी भगति गुलाव रे ॥४४॥पू०॥
देश विरति ते कचकडउ, चोली(ल) या ते उपधान रे।
दात(न)? शीलांगरथ उजलउ, राती जगु तेह कंताण रे ॥४५॥पू०॥
शीतल सुकडि भावना, स्नात्र तेकपूर वरास रे।
कतीफउ कल्याणिक जाणीयइ, कंस बण्यो सइ उपवास रे ॥४६॥पू०॥
मासखमण मसझारे समुं (भलुं), लारीते लाख नवकार रे।
सूत्र ना भेद हीरा खरा, उचित नुं दान दीनार रे ॥४७॥पू०॥
पाखर कमण बरीया बिसइ, लवंग ओ(व)ली विश्वा(सय)वीस रे।
नाम आलोयण वाडीया, छठ तप बिसय गुणतीस रे ॥४८॥पू०॥

ससार तारण ए कारली, चउथो व्रत तेह दस्तार रे ।
अखोड आंबिल निम जाणवी, फल(इ)य वेयावचसार रे ॥४६॥पू०॥
अठम तप त टोक(प)रा, अठाही त सेव खजूर रे ।
समवसरण तप त मिरी, सोपारी सामायिक पूर रे ॥५०॥पू०॥
लाहिण माल पहिरावणी, उत्तम श्रियाग जोइ रे ।
परसोय वस्त जे सम्री, लाख असखित होइ रे ॥५१॥पू०॥
श्री गुरु शासण देवता, वाहण ना रखवाल रे ।
भगति भणी सानिध करइ, फलइ मनोरथ माल रे ॥५२॥पू०॥

राग:—केदार गौडी

दिन २ महोत्सव अति घणा, ओसव भगति सुहाइ ।
मन शुद्धि श्रीगुरु सेवीयइ, जिणि सेव्यइ शिवसुख पइ ॥५३॥पू०॥
भविक जन वन्दै सद्गुरु पाय, श्री खरतर गच्छराय ॥आं०॥
प्रभु पाटिए चउवीसमइ, श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि ।
उद्योतकारी अभिनवो उग्यो पुन्य अकूर ॥५४॥भ०॥
शाह (श्रावक) भडारी बीरजी, साह राका नइ गुरुराग ।
वर्द्धमानशाह विनयइ घणो, शाह नागजी अधिक सोभाग ॥५५॥भ०॥
शाह वठा शाह पन्मसी, देवजीने जेतशाह ।
श्रावक हरखा(पा)हीरजी, भाणजी अधिकउ उच्छाह ॥५६॥भ०॥
भडारी माडण नइ भगति घणी, शाह जावडन घणा भाव ।
शाह मनुआन शाह सहजीया, भडारी अमीड अधिक उछाह रे॥५७॥
नित मिलइ श्रावक श्राविका, सभलइ पूज्य वखाण ।
हीयडउ उलटइ उलसइ, एम जीव्यो जन्म प्रमाण ॥५८॥भ०॥

आग्रह देखी श्री संघनो, पूज्यजी रह्या चउमास।
धर्मनो मार्ग उपदिसइ, इम पहुंतो मननी आश ॥५९॥भ०॥
प्रतिमाप्रतिष्टा थापना, दीक्षा दीयइ गुरुराज।
इम सफल नर भव तेहनो, जे करइ सुकृत ना काज रे ॥६०॥भ०॥

राग : गुड मल्हार

आव्यो मास असाढ़ झबूके दामिनी रे।
जोवइ २ प्रीयडा वाट सकोमल कामिनी रे॥
चातक मधुरइ सादिकि प्रीऊ २ उच्चरइ रे।
वरसइ घण वरसात सजल सरवर भरइ रे ॥६१॥
इण अवसरि श्रीपूज्य महा मोटा जती रे।
श्रावक ना सुख हेत आया त्रंबावती रे।
जोवइ २ अम गुरु रीति प्रतीति वधइ वली रे।
दिक्षारमणी साथ रमइ मननी रली रे ॥६१॥आं०॥
संवेग सुधारसनीर सबल सरवर भर्या रे।
पंच महाव्रत मित्र संजोगइ संचर्या रे।
उपशम पालि उतंग तरंग वैरागना रे।
सुमति गुप्ति वर नारि संजोग सौभाग्यना रे ॥६२॥
प्रवचन वचन विस्तार अरथ तरवर घणा रे।
कोकिल कामिनी गीत गायइ श्री गुरु तणा रे।
गाजइ २ गगन गंभीर श्री पूज्यनो देशना रे।
भवियण मोर चकोर थायइ शुभ वासना रे ॥६३॥

सदा गुरु ध्यान स्नान लहरि शीतल वहइ रे।
कीर्त्ति सुजस विसाल सकल जग मह महइ रे।
सात खेत्र सुठाम सुधर्मह नीपजइ रे।
श्री गुरु पाय प्रसाद सदा सुख संपजइ रे ॥६४॥
सामग्री संयोग सुधम सहुइ सुणइ रे।
फलीया पुण्य व्यापार आचार सुहामणा रे। रे
पुण्य सुगाल हवति मिल्या श्री पूज्यजी रे।
वाहण आव्या खेति घर वाइ हुर ? रमजी रे ॥६५॥
जिहां रे श्रीगुरु आण, प्रवर्ते जिह किणइ रे।
दिन रे अधिक जगीस जो थाइज्यो तिह खिणइ रे।
ज्या लग मेरु गिरिन्द गयणि तारा घणा रे।
ता लगि अविचल राज्ञ करउ, गुरु अम्ह तणा रे ॥६६॥
परता पूरण पास जिणेसर थभणउ रे।
श्रीगुरु ना गुण ज्ञानरूप भवियण भणउ रे ॥
"कुशललाभ" कर जोडि श्रीगुरु पय नमइ रे।
श्रीपूज्य वाहण गीत सुणता मन रमइ रे ॥६७॥



गुरु गीत नं० २३

सभ (व?) नमइ चक्रवर्त्ती जिनचन्दसूरि,
चतुर (विध)संघ चतुरंग सेन सजि, वारे विघन अरि दूरि ।
नव तत नवनिधान जिन पाए, आगम गंगा कूरि ।
चवद विद्या गुण रतन संग करि, नीकउ नीलवट नूरि ॥१॥स०॥
पंच महाव्रत महल (ण?)श्रमण गुण, हइ दरवार हजूरि ।
दरसण ज्ञान चरण त्रिण्ह तीरथ, साधि सकति अरि चूरि ॥२॥स०॥
मरुधर गूजर सोरठ मालव, पूरब सिंध संपूरि ।
षटखण्ड साधि परम गुरु सानिधि, घुरे सुजस के तूरि ॥३॥स०॥
निरमल वंस उदय फुनि पाए, दरसन अंगि अंकूरि ।
मुनि "जयसोम" वदति जय २ धुनि, सुगुरु सकति भरपूरि ॥४॥स०॥

जयप्राप्ति गीत

(२४) राग :

देखउ माई आसा मेरइ मनकी, सफल फलीरे उलटि अंगि न माइ ।
सुजस जसु देसनरइ, नवखंडि दीपायउ नाम रे ।
माम मोटी महि मंडले, सव जन करइ प्रणाम रे ॥१॥जीतउ०॥
श्रीखरतरगच्छ राजीयउ, श्रीजिनचंद्र मुणिंदरे ।
मान मोड्यो कुमति तणउ, त्रिभुवन हुओ आणंद रे ॥२॥अं॥
पाटणि भूप दुर्लभ मुखे, बरस दससइअसो मानि रे ।
सूरि गण पमुह तिहा चउरासी, मढ़पति जीपी आसाणि रे॥३॥जीतउ०॥
दिवस शुभ थान पंचासरइ, करीय परणाम विसार रे ।
सूरि जिणेश्वर पामीयो, खरतर विरुद उदार रे ॥४॥जीतउ०॥

मदन मोल मनरोत्तरउ, पाटण नयर मझार रे।
सली त्रमग सहु समन, प्रत्य नो साहि साधार रे ॥५॥जीत०॥
पूर थिरन उजवालियउ, साहि नामइ सहु लोक रे।
तज खरतर सहगुरु तणउ अपिमनी त थयउ फोक ॥६॥जीत०॥
रिगमनी (अपिमनी) जे हुतउ 'फकरी' चोलनो आल पपाल रे।
स्पष्ट फोधउ खरतर गुरु, जाणइ याल गोपाल रे ॥७॥जीत०॥
निलवट नूर अनिमउ घगउ, खरतर मोह सम जोहि र।
जयु परिगमता जे भिडइ, जय किम पामइ सोड रे ॥८॥जीत०॥
माणिकसूरि पाटइ तपइ, रिहट कुल सिणगार रे।
श्रीजिनचन्द सूरि गुणधा निलउ, सेवक जन सुखकार रे ॥९॥जी०

(२७) विधि स्थानक चोपई

गछवी गच्छ खरतर तणी, जेहनें गुरु श्रीजिनदत्तसूरि।
भद्रसरि भाग्यइ भया, प्रगमन्ता होइ आणद पूरि कि ॥१॥
सूरि शिरोमणि चिरजयउ, श्रीजिनचन्द्रसूरि गणधारि।
कुमति दल जिण भाजियउ, वर्त्या जग माहिं जय ? कार कि ॥२॥
बालपणइ चारित लियउ, विद्या बुद्धि विनय भडार।
अविधि पथ जिण परिहरी धारइ पच महाव्रत धार कि ॥३॥
गुण छत्तीस सदा धरइ, कलिकाले गोयम अवतार।
सहु गच्छ माह सिर धणी, रूप मयण मनायउ हार कि ॥४॥
सूरि "जिनेश्वर" जगतिलउ तासु पाटाऽभय दव विख्यात।
वृत्ति नवांगि जिणइ करी, तेवो खरतर जगटावदात कि ॥५॥

श्रीसेढी तटनी तटइ, प्रगट कियउ जिण थंभण पास ।
कुष्ट गमाड्यउ देहनौ, ते खरतर गच्छ पूरइ आस कि ॥६॥
संवत सोल सत्तोतरइ (१६१७), अणहिल पाटण नगर मझार ।
श्रीगुरु पहुंता विचरता, सहु भवियण मन हर्ष अपार ॥७॥
केई कुमति कलंकिया, बोलइ सूत्र अरथ विपरीत ।
निज गुरु भाषित ओलवइ, तिहा कणि श्रीगुरु पाम्यौ जीत कि ॥८॥
कंकोली मही मूलगी, पंडित तणौ वहै अभिमान ।
सागर छीतर सम थयो, जिहि उदयौ खरतर गुरु भानि कि ॥९॥
पाटण माहि पंचासरो, पाडा पाखलि जे पोशाल ।
पौल देई पैशी रह्यौ, जे मुखि लावत आल पंपाल कि ॥१०॥
गच्छ चौरासी मेलवी, पंच शास्त्र नी साखि उदार ।
जीत्यउ खरतर राजियौ, ए सहुको जाणै संसार कि ॥११॥
श्रुति उघाड़ा पौरसी, बहु पड़िपुना कहंतां दोष ।
मृषावाद इम बोलता, बीजौ व्रत किम पामे पोष कि ॥१२॥
घणा दिवस ना बाकुला, माडा गोरस लीधा वीर ।
विधिवादइ साधु लिया, ठामि २ ए दीसै हीर कि ॥१३॥
वर्धमान जिन वा (पा?) रणै, लीधा वासी शुद्ध आधा(हा?)र ।
संघट्टा तेहना तुम्हे, टालौ छौ ए कवण आचार कि ॥१४॥
पर्व चारि पोसह तणा, बोलइ सूत्र अरथ नै भाखि ।
पर्व पखै पोसह करौ, तेहनी नवि दीसै किह साखि कि ॥१५॥
सातवीस झाझेरडा, इम पूछइवा छइ बहु बोल ।
ते सूधी परि सद्दहौ, भव भ्रामक कांइ (ग) वाओ निटोल कि ॥१६॥

रोस रोस हम मनि नहीं, एक जीभ किम करउ वखाण।
श्रीजिनकुशल सूरिन्द्र नैं, समरणि लाभै कोडि कल्याण कि ॥१७॥

गहूली नं० (२६) राग—गूजरी।

अब मइ पायउ सब गुणजाण।
साहि अकबर कहइ ए सुहगुरु, जिनशासन सुलताण ॥अब०॥आंकणी॥
यतीय सती मइ बहुत निहाले, नही को एह समान।
के क्रोधी क लोभी कूडा कइ मन धरइ गुमान ॥१॥अब०॥
गुरुनी वाणि सुणी अवनिपती, बूझवइ थइ सन्मान।
देस विदेश जीऊ हिंस्या टली, भेजी निज फुरमान ॥२॥अब०॥
श्रीजिनमाणिक सूरि पटोधर, खरतरगच्छ राजान।
चिरजीवो जिनचंद यतीश्वर, कहइ मुनि"लब्धि"सुजान॥३॥अब०॥

गहूली नं० (२७) राग—गूजरी।

दुनिया चाहइ दो सुलतान।
इक नरपति इक यतिपति सुन्दर, जाने हइ रहमान ॥दु०॥आंकणी॥
राय राणा भू अरिजन साधी, वरतावो निज आण।
बर्बर बस हुमाऊ नंदन, अकबर साहि सुजाण ॥१॥दु०॥
विधि पथ हीलक दुरजन जनक, गाली मद अभिमान।
श्रीरत सुत सब सूरि सिरोमणी, जग माहि "जुगप्रधान" ॥२॥दु०॥
बइठ सिंहासण हुकुम सुनावति, को नवि खडत आण।
सिर 'मलक' बहु उनकु सेवति, इनकु मुनि राजान ॥३॥दु०॥

इक छत्र सिरु वरि मथाडंबर, धारनि दोऊ समान ।
कहति "लब्धि" जिनचंद धरावर, प्रतिपो जहा दोऊ भान ॥आ० दु०॥

गहुंली नं० (२८) रागः धवल धन्याश्री ।

नीको नीकउरी जिनशासनि ए गुरु नीको ।
युगप्रधान जगि जंगम प्रही,दीयउ जसु अकबर टो टो?)कउरी॥जि०॥आ०
राज काज (आज) हम सुन्दर, सफल भयउ अब नीको ।
साहि अकबर कहइ जु मोकुं, दरसण थयो गुरुजी कउरी ॥१॥जि०॥
मोहन रूप सुगुरु वडभागी, लह्यो मान श्रीजीउ को ।
जे गुरु उपर मद मच्छर धरता, हुइ मुख तिहकु फीकउ रो॥२॥जि०॥
श्रीगुरु नामि दुरति हरि भाजइ, नाद सुणी जिउ सीह को ।
सार (ह?)श्रीवंत सुतन चिर जीवउ, साहिब "लब्धि" मुनी को ॥३॥

गहुंली नं० (२९) रागः सोरठो ।

आज उछरंग आणंद अंगि उपनो,
आज गच्छ राज ना गुण थुणीजइ ।
गाम पुरि पाटणइ रंगि वधावणा,
नवनवा उछव संघ कीजइ ॥ आज०॥आ०॥
हुकम श्री साहि नइ पंच नदि साधिनइ,
उदय कीयउ संघनो सवायौ ।
संघपति सोमजी, सुणउ मुझ बिनती,
सोय जिणचंद गुरु आज आयो ॥१॥आ०॥

साहि प्रतिबोधना पंच नदी साधता,

सुजसमइ जास जगि भेर वागी ।

"लब्धिकल्लोल" मुनि कहइ (वदति) गुरु गावता,

आज मुझ परम मनि प्रीत जागी ॥२॥आ०॥

—

(३०) गहूंली

सुगुरु मेरउ कामित कामगवी ।

मनशुद्ध साही अकबर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥१॥सु०॥

सकल निसाकर मंडल समसरि, दीपति वदन छवि ।

महिमंडल मइ महिमा जाकी, दिन प्रति नवीनवी ॥२॥सु०॥

जिनमाणिक सूरि पाटि उदयगिरि श्रीजिनचंद्र रवी ।

पसन ही हरखत भयउ मन मइ, "रत्न निधान" कवी ॥३॥सु०॥

———

(३१) सुयश गीत ॥ राग —धन्याश्री ॥

नमो सूरि जिणचन्द दादा सदादीपतउ,

जीपतउ दुरजण जण विशेष ।

रिद्धि नवनिद्धि सुखसिद्धि दायक सही,

पादुका प्रहसमइ उठि दृग्ग ॥ १ ॥ नमो० ॥

सघवट मोटिकउ बोल साटयउ खरउ,

शाहि सलेम जसकीध सेवा ।

गच्छ चउरासी ना मुनिवर रासिया,

साझीया सूरिजिणचन्द देवा ॥ २ ॥ नमो० ॥

भाग सोभाग वैराग गुण आगला,
जोवता कलियुगि जीव जाण्यइ ।
अन्तरंगि आतम धरम कारिज(क)री,
स्वर्ग पहुता पछी सुर वखाण्यइ ॥ ३ ॥ नमो० ॥
खरतर सेवका सुरनर साखियइ,
कष्ट संकट सवि दूर कीजइ ।
"हर्षनंदन" कहइ चतुर्विध श्रीसंघ,
दिन दिन दौलति एम दीजइ ॥ ४ ॥ नमो० ॥



॥ श्रीजिनसिंहसूरि गीतानि ॥



राग—वेलाउल

(१)

शुभ दिन आज वधाइ, धवल मंगल गावो माइ ।
श्रीजिनसिंहसूरि आचारज, दीपइ बहुत सवाइ ॥१॥शुभ०॥
शाहि हुकम श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, सइहथि दीन वडाइ ।
मंत्रीश्वर कर्मचंद्र महोच्छव, कीनउ तवहु वनाइ ॥२॥शु०॥
पातिशाह अकबर जाकु मानत, जानत सब लोकाइ ।
कहइ 'गुणविनय' सुगुरु चिरजीवउ, श्रीसंघ कु सुखदाइ ॥३॥शु०॥

(२) राग गौवाडउ

श्रीगौतम गुरु पायनमी, गाउ श्री गच्छराज
श्रीजिनसिंघ सूरीसरु, पूरवइ वछित काज ॥
पूरवइ वछित काज सहगुरु, सोभागी गुण सोहइ ए
मुनिराय मोहन वेलि ने परे, भविक जन मन मोह्द ए ।
चारित्रपात्र कठोर किरिया, धरमकारज उद्यमी
गच्छराजना गुणगाइस्युजी, श्रीगौतम गुरु पयनमी ॥१॥
गुरु लाहोर पधारिया, तेडाव्या कर्मचंद ।
श्री अकबर ने सहगुरु मिल्या, पाम्या परमाणद ।
पामीया परमाणद ततक्षण, हुकम दिउ उठो ने कियो ।

अत्यंत आदर मान गुरुने, पादशाह अकबर दियउ।
धर्म गोष्ठि करता दया धरता, हिंसा दोष निवारिया।
आणंद वरत्या हुआ ओच्छव, गुरु लाहोर पधारिया ॥२॥
श्रीअकबर आग्रह करी, काश्मीर कियो रे विहार,
श्रीपुरनगरसोहामणुं ,तिहा वरतावी अमार ॥
अमार वरती सर्व धरती, हुओ जयजयकार ए,
गुरु सीत ताप(ना) परीसह. सह्या विविध प्रकार ए।
महालाभ जाणी हरख आणी, धीरपणुं हियडे धरी,
काश्मीर देश विहार कीधो, श्रीअकबर आग्रह करी (३)
श्री अकबर चित रंजियो, पूज्यने करइ अरदास।
आचारिज मानसिंघ करउ, अम मन परमउल्लास
अम्ह मन आज उलास अधिकउ, फागुण शुदी बीजइ मुदा।
सइहत्थि जिनचंदसूरी दीधी, आचारिज पद संपदा।
करमचंद मंत्रीसर महोत्सव, आडंबर मोटो कियो।
गुरुराजना · · ··· ········· ··· ॥४॥
गुण देखि गिरुआ, वरीस सह गुरु, चापडा चडती कला।
चापशी साह मल्हार चापल. देवि माता तन इला,
पादसाह अकबरसाहि परख्यो, श्रीजिनसिंघ सूरि चिरजयउ।
आसीस पभणइ "समयसुन्दर", संघ सहु हरखित थयउ ॥५॥

इति श्रीजिनसिंहसूरीणा जकड़ी गीतं समाप्तम्



(३) गुरु गीतम्

आज मेरे मन की आश फली ।
श्रीजिनसिंहसूरि मुख देखत, आरति दूर टली ॥१॥
श्रीजिनचंद्रसूरि सइहत्थइ, चतुर्विध संघ मिली ।
शाहि हुकम आचारज पदवी, दीधी अधिक भली ॥२॥
कोडि वरिस मंत्री श्रीकरमचंद्र, उत्सव करत रली ।
"समयसुन्दर" गुरुके पदपंकज, लीनो जेम अली ॥३॥

---

(४)
जिनसिंहसूरि हींडोलणा गीत

सरसति सामणि वीनवुं, आपज्यो एक पसाय ।
श्रीआचार्य गुण गाइसुं, हीडोलणा रे आणंद अंगि न माय ॥१॥ही०॥
आज श्रीजिनसिंहसूरि, ही० ग्रह ऊगमत(ल)इ सूरि ।ही०।
मुझ मन आणंद पूरि, ही० दरसण पातिक दूरि ॥आ०॥
मुनिराय मोहण वल्डी, महियल महिमा आज ।
चंद जिम चढती कला हीं० श्रीसंघ पूरवइ आस ॥२॥
सोभागी महिमा निलउ, निलवट दीपइ नूर ।
नरनारि पाय कमल नमइ, ही० प्रगट्यो पुण्यपडूर ॥३॥ही०॥
चोपडा वशइ परगडउ, चांपसी शाह मल्हार ।ही०।
मात चांपल दे उरि धर्यो, ही० प्रगटयउ पुण्य प्रकार ॥४॥ही०॥
चौरासी गच्छ सिर तिलउ, जिनसिंहसूरि सूरीस ।
चिरजयउ चतुर्विध संघ सुं, ही० 'समयसुन्दर' द्यइ आसीस ॥५॥ही०

---

(५) जिनसिंहसूरि गहुंली

चालउ सहेली सहगुरु वांदिवाजी, सखि मुझ मनि वांदिवानो कोड़ रे।
श्रीजिनसिंहसूरि आवीयाजी, सखी करूं प्रणाम कर जोड़ रे ।१।चा०
मात चापलदे उरि धर्याजी, सखी चापसी शाह मल्हार रे ।
मनमोहन महिमा निलउजी, सखी चोपड़ा साख शृङ्गार रे ।२।चा०
वइरागइ व्रत आदर्योजी, सखी पंच महाव्रत धार रे ।
सकल कलागम सोहताजी, सखी लब्धि विद्या भंडार रे ।।३।।चा०।।
श्री अकबर आग्रह करिजी, सखी कासमीर कियउ विहार रे ।
साधु आचारइ साहि रंजीयउ रे, सखी तिहां वरतावि अमारि रे ।४।चा०
श्रीजिनचंद्रसूरि थापीयउजी, सखी आचारिज निज पटधार रे ।
संघ सयल आस्या फली, सखी खरतर गच्छ जयकार रे ।५।चा०।
नंदि महोच्छव मंडीयउजी, सखि कर्मचंद्र मंत्रीस रे ।
नयर लाहोर वित वावरइजी, सखी कवियण कोडि वरीस रे ।६।चा०।
गुरुजी मान्या रे मोटे ठाकुरेजी, सखी गुरुजी मान्या अकबरसाहि रे।
गुरुजी मान्या रे मोटे ऊंबरेजी, सखी जसु श त्रिभुवनमाहि रे ।७।चा
मुझ मन मोह्यो गुरुजी तुम गुणेजी, सखि जिम मधुकर सहकार रे ।
गुरुजी तुम दरसण नयणे निरखताजी, सखी मुझमनि हर्षअपार रे ।८।
चिर प्रतपइ गुरु राजीयउजी, सखी श्रीजिनसिंघसूरीस रे ।
'समयसुंदर' इम विनवइजी, सखी पूरउ माहरइ मनही जगीस रे।९।चा०

वधावा (६)

आज रंग वधामणां, मोतीयडे चउक पूरावउ रे ।
श्रीआचारिज आविया, श्रीजिनसिंहसूरि वधावउ रे ।।१।।आ०।।

जुगप्रधान जगि जाणीयइ, श्रीजिनचंदसूरि मुणिंद रे।
सइहथि पाटइ थापीया, गुरु प्रतपइ तजि दिगंद रे ॥२॥आ०॥
सुर नर किन्नर हरषीया, गुरु सुललित वाणि वखाणइ रे।
पातिसाहि प्रतिबोधियउ, श्रीअकबर साहि सुजाण रे ॥३॥आ०॥
बलिहारी गुरु वयणडे?(वयगडे)बलिहारी गुरु मुखचन्द रे।
बलिहारी गुरु नयणडे, पेखहात परमाणद रे ॥४॥आ०॥
धन चापल दे कूखडी, धन चापसी साह उदार रे।
पुत्र रत्न जिहा उपना, श्री चोपड़ा सारा शृङ्गार रे ॥५॥आ०॥
श्री खरतर गच्छ राजियउ, जिनशासन माहि दीवउ रे।
"समयसुंदर" कहइ गुरु मेरउ,श्रीजिनसिंघसूरि चिर जीवउ रे॥६॥आ०

इति श्री श्री श्री आचार्य जिनसिंहसूरि गीतम्
॥ श्री हर्षनन्दन मुनिनालिपीकृतम् ॥

*

(७)

आज कुं धन दिन मेरउ।
पुन्य दशा प्रगटी अब मेरी, पेखतु गुरु मुख तेरउ ॥ १ ॥ आ० ॥
श्री जिनसिंहसूरि तुहि (२) मेरे जीउ मे, सुपनइ मइ नहींय अनेरो।
कुमुदिनी चन्द जिसउ तुम लीनउ, दूर तुही तुम्ह नेरउ ॥२॥आ०॥
तुम्हारइ दरसण आणद (मोपइ) उपजती, नयन को प्रेम नवेरउ।
"समयसुन्दर"कहइ सब कु वलभ, जीउ तु तिन थइ अधिकेरउ॥३आ०

—

(८) चौमासा गीत।

श्रावण मास सोहामणो, महियल वरसे मेहो जी।
वापीयड़ारे पिउ २ करइ, अम्ह मनि सुगुरु सनेहो जी॥
अम मन सुगुरु सनेह प्रगट्यो, मेदिनी हरयालियां।
गुरु जीव जयणा जुगति पालइ, वहइ नीर परणालियां॥
सुध क्षेत्र समकित बीज वावइ, संघ आनंद अति घणो।
जिनसिंघ सूरि करउ चउमासउ, श्रावण मास सोहामणो॥ १॥
भलइ आयउ भाद्रवउ, नीर भर्या नीवाणो जी।
गुहिर गंभीर ध्वनि गाजता, सद्गुरु करिही वखाणो जी॥
वखाण कल्पसिद्धांत वाचइ, भविय राचइ मोरड़ा।
अति सरस देसण सुणी हरषइ, जेम चंद चकोरड़ा॥
गोरडी मंगल गीत गावइ, कंठ कोकिल अभिनवउ।
जिनसिंहसूरि मुणिंद गाता, भलै रे आव्यो भाद्रवउ॥२॥
आसू आस सहु फली, निरमल सरवर नीरो जी।
सद्गुरु उपशम रस भर्या, सायर जेम गंभीरो जी॥
गंभीर सायर जेम सद्गुरु, सकल गुण मणि सोहए।
अति रूप सुंदर मुनि पुरंदर, भविय जण मण मोहए॥
गुरु चंद्रनो परि झरइ अमृत, पूजतां पूरइ रली।
सेवतां जिनसिंघ सूरि सद्गुरु, आसू मास आसा फली॥ ३॥
काती गुरु चढती कला, प्रतपइ तेज दिणंदो जी।
धरतीयइ रे धान नीपना, जन मनि परमाणंदो जी॥
जन मनि परमाणंद प्रगट्यो, धरम ध्यान थया घणा॥

घलि परब दिवाली महोत्सव, रलीय रग वधामणा ॥
चउमास च्यार मास जिनसिंघ, सूरि सपद मागला ।
वीनवइ वाचक 'समय सुन्दर", करती गुरु चढती कला ॥४॥

—

(९) गहूली

आचारिज तुम मन मोहियो, तुम जगि मोहन वेलि ।
सुन्दर रूप सुहामणो, वचन सुधारस केलि ॥ १ ॥आ०॥
राय राणा सब मोहिया, मोह्यो अकबर साह रे ।
नर नारी रा मन मोहिया, महिमा महियल माह रे ॥ २ ॥आ०॥
कामण मोहन नवि करो, सुधा दीसो छो साधु रे ।
मोहनगारा गुण तुम तणा, ए परमारथ साध रे ॥ ३ ॥आ०॥
गुण दगी राचे सहुको, अवगुण राचे न कोय रे ।
हार सहुको हियड धरे, नेउर पाय तलि होय रे ॥ ४ ॥आ०॥
गुणवंत रे गुरु अम्हतणा, जिनसिंहसूरि गुरुराज रे ।
ज्ञान क्रिया गुण निर्मला, "समय सुन्दर" सरताज रे ॥ ५ ॥आ०॥

(१०) गुरुवाणी महिमा गीत

गुरु वाणी (जग) मंगलइ मोहीयइ, साचा मोहण वलो जी ।
सांभलतां सहुनइं सुख सपजइ, जाणि अमी रस रलो जी ।१।गुरु०॥
वानन चंदन तइ अति सीतली, निरमल गंग तरंगो जी ।
पाप पखालइ भवियण जण तणा, लागो मुझ मन रंगो जी ।२।गुरु०॥

वचन चातुरी गुरु प्रतिबूझवी, साहि "सलेम" नरिंदो जी ।
अभयदान नउ पडहो बजावियउ, श्रीजिनसिंह सूरिंदो जी ।३।गुरु०।।
चोपड़ा वंशइ सोभ चढ़ावतउ, चापसी शाह मल्हारो जी ।
परवादी गज भंजण केसरी, आगम अर्थ भंडारो जी ।४।गुरु०।।
युगप्रधान सइंहाथइ थापिया, अकबर शाहि हजूरो जी ।
'राजसमुद्र' मनरंगइ उचरइ, प्रतपउ जां ससि सूरो जी ।५।गुरु०।।

(११) गच्छपति पद प्राप्ति गीत

श्रीजिनसिंहसूरि पाटइ बइठा, श्रीसंघ आज्ञ्या (झा?) मान रे ।
खरतरगच्छपति साही (पदवी) पाइ, वाध्यउ दिन दिन वान ।। १ ।।
माई ऐसा सदगुरु वंदीयइ, जंगम जुगहपूरधान रे ।
कोडि दीवाली राज करउ ज्युं, ध्रुवतारा असमान रे ।२।मा०।।
सूरिमंत्र सिर छत्र विराजइ, क्षमा मुगट प्रधान रे ।
सुमति गुपति दुइ चामर वींजइ, सिंहासण धर्मध्यान रे ।३।मा०।।
श्रीसंघ रे युगप्रधान पदवी लही, आया "मकुरबखान" रे ।
साजण मण चिंत्या हुआ, मल्या दुरजण माण रे ।४।मा०।।
श्रीसंघ रंग करइ अति उच्छव, दीधा बहुला दान रे ।
दश दिशि कीर्त्ति कवियण बोलइ, 'हरषनन्दन' गुणगान रे ।५।माई०।।

(१२) ।।निर्वाण गीतं ।। ढाल: निंदलरी

मेडतइ नगरि पधारीया, श्रीजिनसिंह सुजाण हो । पूजजी० ।
पोस वदि तेरस निसि भरइ, पाम्यउ पद निरवांण हो ।१।पूजजी०।।

तुम पउढया माहरे किम सरइ, पउढण नी नही वार हो ।पूजजी०॥
नयण निहालउ नेह सु, वइठउ सहू परिवार हो ॥ आकणी० ॥
दीर्घ नींद निवारीयइ, धम तणइ प्रस्ताव हो । पूजजी० ॥
राइ प्रायच्छित साचवउ, पडिकमणउ शुभ भाव हो ॥१॥पू०॥
झालर वाजी दहरइ, वाजउ सख पडूर हो ।
तरवर पखी जागीया, जागउ सुगुरु सनूर हो ॥२॥पू०॥
प्रहफाटी पगडउ थयउ, क्षीयउ पिण फाटण हार हो ।
बोलाया बोलइ नहीं, कइ रूठउ करतार हो ॥४॥पू०॥
समरइ सगला उमरा, "मुकुरवखान" नवाव हो ॥पू०॥
कागल दस दिउन ना, वाची करइ (उ?) जवाब हो ॥५॥पू०॥
लहुडा चेला लाडिला, मी(वि?)नति करइ विशेष हो ॥पू०॥
पाटी परवाडि दोजीयइ, सुहइर सामउ देख हो ॥६॥पू०॥
ए पातिसाही मेवडउ, ऊभो करइ अरदास हो ॥पू०॥
एक घडी पटसु नहीं, चालउ श्री जी पास हो ॥७॥पू०॥
आवी वादिवा श्राविका, ओसवाल श्रीमाल हो ॥पू ॥
यथासमाधि कहइ करउ, एक वखाण रसाल हो ॥८॥पू०॥
चोलणहारउ चलि गयउ, रह्या बोलावण हार हो ॥पू०॥
आप सवारथ सीझव्यउ, पाम्यउ सुरलोक सार हो ॥९॥पू०॥
मौन ग्रह्यउ मनचिंतवी, कीधउ कोइ आलोच हो ॥पू०॥
सगला शिष्य नवाजीया, भागउ मूल थी सोच हो ॥१०॥पू०॥
पाट तुम्हारइ प्रतपीयउ, श्रीजिनराज सनूर हो ॥पू०॥
आचारिज अधिको कला, श्रीजिनसागर सूर हो ॥पू०॥११॥
भवि २ थाज्यो वदना, श्रीजिनसिंह सूरिंद हो ॥पू०॥
सानिध करज्यो सर्वदा, 'हरपनन्दन' आणद हो ॥१२॥पू०॥

श्री क्षेमराज उपाध्याय गीतं

सरसति करि सुपसाउ हो, गाउं सु सुहगुरु राउहो ।

गाइसुं सुह गुरु सफल सुरतरु, गच्छि खरतर सुहकरो ।

महियलइ महिमावंत मुणिवर, बालपणि संजम धरो ।

सिद्धान्त सार विचार सागर, सुगुणमणि वयरागरो ।

जयवंत श्री उवझाय खेमराज, गाइसु सही ए सुह गुरो ॥१॥

भवियण जण पडि बोहइ हो, छाजहडह कुलि सोहइ हो ।

छाजहड कुलि अवतरीय सुहगुरु, साह लीला नन्दणो ।

वर नारि लीलादेवी उयरइं, पाप तापह चन्दणो ।

दिखीया श्री जिनचन्द्रसूरि गुरि, संवत पनर सोलेत्तरइ ।

सीखविय सुपरइं सोमधज गुरि, भवियण, (जण) संशय हरइ ॥२॥

उपसम रसह भंडारू हे, संजमसिरि उर हारू ए ।

संजम सिरि उर हार सोहइ, पूरव ऋषि समवडि धरइ ।

नवतत्त नवरस सरस देसण, मोह माया परिहरइ ।

जिणआण धरइ हीयडइ, पंच पमाय निवारए ।

उवझाय श्री खेमराज सुहगुरु, चवद विद्याधारए ॥३॥

कनक भणइ सिरनामी हे, मइ नवनिधि सिद्धि पामी हे ।

पामीय सुहगुरु तणीय सेवा, सयल सिद्धि सुहामणी ।

चाउले चौक पूरेवि सुहव, वधावउ वर कामिणी ।

दीपंत दिनमणी समउ तेजइ भवियजण तुम्हि वंदउ ।

उदिवंता श्री उवझाय खेमराज, 'कनक' भणइ चिरनंदउ ॥४॥

गुरु गीतं (वर्द्ध० भं० गुटका से) १७ वीं सदी लि०

श्री भावहर्ष उपाध्याय गीतं

श्री सरसति मति दिउ घणी, सुहगुरु करउ पसाय ।
हरष करी हु वीनवु, श्रीभावहर्ष उवझाय ॥ १ ॥
श्री भावहर्ष उवझायवर, प्रतपउ कोडि वरीस ।
तूठी सरसति देवता, हरषि दीयइ आसीस ॥ २ ॥
तुडि करीनइ किम तोली(य)इ, धीर गम्भीर गुणेहि ।
मेरु महासागर मही, अधिका ते गुरु देहि ॥ ३ ॥
दिन दिनि सजमि सचडइ सायर जिम सित । पारित ।
तप जप खप तेहवो करइ, जिसी न लाभइ लाखि ॥ ४ ॥
सुरतरु जिम सोहामणा, मन वछित दातार ।
हर्ष ऋद्धि सुख सपदा, तउ श्रावण जलधार ॥ ५ ॥

राग :—सोरठो

जलधर जिउ जगत जीवाडइ, मन परम प्रीति पदि चाडइ ।
देसण रस सरस दिखाडइ, दुख दह्नति दूरि गमाडइ ॥ ६ ॥
श्रावक चातक उछाह, मोर जीम श्री सघ साह ।
सरवर ते भवियण श्रवण, वाणी रमि भरियइ विचण ॥ ७ ॥
ऊगइ तिहा सुकृत अकूर, टलइ मिथ्या भर तमल (तिमिर?)पूर ।
सताप पाप हुइ चूर, जिन शासन निमवणउ नूर ॥ ८ ॥
श्री भावहर्ष उवझाय, ते जलहर कहियइ न्याय ।
उपसम रसि पूरित काय, सोहइ ससारि सझाय ॥ ९ ॥

दूहा:- श्रीजिन माणिकसूरि गुरु, दीधउ पद उवझाय ।
जेसलमेरइ माहि मुदि, दसमि नमउ तसु पाय ॥ १० ॥
सुगुरु पाय प्रमोद नमीयइ, दुख दुरगति दूरइ गमीयइ ।
भव सागरि भिमि न भमीयइ, सुख संपति सरिसा रमीयइ ॥११॥
खरतरगछि पूनिम चन्द, गुरु दीठइ मनि आणंद ।
सेवंता सुरतरु कंद, रंजइ गुरु वचनि नरिंद ॥१२॥
साह कोडा नंदन धन्न, कोडिम दे उयरि रतन्न ।
'कुलतिलक' सुगुरु चा सीस, उवझाय सदा सुजगीस ॥१३॥
श्री भावहर्ष हितकारी, सुधउ मुनि पंथ विचारी ।
पंच समिति गुपति गुणधारी, विहरइ गुरु दोष निवारी ॥१४॥
श्री भावहर्ष उवझाया, चिरजीवउ मुनिवर राया ।
मइं हरखइ सुहगुरु गाया, मुझ हीयडइ अधिक सुहाया ॥१५॥
(संग्रहस्थ पत्र १ तत्कालीन लि० रचित)

सुखनिधान गुरुगीतम्

राग धन्याश्री

सुगुरु के पणमो भवियण पाया,
श्रीसमयकलश गुरु पाटि प्रभाकर, सुखनिधान गणिराया ।१।
हुंवड वंस विख्यात सुणीजइ, द्यइ सुख सम्पति ध्याया ।
गुणसेन वदति सुगुरु सेवातइं, दिन २ तेज सवाया ।२।

* १ सं० १६८९ चैत्रछदि ३ दिने शुक्रवारे पं० गुणसेन लिखीतं
ऋषिदेव रतन वाचनार्थ (श्रीपूज्यजी संग्रह हथगुटकेसे)



श्री साधुकीर्त्ति जयपताका गीतम्



॥ जयपताका गीत ॥

सोलहसइ पचवीसइ समइ, आगरइ नयरि विशेष रे।
पोसहकी चरचा थकी, खरतर सुजस नी रेख रे।१।
खरतर जइत पद पामीयउ, साधुकीर्त्ति जय सार रे।
साहि अकबर कहाउ श्रीमुखइ, पण्डित एह उदार रे।खर०
"बुद्धिसागर" तणी बुद्धि गइ, भाखीयउ अति अविचार रे।
पट्ट थया तपा ऋषिमती, खरतरे लहयउ जयकार रे।२।
सस्कृत तपलो न बोलीयउ, थया खिसाण अपार रे।
चतुर अकबर सुरत पडिते, करी सागर बुधि हार रे।३। खर०
तर्क व्याकर्ण पढयउ नहीं, मरम ए सुणयउ अखण्ड ए।
मलम सागर बुधि ऊपढयउ, जाणीयउ अशुचि नउ पिंड रे।४।ख०
गंगदासि साह धोधू तणइ, मोडीयउ कुमत नउ माण रे।
वचन पातिशाह ए बोलियउ, बुद्धिसागर अजाण रे।५। खर०
पीतलि माहि थी नीकली, अहना रङ्ग पतङ्ग रे।
ऋपिमती सहु अचर पहवा, सागर बुद्धि तणइ भग रे।६। खर०
हुकम करि पातिशाहइ दीया, भेरि दमाम नीसाण रे।
गाजतइ वाजतइ आवीया, खरतर सुजस वखाण रे।७। खर०

श्रीजिनचन्द्रसूरि सानिधइ, "दया कलश" गुरु सीस रे।
"साधुकीर्त्ति" जगि जयत छइ, कहइ कवि "जल्ह" जगीस रे।८।ख०
॥ इति श्री साधुकीरति गुरु जयपताका गीतं।

(२)

संवत् दस सय असीयइ पाटणइ, ची (चैत्य) वासी मलिमाणो जी।
खरतर विरुद लहयउ दुर्लभ मुखइ, सूरि जिणेसर जाणोरे। १।
जय पाडयउ (पाम्यो?)खरतर पुरि आगरइ, साधुकीर्त्ति बहु नूरे जी।
पोसह पर्व दिनइ जिण थापीयउ, अकबर साहि हजूरे रे।२। जय
आगरइ पुरि मिगसरि धुरि वारसो, सोलपंचवीस वरीस जी।
पूरव विरुद सही उजवालियउ, साधुकीर्त्ति सुजगीशो रे।३।ज०
च्यारि वरण खरतर (कुं)जय (जय)करि, जाणइ बाल-गोपालजी।
वूठा वाट वटाऊ सहु कहइ, कुमती सिर पंच ताळोजी।४। जय
कुबुद्धि पट्ट थयउ तउ पिण सही, नीलज अनइ......................॥
तस्कर जिम दुइ भेरि वजाविनइ, आव्यउ रयणी ठामजी।५।ज०
चाइमल मेघदास नेतसी, ले अकबर फुरमाणो जी।
पंच शब्द वजावी जय लह्यउ, खरतर कीयउ मंडाणो जी।६।ज
श्रीजिनदत्त कुशलसूरि सानिधइ, उत्तम पुण्य प्रकारो जी।
कर जोडी नइ"खइपति"वीनवइ,खरतर जय-जयकारोजी।७।ज
इति श्री जयपताका गीतं ॥ श्री। श्रा० भरही पठनार्थं ॥
(पत्र १ श्रीपुजजी सं०)

(३) गहूली राग—असावरी

वाणि रसाल अमृत रस सारिखी, मोह्या भवियण लोइ जी ।
सूत्र सिद्धन्त अर्थ सूधा कहइ, सुणता सवि सुख होइ जी ॥१॥
सद्गुरु साधुकीर्त्ति चिरु नन्दीयइ, परम रस भंडारो जी ।
शील सुदृढ़ संजम गुण आगला, सयल संघ सुखकारो जी ।स०।
पंच सुमति त्रण गुप्ति भली परइ, पालइ निरतीचारो जी ।
जे नर-नारी पय सेवा करइ, उत्तर तरइ संसारो जी ॥२॥स० ।
खरतिर गच्छ गुरु पदमी कला, ओसवंश सिणगारो जी ।
धन नेमल द जिणि उयरइ धर्या, सचिती कुलि अवतारो जी ।३।स०
दरसणि नवनिधि सुख सम्पत्ति मिलइ, दयाकलश गुरु सीसोजी ।
"देवकमल" मुनि कर जोडी भणइ, पूरवउ मनह जगीसो जी ।४।स०

॥ सं० १६२५ वर्षे श्रावणसुदि १० आगरा नगर जिनचन्दसूरि राज्ये हर्षकीर्त्ति लिखित श्राविका साहिबो पठनार्थं ॥ पत्र १ श्री-पुज्यजीय संग्रहमें । (अनाथी, पार्श्व गीतसह)

(४) कवित्त

साधुकीर्त्ति साधु अगस्ति जिसो, मत सागरको नाद उतार्यो ।
पति साह अकबरके दरबार जीतउ जिणवाद कुमति विदार्यो ।
पीठउ जिण तिण पकवान भंडार दीयउ लघु नीति विचार्यो ।
सउच्चउ अद्भ सागर माजि गयो,
गरज इक हानि भज गच्छ निकायो ।१।

कवि कनकसोम कृत

जइतपद वेलि

सरसति सामणी वीनवुं, मुझ दे अमृत वाणि।
मूल थकी खरतर तणा, करिस्युं विरुद वखाणि ॥१॥
श्रावक आवी मिली सुणो, मनधरि अति आणंद।
चित्त विषवाद न को धरउं, साचउं कहइ मुनिंद ॥२॥
सोलहसय पंचीसइ समइं, वाचक दया मुनीस।
चउमासि आया आगरे, वहु परि करि सुजगीस ॥३॥
"रतनचन्द" वयरागी गणि, पण्डित "साधुकीर्त्ति"।
"हीररंग" गुण आगलो, ज्ञाता "देवकीरत्ति" ॥४॥
तप करि "हंसकीर्त्ति" भलो, "कनकसोम" जसवंत।
"पुण्यविमल" मनि ध्यान धरि, "देवकमल" वुधिवंत ॥५॥
"ज्ञानकुशल" ज्ञाता चतुर, "यशकुशल" हि जस लिद्ध।
"रंगकुशल" अति रंग करी, "इलानंद" सुप्रसिद्ध ॥६॥
वैरागे चारित्र लीयो, "कीरत्ति(वि)मल" सूजाण।
वड़ जिम साखा विस्तरौ, दिन २ चढ़ते वान ॥ ७ ॥
चालि नितु दिन २ चडतइ वान, श्री संघ दीयइ वहुमान।
तपले चरचा उठाइ, श्रावकने बात सुणाइ ॥८॥
मो सरिखो पंडित जोइ, नही मझि आगरै कोइ।
तिणि गर्व इसो मन कीधउं, बुद्धिसागर अपयश लीधो ॥९॥

श्रावक आगे इम बोलइ, अम्ह गायारस(थी) कुण खोलइ।
श्रावक कहइ गर्व न कीजइ, पूछी पडित समझीजइ ॥१०॥
सधवी सतीदास कु पूछइ, तुम्ह गुरु कोइ इहा छइ।
सघवी गाजी नइ भाखइ, साधुकीर्त्ति छै इम दाखइ ॥११॥
लिखि कागद तिणि इक दीन्हउ, श्रावक वचने न पतीनउ।
पोसह तिहि एक प्रकार भ्रमि भूलउ त अविचार ॥१२॥
साधुकीर्त्ति तत्त्व विचार्या, तत्त्वारथ माहि सभार्यो।
पौषध छइ दोइ प्रकार सूझ्यो नहीं सही गमार ॥१३॥
तिहा लिखत दोष दस दीठा, तपला तव थया निरीठा।
मिली पद्मसुदर नइ भाखउ, गच्छ न्यासीको पत राखउ ॥१४॥
दूहा।—पद्म सुदर इम बोलियउ, वदन नायउ काइ।
स्वारथ पडीओ आपणइ, तउ आयो इण ठाइ ॥१५॥
हिव अपराध खमउ तुम्हे, पड्यो वरासउ एह।
हिव सरणै तुम आविया, काइ दिखाडउ छेह ॥१६॥
तपले ने सतोषीउ, पिणि साच्यउ मन माहि।
साधुकीरति जिहा आविस्ये, तिहा हु आविसु नाहि ॥१७॥
सुणी बात खरतर खरी, सघ मिल्यो सब आइ।
गाल वजाडउ ऋषिमती, हिव ढीला तुम्ह काइ ॥१८॥
च।लि—ढीला हिव हम्हे न होस्या, ऋषिमतीयनकी पत खोस्या।
खरतर तेजसी बोलायो बहु आणद सु त आव्यो ॥१९॥
पचे मिलि वात पतोठी, परगच्छी हुआ बसीठी।
चउथान कि चरचा थापो, ते घर लिखि अनइ अम्ह आपउ ॥२०॥

तपला रिप तुं सोचावइं, इहा पद्मसुंदर नहीं आवइं ।
कारिस्या पातिसाह हजूर, खरतर घरि वाज्या तूर ॥२१॥
मिगसर वदी छट्ठ प्रभातइं, मिलिआ पातिसाह संघातइं ।
वाइमल्ल बोलायउं पिछाणी, साहि बात सहु गुदराणी ॥२३॥
आणंदइ खरतर माल्हइं, कविराज कइंकी आहवालइं ।
निज २ थानक सवि आया, विहाणइं कविराज बुलाया ॥२३॥
अनिरुद्ध महादे मिश्र, मिलिया तिह भट्ट सहश्र ।
साधुकीर्त्ति संस्कृत भाखइं, बुधिसागर स्युं स्युं दाखइं ॥२४॥
पंडित कहइ मूढ गमार, तेरो नाम छै बुद्धि कुठार ।
पोपह चरचा दिन पंच, साचउं खरतर पक्ष संच ॥२५॥

दूहा:

कविराजइं निर्णय कीयउं, जूठउं बुद्धि कुठार ।
साहि पासि जाई कहू, पोपह पर्व विचार ॥२६॥
पद्मसुन्दर इम चिंतवइं, इणि हाणइं मो हानि ।
साहि पास जाइ कहइं, द्यो हम जीवीदान ॥२७॥
मिगसर वदी बारस दिने, गया साहि आवासि ।
खरतर पूठइ देवगुरु, तपा गया सब नासि ॥२८॥
साहि हजूर बोलाविआ, श्वेताम्बर कउं न्याय ।
हुं करिस ततखिण खरउं, तेड्या पण्डित राय ॥२९॥

ढाल

हिव तेड्या पंडित रायइं, कविराज सभा बोलायइं ।
साधुकीर्त्ति संस्कृत बोलइं, खरतर कहि केहनइ तोले ॥३०॥

साहि सुगत दीयइ सानासि, खरतर मनि अधिक उल्हास ।
बुद्धिसागर कनु न जाणइ, साहि साधुकीर्त्ति कु वखाणइ ॥३१॥
पंडित सभ (व? भा?) बोल्इ एम, निर्णय कीधो छै जेम ।
खरतर गच्छ कउ पथ साचउ, तपला परिस फोड न राचउ ॥३२॥
मूढ पंडित सम किम होइ, पातिसाह विचार्या जोइ ।
तब पदमसुंदर बोलायउ, लुकि रह्यो सभा माहि नाव्यो ॥३३॥
चउपर्वी पोषह थाप्या, खरतर कु जइपद आप्यो ।
गजनगीया खरतर लोक, ऋषिमती थया सब फोक ॥३४॥
विण हुकम मेरि हु (दु?) इ वावइ, तपा राति दीवी ले आव० ।
पातिसाह सुणी ए वात, तपलारउ करउ निपात ॥३५॥
चाहमल्ल मघइ छोडाया, मान भग करी कढवाया ।
तपला कहइ सर भरि कीजइ, दुरि(इ?)मेरि हुकम इन्ह दीजइ ॥३६॥

दूहा:—

खरतर मनहि विचारीयो, एह वात किम होइ ।
जीती वाजी हारीयइ, करउ पराक्रमको० ॥३७॥
थोधू चाहमल्ल नेतसी, मेघउ पारस साह ।
नमिदास धणराज सहजसिंघ, गगदास भोज अगाह ॥३८॥
श्रीचद श्रीवच्छ अमरसी, दरगह परवत वखाण ।
छाजमल गढमल भारहू रहउ सामीदास सुजाण ॥३९॥
चीकानय (य?)री तिहि मिल्या, महेवचा सपवाल ।
श्रावक सभ (व?) तेडावीया, महिम के कोटीवाल ॥४०॥

चालिः-

मिलि पहुतावी चापसि, वड्डी छइं जिहां आवासि।
आदर तिह अधि(क?)उंदीधउं, गुरु मंत्रि चित्त वसि कीधउं॥४१॥
चाडमल मेघड वात वणाइ, अकबर रे तिहा लीया बुलाइ।
परवत नेमीदास हजूर, दीजइं वाजा हुकम पडूर ॥४२॥
अउलीआ पातिसाहि तूठउं, सईहाथि थापि लीउं पूठउं।
सम वाजा जइत वजावउं, अपणा पोरह कुं वधावउं॥४३॥
खोजा छडीदार पठाया, खरतर साचा जस पाया।
भेरि महल ढोल नीसाणा, वाज्या चढ्यो बोल प्रमाण ॥४४॥
संघ मेलि मिल्यउं आणंदइं, गुरु सोहइ श्रीसंघ वृन्दइं।
वाजार आगरइं केरइ, पइसारउं कीयउं भलेरइं॥४५॥
खरतरै जइत पद पायो, मागत जन सहु बुलायउं।
पंच वरण व वाइ अनेक, पहिराया संधि विवेक ॥४६॥
हारयउं तपलो सहु जाणइं, खरतर कुं लोक वखाणइं।
साखी भट्ट छइं इण वातइं, खरतर परव शुद्ध विख्याते॥४७॥
जिनदत्त कुशल सानिद्धइं, जिनभद्रसूरि वंश वृद्धइं।
जिनचंद्रसूरि सुप्रसादइं, खरतरे जीतउं इण वादइं ॥४८॥
दया "अमरमाणिक्य" गुरु सीस, साधुकीर्त्ति लही जगीस।
मुनि "कनकसोम" इम आखइं, चउविह श्रीसंघकी साखइं॥४९॥
(तत्कालीन लिखित पत्र ३ संग्रहमें)

:**:

जयनिधान कृत

साधुकीर्त्ति गुरु स्वर्गगमन गीतम्

सुखकरण शान्ति जिणेसरू, समरी प्रवचन वचनए जी ।
सोहण सुहगुरु गाइए, नि [illegible] नमाए जी ॥१॥
चतुर सिरोमणि मावई चद्रीयड, 'श्रीसाधुकीरति' उवझायो जी ।
प्रहसमि भविअण कामित सुरतरू, खरतरगच्छ गुरुरायोजी ॥आं०॥
संवत सोल चनोसइ सुह दिनइ, 'श्रीजिनचन्द्रसूरिंदा' जी ।
सावन मासइ सुदि पुनम थापिया, पाठक पद आणंदो जी ॥२॥च०॥
[illegible] कुल 'सचिंती' श्रीगुरु उपना, 'खेमल' धरि हंसो जी ।
'वस्तपाल' पिता जसु जाणिये, मुनिजन महि अवतंसो जी ॥३॥च०॥
नाण चरण गुण सबल कला धरू, जस परिमल सुविसालो जी ।
'अमरमाणिक्य' गुरु पाटइ दीपता, अठमि शशि दलमालो जी ॥४॥च०॥
गाम नयर पुरि विहरा महीयलइं, पडिबोही जणवृन्दो जी ।
सोल छ्यालइं आया संवतइ, पुरि 'जालोर' मुणिन्दो जी ॥५॥च०॥
माह बहुल पखि अणसण उच्चरि, आणो निय मन ठामो जी ।
॥६॥च०॥
आउ पूरी चउदसि दिन भलइ, पहुता तन सुरलोक जी ।
थूभ अपूर्व कियउ गुण (क?)तणउ, प्रणमीजइ बहुलोक जी ॥७॥च०॥
इण कलिकाले श्रीगुरु जे नमइ, भाव धरी नरनारी जी ।
समकित निर्मल हुइ वलि तहनइं, धन कण सुत सुखकारी जी ॥८॥च०॥
धन धन 'साधुकीर्त्ति' रलियामणा, सनही नाम सुहाए जी ।
पाय कमल जुग नितु तस प्रणमता, घरि घरि मंगल थाए जी ॥९॥च०॥
उलट आणी सद्गुरु गाइया, वाचक 'रायचन्द्र' सीसि जी ।
आसा पूरण सुरमणि सुरगवी, जयनिधान' सुह दीसि जी ॥१०॥च०॥

वादी हर्षनन्दन कृत

श्री समयसुन्दर उपाध्यायानां गीतम्

(१) राग (मारूणी)

साच 'साचोरे' सद्गुरु जनमिया रे, 'रूपसीजीरा' नंद।
नवयौवन भर संयम संग्रह्योजी, सइंहथ 'श्रीजिनचंद' ॥ १ ॥
भले रे विराज्यो उपाध्याय देशमें रे, 'समयसुन्दर' सरदार।
अधिक प्रतापी वड़ जिम विस्तरै रे, शिष्य शाखा परिवार ॥भले॥२॥
चवदै विद्या आपण अभ्यसी रे, पण्डित राय पडूर।
छोड़ाया सांडा मयणे मारता रे, राउल 'भीम' हजूर ॥भले०॥३॥
'लाहाउरे' 'अकबर' रंजियो रे, आठ लाख अरथ दिखाड़।
वाचक पदवी पण पामी तिहां रे, परगड़ वंश 'पोरवाड़' ॥भले०॥४॥
सिन्धु विहारे लाभ लियउ घणो रे, रंजी 'मखनूम' सेख।
पांचे नदियां जीवदया भरी रे, राखी धेनु विशेष ॥भले०॥५॥
पहिराया पूरा मुनिवर गच्छ ना रे, प्रणमे भूपति पाय।
बजड़ाव्या वाजा ताजा मेड़ता रे, रंजो मंडोवर राय ॥भले०॥६॥
वाल्हो लागे चतुर्विध संघ ने रे, 'सकलचंद' गणि शीश।
बड़वखती वादी सदा रे, 'हर्षनंदन' सुजगीश ॥भले०॥७॥

कवि देवीदास कृत



(२) राग'—आसावरी सिन्धुडो

'समयसुन्दर' वाणारस वंदिय, सुललित वाणि वखाणो जी।
राय रजण गीतारथ गुणनिलो जो, महिमा मेरू समाणो जी ॥स०॥१॥
अरथ करी 'अप नर' मन रीझव्यो, वलि कहु थोजी वातो जी।
'जेसलमेर' साडा जीव छोडाव्या, रावल करि रलिआतो जी॥स०॥२॥
'शीतपुर' माह जिण समझावियो, 'मखनूम' महमद सेखो जी।
जीवदया परा पडह फरावियो, राखी चिहुखंड रखो जी ॥स०॥३॥
ढड दिवान सगले दीपना, सघ घणो सोभागो जी।
मान मोटा राणा राजिया, वणारीम वडभागो जी ॥स०॥४॥
सद्गुरु सिगलो गच्छ पहिरावियो, लोक माह यश लीधो जी।
'हर्षनन्दन' सरसा शिष्य जेहने, 'वादी' विरुद प्रसिद्धो जी॥स०॥५॥
जन्मभूमि 'साचोर' जेहनी, वश 'पोरवाड' विख्यातो जी।
मातु 'लीलादे' 'रूपसी' जनमिया, वदवा गुरु अवदातो जी॥स०॥६॥
(श्री) 'जिनचन्दसूरि' सइहथे दीखिया, 'सकलचन्द' गुरु सीसो जी।
'समयसुदर' गुरु चिर प्रतपै सदा, दे 'दवीदास' आसीसो जी॥स०॥७॥

॥ इति श्रीसमयसुदरोपायायाना गीतद्वय ॥

[हमारे सग्रहमें तत्कालीन लि० प्रति, पत्र १ से]

राजसोम कृत

महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीतम्

(३) ॥ ढाल हांजरनी ॥

नवखंडमें जसु नाम पंडित गिरुआहो, तर्क व्याकर्ण भण्या।
अर्थ किया अभिराम पदएकणराहो, आठ लाख आकरा ॥१॥
साधु वड़ो ए महन्त 'अकबर' शाहे हो, जेह वखाणीयो।
'समयसुन्दर' भाग्यवंत पातिशाह पू(तू?)ठोहो,थापलि इम कह्योरे॥२॥
जीवदया जशलीव राउल रंजी हो, 'भीम' 'जेशलगिरि'।
करणी उत्तम कीध 'साड़ा' छोड़ाया हो, देशमें मारता ॥३॥
'सिद्धपुर' माहे शेख 'महम्मद' मोटो हो, जिण प्रतिवोधीयो।
सिन्धु देश माहे विशेष 'गायां' छोड़ावी हो, तुरके मारती ॥ ४ ॥
सखर वस्त्र पटकूल गच्छ पहरायो, खरतर गरुअडो।
वचनकला अनुकूल प्रवंध देखी हो, शास्त्र कीधाघणां ॥ ५ ॥
पर उपगार निमित्ति कीधो सगलो हो,धन्न-धन्न इम कहे।
गीत छंद बहु वृत्ति कलियुग माहे हो, जिणे शाको कियो ॥ ६ ॥
जुगप्रधान 'जिनचन्द' स्वयंहस्त वाचक हो, पद 'लाहोरे' दियो।
'श्रीजिनसिहसूरिंद' शहर 'लवेरे' हो, पाठक पद कीयो ॥ ७ ॥
आगम अर्थ अगाह सरमुख साचो हो, जेणे प्ररुपीयो।
गिरुओ गुरु गजगाह परिवार पूरो हो, जेहनो परगड़ो ॥ ८ ॥
कीधो क्रियाउद्धार संवत सोले हो, इक्काणु समे।
गौतमने अणुहार पंचाचार पाले हो, घणुं वली खप करे ॥ ६ ॥

अणसण करि अणगार सवत सतर हो,मय निडोत्तरे ।
'अहमदाबाद' मझार परलोक पहुचा हो, चैत्र शुदि तेरसे ॥ १० ॥
चारित्रगज दल सींह पाट प्रभाकर हो, प्रतप तेहने ।
'हरषनन्दन' अणनीह पण्डित माही हो, लीह काढी जिणे ॥ ११ ॥
प्रगट जासु परिवार भाग्यवन्त मोटो हो वाचक जाणीये ।
दिन दिन जय-जयकार जग चिरजीवो हो,'राजसोम' इम कहे॥१२॥*

[इति महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीत]



॥ श्री यशकुशल सुगुरु गीतम् ॥

॥ राग काफी ॥

'श्री यशकुशल' मुनीसर (नागुण) गावो तुम्ह सुखकारी ।
सहु जनने सुखसातादायक, विघ्न विडारण हारी ॥१॥य०॥
ठाम ठाम महिमा सद्गुरुनी, जाणे लोक लुगाइ ।
तिम वलि इण देशे सविशेषै, कहता नावै काई ॥२॥य०॥
भर दरियावै समरण करता, हाथे कर ऊबारै ।
ध्यान धरै इक मन जे साचौ, तेहना कारज सारै ॥३॥य०॥
'कनकसोम' पाटै उदयाचल, श्री 'यशकुशल' मुणिन्द ।
दिन दिन अधिको साहिब सोहे, जिम ग्रह माहिं चद ॥४॥य०॥
महिर करी नइ दीजइ दरिशन, जोजइ सेवक सार ।
'सुखरतन' कहै कर जोडी नै, भवि भवि तू ही आधार ॥५॥य०॥

* यह गीत बाडमेरके यति श्री नेमिचन्द्रजीसे प्राप्त हुआ है । एत दर्थ उन्हें धन्यवाद देते हैं ।

कविवर श्रीसार कृत

श्री जिनराजसूरि रास

[रचना समय सं० १६८१]

***

.................................तोरण चंग।

दीठां सगला दुख हरइ, थायइ अति उछरंग ॥ ६ ॥ मेरी०।

अति सखर सुंदर अति भली, सोहइं वणी ध्रमसाल।

जिह आवी व्यवहारिया, धरम करइ सुविसाल ॥१०॥ मेरी०।

वन वाग वाड़ी अति घणी, तिहां रमइ लोक छयल।

सोहइ नगर सुहामणउ, भोगी करइ सयल ॥११॥ मेरी०।

'रायसिंघ' राय करावियउ, 'नवउ कोट' अमली माण।

कचमहले करि सोभतउ, केहउ करूं वखाण ॥१२॥ मेरी०।

हिव राज पालइ रंग सेती, राजा तिहां 'रायसिंघ'।

वयरी मृगला भांगिवा, ए सादूलोसिंघ ॥१३॥ मेरी०।

प्रतिपयउ 'राठोड़ा' कुलइं, सेवकां पूरइ आस।

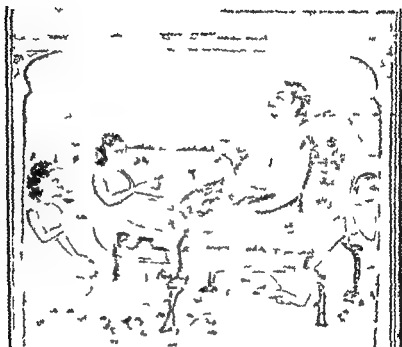
पट्टराणी साथइ सदा, विलसहि भोगविलास ॥१४॥ मेरी०।

तेहनइ 'मुहतउ' मलहपतउ, परदुख काटनहार।

'कर्मचन्द' नामइ दिपतउ, बुद्धइं अभयकुमार ॥१५॥ मेरी०।

डोलती 'राखी' जेण पृथ्वी, दिया दान अपार।

'पैत्रीसइ' मांहि मांडियउ, सगलइ सत्तूकार ॥१६॥ मेरी०।



जिनराज सूरिजी—जिन रंगसूरिजी

(शालिभद्र चोपई की प्रति से)

'कोडि' द्रव्य दीधा याचका, 'लाहोर' नयर उच्छाह।
श्री 'जिनचन्द' युगवर कीया, पतसाहियउ 'पतिसाहि' ॥१७॥ मेरी०।
'नव' गाम नइ 'नव' हाथीया, तिहा दिया द्रव्य अनेक।
श्री जिनसिंहसूरिंद' नइ, आचारिज सविवेक ॥१८॥ मेरी०।
'रायसिंघ' राजा राज पालइ, मत्री तिहि 'कर्मचद'।
सहू को लोक सुखइ वसइ, दिन दिन अधिक आणद ॥१६॥मेरी०॥

दूहा।— वसइ तिहा व्यवहारिउ, सोभागो सिरदार।
धर्म धुरन्धर 'धर्मसी', वोहिथ कुल सिणगार ॥ १ ॥
दुखिया नउ पीहर सदा, धर्मी नइ धनवत।
कुल मडण महिमा निलउ, गुणरागी गुणवन्त ॥ २ ॥
पतिभक्ता नइ गुणवती, शीयलवती वरियाम।
मनहर नारी तहनइ, 'धारलदे' इणि नाम ॥ ३ ॥
भणि जाणइ चउसठि कला, रूपइ जीती रभ।
एहवी नारि को नहि, अद्भूत रूप अचम्भ ॥ ४ ॥
दोगदक सुरनी परइ, सही सगला सजोग।
निज प्रीतम साथइ सदा, विलसइ नर नव भोग ॥ ५ ॥

ढाल बीजी—माहरा जोगना नु कहिज्योरे अरदास। ए जाति।
उत्तम गृह माहि (ए) कदा र, पउढि 'धारल' देवि। प्रीतमजी। पउ०
झनरइ मोती झुबका र, सुख सज्या नित मेव ॥ प्री० सु०। १।
प्रीतमजी बोलउ अमृत वाणि प्रीतमजी बोलइ कोयल वाणि।
प्रीतमजी तु मरउ सुल्ताण, प्रीतमजी तु तो चतुर सुजाण।

प्रीतमजी दिठउ स्वप्न उदार, प्रीतमजी कहेउ नइ तासु विचार।
प्रीतमजी थे पण्डित सिरदार ॥ आंकणी० ॥

चोवा चन्दन अरगजा रे, कसतूरि घनसार। प्री० कस्तूरि०।
चिहुं दिशि परिमल महमहइ रे, इन्द्र भुवन आकार ॥प्री० इन्द्र०॥२
दमणा पाडल केतकी रे, जाइ जुही सुविशाल। प्री०। जा०।
फूल तिहां महकइ घणा रे, तिम फुलांरी माल ॥ प्री०ति०।३।प्री०बो०।
देहदिशी दीवा झलहलइ रे, चन्द्रूअडा चउसाल। प्री० चं०।
भींतइ चीतर मिल्या भला रे, वारू वन्नरमाल ॥ प्री० वा० ।४। प्री०
मनहर मोती जालिया रे, करइ कली उजास। प्री० क०।
पुन्य पखइ किम पामीयइ रे, एहवा सखर आवास। प्री०ए०।५।प्री०।
'धारलदे' पउढि तिहां रे, कोइ न लोपइ लीह। प्री० को०।
किंउं सूती किंउं जागती रे, दीठइ सुहणे सीह ॥ प्री० दी० ।६। प्री०
सुहणउ देखी सुहामणउं रे, पामइ हरख अपार। प्री० पा०।
स्वप्न तणउ फल पूछिवा रे, वीनवीयउ भरतार ॥ प्री० वि० ॥७। प्री०
अमृत समी वाणि सुणीरे, जाग्या 'धरमसी' साह। प्री० जा०।
पुण्ययोग जाणे मिली रे, साकर दूधहि मांहि ॥ प्री० सा० ॥८ ।प्री०।
धरि आणंद इसउ कहइ रे, सखरउ लह्यउ सुपन्न। प्री० स०।
सूरवीर विद्यानिलउ रे, हुइस्यइ पुत्र रतन ॥ प्री० हु० । ९ प्री०।
कुलदीपक बोहित्थरां रे, अन्ति हुस्यइ राजांन। प्री० अं०।
सिंह तणी परि साहसी रे, थास्यइ पुत्र प्रधान ॥ प्री० था० ।१०।प्री०।
गरभकाल पूरउ हुस्ये रे, सात दिवस नव मास। प्री० सा०।
पुत्र मनोहर जनमिस्यइ रे, फलिस्यै मन नी आस ॥प्री० म०।११प्री०

दीपइ दूरइ थयउ घणउं, सुणिनउ सुपन विचार । प्री० सु० ।
हरखित थई उठि तगार, पहुंती सुजन मझार ॥प्री०प०॥१२॥प्री०चो०

दूहा । परि (सुपन?) आवी इम चिंतवइ, अजेसीम बहु रात ।
धरम जागरि जागता, प्रकटाणउ परभात ॥ १ ॥
जे भणिया बहु सत्रि-पन्ना, भणिया वेद पुराण ।
प्रहउगइ घर तेडिया, जोसी ज्योतिष जाण ॥ २ ॥
'श्रीधर' 'धरणीधर' सही, जोसी 'विठ्ठलनाम' ।
। पहरी खीरोदक धोतीया, आव्या मन उल्लासि ॥ ३ ॥
संतोष्या जोसी कहइ, सुपन तणउ फल एह ।
कुलदीपक सुत होइस्यइ, कूड कह्या तउ नेम ॥ ४ ॥
इम फल सुपन तणउ सुणी, किया बहुत सनमान ।
सनमान्या जोसी सहु, दिया अनर्गल दान ॥५॥

ढाल तीजी' मनि मेघकुमर पधावी ॥ ए जाति ।

हिव दीजइ दान अनेक, परियण माहे वध्यउ विवेक ।
सुरलोक थकी सुर चवियउ, धारलदे उरि अवतरियउ ॥ १ ॥
वधिया वाधउ परिवार, माता हरखि तिणवार ।
राजा पिण द्यइ सनमान, तिण दिन थी वधियउ वान ॥ २ ॥
इम गरभ वधइ सुखदाइ, तसु महिमा कहियि न जाइ ।
मास तीजइ दोहला पावइ, माता मनि घणु सुहावइ ॥ ३ ॥
जाणइ चन्द्र पान करीजइ, भरि घुट अमिरस पीजइ ।
वलि दान अनर्गल दीजइ, लखमी रो लाहो लीजइ ॥ ४ ॥
जिनवरनी कीजइ जात्र, घरि तेडी पोखु पात्र ।
खरचीजइ धन असमान, छोडावु बन्दीवान ॥ ५ ॥

सुणियइ श्री जिनवर वाणि, मन लागी अमिय समाणि ।
ध्याउं श्रीअरिहन्त देव, कीजइ सहगुरुकी सेव ॥ ६ ॥
कर्म रोग गमेवा ओसउ, कीजइ पडिक्कमणउ पोसउ ।
मनशुद्धि ध्यावुं नवकार, दुखियां नइ करू उपगार ॥ ७ ॥
वन बाग जइ उछरंग, प्रीतम सुं कीजइ रंग ।
मनमान्या वरसइ मेह, तउ फलइ मनोरथ एह ॥ ८ ॥
'विमलाचल' नइ 'गिरनार', 'समेतसिखर' सिरदार ।
भेटूं 'आबू' सुखकारी, पूजा करुं 'सतर' प्रकारी ॥ ९ ॥
ढाल: जा 'खाजा' लापसी आही, वलि लाडु लाखणसाही ।
परसुं खुरसाणि मेवा, कीजइ साहमीनी सेवा ॥ १० ॥
धन खरची नाम लिखावुं, 'सात क्षेत्रे' वित्त वावुं ।
तिम दुखित दीन साधारू, इणि परि आपउ निसतारू ॥११॥
इम डोहला पामइ जेह, 'धरमसी' शाह पूरइ तेह ।
उत्तम नर गरभइ आयउ, माता पिण आणंद पायउ ॥ १२ ॥
जउ पापी गरभइ आवइ, तउ मात खिहोला खावइ ।
कइ ठिकरि ना खाइ खण्ड, कइं खायइ भींत लवंड ॥ १३ ॥
एतउ गरभ सदा सुकमाल, फलि मात मनोरथ माल ।
गुणवन्त हुस्यइ ए आगइ, तिण सहको-पाये लागइ ॥ १४ ॥
माता मनि घणउ सनेह, सुख देस्यइ नन्दन एह ।
खाटउ खारउ नवि खायइ, इम काल सुखे करि जायइ ॥१५॥
दिन सात अनइ नव मास, पूरउ थयउ गरभावास ।
फल फूले दहदिशी फलियां, माता मन हुइ रङ्गरलिया ॥१६॥

अति शीतल वाजइ वाय, दुखियानइ पिण सुख थाय।
गुणवन्त पुरुष जन जायइ, तब सगलउ जग सुख पायइ॥१७॥
मुह माग्या वरसइ मेह, लोक २ निवड सनेह।
सगलइ जगि हुयउ सुगाल, गुणगावइ बालगोपाल ॥ १८ ॥
इम पच्छिम सु अधरात, सुखसज्या सूती मात।
'धारलदे' नन्दन जायउ, सूरिज जिम तज सवायउ ॥१६॥
दूहा: वइसाखा सुदि (सातमो ?) दिन,सोलहसय सइताल।
श्रवण नक्षत्र सुहामणउ, बुधवार (इ) सुविशाल ॥१॥
पच उच ग्रह आविया, छत्र जोग सुखकार।
शुभवेला सुत जन्मियउ, वरत्यउ जय जयकार ॥२॥
चन्द्र अनइ सूरिज थकी, सुत नउ अधिकउ तेज।
रत्नपूज जिमि दीपतउ, सोहइ माता सेज ॥३॥
ढाल चौथी, वधावारो '—
दासी आवि दौडति ए, जिण (हा ?) छइ 'धरमसी' शाह।
वधाइ पुत्रनी ए-दीधी मन उमाह ॥ १ ॥
फली आसा सहू ए, जायउ पुत्र रतन। फलि०।
कीजइ कोडि जतन० फली० 'धरमसी' साह धन धन्न० ॥फली०॥
उदयउ पूरव पुन्य फची आस्या सहू ए। आ०।
सुत दीठइ दुख वीसर्या ए, वाजइ ताल कसाल॥
दमामा दुडवडी ए, वाजइ वनर माल ॥ २ ॥ फली० ॥
वाजइ थाली अति भली ए, वाजइ जागी ढोल।
हवइ उच्छव घणाय, गीता रा रमझोल ॥ ३ ॥ फली०।

कुंकुं हाथा दीजीयइ ए, सूहव द्यइ आसीस।
कुमर धरमसी तणउए, जीवउ कोडि वरीस ॥४॥ फली०।
गलिए फूल विछाइया ए, नाटक पडउ बत्रीस।
कुमर भलउ जनमियउ ए, हरख्य वगउ निमन्त्रीन ॥५॥ फली०।
जन्म महोछव इम करइ ए, खरचइ परघल दाम।
सजल जलधर परइ ए, न गिणइ ठाम कुठाम ॥ ६ ॥ फली०॥
याचक जय-जय उचरइ, सगा लहइ सनमान।
सयण संतोपिया ए, सखिया करइ गुणगान ॥ ७ ॥ फली०।
हिव दिन दसमइ आवियइ ए, करइ दसूठण प्रेम।
सगा सहि निहतरइ ए, असुचि उतारइ एम ॥ ८ ॥ फली०।
सतर भक्ष भोजन भला ए, सालि दालि घृत घोल।
सहू संतोपिया ए, उपरि सरस तंबोल ॥ ९ ॥ फली०।
एम जमाडि जुगतसुं ए, दिया नालेर सरूप।
भलउ सहको भणइ ए, उछव कियउ अनूप ॥१०॥ फली०।
धन 'धारलदे' मायडी ए, धन २ 'धरमसी' साह।
कियउ उच्छव भलउ ए, लियइ लखमीरउ लाह ॥ ११ ॥ फली०।

दूहा: करि उच्छव रलियामणउ, पुत्र तणउ मुख जोय।
श्री खेतसी नामउ दियउ, दीठां दउलति होय ॥ १ ॥
सहको लोक इसउ कहइ, सयणां तणइ समक्ख (क्ष)।
'धरमसी' साह प्रतइं हूयउ, परमेसर परतक्ख ॥ २ ॥
कुलदीपक सुत जनमियउ, करिस्यइ कुल उद्धार।
इणि नन्दन जाया पछइ, उदय हुअउ संसार ॥ ३ ॥

वखत वलइ इम जाणियइ, शास्त्र तणइ वलि न्याय।
सहको राणा राजवी, पडिस्यइ एहनइ पाय ॥ ४ ॥
पगे पद्म झलकर भलउ, लखण अंगि बत्रीस।
कइ गढपति कइ गच्छपति' हुइस्यइ विस्वावीस ॥ ५ ॥
ढाल ९—सुगुण सनेही मेरे लाला। इण जाति।
बीज तणउ जिम वाधइ चन्द, तिम वाधइ 'धारलदे' नन्द।
मात पिता उमहइ आणद, देवलोक नउ जिम मानन्द ॥१॥
माता सुत नइ ले धवरावइ, बेटा-बेटा कहिय बुलावइ।
उन्हउ नीर लेइ न्हवरावइ, इम माता मनि आणद पावइ ॥२॥
आउ मेरा नन्दन गोदि खिलावु, थमू लद्दू तुनइ अणावु।
पेलवि काजलघालइ अखियां, खोलइ ले खेलावइ सखियां ॥३॥
कानि अडगनिया पाइ पन्हइया, धमकइ पगि घूघरिया बनिया।
चद्लउ करि वागउ पहिरावइ, सिरिकसबीकी पाग बनावइ ॥४॥
कबहक माता कठइ लागइ, कबहक लोटइ माता आगइ।
कइयइ घडा ना पाणी ढोहइ, कबहू हसि माता मन मोहइ ॥५॥
कबहइ दूधनी दोहणी ढोलइ, कबहू होचइ चढि हींडोलइ।
कबहइ झालइ माखण तरतउ, कबहइ छिपइ माता थी डरतउ ॥६॥
कबहइ मा नउ कचूअउ ताणइ, कहियइ काधइ चढिय पलाणइ।
कबहइ हसि मा साम्हउ जोवइ, कबहइ रूसणमाडी रोवइ ॥७॥
देखी कुंवर कहइ इम माता, इणि सुत दीठा थायइ साता।
मति को पापी नजरि लगावइ, गुली काठिलउ गलइ बधावइ ॥८॥
माऊ ? कहतउ पासइ आवइ, काइ पूत मा एम बुलावइ।
प्रेम नजरि माँ साम्ही मेलइ, दूध माहि जाणे साकर मेलइ ॥९॥

झणझणा बोलइ बोल अमोल, पहिरयउ वागो रातउ चोल।
अंगि शृङ्गार करावइ सोल, माता सूं इम करइ रंगरोल ॥१०॥
फेरइ चकरडी माता प्रेरइ, वालुडा वलिहारी तेरइ।
दंगू लट्टू फेरइ चंगा, हाथइ गोटा ल्यइ पंचरंगा ॥११॥
ऊंचउ उपाडइ ले वाहडिया, माता कहइ आउ मेरा नान्हडिया।
हाथे घालइ सोवन कडिया, गूंथी घइ फूलनी दडियां ॥१२॥
मइ सोलही पासा सारइं, रमइ पंचेटे विविध प्रकारइ।
बीजा बालक सहको हारइ, जीपइ कुमर भाग्य अणुसारइ ॥१३॥
इम उच्छव सुं नव-नव केलइ, 'धारलदे' रउ धोटउ खेलइ।
रूपइ मयण तणउ अवतार, सात वरस नउ थयउ कुमार ॥१४॥
बुद्धइं बीजउ वयर (अभय?) कुमार, आवइ सहु सुणियउ इक वार।
मात पिता चिंतइ उल्हासइ, कुमर भणावउ पंडित पासइ ॥१५॥

दूहा: पुत्र भणइवा मांडियइ, पण्डित गुरुनइ पाय।
विद्याआवी तेहनइ, सरसति मात पसाय ॥ १ ॥
भली परइ आवी भले, सिद्धो अनइ समान।
"चाणाइक" आवइ भला, नीतिशास्त्र असमान ॥ २ ॥
तेह कला कोइ नहीं, शास्त्र नहीं वलि तेह।
विद्या ते दीसइ नहीं, कुमर नइ नावइ जेह ॥ ३ ॥
कला 'बहुत्तरि' पुरपनो, जाणइ राग 'छतीस'।
कला देखि सहु को कहइ, जीवो कोड़िवरीस ॥ ४ ॥
"षड् भाषा" भाषइ भली, "चवदह विद्या" लाध।
लिखइ 'अठारह लिपी' सदा, सिगले गुणे अगाध ॥ ५ ॥

ढाल सधिनी छट्ठी:—पणमिय पास जिणेसर केरा। इणजाति।

कुमर हिवइ जोवन वय आयउ, दिन दिन दिपइ तेज सवायउ।
गरुअउ यश तिहुमवणे गायउ, धन धन 'धारलदे' उ(द)र जायउ ॥१॥
सूरिज जिम तेजइ करि सोहइ, मेह तणी परि महियल मोहइ।
'त्रिसण' तणी पर सूर सदाइ, दानइ 'करण' थकी अधिकाइ ॥२॥

रूपइ 'मनमथ' नउ मद गाल्यउ, काम क्रोध विषयारस टाल्यउ ॥३॥
सायर जिम सोहइ गभीर, मेर महीधर नी परि धीर।
कलपवृक्ष जिम इच्छा पूरइ, चिंतामणी जिम चिंता चूरइ ॥४॥
'विक्रमादित्य' जिसउ उपगारी, अहनिसि सेवक नइ सुखकारी।
पाच 'पडव' जिम वलवत, सीह तणी परि साहसवत ॥५॥
नयन कमल नी परि अणियाली, सोहइ अधर जाणइ परवाली।
करइ हाथ सु लटका मटका, वोलइ वचन अमी रा गटका ॥६॥
काया सोहइ कचण वरणी, सोहइ हाथे सरस समरणी।
लसतवतो मोहण वेलि, हस हरावइ गजगेतिगेली ॥७॥
मस्तक सुदर तिलक विराजइ, दरसण दीठा भावठि भाजइ।
पहिरइ नित २ नवर वागउ, तेगदार माहे अधिकउ तागउ ॥८॥
रायराणा सहुको द्यइ मान, धरमध्यान करिवा सावधान।
न करइ परनिन्दा परघात केहा केहा कहू अवदात ॥९॥
देखि दिन दिन अधिक प्रतापइ, वाका वयरी थरथर कापइ।
महीयलि सिगले वोलइ पूरउ, इणपरि विचरइ कुमर सनूरउ ॥१०॥
हिव इणि अवसर श्री] 'वीकाणइ', 'अकवर' जेहनइ आप वखाणइ।
खरतरगच्छ माहे प्रवल पड्डूर, आव्या गुरु 'श्रीजिनसिंह'सूरा ॥११॥

सुविहत साधु तणइ परिवारइं, दे उपदेश भविक निरजारइं ।
विचरइ महियल उग्र विहारइ, आप तरइ लोकां नइ तारइ ।।१२।।
हुवइ सवल तिहा पइसारइ, जिनशासनि रो वान वधारइ ।
कलिकालइ गौतम अवतारइ, पूजजी 'बीकानयर' पधारइ ।।१३।।
हरखित हुआ सहूको लोक, जिम रवि दंसणि थायइ कोक ।
वड़ा वड़ा श्रावक सुणइ अशेष, पूजजी एहवउ द्यइ उपदेश ।।१४।।

दोहा : ए सायर गाजइ भलउ, अथवा गाजइ मेह ।
वाणी सांभलता थकां, एहवउ थयउ संदेह ।।१।।
पोषइ 'नव रस' परगड़ा, करइ 'राग छतीस' ।
सरस वखाण सुणी करी, सह को द्यइ आसीस ।।२।।

ढाल सातमो : मेघमुनि कांइ डमडोलइरे । इणजाति ।
सहको श्रावक सामिलइजी, लोक सुणइ लख गान ।
"खेतसी" कुमर पधारियाजी, इणपरि सुणइ वखाण ।।१।।
भविकजन धरम सखाइ रे, जीवनइ सुखदाइ रे ।
कीजइ चित्त लाइ रे, भविकजन धरम सखाइ रे ।।आंकणी०।।
सदगुरुनी संगति लहीजी, लाधो आरिज खेत ।
मानव भव लाधउ भलउजी, चेत सकइ तउ चेत ।।२।। भविक० ।।
इण जगि सरव अश्वाशतउजी, हीयइ बिचारी जोय ।
इम जांणिरे प्राणियाजी, ममता मां करउ कोय ।।३।।भविक०।।
माया मोह्या मानवीजी, धन संचइ दिन राति ।
वयरी जम पूठइ वहइंजी, जीव न जाणइ घात ।।४।।भविक०।।
दश दृष्टंते दोहिलउजी, लाधउ नर भव सार ।
तिहा पणि पुण्यइ पामियइंजी, उत्तम कुल अवतार ।।५।।भविक०।।

बत्रीस लाख विमान नउ जी, साहिब छइ जे इन्द्र ।
ते पणि श्रावक कुल सदा, वछइ धरि आणद ॥६॥भविक०॥
वरजीजइ श्रावक कुलइ जी, अनतकाय बत्रीस ।
मधु मारण वरजइ सदाजी, तिम अभक्ष बावीस ॥७॥भविक०॥
सामायिक ले टालवइजी, त्रीस अनइ दुइ दोप ।
परनिंदा नवि कीजियइजी, मन धरियइ सतोप ॥८॥भविक०॥
इक दिन दिक्षा पालीयइजी, आणी भाव प्रधान ।
तउ सिवपुर ना सुख लहइजी, निश्चय देव विमान ॥९॥भविक०॥
इणि जगि सरब बरावतोजी, स्वारथ नउ सहु कोय ।
निज स्वारथ अणपूजतइजी, सुत फिरी वयरी होय ॥१०॥भविक०॥
चिंतामणी सुरतरु समउजी, जिनवर भाषित धर्म ।
जउ मन शुद्ध कीजियइजी, तउ त्रूटइ सही कर्म ॥११॥भविक०॥
दोहा।—खेतसी कुमरइ सभल्यउ, जिनसिंह सूरि वखाण ।
वाणी मनमाहि वसी, मिट्ठी अमिय समाण ॥१॥
करजोडी पहवउ कहइ, आणि हरख अपार ।
तुम्ह उपदेशइ जाणियउ, मइ ससार असार ॥२॥
तिणि कारण सुहगुरु हिवइ, दीजइ सजमभार ।
कृपा करि मो उपरइ, इणि भवथी निस्तार ॥३॥
वलतउ गुरु इणि परि कहइ, मकरउ ए प्रतिबध ।
मात पिता पूछउ जइ, करउ धरम सम्बन्ध ॥४॥
ढाल आठमी:—माहके दह रगीली चूनरी—एजाति ।
अहो गुरु वादी नइ उठियउ, आव्यउ माता नइ पास हो ।
कर जोडिनइ इणि परि कहइ, आणी मन माहि उलास हो ॥१॥

मोनइ अनुमति दीजइ मातजी, हुं लेइस संजमभार हो।
जगि स्वारथ नउ सहु को सगउ, मिलीयोछइ ए परिवार हो ॥२॥मो०॥
सद्गुरु नी देसण सुणी, मन मांहि धरी अनुराग हो।
हिव इणिभवथी मन उभगउ, मुझ नइ आव्यउ वयरागहो ॥३॥मो०॥
अहो देस विदेश फिरी करी, खाटीजइ परिघल आथि हो।
पणि परलोकइ जातां थका, तो नावइ प्राणी साथि हो ॥४॥मो०॥
अहो इणभवि परभवि जीवनइ, सुख कारण श्रीजिनधर्म हो।
जिणथी सुख सम्पति सम्पजइ, कीजइ तेहिज कर्म हो ॥५॥मो०।
अहो डाभ अणि-जल जेहवउ, जेहवउ चञ्चल नय (हय?) वेग हो।
माता अथिर तिसउ ए आउखउ, आण्यउ इम जाणि संवेग हो ॥६॥मो०।
अहो इणि जगि को केहनउ नहीं, परिजन नइ वलि परिवार हो।
भगवन्तरउ भाख्यउ जीवनइ, इक धर्म अछइ आधार हो ॥७॥मो०॥
अहो जीव तणइ पूठइ वहइ, सर सान्ध्यइ वयरी काल हो।
तिण कारण करसुं मातजी, पाणी आव्या पहलइ पाल हो ॥८॥ मो०।
अहो ए सुख भोगवतां छतां, दुख थाय पछइ असमान हो।
ते सोनउ केथउ कीजियइ, जे पहिरयउ तोडइ कान हो ॥९॥ मो०।
अहो जेह वडा सुखिया अछइ, वलि हुस्यइ सुखिया जेह हो।
ते सहु को पुण्य पसाउलइ, इहां कोइ नहीं सन्देह हो ॥१०॥ मो०।
भेदाणी धरमइ करी, माता मुझ साते धात हो।
मुनिवर नउ मारग मांहरइ, हियडइ वसियउ दिनरात हो ॥११ मो०।

दोहा :- पुत्र वयण इम सम्भली, संजम मति सुविशाल।
मुर्छाङ्कत माता थइ, पड़ी धरणी तत्काल ॥ १ ॥

गंगोदक सु छाटिनइ, वींझया शीतल वाय।
सावधान हुइ तदा, इणि परि जम्पइ माय ॥ २ ॥
तु नान्हडियउ माल्हइ, तु मुझ जीवनप्राण।
एक घडी पिण दिन समी, तोरइ विरह सुजाण ॥ ३ ॥
तु सुकमाल सोहामणउ, दोहिलउ संजम भार।
बोल विचारी बोलियइ, संजम दुक्करकार ॥ ४ ॥
तन धन यौवन लहो करी, विलसउ नवनव भोग।
वलि वलि लहता दोहिला, एहवा भोग संजोग ॥ ५ ॥

वेलि (९):—लही एहवा भोज संजोग, विलसीजइ नवनवभोग।
तु "बोहिथरा" कुल दीवउ, तिणि कोडि वरस चिरजीवउ ॥१॥
सुत तु सुकमाल सनाइ, तु सिगलानइ सुखदाइ।
जिणवर भासित ले दीक्षा, तु किणी परि मागिसी भिक्षा ॥२॥
तु पंडित चतुर सुजाण, तु बोलइ अमृत-वाणि।
तुज गुण गावइ सहु कोइ, तुज सरिखउ पुरिस न कोइ ॥३॥

दोहा :—सामलता पिण दोहिली, सुत संजमनी बात।
श्रावक धरम समाचरउ, तु सुकमाल सुगात ॥ १ ॥

वेलि :—सुत तु सुकमाल सुगात, मत कहिजो संजम बात।
इणि गरुअइ संजम भारइ, विचरवउ खण्डा धारइ ॥१॥
बहुला मुनिवर आगेइ, चूका छइ चारित लेइ॥
तिणी वात इसी मत कहिजो, डोकरपणि चारित लेज्यो ॥२॥
इणि जोवनवय तु आयउ, तु नन्दन पुण्यइ पायउ।
घणा दुखित दीन सधारउ, 'बोहिथ कुल' वान वधारउ ॥३॥

दोहा : वचन पहवउ साभलि, इणि परि कहइ कुमार।
कायर कापुरिसा भणी, दुहिलउ संजम भार ॥ १ ॥

वेलि : माता दुहिलउ संजम भार, जे कायर हवइ नर-नारि
जो सूर वीर सरदार, तिणनइ स्युं दुक्करकार ॥ १ ॥

गाथा : ता(उ)तूं गोमेरुगिरी, मयरहरो(सायरो)तावहोइदुत्तारो।
ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जंति ॥ १ ॥

वेलि : जे कुल ना जाया होवइ, ते कुलवटि साम्हउ जोवइ।
तिण कारण ढील न कीजइ, माताजी अनुमति दीजइ ॥२॥

दोहा : संजम उपर जाणियउ, सुत नउ निवड सनेह।
हिव जिम जाणो तिम करउ, दीधी अनुमति एह ॥ १ ॥

वेलि : हिव दीधी अनुमति एह, संयम सुं निवड सनेह॥
दिक्षा नउ उच्छव कीजइ, मुंह मांग्या धन खरचीजइ ॥१॥
धरि रङ्ग 'धरमसी' शाह, इम उच्छव करइ उच्छाह।
धरि मंगल वाजित्र वाजइ, तिणि नादइ अम्बर गाजइ ॥२॥
वाजइ भुंगल नइ भेरी, वाजइ नवरंग नफेरी।
वाजइ ढोल दमामा ताली, गुण गावइ अबलावाली ॥३॥
वाजइ सुन्दर सरणाइ, सुणता श्रवणे सुखदाइ।
वाजइ झलरि ना झणकार, पड़इ मादल ना दोंकार ॥४॥
वाजइ राय गिडगिडी रंग, विध विध वाजइ मुख चंग।
गन्धर्व बजावइ वीणा, सुणइ लोक सहु तिहां लीणा ॥५॥
वाजइ त्रिवली ताल कंसाल, गीत गावइ बाल-गोपाल
आलापइ राग छत्तीस, इम उच्छ (व) थाय जगीस ॥६॥

दोहा।' उष्णोदक सु कुमर नइ, मलउ करायउ स्नान।
अङ्गि शृङ्गार कीया सहु, वणियउ वेष प्रधान॥ १॥

वेलि :—हिव वणियउ वेश प्रधान, गगोदक सु कीया स्नान।
मोतीयडे कुमर वधायउ, आभरणे अगवणायउ॥ १॥
मस्तकि भलउ मुकुट विराजइ, दोइ कानइ कुण्डल छाजइ।
बिहु बाहे बहरखा सबध, फरि सोहइ बाजूबन्ध॥२॥
उर वर मोतिन कउ हार, पाइ घुघरिया घमकार
अश्व उपरि थयउ असवार, याचक करइ जयजयकार॥३॥
वाजा नेजा गयणइ सोहइ, वरनोल्इ इम मनमोहइ।
॥४॥

दोहा:—हिव गुरु पासइ आवियइ, मिलीया माणस थाट।
कुमर तणउ जस उचरइ, 'चारण' 'भोजिग' 'भाट'॥ १॥

वेलि:—हिव 'चारण' भोजिग भाट', "धरमसी" शाह करइ गहगाट
"खेतसी" गुरु पायइ लागइ, गुर वादी वइठउ आगइ॥१॥
इम पभणइ "धरमसी" शाह, ए कुमर वडउ गज गाह।
पूजजी हिव कृपा करीजइ, ए माहरि थापण लीजइ॥ २॥
हिव कुमर सुणे वालूडा, ले दिक्षा चलिजे रूडा।
गुरजीनो कह्यो करेजो, सूधउ सजम पालेजो॥ ३॥
जिम दीपउ 'वोहिथ' वश, तिम करिजो सुत अवतश।
क्रोधादिक वयरी दाटे, महियली वहुलउ जस खाटे॥ ४॥
दुजनइ किसी सीख मीखावा, स्यु दात नइ जीभ मलावा।
जिम सहुको कहइ धन धन्न, तिम करिज्यो पुत्र रतन्न॥५॥

दोहा : 'सोलहसय छपन्न' मइं, संवछर सुखकार।
'मिगसर सुदी तेरसि' दीनइ, लीयउ संजम भार ॥१॥
माणक मोती माल सहु, हय गय रथ परिवार।
छंडी संजम आदर्यो, जाण्यो अथिर संसार ॥२॥
दे दिक्षा नामउ कीयउ, 'राजसिंह' अणगार।
हिव 'श्रीजिनसिंहसूरि' गुरु, करइ अनेथ विहार ॥३॥

वेलि : हिव करइ अनेथ विहार, 'राजसिंह' हुओ अणगार।
लीधउ पंच महाव्रत भार, षट जीव नइ राखणहार ॥१॥
पंच सुमति भली परि पालइ, विषयारस दूरइं टालइ।
करइ धरम दश परकारइ, पाटोधर वान वधारइ ॥२॥
ग्रहणा सेवन दुइ शिक्षा, सीखी संजम नी रिक्षा।
मंडलि तप वूहा जाणि, 'श्रीजिनचन्दसूरि' विनाणी ॥३॥
दीधी दीक्षा वड़इ विरुद, नामउ दीयउ 'राजसमुद्र'।
हिव शास्त्र भण्या असमान, ते गिणतां नावइ मान ॥४॥
उपधान वूहा मन रंग, 'उत्तराध्यन' नइ 'आचारंग'।
तप कलप तणउ आरुहउ, छम्मासी तप पिण वूहउ ॥५॥
वयसइं बहु पंडित आगइ, लुलि लुलि सहि पाये लागइ।
इम लोक कहइ गुणरागी, जयउ 'राजसमुद्र' सउभागी ॥६॥

दोहा : भावइ 'आठे व्याकरण' 'अट्ठारह-नाममाल'।
'छए-तर्क' भणिआ भला, 'राग छत्रीस' रसाल ॥ १ ॥
भलइ मेली भणिया वलि, 'आगम पैंतालीस'।
सइंमुख श्री 'जिनसिंह' गुरु, सीखि दीयइ निशदीस ॥२॥

महियलि वादि घड घडा, ताता (ता लग?) गरव वहति।
जा लगि 'राजसमुद्र' गणि, गऊआ नवि शुभ्र ति ॥ ३ ॥
मोटइ मुनिवर महियलइ, 'राजसमुद्र' अणगार।
जे जे वि ॥ जोइयइ, तिणि नहु लामइ पार ॥ ४ ॥
'वाचनाचारिज' पद दीयउ, 'श्रीजिनचद्र सूरिंद'।
पाटोवर प्रतिपउ सग, रलिय रग आणद ॥ ५ ॥
वड वरामी सुप्रसन्न वदन, आव्यो पुण्य अकूर।
परतखी दवी 'अम्बिका, हुइ हाजरा हजूर ॥ ६ ॥
परतखि परत- दिठ ए, 'अम्बा' नइ आधार।
लिपि वाची 'धधाणीयइ', जाणइ सय ससार ॥ ७ ॥
'जेसलमेर' दुरग गढि, राउल 'भीम' हजूर।
वादई 'तपा' हरावियां विद्या प्रवल पडूर ॥ ८ ॥
इम अनेक विद्या यलइ, साटया घडा विरुद।
विद्यावत वडउ जती, सोहइ 'राजसमुद्र' ॥ ६ ॥

ढाल दसमी—ऊलाला जाति।
हिव श्री शाहि 'सलेम', 'मानसिंघ' सू धरि प्रेम।
वड वडा साहम धीर, मूकइ अपणा वजीर ॥ १ ॥
तुम्ह 'वीकाणइ' जावउ, 'मानसिंघजी' कू बुलावउ।
इन वर 'मानसिंघ' आवइ, तउ मुझ मन (अति) सुख पावइ ॥ २ ॥
ते 'वीकाणइ' आया, प्रणमइ 'मानसिंघ' पाया।
दीया मन महिराण, 'पतिसाही-फुरमाण' ॥ ३ ॥

मिलियउ संघ सुजाण, वाच्या ते फुरमाण।
तेडावा (या?) 'पतिसाह', सहु को धरइ उच्छाह ॥ ४ ॥
हिव श्री 'जिनसिंघ सूर', साहसवंत सनूर।
चिंतइ एम उल्हासइ, जाइवउ 'पतिसाह' पासइ ॥ ५ ॥
'बीकानेर' थी चलिया, मनह मनोरथ फलिया।
साधु तणइ परिवारइ, 'मेडतइ' नयरि पधारइ ॥ ६ ॥
श्रावक लोक प्रधान, उच्छव हुआ असमान।
श्री गच्छनायक आयउ, सिगले आनंद पायउ ॥ ७ ॥
तिहां रह्या मास एक, दिन २ वधतइ विवेक।
चलिवा उद्यम कीधउ, 'एक पयाणउ' दीधउ ॥ ८ ॥
काल धरम तिहां भेटइ, लिखत लेख कुण मेटइ।
'श्री जिनसिंघ' गुरुराया, पाछा 'मेडतइ' आया ॥ ९ ॥
सइंमुखि लीधउ संथारउ, कीधउ सफल जमारो।
शुद्ध मनइ गहगहता, 'पहिलइ देवलोक' पहुता ॥ १० ॥
संवत 'सोल चिहुत्तरइ', 'पोषसुदि 'तेरस' वरतइ।
सोग करइ सहि लोक, पूज पहुंता परलोक ॥ ११ ॥
हिव देही संसकार, कीधउ लोक आचार।
बीजइ दिन धरि प्रेम, लोक विमासइ एम ॥ १२ ॥
आगम गुणे अगाध, मिलीया वड वड़ा साध।
संघ मिल्यउ गजथाट, कुणनइं दीजियइ पाट ॥ १३ ॥
तब बोल्या सही लोग, 'राजसमुद्र' पाट जोग।
दीजइ एहनइं पाट, जिम थायइ गहगाट ॥ १४ ॥

'चवदह विद्या' निधान, मुनिवर माहि प्रधान।
एह हवइ गच्छसर, तउ तूठउ परमेसर ॥ १५ ॥
सायर जेम गभीर, मेरु महीधर धीर।
दीठा दालिद्र जायइ, वाद्या नवनिधि थायइ ॥ १६ ॥
'राजसमुद्र' हवइ राजा, 'सिद्धसेन' हवइ युवराजा।
तउ खरतरगच्छ सोहइ, सघ तणा मन मोहइ ॥ १७ ॥

दोहा—इम आलोच करि हिवइ, उठइ श्रीसघ जाम।
'आसकरण' आवइ तिसइ, 'सघवी' पद अभिराम ॥ १ ॥
कुलदीपक श्री 'चोपडा', यड जेहइ विस्तार।
लखमी रो लाहउ लीयइ, सघ माहे सिरदार ॥ २ ॥
श्री सघ आगलि इम कहइ ए मोरी अरदास।
'पद ठवणो' करिवा तणउ, द्यो आदेश उलास ॥ ३ ॥
इम अनुमति ले सघनी, घरइ चित्त उच्छरग।
पद ठवणउ सघवी करइ, आणी उलट अग ॥ ४ ॥
सवत 'सोलचिहुत्तरइ', सोमवार सिरताज।
'फागुणसुदि' 'सातम' दिनइ, थाप्या श्री जिनराज ॥५॥
भट्टारक सोहइ भलउ, 'श्री जिनराज सूरिंद'।
प्रतिपउ ता'लगि महियलइ, जा लगि ध्रू रवि चद ॥६॥
सइ हथ 'श्री जिनराज' गुरु, थाप्या प्रबल पडूर।
आचारिज चढती कला, 'श्री जिनसागरसूरि' ॥ ७ ॥
सूरिज जिम सोहइ सदा, 'श्री जि(न?)राज सुरिंद।
श्री 'जिनसागर' सूरि गुरु, प्रतपइ पूनिम चद ॥ ८ ॥

हिव श्री 'जिनराज सूरिन्दकं', महियल करइ विहार।

थायइ उच्छव अति घणा, वरत्यउ जय जयकार ॥ ९ ॥

'जेसलमेर' दुरंग नहि, 'सहसफणउ-श्रीपास'।

थाप्यउ श्री जिनराज गुरु, समर्या पूरइ आस ॥ १० ॥

श्री 'विमलाचल' उपरइ, जे आठमउ उद्धार।

कीधी तेहनी थापना, जाणइ सहु संसार ॥ ११ ॥

परतिख पास 'अमीझरउ' थाप्यउ 'भाणवड' माहि।

इम अवदात किता कहूं, मोटउ गुरु गजगाह ॥ १२ ॥

परतिख देवी 'अम्बिका', परतिखि 'बावन वीर'।

'पंचनदी' साधी जिणइ, साध्या 'पांच पीर' ॥ १३ ॥

श्री खरतरगच्छ सेहरउ, महियलि सुजस प्रधान।

प्रतपउ श्री 'जिनराज' गुरु, दिन २ चढ़तउ वान ॥ १४ ॥

ढाल इग्यारहमी आयो आयउरी समरंता दादा आयउ।

गायउ गायउरी जिनराजसूरि गुरु गायउ ॥

'श्री जिनसिंह सूरि' पाटोधर, प्रतपउ तेज सवायउरी ।जि०१।आ०।

पूरब पच्छिम दक्षिण उत्तर, चिहुं दिसी सुजस सुहायउ।

रंगी रंगीली छयल छबीली, मोती (य) वेगि वधायउरी ।।२।।जि०।।

धन धन 'धर्मसी' शाह नो नंदन, धन 'धारलदे' जायउ।

तू साहिब मैं तेरउ सेवक, तुझ चल(र?)णे चित्त लायउ री ।३।जि०।

'सिंधु' देस विहार करीनइ, 'पांच पीर' वर ल्यायउ।

उदय हवइ तिणि देसइ अधिकउ, जिणि दिशि पूज्ज गवायउरी ।४।जि।

श्री 'ठाणांग' नी वृति करिनइ, विषमउ अरथ बतायउ।

सूरि मन्त्रधारी परउपगारी, इंदु नउ बीजउ भायउरी ।।५।।जिन०।।

सह को श्रावक रजी 'नव खंड', निज नामउ वरतायउ ।
विद्यावंत वडउ गच्छ नायक, सहुको पाय लगायउरी ॥६॥जिन०॥
सोहर शहर सदा 'सेत्रावउ' 'मरुधर' माहि मल्हावउ ।
संवत 'सोल इक्यासी', वरसइ, एह प्रबंध बणायउरी ॥७॥जिन०॥
'आसाढा वदि तेरसि' दिवसइ, सुरगुरु वार कहायउ ।
श्री गच्छनायक गुण गावतां, 'मइ पिण सबलउ आयउ'री ॥८॥जि०॥
'रत्नरूप' वाचक मन मोहइ, 'खेम' वंश दीपावउ ।
'हमकीर्त्ति' मुनिवर मन हरषइ, एह प्रबंध करायउरी ॥९॥जिन०॥
श्री 'जिनराजसूरि' गुरु सुरतरु, मइ निज चित्ति वसायउ ।
मुनि 'श्रीसार'' साहिब सुपसायइ, मनवांछित फल पायउरी॥१०॥जि०।

इति श्री खरतरगच्छाधिराज सकल साधुसमाज वृंद वंदित पादपद्म निरुद्ध सन्नेक मंगलसद्म श्री जिनराजसूरि सूरिश्वराणां प्रबंध शुभ थंव बंधुरतरो लिखितोय श्री फालू ग्राम ॥ शुभ भूयात पठक पाठकना मराठमनसा ॥ श्राविका पुण्यप्रभाविका धारा पठनार्थं ॥ श्री प्रथम दूहा २१, प्रथम ढाल गाथा १६ दूहा ५, बीजी ढाल गाथा १२ दूहा, ५ तीजी ढाल गा १६ दूहा ३, चौथी ढालगा ११ दूहा ५, पाचमी ढाल गाथा १५ दूहा ५, छट्ठी ढाल गाथा १४ दहा २, सातमी ढाल गाथा ११ दूहा ४, आठमी ढाल गाथा ११ दूहा ५, नवमी ढाल गाथा ३७ दूहा ६, दशमी ढालगाथा १७ दूहा १४, इग्यारमी ढालगाथा १० सर्व गाथा २२४, सर्व श्लोक ३२४ सब ढाल ११, (पत्र २ से ६, प्रत्येक पत्रमें १५ लाइनें सुन्दर अक्षर, ज्ञानभंडार दानसागर बंडल नं० १३ तत्कालीन लि०)

——

॥ श्री जिनराज सूरि गीतम् ॥

(१)

'श्री जिनराज सूरीश्वर' गच्छ धणी, धुरि साधु नउ परिवार ।
ग्रामानुग्रामइ विहरता सखि, वरसता हे देसण जल धार ॥१॥
कइयइ सुगुरु पधारिस्यइ जी, इण नयरइ हे सखि पुण्य पडूर ।
सूहवि मोती वधारि (वि?) स्ये जी ॥ आ ॥
जेहनइ वंसइ वड़वडा, गच्छपति हुआ निरदोष ।
देवता जिहनी साखि द्यै सखि, तिण सुं हे कुण करइ मन रोष ॥२॥
'श्री अभयदेवसूरि' जिहां हुआ, सखि नव अंग विवरणकार ।
चउसठि योगिणी जिण जीतली, 'जिनदत्तसूरि' हे जिहा सुखकार ॥३॥
जेहनी महिमा नउ नहीं सखि, पार पहु निहाल ।
"श्री जिनकुशल सूरीश्वरु' सखि, दीपइ हे इणि जगि चउसाल ॥४॥क०
पतिशाहि अकबर बूझव्यउ, जिणि अमृत वाणि सुणावि ।
"श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वर' हुअउ सखि, इणि गच्छि हे जग अधिक प्रभाव ॥५॥क०
'लाहोरि' दीधी जेहनइ, गुण देखि आप हजूर ।
श्रीयुगप्रधान पदवी भली सखि, छानउ हे रहै किम जगि सूर ॥६॥ क०
तेहनइ पाटइ प्रगटियउ सखि, 'श्री जिनसिंहसुरिन्द' ।
तसु पाटि परतखि थप्पियउ सखि, ए गुरु सोहगनउ कन्द ॥७॥ क०
निर्मलइ वंश(इ) ऊपनउ, वजू स्वामि शाखि शृङ्गार ।
श्री'गुणविनय' सद्गुरु इसउ सखि, चाहिवा हे मुझ हर्ष अपार॥८॥क०

(२) श्री जिनराजसूरि सवैया।

'जिनदत्त' (सूर) अर 'कुशल' सूरि मुनिंद
यठित दायक जाकु हाजरा हजूर जु।
चारित पात (विरयात) जीते (हैं) मोह मिथ्यात
और जो अशुभ कर्म किये जिन दूर जु
'जिणसिंघ सूर' पाट सोहै मुनिवर थाट
भणत सुजाण राय विद्या भरपूर जु।
नछत्तन (नक्षत्र?) माझ जैसे राजत निछत्रपति,
सूरिन में राजे ऐसे जिनराज सूर' जु ॥१॥
जैसे बीच वारण(?)के गगके तरग मानो,
फोट सुखदायक भविक सुख साजकी।
गगन अना नकी ग्रह वद विचरत
सन रस सरस सनल रीझ फाजकी।
गाजत गभीर अ (घ?) न धार सुध सीर बूंद,
श्रवण सुणत धुन (ध्वनि?) ऐन मेघ गाज की।
'जिनसिंघ सूर' पाट विधना सो घडी (य) घाट,
अमृत प्रवाह वानी(णी?) सूर 'जिनराज' की ।२।
'साहिजहां' पातिशाह प्रबल प्रताप जाको,
अति ही करूर नूर को न सरदारी (?)है।
'असी चउ गढ' मन थहराये जाक भय,
ऐसो जोर चकतौ हुवौ न कोउ भारी है।

श्रीय 'जिनसिंघ' पाट मिल्यो माहि मनसुध,
'धरमसी' नंदन सकल जग जाण्यो है।
कहे 'कविदास' षट्दरशन कुं ज्यांगे,
शासनकी टेक 'जिणराज सूरि' राख्यो है ।३।
'आगरे' नखत आये सबहीके मन भाये,
विविध वधाये संघ सकल उछाह कुं।
राजा 'गजसंघ' 'सूरसंघ' 'अमरपत्थान',
'आलम' 'दीवान' सदा सुगुरु सराह कुं ।
कहे 'कविदास' जिणसिंघ पाट सूर तेज,
अगम सुगम कीने शासन सुठाह कुं ।
'मिगसर वहु (वदि?)चोथ' 'रविवार' शुभ दिन,
मिले 'जिनराज' 'शाहिजहां' पतिशाह कुं ।४।

॥ श्री गच्छाधीश जिनराजसूरि गुरु गीतम् ॥

(३) ॥ ढाल अलवेल्यानी जाति मांहे ॥

***

आज सफल सुरतरु फल्यउ रे लाल, आज सफल थयउ दीस । सुखदाइ
गच्छ नायक भेट्यो भलेरे लाल, 'श्रीजिनराज सूरीश' ॥१॥सु०
सोभागी सवि सूरि मइं रे लाल, समता लीन शरीर । सु० ।
दिनकर नी परि दीपतउ रे लाल, धरणीधर वर (परि?)धीर ।सु॥२॥
तूठी जेहनइ 'अंबिका' रे लाल, अविचल दीधो वाच । सु० ।
लिपि वाची 'घंघाणियइ' रे लाल, सहुको मानइ साच सु०॥३॥सो०॥

राउल 'भीम' सभा भली रे लाल, 'जेसलमेर' मझार। सु०।
परवादी जीता जियइ रे लाल, पाम्यउ जय-जयकार। सु०॥४॥सो०
'श्री जिनवल्लभ' साभल्यउ रे लाल, कठिन क्रिया प्रतिपाल। सु०।
इण जगि परतखि पेखियइ रे लाल, 'श्रीजिनराज'कृपाल।सु०॥५॥सो०
प्रतिपइ पुण्य पराक्रमइ रे लाल, मानइ सहुको आण। सु०।
पिशुन थया सहु पाधरा रे लाल, दूरइ तजि अभिमान।सु०॥६॥सो०
मइ गल जिम गुरु मालहतउ रे लाल, मोटा साथि मुणिंद। सु०।
जन मन मोहइ चालता रे लाल, पामइ परमाणद। सु०॥७॥ सो०॥
क्रोध तज्यउ काया थकी रे लाल, दूरि कियउ अहङ्कार। सु०।
मायानइ मानइ नहीं रे लाल लोभ न चित्त लिगार। सु०॥८॥ सो०॥
श्री सघ सोभ वधारतउ रे लाल श्रीजिनराज मुनीश। सु०।
प्रतिपउ गुरु महिमडलइ रे लाल, 'सहजकीरति' आगीस।सु०॥९॥सो०

॥ इति श्री गच्छाधीश गुरु गीतम्॥

(४)॥ ढाल, वहिनोनी जाति मांहि॥

गच्छपति सदा गहगउ निलउ, पच सुमति गुपति दयाल।
सुविहित शिरोमणि साचिलउ पच महाव्रत पाल॥१॥
सद्गुरु वदियइ, 'श्रीजिनराजसुरिन्द'।
दरशन अधिकआणद, जगम सुरतरु कन्द॥ आकणी
सघपति शिरोमणि सघवी, श्री 'आसकरण' महन्त।
पद ठवणउ जिहनउ कियउ, खरची धन बहु भाति॥२॥ स०॥

पहिरावियउ निज गच्छ सहुए, अधिको करणी कीध।
'श्रीजिनसिंह' पटोधरू, जग माहे जस लीध ॥ ३ ॥ स०॥
'बोहित्थ' वंशइ वाधतउ, श्री 'धर्मसी' धन धन्न।
'धारलदे' घरणी परइं, जायउ पुत्र रतन्न ॥ ४ ॥ स०॥
जसु देखि साधुपणउ भलउ, हरखि दियउ बहुमान।
साबासि तुम्ह करणी भली, कहइ श्री 'मुकरबखान' ॥ ५ ॥ स०॥
श्री संघ करइ वधामणा, जसु देखि करणी सार।
गुणवंत सगले ही लहै, पूजा विविध प्रकार ॥ ६ ॥ स०॥
जिण माहि बहु गुण सूरिना. देखियइ प्रकट प्रमाण।
वरणवो हुं नवि सकूं, जसु विद्या तणउ मान ॥ ७ ॥ स०॥
श्री गच्छ खरतर चिरजयउ, जिहां एहवा गच्छराय।
सीह अनइ वलि पाखर्यउ, कहु किम जीपणउ जाय ॥८॥ स०॥
जिहां लगे मेरु महीधरू, जिहा लगइ शशि दिनकार।
प्रतिपउ तिहां लगि गच्छधणी, 'सहजकीरति' सुखकार ॥९॥स०॥

(५)

श्री जिनराजसूरि गुरु राजइ, सिरि जैन तणउ छत्र छाजइ।
सद्गुरु प्रतपउ जी ॥
दिन-दिन तेज सवायो, भविक लोक मनि भायउ ॥ १ ॥ श्री०॥
गजगति गेलइ चालइ, पञ्च महाव्रत पालइ। स०। श्री०॥
मुनिवर मुनि परवारइ, कुमति कदाग्रह वारइ ॥ २ ॥ स०श्री०॥
श्रीजिनसिंह सूरि पाटइ, पूज्य सोहइ मुनि (वर)थाटइ।स०। श्री०॥
महिमा मेरु समानइ, दिन-दिन चढ़तइ वानइ ॥३॥ स०। श्री०॥

'धरमसी' शाह मल्हार, उरि 'धारल' अवतार । स० । श्री०

रूपइ वरकुमार, विद्या तणउ भण्डार ॥ ४ ॥ स० । श्री०

वाद करी 'जेसाणइ', जस लीधउ सहुको जाणइ । स० श्री०

पास वरइ जिण जाणी, लिपि वाची 'घवाणी' ॥ ५ ॥ स० । श्री०

बोलइ अमृत वाणी, सुरनर कइ मन भाणी । स० । श्री० ।

सुललित करिय वखाण, रीझविया रायराण ॥ ६ ॥ स० । श्री०

'बोहित्थरा' वसइ दीवउ, कोडि वरस चिरजीवउ ॥स०।श्री०

जा लगि सूरज चन्द, 'आनन्द'प्रभु चिरनन्द ॥ ७ ॥ स० श्री०

(६)

आवउजी माहरइ पूज इणि देसडइ, चीतारइ श्री 'करण' नरेश र ।

चीतारइ नरनारि नरग्र ।

मुझ मुख थी पथीडा वीनवे र, जाई जिण छइ पूज तिण देश र ॥१॥

तीन प्रदिक्षण तू दइ करीरे, श्री जी र तु लागे पाय रे ।

वलि युवराजा 'रंगविजइ' भणी र,इतरउ करिजे वीर पसाय रे॥२॥आ०

जसु दरशनि दीठइ तन ऊलसइ रे,मेरु तणी पर पूजजी धीर र ।

मिहर करि पूज माहरइ देसडइ र,आवउ पुहपा(?) केरा वीर र ॥३॥

सवेग्या माहे सिर सेहरउ र कलि मइ गौतम नइ अवतार र ।

जगम तीरथ तारक जगतमइ रे,जिण जीतउ वलि मदन विकाररा॥४॥

पूजजी जे किम मुझ नइ वीसरइ रे, जिणसु धरम तणउ मुझ राग र ।

त गुरु वीसाया नवि वीसरइ रे, जेहनउ साचउ जससोभाग रे ॥५॥

'श्री जिनराजसूरीसर' गच्छ धणी रे, मानो मझनी ए अरदास र ।

'सुमतिविजय' कहि चतुर्विध सघनी रे पूजजी सफल करउ हिव आश ॥ ६ ॥ आ०

x x x

कवि धर्मकीर्त्ति कृत

॥ श्री जिनसागर सूरि रास ॥



दूहा: श्री 'थंभणपुर' नउ धणी, पणमी पास जिणंद।
श्री 'जिनसागर सूरि' ना, गुण गावुं आणंदि ॥ १ ॥
सरसति मति मुझ निरमली, आपउ करिय पसाय।
आचारज गुण गांवता, अविहड वर द्यो माय ॥ २ ॥
वीर जिणिंद परम्परा, 'उद्योतन' 'वर्द्धमान'।
सूरि 'जिणेश्वर' पाटवी, 'जिनचन्द्र' सूरि गुणजाण ॥३॥
'अभयदेव' 'वलभ' गुरु, पाटइ श्री 'जिनदत्त'।
'जिनचंद सूरीसर' जयउ, सूरिसर 'जिनपत्ति' ॥ ४ ॥
'जिणेसर सूरि' 'प्रबोध' गुरु, 'चंद्र सूरि' सिरताज।
'कुशलसूरि' गुरु भेटतां, आपइ लखमी राज ॥ ५ ॥
'पदमसूरि' तेजइ अधिक, 'लबधि सूरि' 'जिनचंद'।
पाटि 'जिनोदय' तसु पटइ, श्री 'जिनराज' मुणिंद ॥ ६ ॥
'जिनभद्र' श्री 'जिनचंद' पटि, 'जिनसमुद्र' 'जिनहंस'।
नामइ नव निधि संपजइ, धन धन 'चोपड' वंश ॥ ७ ॥
मनवंछित सुख पूरवइ, 'माणिक सूरि' मुणिंद।
'रीहड' वंशइ गरजीयउ, युग प्रधान 'जिणचंद' ॥८॥

श्री 'अकबर' प्रतिबोधीयो, वचने अमृत धार।
श्री 'खरतर' गच्छराज नी, कीरति समुद्राँ पार ॥ ६ ॥
'युगप्रधान' पद आपीओ, 'अकबर' साहि सुजाण।
निज हाथि श्री 'जिनसिंह' नइ, पदवो दीध प्रधान ॥१०॥
तिण अवसर बहु भाव सु, दइ 'सवा कोडि' दान।
'बच्छावत' विन वानरइ, 'कर्मचंद' मन्त्रि प्रधान ॥११॥
युगवर 'जंबू' जेहवउ, रूपइ 'वयर-कुमार'।
'पंच नदी' साधी जिणइ, शुभ लगन शुभ वार ॥१२॥
संवत 'सोल गुणहत्तरइ', बूझवि साहि 'सलेम'।
'जिन शासनि मुगतउ' कर्या, 'खरतर' गच्छ मन खेम ।१३।
तासु पाटि 'जिनसिंह गुरु, तासु शीस सिरताज।
'राजसमुद्र' 'सिद्धसेनजी', दरसणि सीझइ काज ॥१४॥
युगवर श्री 'जिनसिंह' नइ, पाटइ श्री 'जिनराज'।
'जिनसागरसूरि' पाटवी, आचारिज तसु काज ॥१५॥
कनग पिता क्षुण मात तसु, जनम नगर अभिहाण।
क्षुण नगरइ पद थापना, 'धरमकीरति' कहइ वाणि ॥१६॥

ढाल'— तिमरीरई

'जंबू' दीपह थाल समाण, 'लख जोयण जेहनो परिमाण।
'दक्षिण' 'भरतइ' आरिज देस, 'मरुधरि' 'जंगलि' देस निवेस ॥१७॥
तिहा कणि राजइ 'रायसिंघ' राज, 'बीकानयर' वसइ शुभकाज।
ठाम ठाम सोहइ हट सेरी, वाजिंत्र वाजइ गावइ गोरी ॥१८॥

नगर माहि बहुला व्यवहारी (व्यापारी), दानशील तप भावि उदारी।
वसइ तिहा पुण्यइ बहु वित्त, साह 'वछा' नामइ थिर चित्त ॥१६॥

राग : रामगिरी।

दोहा रयणी सोहइ चंद सुं, दिनकर सोहइ दीन।
तिम 'वछा' 'बोहिथ' कुलइ, पूरइ मनह जगीन ॥२०॥

ढाल: पाछली

तासु घरणि 'मिरगा दे' सती, रूपइ रंभा नु जीपति।
'चउसठि' कला तणी जे जाण, मुखि बोलइ सा अमृत वाणि ॥२१॥
प्रिय सुं प्रेम धरइ मनि घणउ, 'दसरथ' सुत जिम 'सीता' सुणउ।
चंद्र चकोर मनइ जिम प्रीति, पालइ पतिव्रत धरम नी रीति ॥२२॥
पाचे इंद्री विषय संयोग, नित नित नवला बहुविध भोग।
नव योवन काया मद मची, इंद्र संघातइ जाणे सची ॥२३॥

राग: आसावरी

दूहा सुखभरि सूती सुंदरि, पेखि सुपन मध राति।
रयत चोल रत्नावली, प्रिउ नै कहइ ए वात ॥ २४ ॥
सुणी वचन निज नारि ना, मेघ घटा जिम मोर।
हरख भणइ सुत ताहरइ, थासइ चतुर चकोर ॥२५॥
ढाल आस फली माहरी मन मोरी, कूखइ कुमर निधान रे।
मनवंछित डोहला सवि पूरइ, पामइ अधिकउ मान रे ।२६।आ०।
संवत 'सोल बावन्ना' वरषइं, 'काती सुदी' 'रविवार' रे।
'चउदसि'ने दिनि असिणि रिखइ(नक्षत्रइ?),जनम थयो सुखकाररे॥२७

नित नित कुमर वावड बहु लक्खणि, सुरतरु नउ जिम कद र ।
नयणी अनोपम निल्वट सोहइ, वन्न पूनम नउ चद र ॥२८॥
सहुअ सज्जन भगतावो भगतइ, मेलि बहु परिवार रे ।
'चोलउ' नाम दियउ मन रगइ, सुपन तणइ अनुसारि र ॥२९॥
सहिअ समाण मिलि मात पासइ, साह 'वछराज' कुलि दीव र ।
'सामल' नाम धरि दुलरावइ, सुरिज चोलउ चिरजीव र ॥३०॥

रागः— मारु

दोहा।—रमइ कुमर निज हरखसु, मात 'मृगा दे' पुत्र ।
गजगति गेलइ चालतउ, कुलमडण अदभूत ॥ ३१ ॥
मीठा बोलइ बोलडा, काय कनक नइ वान ।
बालक 'बत्रीस लखणो', मात पिता द्यइ मान ॥ ३२ ॥

ढाल.— पाछली

माडडी मनोरथ पूरइ, सुन्दर सुखडी आपइ रे ।
बडा वचन नवि लोपीयइ, मन सुधि सील समापइ र ॥३३॥
आसा बाधी माइडी, सेवइ सुरतरु जेमो र ।
पोसइ कुमर नइ बहु परइ, 'सालिभद्र' जिम प्रेमो र ॥३४॥
इण अवसरि तिहा आवीया, 'जिनसिंह सूरि' सुजाणो रे ।
श्री सघ वदइ भावसु, उछव अधिक मडाणो रे ॥३५॥
मात 'मृगादे' सुत सहू, निसुणइ अरथ विचारो रे ।
मन मइ वैराग उपनो, जाणी अथिर ससारो ॥ ३६ ॥
दोहा।—'गजसुकमाल' जिम 'मेघ मुनि', 'अइमतो तिण काले ।
'सामल' ते करणी करइ, जाणइ बाल गोपाल ॥३७॥

ढाल :- केदारा गौडी

सांभली वचन सद्‌गुरु केरा, जीवादिक नवतत्व भलेरा ।
उपशम रस घ(भ?)र कायकलेसी, संजम सेवा बुद्धि निवेसी ॥३८॥
मात पासे जइ कुमर सोभागी, पभणइ संजमि लीउ मनरागी ।
अनुमति मोहि दीयउ मोरी माइ, नवि कीजइ चारित्र अंतराइ ॥३९॥
मात भणइ वछ सांभलि साचुं, इण वचनइ पुत्र हु नवि राचुं ।
लोह चणा मयण दांति चवायइ, तेहथी संजम कठिन कहायइ ॥४०॥
कुमर भणइ माता किं सूरे परचारइ, कायर हुइ ते हीयडुं हारइ ।
संजम लेवा वात कहेवी, मइ पिण निश्चइ दिक्षा लेवी ॥ ४१ ॥

राग : देसाख

दोहा : वडभाइ 'विक्रम' सहित, 'मात' भणइ मु(तु?)झसाथि ।
करिसुं आत्माराधना, 'जिनसिंह सूरि' गुरु हाथि ॥४२॥
दूध माहि साकर मिली, पीतां आणंद होइ ।
वचन सुणि निज मातना, हरखउ कुमर मनि सोइ ॥४३॥
'विक्रमपुर' थी अनुक्रमइ, सद्‌गुरु करइ (अ) विहार ।
'अमरसरइ' पउधारिया, 'श्रीजिनसिंह' उदार ॥४४॥
सामाइक पोसउ करइ, पडिकमणउ गुरु पासि ।
संजम लेवा कारणइ, कुमर मनइ उलासि ॥४५॥
श्री'अमरसर' संघ तिहां, हरखित थयउ अपार ।
वाजित्र बाजइ नवनवा, वरनउलां सुप्रकार ॥४६॥
'श्रीमाल' वंशि सुहामणउ, 'थानसिंह' थिर चित्त ।
संजम उछव कारणइ, खरचइ तिहां बहु वित्त ॥४७॥

संवत 'सोल इकसठ॰' 'माह' मासि सुभ मासि ।
मात सहित दिक्षा लीयइ, पहुती मन नी आसि ॥४८॥
तिहाथी चारित लेइ नइ सद्गुरु साथि विहार ।
विद्या सीखइ अति घणी, धरता हर्ष अपार ॥४९॥
अनुक्रमि देस वदावता, आया 'जिनसिंह' राया ।
'राजनगर' 'जिनचंद' ने, लागइ गुणवर पाया ॥५०॥
पाच समिती तीन गुप्ति जे, पालइ प्रवचन मात ।
छ जीवनी रक्षा करइ, न करइ पर नी ताति ॥५१॥
सामाचारि सूत्र अरथ, जाणइ सरव प्रकार ।
'सतावीस' गुणे करी, सोहइ 'सामल' सार ॥५२॥
तप वूहा माडलि तणा वड दिक्षा तिहा दीध ।
'श्रीजिनचन्द्र सूरि' सइहथइ, 'सिद्धसेन' मुनि कीध ॥५३॥
वूहा उपधान उवहइ, आगम ना वलि जोग ।
'छ मासी' 'विक्रमपुरइ' सरिया सकल सयोग ॥५४॥
सुगुरु भणावइ चाह सु उत्तम वचन विलास ।
युगप्रधान बहु हित धरइ, पहुचइ वछित आस ॥५५॥

चउपइ :—पभणइ शास्त्र सिद्धांत विचार, मुणिवर 'सिद्धसेन' सिरदार ।
गुरु नउ विनय साचवइ भलउ, 'सिद्धसेन' विद्या गुण निलउ ॥५६॥
'अग इग्यारह' 'बार-उपग', 'पयन्ना दस भणइ मन चग ।
'छ छेद' ग्रन्थ मूल सूत्रह 'च्यारि',
'नन्दी', अनइ 'अनुयोगदुआर' ॥५७॥

'चउद्दह' विद्या तणउ निहाण, सद्गुरु उत्तम करइ वखाण ।
उदयवंत अवसर नउ जाण, निज गुरु तणइ जे मानइ आण ॥५८॥
खमावंत मांहे पहली लीह, सोहइ गुरु पासइ निसदीह ।
दस विध जतीधरम नउ धणी, तप जप संयम करुणा घणी ॥५९॥
यात्र करी 'सेत्रुजा' तणी, साथइ 'जिनसिंह सूरि' दिनमणी ।
संघवी 'आसकरण' विख्यात, संघ करावी कारिअ जात ॥६०॥
'खंभात' नइ 'अमदावाद', 'पाटण' माहि घणउ जसवाद ।
'वडली' वंदया 'जिनदत्तसूरि', भेट्या पातक जायइ दूर ॥६१॥
इणि अनुक्रमि 'जिनसिंह सूरि', 'सीरोहीयइ' गुरु सबल पडूरि ।
करिअ पइसारौ वंदइ संघ, राजा मान दियइ 'राजसिंह' ॥६२॥
'जालउरइ' आवइ गच्छराज, वाजित्र वाजइ वहुत दिवाज ।
श्रीसंघ मुं वंदइ कामिनी, रूपइ जीति सुर भामिनी ॥६३॥
'खंडप' नई 'द्रूणाडा हेव, 'घंघाणी' भेटया वहु देव ।
अनुक्रमि मन मइ धरिअ ऊलासि, आव्या'वीकानेर' चउमासि ॥६४॥
'वाघमल' पइसारो करइ, नीसाणइ अंवर थरहरइ ।
कीधा नेजा पोलि पागार, वसतिइं आयां श्रीगणधार ॥६५॥
आनन्दइ चउमासउ करी(इ), आया 'मेवडा' वहु हित धरी ।
तेडावइ श्रीशाहि 'सलेम', 'मेडता' आया कुसले खेम ॥६६॥

राग: वैराडी

दूहा। तिणि अवसर 'जिणसिंह' नउ, परवसि थयउ सरीर ।
देवगतइ छूटा नही, पुरष वडा वहु मीर ॥६७॥

अवसर जाणी तिण समइ, श्रीसंघ कहइ विचारि।
बोलइ सद्गुरु चित धरी, वड वसतो सिरदार ॥६८॥

अणशण आराधन करी, पहुता गुरु सुर लोग।
वाजित्र वाजइ तिहा घणा, मांडवी तणइ सजोगि ॥६६॥

सोग निवारी थापीया, सखर महूरत लीध।
भट्टारक गुरु 'राजसी', 'सामल' आचारज कीध ॥७०॥

'आसकरण' 'अमीपाल' वलि, 'कपूरचन्द' सुविलास।
पद ठवणउ करइ रग सु, 'ऋषभदास' 'सूरदास' ॥७१॥

राग:— आसावरी

तत्र सिणगार्यां पोलि पगार, तबू ऊचा खचीया।
मस्तक उपरि मोती झुंबइ,वहींचइ भारइ लचीया ॥
तेह तलइ बइठा बहु लोग, भूमि भाग नहिं माग।
एक एकनइ वेरहइ भेल्हइ, तिल पडिवा नहीं लाग ॥७२॥
सबली नांदि मडाइ तिहा कणि, वाजित्र विविध प्रकार।
सूरी मत्र आप्यउ तिण अवसरि, 'हेमसूरि' गणधार॥
श्री 'जिनराज' सूरिश्वर नामइ, साधु तणा सिणगार।
बाल्पणइ सूरि पद आपी, सुप्यउ गच्छ नउ भार ॥ ७३ ॥
तेहिज नांदि आचारिज पदवो, 'श्री जिनराज' समीपइ।
मन सुद्धइ सूरि मत्र ज दइ, 'जिनसागर सूरि' थापइ।
सजि सिणगारने कामिणी आवइ, भरि भरि मोतिन थाल ॥
सोवन फूलि वधावइ सद्गुरु, गावइ गीत धमाल ॥ ७४ ॥

संवत 'सोल चउहत्तरि' वरसइ, 'फागुण सुदि' 'सनिवार'।
शुभ वेला सुभ महूरत जोगइ, 'सातमि' दिवस अपार ॥
संघ सहु हरखित थइ वंदइ, थइ वहुलउ वहुमान।
'आसकरण' संघवी तिण अवसरि, आपइ वांछित दान ॥७५॥
भट्टारक 'जिनराजसूरि', वर्त्तमान गणधार।
पाटइ 'जिनसागर' वरू, आचारिज अधिकार ॥७६॥

ढाल : तेहिज

विहरिअ 'राणपुरउ' 'वरकाणइ', 'तिमिरि' भेट्या पास।
'ओइस' 'धंवाणी' यात्र करीनइ, 'मेडतइ' करिअ चउमास।
तिहाथी उच्छव कीध 'जेसाणइ', 'भणसाली' 'जीवराज'।
'राउल' 'कल्याण' सुं श्री संघ वंदइ, सीधा सगला काज ॥७७॥
अमृत वाणि सुणइ तिहां श्रीसंघ, वंच्या इग्यारह अंग।
मिश्री सहित रुपइआ लाहइ, साह 'कुसला' मन रंग ॥
लद्रुपुरइ पाउधारइ सदगुरु, श्रीसंघ साथइ आवइ।
साहमीवच्छल करइ साह 'थाहरु', 'श्रीमल' सुत वित्त वावइ ॥७८॥
तिहाथी विहार करि 'जिनसागर', आचारज हितकार।
'फलवद्धीयइ' आवइ ततखिण, थावइ वहुअ प्रकार ॥
उलट धरिअ तिहां कणि वादइ, श्रीसंघ द्यइ बहुमान।
पइसारउ करि 'श्रावक' 'मानइ', दीधउ याचक दान ॥७९॥
श्रीखरतर गच्छ सोह चडावइ, तिहांथी करिअ विहार।
'करणुंअइ' आया वहु रंगइ, संघ वंदइ गणधार ॥

वीकानयर वदीइ पहुचड, 'श्रीजिनसागर सूरि' ।
'पासणीए' करयु पइसारउ, रगइ वहुत पडूरि ॥८०॥

राग सामेरी

पासाणी वहु वित वावइ, पइसारउ साम्ही आवइ ।
'सोलह सिणगारे' नारी, सिरि(श्री?) कलश धरि वहु नारी ॥८१॥
सिरि 'भागचद' सुत आवइ, 'मणुहरदास' निज दावइ ।
वलि सघ सहगुरु वदइ, श्रीखरतरगच्छ चिरनदइ ॥८२॥
तिहा वाजइ ढोल नीसाण, सरस झालरनउ मडाण ।
वहु छवि वसतइ आया, श्रीसघ तणइ मनिभाया ॥८३॥
सुहव मिली निछरणा कीजइ, निज जन्म तणउ फल लीजई ।
तबोल भली पर दीधा, मन वछित कारिज सीधा ॥८४॥

राग —धन्याश्री

'विक्रमपुर' थी सचरी ए, 'सर' माहि करिअ चउमास ।
दिन दिन रग वधामणाए पूरइ मननीआस ॥आ०॥
वधावउ सदगुरु ए,'जिनसागरसूरि'वधावउ ।आ०।खरतरगच्छपडूर।व०।
तिहा श्री रगइ आवियाए, 'आलणसर' सुखवास ।व०।
उच्छव सुगुरु वादिआए, मत्री 'भगवत दास' ॥८५॥व०॥
विचरिय तिहा थी भावसु ए, 'डीडवाणउ' वदावि ॥ व० ॥
'सुरपुर' सघ सुहामणउ, भेटइ वहुल भावि । व० ॥ ८६ ॥
'मालपुरइ' महिमा थइ ए लीधउ लाभ विशेष ॥ व० ॥
श्री सघ वदइ चाह सु, प्रहसमि नयणे पेखि ॥ व० ॥ ८७ ॥

नयर 'बीलाडइ' चित धरी ए, चतुर करइ चउमास ॥ व० ॥
उच्छव करइ 'कटारिआ' ए, पाखी पारण खास ॥ व ॥ ८८ ॥
अनुक्रमि सद्गुरु पांगुरइ ए, 'मेदनीतटइं' निहाली ॥ व० ॥
'रायमल' सुत जगि परिगडउए, 'गोलवछा' 'अमीपाल' ॥८६॥व॥
बंधव जेहनइ अति भलउए, वड वखती 'नेतसीह' ॥ व० ॥
वहु परिवारइ दीपताए, भात्रीजउ 'राजसीह' ॥ व० ॥ ६० ॥
सबली नांदइ आदर्यो ए, व्रत उच्चार सवेर ॥ व० ॥
रूपइए लाहण करिए, तंबोलइ नालेर ॥ व० ॥ ६१ ॥
'रेखाउत' वित्त वावरइ ए, 'सीरीमाल' 'वीरदास' ॥ व० ॥
'माडण' 'तेजा' रंगसुं ए, 'रीहड' 'दरडा' खास ॥ व० ॥ ६२ ॥
सुंदर गुरु सोहामणउ ए, भावइ कीजइ सेव ॥ व० ॥
तिहाथी विहरी अनुक्रमि ए, वंद्या 'राणपुर' देव ॥ व० ॥ ६३ ॥
'कुंभलमेरइ' जिन थुणी ए, 'मेवाडइ' गुणगान ॥ व० ॥
'उदयपुरा' नउ राजीयउ ए, राणउ 'करण' द्यइ मान ॥६४॥व०॥
'लखमीचंद' सुत परगडाए, 'रामचंद' 'रघुनाथ' ॥ व० ॥
चित्त धरि वंदइ प्रहसमइए, 'अजाइब दे' सुत साथि ॥६५॥व०॥
साधु विहारइ पग भरइ ए, 'सोनगिरइ' अहिठाण ॥ व० ॥
श्री संघ उच्छव नित करइ ए, अवशर नउ जे जाण ॥६६॥व०॥
'साचउर' संघ सहु मिली ए, आग्रह हे 'हाथिसाह' ॥ व० ॥
चउमासइ गुरु राखीयाए, 'जिनसागर' गजगाह ॥ ६७ ॥ व० ॥
वर्तमान गच्छराजजी ए, 'जिनसागर सूरि' सुखकार ॥व०॥
'श्री जिनसागर' चिरजयउए, आचारिज पद धार ॥६८॥व०॥

युगवर खरतर गच्छ धणीए, 'जिनचंद सूरि' गुरुराय ॥व०॥
सीस सिरोमणी अतिभलाए, 'धरमनिधान' उवझाय ॥९९॥व०॥
तास शीस अति रंगसु ए, 'धरमकीरति' गुण गाइ ॥ व० ॥
संवत 'सोलइक्यासीयइए, 'पोस वदि' 'पंचमि भाइ ॥१००॥
श्री जिनसागरसूरि' नउ ए, रास रच्यु सुखकंद ॥ व० ॥
सुणता भवियण सपजइ ए, गाता परमाणंद ॥ १०१ ॥ व० ॥
ता प्रतपउ गुरु महियलउ, जा गगनइ दिनईस ॥ व० ॥
'धरमकीरति'' गणि इम कहइ ए, पूर सकल जगीस ॥१०२॥व०
इति भट्टारक जिनसागर सूरिणाम् रास
(बीकानेर स्टेट लायब्रेरीमें पत्र ४)

श्रीजिनसागर सूरि सवैया

धुरा देस मरुधरा शहर 'वीकाण' सदाइ,
'वोहिथ' हरे विध इत वसइ 'वछउ' वरदाइ।
'मृगा माल' मोटिम्म, सुपन सूचित सुत सुन्दर,
आठ' वर्ष अधिकार कला अभ्यास कुलोधर।
वैराग जोग मा रमतइ, लखमी तजी कोडे लखे,
सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुर, उपम इसडे आरखे ॥१॥
युगप्रधान 'जिनसिंह' वस 'चोपडा' विसेखइ,
श्रावक 'अकबर' शाहि लीध धर्मलाभ अलेखइ।
सइ हथ तण गुरु पासि, सुकृत करि माता सगइ,
'अमरसरइ' ऊनति आए मनरंगि अभंगइ ॥

संग्रह्यो साधु मारग मरम, पूरण गुण पूरण परवे,
सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम कहटे आरवे ॥२॥
विनय विवेक विचार वाणि सरसती विराजइ,
'विद्या चवद' निधान, सुजस जगि वाजा वाजइ।
विषम वाणि विषवाद, विषयरस अंगि न वावइ,
वखनदंन वर विबुध वान दिन प्रति वाधइ ॥
वाजणी थाट वादी विघट, परि परि पूगइ पारखे।
सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम उसडे आरखे ॥३॥
उछव रंग वधाउ दिवावत, सुंदर मंगल गीत सुहावत,
मोतीन थाल विसाल भरि भरि, भामिनी भावसुं आपि वधावत।
गच्छ नायक लायक लाख गुणी, गुण गावत वंछित ते फल पावत।
श्री 'जिनसागरसूरि' वडरागर, नागर रंगि देखवड गुरुआवत ॥४॥
प्रगट सोभाग साग विकट वडराग भाग,
राग हु कउ लाग दोप दूरि होर हीयउ हइ।
तनु तुम दृढ़धार अमृत ज्ञान आहार
कठिन क्रिया प्रकार काम जु वहीयउहइ।
ललित ललाट नूर, तपति प्रताप सूर,
'सागर' सुरिंद गुरु गौतम कहायउ हइ ॥५॥
सवाया छंद (उपरोक्त बिकानेर स्टेट लायब्रेरी की
प्रति मे, तत्कालीन लि०)

×*×

कवि सुमतिवल्लभ कृत

श्री जिनसागर सूरि निर्वाणरास



दूहा:—समरु सरसति सामिनी, अविरल वाणि द मात।
गुण गाइसु गच्छराज ना, 'सागर सूरि' विख्यात ॥१॥

सहर 'बीकाणो' अति सरस, लखिमी लाहो लेत।
'ओस वश' मइ परगडा, 'बोहिथरा' निरदत ॥ २ ॥

'वच्छराज' घरि भारजा, 'मिरधा दे' सुत दोइ।
'बीको' नइ 'सामल' सुतो, अविचल जोडी जोइ ॥ ३ ॥

श्री 'जिनसिंघ सुरीश नी, सामलि देशन सार।
मात सहित बान्धव तिन्हे, सज (म) लइ सुखकार ॥४॥

'माणिकमाला' भावडो, 'विनयकल्याण' विशेष।
'सिद्धसेन' इम त्रिहु तणा, नाम दीक्षा ना देखि ॥ ५ ॥

'वादी राय' भणाविया, 'हर्षनदन' करि चित्त।
'चवदह' विद्या सीखवी, सूत्र अर्थ सयुक्त ॥ ६ ॥

सूधो सयम पालता, विद्या नउ अभ्यास।
करता गीतारथ थया, पुण्याइ परकास ॥ ७ ॥

'सिद्धसेन' अभिनव थयो, सिद्धसेन' अवतार।
बीजा चेला बापना, 'सामलिउ' सिरदार ॥ ८ ॥

श्री 'जिनचद सुरीश' नउ, वचन विचारी एम।
आचारिज पद थापना, कीधी कहिस्यु नम ॥ ६ ॥

'जिनचन्द्र सूरि ना' शिष्य मान सहुजी, वडा वडा श्रावक तम।
धनवत धींगा पूज्य तणड परगड़जी, वडभागी गुरु एम ॥ ३ ॥म०
सघ ऽदयवन्त 'अहमदावाद' नो जी, 'वीकानेर' विशेष।
'पाटण' नइ 'खभाइत' श्रावक दीपताजी,'मुलताणी'रासी रेख॥४॥म०
'जेसलमेरी' श्रावक पूज्य ना परगडाजी, सघनायक 'ससनाल'।
'मेडता' मइ गोलच्छा' गह गहेजी, 'आगरा'मे 'ओसवाल' ॥५॥म०
'वीलाडा' मइ सघनी 'कटारिया' जी, 'जइतारणि' 'जालोर'।
'पचियारव''पाल्हणपुर 'मुज्ज''सूरत मड जी,'दिल्ली' नड 'लाहोर'॥६॥म०
'लूणकरणसर' 'उ' 'मरोट' मड जी, नगर 'थटा' माहि तम।
'टरा' मे सामग्री मानतो जी 'फलवधी' 'पोकरण' एम॥७॥ म०
'सागरसूरि' ना श्रावक मह सुखीजी, अधिकारी 'ओसवाल'।
देश प्रदेशे श्रावक दीपताजी, सर रखण भूपाल ॥ ८ ॥ म०

ढाल ३ (कडखानी)

'करमसी' शाह सवत्सरी पोखिनै, 'महमद' दिइ अति सुजश लेवे।
सुपुत्र 'लालचन्द'हर वरस सवत्सरी,पोखि न सघनु श्रीफल देवे॥१॥
धन्य हो धन्य 'सागरह सूरिन्द' गुरु, जेहनो गच्छ दीप सवायो।
वड वडा श्रावक परगडा नवखडे,पूज्य नो सुयश त्रिहुलोक गायो॥२॥
शाह 'लालचन्द' नी, धन्य वडा मावडी,जे विद्यमान 'धनादे' कहीजइ।
'पूठीया' उपरा सहनो 'पीटणी', सदर समरावितइ लाभ लीजइ॥३॥
वल्लभ 'कपूर द' जेहनो जाणई, सुपुत्र 'उग्रसेन' नी जेह माता।
खरचवइ आगला गच्छ ना काम नड,धर्म ना रागिया अधिक राता॥४॥

साह'शान्तिदास'सहोदर 'कपूरचन्द' सुं, वेलिया हेम ना जेह आपे।
'सहस दोय रूपिया पाच शत' आगला, खरचिने सुजश निज सुथिर थापे ॥५॥
मात 'मानबाई इं' खंड इक पीटणी, करीय उपासरइ(में)सुजश लीधा।
वरस ना वरस आसाढ़ चोमास ना,पोसीता पोखिवा बोल कीधा॥६॥
शाह 'मनजी' तणो कुटुंब अति दीपतो, चिहुं खंडे चंद नामो चढायो।
शाह 'उदेकरण' 'हाथी' खरो 'हाथियो', जेठमल 'सोमजी' तिम सवायो ॥७॥
धरम करणी करे'शाह हाथी'अधिक,राय'वन्दी'छोडनो विरूद राखे।
जीव प्रतिपाल उपगार सहु नै करै,सुपुत्र'पनजी भला सुजस दाखे॥८॥
'मूलजी संघजी' पुत्र 'वीरजी, 'परोख' सोनपाल' 'सूरजी' वखाणो।
पाखीया'वीस नइ च्यारि' जीमाड़िने,पुण्य नो वाहरू जे कहाणो ॥९॥
'परीख''चन्द्रभाण''लालू'सदा दीपता,'अमरसी'शाह सिरताज जाणो।
'संघवो' 'कचरमल्ल परीख' अखइ अधिक, वाछड़ा 'देवकर्ण' तिम वखाणो ॥ १० ॥
साह 'गुणराजना' सुपुत्र अति सलहीइं, 'रायचन्द गुलालचन्द' साह दाखो।
एम श्रीसंघ उदयवंत'राजनगर'नो,भल भला श्रावक एम आखो ॥११
तेम 'खंभाइती' संघ नायक वड़ो,'भंडशाली' 'बधू' सुतन कहीइं।
वड़ वड़ो धरम करणी घणी जे करी,लाख मोजा'ऋषभदास'लहिए॥१२॥

दोहा- श्री 'जिनसागरसूरि' नो, उदयवन्त परिवार।
चेला गीतारथ सहु, पालइ पञ्च आचार ॥ १ ॥

यथा योग जाणी करी, पाठक वाचक कीध।
श्री 'जिनधर्म'सूरीशने, गच्छ भार इम तीध ॥२॥

ढाल ३

इक दिन दासी दोडती,
आवे कृष्ण नइ पास र ॥ एहनी ॥

'अहमदाबाद' मइ आपणइ, सेंहरि सघ हजूर र।
प्रथम ओढाडी पछेवडी, श्री जिनसागरसूर' र ॥ १ ॥

अवसर लाखीणो लही, खरचे द्रव्य अनेक र।
'भणसाली 'वधू' भारिजा, 'विमला दे' सुविवेक र ॥२॥

चलतु पद थापन करो, सूर मन्त्र गुरु दीध रे।
श्री'जिनधर्म सूरीश्वर', नाम थापना इम कीध र ॥ ३ ॥

सघवणि 'सहजलदे' तिहा, ल्यइ लिछमी नो लाह र।
पद ठवणो करइ परगडो, कहइ लोक वाह-वाह र ॥४॥

पहिला पणि सुकृत जिण, कीधा अनेक प्रकार र।
शत्रुंजय सघ कराविउ, खरची द्रव्य हजार र ॥ ५ ॥

श्री 'जिनसागरसूरि' जी, सद्गुरु साथे लीध र।
पाटनरने पाभरी, जाचक जन ने दीध र ॥ ६ ॥

'भणसाली मधुआ' घरणि, ते 'सहिजल दे' एह र।
पद ठवणि जे 'पूज्य' नै, खरची नइ जस लेह रे ॥ ७ ॥

ढाल ४ (कपूर हुवे अति ऊजलो रे)

अवसर जाणी आपणउ रे, आगल थी अणगार।
जिण थी शिव सुख पामिइ रे, त सामलि अग इग्यार ॥ १ ॥

सुगुरु जी धन्य-धन्य तुम अवतार,

ए माणस भव नुं सार ॥ आकणी ॥

आनुपूरवी एहवी रे, उपशम्यो पूरव रोग।

श्री संघ 'अहमदाबाद' नो रे, गीतारथ संयोग ॥२॥

'आखातीज' नइ याहड़ि रे, शिष्यादिक नइ सार।

सीखामणि सहगुरु दि(य)इं रे, गुरु गच्छ नुं व्यवहार ॥३॥

चारित फेरी ऊचरि रे, गच्छ भार सहु छोड़ि।

उत्तम मारग आदरि रे, अशुभ कर्म दल तोड़ि ॥ ४ ॥

'सुदि आठम वैसाख' नो रे, अणसण नो उच्चार।

श्रीसंघ नी साखि करइ रे,त्रिविधि-त्रिविध विविहार ॥५॥

पासे गीतारथ यति रे, श्री 'राजसोम' उवझाय।

'राजसार'पाठक भला जी, 'सुमतिजी' गणि नी सहाय ॥६॥

'दयाकुशल' वाचक वलि रे, 'धर्ममन्दिर' मुनि एम।

'समयनिधान' वाचक वह रे, 'ज्ञानधर्म' मुनि तेम ॥ ७ ॥

"सुमतिवल्लभ" सावधान सुं रे, आठ पुहर सीम तेम।

शाह 'हाथी' धर्म हाथियो रे, निजरावि गुरु एम ॥ ८ ॥

ढाल (९) विणजारानी

मोरा सहगुरुजी, तुम्हे करज्यो शरणा च्यार। सहगुरुजी करज्यो०

अरिहन्त सिद्ध सुसाधुनो मो० केवलि भापित धर्म,

ए फल नरभव लाध नो ॥ १ ॥ मो०

जीव 'चुरासी' लख, त्रिकरण शुद्ध खमाविज्यो। मो०।

पाप अठारह थान, परिहरि अरिहन्त ध्यावज्यो ॥ २ ॥ मो०

परिहरि सगग दोष, बिताळीस आहार ना । मो०
जिन धर्म एक आधार, टालि दु ख ससार ना ॥ ३ ॥ मो०
ए ससार असार, स्वारथ नो सहुको सगो । मो० ।
अथिर कुटुम्ब परिवार, धर्म जागरिया तुम जगो ॥ ४ ॥ मो०
अथिर छइ पुत्र कलत्र, अथिर माल घर परिग्रहो । मो० ।
अथिर विभव अधिकार, अथिर काया तिमि ए कहो ॥५॥ मो०
तुम्ह भावज्यो भावन बार, मन समाधि माहि राखज्यो । मो० ।
अथिर मात नइ तात, अथिर शिष्यादिक नइ भाखज्यो ॥ ६ ॥ मो०
जीवन हाथ मइ जाइ, राखी को न सकइ सही । मो० ।
जेहवो सध्या वान, तहवी सपद् ए कही ॥ ७ ॥ मो०
एकलो आवइ जीव, जाइ एकलो प्राणियो । मो० ।
पुण्य पाप दोइ साथ, भगवन्त एम वखाणियो ॥ ८ ॥ मो०
बाल मरण करी जीव, ठामि ठामि हुओ दुखी ।मो०।
पडित मरण आगि, जिण थी जीव हुवइ सुखी ॥॥६॥मो०
इम भावना एकात भाव, अरिहन्त धर्म आराधता ।मो०।
पुहता सरग मझारि, आतम कारिज साधता ॥१०॥मो०॥
दोहा :—'सतर(इ) मइ ओगणीस' मइ, मास 'जेठ वदि तीज' ।
'शुक्रे' 'सागरसूरि' जी, सरग ना पाम्या बीज ॥ १ ॥
ढाल ६—*काया कामिनी वीनवइ रे लाल, एहनी ।*
अवसर लाखीणो लहीर, साह हाथी सर्व जाण ।मर पूजजी।
महिमा मोटी इम करइ र लाल, पूज्य तणइ निर्वाण ॥ १ ॥
पासइ रहि निजराविवारे, दिन 'इग्यारह' सीम । मे० ।
सुख सनद व्रत आखडी र लाल, नाना विधि ना नीम ॥२॥मे०

चोवा चंदन अरगजा रे, सहगुरु तणइ सरीर । मे० ।
करि अरचा पहिरावियां रे लाल, पांभरी पाटू चीर ॥मे०॥३॥
देव विमान जिसो करी रे, माडवी अति श्रीकार । मे० ।
बाजे गाजे बाजते रे लाल, करि नीहरण विचार ॥मे०॥४॥
वयरचि सूकड़ि अगर सुं रे लाल, कस्तूरी घनसार । मे० ।
दहन दीइ घृत सींचता रे लाल, श्री पूज्य नुं तिणवार ॥मे०॥५॥
जीव छुडावी (वे?)जुगति सुं रे, श्री संघ मेलो होइ । मे० ।
'गाया' 'पाडा' 'बाकरी' रे लाल, रूपइया शत 'दोइ' ॥मे०॥६॥
'शान्तिनाथ' नइ देहरइ रे लाल, वादी देव विशेष । मे० ।
वचन साभलि वीतराग ना रे लाल, मूंकी सोग अशेष ॥मे०॥७॥

(ढाल ८) धन्याश्री *कुंवर भलइ आविया एहनी ।*

श्री 'जिनसागर सूरि' जी ए, पाटि प्रभाकर तेम ।
सुगुरु भले गाइयइ, श्री'जिनधर्म सुरीसरुए, जयवंता जग एम ॥१॥
देस प्रदेशे विहरता ए, भविक जीव प्रतिबोह । स० ।
उदयवंत गच्छ जेहनो ए, महियल मोटो सोह ॥ स० ॥ २ ॥
गुण गाता सगुरु तणा ए, पूज्यइ मन नी खाति । स० ।
मन वंछित सहु ना फलि ए, भाजि मन नी भ्रांति ॥ स० ॥ ३ ॥
संवत 'सतर वीसोत्तरइ' ए, 'सुमतिवल्लभ' ए रास । स० ।
'श्रावणसुदि पुनम' दिनि ए, कीधो मनह उल्लास ॥ स० ॥ ४ ॥
श्री 'जिनधर्म्म सुरीश' नो ए, माथि छै मुझ हाथ । स० ।
'सुमतिवल्लभ' मुनि इम कहइ ए, 'सुमतिसमुद्र' शिष्य साथ ।स०।५।

॥ इति श्रीनिर्वाणरास संपूर्णम ॥

(हमारे संग्रह में, तत्कालीन लि०)

श्री जिनसागरसूरि अष्टकम्

(१)

श्री मज्जेशलमेरुदुर्ग नगर, श्री विक्रम गुर्जरे।
थट्टाया भटनेर मण्निततटे, श्री मेदपाट स्फुटम् ॥
श्री जावालपुरं च योधनगर, श्री नागपुरा पुनः ।
श्रीमहाभपुरं च वीरमपुरे, श्री सत्यपुर्यामपि ॥१॥
मूलत्राण पुरे मरोट नगर, देराउरे, पुग्गले।
श्री उच्च किरहोर मिद्धनगरे, धींगोटके रुवले ॥
श्री लाहोरपुरे महाजन रिणी, श्री आगरा ने पुरे।
सागानेरपुरे सुपर्व नगरे, श्री मालपुर्यां पुनः ॥२॥
श्री मत्पत्तन नाम्नि राजनगरे, श्री स्थमतार्थे स्तथा।
द्वीप श्री भृगुकच्छ वृद्धनगरे, सौराष्ट्रके सर्वत ।
श्री वाराणपुरे च राधनपुरे, श्री गूर्जरे मालवे।
॥३॥
सर्वत्र प्रसरी सरीति सतत, सौभाग्यमानाल्पत ।
वैराग्य वि ाद्या मति सुभगता, भाग्याधिकत्व भृशम्।
नैपुण्य च कृतज्ञता सुजनता, यया यशोवान्तता ।
सूरि श्री जिनसागरा विजयिनो, भूयासुरते चिरम् ॥४॥
आचार्या सत ञ्च सति जगतो, गच्छेषु नाम्नापरम्।
त्व त्वाचार्य पदार्थयुग् युगवर, प्रौढ प्रतापाकर ॥

भव्याना भव सागर प्रतरणे, पोतायमानो भुवि ।
श्री मच्छ्री जिनसागरः सुखकरः, सर्वत्र शोभा करः ॥५॥
सौम्यश्री हिम दीधि तौ सुर गुरौ, बुद्धि र्द्धरायां क्षमा ।
तेजःश्री स्तरणौ परोपकृति धीः, श्री विक्रमे भूपतौ ॥
सिद्धि गौरखनाथ योगिनि बहु,र्लभिश्च लम्बोदरे ।
संत्येवं विविधाश्रया गुण गणाः, सर्वेश्रिता त्वां प्रभो ॥६॥
श्री बोहित्थ कुलांबुधि प्रविलसत्प्रालेय रोचि प्रभा ।
भास्वन्मातृ मृगासु कुक्षि सरसि, श्री राजहंसोपमाः ॥
श्री मद्विक्रम वासि विश्व विदिता', श्री वस्तराजा गजाः ।
संतु श्री जिनसागरा, खरतरे, गच्छे चिरंजीविन'॥७॥
इत्थं काव्य कदम्बकं प्रवरकं, मुक्तापुरः प्राभृतम् ।
विज्ञप्तं समयादिसुन्दर गणिर्भक्त्या विधत्तेभृशम् ॥
युष्मत्प्रौढतम प्रताप तपनो, देदीप्यता सत्वरः ।
यूयं पूरयत स्व भक्त यतिना, शीघ्रं मनोवाछितम् ॥ ८ ॥

(विकानेर स्टेट लायब्रेरी)



॥ जिनसागरसूरि अवदात गीत ॥

(२)

पूरउ पण्डित पूछीयउ र, भामिणि आप सभाव र। जोमीढा।
आगो टीपणो दरसिन, मांडि लगन उपाय र॥ १॥ जो०
'श्रीजिनसागरसूरिजी' र, आज काल पिण नाम र। जो०।
मो मन वाञ्छ उमह्यो र, सुणि अनन्त नइ नाम र। जो०।
'श्रीजिनसागरसूरिजी र लो०। आ०।
'श्रीजिनकुशल' यतीन्दरइ र लो, सुपन दिखाड्यो साच र। जो०
जन्म थकी यश विस्तर्यो र, निकलंक काठ नइ वाच र।२। जो०
राउल 'भीम' नरसरइ र लो, निरखी गुरु मुख नूर। जो०।
केसर चन्दन चरची नइ र, पामिसि पञ्जी पडूर र। ३। जो०
उन्य दिखाडयो 'अम्बिका' र लो श्री जिनशासन देव र। जो०
युगप्रधान 'जिनचन्दजी' र लो, करइ कृपा नित मेव र। ४। जो०
मन मान्या वछित फल्या र, पूज्य पधाया आप र। जो०।
'हर्षनन्दन' कहइ सर्वदा र लो, वाधउ अधिक प्रताप र। ५। जो०

(३)

गाम नगर पुर विहरता पूजजी, 'श्रीजिनसागरसूरि'।
कठिन क्रिया खप आदरी, पूजजी, एहवि सुजस पडूरि॥ १॥
'पूजजी पधारउ सूरजी मेडतइ' र, श्रावक अति अविरक।
श्रावक चितारइ दिन प्रति चाह सु, थापइ लाभ अनेक।
श्रीसंघ श्रीसंघ वान्ी हो, हरखित थाइस्यइ। आ०

खरतर गच्छ शोभा दीयउ, पूजजी बोहिथरे वरदान ।
साहिब 'मुकुरबखानजी,' पूजजी पग लागे धइ मान ॥ २ ॥पू०॥
रूप कला पण्डित कला, पू० वचन कला गुण देख ।
राय राणी मानइ घणुं, पूजजी थांइ माहे विशेष ॥ ३ ॥पू०॥
कामण मोहन नवि करो पू० लोक सहु वसि थाय ।
ए परमातम प्रोछवउ, पू० पूर्व पुन्य पसाय ॥ ४ ॥पू०॥
चित्त चाहता आविया, पू० श्रीसंघ मानी वचन ।
रंग महोच्छव दिन प्रतइ, 'हरषनन्दन' कहइ धन ॥ ५ ॥पू०॥

(४)

॥ जाति फूलडानी ॥

श्री संघ आज वधावणी, हिव आज अधिक उछरंगो रे ।
आचारज पद पामियउ, 'जिनसागरसूरि' सुचंगो रे ॥ १ ॥श्री०॥
खरतरगच्छ उन्नति थइ, हिव कीधा अनुपम कामो रे ।
दुरजण मुहडा सामला, हिव साजण वाधी मामो रे ॥२॥श्री०॥
धन पिता 'वच्छराज' जो 'मृगा' पिण माता धनो रे ।
वंश धन 'वोहिथरा', जिहां उत्तम पुत्र रतनो रे ॥ ३ ॥ श्री०
वाजा वाज्या रूयड़ा, वलि तान मान सन्मानो ।
सूहव गावइ सोहलउ, तिहां याचक पामइ दानो रे ॥ ४ ॥ श्री०
नयण सलूणा पूजजी, हिव हुं वलिहारी नामइ रे ।
मोहनगारा मानवी, हिव'हरषनन्दन'सुख पामइ रे ॥ ५ ॥ श्री०

(५)

चतुर माणस चित्त उल्सइ रे, देखी पूज्ज सरूप रे। हो पूज्जजी॥
नान्हीवय गुण मोटका रे, ऊपजइ भाव अनूप रे॥१॥
ए परमाथ मीठज्यो रे।
मान सरोवर लहुडोर, राजहंस सेवइ तीर रे।
लवणागार मोटउ घणु रे, पथी न चाखइ नीर रे॥२॥
चंदा कर चादणे, सहुको बइसइ पास रे।
सूर (सूर्य) तपइ जो आकरो, आवइ सहुको नासि रे॥३॥
उचो लांबो अति घणउ, सरलउ पिंड खजूर रे।
नान्ही फलि फहावता, छाया फल भरपूर रे॥४॥
मोटा मइंगल मद झरड, विलसइ ता गर (लग?) राज।
सींहणि करो छावडोर, गाजइ नहा वन माझ।५।
नान्हा मोटा वयु नहा, गुण अवगुण वधाण।
'जिणसागर सूरि' चिर जयउ रे, हर्षनन्दन' गुण जाण॥६॥



श्री करमसी संथारा गीतम् ।

सदगुरु चरण नमी करी, गाइसु श्रीऋषिराइ ।
'करमसींह' करणी करी, सांभलीयइ चित्तु लाइ ॥
चित्तु लाइ संभलीयइ चरित, निज भावस्युं चारित लियउ ।
धन वंश 'कूकड़ चोपड़ा' नउ, सुयश प्रगट जिणइ कियउ ॥
तप करी काया प्रथम शोधी, विगय षट् रस परिहरी ।
'करमसी' सुपरि कियउ संथारउ, सुगुरु चरण नमी करी ॥१॥
रीतइ गुरु कुल वास नी, मनि आणी संवेग ।
जाणी काया कारमी, करि निश्चल मन एक ॥
मन एक निश्चल करी आपइ, अन्न समुंखड परिहर्यउ ।
आहार त्रिविध त्रिविध संयोगइ गुरु मुखइ अणसण वर्यउ ॥
आराधना करि संघ खामण, धरी विविध उल्हास नी ।
'करमसी' तिणि विधि कियउ संथारउ, रीति गुरुकुल-वास नी ॥२॥
चड्यउ संथारइ तिणि परइ, जिणि विधि पूरब साधु ।
करम भाजिवा सिंह हुवउ, भलइ 'करमसी' साधु ॥
'करमसी' साधु भलइ दीपायउ, गच्छ खरतर संघनइ ।
परभावना अम्मारि वरती, उच्छव होई दिन दिनइ ॥
सिद्धान्त गीतारथ सुणावइ, साधु वेयावच्च करइ ।
धन कर्म करमट तिय खपावइ, चढ्यउ संथारइ तिणि परइ ॥३॥

जन्म 'जेसाणइ' जेहनउ, 'चापा शाह' मल्हार।
'चापलदेवि' उरि धर्यउ, 'ओसवश' नउ सिणगार ॥
'ओसवश' नउ सिणगार मुनि, दुकर करणी जिणि करी।
अनेक जामन मरण हुती, छटउ अणसण उच्चरी ॥
'करमसी' मुनि मन कीरयउ करडउ नेह नाण्यउ देहनउ।
मन मदन करडइ क्षेत्र जीत्यउ, जन्म 'जेसाणइ' जेह नउ ॥ ४ ॥
जेहनी प्रशसा सुर करइ, मानव पहो मात्र।
सोम मुनीश्वर इम कहइ, धन धन एह सुपात्र ॥
धन एह पात्र सुमाधु सुन्दर, परतरि मुनि पचम अरइ।
धन जन्म जीविय जाणि एहनउ, पर त्रिजी महिमा करइ ॥
मास की सलेखण करि नइ, अधिक दिन वीस ऊपरइ।
ए अमर जग मइ हुअउ इणि परि, प्रसंसा सुर नर करइ॥५॥
'वइसाखउ' सतोषस्यु, 'सातमि वदि' उचार।
कियउ सथारउ करमसी, कलि मइ धन अणगार ॥
अणगार धन्ना शालिभद्र जिम, तप अनेक जिणइ किया।
'सइ अढी वेला निवी आम्बिल' करी जिण अणसण लिया ॥
चारित्र पचे वरस पाली, सु लयउलाई मोक्ष स्यु।
आणद खरतर गच्छ वाध्यउ, वइसाखइ सतोष स्यु ॥ ६ ॥

॥ इति गीतम् ॥

——✕——

कवि ललितकीर्त्ति कृत

॥ श्री लब्धिकल्लोल सुगुरु गीतम् ॥

गुरु 'लब्धिकल्लोल' मुणिन्द जयउ, जाणे पूरव दिसि रवि उदयउ।
मन चिन्तित कारिज सिद्धि थयइ, दुख दोहग दूरइं आज गयउ ॥
'सोलइ सइ इकयासी' वर वरसइ, भवियण लोकण देखण हरसइ।
गच्छपति आदेशइं 'भुज' आया, चउमास रह्या श्री संघ भाया ॥२॥
'काती वदि छट्ठि' अणसण सीधो, मानव भव सफल जिणे कीधो।
ले परभव ना संबल वहुला, पहुंता सुर सुवरस(?) भुवन वहिला ॥३॥
आवी सुरपति नरपति निरखइ, 'मगसर वदि सातम' वहु हरखइ।
पगला थाप्या चढतइ दिवसइ, निरखी तन वयन नयन विकशइ ॥४॥
थिर थान भलो 'भुज्ज' मइं सोहइ, सुर नर किन्नर ना मन मोहइ।
सद्गुरु परतिख परता पूरइ, सहु संकट विकट विघन चूरइ ॥५॥
'श्रीमाली' कुल कैरव चंदा, साह 'लाडण' 'लाडिम' दे नंदा।
दउलति दायक सुरतरु कंदा, प्रणमइ पद पंकज नर वृन्दा ॥६॥
श्री 'कीरतिरतन सूरीश' तणी, शाखा मइं अद्भुत देव मणी।
वाचक 'लब्धिकल्लोल' गणी, दिन प्रति प्रतपउ जिम दिवस मणी ॥७॥
गणि 'विमलरंग' पाटइ छाजइ, अभिनव दिनकर जिम जगि राजइ।
जसु नामइ अलिय विघन भाजइ, जसु अतिशय करि महियलि गाजइ ॥
मन शुद्धइं कीजइ गुरु सेवा, अति मीठी दीठी जिम मेवा।
निज गुरु पद सेव करण हेवा, दिन प्रति वाछइ जिम गज-रेवा ॥६॥

तुम्ह दरिसण देशान्तरि काइ भमउ, गुरु सेव थकी दालिद्र गमउ।
इति अनीति कुनीति दमउ, घर अगणा लिखमो पामि रमउ ॥१०॥
साह 'पीथइ' 'हाथी' 'रायसिंघइ', 'माडण' आदइ करि 'भुज' सघइ।
उच्छव करि शुभ तणउ रगइ, थाप्या पूरव दिसि मन सगइ ॥११॥
निज सेवक नइ दरसण आपइ, पगि पगि मानिव करि दुख कापइ।
गणि 'ललित कीर्ति' चढतइ दाबइ, वदइ गुरु चरण अधिकइ दावइ ॥१२॥

॥ इति गुरु गीतम् ॥

सुगुरु वंशावली

भट्टारक 'जिनभद्र' सरउ, गच्छ नायक खरतर।
तसु पट्टहि 'जिनचन्द' सूरि, तप तज दिवाकर ॥
सद्गुरु श्री'जिनसमुद्र', तासु पट्टहि श्रुत सागर।
तसु पट्टहि बुधिमत सूरि 'जिनहस' सूरीश्वर ॥
अभिनवउ इन्द्र रूपइ अधिक, सजम रमणी सिर तिलउ।
गच्छपति तास पट्टहि सुहिर, 'जिनमाणिक्य' महिमा निलउ ॥१॥
'पारिख' वश प्रसिद्ध, जुगति जिनधर्म सु जोरी।
कहु तसु पट्टि 'कल्याणधीर', वाचक धर्म धोरी ॥
'भणशाली' कुल भाण शीस, तसु पट्टहि सुरतरु।
वाचक श्री'कल्याणलाभ' वाणी अनुपम वरु ॥
पाठक 'कुशलधीर' तासु सिसु, वदइ एम वंशावली।
गुरु भगत शिष्य गुरु गुण यही सफल करउ रसनावली ॥२॥

(P C गुटका न० ६०)

—

।। श्रीविमलकीर्ति गुरु गीतम् ।।

(१)

प्रह ऊठी नित प्रणमियइ हो, 'विमलकीर्ति' गणि चंद ।
तेज प्रतापे दीपता हो, प्रणमै सहु नर वृन्द ।। १ ।।
भविक जन वंदियइ हो, नामे पाप पुलाय ।। भ० ।। आंकणी ।।
खरतरगच्छ मे शोभता हो, सर्व कला गुण जाण ।
जेहनइ मुखि भारती वसइ हो, जाणइ ज्ञान विज्ञान ।। २ ।। भ० ।।
'हुबड' गोत्रे परगड़उ हो, 'श्रीचंद' शाह मल्हार ।
मात 'गवरा' जनमिया हो, शुभ मूरति(महूरत) सुखकार ।।३।।भ०।।
संवत् 'सोलह चउप्पणइ' हो, लीधी दीक्षा सार ।
'माह सुदि सातम' दिनइ हो, पालइ निरतिचार ।। ४ ।। भ० ।।
'साधुसुन्दर' पाठक भला हो, सकल कला प्रवीण ।
सईहथ दीक्षा जेण दीधी हो, ध्यान दया गुण लीण ।।५।।भ०।।
चउरासी गच्छ सेहरो हो, श्री 'जिनराज सुरिन्द' ।
वाचक पद सईहथ दियो हो, सेव करइ जन वृन्द ।।६।।भ०।।
'सोलहसइ बाणू' समइ हो, श्री 'किरहोर' सुठाम ।
आराधन अणसण करी हो, पहुंता स्वर्ग सुधाम ।। ७ ।। भ० ।।
'विमलकीर्ति' गुरु नाम थी हो, जायइ पातक दूर ।
'विमलरत्न' गुरु सेवता हो, प्रतपे पुण्य पडूर ।। ८ ।। भ० ।।

(२)

राग—धन्याश्री ॥

वाचक 'विमलकीर्ति' गुरुराया, प्रणमो भवियण पाया ए ।

सरजन दरिद्र नवनिधि थाइ, सुख संपति लील सदाइ ए ॥ १॥वा०

संवत 'सोल चउपन्ना' वरसे, चतुर चारित्र गहइ हरष ए ।

'साधुसुन्दर' तसु गुरु सुवनीता, वादी गज मद जीता ये ॥२॥वा

तासु शिष्य गुरु चमल जिणन्दा भविक चकोर चित्त चंदा ए ।

अनुक्रम 'वाचक' पदवी पाइ, गुरु सौभाग्य सवाइ ए ॥३॥वा०॥

मूल संघ 'मुलताण' पधारइ, तिहां चउमासइं आवइ ए ।

दान पुण्य (तिहाँ) अधिका थावइ, श्री संघ वधतइ दावइ ए॥४॥वा०॥

सिन्धु नगर 'कहिरोरइ' आया, लख चौरासी खमाया ए ।

अणसण पाली स्वर्ग सिधाया, गीत ज्ञान बहु गाया ए ॥५॥वा०॥

शिष्य शाखा प्रतपउ रवि चंदा, जा लगि मेरु ध्रू चंदा ए ।

'आणन्दविजय' इम गुण गावइ, चढती दउलति पावइ ये ॥६॥वा



साध्वी हेमसिद्धि कृत

॥ लावण्यसिद्धि पहुतणी गीतम् ॥

राग :- सोरठ

दूहा: आदि जिणेसर पय नमी, समरी सरसति मात।
गुण गाइसु गुरुणी तणा, त्रिभुवन माहि विख्यात ॥ १ ॥

वेलि ढाल:-जे त्रिभुवन माहि विख्यात, 'लावनसिद्धि' गुण अवदात
'वीकराज' साहकी धीया, वइरागइ चारित्र लीया ॥२॥

'गूजर दे' माता रतन्न, सहू लोक कहइ धन धन्न।
शीलादिक गुण करि सीता, सहु दुनीया माहि वदीता ॥३॥

जिण माया मोह निवार्या, भवियण भव-जलनिधि तार्या।
सूधा पंच महाव्रत पालइ, त्रिण्ह गुप्ति सदा रखवालइ ॥ ४ ॥

दूहा: अढ़ार सहस शीलंगवर, टालइ सगला दोस।
सुन्दर संजम पालती, न करइ माया मोस ॥ ५ ॥

न करइ तिहा माया मोस, वलि निज घट नाणइ रोस।
धन धन ते श्रावक श्रावी, गुरुणी नइ प्रणमे आवी ॥ ६ ॥

मीठी तिहां अमीय समाणी, सुन्दर गुरुणी नी वाणी।
सुणि सुणि बूझइ भवि लोक, दिनकर दंसणि जिम कोक ॥ ७ ॥

पहुतणी 'रत्नसिद्धि' पाटइ, दिन प्रति जस कीरति खाटइ।
नवनिध हुइ गुरुणी नइं नामइ, मनवंछित भवीयण पामइ ॥८॥

दूहा।—अग उपाग मह तणा, जाणइ अरथ विचार।
श्री 'लावण्यसिद्धि' पहुतणी विद्या गुण भडार ॥६॥
सब विद्या गुण भडार, महिमडलि करइ विहार।
तप करि काया उजवालइ, 'चदनबाला' इणि काले ॥१०॥
'जिनचद' सुगुरु आदेस, परमाण करइ सुविशेष।
अनुक्रमि 'विक्रमपुरि' आवी, निज अत समय परभावी ॥११॥
भवि जीवह रासि खमावी, उत्तम भावना मन भावी।
अण स्रण आदरियउ रग", सुर व(प्र?)णमइ धरमह सगइ ॥१२॥
दूहा।:—समकित सूधउ पालतो, करतो सरणा च्यारि।
इण परि सथारो कीयउ, माया मोह निवारि ॥ १३ ॥
माया मोह निवारी, करइ सघ प्रभावन सारी।
वाजइ पच शब्द तिहा भेरी, नीसाण घुरति नफेरी ॥१४॥
अपछर आरतीय उतारि जिन शासन महिम वधारी।
जिनवर नो ध्यान धरती, नवकार निधइ समरती ॥ १५ ॥
दूहा।:—सवत 'सोलहसइ वासट्ठि', पहुती सरग मझारि।
जय जय रव सुर गण करइ, धन गुरुणी अवतार ॥ १६ ॥
धन धन गुरुणी अवतार, भवियण जन नइ सुखकार।
थिर थान 'विक्रमपुरि' थुभ, देखि मनि थइ अचभ ॥१७॥
परता पूरण मन केरी, कल्पतरु थी अधिकेरी।
'हमसिद्धि' भगति गुण गावइ, ते सुख सपति नितु पावइ ॥१८॥
(तत्कालीन लि० हमारे सग्रह मे)

—

पहुतणी हेमसिद्धि कृत

सोमसिद्धि(साध्वी) निर्वाण गीतम्

राग : मल्हार

सरस वचन मुझ आपिज्यो, सारद करि सुपसायो रे।
सहगुरुणी गुण गाइसुं, मन धरि अधिक उमाहो रे ॥१॥
सोभागिण गुरुणी वंदीयइ, भाव धरी विशेषो रे ।सो०। आंकड़ी।
गीतारथ गुरुणी जाणीयइ, गुणवंती सुविचारो रे।
करुणा रस पूरी सदा, सब जन कुं सुखकारो रे ॥२॥सो०।
शीलइ सीता रूयडी, सोमइ चंद्र समानो रे।
उग्र विहारइ तप करइ, महिमा सहित प्रधानो रे ॥३॥सो०॥
'नाहर' कुल माहि चंदलउ, 'नरपाल' जु गुण ठामो रे।
तेहनी नारी जाणियइ, शील करी अभिरामो रे ॥४॥सो०॥
'सिधा दे' गुण आगली, तास पुत्री गुणवंतो रे।
रूप करी अति शोभती, 'संगारी' नाम कहंतोरे ॥५॥सो०॥
योवन वय जब आवीयउ, पिता मन माहि चिंतइ रे।
'बोथरा' वंशे दीपतउ, 'जेठ शाह' सुहावइ रे ॥६॥ सो० ॥
तास पुत्र 'राजसी' कहीजइ, परणावइ मन रंगो रे।
वरष अढार हुआ जेम(त?)लइ, उपदेश सुणी मन चंगो रे ॥७॥सो०॥
वइराग उपनउ तेहनइ, अनुमति मांगी तेमो रे।
सासु स्वसरा इम कहइ, हुज्यो तूझ नइ खेमो रे ॥ ८ ॥सो०॥

चारित्र पालना दोहिलउ, सुकुमाल जु तुझ देहो र।
मन कहिज्यो काइ तुम्ह वली, मुझ चारित्र ऊपर नहो र ॥६॥सो०
उच्छव महोत्सव कीधा घणा, दीक्षा लीधी सारो र।
लावण्यसिद्धि' कन्हइ रहइ, सूत्र अर्थ ना लयइ विचारो रे ॥१०॥सो०
'सोमसिद्धि' नाम जु थापीयइ, गुणे करी निधानो र।
आपणा पद थापो सही, चारित्र पाल० प्रधानो रे ॥११॥सो०॥
'सेत्रुज' प्रमुख यात्रा करी, तिम वलि तीर्थ अपारो र।
कीधी भावइ सत्य सही, तप उपमा सारो रे ॥ १२ ॥सो०॥
'आगग वदि चउदसि' दीनइ, 'बृहस्पतिवार' प्रधानो रे।
अणसण लीधउ भावसु, सब कला गुण निधानो रे ॥१३॥सो०।
देव थानक पहुता सही, श्री गुरुणी गुणवतो रे।
गुरणी आस्था पूरी करउ, मुझ मन घणो रतो रे ॥१४॥सो०॥
निर्मला पाल० नहटउ, तुम सु (तो?) प्राण आधारो रे।
तुम्ह विना हु क्युकर रहु, दुखीया तु साधारो रे ॥१५॥सो०।
मोरा नइ वलि दादुरा, बाबीहा नइ महो रे
चकवा चितवन रहइ, चदा उपरि नहो रे ॥ १६ ॥ सो० ॥
दुखीया दुख भाजीयइ, तुम्ह विना अवर न कोइ रे।
सद्गुरुणी गुण गाईयइ, वाछउ दिन दिन सोइ र ॥ १७ ॥सो०॥
चद्र सूरज उपमा, दीजइ (अधिक) आणदो रे।
पहुतीणी 'हमसिद्धि' इम भणइ, दज्यो परमाणदो रे ॥१८॥सो०॥
॥ इति निर्वाण गीतम् ॥
(तत्कालीन लि० हमार सग्रहमे)

—

साध्वी विद्या सिद्धि कृत

॥ गुरुणी गीतम् ॥

×

....

... .करि आगली, सुमति गुपति भंडार ॥ प्र० ॥२॥

गोत्रज 'साउसखा' जाणियइ, 'करमचंद' साह मल्हार।

भाव अधिक परिणामइ आदर्यो लीधउ संजम भार ॥प्र०॥३॥

जणती (जाणीती ?) गछ माहे पहुतणी, क्रिया पात्र सुविचार।

अहनिस जपता नाम सुहामणउ, सुख संपति सुखकार ।४। प्र०।

श्री 'जिनसिंह सूरीसर' आपीयउ, 'पहुतणी' पद सुविशाल।

तप जप संजम रूडी परि राखती, जिम माता नइ बाल ।५।प्र०।

साध्वी माहि सिरोमणि साध्वी, भणिय गुणिय सुजाण।

राति दिवस जे समरण करउ, प्रणमइ चतुर सुजाण। ६। प्र०।

'सोलहसइ निआणू' वरस मइं, 'भाद्रव बीज' अपार।

इम बोलइ 'विद्यासिद्धि' साध्वी, संपति हुवउ सुखकार ॥प्र०॥७॥

(स० १६६६ भा० व० ३ लि०)



(१) श्रीगुर्वावली फाग



पणमवि सयल लच्छि वर, चउवीसमउ जिणंदो ।
गाइसु 'खरतर' जुग पवर, आणिसु मनि आणंदो ॥१॥
अह पहिलउ जुगवर जगि जयउ ए, श्री 'सोहमसामि' ।
वीर जिणंदह तणइ पाटि, सो सिवपुर गामी ॥
मोह महाभड तणउ माण, हलि निरदलीयउ ।
'जंबूस्वामी' सुस्वामि साल, केवलसिरि फलीयउ ॥२॥
सुयकेवलि सिरि 'प्रभवसूरि', 'सिज्जंभव' गणहर ।
दस पूर्वधर 'वयरस्वामि', तयणुक्कमि मुणिवर ॥
तसु वंसि गिणयर जिसउए, तव तय फुरन्तु ।
सिरि 'उज्जोयणसूरि' भूरि, गुण गणहिं वदीतउ ॥३॥
'आबूयगिरि' सिहरि जेण, तप कीयउ छम्मासी ।
पयडीकय सिरि सूरि मंत्र, तसु महिम पयासी ॥
'पउमावइ' 'धरणिन्द' जासु, पय क(य) मल नमसिय ।
नन्दउ सो सिर 'वद्धमाण', मुणि लोय पससिय ॥४॥

भास

'अणहिल्लपुरि' मढपत्ति (जीपी) जेण, थापी मुणिवर वासो ।
रायगण 'दुल्लह' तणइ, पामी बिरद पयासो ॥५॥
अह 'खरतर बिरद'पयास जा(सु), दीधउ चउसालो ।
निम्मंल सयम गुणहि जासु, रंजिय भूपालो ॥

वारिय चेइयवास वास, थापिय मुणिवर केन ।
सूरि 'जिणेसर' गुरुराय, दीपइ अविवेकु ॥६॥
'श्रीजिणचंद' मुणिन्द चंद, जिम मोहइ सप्पह ।
विवरिय जेण नवंग चंग, पयडी थंमण पहु ॥
निय वयणिहि गुण कहइ जासु, सीमंधर जिणवर ।
सलहिज्जइ सिरि 'अभयदेव' सो सूरि पुरन्दर ॥७॥
'वागडिया' 'दस स(ह)स' सार सावइ पडिबोहिय ।
'चित्रोडी' 'चामंड' चंड, जसु दरसणि मोहिय ॥
'पिण्डविमोही' विचार सार, पयरण निम्माविय ।
'जिणवल्लह' सो जाणीयइ ए, जण नयण सुहाविय ॥८॥

भास

'अंत्रा' रवि पयास करि, जाणी जुगहपहाणो ।
'नागदेवि (व?)' जो मुणिपवर वाणी अमिय समाणो ॥९॥
अहे अमी समाण वखाण जासु, सुणिवा सु(र) आवइ ।
चउसठि जोगणि जासु नामि, नहु तणु (किणि?) संतावइ ॥
जुगवर श्री 'जिणदत्तसूरि', महियलि जाणीजइ ।
निम्मल मणि दीपंति भाल, 'जिणचंद' नमिज्जइ ॥१०॥
राजसभा छतीस वाद, कियउ जइ जइ कारो ।
'ववेरक' पद ठवण जासु, सुप्रसिद्ध अपारो ॥
सद्गुरु श्री 'जिनपत्तिसूरि', गाजइ अलवेसर ।
सूरि 'जिणेसर' 'जिणपबोह', 'जिणचंद' जईसर ॥११॥

चंपक जिम वणराय माहि, परिमल भरि महकइ ।
कस्तूरी धनसार कमल, परइड वहकइ ॥
तिम सोहइ 'जिनकुशल सूरि', महिमा गुण मणहर ।
तयगतरि 'जिनपद्मसूरि', जिणशासणि गणहर ॥१२॥

भास

लबधिवन्त 'जिनलब्धि' गुरु, पाटिहिं सिरि 'जिणचन्द' ।
जय करण जिण शासनह, श्री'जिणराज'मुणिन्दो ॥१३॥
अह श्री 'जिनराज' मुणिन्द पाटि, गयणंगणि चन्दो ।
खरतरगण सिंगार हार, जण नयणाणन्दो ॥
सायर जिम गभीर धीर, आगम सपन्नउ ।
सहिगुरु श्री 'जिनभद्रसूरि', कलि गोयम मन्नउ ॥१४॥
तसु पाटि'जिणचंद सूरि', जिनसमुद्र सूरिन्दो ।
तसु पाटिहिं 'जिनहंस सूरि', किरि पूनम चन्दो ॥
श्री जिनमाणिक सूरि' तासु, पाटिहि गुण भरियउ ।
चिर जीवउ जगि विजयवन्त, सघहि परिवरियउ ॥१५॥
जंबूमंडलि अचल मेरु, दिणयर दीपतउ ।
तिहं खरतर सघ एह, ता जगि जयवंतउ ॥
वाणारसि सिरि 'खेमहंस', गणिवर सुपसाय ।
एलावेली फाग रवि, सहगुरु गुण गायउ ॥१६॥
॥ इति गुरावली फाग सपूर्णा ॥

चारित्रसिंह कृत

(२) गुर्वावली

सिव सुखकर रे, पास जिणेसर पय नमउ,
गोयम गुरु रे, चरण कमल मधुकर रमउ।
कवि जननी रे, दिउ मुझ शुभ मति निरमली,
रंगि गाउसुं रे, सुविहित गच्छ गुरावली ॥
सुविहित गच्छ गुरावली किर, जेम भवियण गाइयइ।
बहु सिद्धि रिद्धि निधान उत्तम,हेलि सिवपुर पाइयइ।
जे नाण दर्शन चरण उज्जल, 'चउदसयबावन' वली।
गणधार सवि ते भावि वंदो, एह निर्मल मति रली ॥१॥
सिव रमणी रे, वर सिरि वीर जिणेसरु,
गुण गण निधि रे,'गोयम'स्वामी गणहरु।
उपगारी रे सुखकारी भवियण तणइ,
इक जीहा रे, तेहना गुण केहु किम थुणइ ॥
किम थुणइ तेहना गुण महोदधि, कवहि पार न पावए।
जिसु मधुर ध्वनि कर देव दानव, किन्नरी गुण गावए॥
जसु नाम जिहा झरइ अमृत, पढम मंगल कारणो,
सो वीर जिणवर पढम गणधर, जयो दुख निवारणो ॥२॥
'गच्छाधिप' रे, 'सोहम' सामी गुण निलो,
तसु पाटहि रे 'जंबू सामी'जग तिलो।
वर कंचण रे, कोटि 'नवाणूं' परिहरी,
सुभ भावइ रे, परणी जिह संयम सिरी ॥

सयमश्री जिहि हत्थि परणी, चरण करण सु धारओ।
मय अठ्ठ वारण मान गजण, भविय दुत्तर तारओ।
सोभाग सुन्दर सुगुण मन्दिर, मुक्ति कमला कामिनी।
जिह नाथ पामी अतलेने?छइ, भइय शुभ गुण गामिनी ॥३॥
तदनन्तर ए, 'प्रभव स्वामि' श्रुतधनी,
सिव पद्धति ए, भविअह भाखी अति भली।
'सिजभव' ए, सामी गुण गणधार ए,
मिथ्या मत ए, पाप तिमिर भर वार ए ॥
वार ए कुमत कुसग दूषण, भान भेय दिणायरो।
'जसभद्द' गणहर नाण दसण, चरण गुणगण सायरो।
'सभूतिविजय' प्रधान मुनिपती, प्रबल कलिमल खडणो।
श्री 'भद्रबाहु सुबाहु सजम, जैन शासन मडणो ॥ ४ ॥
श्री 'थूलिभद्र' ए, वाम कामभट भजणो,
उपसम रस ए, सागर मुनि गण रजणो।
जसु उत्तम ए, सुजस पडह जगि वाज ए
अति निरमल ए, शील सबल दल गाज ए ॥
गाजए दुक्कर सुविधि कारी जासु गुण पूरी मही।
रवि चक्क तलि वर सील सुभ वलि, जेह सम सरिखो नही।
प्रतिबोधि कोश्या मधुर वयणिहि, किद्ध उत्तम साविया।
सो ब्रह्मचारी सुकृत-धारी, भावि प्रणमो भाविया ॥ ५ ॥
तसु अनुक्रमि ए, 'अज्जमहागिरि' जगि जयो,
जिणकप्पह ए, तुलणाकारी सो भयउ।

तसु सविनय रे, 'अज्ज सुहथी' जाणिये,
'संप्रति' नृप रे, सावय जासु वखाणियउ ॥
वखाणिये जगि जासु उत्तम, लब्धि महिमा अति घणो ।
श्री 'अज्जसंती' थिवर कहियउ, तासु पाट्टिहि गच्छ धणी ।
'हरिभद्र' आरिज सुमति वासित, 'साम अज्ज' मुणीसरो ।
'पन्नवण सुत' उद्धार कारी, जयो सो जगि जुगवरो ॥ ६ ॥
हिव आरिजरे,'संडिल'नाम जइसरू,श्री'रेवत रे मित्र'मुणिंद जुगेसरू ।
धर्मगिर रे धर्माचारिज सोहए,वर संजम रे सील सुगुण जग मोहए ।
मोह ए रतनत्रय विभूषित, 'अज्जगुत्त' मुणीसरा,
गुण रयण रोहण भविय मोहण, 'अजसमुद्द' गणीसरा ।
सिर 'अज्जमंगु' सुधम्म पयडण, पवर जिणवर दीप ए ।
सिरि 'अज्ज सोहम' थविर हरिवल, मोह कुञ्जर जीप ए ॥७॥
गुण सागर रे, 'भद्रगुप्त' मुनि नायगो,
भवियण जण रे, समकित सुरतरु दायगो ।
'सीहगिरि' गुरु रे, अंतेवासी राज ए,
जो ईसर रे, देस पूरव-धर छाज ए ॥
छाज ए बाला मयणमाला, रुव दंसणि नवि चल्यो ।
वर कणय कोडि हेलि छोडी, मयण मय भड जिणि मल्यउ ।
सिरि 'वयर स्वामी' सिद्धि धामी, फलिय सिव सुह आगमो ।
निकलंक चारित्र धवल निर्मल, सिव जुग पवरागमो ॥८॥
श्री आरिज रे, 'रक्षित' जिणमय भास ए,
नव पूरव रे, साधिक शुभ मति वासए ।

'दुर्बलिकापत्र' प्रधान दिणेसर, श्री 'आरिजनन्दि' मुणिन्द गणसरू ॥
गगेमरू मिर 'नागहत्थी' मान माया चूरणो,
'रवत' गणधर 'ब्रह्मदीपी' सूरि वछिय पूरणो ।
'सडिल' अन्नर परम सुहकर, 'हमवत' महा मुणी ।
सिर 'नागअज्जुण' नाम वाचक, अमिग मम सुन्दर झूणी ॥ ६ ॥
'श्रीगो वन्द' र वाचक पन्वी हिन लहइ,
सम दम सम र, चरण करण भर निरवहइ।
श्रुत जल निधि र, 'दिन्नसमूह' वायगो,
'लोकह हित' र, सहगुर शुभ मति वायगो ।'
वायगो भासइ हियइ वासइ, 'दूष्यगणि' जगि निरमला ।
वर चरण रती गुप्ति मुत्ती, नाण निश्चय उजला ॥
श्री 'उमास्वाति' सुनाम वाचक, प्रवर उपसम रतिधरो ।
'पचमय' पयरण परम विवरण, पसमरइ सुइ गुणधरो ॥१०॥
हिव 'जिनभद्र' र, क्षमासमण नाम० गणी,
श्री 'हरिभद्र' र सूरीसर जगि दिनमणी ॥
अगीकृत र, जिन मत 'दव सूरीश्वर' ।
श्री 'नमिचन्द्र' र, सूरिराय दुरयह हरू ॥
दुरिय हरु सुरकर सुविहित, सूरि 'उद्योतन' गुरो,
श्री सूरिमत्र प्रभाव प्रकटित, 'वर्द्धमान' गुणाकरो ॥
दुह कुमत छदी सुविधि वदी, मिच्छतम तम दिणयरो,
जिणधम्म दसी अति जससी, भविय कयरवस सहरो ॥११

जे सुहगुरु रे, उग्र विहारे विहरता,
'अणहिल्लपुर' रे पाटणि पहुता विहरता ॥
चियवासी, रे महिमा खंडण तिह कियउ,
'दुर्ल्लभ' नृप रे 'खरतर' विरुद तिहा दीयउ ॥
तिह दियउ खरतर विरुद उत्तम. नाम जग माहि विस्तरइ,
आदरइ जिनमत भावि भवियण, सुविधि मारग विस्तरइ ॥
चियवासो मयगल सवल दल छल, केसरी पद पाव ए,
श्री 'जेनईश्वर सूरि' सुविहित, सुजस रेह रहावए ॥१२॥
हिव सुविहतरे, चक्र चतुर चिन्तामणी,
मिथ्याभर रे, तिमिर विहंडन दिनमणी ॥
जिन प्रवचन रे, वचन विलास रसालए,
वन मधुकर रे, अति संवेग रसालए ॥
'संवेगरंग विसाल साला', नाम प्रकरण जिह कह्यो,
भव पाप पंक पखालि निरमल, नीर संजम तप धर्यो ॥
'जिनचंद्र सूरि' नवाग विवरण, रयण कोस पयास(ए)णो,
श्री 'अभयदेव' मुणिंद दिनपति, परम गुण गण भासणो ॥१३॥
हिव तप जप रे, ज्ञान ध्यान गुण उजला,
आतम जय रे, चरणु सुधारसु निरमला ।
'जिनवल्लभ' रे, सुविहित मारग दाख ए,
विधि थापक रे, कुमति उसूत्र वि दाख ए ॥
दाख ए गंग तरंग सुवचन, अविधि तरु भंजण करी,
संवेग रंग तरंग सागर, नवल आगल गुणसरी ।
तसु पाटि श्री 'जिनदत्त सूरि' गुरु, 'युगप्रधान' सुहायरो ।

चारित्र चूटामणि समुज्जल, जैनचन्द्र' सूरीसरो ॥१४॥
तासु पाटिहि र, वाल्इ चद कि चदणो
श्री 'जिनपति' र, सूरीसर जगि मडणो।
'जिनइश्वर' र 'जिनप्रबोध' सूरीसरु,
नव सुन्द(र)र, श्री 'जिनचन्द्र' सुधा करू ॥
श्री 'जैनचन्द्र' सुधाकरू जल, कुशल कमला कारगो,
'जिनकुशल सूरि' सुरिंद सकट, दुग्न दोहग वारगो।
'जिनपद्म' सूरि विलास अविचल, पउम आतम थाप ए।
'जिनलब्धि' लब्धि निधान 'जिनचन्द्र', सूरि सुभ मति आप ए ॥१५॥
उदयाचल रे, उदय 'जिनोदय' सुहगुरु,
सुखभायी रे, श्री 'जिनराज' कलाधर।
भद्रकर रे, श्री 'जिनभद्र' मुणीसरु,
'चद्रायण' र, 'चन्दसूरि' गुर गणहर ॥
गणधार मोह विकार विरहित, 'जिनसमुद्र' यतीश्वरु।
'जिनहस सूरीसर' सुमगल, करण दुह दालिद्र हरु।
श्री 'जैनमाणिक' सुगुण माणिक, खीरसागर अनुपमो,
जय सुखकारी दुखहारी, कप्पतर वर जगमो ॥१६॥
श्री 'सोहम' र, स्वामि ने अनुक्रम भयो,
तसठमइ रे, पाटइ ए जुगवर जयो।
सूरीसर रे, श्री 'जिनचन्द्र' सुमोह ए,
वयरागी ए, उपसम धर मन मोह ए ॥

मोह ए भवियण जगह मानस, एह परम जगीसरू,
वर ध्यान सुमति निधान सुन्दर, नवल करुणा रस भरू।
पण विषय विषम विकार गंजण, भाव भड भय जीप ए।
सो सुविचारी शीलधारी, जैन आगम दीप ए ॥१७॥
गंभीरिम रे, उपमा सागर गुरु तणी,
किम पावइ रे जिह तइं महिमा अति घणी।
मह मूलिक रे, रत्नत्रय जिह जाणीयइ,
सम दम रम रे निरमल नीर वखाणियै ॥
वखाणियै जिह सबल संयम, रंग लहरी गहगहइ,
सुध्यान वडवानल सुगुण मय, नदी पूर जिहां वहै।
एक इह अचरिज भयउ हम मनि, सुणहु कवियण इम कहइ।
'जिनचंदसूरि' सुरिन्द पटतर, कहउ जलनिधि किम लहइ ॥१८॥
इह सुहगुरु रे, गुण गण वर्णन किम सकै,
बहु आगम रे, पाठी तउ पुणि ते थकै।
इह कारणि रे, श्री गुरु सम को किम तुलइ,
किह पीतलि रे, कंचन सम सरि किम मुलइ ॥
किम मुलइ रयणी दिन समाणी, बहुय सरवर सागरा,
नक्षत्र ससहर सूर कातर, उखर भू रयणागरा।
सोभाग रंग सुरंग चंगिम, चरण गुण गण निरमला,
'जिनचन्द्र सूरि' प्रताप अविचल, दिन दिनइ चढ़ती कला ॥१९॥
'ढिलि' मंडलि रे, 'रुस्तक' नगर सोहामणो,
तिहा श्री संघ रे, सोहइ अति रलियामणो।

ऊमाहो र, निवसइ गुरु दसण तणो,

मन महि जिम र, चातक घन तिम अति घणो ॥

अति घणो भाव उल्हास उच्छव, सघन धन सो अवसरो,

सा धन्न वेला सु धन मेला, जत्थ दीसइ सुहगुरो ।

जे भावि वन्दइ तह नन्दइ दुरय छन्दइ बहु परे,

सग्रहइ समकित शुद्ध मोवन, सुगुरु उच्छव जे करइ ॥२०॥

मन मोहन र, गुण रोहण धरणी धरु,

पूर्व ऋषि र, उजवालइ जगनीसरु ।

चिर नन्दपो र, श्री 'जिनचद्र' यतीसर,

जा दिनकर र, ससहर सुर वर भूधर ॥

सुर भूधर जा लगइ अविचल, खीरसागर महियले,

जयवन्त गुरु गच्छपति गणधर प्रकट तेजइ इणि कलइ ।

'मतिभद्र' वाचक सोस चारित्र,-सिंह' गणि इम जप ए ।

गुरु नाम सुणता भावि भणता, होइ सिव सुख सव ए ॥२१॥



गुर्वावली नं० ३

ढाल—गीत। छन्द नी ।

भारति भगवति र, तु वसि मुख कजे मेरइ,

सद्गुरु सुरतर र, गा सु सुजस नवरइ ।

सद्गुरु गाऊ सु सुविहित यति पति, सिरि 'उद्योतनसूरि' वरो ।

तसु पाट पुरन्दर मोहन सुन्दर 'वर्द्धमानसूरि' युग प्रवरो ।

'अणहिलपुर' 'दुर्ल्लभ' राय अगणि, जिणि मठपत पण जीतउ ।

क्रिया कठोर 'जिनेश्वरसूर' ति, 'खरतर' विरुद वदीतउ ॥१॥

विधि सु विरचित रे, जिणि 'संवेगरंगशाला'।
गुरु 'जिनचन्द सूरि' रे, तेज तरणि सुविशाला।
सुविशाल सुथंभण पास प्रकाशक, नव अंग विवरण करण न(व?)रो।
श्री 'अभयदेव सूरि' वर तसु पाटइ, श्री 'जिनवल्लभ सूरि' गुरो॥
'अंबिका देवी' देसित युगवर, 'जिनदत्त सूरि' अदीणो।
नरमणि मंडित 'जिनचंद' पदि, 'जिनपति' सूरि प्रवीणो॥२॥
'नेमिचन्द' नन्दन रे, सूरि 'जिनेसर' सारा,
सूरि सिरोमणि रे जिन प्रबोध उदारा।
सुविचार उदारा 'जिनचन्दसूरि', 'जिनकुशल सूरि' 'जिनपद्म' मुणी
श्री 'जिनलब्धि सूरि' 'जिणचन्द', 'सुगुरु जिणोदय' सूरि मुणो।
'जिनराज' मुनिप (ति) 'जिनभद्र' यतीसर,
श्री 'जिणचन्द सूरि' 'जिनसमुद्र' वसी।
श्री 'जिनहंस सूरि' मुनि पुंगव श्री 'जिनमाणिक सूरि' शशी॥३॥
तसु पदि परिगडउ रे, गुण मणि रोहण सोहइ।
'रीहड' कुलतिलउ रे, सकल सुजन मन मोहइ।
मोहइ वचन विलास अमृत रस, 'श्रीवंत' साह जनेता।
'सिरियादे' उरि रत्न अमूलक, श्री खरतर गच्छ नेता।
"नयरंग" भणइ विसद विधि वेदी, संघ सहित निरदंदी।
श्री 'जिनचन्द' सूरि सूरीश्वर, चिर नन्दउ आणन्दी॥ ४॥

—※

कविवर समयसुन्दर कृत

(४) खरतर गुरु पट्टावली

प्रणमी वीर जिणेसर देव, सारइ सुरनर किन्नर सेव।
श्री 'खरतर' गुरु पट्टावली, नाम मात्र प्रमणु मन रली ॥ १ ॥
उद्योत श्री 'उद्योतन' सूरि, 'वर्द्धमान' विद्या भर पूरि।
सूरि 'जिणेसर' सुरितर समो, श्री जिनचन्द सूरीश्वर'नमइ ॥२॥
अभयदेव सूरि सुखकार, श्री 'जिनवल्लभ' किरिया सार।
युगप्रधान 'जिनदत्त सूरिंद', नरमणि मंडित श्री 'जिनचंद' ॥३॥
श्री 'जिणपति' सूरिन्दर' राय, सूरि जिणेसर प्रणमु पाय।
'जिनप्रबोध' गुरु समरू सदा, श्री 'जिनचन्द' मुनीश्वर मुदा ॥४॥
कुशल करण श्री 'कुशल' मुणिंद, श्री 'जिनपद्म सूरि' सुखकंद।
लब्धिवंत श्री लब्धि' सूरीस, श्री 'जिनचंद नमु निसदीस ॥५॥
सूरि 'जिनोदय' उदयउभाण, श्री 'जिनराज' नमु सुविहाण।
श्री 'जिनभद्र' सूरीश्वर भलउ, श्री 'जिनचंद सकल गुण निलउ ॥६॥
श्री 'जिनसमुद्र सूरि' गच्छपती, श्री 'जिनहंस' सूरिश्वर यती।
'जिनमाणिक्यसूरि' पाटे थयउ, श्री 'जिनचंद सूरिश्वर जयो ॥७॥
ए चउवीस खरतर पाट, जे समरइ नर नारी थाट।
ते पामइ मनवांछित कोडि, समयसुन्दर' पमणइ करजोडी ॥८॥

इति श्री खरतर २४ गुरु पट्टावली समाप्ता लिखिताच प० समयसुदरण ॥ सुन्दर वड वडे अक्षरों में लिखित।

(जय० भ० न० २५ गुटका।)

कविवर गुणविनय कृत

(५) खरतरगच्छ गुर्वावली

प्रणमुं पहिली श्री 'वर्द्धमान', वीजो श्री 'गौतम' शुभ वान।
त्रीजो श्री 'सुधरम' गणधार, चोथो 'जंवू' स्वामि विचार ॥१॥
पंचम श्री 'प्रभव' प्रभु थुंणुं, श्री 'शय्यंभव' छठो भणुं।
'यशोभद्र' सत्तम गणधार, श्री 'संभूतिविजय' सुखकार ॥२॥
'कोसा' वेश्या वश नवि पडयो, 'थूलभद्र' मुझ मनमें चढयो।
दशम 'सुहस्तिसूरि' उदार, 'संयति' नृप प्रतिबोधनहार ॥३॥
श्री 'सुस्थित' मुनि इग्यारमो, 'इन्द्रदिन्न' वारम नितु नमो।
तेरम 'दिन्नसूरि' दीपतो, 'सींहगिरी' सुर गुरु जीपतो ॥४॥
पनरम नरम वाणि जेहनी, रूप कला सोहड देहनी।
दस पूर्व धर धोरी जिस्यो, 'वयरिस्वामि' मुझ हीयडे वस्यो ॥५॥
सोलम लघुवय जिण व्रत लीध , 'वज्रसेन' स्वामि सुप्रसिद्ध।
सतरम 'चन्दसूरि' मुणि चन्द, 'सामन्तभद्र सूरि' सुखकन्द ॥६॥
'देवसूरि' प्रगमुं सुपवित्त, 'कुमद्रचन्द्र'वादे जिण जित्त।
वीसमो श्री 'प्रद्योतनसूरि',जगि उद्योत कियो जिणि भूरि ॥७॥
सप्रभाव 'शांतिस्तव' कारि, 'मानदेव' गुरु महिमा धारी।
श्री'देवेन्द्रसूरि'गुण निलउ, सिव पह जिण देखाड्यो भलो ॥८॥
'भक्तामर' 'भयहर' हित धरी, स्तवन कीयो जिण करुणा करी।
ते श्री 'मानतुंगसूरीश', 'वीरसूरि' राजे निसदीस ॥९॥

ढाल—श्री 'जयदेवसूरीसर', पचवीसम प्रभ जाणि रे।
'देवानन्द' वखाणियइ, छावीसम मनि आणो रे॥ १० ॥ ए०
एहवा सद्‌गुरु गाइये, मन शुद्धि करीय त्रिकालो रे।
संयम सरवरि झीलना, पटकाया प्रतिपालो रे ॥११॥ ए०
'विक्रमसूरि' दिवाकरू, तसु पाटि 'नरसिंह सूरि' रे।
श्री 'समुद्र सूरीश्वर', महकइ सुजस कपूर रे ॥ १२ ॥ ए०
'मानदेव' त्रीसम हुयो श्री 'विबुधप्रभसूरि' रे।
'जयानन्द' बत्रीसमो, राजइ सुगुण पडूरि रे ॥ १३ ॥ ए०
श्री 'रविप्रभ' रवि सारखो, तजइ करि 'मतिभद्र' रे।
'यशोभद्र' चउत्रीसमो, पइत्रीसम 'जिनिभद्र रे' ॥ १४ ॥ ए०
श्री 'हरिभद्र' छत्रीसमो, सत्रीसम 'देवचन्द्र' रे।
'नेमिचन्द्र' अडत्रीसमो, ज्यो जाणि दिणन्द रे ॥ १५ ॥ ए०
ढाल.—श्री 'उद्योतन' मुनिवरु, श्री वर्द्धमान महन्तो रे।
विमल' दण्डनायक जिणे, प्रतिबोध्यो जयवन्तो रे ॥१६ ॥
युगप्रधान गुरु जाणिवा ॥
'खरतर' बिरुद जिणइ लह्यो, 'दुर्लभ' राज नी साखइ रे।
सूरि 'जिणेसर' जगि जयो, कीरति सवि जसु भाखइ रे ॥१७॥यु
श्री 'जिनचन्द्र' यतीसरु, 'अभयदेव' गणधारो रे।
नव अंग विवरण जिणि कीया, जिण शासन सिणगारो रे॥१८॥यु
ढाल:—चामुंडा जिणि बूझवी, श्रुतसागर तसु पाटइ रे।
श्री 'जिनवल्लभ' गुरु थया, महीयल मोटइ थाटइ रे ॥१६॥ यु०॥
जीती चौसठ योगिनी, जिणि श्री' जिनदत्तसूरि' रे।
नाम ग्रहण तेहनो कीयउ, विकट संकट सवि चूरइ रे ॥२०॥यु०॥

श्री 'जिनचन्द्र सूरीसर' सामलो, नरमणि मण्डित भालोजी।
तेहनइ पाटइ श्री'जिनपति'थया,सकल साधु भूपाल जी॥२१॥धन०॥
धन धन श्रीखरतर गच्छ चिरजयो, जिहा एहवा मुनिराजो रे।
शुद्ध क्रिया आगम मे जे कही, ते भाखइ सिव काजो जी।२२।धन०।
सूरि 'जिणेसर' सरस्वति मुख वसइ, जसु महिमा नो निवासो जी।
'जिनप्रबोध' प्रतिबोधन जे करइ,अमृत वचन विलासोजी॥२३॥धन०
'श्रीजिनचन्द्र' यतीसर तेहथी,'श्रीजिनकुशल' प्रधानोजी।
जसु अतिशय करि त्रिभुवन पूरियो,कुण हुवइ एह समानोजी॥२४॥ध
'वाल धवल सरस्वती' विरुद करी, लाधी जिण विख्यातो जी।
'पद्म सूरीसर' तसु पाटइ थयो, लब्धि सूरि सुजातो जी॥२५॥धन
श्री 'जिनचन्द्र' 'जिनोदय' यतीवरु, धीरम धर 'जिनराजो' जी।
श्री 'जिनभद्र' थयो सुविहित धणी, भवसागर वर पाजो जी॥२६॥ध
'जिनचन्द्र' 'समुद्र' सूरीसर सारिखो,कुण हुवइ ऋपि गुण पूरि जी।
श्री 'जिनहंस' मुनीसर मानीयइ, श्री 'जिनमाणिक' सूरि जी॥२७।
पातिसाहि अकवर प्रतिवोधीयो, अमर पडह जगि दिद्धो जी।
पंचनदी जिणि साधी साहसइ, चन्द्र धवल जस सिद्धोजी॥२८॥ध०
'युगप्रधान' पद साहइ जसु दीयो, श्री 'जिनचन्द' सूरिंदो।
उवारी 'खंभायत' माछली, चिरजयो जा रवि चन्दो जी॥२९॥धन०
वीर थकी अनुक्रमि पट्टइ हुआ, जे जे श्री गच्छ धारो जी।
नाम ग्रही ते प्रभणया एहना, कुण पामइ गुण पारो जी॥३०॥धन०॥
'जेसलमेरु' विभूषण 'पास' जी, सुप्रसादइ अभिरामो जी।
श्री 'जयसोम' सुगुरु सोसइ मुदा, 'गुणविनय'गणि शुभ कामो जी॥३१॥

॥ इति ॥

॥ श्री जिनरंगसूरि गीतानि ॥

॥ ढाल हसला गीतनी जाति ॥

(१)

मनमोहन महिमा निलउ, श्री रंगविजय उवझायन र।
सेवत सुरतरु सम वडउ, सनहि फइ मनि भाय न र ॥१॥म०॥
संवत 'सोल अठहुत्तरइ', जेसलमेर मझारि न र।
फागुण वदि सत्तमि दिनइ, सयम ल्यइ शुभ वार न र ॥२॥म०॥
अनुपम रूप कला निला, ज्ञानचरण आधार न र।
भविजण नर प्रति बूझवइ, परिहर विषय विकार न र ॥३॥म०॥
निज गच्छ उन्नति कारणइ, श्री जिनराज सुरिन्द न र।
पाठक पद दीवउ विरुड, प्रणमइ मुनि ना वृन्द न र ॥४॥ म०॥
कुमति मतगज कसरी, महिमासागर मतिवन्त न र।
मानइ मोटा महिपती, महिमा मेर महन्त न र ॥५॥म०॥
'सिंधुड' वंश दिनेसरू, 'साकरशाह' मल्हार न र।
'सिन्दूर दे' उर हंसलउ, 'खरतरगच्छ' सिणगार न ॥६॥म०॥
वड शाखा जिम विस्तरउ, प्रतपउ जा रवि चन्द न र।
'राजहंस" गणि वीनवइ, द्यो परम आणदन र ॥७॥म०॥
॥ इतिश्री पाठक गीतम् , कृत प० राजहंस गणिना ॥

(२)

खरतर गच्छ युवराजियउ, थाप्यउ श्री जिनराज न रे।
पाठक रंगविजय जयउ, सत्र गच्छपति सिरताज न रे ॥ १ ॥
भवियण वांदउ भावस्यूं, जिम पायउ सुख सार न रे।
रूप कला गुण आगलउ, निर्मल सुजस भंडार न रे ॥२॥ भ०॥
सरस सुकोमल देसना, मोहइ सहूय संसार न रे।
कूड़ कपट हीयइ नहीं, सहुको नइ हितकार न रे ॥३॥ भ०॥
होडि करइ गुरु नी जिके, ते जायइ द्रह बोडि न रे।
सुख पायइ ते सासता, जे सेव करइ कर जोड़ि न रे ॥४॥ भ०॥
गुरु गुण गावइ मन सूधइ, नाम जपइ निशि दीश न रे।
'ज्ञानकुशल' कहइ तेहनी, पूजइ मनह जगीश न रे ॥५॥ भ०॥

॥ युगप्रधान पद गीतम् ॥

(३)

'जिनराजसूरि' पाटोधरू, दसच्यार विद्या जाण।
वचन सुधारस वरसतौ, मानै सहुको आण ॥ १ ॥
मोरी सही ए वादोनी, जिनरंग, आणी मनमें रंग।
वाणी गंग तरंग। मो०
पातिशाह परख्यो जेहने, दीधो करि फुरमाण।
सात सोवे (सुवा ?) माहरो, करज्यो वचन प्रमाण ॥२॥ मो०॥
तसु पुत्र दीपे पाटवी, 'दारा' स को सुलताण।
युगप्रधान पदवी तणो, करि दीधो निसाण ॥३॥ मो०॥

'नमीदास' 'सोंघड' जाणीजइ, 'श्रीमाली' जाति सुजाण ।
मा(सा?)ह पचायण अति भलउ, गुरु रागी गुण जाण ॥४॥मो०॥
पैसारो भलिभाति सु, कीजो निरमाण रे काज ।
हाथी सिणगाया भला, घोडा मुगलमली साज ॥५॥मो०॥
बाजा बजाया तरा (?), नजा वणाया तूर ।
दान देइ याचक भणि, दादाजी रे हजूर ॥ ६ ॥मो०॥
श्रीपूज आया उपासरे, श्री सघ सगले साथ ।
मन रग महाजन लोकम, नालेर दीधा हाथि ॥७॥ मो०॥
सूहव वधावै मोतीयें, गुहली गावै गीत ।
फइ उतारै कापडा, रासै कुल री रीत ॥८॥ मो०॥
स्वत्त 'सतरहाहोतर', श्री सघ आणद आण ।
'युगप्रधान' पद थापीया, 'मालपुरे' मडाण ॥६॥ मो०॥
नादी तणा मद जीपतो, महिमा तणो भडार ।
दूर कीया दुरजन जिणइ, खरतर गछ सिणगार ॥१०॥मो०॥
धन मात जस 'सिन्दूर द', धन पिता 'साकरमोह' ।
धन गोत्र 'मिधुड' परगडो,धन मोरी ए जीह ॥११॥मो०॥
'रुमलरल' इम वीनवे, मुझ आज अधिक आणद ।
चिरजीवो गुरु ऐ सही जालगि ध्रु रवि चन्द ॥१५॥मो०॥

——✻——

॥ श्री कमलहर्ष कवि कृत ॥

श्रीजिनरतनसूरि निर्वाण रास



सरसति सामणि चरण कमल नमी, हीयडइ सुगुरु धरेवि ।
श्री 'जिनरतन सूरीसर' गुरु तणा, गुण गाऊं संखेवि ॥ १ ॥
'श्रीजिनरतनसूरीसर' समरियै ॥
महियल मोटउ 'मरुधर' देस मइ, 'शुभ सेरुणा' गाम ।
धूना(धनो?)लोक वसइ सुखीया जिहां,धरमी अति अभिराम ॥२॥श्री०॥
वसइ तिहा वर साह 'तिलोकसी', चावउ चतुर सुजाण ।
'ओसवाल' वंशे उन्नति करू, जुगति करइ वखाण ॥ ३ ॥श्री०॥
तासु घरणि 'तारा दे' (दी) पती, सीलवती सुचंग ।
रूपवन्त शोभा मे आगली, सरस सुकोमल अङ्ग ॥ ४ ॥श्री०॥
रतन अमोलख जिणउ जनमियो, कुल मण्डण कुल भाण ।
मात पिता बन्धव सहु हरखिया, जाणउ राणो राण ॥ ५ ॥श्री०॥
'आठ वरस' नउ मन माहि उपनो, लघु वय पिण वैराग ।
माया ममता सगली छाडिनै, दिन २ चढतउ वान (भाग?) ॥६श्री०॥
श्री 'जिनराज सूरिश्वर' गुरु कन्हे, आणी मन आणन्द ।
निज 'बाधव' 'माता' तीने मिली, लीधी दीख मुणिंद ॥ ७ ॥श्री०॥
शास्त्र अनेक भण्या थोडइ दिनइ, बुद्धि तणइ विस्तार ।
चउद वरस नइ संयम आदर्यो, सफल गिणी अवतार ॥ ८ ॥श्री०॥

निज उपगम॰ भविजण बूझवइ, करइ अनेक विहार।
पालइ मन सुधड मुनिवर भलउ, चारित्र निरतीचार ॥ ९ ॥ श्री ॥
गुण अनेक सुणी श्री पूजजी, तेडावि निज पास।
'अहमदाबाद' नगर माहे आपियउ, 'पाठिक पद' उल्लास ॥१०॥ श्री०॥
जुगत भलिपर 'जयमल' 'तेजसी', अवसर लही महन्त।
आगह सु उच्छव कीयउ तिहां, खरचइ धन घरि खन्त ॥११॥ श्री ॥
'पाटण' नगरइ पूज्य पधारिया, चतुर रह्या चउमास।
सूत्र सिद्धांत अनेक सुणावता, सहु नी पूरइ आस ॥ १२ ॥ श्री०॥
संवत 'सतरइ सय' वरसइ भलइ, श्री 'जिनराज सूरिंद'।
सइहथ रतन सूरीसर' थापीया, मनि धरि अधिक जगीस ॥१३॥ श्री०॥
'असाढा सुदि नवमी शुभ दिन', थिर निज पाटइ थापि।
श्री 'जिनराज' सरगि पधारिया, त्रिविधि खमावि पाप ॥१४॥ श्री०॥
श्री 'जिनरतन' तणी मानी सहु, दस प्रदेशइ आण।
ठामि २ संघ तेडावीया, गणिता जन्म प्रमाण ॥ १५ ॥ श्री० ॥

ढाल '—तूंगीया गिर सिखर सोहइ, एहनी।
चउमासि पारण करी सद्गुरु, कीयो तवी विहार रे।
आविया 'पाल्हणपुरइ' पूजजी, कीयउ उच्छव सार रे ॥ १ ॥
आज धन 'जिनरतन' वांद्या, गया पातक दूर रे।
श्रीसंघ सगळा मनि हरखीउ, प्रकट पुण्य पडूर रे ॥२॥ आ०॥
'सोवनगिरि' श्री संघ आग्रहि, आवीया गणधार रे।
परमार उच्छव सबल कीधउ, सीठ (सठ?) पीयइ' सार रे ॥३॥ आ०॥

संघ नइ वादिवि सुपरइ, पूज्यजी पटधार रे ।
विचरता 'मरुधर' देस मांहे, साधु नइ परिवार रे ॥४॥ आ०॥
संघ आग्रह आविया हिव, पूज्य 'वीकानेर' रे ।
'नथमल' 'वेणइ' उच्छव कीधउ, खरचीयो धन ढेर रे ॥५॥आ०॥
उपदेस निज प्रतिबोध श्रावक, करता उग्र विहार रे ।
'वीरमपुरइ' चउमास आव्या, संघ आग्रह सार रे ॥६॥ आ०॥
चउमास पारण आविया हिव, 'वाहडमेर' सुजाण रे ।
चउमास राख्या संघ मिलकर, पूज्यजी परमाण रे ॥७॥ आ०॥
तिहां थी विचरी 'कोटडइ' मइ, चतुर करी चउमास रे ।
पारणइ 'जेसलमेरु' श्रावक, तेडीया उल्हास रे ॥८॥ आ०॥
पइसार उच्छव 'गोप' कीधो, लीयउ लखमी लाह रे ।
याचका बहुलउ दान दीधउ, मन धरी उच्छाह रे ॥९॥ आ०॥
संघ आग्रह च्यारि कीधा, पूजजी चउमास रे ।
धन-धन'जेसलमेरि'श्रावक,लोक मय (नइ?)साबास रे॥१०॥आ०॥
'आगरा' नइ संघ आग्रह, घणा कीध विशेष रे ।
'आगरइ' गच्छराज आव्या, श्राविका मन देख रे ॥११॥आ०॥
हुकम 'बेगम' तणउ पामी, 'मानसिंह' महिराण रे ।
पइसार उच्छव अधिक कीयउ, मेलीया रायराण रे ॥ १२ ॥आ०
हरखीया मन माहि सहु श्राविक, वरतीया जयकार रे ।
याचका वाछित दान दीधउ, प्रबल पुन्य प्रकार रे ॥१३॥ आ०॥
तप नियम व्रत पचखाण करता, धारता धर्म ध्यान रे ।
निज गुणे सगले श्रावकां मन, रंजीया असमान रे ॥१४॥आ०॥

चउमास चावो तिन कीधी, पूजजी परसिद्ध र।
चउमास चौथी नले रा ना, रूघ आग्रह किद्ध र ॥१५॥ आ०॥
दिन दिन चढतउ सुजस महियल गुण अधिकउ गच्छराज र।
दुत्तर दुखसायर पडता, जगत जाण जिहाज र ॥ १६ ॥ आ०॥

करजोडी इम विनवु एहनी ढाल:—

इण विधि इम रहता थका, पूजजी नइ होडोलउ असमाधि।
कारण जोगइ ऊपनी, करमे पिण हो हिव अवसार लाध ॥ १ ॥
तुम्ह विण पूजजी किम सरइ।
'आषाढा सुदि दसम' थी, वपु वाधी हो वदन विकराल।
ध्यान एक अरिहन्त नो मनि राखइ हो छाडी जंजाल ॥ २ ॥ तु०॥
वइरागइ मन वालिनउ, नवि कीधा हो ओषध उपचार।
सनेगी सिर सेहरो, 'चउरासी' हो गच्छ मइ श्रीकार ॥ ३ ॥ तु०॥
अल्प आउखो जाणीनइ, पोतानउ हो पूजजी तिण वार।
सइमुख अणशण आदर्यो, सवि छंडी हो पातक आचार ॥४॥ तु ॥
क्रोध लोभ माया तजी, तजीया वलि हो आठे मद मोह।
पापस्थानक सवि परिहर्या, जगमाहि हो अति वधती सोह ॥५॥तु०॥
मन वचन कायाइ करी, वलि लाग्या हो व्रत ना दूषण जेह।
ते आलोया आपणा, गच्छ नायक हो गिरुआ गुण गेह ॥ ६ ॥ तु०॥
सरण च्यार उच्चरी, आराधी हो सूधा गुरु देव।
कलमल पाप पखालिनइ, षट् जीवन हो पाली नित मेव ॥ ७ ॥ तु०॥
जीव अनेक छोडाविया, याचक मिली हो धन खरची अनन्त।
दुखीया दान दियउ घणो, धन २ धन हो मुनि लोक कहन्त ॥८॥तु०॥

संवत 'सतरइ सय भलइ, इग्यारे' हो 'स्रावणि वदि सार'।
'सोमवार' 'सातम' दिनइ, सोभागी हो पहले पहर मंझार ॥६॥तु०॥
'चउरासी' लख जीवनइ, खमावी हो आलोइ पाप।
'हरपलाभ'नइ हरखस्युं,निज पाटइ हो अविचल थिर थाप ॥१०॥तु०॥
निरमल चित नवकार नइ, मुखि कहता हो धरता सुभध्यान।
श्रीपूज्यजी संवेगी हो, पहुंता अमर विमान ॥ ११ ॥ तु०॥
करे अनोपम कोकही, माहीं मुखमल हो वड सूफ विछाय।
चोया चन्दन अरगजा, कस्तूरी हो केसर चरचाय ॥१२॥ तु०॥
विधि विधि वाजित्र वाजता, वडसारी हो जाणे देव विमान।
हयवर गयवर हींसता, सहु लोकहु (हो)करता गुण गान ॥१३॥तु०॥

ढाल — वाल्हेसर मुझ वीनती गोडीचा राय एहनी।

चइठो आमण दुमणो सोभागी,ए ताहरइ परिवार हो। सोभागी०।
परदेसी जिमि छाडिने सो०, जइये किम गणधार हो। सो०। १।
दरसण द्यो गुरु माहरा सो०,
सहु श्रावक श्राविका। सो०। जोवइ तुमची वाट हो। सो०।
ए वेला नहीं ढील नी सो०, सुन्दर रूप सुवाट हो। सो०। २।
वेला थइ वखाणनी सो०, मिलीया सहु रायराण हो। सो०।
आवी वइसो पूठीयइ सो०, वार म ल्यावो जाण हो। सो०। ३।
आवी वइठा एकठा सो०, पंडित पूछण काज हो। सो०।
वेगउ उत्तर द्यउ तुम्हे सो०, गरुआ श्री गच्छराज हो। सो०। ४।
एक वेली सुविचार नइ, बोलउ वोल रसाल हो। सो०।
वाट जोवइ जिम मेह नी सो०, उभा वाल गोपाल हो। सो०। ५।

इतना दिवम लगइ हुती सो०, मन मइ सहु नइ आस हो। सो०।
तइ तउ भूल तिका करी सो०, चाल्या छोडी निरास हो। सो०।६।
शिष्य सहु वालवी नइ सो०, फेरयउ माथइ हाथ हो०। सो०।
त वेला स्यु चीसरी सो०, करि वीजा नउ हाथ हो। सो०।७।
आवण अवधि न कही सो० जाण्यउ मन मइ नह हो। सो०।
अनव० (?) जेम विचारी नइ सो०, छनमे दीधी छेह हो ।।सो०।।८।।
चउमासु पिण जाणि नइ सो०, सक न आणी काइ हो ।सो०।
अधविचइ म मकी करी सो०, कुण पहु छाडी जाइ हो ।सो०।६।
दव विमान मोहीयउ सो०, पूठी सगरि न काव हो। सो०।
इहा तो लोभ न को हुतो सो०, तिहा लोभइ चित दीध हो ।सो०।१०।
आलस किण ही वात नउ सो०, नवि हुतउ तिल मात हो। सो०।
दोप तुम्हारउ को नहीं सो० ।।११।।
मन थी भावन मूकलउ सो०, एक समइ पिण एम हो। सो०।
ते पिण भान विसारियउ सो०, बीजा सुधर प्रेम हो० ।।सो०।१२।
पल भर (पिण) सरतो नहीं सो०, पूज परइ निसदीस हो। सो०।
जमवारोकिम जाइस्यइ सो०, महि मोटा जगदीस हो ।सो०।१३।
सिग २ मइ गुण संभरइ सो०, आठ पोहर दिन राति हो। सो०।
कुण आगलि कहि दाखवु सो०, तेहनी वीगत वात हो ।सो०।१४।
वीसाया निवि वीसरइ सो०, सद्गुरु ना गुण गाम हो। सो०।
समरइ सहु साचइ मनइ सो०, नित नित लेइ नाम हो ।सो०।१५।
परतिख इण पचम अरइ सो०, सूरि सकल सिरताज हो। सो०।
तुझ सरिखउ जग को नहीं सो०, वइरागी मुनिराज हो ।सो०।१६।

गच्छपति तो आगइ हुआ सो०, होस्यइ वलि छइ जेह हो ।सो०।
पिण तो सम संसार मइ सो०,नवि दीसइ गुण गेह हो ।सो०।१७
वखतावर विद्यानिलउ सो०, सूत्र सिद्धांत प्रवीण हो । सो० ।
कलियुग माहे जुवता सो०, अधिको धरम धुरीण हो ।सो०।१८।
तइं तउ ताहरू निरवाहीयउ सो०, जनम लगइय समान हो ।सो०।
सींहण पण व्रत आदर्यो सो०,पाल्यउ सींह समान हो ।सो०।१९।
त्रिभुवन मइ ताहरी क्षमा सो०, साराहइ संसार हो० । सो० ।
कलि माहे इक तुं हूओ सो०, निरलोभी गणधार हो ।सो०।२०।
महियल मइ यश ताहरो सो०, कहता नावे पार हो । सो० ।
गुण अधिका गच्छराज ना सो०, केता करूं वखाण हो ।सो०।२१।
रास सरस इम आदिस्यउ सो०,पूज्य तणउ निरवाण हो ।सो०।
भाव वणइ परमोद सु सो०, करज्यो खेम कल्याण हो ।सो०।२२।
'श्रावण सुदि इग्यारसइ' सो०, थिर शुभ थावर वार हो । सो० ।
'मानविजय' सोस इम भणइ सो०,'कमलहरप'सुखकार हो ।सो०।२३।
अति जयवंतउ 'आगरइ' सो०, खरतर संघ सुखकार हो । सो० ।
सुख संपत देज्यो सदा सो०,धरि मन शुद्ध विचार हो ।सो०।२४।
भणतां गुणता भावस्यु सो०, रास सरस इक चित्त सो० ।
नवनिधि सिद्धि महिमा वधइ सो०,था(य)इ जन्म पवित्र हो ।सो०।२५।

॥ इति श्री श्री जिनरतनसूरि निर्वाण रास समाप्तम् ॥

सं० १७११ वर्षे कार्तिक सुदि ७ दिने सोम वासरे लिखतं पाटण मध्ये मानजी करमसी कस्य लिखतं ॥ साध्वी विद्यासिद्धि साध्वी-समयसिद्धि पठनार्थं । पत्र ३

(बीकानेर बृहद्-ज्ञानभंडार)

श्री जिनरतनसूरि गीतानि

(१)

काल अनन्तानन्त एहनी ढाल—

'श्री जिनरतन सूरीश', पूज वांदवा हो मुझ मन छइ सही।
देखण तुझ दीदार, आनंद चतुर्विध हो श्रीसंघ सामउ उमही ॥ १ ॥
गुरुना श्री गच्छराज, खरतर गच्छ मइ पूज दीपइ सदा।
प्रतपइ अधिक पडूर, जिण मुख दीठइ हो सुख होवइ सुदा ॥ २ ॥
'लुणिया' वंश विख्यात, साह 'तिलोकसी' हो कुल सिर सेहरउ।
'तजल' दनि मल्हार, हंस तणी परि हो सहगुरु अजतयंड ॥ ३ ॥
'पाटण' नयर प्रसिद्ध, श्री 'जिनराज' हो सड हथि थापीयउ।
संवेगी सिरदार, अधिकउ जाणी हो गुरु पद आपियउ ॥ ४ ॥
मुख जिसउ पूनिमचंद, वाणि सुधारस हो निज मुख वरसतउ।
करतउ उग्र विहार भव्य जीवानं हो नित प्रतिबोधतउ ॥ ५ ॥
ताहरो त्रिभुवन माहि, मस्तक आणज हो मन सूधी धरइ।
जुगवर वीर जिणन्द तह तणी परि हो ओपम टी करइ ॥ ६ ॥
(प्रण) मइ भवियण लोक, तुझ मुख दरसण हो पाप सबे टल्या।
'राजविजय' गुरु शिष्य, 'रूपहर्ष' भणि हो वंछित मुझ फल्या ॥ ७ ॥

(२) राग—ढाल—नायकारी

श्री गच्छ नायक सेविइड रे, 'श्री जिनरतन' सूरिन्द रे। सुगुरुजी।
पूज्य नइ वधावउ मोतिया रे लाल, आणी मन आणद रे ।सुगुरुजी।१।

आवउ तुम्हे इण देस मइ रे लाल० । आ० ।
'लूणिया' वंसइ लखपती रे, तिलोकसी' साह मल्हार रे ।सु०।
'तारादे' उरि हंसलउ रे लाल, कामगवी अनुहार रे । सु० ।२। आ०।
श्री 'जिनराज सूरीसरइ' रे, सइंहथ दीधउ पाट रे । स० ।
चउ वखती वइरागीयउ रे लाल, कलि गौतम नउ घाट रे ।स०।३।आ०।
शीलइ करि थूलभद्र समउ रे, रूपइ वइर कुमार रे ।स०।
पालइ पंच महाव्रतृ रे लाल, लोभ तउ नहीय लिगार रे ।स०।४।आ०।
वाणी सुधारस वरसतउ रे, सजल जलद अनुहार रे । स० ।
आगम सूत्र अरथ भरयउ रे लाल, श्री खरतर गणधार रे ।स०।५।आ.
श्री संघ हरप अछइ घणउ रे, वंदिवा तुम्हारा पाय रे । स० ।
तुझ मुख कमल निहालिवा रे लाल, चाह धरइ राणाराय रे ।स०।६।
'जिनराज' पाटइ चिर जयउ रे, सूहव द्यइ आसीस रे । स० ।
'खेमहरप' मुनि इम भणइ रे, लाल जीवउ कोडि वरीस रे ।स०।७।आ.

(३) राग: मल्हार, ढाल व दलो री

'श्री जिनरतन' सूरिंदा, दीपइ मुख पूनिम चंदा। सहगुरु वंदउ वे ।१।
'लूणीया' वंस विराजइ, दिन २ ए अधिक दिवाजइ । स० । २ ।
'पाटण' मई पद पायउ, सब श्रावक जन मन भायउ । स० । ३ ।
'तिलोकसी' शाह मल्हारा, 'तारा दे' उरि अवतारा । स० । ४ ।
गुणे गौतम गणधारा, गुरु रूपइ वइरकुमारा । स० । ५ ।
शीलइ तउ थूलभद्र सोहइ, छत्रीस गुणे मन मोहइ । स० । ६ ।
आगम अरथ भंडारा, जिण शासण मइ सिणगारा । स० । ७ ।

वाणी सुधारस वरसइ, सुणिया कु जन मन तरसइ। स०। ८।
इम 'खेमहरष' गुण बोल्इ, पूज्यजी न कोइ न तोल्इ। स०। ९।
(किशनगढ़में श्राविका रजी पठनार्थ कवित्र स्वय लिखित पत्र ३ सग्रहमें)

(४) ढाल—पोपट पथियानो

सुण र पथिया कन आवइ गच्छराज, सफळ विहाणउ आज।
सरिया वछित काज, भेट्या श्री गच्छराज।
सुणि र पथिया कन (आवइ) गच्छराज। आकणी।
उभी जोवू वाटडी, आइ कहइ कोइ मुझ।
सोवन जीभ वधामणी, द्यु पथी हू तुझ। १। सु०।
सुमति गुपति धरता थका, पाळइ शुद्ध आचार।
किरिया आचरता थका, साथइ बहु अणगार। २। सु०।
'लूणीया गोत्र' दीपता, साह तिलोकसी जाणि।
'ताराद' जननी भली, सुत जनम्या गुण खानि। ३। सु०।
आनइ सजम आदर्यउ, जननी सुत सुखकाजि।
जिणवर भाषित मारगइ, दीक्षा श्री 'जिनराज'। ४। सु०।
सवत 'सतरहिसइ' भलइ, मास 'आषाढ' प्रमाण।
श्री 'जिनराज' थापिया, सुकल्इ 'सप्तमि' जाणि। ५। सु०।
गामागर पुर विहरता, जळधर नी परि जाणि।
भविजण नइ पडिबोधता, भेटउ जगत भाण। ६। सु०।
'कनकसिंह' गणिवर कहइ, दिन दिन द्यु आसीस।
श्री जिनरतन सुरिंदजी, प्रतपउ कोडि वरीस। ७। सु०।

इति श्री गुरु गीतम् (पत्र १ हमारे सग्रहमे तत्कालीन लि०)

निर्वाण गीतम्

(५) ढाल पोपट पंखीया जाति

'श्री जिनरतन' सूरीसरो, लघु वय संयम धार।
उग्र विहार संचर्या, 'उग्रसेन पुर' सिणगार ॥ १ ॥
सुहगुरु पूज्य जी, मुखि बोलउ इक वात।
प्रीतम सहगुरू, काइ निसनेह अपार।
वल्लभ पूज्यजी तुं मुझ प्राण आधार।
जीवण पूज्यजी तुम विण कवण आधार ॥ आकणी ॥
धन पिता 'तिलोकसी', 'तेजलदे' उर धार।
जिणइ एहवउ पुत्र जनमीयउ, सयल जीव सुखकार ॥२॥
'श्रावण वदि सातिम' दिनइ, कीध (अणशण) उच्चार।
चउविहार सुध भावस्युं, पाल्यउ निरतीचार ॥३॥
श्रावक श्रावइ वादिवा, ओसवाल अनइ श्रीमाल।
दरसण दीठा सुख हुवइ, नावइ आल जंजाल ॥४॥
च्यार प्रहर लगि तिहां धरी, छोड्या राग न (इ) द्वेप।
सहु जीवसुं तिहां खामणइ, पाम्या स्वर्गना सुख ॥५॥
आसु जल चउसर वहइ, छोट्या केस कलाप।
देह पछाडइ भूमिस्युं, शिष्य करे रे विलाप ॥६॥
हिव पर्व पजूसण आवीया, धरम कहउ मन कोडि।
श्री संघ जोवइ वाटडी, वादणि उपरि कोडि ॥७॥
तुम्ह सरिखा संसार मइ, देख्या नहीं दीदार।
लोचन तृपति पामइ नहीं, जुत्तुं हुं सउवार ॥८॥सहु० मी० ॥
युग प्रधान श्री पूज्यजी, श्री 'जिनरतन' सुरिंद।
सयल संघनइ सुखकरू, 'विमलरतन' आणंद ॥९॥

(पं० मानजी लि० पत्र १ से)

॥ जिनरत्नसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीतानि ॥

(१)

'श्री जिनचन्द सूरीसरू' रे, गच्छ नायक गुण जाण रे । सोभागी ।
महियल मइ महिमा घणो रे लाल, जाणइ राणो राण रे सो०॥१॥श्री०
सुन्दर रूप सुहामणो रे, वचनातर वड भाग रे । सो० ।
'धार वरस नइ ऊपनउ रे लाल,लघुनइ मनि वइराग रे सो०॥२॥श्री
श्री 'जिनरत्न' सूरीसर आपियउ रे, सइ हथ संयम भार रे ॥सो०॥
श्री संघइ उच्छव कियउ रे लाल, 'जेसलमेर' मझार रे सो० ॥३॥श्री
गोतम जिम गुण गहगहइ रे, मा० 'सहसमल' नन्द रे । सो० ।
'गणधर गोतड' गुण निलो रे लाल,दरसण परमा।न रे । सो॥४॥श्री
श्री 'जिनरत्न सूरीसरइ' रे, दीधउ अविचल पाट रे । सो० ।
वचन० वरस 'अढार' मइ रे लाल, सेवइ मुनिवर थाट रे ।सो॥५॥श्री
'सिन्दूर द' सुत चिर जयउ रे लाल, गच्छ खरतर सिणगार रे ।सो०।
शीतल चन्द तणी परइ रे लाल, सवेगी सिरदार रे । सो० ॥६॥श्री०
श्री 'जिनरत्न' पटोधरू रे, सहुनी पूरइ आस रे । सो० ।
धर मन हर्ष ऊमाहलउ रे लाल, पभणइ 'विद्याविलास' रे ।सो०॥७॥श्री

॥ इति श्री वर्तमान श्री जिनचन्द्र सूरि गीतम् ॥
॥ साध्वी रत्नमाला वाचनार्थम् ॥

(२)

श्री'जिनचन्द' सूरीश्वर वंदीयइ रे, गरूयउ गछपति गुणमणि गेह रे ।
मोहनगारी मूरति नाहरी रे, घटोय विधाता सइहथि एह रे । १।श्री०
वदनि कमल सरसति वासउ कीयो रे,
अड सिद्धि आवि रही जसु हाथि रे ।

कर दाहिण सिर थापइ जेहनइ रे,ते नर पामइ वंछित आथि रे ।२।श्री०
ईति उपद्रव को न हुवइ किहां रे, जिहा किणि विचरइ श्री गछराज रे ।
घरि २ मंगल होवइ नवनवा रे, जावइ भावठि सगली भाज रे ।३।श्री०
धन-धन श्रावक नइ वलि श्राविका रे, भावइ आवि सुणइ उपदेस रे ।
पामी धरमलाभ गुरु आसिका रे,शाता सुखनउ जाणि निवेस रे ।४।श्री०
जोतां नयणे बीजा गच्छपति रे, ते नावइ जुगवर ताहरी जोडि रे ।
खजूया कोडि मिलई जउ एकठा रे,तउकिम थायइ सूरिज होडि रे।५।श्री०
श्री'जिनरतन' आदेसइ आविया रे, रंगइ 'राजनगर' चउमास रे ।
वयणे* सगुरु तणे पदवी लही रे,चिहु दिशि प्रगट्यउ पुण्य प्रकाश रे ।६।
'नाहटा'वंशइ'जइमल''तेजसी'रे,देव गुरू भगती माता तास रे ।
हरखइं 'कसतूरा' उछव करी रे, शोभा वधारी जगमइं खास रे।७।श्री०
कुल उजवालक 'गणधर' गोतमइ रे,'सहस करण' सुपीयार दे' नंद रे ।
सुप्रसन्न हुइ जोवइ जिण सामुंहउ रे, तेहना जावइ दोहग दंद रे ।८।
ध्रू शशि गिर अविचल जालगइ रे, तां लगि प्रतपउ गच्छाधीश रे ।
वाचक'रूपहरष'सुपसाउले रे,'हरषचन्द' पभणइ अधिक जगीस रे ।९।

इति श्री गुरु गीतम् (सं० १७३० आसू वदि ८ बीकानेरे लि० पत्र २ हमारे संग्रहमे)

(३)

जीहो पंथी कहि संदेसडउ, जीहो पूज्यजी नइ पाइ लागि । जीहो० ।
गुरु दरसण तू देखतां जीहो, जागस्यइ तुरा भागि । १ ।

*मानजीकृत गीतमें भी
सन्मुख (इ)श्रीपूजजी रे, अमृत एहवी वाणि ।
पाटइ एहनउ थापज्यो रे, करेज्यो वचन प्रमाण । ४ । मे० ।

चतुर नर वदु श्री 'जिनचन्द्र'
जीहो अमृत आवणी दम ना जीहो साभलना दुख जाय।
जीहो तिण कारणि तू जाइ नइ जोहा करज्यो वचन प्रमाण।२।जी०।
वचन प्रमाण कीधा हुना जी, घर माहि नवि निधि थाइ। जी०।
गुरु नमस्या सुख सपजइ जीहो कुमति कदामह जाइ।३। जी०
'बीकानयर' जाणीयइ र, जी० बहु रिधिनउ भडार। जी०।
तिणगाम माहि दीपतउ जी 'सहमनरण' सुखकार।४। जी०।
'राजल' कुखि उपनउ जी हो, नामउ 'श्री जिनचन्द्र'। जीहो।
वइरागि तिणि व्रत लीयउ, मनि धरि अधिक आणद।५। जी०।
विद्या सुरगुरु सारिखउ जी हो, रूपइ वइरकुमार।
श्री 'जिनरत्न' पाटइ सही, बहु सुखनउ दातार।६। व०। जी०।
चिर जीवउ गछ राजीयउ, खरतर गछ नउ इन्द्र। जी०।
पण्डित 'करमसी' इम कहइ जी, प्रतपउ जा रवि चन्द्र।७।

(४)

सुगुरु वधावउ मुहन मोतिया, श्री जिणचद' मुणिन्द।
सकल कला करि शोभता, जाण कि पूनम चन्द ॥ १ ॥ सु० ॥
लघु वय सयम जिण लीयउ, सूत्र अरथ नउ जाण।
पूज पद पायउ जिण परगडउ, पूरव पुण्य प्रमाण ॥ २ ॥ सु० ॥
'श्री जिनरत्न सूरि' सइ हथइ, श्री सघ तणइ समक्ष।
पाटइ थाप्या ह प्रेम सु, मति मन्त जाणि नइ सुरत्य ॥ ३ ॥ सु० ॥
'चोपडा' वशइ चिर जयउ, 'सहिमू' शाह सुनन।
मात 'सुपियार' जनमियउ, सहुको कहइ धन धन्न ॥ ४ ॥ सु० ॥
श्री 'जिन कुशल सूरि' सानिधइ प्रतिपउ कोडि वरीस।
घवतइ दावइ गुरु वधो, 'कल्याणहर्ष' दइ आसीस ॥ ५ ॥ सु० ॥

(५)

पंचनदी साधन कवित्त

उछलती जल अकल बोल, कल्लोल छिलंती ।
वलती वलती वेल झाग अत्थाग झिलंती ।
भमरेटे भयभीत भमकती तटे भिडंती ।
पडती जुडती पवन ज अनम जड ऊथेडती ।
जप जाप आप परताप जप, सूरि मंत्र सानिध सबल ।
'जिनरतन' पाट 'जिणचन्द' जुगत, 'पंच नदी' साधी प्रबल । १ ।
॥ कवित्त पंचनदी साधी तिण समय रो (१८ वीं शताब्दी लि०)

वाचक अमरविजय गुण वर्णन

कवित्त

साच शील संतोष, साधु लछन सकजाई ।
बरषत अमृत वचन, विपुल विद्या वरदाई ।
'उदयतिलक' गुरु आप, हरष सुं दीयो बोध हित ।
पुन्य थान निज परसि, चौपडे कीयो विमल चित्त ।
सज्जन सुभाव सुख सुं सदा, शास्त्र हेत बूझे सकल ।
वाचक वदा वखतैत वर, 'अमरसिंह' तुझ यश अचल ॥१॥
(जयचन्दजी के भण्डारस्थ उपरोक्त पत्र से)

जिन सुखसूरि गीतम्

(१)

ढाल:—रसोयानी

सहु मिलि सूहव आवउ मन रली, गावो गुरु गच्छराय । सोभागी० ।
विधि सु वदो 'जिनसुख सूरि' नइ, जसु प्रणम्या सुख थाय ।सो०।१।स
'बहरा' गोत्र विराजइ अति भला, 'रूपचद' शाह मल्हार । सो० ।
'रतनादे' माता उर ऊपनउ, खरतरगछ सिणगार ।२। सो० ।सहु०।
श्री 'जिनचद्र' सूरीसर सइहथइ, थाप्या अविचल पाट । सो० ।
'सूरत' बिंदर श्री सघ नी साखइ, सुविहित मुनि जन थाट ।३।सो०।
चारित लघुवय माहे आदरयउ, तप जप सु बहु लीन । सो० ।
आगम अरथ विचार समुद्र समउ, विद्या चवद प्रवीण ।४।।सो०।।
सोभागी गुण रागी अति घणु, बड वखती गुण खाणि । सो० ।
कठिन क्रिया सुविहित गछ साचवइ, मीठी अमृत वाणि ।।५।।सो०।।
सोम पणइ करि चद सुहामणा, प्रतपइ तज दिणद । सो० ।
रूप कला करि अधिक विराजतउ, मोहइ भवियण वृन्द ।।६।।सो०।।
सूरि गुण छत्तीस शोभना, वड वखतो वड मान । सो० ।
लोक महाजन माने वड वडा, राउ राणा सुलतान ।।७।।सो०।सहु०।
दिन २ वधतो दउलति सु जधउ, कीरति दस प्रदेश । सो० ।
सुजस चिहु खड चावउ विसतरउ, आण अधिक सुविसेष । ८ सहु०।

संघ मनोरथ पूरण सुरतरू, 'जिन सुखसूरि' महंत । सो० ।
इणपरि 'सुमतिविमल' असीस द्यइ, पूरवइ मननी रे खंति । ६सहु०।
॥ इति श्री 'जिनसुख सूरि' गीतम्, श्राविका जगीजी वाचनार्थं ॥
(तत्कालीन लि० पत्र २ हमारे संग्रहसे)

(२)

उदय थयो धन धन दिन आजनो, प्रगट्यउ पुण्य पडूरो जी ।
वंद्या आचारिज चढ़ती कला, नामे 'जिनसुख सूरो' जी ॥उ०॥१॥
'सूरत' शहरे हो जिनचंद सूरिजी, आप्यो आपणो पाटो जी ।
महोत्सव गाजे वाजे मांडिया, गीतारा गहगाटो जी ॥ उ० ॥ २
'पारिख' शाह भला पुण्यातमा, 'सामीदास' 'सुरदासोजी' ।
पद ठवणो कीधो मन प्रेम सुं, वित्त खरच्या सुविलासो जी ॥उ०॥३॥
रूड़ी विध कीधा गतीजुगा, साहमी वत्सल सारो जी ।
पट्टकूले कीधी पहिरामणी, सहु संघ नइ ओकारो जी ॥ उ० ॥ ४ ॥
संवत 'सतरै बासठे' समे, उच्छव बहु 'आसाढो' जी ।
'सुदि इग्यारस' पद महोत्सव सज्यो, चंद कला जस चाढो जी ।उ।५
'सहिरेचा' 'बहुरा' जगि सलहिये, 'पीचो' नख परसंसो जी ।
मात पिता 'रूपचंद' 'सरूपदे', तेहनइ कुल अवतंसो जी ॥ उ० ॥६॥
प्रतपो एहु घणा जुग गच्छपति, श्री 'जिनसुख सुरिन्दो' जी ।
श्री 'धरमसी' कहुं श्री संघ नइ, सदा अधिक करो आणंदो जी ।उ०।७

जिनसुखसूरि निर्वाण गीतम्

(३)

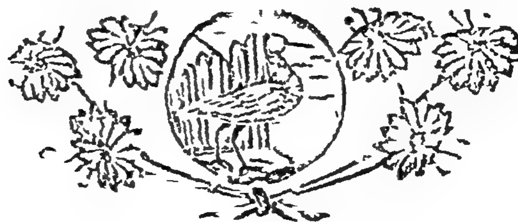
ढाल—अयूकदानी

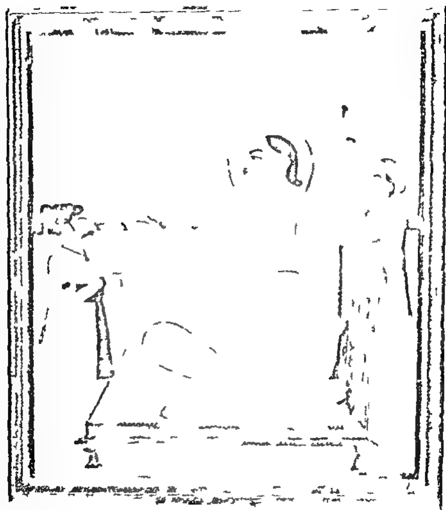
सहीया चालौ गुरु वादिवा, सजि करि सोल सिंगार ।
सहली भाव सु भमर भरीय कचोलडो, महि मली धनसार ।स०।१।
'सतरैसे असीयें' समे, 'जेठ किसन' जग जाण । स० ।
अणसण करि आराधना, पाम्यौ पद निरवाण । स० । २ ।
'जिनचन्द सूरि' पाटोधरू, 'श्री जिनसुख सूरिन्द' । स० ।
दरसण दौलति संपजे, प्रणम्यां परमाणंद । स० । ३ ।
पद थाप्यौ निज हाथ सु, 'श्री जिनभक्ति' सूरीस । स० ।
सरवै संघ घन रागति सु, इह कहै आसीस । स० । ४ ।
'रिणी' नगर रलीयामणो, श्रावक बहु विधि जाण । स० ।
दस प्रदेशे दीपता, मन मोटैं महिराण । स० । ५ ।
थूम तणी थिर थापना, मोटैं करै महिराण । स० ।
हरष घणै संघ हेतु सु, आसत अधिकी आण । स० । ६ ।
'माह शुकल छट्ठ' नै दिनें, शुभ महूरत सोमवार । स० ।
'श्री जिनभक्ति' प्रतिष्टिया, हरख ना सहु नर नार । स० ।७।
सहीय सहली सवि मिली, पहिर पटम्बर चीर । स० ।
गुण गावौ गजराय ना, मेरु तणी पर धीर । स० । ८ ।
नामे नवनिधि संपजे, आरती अलगी थाय । स० ।
कर जोडी 'वळजी' कहै, लुलि २ लागे पाय ॥ सहेली भाव सु० ९ ॥

जिनभक्तिसूरि गीतम्

ढाल: आषाढ़ भेरू आवे ए देशी।

'जिनभक्ति' जतीसर वंदो, चढतो कला दीपति चंदो रे। जि०।
खरतर गच्छ नायक राजे, छत्रीस गुणे करि छाजे रे। १। जिन०।
श्री 'जिणसुख सूरि' सनाथे, दीधो पद आपणें हाथे रे। जि०।
श्री 'रिणीपुर' संघ सवायो, महोछव कीयो मन भायो रे। २ जि०।
'सेठीया' वंसे सुखदाई, श्री जिन धर्म सोभ सवाई रे। जि०।
'हरिचन्द' पिता धर्मधीरो, 'हरिसुखदे' उदरे हीरो रे। ३। जि०।
लघुवय जिण चारित लीधो, सद्गुरु नें सुप्रसन्न कीधो रे। जि०।
विद्या जसु हुइ वरदाइ, पुन्यै गुरु पदवी पाई रे। ४। जि०।
प्रगट्यो जश देस प्रदेसै, वरते आज्ञा सुविसेसे रे। जि०।
बांटै सहु देस वधाइ, खरतर गच्छपति सुखदाई। ५। जिन०।
संवत 'सतरै छगुण्यासी, जेष्ट वदि त्रीज' पुण्य प्रकासी रे। जि०।
सहु सुजस रिणी संघ साध्या, इम कहै 'धर्मसी' उपाध्या रे। ६ जि०





श्री जिनभक्तिसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

॥वाचनाचार्य सुखसागर गीतम्॥

राग—कडखारी

वाचनाचार्य 'सुखसागर' वंदियै,
सुगुण सोभाग जसु जगि सवायो।
अङ्ग उच्छाङ्ग धरि नारि नर नित नमें,
कठिन किरिया करण इलि कहायो॥ १॥ वा०॥
पूज्य आग्रह चलि 'धमणो' वाञ्दिवा,
नयरि 'रुमाइले' अधिक सुख वास।
सघ नी आण सुखमाग करि पडिवज्या,
चतुर चित चग सू चरम चौमास॥२॥वा०॥
करिय चौमास अति एम आग्रह सू,
निज वचन रंजव्या सकल नर नारी।
ज्ञान परमाण निज आयु तुच्छ जाणिन,
साधु व्रत साचवइ चलिय सभारि॥ ३॥ वा०॥
प्रथम पोरसि अनै वलिअ (स० १७२५) 'मिगसर', तणी
'कसिण चवदम' अनै 'सोम' (शुभ) वार।
ऊचो चढ़ी एहवउ वयण सुख सु कह्यो,
ऊच गत जाणना एह आचार॥ ४॥ वा०॥
करिय अणसण अनै वलिय आराधना,
सकल जीव राशि शुभ चित खमावी।
मन वचन काय ए त्रिकरण शुद्ध सु,
भाव धरि भावना बार भावी॥ ५॥ वा०॥

एक मन भजन भगवंत नउ करतहिं,
सुणतहि उत्तराध्ययन वाणि ।
सावचेत आप श्री संघ बेठा थकां,
स्वर्ग गति लहिय पुण्यवन्त प्राणी ॥ ६ ॥ वा० ॥
वादियां गंजणो सकल जण रंजणो,
प्रगट घट ज्ञान वहु जाण पूरो ।
दुःख दालिद्र हरि सुख संपति करइ,
सुपसन्न सेवकां हुइ सनूरो ॥ ७ ॥ वा० ॥
भाग वड़ भेटयइ राग मन लाइ नइ,
गाइ नइ सुगुण शोभा वड़ाई ।
कुंकमे केसर पूजता पादुका अधिक,
धरि ऋद्धि नव निद्धि आई ॥ ८ ॥ वा० ॥
संघ सुखदाय मन लाय सुख सागरा,
नागरा नित नमइ शीस नामी ।
गणि 'समयहर्ष' नित सुगुरु गुण गावता
सिद्धि नव निद्धि वहु वृद्धि पामी ॥ ९ ॥ वा० ॥

॥ इति गुरु गीतम् ॥



हीरकीर्त्ति परम्परा

॥ कवित्त ॥

'पद्महम' गुर प्रवर, सदा सेवक सुख आपै ।
'दानराज' दिल साच, सेवता सकट कापै ॥
'तिलक सुन्दर' वाचक सुगुर, साहिब सुखकारी ।
'हर्षराज' गुणवन्त, 'हीरकीरति' हितकारी ॥
पाचे सुगुर पाच मरु सम पचानुत्तरनो परै ।
दीजियै सुख मतान रिद्धि, 'राजलाभ' वीनति करै ॥१॥
वाचक प्रवर 'राम जी', वडो मुनिवर वखतावर ।
नामे नवनिधि होइ, 'राजहर्ष' गुण आगर ॥
पण्डित चतुर प्रवीण, जुगति जाणन जोरावर ।
'तिलक पद्म' 'दानराज,' 'हीरकीरति' पाटोधर ॥
इम ऋद्ध वृद्धि आणद करौ, सुख सन्तति द्यौ सपदा ।
'राजलाभ' करै गुर जी हुज्यो, सेवक नु सुप्रसन्न सदा ॥२॥
॥ सवत् १७४० वर्षे मिती माघ सुदि ५ दिने ॥
॥ श्री गुरुभ्यो नम ॥



वा० हीरकीर्त्ति स्वर्गगमन गीतम्

श्री 'हीरकीरति' वाचक प्रणमो, सुर मणि सुरतरु सुरधेन समो।
अरियण दुख दोहग दूरि गमइ, घरि नवनिधि लिखमो रंग रमइ ।१।
सुख संपति दायक उपगारी, सेवक जन नइ सानिध कारी।
लवधइ गुरु गोयम गणधारी, नित ध्यान धरू हुं बलिहारी।२।
गुरु चरण करण ब्रह्म व्रत पालइ, तप जप करि अशुभ करम टालइ।
पूरव मुनिवर मारग चालइ, निज देव सुगुरु मनि संभालइ।३।
श्री 'गोलवछा' वंसइ दीपइ, तेजइ करि दिनकर नइ जीपइ।
महियल मंडल महिमा जागइ, सेवक ललि पाये लागइ।४।
सिद्धंत अरथ गुण भंडार, छ(व) काय वछल प्रति हितकार।
सुमिती अजव मद्दव सार, मुत्ती संजम तप निरधार।५॥
अणदीधउ न लीयइ साच वदइ, आकिंचन (दश) विध सील हवइ।
आहार तणा दूषण टालइ, बइतालीस सुद्धि क्रिया पालइ।६।
शाखा जगगुरु जिनचन्द्र तणइ, महिमा जस वास संसार थुणइ।
गणि 'दानराज' पाटै उदयो, वाचक वर 'हीरकीरति जयो।७।
संवत 'सतरइ गुणतीस' समइ, रहिया चौमासउ अंत समय।
'श्रावण सुदि चउदस' जोधाणइ' ज्ञानइ करि आऊखो जाणइ।८।
चोरासी योनि खमावि सहू, लख पाप अठार आलोय वहू।
अपनै मुख अणशण आदरीयो, निज चित्तमे ध्यान धरम धरीयो।९।
नवकार महामंत्र संभाली, गति असुभ करम दूरे टाली।
अणशण पहुर वि आराधी, सुह झाणइ सुर पदवी लाधी।१०।

सतरइ 'गुणतीनर' 'मार' मासन, 'तरस' दिवसर मन उल्हासइ ।
'वदि' महुरत शनि सुभ वार, पगला 'थाप्या' जयजय कार । ११ ।
श्री 'पद्महम' वाचक प्रवरू, श्री 'दानराज' सोहाग करू ।
श्री 'निलयसुंदर' हरषराज' मुन, प्रणमो श्री 'हीरकीरति' सदा ।१२।
पाचे गुरना पगला सोहइ (पच) परमसर जिम मन मोहै ।
समर्यां सनक दरसण दीजे, सुत सतति उने उन्नति कीजे । १३ ।
पाचे गुरना पूज्या । पगला, दुत्र आरति रोग । टलइ सगला ।
घरि बइठा आइ मिलइ कमला, गुरु तूठा थोक सह सबला । १४ ।
पय पूजो गुरु हिय भाव करी, घमर चन्दन सु चित्त धरी ।
सदगुर सुपसायइ रगरली, लह पुत्र कलत्र समृद्ध वली । १५ ।
निन दिन आणद सुमति दाता, गुरु चरणे अहनिस जे राता ।
मनवछिन पूरण कामगनो, सेवक सुखदायक अधिक ठनी । १६ ।
साचउ साहिन तुहिज मरो, हुं खिजमतगार भगत तरो ।
सुपसायइ गुर नव निह सप(जोइ, गणि 'राजलाभ सेवक जपइ । १७।
॥ इति श्री ॥



उपा० भावप्रमोद स्वर्गगमन गीतम्



नं० १

जिसो भाव जोगी जती जोग तत्त जाणतो, वैण वखाणतो अमृत वाणि ।
साझीयो तिसो अवसाण २ सिव, जंपै अरिहंति मनि अंति जाणी ॥१॥
व्याकरण तर्क सिद्धंत वेदन्त री, जीह वदतो सदा भेद जुओ ।
भाव शिष 'भाव परमोद' चो भाव सुद्ध,
हुं तो आछो तिसो मरण हुओ ॥२॥
गछै चोरासीये न छै कोइ ईये गुणि, श्रवण सुनीयो न को एम सीयो ।
(भावपरमोद) जिम सुखा भगवंत भणै,
लीया जस लाह स्वर्गलोक लीयो ॥३॥
वरसि 'जुग वेद मुनि इंद १७४४ 'गुरु' 'माह वदि',
वात अखियात जुग सात वचिसी ।
वड पाठक तणी घणी महिमा वसु,
रात दिन वडा कवि पात रचिसी ॥४॥

नं० २ कड़खामें

विरदे वखाणी जै जी 'भावपरमोद' कुल रो भाण ।
जग मांहि जाणिजै जी, परधान पुरुष प्रमाण । टेक
परधान सुजस निधान प्रगडउ, वाधतै मुखि वान ।
असमान मांन गुमान अमली, माण दीयण सु दांन ।
ऊनधां नाथणा नडण अनडा, पूजतै निज प्रांण ।
दीपतो सरव गुण जाण दीप, खरतरै दीवाण ॥१॥वि०॥

व्याकरण वेद पुराण वर्त्तो, सकल जैन सिद्धन्त।
ब्रह्मज्ञान आतम धरम वित्त, उपधान जोग विधन्त।
आगम पैंतालीस अरथे, कथे काइ न काण।
पाठक पदवी धार पृथि(वि) मे, एहवै अहिनाण ॥ २ ॥ जि० ॥
थूलभद्र नारद जिसौ धीरम, सील सत्त सरुप।
'जिनरतन' सूरि पडूरि जैन्र, इसै बुद्धि अनूप।
तिम 'चद' रै पिण छदि चलनो, वडिम आगीवाण ॥
पाट पति छत्रपति पाव पूजें, रीझवै रावराण ॥ ३ ॥ वि० ॥
'जिनराज सूरि' जिहाज जिन धरम, भट्टारक मुनिभूप।
शिष्य तास 'भावविजै' समो भ्रम गच्छ चोरासी रूप।
'भाव विनय' तिणरै पाट भणिजै, वडिम गुण वखाण।
एतला वस राजहस ओपम, सलहिजै सुविहाण ॥ ४ ॥ वि० ॥
वाचतो वाणि वखाणि अविरल, अमृत धारा एम।
नव नवा नव रस वचन निरुपम, जरहरा ध्वनि जेम।
जस सुजस पकज वास पसरी, प्रग्ती रै परिमाण।
रवि चद नै ध्रू(व) मेरु रहिसी, सुजस रा सहिनाण ॥ ५ ॥ जि० ॥
जिण वाल वय ब्रह्म चारु चारित्र, लीयो जती व्रत योग।
वय तरुण पण मन मे न वछया, भला वछित भोग।
तत पच साव्रत नेम जत सत, वाच रुद्र वखाण।
सुकीयो नहीं अरिहत मुख हू, अत रै अवसाण ॥ ६ ॥ जि० ॥
आराधना सीवन उचर, शुद्ध सरणा च्यार।
ज्ञनि क्रोध कपट मिथ्यातमूके, लोभ नहीय लिगार।

कविवर जिनहर्ष गीतम् ।



॥ दोहा ॥

सरसति चरण नमी करी, गास्युं श्री ऋषिराज ।
श्री जिनहरष मोटो यति, समय अनुसार कहिवाय ॥१॥
मद मलीन जे थया, उपगारी सिरदार ।
सरस जोडिकला करी, कर्या ज्ञान विस्तार ॥२॥
उपगारी जगि एहवा, गुणवंता व्रत धार ।
तेहना गुण गाता थका, हुइ सफल अवतार ॥३॥

वाडी ते फुटा मामनी ॥ देशी ॥

श्री जिनहरष मुनीश्वर गाइये, पाईये वंछित सीद्ध ।
दुसम काल माहि पणि दीपतो, किरिया शुद्धो कीध ॥१॥ श्रीजि० ॥
शुद्ध क्रिया मारग अभ्यासता, तजता मायाने मोस ।
रोस धरइ नही केहस्युं मुनीवर, सुदरु चित्त० नही सोस
॥२॥श्रीजि०॥
पच महाव्रत पालै प्रेमस्युं, न धरै द्वेष न राग ।
कपट लपट चपेटा परिहरइ, निरमल मन म वइराग ॥३॥श्री॥
सरल गुणे दूरि हठ जेहनं, ज्ञान गूढता (र) दूरि ।
ममता मान नही मनि जेहने, समता साधु नु नूर ॥४॥श्री॥

मंदमती नें शास्त्र वंचावता, आपता ज्ञान नो पंथ ।
जोडिकला माहि मन राखतो, निरलोभी निर्ग्रंथ ॥५॥श्री॥
शत्रुंजयमहातम आदि भला, तेहना कीधा रे रास ।
जिन स्तुति छंद छप्पया चउपई, कीधा भल भला भास ॥६॥श्री॥
निज शकति इम ज्ञान विस्तारीयु, अप्रमत्त गुणना निवास ।
ईर्या सुमति मुनिवर चालता, भाषासुमति स्युं भाष ॥७॥श्री॥
एषणासुमति आहारइं चित्त धरयुं, नही किहाइं प्रतिबंध ।
निरीह पणै मन लूखू जेहनुं, नही को कलेशनो धंध ॥८॥श्री॥
गच्छनो ममत्व नही पण जेहने, रुडा निस्पृह वंत ।
शातो दांत गुणे अलंकर्‍या, शोभागी सत्यवंत ॥९॥श्री॥

(२)

श्रीजिनहरष मुनीश्वर वंदीइ, गीतारथ गुणवंत ।
गच्छ चुरासीइं जाणइ जेहने, मानइं सहु जन संत ॥१॥
पंचाचार आचारइं चालता, नव विध ब्रह्मचर्यधार ।
आवश्यकादिक करणी उद्यमइं, करता शकति विस्तारि ॥२॥
आज कालिनारे कपटी थया, मांडी डाक डमाल ।
निज पर आतमने धूतारता, एहवो न धरयोरे चाल ॥३॥
आज तो ज्ञान अभ्यास अधिकछै, किरिया तिहां अणगार ।
ते 'जिनहरष' माहि गुण पामीइ, निंदै तेह गमार ॥४॥
आप मती अज्ञान क्रिया करी, त्रा(द?)डूकइ जिम सांड ।
हुं गीतारथ इम मुख भाखता, खुलनुं थाइरे षांड ॥५॥

कामिनि काचन तजवा सोहिला, सोहलु तजनु गेह।
पणि जन अनुवृत्ति तजवी दोहली, 'जिनहरषद' तजी तह ॥६॥
श्रीसाहायिक पणि सुभ आवी मल्या, श्री'वृद्धिविजय' अणगार।
व्याधि उपन्नइ सेवा बहु करी, पूरण पुण्य अवतार ॥७॥
आराधना करावइ साधुनै, जिन आज्ञा परमाण।
लख चुरासीर योनि जीव मावता, ध्याता रूडुरा ध्यान ॥८॥
पच परमेष्टीर चित्तड ध्यारता, गया स्वर्गे मुनिराय।
माडवी कीधार रुडी आनन, निहरण काम कराय ॥६॥
'पाटण' माहिर धन ए मुनिवर, विचर्या काल विशेष।
अखडपणै व्रत अत समइ ताइ, धरता सुभ मति रख ॥१०॥
धन 'जिनहरष' नाम सुहामणु, वन ग ए मुनिराय।
नाम सुहावइ निस्पृह साधनु, 'कनीयज' इम गुणगाय ॥११॥



* कवियण कृत *

देव विलास ।

(देवचंद्रजी महाराजनो रास)

सुकृत प्रेमराजी वने, प्रोल्लासन चिद्हंस,
ते तेम रि(हृ?)दये अक्षता, 'आदिनाथ अवतंस ॥ १ ॥
'कुरु' देशे करुणानिधि, उत्पन्न 'श्रीजिनशान्ति',
शांति थइ सवि जनपदे, कार्त्तस्वर जस कान्ति ॥ २ ॥
ब्रह्मचारीचूडामणि, योगीश्वरमें चंद,
तारक राजुलनारिनो, प्रणमु 'नेमिजिणंद' ॥ ३ ॥
यशनामिक कृत्य ताहरुं, पुरीसादाणी बिरुद,
वामाकुल वडभागीयो, 'पारसनाथ' मरद ॥ ४ ॥
जिनशासननो भूपति, 'वर्द्धमान' जिनभाण,
दूषम पंचम आरके, सकल प्रवर्त्ते आण ॥ ५ ॥
पंच परमेष्ठि जिनवरा, प्रणमु हुं त्रिणकाल,
अन्य एकोनविंशति जिना, तस प्रणमुं सुविशाल ॥ ६ ॥
सरसती व(र)सती मुखकजे, 'माघ' कविने साध्य,
'कालिदास' मूरख प्रते, कीयो कवि कीधा पद्य ॥ ७ ॥
'मल्लवादी' तुज सांनिधे, जीत्या बौद्ध अनेक,
तुज दरिसणे पद लब्धिनी, उत्पन्न थइ विवेक ॥ ८ ॥

निम माताना महात्म्यथी, गाजी मई 'देवचंद्र',
'देवविलास' रच्यु भलु, खरतरगच्छ दिणंद ॥ ९ ॥
कोइ देवाणुप्रिय कहे, ए स्तवना करे किम,
स्या ? गुण जोइ वरणवे, क्यु? बोले जिम तिम ॥ १० ॥
पंचमकाले 'देवचंद' ना, गुण दाखियने यत्र,
यथार्थपणे (कहो) मुज प्रते सो सत्य मानु अत्र ॥ ११ ॥
सांभलि मूढशिरोमणि, अछता गुण कहे जेह,
प्रशंस किम कोविद करे, गुण कहु सांभलि तेह ॥ १२ ॥
पंचमकाले 'देवचंद्रजी', गंधहस्ति जे तुल्य,
प्रभावक श्रीवीरनो, थयो अधुना बहुमूल्य ॥ १३ ॥
रत्नाकरसिंधु सदृश, चतुर्विध संघ जिन भूप,
कह्यो गया ते सत्य छे, सांभल ताम स्वरूप ॥ १४ ॥

ढाल—कपुर होये अति उजलुरे ए देशी ।

श्री देवचंद्रजीना गुण कहुंरे, सांभल ! चतुर सुजाण ।
घटता गुणनो प्ररूपणारे, कहवाने सावधानरे ।
भविका सांभलो मूकी प्रसाद । टेक । ॥ १ ॥
प्रथम गुणे सत्य जल्पनार१, बीजे गुणे बुद्धिमान ।
त्रीजे गुणे ज्ञानवंततारे३, चोथे आत्मध्यानरे ४ ।भविका०। सां० ।२।
पंचम गुणे निःकपटतारे५, गुण छठ्ठे नही क्रोध६ ।
सजल नो ते जाणीयेरे, नही अनंता नी योधरे ।भवि०। सां० ।।३।।
अहंकार नही गुण सातमरे, ७ आठमे सूत्रनो व्यक्ति ८ ।
जीवद्रव्यनी प्ररूपणारे, जाणे तेहनी युक्तिरे ॥ भ० ॥ सां० ॥४॥

सकल आगम हृदये रस्यारे, तेहना भांगा जेह।
'कर्मग्रंथ' 'कम्मपयडी' ना रे, स्वप्नमा अर्थना नेह रे। भ०।सां० ५।
नवमे सकल ते शास्त्रना रे, ६ पारंगामी पूज्य।
अलंकार कौमुदी भाष्यजे रे, अष्टादश कोश ना गुह्यरे।भ०। सां०।६।
सकल भाषामे प्रवीणतारे, पिंगल कृत शेष नाग।
काव्यादिक नैषध भला रे, स्वरोदय शास्त्रे अथाग रे। भ०। सां०।७।
जोतिष सिद्धान्त शिरोमणि रे, न्यायशास्त्रे प्रवीण।
साहित्य शास्त्रे सुरतरु रे, स्वपरशास्त्रे लीण रे। भ०। सां०।८।
दशमे गुणे दानेश्वरी रे, १० दीनने करे उपगार।
एकादशे विद्यातणी रे, ११ दानशालानो प्यार रे। भ०। सां०। ६।
गछ चोरासी मुनिवरु रे, लेवा आवे विद्यादान।
नाकारो नही मुखथकी रे, नय उपना विधान रे। भ०। सां०। १०।
अपर मिथ्यात्वी जीवडारे, तेहनी विद्यानो पोस।
अपूर्व शास्त्रनी वाचना रे, देतां न करे सोस रे। भ०। सा०। ११।
विद्यादानथी अधिकता रे, नही कोइ अवर ते दान।
न करे प्रमाद भणावता रे, व्यसन ना नही तोफान रे। भ०।सां०।१२।
पुस्तक संचय द्वादश गुणे रे, १२ जीर्णने करे नूतन।
स्वगणमे अपर गणे रे, प्रतिष्टाधारक जन रे। भ०। सां०। १३।
वाचक पदवी त्रयोदश गुणे रे, १३ चौदमे वादीजीत, १४
पनरमे जेहना उपदेशथी रे, १५ चैत्यनूत(न)नो प्रीति।भ०। सा०।१४।
सोलमे वचनातिशयथी रे, १६ द्रव्य (ख)रचाव्यो धर्मथान।
सप्तदशे राजेन्द्र पाय नम्यो रे, आज्ञा माने प्रधानरे। भ०। सा०।१५।

मारि उपद्रव टालीओ र, अष्टादशे गुणे जेह १८
दश देशे गुण कीर्त्तिनी र प्रवर्त्ते विर यातनु गेह र। भ०। सा०। १६।
एकोनविंशति गुणगणे र, आजानवाहु देवचद्र १६।
क्रिया उद्धार वीसमे गुणे र, अवधि जाणे सुरेन्द्र र। भ० ।सा० ।१७।
जिम औपनागन शिरमणि रे, तेहना गुण छे अनन्त।
तिम दवचद्र मणि मजुर,(मस्तकेर)एकवीस गुण महत रे।भ०।सा०।१८।
प्रभाविक पुरुष आगे थयार, अधुना तहन तुल्य।
ए गुण वावीस स्थूलतार, सूक्ष्म गुण वहुमूल्य र। भ०। सा०। १६।
पढम ढाल ए गुणतणी र, कवियणे भाखी जेह।
अल्पभवी हस्ये त महहेर, एहवा पुरिस थोडा जगरहर ।भ०।सा०।२०

दुहा।—

प्रथल ढाल ए गुणतणी, कवियण भाखी जेह,
विपक्षीने जाणवा, मनमे जाणे तेह। ॥ १ ॥
गुणतो सर्वत्र प्रगट छे, दश विदेश विरयात,
कवियणनी अधिकाइता, स्यु ? एहमे छे वात। ॥ २ ॥
कवियण कह एक जीभते, किम गुणवर्णन जाय
सागरमे पाणी घणो, गागरमे (न) समाय ॥ ३ ॥
वला कोइ भवि पुछस्ये, कवण ज्ञाति कुण जाति,
मातपिता किहा एहना त सभलावो भाति ॥ ४ ॥
दश किहा किहा जन्मभू कुण गुरुना ए शिष्य,
कुण श्रीपूज्य वार हुवा, भली उलटे लीधि दीक्ष ॥ ५ ॥

विद्याविशारद किहा थया, किम सरस्वती प्रसन्न,
किहा साधना कीधी भली, सुणता चित्त प्रसन्न ॥ ६ ॥
देवचन्द्रना वचनथी, किम खरचाणो द्रव्य,
किम भूपति पाये नम्या, ते विरतंत कहु भव्य ॥ ७ ॥
सर्व गुण गणनी वारता, भापे कवियण जेह,
साभलजो भविजन तुमे, पावन थाये देह ॥ ८ ॥

देशी हमीरानी ।

थाली आकारे थिर भलो, जंबुद्वीप विदीत । विवेकी ।
तेह मे भरतक्षेत्र रम्यता, आरज देश सुप्रतीत ॥ वि० ॥ १ ॥
भवियण भाव धरो सुणो ॥ वि० ॥
मरुस्थल देश तिहा सुन्दरु, तेह में 'विकानेर' ढ्रंग ॥ वि० ॥
तेहने निकट एक रम्यता, ग्राम अछे सुभ चंग ॥ वि० ॥ २ ॥ था० ॥
रिद्धिवंत महाजन वणा, रिद्धेकरी समृद्ध, ॥ वि० ॥
अमारीशब्दनी घोपणा, सुखीआ जन सुबुद्धि ॥ वि० ॥ ३ ॥ था० ॥
'ओशवंशे' ज्ञाति जाणीये, 'लुंणीयो' गोत्र सुजात ॥ वि० ॥
साह श्री 'तुलसीदासनो', धर्मबुद्धि विख्यात ॥ वि० ॥ ४ ॥ था० ॥
'तुलसीदास' नी भार्या, 'धनवाइ' पुन्यवंत । विवेकी ।
शील आचारे सोभती, सत्यवक्ता क्षमावंत ॥ वि० ॥ ५ ॥ था० ॥
यथाशक्ति क्रय विक्रयता, व्यवहारनु जे धाम ॥ वि० ॥
दम्पती प्रीतिपरस्परा, धर्मे खरचे दाम ॥ वि० ॥ ६ ॥ था० ॥
सुविहितगच्छमे जामली, वाचकमे शिरदार ॥ वि० ॥
वाचक 'राजसागर' सुधी, जैन काजी मनोहार ॥ वि० ॥ ७ ॥था०॥

अनुक्रम गुरु तिहां आवीया, वांदवा दम्पति ताम ॥ वि० ॥
'धनना२' श्री गुरुने कहे सुणो गुरु सुगुणनु धाम ॥ वि०॥ ८॥था०॥
पुत्र हस्ये जेह माहरे, चो०रावीस धरी भाव ॥ वि० ॥
यथार्थ वयण नी जल्पना, सुगुरुने जाण्यो प्रस्ताव ॥ वि० ॥९॥था०॥
विहार कर गुरु तिहां थकी, गर्भ वधे दिन दिन ॥ वि० ॥
शुभयोग शुभमुहूरते, सुपन लह्यु एक दिन ॥ वि० ॥ १० ॥ था० ॥
रात्रजाम सुता थका, किंचित् जागृत निंद ॥ वि० ॥
मेरु पर्वत उपर, मिली चोसठ इन्द्र ॥ वि० ॥
जिन पडिमानो ओच्छव कर, मिलीया देव ना वृन्द ॥वि० ।११ ।था०।
सेवा करता प्रभुतणी, एहवु सुपने दीठ ॥ वि० ॥
ऐरावण पर बसीने, देता सहूने दान ॥ वि० ॥ १२ ॥ था० ॥
एहवु सुपन ते देखीने, थया जाग्रत तत्काल ॥ वि० ॥
अरगोदय थयो ततक्षिण, मनमें थयो उजमाल ॥ वि० ॥१३॥ था०॥
उत्तम सुपन जे देखीउ, पण प्राज्ञनने पास ॥ वि० ॥
कहवु सुजने नवि घटे, जे बोले तह फल आस ॥ वि० ॥१४॥था०॥
दृष्टांत इहां 'मूलदेव नो, सुपन लह्यु हुतु चन्द्र ॥ वि० ॥
सुखक्रमे प्रवेशता, ते थयो नरनो इन्द्र ॥ वि० ॥ १५ ॥ था० ॥
जटिल एने ते चद्रमा, मुखमे करतो प्रवेश ॥ वि० ॥
मूरखन फल पुछना, भोजन लह्यु सुविवेक ॥ वि० ॥ १६ ॥ था० ॥
यादृश तादृश आगले, सुपन तणो अवदात ॥ वि० ॥
कहे (ते)न पश्चात्ताप उपजे, ए शास्त्रे विख्यात । वि० । १७ । था०।

अनुक्रमे विहार करताथका, 'श्री जिनचंद' सूरीश । ।।वि०।।
तेह गामे पधारीया, जेहनी प्रबल जगीस । । वि० । १८ ।था०।
विधिस्युं वादे दंपति, 'धनबाई' कहे तास । । वि० ।
हस्त जूओ स्वामी मुजतणो, आगल सुखनुं धाम(वास?)।वि०। १९ था०
एक पुत्र विद्यमान छे, अन्य मगर्भा दीठ । । वि० ।
श्रुतज्ञाने जाणीओ, पुत्र हुओ हशे इष्ट । । वि० । २० ।था०।
ए बीजा पुत्रने अम देज्यो, पण वाचकने दीधु वचन । वि० ।
बीजी ढालमे कवि कहे, मन मा(न्या) नातु मन्न । ।वि०। २१।था०।

दूहा: सोरठा

दंपती श्री गुरुपास, करजोडी करे विनती,
तुम उपर विश्वास, यथार्थ कहो श्रीस्वामीजी ॥ १ ॥
सुपनाध्यायना ग्रन्थ, काढ्या गुरुए ततखिणे,
सत्य बोले निग्रन्थ, लाभानुलाभ ते जोइने ॥ २ ॥
श्री गुरु शिर धुणावीयुं, चमत्कृति थइ चित्त ,
सामान्य वर ए सुपन स्युं ? पण इहा एहवि थीति ॥ ३॥
हे देवाणुप्रिय ! सामलो, सुपन तणो जे अर्थ ,
शास्त्र अनुसारे हुं कहुं, नवि बोलुं अमे व्यर्थ ॥ ४ ॥

देशी मनमोहनां जिनराया

तुम धरणीमे गजपतिदीठो, तेनो शास्त्रे कह्यो गरीठोरे ।
कुंवर थास्ये लाडकडो, हारे सुपनप्रभावे थास्येरे ।
गज पर बेसोने दान, वलि अनमिष सेवे विधानरे । ।१ कुं०।

दोय कारण छे ए सुपन, देवे जो प्रभावे ए तप(म?)नेर। कु०
छत्रपति थाये ए पुत्र के, पत्रपति धर्मनु सूत्रर। कु०॥२॥
जो राज राजेसरी थास्ये, सर्वदेशनो ईश इग्रास। कु०
जो पत्रपतिनु पद पामे, तो देश विहार सुठामेर। कु०॥३॥
गुरु तब ते जाणो गजराज, तपरि वेससें सिरताजर। कु
दवताह्रप जन चाकरीये, सिंह बालकने वली पासरीयेर। कु०॥४॥
दान देस्ये त विद्यादान, बुद्धि अभयदान निदानर। कु०
जिन ओछव करता इन्द्र, दीठु वृन्दारक वृन्दर। कु०॥५॥
जिनशासननो होस्ये थभ, विद्यानो होस्ये सर कुभ। कु०
चैत्य न्युतन पडिमा थापन, तेजस्वीमें तपनतो तापनर। कु०॥६॥
दपति कहे मुनिराज, साभलना न वरस्यो लाजर। कु
नोधभाव न आणस्यो चित्त, पुत्र तजस्विमे आदित्यर। कु०॥७॥
तुम राक तणे घर रत्न, रहेस्ये नही करस्ये यत्नर। कु०
दपति मनमांहि चिंते, धार्यु छे वोहरावानु निमित्तरे। कु०॥८॥
सत्रत सत्तर (४६)छेताला वरषे, जन्म्यो त पुत्र छ(छे?) हरषेर। कु०
गुण निप्पन्न ते नाम निधान, 'देवचद्र' अभिधानर। कु०॥९॥
वरस थया ते पुत्रने आठ, धार ते विज्ञानना पाठर। कु०
कवियण भासी त्रीजी ढाल, आगल वात रसालर। कु०॥१०॥

दूह।

अनुक्रमे विहार करता थका, आव्या पाठक तत्र,

'राजसागर शिरोमणि', अर्भक प्रसव्यो यत्र ॥ १ ॥

गुरु देखी हर्षित थया, वहुराव्यो पुत्र रतन,
धर्मलाभ गुरु तव दीये, करजो पुत्र जतन ॥ २ ॥
वाचक श्री 'राजसागर', कोविदमे शिरताज,
दिन केतलाएक गया पछी, मन चिन्तु शुभकाज ॥३॥
दीक्षा देवी शिष्यने, सुभ महुरत जोइ जोस,
सुभ चोघडीए देखीने, तो थाये संतोष ॥ ४ ॥
संघ सकलने तेडीने, दीक्षानी कही वात,
वचन प्रमाण करे तिहां, उलस्या सहूना गात्र ॥ ५ ॥
शुभ ओछव महोछवे, दीक्षा दीये गुरुराय,
संवत 'छपने' जाणीये, लघु दीक्षा दीये गुरुराय ॥ ६ ॥
श्री 'जिनचंदसूरीश्वरे', वडी दीक्षा दीये सार,
'राजविमल' अभिधा दीइ, श्रीजीनो घणो प्यार ॥७॥
'राजसागरजी'ये हितधरी, सरस्वतीकेरो मंत्र,
आपुं शिष्य 'देवचंद ने', मनमे कीयो तंत्र ॥ ८ ॥
गाम 'वेलाडु' जाणीये, 'वेणातट' सुभरम्य,
भूमिगृहमे राखीने, साधन करे तारतम्य ॥ ९ ॥
थइ प्रसन्न सरस्वती, रसनाग्रे कीयो वास,
भणवानो उद्यम करे, श्री गुरुसाहाज्य उलास ॥ १०॥

देशी वारी म्हारा साहिब।

देवचंद्र अणगारने हो लाल, सुभ शास्त्र तणा अभ्यासरे,
देखीने ठरे लोयणा।
प्रथम षडावश्यक भणे हो लोल,के(ते?)पछी जैनशैलीनो वासरे। दे०॥१॥

सूत्र सिद्धान्त भणावीया हो०, वीरजिनजीए भार ना जेहरे । दे०
स्वमार्ग मे पोषक थया हो०, टाले मिथ्यामतनु गेहर । २ दे०
अन्यदर्शनना शास्त्रनो हो०, भणवाने करता खमरे । दे०
वैयाकरण पचकाव्यना हो०, अर्थ कर करावे सुगम्यर । ३ दे०
नैषध नाटक ज्योतिष शिखे हो०, अष्टादश जोया कोषर । दे०
कौमुदी महाभाष्य मनोरमा हो०, पिंगल स्वरोदय तोषर । ४ दे०
भाखा (भाष्य ?) ग्रन्थ जे कठिणता हो०,

तत्वारथ आवश्यकबृहद्वृत्ति हो । दे०
'हेमाचार्य'कृत शास्त्रनार,हो०, 'हरिभद्र' 'जस' कृत ग्रन्थ चित्तरे ।५दे०
षट्कर्मग्रन्थ अवगाहता हो०, कम्मपयडीये प्रकृति सघरे । दे०
इत्यादिक शास्त्रे भला हो०, जैन आम्नाये कीध सुगधर । ६ दे०
सकल शास्त्रे लायक थया हो०, जेहने थयु मइ सुइ ज्ञानर । दे०
सवत् सतर चुमोतरे (१७७४) हो०,वाचक 'राजसागर' देवलोकर।७ दे०
सवत् सतर पचोतर (१७७५) हो०, पाठक ज्ञानधर(म) देवलोकर ।
मरट '(मरोट?)' ग्रामे गुरु ने भलो हो ला०, 'आगमसार' कीधो ग्रन्थर ।
'निमलाम' पुत्री दोय भली हो०,'माइजी' 'अमाइजी' शुभ पुण्पर ।८दे०
दोय पुत्रीने कारणे हो०, कीधो ग्रन्थ ते आगमसारर । दे०
सवत् सतर सीतोतर (१७७७) हो०,गुजरात आव्या देवचदर । ६ दे०
पाटण माहि पधारीया हो०, व्याख्याने मिले जनवृन्दर । १० दे०
कवियण कहे चोथी ढाळमे हो०, कह्यो एह विरतत प्रसिद्धरे । दे०
आगल हवे भवि सामलोर हो०, धर्मकरणीनी वृद्धिर । ११ दे०

दूहा

पाटणमें [illegible], [illegible]

[illegible] ॥ १ ॥

'श्रीमा[illegible]' [illegible], [illegible]

[illegible] ॥ २ ॥

नामे 'तेजसी' 'दोसीजी', [illegible]

'पाटण' [illegible] ॥ ३ ॥

कोटिध्वज अर्थ [illegible], [illegible] 'आगमगच्छ',

पुन्यरत्नो [illegible] ॥४॥

ते गुरुना उपदेशथी, [illegible]

'तेजसी' 'दोसीने' घरे, [illegible] अनूह ॥ ५ ॥

ते सेठ 'तेजसी' घरे, '[illegible]नचन्द्र' मुनिराज,

तव तिहां सेठ [illegible], [illegible] नाज ॥ ६ ॥

स[illegible]ना [illegible] तिम, तेहना [illegible] अभिमान,

गुरु गुणे नमे वायो [illegible], [illegible] धारयो कान ॥७॥

मीठे वचणे गुरु कहे, सांभलीयुं तव सेठ,

स्वामी हुं जाणुं नहीं, [illegible] ॥ ८ ॥

एहवे अवसरे तिहां हुता, संवेगी शिरदार,

'ज्ञानविमल सूरिजी', तिहां गया सेठ [illegible] ॥ ९ ॥

विधिस्युं वादी पुछीयुं, सह(स)कूट सहस्त्रनाम,

आगमे थी पृथकना, निकासो सुभधाम ॥ १० ॥

'ज्ञानविमलसूरि' कहे, सहसकूटना नाम,
अवसरं प्राये जणावस्यु कहस्यु नाम न ठाम ॥११॥
सकलशास्त्रे उपयोगना, तिहा उपयोग न कोइ,
आगम कुची जाणजो, ते तो विरला कोइ ॥ १२ ॥

ए देशी ' मारो सरीर समाणी ।

एक दिन श्री 'पाटण' मझार, 'स्याहानी पोलि' उदार रे ।
सहसजिननो रमीयो, 'देवचन्द्र' वयणे उलसीयो रे ॥ १स०॥ टेक ॥
ते पोलि चोमुखनाडी पास, सहुनी पूरं आस रे ॥स०॥१॥
सतरभेदी पूजा रचाणी, प्रभु गुणनी स्तवना मचाणी रे ।स०।
'ज्ञानविमल सूरि' पूजामे आ आ, श्रावकन मन भाव्या रे ॥स० २॥
तिहा वली यात्राये 'देवचन्द्र', आव्या बहुजनने वृन्द रे ।स०।
प्रभुने प्रणाम करीन बेठा, प्रभुध्यान धर त गरीठा रे ॥स० ३॥
एहवे तिहा शेठ दर्शन करवा, ससार समुद्रने तरवार ।स०।
प्रश्न कर शेठ 'ज्ञानविमलने', सहसकूट नाम अमलनरे ॥स०४॥
बहु दिन थया तुम अवलोकन करता, इम धर्मना कार्य किम सरतार।स०
प्राय सहसकूटना नामनी नास्ति, कदाचि कोइ शास्त्रे अस्तिर ।स० ५।
ज्ञानसमसेर तणा झलकारा, देवचन्द्र बोल्या तेणिवाररे ।स०।
श्रीजी तुमे मृषा किम बोलो, चित्तथी वात त बोलोरे (खोलोरे)॥स०६॥
प्रभु मन्दिरम यथार्थनो व्यक्ति, किम उपजे श्रावक भक्तिरे ।स०।
तुमे कोविदमे कहेवाओ श्रेष्ठ, अयथार्थ कहो ते नेष्टर । ॥स०७॥

तव 'ज्ञानविमलजी' त्रटकी बोल्या, तुमे शास्त्र आगम नवी खोल्यारे ।
तमे तो मरुस्थलीयाना वासी, तुमे वाक्य बोलोने विमासीरे ॥स०८॥
शास्त्र अभ्यास कर्यो होय जेहने, पूछीये वाक्य ते तेहनेरे ।स०।
तुमे एह वार्त्तामा नही गम्य, अमे कहीये ते तुम निमस्येरे । ॥स०९॥
इम परस्पर वाद करतां, तव शेठ बोल्या हर्ष भरमारे ।स०।
ओजी तमे अयथार्थ न वोलो, एह वातनो करवो निचोलोरे ॥स०१०॥
'ज्ञानविमल' कहे सुणो 'देवचंद', तुमने चर्चानो उपछंदरे ।स०।
जो तुमे बोलो छो तो तुमे लावो, सहसकूट जिन नाम संभलावोरे ॥११॥
तव 'देवचंद' कहे सुगुरु पसाये, सत्य युक्ति हवे न खसायरे ।स०।
तव 'देवचंदजी' शिष्यने साहमुं, जोइ लावो सहसजिननुं नामुंरे॥स०१२॥
सुविनीत सूलक्षने विद्वान, गुरुभक्तिमाहीं निवानरे ।स०।
'मनरुपजी' रजोहरणथी, पत्र आपे गुरुजीने तत्ररे । ॥स०१३॥
'ज्ञानविमलसूरि' तव वाची, एह 'खड(र?) तरे' मारी फाचीरे ।स०।
सत्कुलगुरुनो एह छ शिष्य, जेहनी जगमाहि छे अभिरुचरे ॥स० १४॥
शास्त्रमयादीये सहसनाम, साखयुक्त ते नाम सुठामरे ।स०।
मौन रहीने पुछे ज्ञान, तुमे केहना शिष्य निवानरे ।स० १५।
'उपाध्याय' राजसागरजीना शिष्य, मिठी वाणी जेहवी इक्षुरे ।स०।
नम्रता गुण करी वोले ज्ञान, 'देवचंद्र' ने आप्या मानरे ।स० १६।
तुम वाचकतो जैनना काजी, तुमे जैनना थंभ छो गाजीरे ।स०।
आदि घर छे ते(त?)मारुं मध्य,‖तुमे पण किम न होये कव्यरे ।स०१७।
इणिपरे परस्पर युक्ति मिलीया, शेठ 'तेजसी'ना कारज फलीयारे ।
सहसकूटनां नाम अप्रसस्ति(द्धि?)देवचंद्रे कीधा प्रसरिजरे । (प्रसिद्धि)

प्रतिष्टा तिहा कीधी भव्य, ओच्छव कीधा नवनव्यर । स० ।
'क्रियाउद्धार' कीधो 'देवचंद्र', काढ्या पाप परिग्रहफंदर ।स० १६।
ढाल कही ए पांचमी रुडी, ए वात न जाणस्यो कूडोर । स० ।
कवियण कहे आगल सबंध, वली सोनुने सुगंधर ।स० २०।

दोहा ।

क्रिया उद्धार 'देवचंदजी', कीधो मनथी जेह,
ए परिग्रह सवि कारिमो, अंते दु खनु गेह ॥ १ ॥
नव नन्द नी नव डु गरी, कीधो सोवनराशि,
साथे कोइ आवी नहीं, जूठो घरवो आसि ॥ २ ॥
धन धन श्री 'शालिभद्रजी', धन धन धन्नो सुजात,
अगणित ऋद्धिने परिहरी, ए काइ थोडी वात ॥ ३ ॥
बत्रीस कोटिसोवनतणी, 'धन्नो' काकंदी जेह,
मूकी श्री जिन 'वीरनी', दीक्षा लीधी नेह ॥ ४ ॥
देवचंद मनमे चिंतवे, हु पामर मनमाहि,
मूछा धर त फोक सवि, सत्य प्रभु मारग थाहि (माहि ?) ॥ ५ ॥
संवत 'सतरसत्यासीये', आव्या 'अमदावाद,'
लोक सहु तिहा वादवा, आव्या मन आल्हाद ॥ ६ ॥
'नागोरीसरा(य)' जिहा अछ, तिहा ठवीया मुनिराज,
निर्लोभी निष्कपटता, सकल साधुशिरताज ॥ ७ ॥
साधु श्री 'देवचंदजी', स्यादवादनो युक्ति,
जीवद्रव्यना भावने, दखाडे ते व्यक्ति ॥ ८ ॥

तेहवे देशना साभलो, श्रावक श्राविका जेह।
वाणी जल आपाढ सम, वरसे ध्वनि घन गेह ॥ ९ ॥
पापस्थान अढार छे, ते मूको भविजन्न,
जिनवरे भाख्यां जे अछे, ते सुणीये एक मन्न ॥ १० ॥

ढाल अलगी रहेनी, ए देशी

वीर जिणेसर मुखथी प्रकासे, पापस्थान अढार,
तेहथी दूर रहो भवि प्राणी, मु(सु?)णोये आगार अणगार ॥ १ ॥
जिनवर कहेजी, कहेजी, २ जिनवर कहेजी। टेक।
पापथानिक पहिलु तुमे जाणो, जीवहिंसा नवि करीये,
बेंद्री तेन्द्री चोरिंद्री पंचंद्री, वध मा मन नवी धरीये ॥ २ ॥ जि० ॥
एकेंद्रियादिक अनंतकायादिक, तेहना करो पचखाण,
एकेंद्रीय तो संसारि नी करणी, अनुमोदना नवि आण ॥३ ॥ जि०॥
अणगारी ने सर्वनी जयणा, पटकायाना त्राता,
कोइ जीवने दुःख नवि देवे, उपजावे बहु साता ॥ ४ ॥ जि० ॥
मरि कहेता दुख उपजे सहु ने, मारे किम नवि होय,
रुद्रध्याने नरकगति पाम्यो, ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति जोय ॥ ५ ॥ जि० ॥
मृपावाद पाप थानिक बीजुं, जुठुं नवी बोलोजे,
वैर विखादे (विपवादे) मृखा वचन बोले, पतीयारो किम कीजे ।६ जि।
झुठ बोल्याथी 'वसु' भूपतिनुं, सिंहासन भुइं पडीयुं,
काल करीने दुरगति पोहतो, झुठ वयण ते जडीयुं ॥ ७ ॥ जि० ॥
झुठु मिठु लागे जनने, कडुया फल छे तेह,
आगारी अणगारि मुखथी, झुठ न बोलस्यो रेह ॥ ८ ॥ जि० ॥

त्रीजु थानिक कहे जिनवरजी, नाम अदत्तादान,
अणदीधी वस्तुनी जयणा, धरवानो करो स्यान ॥ ९ ॥ जि० ॥
चोरी व्यसने दुरगति पामे, तहनो कोइ न साखी,
चोरद्रव्य खाता नृप जो जाणे, जिम भोजनमा माखी ॥ १० जि०॥
तृण जाच्यु कल्पे साधुने, नवि ले अदत्तादान,
चोर तणो वली संग न कीजे, इम कहे जिन वर्धमान ॥११ जि०॥
पापस्थानक चोथु भवि जाणो, ब्रह्मचर्य मनमा धारो,
रूपवंत रामा देखीने मन नवि कीजे विकारो ॥ १२ ॥ जि० ॥
विषयी नर रामाए राचे, ते दुःख पामे नरक,
लोह पुतली धखावे अगने, आलिंगावे धरके ॥ १३ ॥जि०॥
विषवल्ली सदृश छे ललना, तहनो संग न कीजे,
मनमा कपट चपट कर जनने, शुभ प्राणी किम रीझे ॥ १४ ॥जि०॥
रावण मुंज आद देइ भूपा, नारी थी विगुआणा,
सीता सुदर्शन सोल सतीना, जगमे जस गवाणा ॥ १५ ॥जि०॥
स्त्रीसंगे नव लाख हणाइ, जीवनणी बहुराशि,
ब्रह्मचर्य चोथु चित्त न धर तो, पामे नरकनो वास ॥ १६ ॥जि०॥
पाचमु थानिक परिग्रहनु, करीये तहनो प्रमाण,
ग्रन्थी नहीं ते निग्रन्थ कहीये, नि द्रव्य मुनि सुजाण ॥ १७ ॥जि०॥
क्रोध मान माया लोभ जाणो, राग द्वेष कलह न कीजे,
अभ्याख्यान पैशुन रति वर्जो, अरति परपरिवाद न लीजे । १८ जि०
पापथानक अढारमु भाखु, मिथ्यात्वशल्य नवि धरीये,
सत्तर थी ए भार कहीये, मिथ्यात्वे क्रम तरीये ॥ १९ ॥जि०॥

मिथ्यात्वशल्य काढीने प्राणी, समकितमांहि भलीये ,
जिनवर भाषित वचन स(र)दहीये, भव भव फेरा टलीए ॥२०॥जि०॥
नैगम संग्रह आदे देइ, सप्तनयनी (ने?) (सप्त) भंगी ,
तेहनी रचना करता गुरुजी, अपवादने उत्संगी ॥ २१ ॥जि०॥
च्यार निखेपे सूत्र वाचना, नाम द्रव्य ठवण भाव ,
कुमति ठवणादिकने उवेखे, किम निक्षेप जमाव ॥ २२ ॥जि०॥
जीव अजीव पुण्य पाप आदे देइ, 'श्री नवतत्त्वनी' वाचा,
भेद भेद करीने भविने, समजावे अर्थ ते साचा ॥ २३ ॥जि०॥
गुणठाणा चतुर्दश कहीये, मिथ्या सास(स्वाद?)न मीरसे ,
ए आदि प्रकृतियो बधी, कर्मग्रन्थथी लहीस्ये ॥ २४ ॥जि०॥
देशना वाणी देवचंद्र भाखे, भवियणने हितकारी ,
छठी ढाल ए कवियणे भाखी, सुगुरु मल्या उपगारी ॥ २५ ॥जि०॥

दूहा

भगवइ सूत्रनी वाचना, साभले जननो वृन्द,
वाणी मिठी पियुष सम, भाखे श्री देवचंद ॥ १ ॥
'माणिकलालजी' जालिमी, ढुंढकनो मन पास,
तेहने गुरुए बुझव्यो, टाली मिथ्यात्वनी का(वा?)स ॥ २ ॥
नौ(नू?)तन चैत्य करावीने, पडीमा थापी तासि(आवा)स,
देवचंद उपदेशथी, ओछव हुया उलास ॥ ३ ॥
श्री 'शांतिनाथनी पोल' में, भूमिगृहमे विंब,
सहसफणा आदे देइ, सहसकोड जिनबिंब ॥ ४ ॥

तहनी नतिष्ठा तिहा फरी, घन खरचाणा पूर,
जैनधरम प्रकासीयो, दिन दिन चढत नूर ॥ ५ ॥
सवन सतर ओगणीस (एन्यार्एंशो?) १७७६ मे, चातुर्मास खभात,
विहाना भविन बुझव्या, जेहना (वहु) अवदात ॥६॥

ढाल—रसीयानो देशी

श्री देवचद्र मुनींद्र त जैन नो, स्तभ सदन थयो सत्य । सुज्ञानी,
वजना मे श्री 'शत्रुजय' तीर्थनो, महिमा प्रकाश नित्य । सु० ।
तीर्थ महिमा शत्रुजयनी सुणो ॥ १ ॥
श्री सिद्धाचल महिमा मोटको, श्री ऋषभ जिणदनी वाणी। सु० ।
मुक्ति गमनतु तीरथ ए अछे, सास्वत तार्थ प्रमाण ।सु० । २ ।तीरथ०।
दु सम आरो पचमो जिन कह्यो, एकविसति सहस वर्ष । सु० ।
चार योजन श्री शत्रुजयगिरि, एहनु कुण कह रहस्य ॥३॥ ती० ॥
काकर काकर साधु सिद्ध थया, भरत कीयोर उद्धार ॥ सु० ॥
'कर्माशा (ह)' आद दइ जाणीए, सोल उद्धार उदार ॥ ४ ॥ ती० ॥
तीर्थ माहात्म्यनी प्ररूपणा गुरु तणी, सामले श्रावकजन्न । सु० ।
सिद्धाचल उपर नवनवा चैत्यनी, जीर्णोद्धार कर सुदिन्न ।सु० ५ ती०
कारखानो तिहा सिद्धाचल उपरे, मडाव्यो महाजन्न । सु० ।
द्रव्य खरचाये अगणित गिरि उपरे, उलसित थायेरे तन्न ।सु०।६ ती०
सवत सत्तर(१७८१)एकासीये, व्यासीने त्यासीये कारीगरे काम। सु०
चित्रकार सुधाना काम त, दपद् उज्वलतारे नाम ॥सु०॥७॥ ती० ॥
फिरीने श्री गुरु 'राजनगरे' भला, तिहा भविन उपदश । सु० ।
विनतो 'सुरति' वदिर नी भली, चोमासानोरे विशेष ।सु० ८ ।ती०।

श्री 'देवचंदजी' 'सुरति' वंदिरे, कीधा भविने उपगार । सु० ।
'पंचासिये' 'छयासीये' 'सत्यासीये', जाणीये बुद्धितणा जे भंडार ।सु०।९
'पालीताणे' प्रतिष्ठा करी भली, खरच्यो द्रव्य भरपूर । सु० ।
'वधुमाये' चैत्य 'शत्रुंजय'उपरे, प्रतिष्ठा'देवचंद'नी भूरि ।सु०१०।ती०।
पुनरपि श्री गुरु 'राजनगर' प्रत्ये, आव्या चोमासुं रे सार । सु० ।
संवत 'सत्तर(८८)अठ्यासीय'माहि, पंडित माहि शरदार ।सु०।११ती०
वाचक श्री 'दीपचंदजी' प्रत्ये, उप(र)नी व्याधिनी (?)व्याधी । सु० ।
'आसाढ़' सुदि बीज दीने ते जाणीये, पुहता स्वर्ग प्रधान ।सु०।१२ती०।
'तपगच्छ' माहे विनीत विचक्षण, श्री 'विवेकविजय' मुनींद्र । सु० ।
भगवा उद्यम करता विनयी घणुं, उद्यमे भणावे 'देवचंद्र' ।सु०।१३।ती०
गुरुसदृश मन जाणे 'विवेकजी', खिजमतिमें निसदिन्न । सु० ।
विनयादिक गुण श्री गुरु देखीने, 'विवेकजी' उपर मन्न ।सु०१४ती०।
'अमदावाद'मे एकसमे भलो, 'आणंदराम' साह श्रेष्ट । सु० ।
'रतनभंडारी' ना अग्रेस्वरी, जेहना मनसेरे इष्ट । सु० । १५ ।ती०।
श्रीगुरुने वली 'आणंदराम' ने, चर्चा थायरे नित्य । सु० ।
चर्चाए ते जीत्यो गुरुजीए, 'आणंदनी' गुरुपरि प्रीति ।सु०।१६ ती०।
'कवियण' भाखी सातमी ढाल ए, पंचम आरारेमाहि । सु० ।
एहवा पुरुष थोडा प्रभुमार्गना, प्रकाश करवाने उछाहिं । सु०।१७।ती०।

दूहा।

शाहा श्री 'आणंदरामजी', गुरुनी गुरुता देखि,
भंडारी 'रत्नसिंध' आगले, प्रसंशा करी सुविशेष ॥ १ ॥

गुरु ज्ञानी शिरोमणि जिनधर्मे वृषभ समान,

'मरुस्थल' थी इहा आवीआ, सकलविद्यानु निधान ॥ १ ॥

'रतनसिंह' गुरु वादवा, आव्यो आलय तास,

नय उपनय समजावीने, मन प्रसन्न कर्युं तास ॥ २ ॥

देशी'—धन धन श्री ऋषिराय अनाथी

पूजा अरचा 'रतन भडारी', करता श्रीजिनवरनीरे ।

श्री 'देवचद्रजी'ना उपदेशथी, शिवमदिरनी निसरणीरे ॥१॥

धन धन ए गुरुरायने वयण, जिनशासन दीपाव्योरे ।

पचम आरे उत्तमकरणी गुजरातिनो सो (सु?) बो नमाव्योरे । टेक०

बिब प्रतिष्टा बहुली थाये, सत्तर भेदी पूजारे ।

भडारीजी लाहो लेता, ए गुरु सम नही दूजारे ॥धन० ॥३॥

विधि योगे त 'राजनगर'मे, मृगी उपद्रव व्याप्योरे ।

रतन भडारी सर्व अनहारी, अरज करी सीस नमाव्योरे ॥धन०॥४॥

स्वामी उपद्रव 'राजनगर'मे, थयो छे सर्व दु ख कर्त्तारे ।

तुम बठा अमे केहने कहीये, तुमे छो दु खना हर्त्तारे । ॥धन० ।५।

जैनमार्गना मत्र यत्रादिक, करीने खीला गाड्यारे ।

मृगी उपद्रव नाठो दुरि, लोकना दु ख नसाड्यारे । ॥धन० ।६।

जिनशासननो उदय त करता दु सम आरे 'देवचद्र'रे ।

प्रशसा सघले शाशन केरी, टाल्यो दु खनो ददरे । ॥धन०।७।

एहवे सम 'रणकु जी' आव्या, बहुलु सैन्य लेइनरे ।

युद्ध करवा 'भडारी' साथ, आव्यो नगारु दइनरे । ॥धन०।८।

'रतनसिंघ' भडारी ततखिण आव्यो श्री गुरु पासेरे ।

काइ करणो दल बहोतज आयो में छा थाक विस्वासेरे । ॥धन० ।९।

फिकर मत करो 'भंडारीजी', प्रभुजी आछो करस्येरे ।
जीत वाद थाहरो अब होस्ये, करणी पार उतरस्येरे ॥धन०॥१०॥
चमत्कार श्री जिन आम्नायनो, गुरुजीये ते दीधोरे ।
फतेह करीने आज्यो वहिला, थाको कारज सीधोरे ॥धन०॥११॥
'रतनसंघजी' सैन्य लेइने, युद्ध करवाने सांहमोरे ।
'रणकुंजी' साथे तोपखाने, चाल्यो न करे खामोरे ॥धन०॥१२॥
परस्परे युद्धे 'रणकुंजी' हार्यो, थई भंडारी नी जीतरे ।
ए सर्व 'देवचंद्र' गुरुपसाये, हेमाचार्य कुमारपाल प्रीतरे ॥धन०॥१३॥
'धोलका' वासी सेठ 'जयचंदे', 'पुरिसोतम' योगीरे ।
गुरुने लावी पायो लगाड्यो, जैनधर्मनो भोगीरे ॥धन०॥१४॥
योगिंद्र एक गिर 'पुरुसोत्तम'ने, (नो?) मिथ्यात्व शल्यने काढ्योरे ।
बुझविने जिनधर्म मार्गमां, श्रुतिये मन तस वाल्योरे ॥धन०॥१५॥
'पंचाणुंइ' 'पालीताणे' आव्या, 'छनुंये' 'सत्ताणुंये' 'नवानगरे'रे ।
'ढुंढक' टोला 'देवचंद्रे' जीत्यां, चैत्य चाल्या सर्व झगरेरे ॥धन०॥१६॥
'नवानगरे' चैत्य जे मोटां, ढुंढके जे हता लोप्यारे ।
अर्चा पूजा निवारण कीधी, ते सघला फिरी थाप्यांरे ॥धन०॥१७॥
'परधरी' गाम में ठाकुर बुझव्यो, गुरुनी आज्ञा मानेरे ।
'कवियणे' आठमी ढाल ते रुडी, ए वात न जाणो कुडिरे ॥धन०॥१८॥

दोहा ।

पुनरपि 'पालीताणे' गुरु, पुनरपि 'नुतन' नग्र माहि ।
संवत (१८०२-३) अढार 'दोय' 'त्रिणमा', 'राणावाव' उछाहिं ॥ १ ॥

तजना अधीशन, रोग भगदर जेह ।
टाल्यो तत्खिण गुरुजिइ, गुरु उपर बहु नह ॥ २ ॥
सवत 'अष्टादश च्यार'में, 'भावनगर' मझार ।
मेता 'ठाकुरसी' भलो, हु ढकनो बहु पास । (प्यार ?) ॥ ३ ॥
श्री 'देवचद्रे' बुझवी, शुभमार्गिनो वाम,
तत्रना ठाकुर तणी, मत्त कीधी जैन पास ॥ ४ ।
सवत 'अष्टादश च्यार मे, 'पालीताणो' गाम ।
मृगी टाली गुरजीये, श्रीगुरुजीने नाम । ॥ ५ ॥
सवत 'अष्टादश' 'पच' 'पष्ठ'में, 'लींबडी' गाम उदार ।
'डोसो वोहोरो' साहा 'धारसी', अन्य श्रावक मनोहार ॥ ६ ॥
साहा श्री 'जयचद' जाणोय, साहा 'जेठा' बुद्धिवत ।
'रहो कपासी' आदि दक्ष, भणाव्या गुरइ तत ॥ ७ ॥
गुरुए सहु प्रतिबोधीया, जैनधर्मम सत्य ।
गुरु उपगार न वीसारता, धर्मे खर्चे वित्त ॥ ८ ॥
'लिंबडी' 'ध्रागद्रा' गाम ए, अन्य 'चुडा' वली गाम,
प्रतिष्टा त्रिण थइ बिंबनो, द्रव्य खरच्या अभिराम ॥ ९ ॥
'धागद्रे' जिनबिंबनी, थइ प्रतिष्ठासार,
'सुखानदजो' तिहा मल्या, 'देवचद्र'नो प्यार ॥ १० ॥

देशी :— ललनानी ठे ॥

सवत 'अढारने आठमे', गुजरातिथी काढ्यो सघ ।ललना०।
श्रीगुरना गुरु उपदेशथी, शत्रुजयनो अभग ॥ ल० ॥ १ ॥

गुरुवयणा ते सद्दहो ॥टेक॥

गिरि उपर उछव थया, खरच्या वहुला द्रव्य ।
पूजा अरचा वहुविधि, अनुमोदे ते भव्य ॥ ल० ॥२ गुरु०॥
उभी सोरठ जातरा, करता ते भविजन्न । ल० ।
'अष्टादश' 'नव' 'दशमे', श्री गुजराति चोमास ॥ ल० ॥३ गुरु० ॥
संवत 'दश अष्टादशे', 'कचरासाहाजीइं' संघ । ल० ।
श्री शत्रुंजय तीर्थनो, साथे पधार्या देवचन्द ॥ ल० ॥४ गुरु०॥
साह 'मोतीया' 'लालचंद', जाणीइ जैनमारगमें प्रवीण । ल० ।
श्राविका अवल ते भक्तिमा, दानेश्वरीमां नहीं खीण ॥ल० ॥५ गुरु०॥
.... ॥६॥
संघमे श्री 'देवचन्दजी', अन्य व्यवहारीया साथ । ल० ।
श्री 'शत्रुंजय' गिरि आवीया, लेवा धर्मनुं पाथ ॥ ल० ॥७ गुरु०॥
प्रतिष्ठा जिनविंबनो, गुरुजिइं किधी तत्र । ल० ।
साठी सहस्त्र द्रव्य खरचीयो, गुरु वचने ते यत्र ॥ ल० ॥८ गुरु०॥
संवत 'अढार इग्यार'मे, प्रतिष्ठा 'लींवडी' मध्य । ल० ।
'वढवाणे' श्रावक ढुंढकी, बुझव्या खरची रुद्धि ॥ ल० ॥९ गुरु०॥
चैत्य कराव्या सुंदर, जिन अर्चाना ठाठ । ल० ।
प्रभाविक पुरुष 'देवचन्द्रजी', धन्य एहनी मात ॥ल० ॥१० गुरु०॥
शिष्य सुविनीत पासे भला, श्री 'मनरुप' जी दक्ष । ल० ।
'विजयचन्द' बुद्धिये प्रबलता, न्याय शास्त्रना पक्ष ॥ल०॥११ गुरु०॥
वादी अनेक ते जीतीया, गच्छ चोरासीना साव । ल० ।
भणे तर्कवादी भलो, श्री 'देवचन्द्रनो' हाथ ॥ल० ॥१२ गुरु०॥

'मनरुपजी' ना शिष्य दोउ, 'वक्तुजी' 'रायचन्द' । ल० ।
गुरुभक्ति आज्ञा धरे सेवामे सुखकन्द ॥ ल० ॥ १३ गुरु० ॥
सवत 'अढार ना वारमें', गुरु आव्या 'राजद्रग' । ल० ।
गछनायकने तेडावीआ, महाछव कीधा अभग ॥ ल० ॥१४ गुरु०॥
'वाचकपद' 'देवचन्द'ने, गच्छपति दवे सार । ल० ।
महाजन द्रव्य खरच्यो बहु, एह सबध उदार ॥ल० ॥१५ गुरु०॥
नवमी ढाल सोहामणी, कवियण भाखी एह । ल० ।
एक जीभे गुण वर्णता, कहिना नावे छेह ॥ ल० ॥ १६ गुरु० ॥

॥ दूहा ॥

वाचक श्री 'देवचन्द्रजी', वचना पीयूष समान,
जीव द्रव्यना भेदस्यु, नय उपनय प्रधान ॥ १ ॥
ग्रथ भला 'हरिभद्र' ना, वाचक 'जस' कृत जेह,
'गोमटसार' 'दिगम्बरो', वाचना करे हित नेह ॥ २ ॥
'मुलताने' 'देवचन्द्रजी', वली अन्य 'बीकानेर',
चोमासा गुरु तिहा करी, ज्ञानवणी समसेर ॥ ३ ॥
नवाग्रन्थ ज्हेन कर्या, टीका साहत तह युक्त,
'दसनासार' 'नयचक्र', शुभ 'ज्ञानसार'नी भक्ति ॥ ४ ॥
'अष्टकटीका' युक्तिथी, 'कर्मग्रथ' वली जेह,
तहनी टीका आदि दइ, अन्य क्या बहुनेह ॥ ५ ॥
'राजनगरे' 'देवचन्दजी', 'दोसीवाडा' माहि,
थाका लोक व्याख्यानमे, साभलता उछाहि ॥ ६ ॥

एकदिन वायुप्रकोपथी, वमनादिकनी व्याधि,

अकस्मात उत्पन्न थइ, शरीरे थइ असमाधि ॥ ७ ॥

शास्त्र मरण दोउ कह्या, पंडित मरण छे जेह,

बाल मरण तो दुसरो, उत्तम पण्डित मृत्यु वेह ॥ ८ ॥

तब शरीरनि क्षीक्षणा, (क्षीणता?) शिथिल थया अंगोपाग,

बुद्धि करीने जाणीइं, अनित्य पदारथरंग ॥ ९ ॥

पुद्गल तो अनित्यता, अनादिनो स्वभाव,

मूरख तेपरि रंग धरे, पण्डित धरे विभाव ॥ १० ॥

निज शिष्योने तेडीने, दे शिक्षा हितकार,

मुज अवस्था क्षीण छे, ए पुद्गल व्यवहार ॥ ११ ॥

ढाल: निंदलडी वैरण हुय रही, ए देशी

शिष्य शिरोमणी जाणीइं, 'मनरूपजी' हो वाचक गुणवंत,

चतुर चाणाक्य शिरोमणि, गुरु उपर बहु भक्तिवंत,

धन धन ए गुरु वंदीए ॥ १ ॥

धन्य एहनी चतुराइने, गुरु बेठा हो श्रावक करे सेव,

पदकज सेवे जेहना, आज्ञा माने हो नित नित मेव ॥ २ ध० ॥

विनयी विचक्षणे पण्डते,गुणालंकृत हो जेहनुं भयुं गात्र,

श्रीगुरु मनमें चिंतवे, मुझ 'मनरूप' हो शिष्य घणु सुपात्र ।३ । ध० ।

'मनरूप' शिष्य विद्यमानता, 'रायचंदजी' हो दुजला पूज्य,

गुरुसेवामें विनयी घणुं, विद्याना हो जेह जाणे गुह्य । ४ । ध० ।

श्री 'रूपचंद' शिष्य सुशीलता, 'विजयचंदजी' हो पाठक गुणयुक्त,

विद्या भरे हस्ति मलपतो, मेघध्वनि सम हो उद्घोषणा छंद,

द्वितीय शिष्य 'विजयचंदजी', तर्कवादे हो जीत्या वादीवृन्द । ५ ।ध०।

तस सीस होय सुसीलता, पूज्य पूजा हो 'सभाचद' 'विवेक',
गुरुनो प्रेम शिष्य उपर, गुरु विद्यमाने हो वादी कीया मेक ॥६घ०॥
शिक्षा देवे उपाध्यायजी, सर्वशिष्यने हो कहे वारी प्रेम,
समयानुसार विचरज्यो, पापबुद्धि हो नवि धरस्यो वेम ॥७घ०॥
पग प्रमाणे सोडि ताणज्यो, श्री सघनी हो धारज्यो तमे आण,
वहिज्यो सूरिनी आज्ञा, सूत्र शास्त्रे हो तुम धरज्यो ज्ञान ॥८घ०॥
तूज समरथ छो मुज पुठे, मुझ चिंता हो नास्ति लवलेस,
सपरिवार ए ताहर सोले छे, हो मुक्या सुविशेष ॥९घ०॥
तव 'मनरूप' जी गुरु प्रत्ये, कहे वाणी हो जोडी हाथ,
गुरजी तूम वडभागीया, पामर अम हो पण शिर तुम हाथ ॥१०घ०॥
सकल शिष्य मेला करी, गुरुजीये हो सहुन थाप्यो हाथ।
प्रयाण अवस्था अम तणी, वाणी वदवी हो जेहवो गगापाय ॥११घ०॥
दशवैकालिक उत्तराध्ययनना, अध्ययनने साभले गुरराय।
यथार्थ सर्व मन जाणता, अरिहतनो हो ध्यान धर चित्तलाय ॥१२घ०॥
सवत 'अढार बारस' 'भाद्रपद' मासे हो 'अमावस्या' दिन,
प्रहर एक रजनी जाता, देवगति लहे 'देवचद्र' धन धन्य ॥१३घ०॥
मोटे आडबर माडवी, चोरासी गच्छना हो श्रावक मल्या वृन्द,
अगर चदने काष्टे भली, चिता रचिता हो महाजन सुरतरुकद ॥१४घ०॥
प्रतिपदाए दहन दीयु, गुरु पूठी द्रव्य घणो खरचत,
तिथियो जमाडि वहोलता, जाणे अषाढो हो घने करो वरसन ॥१५घ०॥
ए देवचद्रना वचनथी, द्रव्य खरच्या हो अगणीत सुभठाम,
धा धन खरचाइयु, एहवा गुरुना हो कीया गुणनाम ॥१६घ०॥

दशमी ढाल सोहामणी, नाम धर्यीयुं छो गायो देवविलास।
आसन्न सिद्धि जे थया, कोइक भवे होस्ये मुक्तिनो वास। १७ धा०

दुहा।

मान आठ भव एहवा, जो धरमे एह जीव,
भाव बाल्यकाल विध्वंसना, धर्म योवनमे सदीव ॥१॥
अनुमाने करी जाणीये, द्रव्यथकी विशेष,
मान आठ भव उलंघीने, शिव कमलाने पेख ॥२॥
प्रभु मारग विस्तारवा, द्रव्य भावथी शुद्ध,
विश्व आल्हादकारी थयो, जिनवाणीनी वृद्ध ॥३॥
श्री जिनबिंबनी थापना, करवा निज सुबुद्धि,
च्यार निक्षेपा युक्तस्युं, स्याद्वाद भाखे शुद्ध ॥४॥
एक पाडए साचे सकल, तस चाले करामात,
गाजी मर्द ए जैननो, मिथ्यात्वी कीया महात ॥५॥

राग: धनाश्री पांमो ते प्रतिबोध ए देशी

श्री देवचंद्र ऋषिराय स्वर्गेरे (२) पहोता ते सुभ ध्यानथीरे ।१।
सूरय (सूर्य?)चंद्र नै इंद्र अवविरे (२) देखी मन चिंते एहवुंरे ।२।
जिनशासननो थंभ देवचंदरे (२) अमरपुरीमे अवतर्यारे ।३।
देश देशमां वात पोहोतीरे (२) सांभली भवि विलखा थयारे ।४।
कल्पतरुसम एह देवचंदरे (२) सरिखा पुरुष थोडा हस्येरे ।५।
मस्तकें मणि हती जेह गुरुनेरे (२) दहन समय उछली पडीरे ।६।
ते गइ पृथ्वी मध्य कोइनेरे (२) हाथे ते आवी नहीरे ।७।
महाजन शिष्य समुदाय मेला थइरे (२) स्तुप कराव्यो गुरुतणीरे ।८।

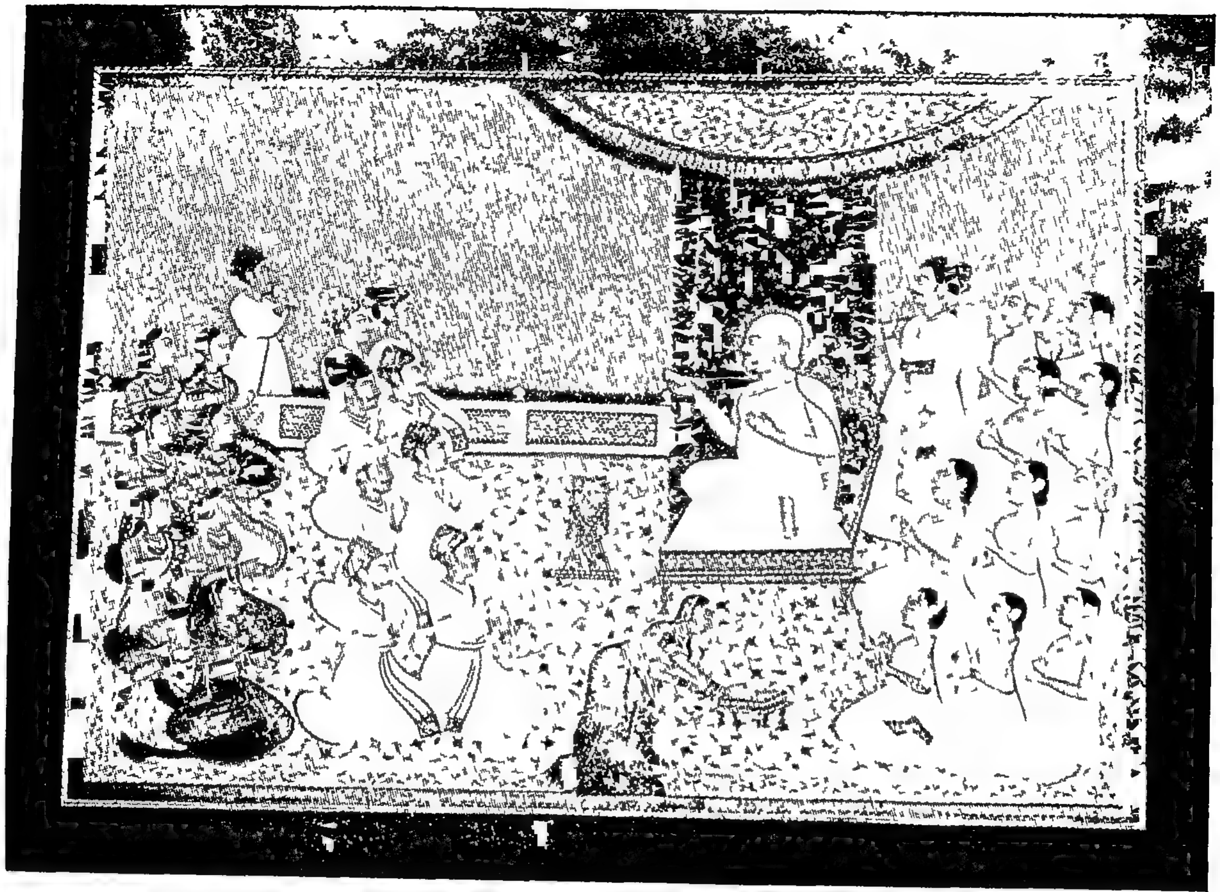
प्रतिष्ठा करी तत्र पादुकारे (२) पूजा प्रभावना बहु विधिर ।९।
पतले दिन वाचक 'मनरूप' र २) स्वर्ग गति गुरने मिल्यार ।१०।
'रायचद' शिष्य निधान गुरनार (२) विरह खम्यो जाये नहीर ।११।
मन चिंत 'रायचद' ए सविरे (२) अनित्यता श्री गुरुये कह्योर ।१२।
पल्योपम पुरव आयु ते पण र (२) पूरा थया शास्त्रे कह्यार ।१३।
आ पण प्राकृत जीव जुठार (२) स्नेह धरवो ते मूढतार ।१४।
तित्थयर गणधर जेह सुरपतिर (२) चक्री वेसवराम एहनेर ।१५।
कृताते सहार्या सव का गणनार (२) इयर जननी जाणनार ।१६।
इम मन चिंती रायचद गुरनीरे (२) स्तवना नामनो मन धरर ।१७।
गुर सरखो नही इष्ठ दीवोर (२) गुरुइ ज्ञान दखाडीयुर ।१८।
गुरु पुठे 'रायचद' पद्धतिरे (२) चलवे ब्यार यानी सपदार ।१९।
गुरु जेहवी किहाथी बुद्धि गुरुनारे (२) ज्ञान बिंदु किंचित स्पर्शतार।
जैनशैलीमा प्रवीण 'रायचद्र'रे (२) गुरपसाये तादश थयार ।२१।
मनमा नही राक्लेश कोइथीर (२) वाग्वाद कोइथी नवि करर ।२२।
सुविहितमार्गनो जाण 'रायचद' रे (२) शीलादिक गुण समह्योर ।२३।
आठ मा मोहनीकर्म व्रतमें रे (२) चोथु व्रत जीतवु दोहिलुरे ।२४।
शील तणेरे प्रभाव सकट (नवि)टले (२) नासे ततक्षिण एवकोरे ।२५।
जनमा जेहनो सोभाग्य अक्षयरे (२) रिद्धि वृद्धि अगणिततारे ।२६।
एक दिन श्री 'रायचद' कविनेरे(२)कहे अम गुरु स्तवना करोरे ।२७।
अमे जो करीयें स्तव एह अणघटेरे (२) स्वकीर्ति करवी अयोग्यतारे
त माटे कहयु तुम्ह स्तवनारे (२) तुम बुद्धि प्रमाणे योजनारे ।२९।
"कवियणे' दवविलास' कोवो (२) मन हर्षित उल्लस्योरे ।३०।

कीयो 'देवविलास' शुभदिनेरे (२) जयपताका विस्तरी रे। ३१
संवत १८२५'अढार पचीस आसोसुदिरे'(२)'अष्टमी' रविवारे रच्योरे
स्तोकमे देवविलास कीधोरे (२) किंचित् गुण ग्रहीने स्तव्योरे। ३३
वोहोलो छे अधिकार जोतारे (२) ग्रंथ थाये मोटो वणोरे। ३४
भणस्ये 'देवविलास' सांभलेरे (२) तस घरे कमला विस्तरेरे। ३५

कलस

श्री 'वीर' जिनवर 'सोहम' गणधर, 'जंबु' मुनिवर अनुक्रमे,
'खरतरगच्छ' उद्योतकारक, श्री 'जिनदत्त' सूरयोपमे।
तास पाट 'जिनकुशल' सूरि, 'जिनचंद्र' (१) सूरि तसपटे,
'युगप्रधान' नो विरुद जेहनो, नामथी दुःकृत कटे ॥ १ ॥
गच्छ स्तंभक उपाध्यायजी, 'पुण्यप्रधान' (२) प्रधानता,
सुमति धारी 'सुमति' (३) पाठक, 'साधुरंग'(४) वाचक भृता।
श्री 'राजसागर' (५) उपाध्यायजी, 'ज्ञानधर्म' (६) पाठक थया,
सुकृनी 'दीपचंद' (७) पाठकप, 'देवचंद्र' (८) पाठक जय जया ॥२॥
'मनरूप' वाचक (९) 'विजयचंदजी', पाठकनो पद मान्यता,
'मनरूप' पदकज मेरुगिरिवर, 'रायचंद' (१०) रवि उद्गता।
सुज्ञानताये विनयवंते, बुद्धि युक्ति सुरगुरु,
चंद्र सूर ध्रु तार तारक, रहो अविचल जयकरु ॥ ३ ॥
इति श्री देवचंद्रजीनो निर्वाण रास संपूर्ण





श्री जिनलाभसूरिजी (बाबू विजयसिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

॥ श्री जिनलाभ सूरि गीतानि ॥

ढाल—ऊंचो नीचो सरवरीयेरी पाल, एदेसी लूंजरामे ।

(१)

आज सुहावो जी दीह, आज नै वधावोजी अम्ह घर आंगणैजी ।
अंग उमाहो जो आज, सहगुरु हूं आया आणन्द अति घणै जी ॥१॥
आवो हे सहियर साथ, सजि सजि हे सोल शृङ्गार सुहामणा जी ।
जंगम तीरथ एह, वन्दन कीजइ हो छीजइ दुख घणा जी ॥२॥
धन धन सोइज देश, धन धन गाम नयर ते जाणिजइ जी ।
जिहां विचरै गच्छ राण, भाण प्रतापी हे सुजस वखाणियइ जी ॥३॥
धन 'पचाइण' तात, धन 'पद्मा दे' हो मात महीतलै जी ।
'बोहित्थ वंश' सिर तात, कुल उजवालण पूज जी इण कलैं जी ॥४॥
सवि सिणगार्यां हे हाट, प्रोलि रचाई हो चाव फावती जी ।
वंदै सजोड जीह, श्री जिन शासन महिमा दीपती जी ॥५॥
मिलीया हे महाजन लोक, उच्छव मंड्यो हो अति आडम्बर जी ।
दे मन वंछित दान, याचकजन धन धन जस उचरै जी ॥६॥
गोरी गावै जी गीत, फरहर नवरंगणि ध्वज फरहरइ जी ।
कोतिल वलि गज वाजि, तुरिय करता हो आगल संचरै जी ॥७॥
दुन्दुभि ढोल दमाम, झल्लरि भुगल भेर नफेरीया जी ।
वाजै वाजिन्त्र सार, फूलडे वधाई हो 'बीकपुर' सरिया जी ॥८॥
हीर अनै वलि चीर माणिक मोती हो वारीजै ऊमा जी ।
पथरीजै पटकूल, मुनिपति आवै हो गज गति मलपता जी ॥९॥

पूज पधार्या हे पाट अमिय समाणी हो वाणी उपदिसें जी।
सुणि सुणि श्रवण सहेज बहु नर नारी हे हियड़उ उल्लसै जी ॥१०॥
जां शशि सायर सूर जा धुर मेरु महीधर थिर रहै जी।
श्री 'जिनलाभ' सूरीश, तां चिर प्रतपो हो मुनि'माणक'कहै जी ॥११॥

(२)

एक सन्देशो पंथी माहरो, जाइनें वीनविजे करजोड । गरुआ पूजजीहो
महिर करीनइ गच्छपति आविजै, वांदणरौ म्हांने कोड़ ॥ग०॥१॥
वहिला पधारो 'थलवट' देशमें, श्री संघ जोवै थांरी वाट ।ग०।
ढील न कीजै हो पूज इण वात री, साथै मुनिवर थाट ॥ग०॥२॥
'कच्छ' धरा सुं हो पूज्य पधारि नै, नाइसक्या इण ठाइ ।ग०।
म्हे पिण जाण्यो जिण थानै राखिया, विचंही में विलमाइ ॥ग०॥३॥
'जेसलमेरा' श्रावक जोइनै, पूज रह्या लोभाइ ।ग०।
मुंह मीठा सुं मनड़ो मोहियो जी, दूजा नावै दाइ ॥ग०॥४॥
म्हां तो कागल साहिबा जी मोकल्या, लिख लिख अरज अछेह ।ग०।
तौ पिण पाछौ जा(ब)ब न आवियो, पूज खरा निसनेह ॥ग०॥५॥
मनमें ऊमाहो गच्छपति छै घणुं, सुणिवा थाहरी वाणि ।ग०।
नाम तुम्होणो खिण नहीं वीसरुं, वंदावौ हित आणि ॥ग०॥६॥
पाटोधर मानीजै माहरी वीनति, श्री खरतर गच्छ ईश ।ग०।
'बीकाणै' चौमासो कीजियै, श्री 'जिनलाभ' सूरीश ॥ग०॥७॥
अरज अम्हीणी पूज्य अवधारिज्यो, सूरीसर सिरि इंद ।ग०।
वेकर जोड़ी त्रिकरण भाव सुं, वंदै मुनि 'देवचंद' ॥ग०॥८॥
॥इति श्री पूज्यजी री भास सम्पूर्णम् ॥ लिखितं पं० जीवन० छोटै
स्याला मध्ये कोठारियां रै खण मध्ये ॥ शुभं भवतु, कल्याण मस्तु ॥

(३)

जिण शासन शिणगारा, वदो खरतर गणधार हे ।
सहिया सद्गुरु वेग वधावो ।
सद्गुरु वेग वधावो, मिल मङ्गल भास मल्हावो हे ॥स०॥१॥
धन धन 'मारू' देश, धन थलवट मण्डल वेश हे ॥स०॥
धन 'पचायण' तात, धन धन पदमादे' मात हे ॥स०॥२॥
'बोहित्थ' वश सवायो, जिहा पुरुष रत्न ए आयो हे ॥स०॥
'माडवो' नगर मझार, होय रत्ना जय जयकार हे ॥स०॥३॥
घुरय निसाणे छाई, वाटै श्री सघ वधाई हे ॥स०॥
गोरी मगल गावे मोत्या, भर थाल वधावें हे ॥स०॥४॥
श्री 'जिनभक्ति' सुरिन्दा, पाट थाप्या जाणे इन्दा हे ॥स०॥
निलवट चढते नूर, जाणे ऊगो अभिनव सूर हे ॥स०॥५॥
लघु वय चारित लोनो, गुण देखी गुरु पद दीनो हे ॥स०॥
सद्गुर हुती सवायो, जिण खरतर गच्छ दीपायो हे ॥स०॥६॥
पूरबली पुण्याई, एतो मोटी पदवी पाइ हे ॥स०॥
पच महाव्रत धारी, थारी रहणीरी बलिहारी हे ।स०॥७॥
रूप देव कुमार, एतो लबधि तणा भण्डार हे । स० ।
पालै पचाचार गुर गोतम रै अवतार हे । स० ॥८॥

मीठो सद्गुर वाणी, साभलता चित्त समाणी हे । स० ॥ ६ ॥
'श्री जिन लाभ' सुरिन्द, प्रतपो जिम सूरिज चद हे ।स०।
चित धरि अधिक जगोश, इम 'वसतो' द आशीस हे ॥स० ॥१०॥

(४)

॥ श्री जिनलाभ सूरि निर्वाण गीतम् ॥

ढाल आदि जिणिंद मया करो एहनी।

देश सकल सिर सोभतो, थलवट सुथिर सुजाणो रे।
जिहां 'विक्रमपुर' परगडो, तिहां प्रगट्या मुनि भाणो रे। १।
गुणवन्ता गुरु वंदीयें। आंकडी०।
सुमती साह 'पंचायण', 'पदमादेवी' नन्दा रे।
'वोहिथ' वंश विभूषण, लाल अमोल अमंदा रे। २ गु०।
श्री 'जिनभक्ति' सूरीसरु, श्री खरतर गछराया रे।
तासु संयोगे आदर्यो, संजम सोभ सवाया रे। ३। गु०।
अरथ सहित सदगुरु दीयउ, 'लक्ष्मीलाभ' सुनामो रे।
वरस 'अढार चउडोत्तरे', पाम्यौ पाम्यो पद अभिरामो रे।४।
श्री 'जिनलाभ' सूरीसरु गछनायक गुणरागी रे।
पंचम काले परगड़ा, श्रुतधर सीम सोभागी रे। ५। गु०।
देश विदेशे विचरता, वहु भवियण प्रतिवोधी रे।
सकल कलुषता टालता, आतम धरम विरोधी रे। ६। गु०,
नगर 'गुढै' गुरु आवीया, 'चउतीसे' चउमासै रे।
तिहां निज समय प्रकाशने, पहुंता सुर आवासै रे। ७। गु०।
चरण कमलकी थापना, अतिसयवंत विराजै रे।
दास 'क्षमाकल्याण' नौ, वंदन हुओ शुभ काजै रे। ८। गु०।
इति श्री जिनलाभ सूरि सद्गुरु सिझाय (पत्र १ तत्कालीन, संग्रहमें)

- :

॥ जिनलाभसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीत ॥

(१)

ढाल—आज रो सुजानो स्वामो जोर वण्यो राज ।

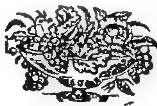
'जिनचन्द्र सूरि' गुरु वंदियै जी राज, वंदियै वंदियै वंदिय जी राज जि०
सहु गच्छपति सिर सेहरोजी राज, खरतर गच्छ सिणगार ।म्हारा राज ।
श्री 'जिनलाभ' पटोधरूजी राज, 'ओस वंश' अवतार ।म्हा।१।जि०।
लघु वय संयम आदर्याजी राज, 'मरुधर' देश मझार । म्हा।२।०।
अनुक्रम गुरु पद पामियाजी राज, सूत्र सिद्धंत आधार ।म्हा०।जि०
देश घणा वन्दावताजी राज, गया 'पूर्व में देश' । म्हा०।
'समेत शिखर' 'पावापुरी' जी राज, कीनी जात्र अशेष ।म्हा।३।जि०।
चौमासो कीनो तिहा जी राज, 'अजीमगंज' मझार ।म्हा०।
भव्य जन कु प्रतिबोधताजी राज मोहो जे नगर उदार ।म्हा०जि०४।
आचरज पद शोभता जी राज, छत्तीस गुण अभिराम । म्हा०।
सुमत पाच कु पालता जी राज, तीन गुपतिका धाम ।म्हा०।जि०।५॥
छ काय का पीहर भलाजी राज, सात महाभय वार । म्हा० ।
आठ प्रमाद महाभलो जी राज, दूर किया सुविचार । म्हा ।जि०।६॥
श्रावक 'बीकानेर' का जी राज, बीनति करे वारो वार । म्हा ।
पूज जी इहा पधारियें जी राज, महर करी गणधार । म्हा ।।जि० ७॥
'वच्छावत' कुल दीपताजी राज, 'रूपचद' जी को नंद । म्हा० ।
'जैसर' कूखे ऊपनाजी राज, राज करो ध्रुव चंद । म्हा ॥जि०।८॥
वरस 'अठार पचास' में जी राज, 'वद वैसाख' मझार । म्हा० ।
'चारित्र नंदन' वीनवइ जी राज, 'आठम' तिथि 'गुरु वार' ।म्हा।जि०९।

(२)

ढाल:-म्हांरी सहियां हो अमर वधावो गज मोतियां०

म्हारा पूजजी हो, श्री 'जिनचन्द्र सूरि' राजिया. खरतर गच्छ भाण ।
म्हारा पूजजी हो, दिन दिन तुम चढती कला, प्रतपोजो कोडि कल्याण
श्री 'जिनचन्द्र' सूरि पटधरू ॥ आकणी ॥१॥
म्हां० धन धन धन वेला घडी, धन भायत सुप्रमाण ।
दरसण सद्गुरु निरखस्यां. सुणस्यां मुख नी वाण ॥२॥म्हां॥श्री०॥
म्हां० पूरब नैं पुण्ये पामियो, श्री सद्गुरु नो पाट ।
शील गुणे करि शोभता, वरतावे धर्म वाट ॥३॥म्हां०॥श्री०॥
'ओस वंश' अति दीपतो, 'बच्छावत' वलि गोत्र ।
पिता 'रूपचंद' गुणनिलो, मात 'केसरदे' पुत्र ॥ ४ ॥ म्हां ॥ श्री ॥
म्हां० मरुधर देश सुहामणो, 'गुढा नगर' मझार ।
म्हां० श्री 'जिनलाभ' सैंहथ दियो, सूरि मंत्र गणधार ।म्हां०श्री।५।
म्हां० संघ सकल उत्सव कियो, वरत्यो जय जयकार ।
म्हां० सूहव वधावे गज मोतियां, सजि सजि सोल श्रृङ्गार ।म्हां०॥६॥
म्हां० चंद चंद चढती कला, वखत विलंद गच्छराज ।
म्हां० गौतम ज्युं गुणनिध सही, प्रतपो अविचल राज ॥म्हां०श्री॥७।
म्हां० वाणि सुधारस वरसता, हरखै भवि जन मोर ।
म्हां० धर्मगुरु दै धर्म देसना, नासै करम कठोर ॥म्हां०॥श्री०॥८॥
म्हां० वर्तमान गुरु विचरता, 'श्री जिनचन्द्र सूरीश' ।
म्हां० दर्शन देखण अलजयो, पूरो मनह जगीश ॥म्हां०॥श्री०॥६॥

म्हा० 'सिन्धु देश' में दीपतौ, 'हाला नगर' निमेव।
म्हा० शुद्ध मन श्रावक श्राविका दय सुगुरु करै सेव ॥म्हा०॥श्री०१०
म्हा० धन धन ग्राम नगर जिके, जिहा विचरै गच्छराण।
म्हा० धन श्रावक ने श्राविका, श्री मुख सभलै वाण ॥म्हा०॥श्री०११
म्हा० अम्ह मन हरख घणो अछै सदगुरु सुगवा वाण।
म्हा० साधु समक्षे परिवर्या, आवो श्री गच्छराण ॥म्हा०॥श्री०१२॥
म्हा० श्रीमुख कमल निहारवा, अम्ह मन छै बहु आश।
म्हा० श्री सदगुरु हिव पूरजो, आवजो चउमास ॥म्हा०॥श्री०१३॥
धन दिन ते सफलो घडी, मुख नी सुणस्या वाण।
म्हा० सद्गुरु सेवा मानस्या, जीवत जन्म प्रमाण ॥म्हा०॥श्री०॥१४॥
म्हा० संवत 'अढार चौतीस' में, 'सावन' मास मझार।
म्हा० वर्त्तमान सद्गुरु तणा, गुण गाया विस्तार ॥म्हा०॥१५॥श्री०॥
इम बहुविध वीनति करी, अवधारो गच्छराय।
म्हा० "कनकधर्म" कहै वदणा, अवधारो महाराय॥म्हा०॥१६॥श्री०॥



जिनहर्षसूरि गीतम्

ढाल : जाति सोहिलानी

पहिरी पोसाखा सखिया पागुरी रे, सुन्दर सजि सिणगार।
गिरुआजी गच्छपति आया ढूकड़ारे, देखण हर्ष अपार ॥१॥

चालो हे सहेली पूजजी नै वादस्यां हे, 'श्रीजिनहर्ष' सूरिन्द्र।
चंद पटोधर गच्छ चौरासिया हे, दीपत जेमदिणन्द ॥२॥चा०॥

पूज्य सामेलै श्रावक श्राविका हे, हय गय बहु परिवार।
सिणगार्या सारा रूड़ी परै हे, मारग हाट बाजार ॥३॥चा०॥

कौतुक देखण बहु भेला थया हे, अन्य मती पिण लोक।
दर्शन देखत सहु राजी थया हे, रवि दर्शन जिम कोक ॥४॥चा०॥

चहल घणी 'बीकाणै'रे चोहटै हे, लोक मिल्या लख कोड़।
अंग ऊमाहो पूजजी नै वांदिवा हे, लाग रह्यो मन कोड़ ॥५॥चा०॥

उत्सव देखी मन हर्षित थयो हे, रथव्यां च्योतरणिंद (?)
शास्त्र यथोक्त गुणेकर ओलष्यारे, एतो धरम नरेन्द्र ॥६॥चा०॥

'बोहरा' गोत्र जगतमे दीपता हे, सेठ 'तिलोकचन्द' धन्न।
धन माताये 'तारादे' जनमियारे, अनुपम पुत्र रतन्न ॥७॥चा०॥
भावे वधावो माणक मोतियां हे, दे दे प्रदिक्षण तीन।
बारे आवर्त्त पूजजीने वांदणा हे, क्रोधादिक होय छीन ॥८॥चा०॥
पूज पधारो 'बीकाणै' रे पूठिये हे, बाचो सूत्र वखाण।
भाव बधारो ······ ····· ··· हे ज्युं होय परम कल्याण ॥९॥चा०॥
वादो देव 'बीकाणै' दीपता हे, पूजो चिन्तामणि पाय।
आदीसर बावो नित भेटिये हे, ज्युं तृषणा दूर नसाय ॥१०॥चा०॥
सज्जन बधज्यो पूज पधारता हे, दुर्जन होवो रे विध्वंश।
राज करो पूज ध्रू ज्यूं शाश्वतो हे, विनवै 'महिमाहंस'॥११॥चा०॥



श्री जिनहंससूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

श्रीजिन सौभाग्यसूरि भास ।



ढाल—घोडी तो आइ थारा देसमे एहनी देशी

'करणा द' कूरवे ऊपना, सदगुरुजी पिता 'करमचद' (वि)रयात हो ।
गच्छ नायक 'सौभाग्यसूरि' हो सद्गुरजी ।आ। ॥१॥
श्री'जिनहर्ष' पाटोधर सदगुरुजी, श्री'जिनसौभाग्य' सूर हो॥ग॥ग०
चीठी धातण चालीया सदगुरुजी, ये वचना रा सूर हो ॥ग०॥३॥
उना तो कूड कपट कियो सदगुरजी,थे कूडकपट सु हुवा दूर हो॥ग०४
'बीकानेर' पधारज्यो सद्गुरजी, थासू कौल कियो 'रतनश'हो॥ग०५
थाका पुण्य थाके रानै सदगुरुजी, पुण्य प्रबल जग माह हो॥ग०॥६॥
'बीकानेर' पधारिया सद्गुरजी, थासु एकात किया 'रतनश' हो॥ग० ७
भलाइ विराजो पाटियै सद्गुरजी, थे म्हारा गुरदव हो ॥ग०॥८॥
तखत दियो गुरु वचन थी सद्गुरजी, श्रीसघ मिल रतनश' हो॥ग० ६
नोनतखाना बाजिया सदगुरजी, बाज्या मङ्गल तूर हो ॥ग०॥१०॥
गोत्र 'राजानची' दीपता सदगुरजी, 'लालचद' बुधवान हो॥ग०॥११॥
महोच्छव कीनो अति भलो सद्गुरजी,दीनो अढलक दान हो॥ग०१२॥
कोड वरस लगै पालज्यो सद्गुरुजी,वड खरतर गच्छ राज हो॥ग०१३
कोठारी' वश दीपावज्यो सद्गुरुजी, ज्या लग सूरज चद हो ॥ग१४
बीजानै वादा नहीं सद्गुरजी, थे म्हारा गच्छराज हो ॥ग०॥१५॥
सवत् 'अढारै बाणवे' सद्गुरुजी,'सुदसातम' गुरवार' हो॥ग०॥१६॥
'मिगसर' पाट विराजिया सद्गुरुजी, खूब थया गहगाट हो॥ग०॥१७॥

॥ इति श्री भास सम्पूर्णम् ॥

श्रीजिन महेन्द्रसूरि भास ।



(१)

ढाल आज नो हजारी ढोलो पाहुणो ।

वारि जाऊं पूज म्हारी वीनति,सुणजो अधिके चाव ।सुगुरु म्हारा हो ।
म्हा दिश थे करज्यो मया, धरो पद्म सकोमल पाव ।।सु०।।१।।
पूजजी पधारो म्हारा देशमे ।
लायज्योजी मुनिवर लाजरा, सूरतवत सज्योत
घण जाणीता गुण घणा, दिल रजण द्ये स्योत ।।सु०।।२।।
वादल तंवू चंपा वागमें, म्हेतो खड़ा किया इण खात ।सु०।
धूप पड़ै धरती तपै, गच्छपति गोरै गात ।।सु०।।३।।
राज सभामे राजता, नित नित चढते नूर ।सु०।
गावै यश याचक घणा, हिन्दूपति आप हजूर ।।सु०।।४।।
लिख 'परवानो' मोकलै, थानै 'उदयापुर' नो 'राण' ।सु०।
कई दिनां रौ कोड़ छै म्हानै, भेटण 'खरतर' भाण ।।सु०।।५।।
हाथीड़ा तो मेलुं राणे रावरा, ओठोड़ा सज सिणगार ।सु०।
पग पग मेलुं पूजजीने पालखी, पग पग रथ असवार ।।सु०।।६।।
मोह्य रेयाजी 'मरुधर' मेड़तं', अधिका गढ़ 'अम्बेर' ।सु०।
'बीकाणे'री आइ पूजजी ने वीनति, झाला दे 'जेसलमेर'।।सु०।।७।।
लुल लुल लेसा थांरा वारणा, थारे पग पग करता पेश ।सु०।
एकरस्युं म्हांरे आइज्यो थेतो, देखोनी 'जोधाणे' रो देश ।।सु०।।८।।

पाटोधर पाव पधारिया, सूरीश्वर सिरताज ।सु०
म्हरो गुमानी ज्ञानी गच्छपति, म्हारो मानी अरज महाराज॥सु०६॥
जालम 'खरतर' राजवी गुरु, साचो गच्छ सिणगार ।सु०
भलके हे सहिया चपो भाग्मे, म तो दीठो अजब दीदार ॥सु०॥१०॥
सूरज गच्छ चौरासिया, थानै भलाइ कहै बड भाग ।सु०
आज सवाइ अभिमानमे, म्हारो रीझयो मन घणो राग ॥सु०॥११॥
अमीय रसायन आपरो, मीठी वाण मुणिन्द ।सु०
तपन तपे जिनहर्ष रै, श्री 'जिनमहेन्द्र' सुरिन्द ॥सु०॥१२॥
दिलभर दर्शन दरसने, सफल करै स सार ।सु०
'राजकरण' नितराजरे, पाय लागै हर्ष अपार ॥सु०॥१३॥

(२)

आज बधाई आवियो म्हार, मारू देश मझार हो राज।
दीधी बधाई दोडने म्हार, पूजजी आप पधारो हो राज ॥
आज वधावो हे सखी, म्हरो गच्छपति गज मोतीडे हो राज॥१ आ०
मागो दू वधावणी तोने, पचोडा लाख पसाव हो राज।
वले सघ जोता वाटडी, ये तो आवी आज सुणाय हो राज॥२॥अ०॥
घण थट हरिया बागमे एतो मलहलीयो जग भाण हो राज।
आवो हे सहेली आपे निरखस्या, एतो खरतरगच्छ रो राणहो राज॥३आ०

धवल मङ्गल करण ढोलमे ऐतो जगी ढोल धुराया हो राज ॥आ०॥४॥

पुर पैसारे पधारिया, एतो पूजजी पोषध शाला हो राज ।
गहमाती अति घणो आतो, कूहक रही करनाल हो राज ॥आ०॥५॥
भाभल भोली भामणी, एतो गोराङ्गी चढी गोख हो राज ।
दर्शन सद्गुरु देखवा, एतो झाख रहीय झरोख हो राज ॥आ०॥६॥
भांभल नैणा भालीयो, एतो गच्छपति गुण रो गाढ़ो हो राज ।
पालै चारित निर्मलो, एतो लाइक चोरास्या गे लाडो हो राजा ॥आ०७॥
रतिपति रूपे रीझिया, एतो नरनारी ना थाट हो राज ।
शील शिरोमणि सेहरो, प्रतपो जिनहर्ष पाट हो राज ॥आ०॥८॥
'सुन्दरा' देवी जन्मियो, लाखीणो नग लाल हो राज ।
सुत 'रूधनाथ' शाहरो, गाहे दोयण गज ढाल हो राज ॥आ०॥९॥
रहणी करणी राजरी, आतो म्हारे मनड़े मानी हो राज ।
खीर सायर भारी क्षमा, ए तो गौतम जेहड़ा ज्ञानी हो राज॥आ०१०
चिरजीवो राजस करो, श्री'जिनमहेन्द्र' सूरिन्द्र हो राज ।
'राज'सदाइ राजनै, एतो इसड़ी दै आशीस हो राज ॥आ०॥११॥

॥ इति भास सम्पूर्णम् ।



महोपाध्याय राजसोमाष्टकम्

श्रेयस्कारि सता यदाशु चरित, मामोदमाकर्णित ।
कर्णाभ्या सतत मत मतिभृता, मङ्गल भावान्वितम् ॥
निर्व्याणास्तदनन्त कान्ति कलिता कारुण्य लीलाश्रिता ।
श्रीमत्पाठक राजसोमगुरवस्ते सतु मोदप्रदा ॥१॥
येषा चारु मुखोद्गता सुललिता वाचो नि तान्तोत्तम-
द्रूप वीक्ष्य पुन प्रमोद जनक लावण्य लीलागृहम् ॥
जातानद पदनेकेन मनसा स्वस्य श्रुतीना दशा-
मप्यानाव विनिर्मित फल युता मेन ध्रुव शाश्वत ॥२॥
चित्त सर्व सुपर्वणामपि चिरादाचस्पतर्भापित ।
माधुर्येण तिरस्चकार सहसा नादीन्व यद्वच ॥
शास्त्रासक्तधिया सदैव सुधिया चेतश्चमत्कारकृत् ।
दुर्वादि द्विरदौघ दर्प दलन शार्दूल विक्रीडितम् ॥३॥शा० वृ०॥
प्राप्त प्रत्नोपोद्यमकल्पित ? चन्द्र दधच्चारु तयैकमन्तरम् ।
आमोद सन्दोह मनारत मत चैतन्य भाजा वितनोति चेतसि
(यदितिशेष) ॥४॥
समान्यत तन्मधुर निराश्रय नित्योन्न तद्विद्वतय विराजत ।
श्रीराजसोमोत्तम नाम विश्रुत यत्रास्पदे किं खलु तस्य वर्णनम ॥५॥
वन्द समस्तायवानवद्यता वीक्ष्यानुरक्तैरिव पेशलैर्गुणै ।
हित्वामिथो द्वेपमलङ्कृत स्थितीन् योगीन्द्र वशाहितलक्षणान्गुरून् ॥६॥
इन्द्रवंशावृत्तम् ॥

विशद गुण निधानं साधुवर्ग प्रधानं ।

कृत कुमत पिधानं सत्कृतौ सावधानम् ॥

धृतिरुचिर विधानं, सर्व विद्या दधानं ।

गुरुमनघ विधानं प्राप्यतं सन्निधानम् ॥७॥

पद्मबंध ॥

प्रणमत गुरुभक्त्या भक्तलोका विशुद्धै-

रति निभृत यशोभिः शोभमानं विमानम् ॥

विजित निखिल लोकोद्दाम कामस्य जेतुः ।

स्फुट शुभ मति माला मालिनी यस्य वृत्तिः ॥८॥युग्मं॥

मालिनीवृत्तम् ॥

इत्थं श्रीराजसोमाख्या महोपपद पाठकाः ।

संस्तुताः संतु चिद्दान क्षमाःकल्याणकांक्षिणाम् ॥९॥

इति विद्यागुरूणामष्टकम् । पं० रायचंद्रजिद्हर्षचंद्र जित्कृतेऽष्टक-मिदं लिखितं पं० खुस्यालचंद्रेण (पत्र १ महिमा० बं० नं० ७४)



वाचनाचार्य-अमृत धर्माष्टकम् ।



श्रीवाचनाचार्यपद प्रतिष्ठा गणीश्वरा भूरिगुणैर्गरिष्ठा ।
सत्य प्रतिज्ञामृतधर्म सज्ञा जयन्तु त सद्गुरवो गुणज्ञा ॥ १ ॥
गणाधिप श्रीजिनभक्तिसूरि, प्रणिग्य सघात सुविश्रुतानाम् ।
येपा जनि श्रीमति वृद्धशाखे उकेश वशेऽजनि कच्छदेशे ॥ २ ॥
भट्टारक श्री जिनलाभ सूरय श्रीयुक्त प्रीत्यादिम सागराश्च ये ।
आसन् सतीर्थ्या किल तद्विनयतामवाप्य यै प्राप्तमनिंदित पदम् ॥३॥
शत्रुजयाद्युत्तम तीर्थयात्रया सिद्धांतयोगोद्वहनेन हारिणा ।
सवेग रगाढ्य चेतमा पुन पवित्रित यैर्निजजन्म जीवितम् ॥ ४ ॥
जिनेन्द्र चैत्य प्रकरो मनोरमो वरण्य हम्न कल्गैर्विराजित ।
अद्यापि(चि?) सघेन च पूर्व मडले येपा हितेनासुपदेशत स्फुटम् ॥५॥
प्रभूतजतून् प्रतिबोध्य ये पुन स्वर्गगता जेसलमरुसत्पुर ।
समाधिना चद्र शराष्टभूमित सवत्सर माघ सिताष्टमी तिथौ ॥ ६ ॥
स्थानाङ्ग सूत्रोक्त वचोनुसाराद्विज्ञायत देवगतिस्तुयेपाम् ।
यतो मृतादात्म विनिर्गमोभूत्साक्षात्तु विज्ञानभृतो विदति ॥ ७ ॥
एव विधा श्रीगुरव सुनिर्मर कृपापरा सर्वजनेपु साम्प्रतम् ।
क्षमादि कल्याण गणि प्रति स्वय प्रमोदकृद्द्राग् ददतु स्वदर्शनम् ॥८॥

इति श्रीमदमृतधर्म गुरुणामष्टकम् ।



उपाध्याय क्षमा कल्याणाष्टकम् ।

(१)

चिद्रव्येः पारज्ञः स्फुरदमल पद्मो स्फुट मुखो,

सुदानंत ध्यायी मुनि गणवरो मारगमन. ।

सदा सिद्धांतार्थ प्रकटन परो वाक्पति सम',

क्षमाकल्याणोऽसौ नयनस्मृतिगामी भवतु मे ॥१॥

गुरो तवांघ्रिदर्शनं मदीय मानसे मुदे ।

भवेद्यथैव केकिना गिरौ पयोद लोकनम् ॥२॥

महोकलायदीयगां निपीय कर्ण संपुटैः ।

भवंति मोदसंयुता. जना' सुशर्म्म भागिनः ॥३॥

तपः पुंज युजोऽजस्रं ध्यान संमग्न चेतस ।

क्षमाकल्याण सन्नाम्नो गुरून्वन्दे गुरुद्युतीन् ॥४॥

गुरुं ज्ञानप्रदं नौमि सद्धर्माचार चंचुरं ।

यदक्षि करुणा दृष्टैः पूतोऽधर्मी भवत्वरं ॥५॥

विरामं विपदा शश्वत्स्मर्त्ता भूमि मण्डले ।

वन्दारु नर मन्दारमुपासे गुरु पत्कजं ॥६॥

मोह मास्थत्सदा सेव्योहृद्वाक् संहननैर्मया ।

योयं गायेयं वर्णाभः सौजन्याद् वनौचिरं ॥७॥

काम मोह राग रोष दुष्ट दाव वारिदस्य ।

दर्शनं जनावहारि अस्तुमे सुपाठकस्य ॥८॥



उपाध्याय क्षमाकल्याणजी

(श्रीहरिसागरसूरिजीकी कृपासे प्राप्त)

यद्वाणी सुदमातनोति कृतिना, पूतात्मना नित्यश ।
सद्बीजवृक्षासिन सुरसरिन्नीराजुना सन्तत ॥
योगारुढ मुनीन्द्र मानस सरो वास विधाय स्थिता ।
ता पीत्वा जलदाम्बु चातक इवहन्मे यथाहष्यति ॥६॥

—

* परलोक गताना श्री गुरूणा स्तवः *

(२)

सर्व शास्त्रार्थ वक्तृणा, गुरूणा गुरु तेजसाम् ।
क्षमा कल्याण साधूना, विरहोमे समागत ॥१॥
तेनाह तु खिन्नोऽस्त विचरामि महीतले ।
सस्मृत्य तद्गिरोगुर्वी, धैर्य्य मादाय सस्थित ॥२॥
वीकानेर पुर रम्ये, चातुर्वर्ण्य विभूषित ।
क्षमाकल्याण विद्वासो, ज्ञान दीप्रास्तपस्विन ॥३॥
अन्यद्रि करि भू वर्षे, (१८७३) पौष मासादिमे दले* ।
चतुर्दशो दिन प्राते सुरलोक गतिगता ॥४॥युग्म ॥
वन्देह श्रीगुरुन्नित्य भक्ति नम्रेण वर्म्मणा ।
मदुपकार कुला श्रेण्य स्मर्यन्ते सतत मया ॥५॥
गृह पवित्री कुरुमे दयालो, गुरो सदापाद सरोजन्यासै ।
लुनीहि जाड्य मनसिस्थित वै, सस्कारवत्या च गिरा सदात्व
श्री स्तात् सता सदा ॥६॥

—

* कृष्ण (भग्न) चतुर्दशी प्राते ।

सेवक सरूपचन्दरो कह्यो

उपाध्याय जयमाणिक्यजीरो छंद

दोहा

सरस सबुध दिये शारदा, सुंडाला सप्रसाह(द?)।
गुण गाउं 'घमडो' जती, बुध समपो वरदाह ॥ १ ॥
चैत्य प्रसाद चिणाविया, कर जिण इधका कोड।
चहुं कूंटा लग नाम चढ, हुवे न किण सुं होड ॥ २ ॥
जैन धरम धारया जुगत, साझण शील सनाह।
'हरखचंद' पाट 'जीवण जी' हुवा, सिघ सहु करै सराह ।३।
खरतर वंश ओपम खरा, वाचे सकव वखाण।
पण धारी 'जीवणदास' पट, साचो 'घमंड' सुप्रमाण ॥ ४ ॥

॥ छंद जाति रोमकंद ॥

पण धारीय 'जीवणदास' तणे पट, थाट घणे 'घमडेश' जती।
सरसत सकत उकत समापण, नीत पत दीयण सुमत नीती ॥
जस वांण सचाण सचाण सहवाचै, परदेश प्रवेश कीरत केती।
नर नार उच्छाव करै ब्हो नारद, वारद ज्युं इधकार भती ॥प०॥
संवत् 'अढार वरस पचीस ही'. मास 'वैशाख सुद छठ' मीती।
परवाण वाखाण पतष्ठा हो पुरत', पेख रहे दस देस पती ॥
नीरख परख करै वहु नाईक, वाइक पढ़ै कवराव बती ॥ प० ॥

पूजा अरचा मंड पाट पटम्बर, राजत झालर सरस रती ।
परानो ऐम न कोई पयपै, ज्यात कहै धन धन जोती ॥
गडवा रस कोसे सार वखाणो, जम जोर हुवो चहू कुट जेती ॥५०॥
कर कोड सहोड करै कर कीरत, ध्यान धरै को ग्यान धनी ।
दीयै दान घणा मनमान सदताही, पुज जणेसुर पाट वती ॥
इधकार करे जीणवार सुजाणे, आण न कोइण इढ इमी ॥ ५० ॥

॥ कवित्त ॥

खरतर गच्छ जस रटण, पाट उजवाल वडै प्रत्र(ण?) ।
'हरखचद' हरा हेत, वरा 'जीवण' जी वांटण ॥
'सुन्दरदास' सपूत, जले 'वस्तपाल' वखाणु ।
'दीपचद' दरियाव ओपमा 'अरजन' जाणु ॥
'जीवणदास' पुठ रटण सुजेस, वड भाग्या जिम विस्तरो ।
परवार पुत 'धमडेश' रो, रवि जितरो अविचल रहो ॥१॥
॥ श्री ॥ उ० ॥ श्री जयमाणिक्य जीरो ए कवित्त छै ॥

॥ जैन न्याय ग्रन्थ पठन सम्बन्धी सवैया ॥

स्याद नाम मैं (जय?) पताका 'नयचक' 'नै (नय?) रहस्य'
'पचअस्तिका य' 'रतनाकरावतारिका' ।
क ठन 'प्रमेय कोल मारतड' 'सम्मति' सु,
'अष्टसहस्री' वादि गजकी विदारिका ।
'न्याय कुसुमाञ्जलि' जु 'तरकरहस्यदीपो(का)',
'स्यादवाद-मजरी' विचार युक्ति धारिका ।
मइ 'किरणावली' से तर्क शास्त्र जैन माझि,
कहा नैयायिकादि पढो शास्त्र पारका ॥१॥

❀ ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह ❀

द्वितीय विभाग

(खरतरगच्छकी शाखाओं सम्बन्धी ऐतिहासिक काव्य)

वेगड़ खरतरगच्छ गुर्वावली

पणमिय वीर जिणंद चंद, कय सुकय पवेसो ।
खरतर सुरतरु गच्छ स्वच्छ, गणहर पसणंसो ।
तसु पय पंकय भमर सम, रसजि गोयम गणहर ।
तिणि अनुक्रमि सिरि नेमिचंद मुणि, मुणिगुण मुणिहर ॥ १ ॥
सिरि 'उद्योतन' 'वर्द्धमान', सिरि सूरि 'जिणेसर' ।
थंभणपुर सिरि 'अभयदेव', पयडिय परमेसर ।
'जिणवल्लह' 'जिनदत्त' सूरि, 'जिणचंद' मुणीसर ।
'जिणपति' सूरि पसाय वास, पहु सूरि 'जिणेसर' ॥ २ ॥
भवभय भंजण 'जिणप्रबोध', सूरिहि सुपसंसिय ।
आगम छंद प्रमाण जाण, तप तेउ दिवायर ।
सिरि 'जिन कुशल' मुणिद चंद, धीरिम गुण सायर ॥३॥
भाव(ठ) भंजण कप्प रुक्ख, 'जिन पद्म' मुणीसर ।
सब सिद्धि बुद्धि समिद्धि वृद्धि, 'जिणलद्धि' जइसर ।
पाप ताप संताप ताप, मलयानिल आगर ।
सूरि शिरोमणि राजहंस, 'जिणचंद' गुणागर ॥ ४ ॥

वोहिय श्रावक लाख माख, सिव सुख सुख दायक ।
महियलि महिमामाण जाण तोल्इ नहु नायक ।
'झझण' पुत्त पवित्र चित्त, कित्तिहिं कलि गजण ।
सूरि जिणेसर' सूरि राउ, राजह मण रजण ॥ ५ ॥
'भीम' नरेसर राज काज, भाजन अइ सुदर ।
वगड नदन चद कुद, जसु महिमा मदर ।
सिरि 'जिनेसर सूरि' भूरि, पइ नमइ नरेसर ।
काम कोह अरि भग सग जगम अल्वेसर ॥ ६ ॥
सपइ नरनिव निहित हतु, विहरइ सुहि मडलि ।
थापइ जिणवर धम्म कम्म, जुत्तउ मुणि मडलि ।
जा गयणगणि 'चद सूरि', प्रतपइ चिर काल ।
ता लग सिरि 'जिणधम्म सूरि', नदउ सुविशाल ॥ ७ ॥



॥ श्री जिनेश्वर सूरि गीत ॥

सूरि सिरोमणि गुण निलो, गुरु गोयम अवतार हो।
सदगुरु तुं कलियुग सुरतरु समो, वांछित पूरणहार हो ॥ १ ॥
सदगुरु पूर मनोरथ संघना, आपो आणंद पूर हो। सद०।
विघन निवारो वेगला, चित चिंता चकचूर हो ॥ सद० ॥ २ ॥
तुं 'वेगड' विरुदे वडो, 'छाजहडा' कुल छात्र हो।
गच्छ खरतर नो राजियो, तुं सिंगड वर गात्र हो ॥सद०॥३॥
मद चूर्यो 'मालू' तणो, गुरु नो लीवो पाट हो।
सम वरण । लीधो सहु, दुरजन गया दह वाट हो ॥सद०॥४॥
आराधी आणंद सुं, वागही त्रि राय हो।
धरणेन्द्र पिण परगट कियो, प्रगटी अति महिमाय हो ॥सद०॥५॥
परतो पूर्यो 'खांन' नो, 'अणहिल वाडइ' माहि हो।
महाजन वंद मुकावीयो, मेल्यो संघ उछाह हो ॥सद०॥६॥
'राजनगर' नइं पांगुर्या, प्रतिबोध्यो 'महमद' हो।
पद ठवणो परगट कियो, दुख दुरजन गया रद हो ॥सद०॥७॥
सींगड सीग वधारिया, अति ऊंचा असमान हो।
धींगड भाइ पाचसइं, घोडा दीधा दान हो ॥सद०॥८॥
सवा कोटि धन खरचीयो, हरख्यो 'महमद शाह' हो।
विरुद दियो वेगड तणो, प्रगट थयो जग माहि हो ॥सद०॥९॥

गुर श्रा (मा?) वक बहु वेगडा, वलि वगड पतिनाह हो ।
विरू धरा गुरु ताहरो, तुझ सम वड गुण थाय हो ॥स०॥१०
श्री 'साचउर' पधारीया, मु (पु)हता गच्छ उछरग हो ।
वगड' 'थूल्ग' गोत्र व, माहो माहि सुरग हो ॥सइ०॥११॥
'राडद्रही' थी आनीया, 'लखमसीह' मत्रीस हो ।
सघ सहित गुरु वन्दीया पहुनी मनह जगीस हो ॥सइ०॥१२॥
'भरम' पुत्र निहरावीयो, सावगा कुल नी रीत हो ।
च्यार चौमासा राखीया, पाली धम नी प्रीत हो ॥स०॥१३॥
सवत 'चउद त्रीसा' समे, गुरु सथारो कीध हो ।
सरग थयो 'सकनीपुरे', वगड धन जस लीध हो ॥सइ०॥१४॥
पाट थाप्यो 'भरम' नें, कर अधिको गहगाट हो ।
थूभ मडाव्यो ताहिरो, जा 'जोमा(धा?)ण' री वाट हो ॥स०॥१५॥
लोक रालक आर घणा, दादा तुझ दीवाण हो० ।
जे जे आन्या चितवइ, त त चढइ प्रमाण हो ॥सइ०॥१६॥
पट पुत्री उपर दियो, 'तिलोकसी' नइ पुत्र हो ।
पूर्यो परतो मन तणो, राख्यो घर नो सूत्र हो ॥सइ०॥१७॥
नू 'झाझग' सुत गुण निलो, 'झनकु' मात मल्हार हो ।
'जिणचद्र' सूरि पाटइ दिनकर, गच्छ वगड सिणगार हो॥सइ०॥१८॥
स(ह)गुरु 'जिणेसर सूरजी', अरज एक अवधार हो ।
सद्गुरु उदय करज्यो सघ मइ, बहु धन सुत परिवार हो ।स०।१६।
"पोस सुदि तरस' नइ दिनइ यात्रा कीधी उदार हो ।
श्री 'जिनसमुद्र' सूरिद नइ, करज्यो जयजयकार हो ।स० २०।

॥ श्री जिनचंद्र सूरि गीत ॥



राग:- धमाल

आज फल्यो म्हारइं आंबलोरे, परतख सुरतरु जाण ।
कामधेनु आवी घरे रे, आज भले सुविहाण । पधार्या पूज्यजी रे।
श्री 'जिणचंद सूरिंद' पधार्या पूजजी रे ।
श्री चंद कुलांबर चंद पधार्या, श्री खरतर गच्छ नरिंद ।पू०॥१॥
श्री वेगड गच्छ इंद पधार्या पूज्यजी रे ।
ढोल दमामा वाजीया रे, वाज्या भेर निसाण ।
सुमति जन हरषित थया रे, कुमति पड्यो भंडाण ॥ प० ॥२॥
घरि घरि गूडी ऊछलइ रे, तलीया तोरण बार ।
पाखडी कांनई कीया रे, वेगड गच्छ जयकार ।गच्छ खरतरजा॥३
सूहव बधावो मोतीयइ रे, भर भर थाल विशाल ।
खोटा कूड कदाग्रही रे, ते नाठा तत्काल ॥ प० ॥ ४ ॥
वडई नगर 'साचोर' मइं रे, श्री पूज ज्यो भाण ।
तारा ज्युं झाखा थया रे, खोटा अ(उ)र अजाण ॥ प० ॥ ५ ॥
पाटि विराज्या पूजजीरे, सुललित वाण (वखाण) ।
अशुद्ध प्ररूपक मयलडा रे, त्याना गलीया माण ॥ प० ॥ ६ ॥
'बाफणा' गोत्र फल्रा तिलोरे, शाह 'रूपसी' नो नंद ।
"श्री जिन समुद्र" कहइ पूज्यजी रे, प्रतपो ज्युं रविचंद ।प०।७।

॥ जिनसमुद्र सूरि गीतम् ॥



ढाल—कडखउ, राग शुद्ध रामगिरि सोरठ अरंगजो

सुधन दिन आज जिन समुद्र सूरिंद आयो, सूरिंद आयो ।
चडो गच्छराज सिरताज वर थड वसन,
तसन 'सूरत' मइ अति सुहायो ॥ १ ॥

आवीयइ पूज्य आणद हुआ अधिक,
इन्द्रि पिण तुरत दरसण दिखायो ।
अशुभ दारिद्र तणी दूर आरति टली,
सफल सपन मिली सुजस पायो ॥ २ ॥

उदय उदयराज तन सफल कीधो उदय,
वान वेगड गछइ अति वधायो ।
जाचका दान दीधा भली जुगत सु,
सप्त क्षेत्रे वलि सुवित्त वायो ॥ ३ ॥

सकल साम्हो सजे स गुरु निज आणीया,
शाह 'छतराज' मनमइ उमायो ।
गेहणी सकल हरषइ करी गहगही,
विविध मणि मोतीया सु वधायो ॥ ४ ॥

पूज पद ठवण संघ पूज पर भावना,

करे निज वंश 'छाजहड' सुभायो।

गंग गुण दत्त राजड जिसा कृत करी,

चंद लग सुजस नामो चढायो ॥ ५ ॥सु०॥

छहा वरणा दीयइं दान दानी छतो, कलियुगइ करण साचो कहायो।

सगुरु 'जिनसमुद्र सूरिंद' गौतम जिसौ,

धरमवंतइ खरइं चित ध्यायो ॥ ६ ॥

चतुर जिण चतुर विध संघ पहिरावीया,

जगत्र मइं सुजस पडहो वजायो।

मूल धर्म मूल पख चित मइं धारता,

जैन शासन तणो जय जगायो ॥ ७ ॥

गुरे 'जिनसमुद्र सूरिंद' साचो गुरु,

शाह 'छत्रराज' सेठइ सवायो।

विझे वड शाख ध्रौ जेम वाधो सदा,

गुणीय "माइदास" इम सुजस गायो ॥८॥सु०॥



खरतरगच्छ पिप्पलक शाखा

॥ गुरु पट्टावली चउपइ ॥



समर सरसति गोतम पाय, प्रणमु सहिगुरु खरतर राय ।
जसु नामइ होयइ संपदा, समरता नासइ आपदा ॥ १ ॥
पहिला प्रणमु 'उद्योतन' सूरि, बीजा 'वर्द्धमान' पुन्य पूरि ।
करि उपवास आराहि देवी, सूरि मंत्र आप्यो तसु हवि ॥२॥
वहिरमाण 'श्रीमंधर' स्वामि, सोधावि आव्यउ शिर नामि ।
गोतम प्रतइ वीरइ उपदिस्यउ, सूरि मंत्र सुधउ जिन कह्यउ ॥३॥
श्री 'सीमंधर' कहइ देवता, धुरि जिन नाम देज्यो थापता ।
नाम पट्टि 'जिनेश्वर सूरि', नामइ दुख वली जाइ दूरि ॥४॥
'पाटण' नयर 'दुल्लभ राय यदा वाद हूओ मढपति स्यु तदा ।
सवत 'दस अमीयइ' वली, खरतर बिरद दीयइ मनिरली ॥५॥
चउथइ पट्टि 'जिनचंद सूरिंद', 'अभयदेव' पंचमइ मुणिंद ।
नवगि वृति पास थंभणउ, प्रगटयउ रोग गयु तनु तणउ ॥६॥
श्री 'जिनवल्लभ' छट्ठइ जाणी, क्रियावंत गुण अधिक वखाणी ।
श्री 'जिनदत्त सूरि' सातमउ, चोसठि योगणी जसु पय नमइ ॥७॥
बावन वीर नमी वलि पंच, माणभद्र स्यु थापी संच ।
व्यंतर बीज मनावी आण थूभ 'अजमेर' सोहइ जिम भाण ॥८॥
श्री 'जिनचंद्र सूरि' आठमइ, नरमणि धारक 'दिल्ली' तपइ ।
तास सीस 'जिनपति' सूरिंद, नवमइ पट्टि नमु सुखकंद ॥६॥
'जिन प्रबोध 'जिनेश्वर सूरि', श्री जिनचंद्र सूरि' यश पूरि ।
वंदु श्री 'जिनकुशल' मुणिंद, कामकुंभ सुरतरु मणिकंद ॥१०॥

साह लाधा कृत

श्री जिन शिवचंद सूरि रास

•

(रचना संवत १७९५ आश्विन शुक्ल पंचमी, राजनगर)

दूहा :—

शासन नायक समरीये, श्री 'वर्द्धमान जिनचंद'।
प्रणमु तेहना पद युगल, जिम लहु परिमाणंद ॥ १ ॥
'गौतम' प्रमुख जे मुनिवरा, श्री (सोहम) गणराय।
'जंबू' 'प्रभवा' प्रमुखने, प्रणमता सुख थाय ॥ २ ॥
श्री वीर पटोधर परमगुरु, युगप्रधान मुनिराय।
यावत 'दुपसह सूरी' लगे प्रणमु तेहना पाय ॥ ३ ॥
तास परंपर जाणीये, सुविहित गच्छ सिरदार।
'जिनदत्त' ने 'जिनकुशल' जी, सूरि हुवा सुखकार ॥ ४॥
तस पद अनुक्रमे जाणीये, 'जिन वर्द्धमान सूरिंद'।
'जिन धर्म सूरी' पाटोधरू, 'जिनचंद सूरी' मुणिंद ॥ ५ ॥
'सिवचंद सूरि' जाणीये, देश प्रदेश (पाठा० प्रसिद्ध) छे नाम।
खरतरगच्छ सिर सेहरो, सवेगी गुणधाम ॥ ६ ॥
तस गुण गण नी वर्णना, धुर थी उत्पति सार।
नाम ठाम कही दाखवु, ते सुणज्यो नर नारि ॥ ७ ॥

ढाल (१)- श्रेणिक मन अचरज थयो । ए देशी ।

मरुधर देश मनोहरू, नगर तिहा 'भिनमालो' रे ।
राजा राज करे तिहां, 'अजित सिंघ' भूपालो रे मरु० ॥१॥
गढ़ मढ़ मंदिर शोभता, वन वाड़ी आरामो रे ।
सुखीया लोक वसे तिहा, करे धरमा ना कामो रे ॥मरु०॥२॥
तेह नगर माहे वसे, साह 'पद्मसी' नामो रे ।
'ओश(वाल)वंश'साखा वडी, 'राका' गोत्र अभिरामो रे॥मरु०॥३॥
तस घरणी 'पद्मा' सती, श्राविका चतुर सुजाणो रे ।
सुत प्रश्रव्यो शुभ योग(ति) थी, 'सिवचंद' नाम प्रमाणो रे ।मरु०।४।
कुमर वधे दिन दिन प्रतइ, सेठजी हृदय विमासे रे ।
पूत्र निसाले मोकलूं, अध्यापक ने पासे रे ॥ मरु० ॥ ५ ॥
भणी गुणी प्रौढा (पाठा० मोटा) थया, बोले मधुरी भाषो रे ।
संसारिक सुख भोगना, कुमर ने नहीं अभिलाषो रे ।मरु०।६।
इणे अवशर गुरु विचरता, तिणहीज नगरीमें आव्या रे ।
श्री 'जिनधर्म सूरिंद' जी, श्रावक जैन मन भाव्या रे ।मरु०।७।
पइसारो महोछव करी, नगर मांहे पधरावे रे ।
श्रावक श्राविका तिहा मिली, गीत ज्ञान गुण गावे रे ।मरु०।८।
धन धन ते दिन आज नो, धन ते वेला जाणो रे ।
जेणे दिन सद्गुरु वादीयइ, कीजिये जन्म प्रमाणो रे ।मरु०।९।

दूहा थिर चित जाणी परषदा, गुरुजी दीये उपदेश ।
जीवाजीव स्वरूप ना, भाख्या सकल विशेष ॥ १ ॥

वाणी श्री जिनराज नी मीठी अमीय समाण ।
दीधी सद्‌गुरु देशना, रीझ्या चतुर सुजाण ॥ २ ॥
शाह पदमसो' कुअरे, धर्म सुणी तिणि वार ।
वयरागें चित वासीयो, जाणी अथिर समार ॥ ३ ॥
कुमर कहइ श्री गुरु प्रत, करजोडी मनोहार ।
दीक्षा आपो मुझ भणी, तारो भवपार ॥ ४ ॥
जिम सुख देवाणुप्रिये, तिम कीजे सुविचार ।
अनुमत लेइ कुमरजी, हुवे लेसे सयम भार ॥ ५ ॥

ढाल बीजी—जी र जी रे स्वामी समोसर्या० । ए दशी० ।

अनुमति द्यो मुझ तातजी, लेसु सजम भारो र ।
ए ससार असार मा, सार धरम सुखकारो र । अनु० । १ ।
वचन सुणी निज पुत्र ना, मात पिता दुख पाव र ।
सयम छै वळ दोहिलु, सु होय नाम धरावे र । अनु० । २ ।
अति आग्रह अनुमति दीयइ, मात पिता मन पाखे र ।
उ छव सु व्रत आदर, सघ चतुरविध साखे र । अनु० । ३ ।
सवत 'सतर त्रहसठे', लीये दीक्षा मन भाव रे ।
'तेर वरस' ना कुमर पणे, नरनारि गुण गावै र । अनु० । ४ ।
मन वच काया वश करी, रगे चारित्र लीधो र ।
पाले व्रत निरमल पणे, मनह मनोरथ सीधो र । अनु० । ५ ।
मासकल्प तिहा किण रही, श्री पूज्य कीधो विहारो र ।
गाम नगर प्रतिबोधता, करता भवि उपगारो र । अनु० । ६ ।
कुमर भणे अति उलटै, गुरु पासै मन खातै र ।
ज्ञानावरणी क्षय उपशमे, भणीया सूत्र सिद्धान्तो र । अनु० । ७ ।

व्याकरण नाममाला भण्या, वलि भण्या काव्य ना ग्रन्थो रे ।
न्याय तर्क सवि सीखीया, धरता साधुनो पंथो रे । अनु० । ८ ।
गीतारथ गणधर थया, लायक चतुर सुजाणो रे ।
वयरागे मन भावना, पाले श्री गुरु आणो रे । अनु० । ६ ।
दूहा पाट योग जाणी करी, श्री गुरु करे विचार ।
पद आपुं 'सिवचंद' ने, तो होय जय जयकार ॥ १ ॥
निज समय जाणी करी, श्री गुरु कीध विहार ।
'उदयपुरे' पाउधारीया, उच्छव थया अपार ॥ २ ॥
निज देहे बाधा लही, समय (पाठा० संयमे) थया सावधान ।
अणशण आराधन करी, पाम्या देव विमान ॥ ३ ॥
संवत 'सतर छहोत्तरे', 'वेशाख' मास मझार ।
'सुदि सातम' शुभ योगे तिहा, आपुं (प्युं) पद श्रीकार ॥४॥
श्री 'जिनधर्म सूरिंद' ने, पाटे प्रगट्यो भाण ।
श्री 'जिनचंद सूरीश्वरू', प्रतपे पुण्य प्रमाण ॥ ५ ॥
ढाल ३ नींदलडी वयरण हुइ रही । ए देशी० ।
भावे हो भवियण साभलो, 'सिवचंदजी'नो हो (भलो) रास रसालके ।
जे नित गावे भाव सुं, तस वाधे हो घर मंगल मालके ॥ १ ॥
अवशर लाहो लीजिये । आकणी० ।
श्रावक 'उदयापुर' तणा, पद महोछव हो करवा मन रंग के ।
समय लही निज गुरु तणो, धन खरचे हो धरमे दृढ़ रंग के ।अ०।२।
'दोसी भिक्षु' सुत तिणे (समे) करे, वीनति हो कुशल संघ एमके ।
रे हरे श्रीगुरु नो अवसर कीहां, अमो करसुं हो पद महोछव प्रेमके।३।

संवत 'सतर छीउतर', मास 'माननहो सुदि सातम' सारके।
राणा 'संग्राम' ना राज्य मे, कर उछव हो आवकतिण वार क।अ०।४।
श्री संघ भगति करे अति भली, बहु विधना हो मीठा पकवानके।
शाल दाल घृत घोल सु वली आपे हो वहु फोफल पानके।अ०।५।
पहेरामणी मन मोद सु, 'कुशले' 'जोये' हो कीधा गहगाट के।
जस लीधो जगमे घणो, संतोपीया हो चले चारण भाट के।अ०।६।
श्री 'जिनचंद' सूरीश्वरू, नित्य दीपे हो जेसो अभिनव सूर के।
वयरागी त्यागी घणु, सोभागी हो सज्जन गुणे पूर क।अ०।७।
तिहा शिष्य 'हीरसागर' कीयो, अति आग्रहे हो तिहा रह्या चौमासके।
श्री गुरु दीये धर्म देशना, सुणता होय हो सुख परम उल्लासके।अ०।८
धरम उद्योत थया घणा, करे श्राविका हो तप व्रत पचखाण क।
संघ भगति परभावना, थया उछव हो रह्या परम कल्याण क।अ०।९।

दोहा।—चातुंमास पूरण थये, विहार करे गुरु राय।
'गुर्जर देश' पाउधारिया, उछव अधिका थाय।१।
संवत 'सतर अठोतर' कर्या क्रिया उद्धार।
वयरागे मन वासीनउ, कीधो गछ परिहार।२।
आतम साधन साधता, दता भवि उपदेश।
करता यात्रा जिणदनी, विचरे देश विदेश।३।
जस नामी 'सिवचंद' जी, चावु चिहु खंड नाम।
संवगी सिर सेहरो, कीया उतम काम।४।

ढाल (४): नयरी अयोध्या थी संचर्या ए देशी।

गुर्ज्जर देश थी पधारीया ए, यात्र करण मन लाय। मनोरथ सविफल्या ए,
'शत्रुंजय' गिरवर भणी ए, भेटवा आदि जिन पाय, मनो०। १।
चार मास झाझेरडा ए, रह्या 'विमल गिर' पास। मनो०।
नव्याणु यात्रा करी ए, पोहोती मन तणी आस। मनो०।२।
तिहा थी 'गिरनारे' जइ ए, भेटीया नेमि जिणद।
'जुनेगढ़' यात्रा करी ए, सूरी श्री 'जिनचंद'। म०। ३।
गामाणुगामे विहरता ए, आवीया नयर 'खंभात'। म०।
चोमासुं तिहां किण रह्या ए, यात्रा करी भली भाति। म०। ४।
चरचा धर्म तणी करे ए, अरचे जिनवर देव। म०।
समझू श्रावक श्राविका ए, धरम सुणे नित्य मेव। म०।५।
तप पचखाण घणा थया ए, उपनो हरष अपार। म०।
तिहां थी विचरता आवीया ए, 'अहमदाबाद' मझार। म०।६।
बिम्ब प्रतिष्टा वणी थइ (पाठा० करी) ए, वली थया जैन विहार। म०।
ते सवि गुरु उपदेश थी ए, समझ्या बहु नर नारि। म०।७।
तिहां थी 'मारुवाड' देश मां ए, कीवी 'अर्बुद' यात्र। म०।
'समेत सिखर' भणी संचर्या ए, करता निरमल गात्र। म०।८।
कल्याणक जिन वीसना ए, वीसे टुंके तेम (पाठा० तास)। म०।
यात्रा करी मन मोद सुं, वाध्यो अति घणो प्रेम। म०। ९।

दोहा 'समेतसिखर' नी यातरा, कीधी अधिक उछाह।
श्री पार्श्वनाथ जिन भेटीया, नगरी 'वणारसी' माह।१।

'पावापुरी' मे पाउधारीया, जिहा श्री वीर निर्वाण ।
'चपापुरी' माहे वादीया, श्री वासपूज्य जिनभाण । २ ।
'राजग्रही' वैभारगिरि, यात्रा करी सघ साथ ।
'हथीणापुर' जिन वादीया, शाति कुथु अरनाथ । ३ ।
'दि(द)ली' चोमासु रही, करता यात्र विशेष ।
विहार करता पुनरपि, आव्या वली 'गुर्जर देश' । ४ ।

ढाल (५):—पाटोधर पाटोये पधारो । ए देशी ।

जिन यात्रा करी गुरु आव्या, श्रावक श्राविका मन भाव्या ।
पटोधर वादीये गुरूराया, जस प्रणमे राणाराया । प० । १ । आ० ।
'भगसाली कपूर' ने पासे, तिहा 'शिवचद' जी चौमासे । पटो० ।
जस प्रणमे राणा राया, पटोधर वादीने गुरुराया । आकणी० ।
देशना दीये मधुरी वाणी, सुणता सुख लहै भवि प्राणी । पटो० ।
वाचे 'भगवती' सूत्र वखाणे, समझ्या तिहा जाण सुजाण । प० । २ ।
ज्ञान भगति थइ अति सारी, जिन वचन की जाऊ बलिहारी ।प०।
मली श्राविका जिन गुण गावे, भरी मोती ए थाल वधावे ।प०। । ३।
गहुली कर गुरुजी ने आगे, शुद्ध बोध बीज फल मागे । प० ।
श्रावक करे धर्म नी चरचा, जिहा जिन पद नी थाये अरचा ।प०।४।
नव कल्प कीधो विहार, शुद्ध धरम तणा दातार । प० ।
ईति उपद्रव दूरें कीधो, 'सिवचदजी' ये यश लीधो । प० । ५ ।
पुनरपि मन माहे विचारे करू यात्रा सिद्धाचल सार । प० ।
'राजनगर' थी कीधो विहार, करी यात्रा 'सेत्रुज' 'गिरनार' । प० ।६।

तिहां थी रह्या 'दीवे' चोमासुं, जेहनु धरम निज वासुं ।प०।
पुनरपि 'सिद्धाचल' आवे, गिर फरस्या मन ने भावे । प० । ७ ।
थई यात्रा जिनेश्वर केरी, गुरु गुनि रमणी कीधी नेरी । प० ।
जिनगुण निरख्या नित्य हेरी, टाली भव भ्रमण नी फेरी । प० । ८ ।
'घोघे' मन्दिर जिन वान्दी, करी करम तणी गति मंदी ।प०।
'भावनगरे' देव जुहार्या, दुख दालिद्र दूरे निवार्या । प० । ९ ।

दोहा ।

संवत 'सतर चोराणुंवे', 'माह' मास सुखकार ।
'भावनगर' थी आवीया, नयर 'खम्भात' मंझार ॥ १ ॥
गुरु गुणरागी श्रावके, दीयो आदर मान ।
गुरुजी दीये धर्म देशना, तात्विक सुधा समान ॥ २ ॥
द्वेष करी (पाठा० धरि) कोइ दुष्ट नर, कुमति दुर्भवी जेह ।
यवनाधिप आगल जइ, दुष्ट वचन कहे तेह ॥ ३ ॥
सुणीय वचन नर मोकल्या, गुरुने तेडी ताम ।
यवन कहे अम आपीये, तुम पासे छे दाम ॥ ४ ॥
दाम अमे राखुं नहीं, राखुं भगवंत नाम ।
कोप्यो यवनाधिप कहे, खींचो एहनी चाम ॥ ५ ॥
पूरव वयर संयोगथी, यवन करे अति जोर ।
ध्यान धरे अरिहंत नुं, न करे मुख थी सोर ॥ ६ ॥
संचित कर्म विपाकना, उदयागत अवधार ।
सहे परिसह 'शिवचन्दजी', ते सुणजो नरनार ॥ ७ ॥

ढाल (६) : वेवे मुनिवर विहरण पागुर्याजी । एदेशी० ।
'जिनचन्द सूरी' मन माहे चिन्तवेरे, हवे तुं रखे थाय कायर जीवरे ।

एह थी नरग निगोद माह घणीरे, तेंतो वेदन सही सदीवर ॥ १ ॥
धन धन मुनी सम भावे रह्या र, तह नी जइये नित्य बलिहार र ।
दु कर परीसह जे अहियासने र, त मुनी पाम्या भव नो पार॥ध०२॥
'खधग' मुनीना जे शिष्य पाचसैरे, पालक पापीयें दीधा दु खर ।
घाणी घाली मुनीवर पीलीयारे, ते मुनि(प्रणम्या)अविचेल सुख र॥धन०॥३
'गजसुकमाल' मुनी महाकालमे रे, स्मसान रहीया काउसग्गजो ।
'सोमल ससर' शीस प्रजालियोजी, ते मुनि प्रणम्या (पाठा० पाम्या)
सुख अपवर्ग जो ॥ध०॥४॥
'सुकोशल' मुनिवर सभारीयेजो, जेहना जीवित जन्म प्रमाण र ।
वाघणे अग विदार्यु साधुनुजी, परिसह सही पहुता निरवाण रो॥ध५॥
'दमदन्त' राजऋषि काउसग रह्याजी, कौरव कटक हणे इटाल जो ।
परिसह सही शुद्ध ध्यान साधुजी र, त पण मुगत गया ततकाल जो
॥ध०॥६॥
'खधग' ऋषिने खाल उतारताजी, कठीन अहोयासे परिसह साधु जो ।
ते मुनी ध्यानें कर्म खपावीनजी, पाम्या शिवपद सुख निरवाध जो
॥ध०॥७॥
इत्यादिक मुनिवर सभारताजी, धरता निजपद निरमल ध्यान जो ।
जड चेतन नी भाव भिन्नताजी, वेदक चेतनता सम ज्ञान जो॥ध०८॥
तत्वरमण निज वासित वासनाजी, ज्ञानादिक त्रिक शुद्ध जो ।
जडता ना गुण जडमे रासताजी, जेहनी आगम नेगम बुद्धजो॥ध०॥६॥
पुदगल आप्पा (थप्पा) लक्षणे जी, पुद्गल परिचय कीनो भिन्न जो ।
अन्त समय एहवी आत्मदशाजी, जे राखे ते प्राणी धन्न जो ।ध०१०।

कोपातुर यवने रजनी समे जी, दीधा दुख अनेक प्रकार जो।
तोहे पण न चल्या निज ध्यानथी जी, सहेना नाडी दंड प्रहार जो।११
हस्त चरण ना नख दुरे कीया जी, व्यापी वेदन तेण अनेक जो।
हार्यो यवन महादुष्टात्मा जो, जो राखी पूरव मुनी नी टेक जो।ध०१२
जिम जिम वेदन व्यापे अति घणीजी, तिम मम वेदे आतमराम जो।
इम जे मुनिवर सम(ता) भावे रमे जी, तेहने होज्यो नित परणाम जो

दूहा:- प्रात समय श्रावक सुणी, पासे आव्या जाम।
यवन कहे आखो थइ, ले जाउ निज धाम।१।
'रूपा वोहरा' ने घरे, तेडी लाव्या ताम।
हाहाकार नगरे थयो, दुष्ट ना मुख थया स्याम।२।
'नायसागर' नीझामता, नीरखि परिणिति शांति।
उत्तराध्यन आदे वहु, संभलावे सिद्धांत।३।
सकल जीव खमाविनइ, सरणा कीधा च्यार।
सल्य निवारी मन थकी, पचख्या चारे अहार।४।
अणशण आराधन करी, चड़ते मन परिणाम।
समतावंत धीरज गुणे, साध्युं आतम काम।५।
चोथुं व्रत कोइ आदरे, कोइ नीलवण परिहार।
अगडी नोम केइ उचरे, केइ श्रावक व्रत वार।६।
संघ मुख्य 'सिवचन्द' जो, वचन कहे सुप्रसिद्ध।
'हीरसागर' ने गछ तणी, भली भलामण दीध।७।
संवत 'सतर चोराणुये', वैशाख मास मझार।
पष्टि दिन कविवार तिहा, सिद्ध योग सुखकार।८।

प्रथम पोहोर माहे तिहा, धरता जिननु ध्यान।
काल करी प्राये चतुर पाम्या देव विमान ।६।

ढाल ७ :—माइ धन सम्पन्न ए, धनजीवो तोरो आज। ए देशी।

धन धीरज दृढता, धन धन सम परिणाम।
जेणे परिसह सही ने, राख्यु जग माहें नाम ॥१॥
बलिहारी तोरी बुद्धि ने, बलिहारि तुम ज्ञान।
जेणे आतम भावे, आराध्यु शुभ ध्यान ॥२॥
बलिहारी तुम कुल ने, बलिहारी तुम वंश।
शासन अजुआली, अजुयाल्यो निज हंस ॥३॥
गुरू कुमर पणे रह्या, तर वरस घर वास।
शिष्य विनय पणें रह्या, तर वरस गुरू पास ॥
गच्छनायक पन्ची, भोगवी, वरस अढार।
आयु पूरण पाली, वरस चुमालीस सार ॥४॥
धन धन 'शिवचन्दजी', धन धन तुम्ह अवतार।
इम थोक थोक, गुण गावे नर नार।
कर श्रावक मली तिहा, माडवी मोटे मडाण।
कंचनमय कलस, जाणें अमर विमाण ॥५॥
तिहा जोवा मलीया हिन्दु मलेछ अपार।
गाय धवल मंगल, दीये ढोल तणा ढमकार ॥
जय जय नन्दा कह, लीय रुडा रम सार।
भेर भूगल साथ, सरणाइ रणकार ॥६॥
वली अगर उखेवे, मोघन फूले वधाव।
इम उछव थात, वन माह रड आव ॥
सुखडने अगर सु, कीधो दहो सरकार।
निरवाण महोछव, इणि पर कीधो उदार ॥७॥

पुरषोत्तम पूरो, सूरो सयल विवेक ।
जेणे गच्छ अजुयाली, राखी धर्मनी टेक ॥
तिहां थूभ करावी, श्रावके उछव कीधो ।
वली पगला भरावी, 'रूपे वोहरे' जस लीधो ॥८॥
तिम 'राजनगर' मे, थूंभ करी अति सार ।
तिहां थाप्या पगला, 'वहिरामपुर' मंझार ॥
अति उछव थाये, भगति करे नर नार ।
इम गुरुगुण गावे, नम घर जय जयकार ॥६॥
अति आग्रह कीधो, 'हीरसागरे' हित आणी ।
करी रासनी रचना, साते ढाल प्रमाण ॥
'करुण्या मति' गछपति, साहजी 'लाधो' कविराय ।
तिणे रास रच्यो ए, सुणत भणत सुखथाय ॥१०॥

कलश :

इम रास कीधो सुजस लीधो, आदि अन्त यथा सुणी ।
'शिवचन्द्रजी' गछपति केरो, भावजो भवि गुणमणी ॥
संवत 'सतरेसे पंचाणु', 'आसो' मास सोहामणो ।
'सुदि पंचमी' सुरगुरु वारे, ए रच्यो रास रलीयामणो ॥
निरवाण भाव उलास साथे, 'राजनगर' माहि कीयउ ।
कहे साहजी 'लाधो' 'हीर' आग्रह थी, रास एह करी दीयउ ॥१॥
इति श्री शिवचन्द्जी नो रास समाप्त ॥छ॥ प० ५ नि० म० ला० ॥
प्रति नं० २ पुष्पिका लेख

सम्वत् १८४० ना आसु वदि ४ दिने श्री भुजनगर मध्ये लिखते । गाथा १०५ लिखतं देवचन्द गणिना लिखतं श्रीवृहत्खरतर-गच्छे खेम शाखाया श्रीकच्छदेशे श्रीशाति प्रसादात् वाच्यमान हेतवे । मेरु महीधर जा लगे जा लग उगत सूर, ता लग ए पोथी सदा रहे जो ए सुख पूर ॥ श्री रस्तु । कल्याणमस्तु ॥। श्री श्री

(पत्र ६ अंजारसे विद्वद् मुनिवर्य लब्धि मुनि जी द्वारा प्राप्त)

आद्यपक्षीय (खरतरगच्छीय) आचार्यशाखा

जिनचंद सूरि पट्टधर श्री जिनहर्ष सूरि गीतम्



सखि देख्यउ हे सुपनउ मइ आज, श्री गच्छराज पधारिया ।
सखि सगला हे माथा सिरताज, श्री 'जिनहरख' सूरिश्वर ॥१॥
सखि चालइ हे कामनी गज गेलि, ढल तणो पर ढलकती ।
सखि म्हाका सद्गुरु मोहनवेलि, वाणि अमीरस उपदिसइ ॥२॥
सखि सजती हे सोलह शृंगार, ओढो सुरंगी चूनडी ।
सखि सीसह धर कलश उदार, मोत्या थाल वधामणउ ॥३॥
सखि जुगवर चंद विद्या रा जाण, जाणो तस सारद जगइ ।
सखि मानइ हे सहु राजा राण, पाटइ श्री 'जिणचंद' कइ ॥४॥
सखि दीपइ 'दोसी' वंश दिणन्द, 'भगतान' उयरइ धया ।
सखि जीवउ 'मादाजी' रउ नंद, 'कीरतवर्द्धन' इम कहइ ॥५॥



लघु आचार्य शाखा

॥ श्री जिनसागर सूरि गीतम् ॥



श्री संघ करइ अरदास हो, बेकर जोड़ी आपणै भावसुं हो। पूजजी।
पूरे मननी आस हो, एकरसउ वंदावउ आविनइ हो ॥ पू० ॥ १ ॥
तइं जाण्यउ अथिर संसार हो, संयम मारग 'लघुवय' आदर्यों हो। पू.
आगम नउ भण्डार हो, जाण प्रवीण क्रिया नी खप करइ हो। पू०।२।
तुं साधु शिरोमणि देखिहो, पाट तणइ जोगि 'जिनचंद सूरि' कह्योहो।
तइं राखी जगमइं रेख हो, पाट वइसता उपसम आदर्यो हो। पू०॥३॥
ए काल तणउ परभाव हो, गुण करतां पिण अवगुण ऊपजइ हो। पू०।
दूध भजइ विष भाव हो, विषधर मुख खिण माहि जातां समो हो। पू०४
नगर 'अहमदाबाद' हो, दोषी माणस दोष दिखाड़ियो हो। पू०।
धरम तणइ परसाद हो, निकलङ्क कनक तणी परि तूं थयो हो। पू०।५।
थारउ सबलो जस सोभाग हो, चिहुं खंड कीरति पसरी चौगुणी हो।
तुम्ह उपरि अधिको राग हो, चतुर विचक्षण धरमी माणसां हो। पू०६।
जे वेचइ मणिका काच हो, ते सी कीमत जाणे पाचिनी हो। पू०।
कदाग्रही मिथ्या वाच हो, कुगुरु न छंडइ सुगुरु न आदरइ हो। पू०।७।
तूं शीलवन्त निर्लोभ हो, श्री 'जिनसागर सूरि' सुगुरु तणी हो। पू०।
'जयकीरति' करइ सुशोभ हो, अविचल मेरु तणी परि प्रतपज्यो हो।८।

:

॥ श्री जिनधर्म सूरि गीतम् ॥



१ ढाल : सोहिलानी

आया श्री गुरु राय, श्री खरतर गच्छ राजिया ।
श्री 'जिन धर्म सुरिन्द', मङ्गल वाजा वाजिया ॥१॥
पेसारे मडाण, 'गिरधर' शाह उच्छव करइ ।
'बीकानेर' मझार, इण विध पूज्य जी पग धरइ ॥२॥
श्री 'सघ' साम्हो जाइ, आणी मन उल्ट घणे ।
लुलि लुलि वादइ पाय, सो दिन त लेखै गिणै ॥३॥
सिर धर पूरण कुभ, सूहव आवै मलपती ।
भर भर मोती थाल, वधाव गुरु गच्छपती ॥४॥
पग पग हुवे गहगाट, घर घर रग वधामणा ।
झालर रा झणकार, सख शब्द सोहामणा ॥ ५ ॥
चौथी प्रोल उत्तङ्ग, नर नारी मन मोहनी ।
नाना विधि ना रग, तिण कर दीसइ सोहती ॥६॥
सिणगार्या सब हाट ऊची गुडी फरहरइ ।
दूधे वूठा मह, याचक जण यश उचरइ ॥७॥
प्रथम जिणेसर भेटि, आया पूज उपासरे ।
साभलि गुरु उपदेश, सहुको पहुता निज घर ॥८॥
सोहलानी ए ढाल, मिल मिल गावे गोरडी ।
'ज्ञान हर्ष' कहै एम०, सफल फलो आश मोरडी ॥९॥

२ ढाल : बिछुआनो

महिर करो मुझ ऊपरे, गुरुआ श्री गणधार रे लाल।
'भणशाली' कुल सेहरो, मात 'मिरगा' सुखकार रे लाल ॥१॥म०॥
सुन्दर सूरति ताहरी, दीठां आवे दाय रे लाल।
मधुकर मोह्यो मालती, अवरन को सुहाय रे लाल ॥ २ ॥ म० ॥
सूर गुणे करि सोहता, षट् जीव ना प्रतिपाल रे लाल।
रूपे वयर तणी परे, कलि गौतम अवतार रे लाल ॥ ३ ॥ म० ॥
साधु संघाते परिवर्या, जिहा विचरे श्री गुरु राय रे लाल।
सुख सम्पति आणन्द हवइ, वरते जय जय कार रे लाल ॥४॥म०॥
श्री 'जिनसागर सूरि' जी, सइं हथ थाप्या पाट रे लाल।
श्री 'जिन धर्म सूरीश्वरु', दिन दिन हवइ गहगाट रे लाल ॥५॥म०॥
'राजनगर' रलियामणो, पद्द महोछव कीयो सार रे लाल।
'विमला दे' ने 'देवकी', गुण गण मणि आधार रे लाल ॥ ६ ॥ म० ॥
गच्छ चौरासी निरखिया, कुण करें ए गुरु होड रे लाल।
'ज्ञानहर्ष' शिष्य वीनवै, 'माधव' वे कर जोड़ रे लाल ॥ ७ ॥ म० ॥



जिनधर्मसूरि पट्टधर जिनचद्रसूरि गीतम् ।



१ देशी दरजणारा गीतरी ॥

सुणि सहियर मुझ वातडी, तुझ नैं कहु हित आणी । हे वहिनी ।
आचारज गच्छ रायनी, सुणिवा जइयइ वाणि । हे वहिनी ॥१॥
सूरतडी मन मोही रहाउ ॥ आकडी ॥
सहगुरु वेसी पाटियइ, वाचै सूत्र सिद्धन्त । हे वहिनी ।
मोहन गारी मुहपत्ति, सुन्दर मुख सोहन्त । हे वहिनी ॥२॥
गहूली सद्गुरु आगलै, करियै नवनवी भाति । हे वहिनी ।
सुगुरु वधावा मोतीये, मन माहि धरि खाति । हे वहिनी ॥३॥
वैसी मन विहसी करी, मामला सरस वखाण । हे वहिनी ।
भाव भेद सूधा कहै, पण्डित चतुर सुजाण । हे वहिनी ॥४॥
साधु तणी रहणी रहइ, पालै शुद्ध आचार । हे वहिनी ।
सूरि गुणे करि शोभतो, श्री खरतर गणधार । हे वहिनी ॥ ५ ॥
'वुहरा' वश विराजतो, 'सावल' शाह सुविख्यात । हे वहिनी ।
रतन अमूलिक उर धर्यो, 'साहिब' जसु माता । हे वहिनी ॥ ६ ॥
श्री'जिनधर्मसूरि' पाटवी, श्री 'जिनचन्द्रसूरी ।' । हे वहिनी ।
अविचल राज पाले सदा, पभणे 'पुण्य' आशीस । हे वहिनी ॥ ७ ॥
लिखित सम्वत् १७७६ वर्ष वैसाख सुदी १२ भौम ।

जिन युक्ति सूरि पट्टधर जिनचद्र सूरि गीतम् ।

पूजजी पधार्या मारू देशमे, दूधावूठाजी मेह । गुणवन्ता हो गच्छपति ।
ओसघ वादे हो अधिक उच्छाह सु, मन धरि धर्म सनेह ॥१॥

गुणवन्ता हो गच्छपति, श्रीजिनचन्द्र सूरी सुखकरु ।। आकडी ॥
मिलि मिली आवो हे सखर सहेलिया, भरि मोतियड़े थाल ।गु०।
वादण जास्यां हे खरतर गच्छ धणी, जीव दया प्रतिपाल ॥२॥गु०॥
संघ साम्हेले हो साम्हा संचरै, मन धरि अधिक आणन्द ।गु०।
वाजा वाजै हो गाजै अम्बरै, गच्छपति ना गुण वृन्द ॥ ३ ॥गु०॥
गुणियण गावे हो गुण पूजजी तणा, बोले मुख जै जै बोल ।गु०।
कीरति थारी हो गंगाजल जिसी, दस दिशि करै कल्लोल ॥४॥गु०॥
पग पग कीजे हो हरखै गूंहली, दीजै वंछित दान ।गु०।
सूहव गावै हो मङ्गल सोहला, गिड. धूं धूं घुरे निसाण ॥ ५ ॥ गु० ॥
नर नारी ना हो परिकर बहु मिलै, वंदण भणी विशेष ।गु०।
आय विराज्या हो पूजजी पाटिये, द्यै धर्मरा उपदेश ॥६॥गु०॥
नवरस सरस सुधारस वरसतो, गरजती जलद समान ।गु०।
सुणतां लागै हो श्रवण सुहामणो, इसी म्हारै पूजजी री वाण ॥७॥गु०॥
नित नित नवला हो हरख वधामणा, पूरव पुण्य प्रमाण ।गु०।
जिण दिशि देशे हो पूज्य समोसरे, तिण दिश नवे निधान ॥८॥गु०॥
पंचाचार हो पूज्य सदा धरै, पूज्य सुमति गुपति सोहन्त ।गु०।
गुण छत्तीसे हो अंग विराजता, पूज भविजन मन मोहन्त ॥६॥गु०॥
चद ज्युं दीसे हो नित चढती कला, 'जिन युक्तिसूरि' जी रे पाट ।गु०।
श्री गौयम जिम बहु लब्धे भर्या, सोहे मुनिवर थाट ॥१०॥गु०॥
धन 'बीलाड़ा' हो संघ सराहिये, पूज रह्या चोमास ।गु०।
जिन शासन नी हो थई प्रभावना, सफल फली सहु आश ॥११॥गु०॥
मात "जसोदा" हो नन्दन जाणिये, 'भागचन्द' सुत सुविचार ।गु०।
युगप्रधान हो जगमें अवतर्या, गोत्र 'रीहड़' सिणगार ।गु०।
पूज प्रतपो हो जा रवि चन्द्रमा, हो पूज जीवो कोड़ बरीस ।गु०।
इम निज मनमे हो हरख धरी घणो, 'आलम' द्यै असीस ॥१३॥गु०॥

॥ इति श्री पूज्यजी गीतम् ॥

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

तृतीय विभाग

(खरतरगच्छीय ऐतिहासिक काव्य संग्रह)

॥ शिवचूला गणिनी विज्ञप्ति ॥

आणंद सु मन धरिए, पणमीय जिण पय अणुसरीए ।
गोयमस्वामि पसाउलउ, अमे गाइसि श्री गुरुणी विनादउए ॥१॥
'नागड' वंश सिणगारु, 'महा' नाम गुणह भंडारुए ।
दानिहि मानिहि गाढउ, जसु अपर नाम संसारुए ॥२॥
तसु घरणी 'सिंगारदे' मनि ए, भत्ता भावइ सपन्न सीलवंतीए ।
जिणहि जाया नंदणाए ए, स्त्री रयणहिं गुण मणि आगरुए ॥३॥
कुअर सुगुर महाभय, 'जिनकीरति सूरि' सा वीरए ।
'राजलच्छि' पहन नसु नामुए, होइ पवनणि पर पगासुए ॥४॥
'सिवचूला' मनि सिणगारु, जसु त्रिभुवन जगि सारुए ।
रूप सोभाग्य मनोहरुए, तप तजिहि पाव तिमिर हरुए ॥५॥
चारित्र पात्र गुरु जाणिए, श्री गच्छह भार धुरि आणीए ।
तिणे अवसर श्री संघ मन रलीए, विचार जाइ मनि रलीए ॥६॥
'महत्तर' पद उच्छाहुए, तवसिण पनउ 'महान' साथए ।
जिनन्या श्री गुरुराय, मउ मनि घणउ उमाहुए ॥७॥
फिउ पसायो श्री संघ मिलीए, आणन्दि नाचइ वली वलीए ।
लिटम न 'रैणासुए' 'चन्द्र याणुइ' नि पदि पारवीए ॥८॥
'मड्पाट' महोत्सव करीए, 'चन्द्रपुरी' जग सुनि (चि?) विस्तरए ।
आनइ श्रीसंघ नइ दिसि तणाए, आवरा जइ साहमा अति घणाए ॥९॥

मंडप सोटा मंडाणाए, तिहा बइसइ चतुर सुजाणुए।
नाचइए निरुपम पात्रुए, जसु जोता गहगहइ गात्रुए ॥१०॥
चउरी चउहिं पखि चमर ढलइए, पोसालइना दिशि विस्तरइए।
मंगल धवल महलावइए, श्री'शवचूला' महत्तर गायसिंए ॥११॥
च्यारइ भगवन् आणंदपूरे, तेहवे नाम खिवइ 'सोमसुन्दरसूरे'।
महत्तर उवज्झाय पदवीए, वित विचय 'महा दे' संघवीए ॥१२॥
सुभासु लकुटा र(रा?)सुए, गुण गाइए 'शवचूला' महत्तरीए।
'रत्नशेखर' वाचक वरुए, पन्यास गणीश अति विस्तारुए ॥१३॥
दीक्षा महोत्सव अपारुए, तिहिं वरतइ जयजयकारुए।
पंचशब्द तिहा वाजइए, तिणे नादे अम्बर गाजइए ॥१४॥
वन्दिय जन जय उच्चरइए, तिहिं मांगतजन दालिद हरुए।
तलीया तोरण उच्छलइए, तिहा घरवर गुडि विरतरइए ॥१५॥
श्रीसंघ मन पुगि रुलीए, गुणगाइ गोरडी सवि मिलिए।
दक्षीण देव सिरि महलावइए, साह सुपत्र खेत्रे धन वावरइए ॥१६॥
देवहिं गुरुभक्ति थुणीए, खेत्र 'शाहपुर' आपणीए।
दरसणस्युं गुणधारुए, वस्तु पहिरावइ अतिहिं अपारुए ॥१७॥
श्रीसंघ पंचंगि मडदीए, साह 'महादे' इणिपरे जस लीए।
रंजिय सयल सभा जणुए, संतोषिय साहमि भगत जनुए ॥१८॥
करणी अनुपम ते करइए, तस किरति दह दिसि विस्तरीए।
महत्तर नाम विशालुए, तस उपमा चन्दनबालुए ॥१९॥
द्रुपदि तारा मृगावतीए, सीता य मन्दोदरी सरसतीए।
सोल सती सानिध करइए, भणयवाघ (भणव्राथी?)
श्रीसंघ दुरिया हरइए ॥२०॥

[इति श्री जिनकीर्ति सूरि महत्तरा श्रीशवचूला गणि प्रवर्तिनी राजलच्छी गणिर्विज्ञप्तिकाः, श्राविका हीरादे योग्यं]

(खरतर गच्छीय प्रवर्त्तक मुनिवर्य सुखसागरजीसे प्राप्त)

कवि गुणविजय कृत

विजयसिंहसूरि विजयप्रकाश रास

प्रथमनाथ पृथ्वी तणो, प्रणमु प्रथम जिणंद ।
माता 'मरुदेवी' तणो, नन्दन नयणानन्द ॥१॥
'सीरोही' सुख मण्डणो, दुख नो खण्डणहार ।
'ऋषभदेव' साहिब सदा, वांछित फल दातार ॥२॥
गजगति जिनपति जे धरइ, गज लंछन निसदीस ।
'हीर विजयसूरि' थापस्यु श्री चोमुखो जगदीस ॥३॥
'अजितनाथ' जग जीपतो, [illegible] दातार ।
'ओसवंश' नइ सेहरउ, जपतां जय जयकार ॥४॥
'शांति' शांतिकर सोलमो, परम पुण्य अंकूर ।
नगर शिरोमणि '[illegible]पुरी', सूहति गिर सिन्दूर ॥५॥
'कमठ' काठ थी काढिओ, जिणि जलतो भुअङ्गिन्द ।
लाख चुआलीस घर धणी, ते कीधो 'धरणींद' ॥६॥
ते दुख चिन्ता चूरणो, पूरण पूरइ आस ।
प्रहउठि प्रभु प्रणमिइ, श्री'[illegible]' पास ॥७॥
शासन साहिब सेवीइ, समरथ साहस धीर ।
'वंभणवाडि' मंडणो, वीर [illegible] महावीर ॥८॥
वचन सुधारस वरसतो, सरसति चित मनि माय ।
'कमल विजय' गुरु पद कमल, प्रणमु परम पसाय ॥९॥

'हीर' पाटि 'जेसिंगजी', पाटि प्रगट जगीस ।
श्री'विजयदेव' सूरिसरु, जीवो कोडि वरीस ॥१०॥
तिणि निज पाटि थापीओ, कुमति मतंगगज सीह ।
'विजयसिंह सूरीसरु', सकल सूरि सिर लीह ॥११॥
रास रचुं रलीयामणो, मनि आणी उल्लास ।
'विजयसिंह सूरि' तणो, सुणयो 'विजय प्रकाश' ॥१२॥
सावधान सज्जन सुणो, पहिला दिउ दुइ कान ।
खंडानी पृथ्वी कही, विधाना छइ दांन ॥१३॥

ढाल : राग देशाख ।

अढ़ार कोडा कोडि सागर जेह,, युगला धरम निवारक जेह ।
'ऋषभदेव' हुआ गुण गेह, धनुप पंचसइ सोवन देह ॥१४
'आदीश्वर' निं सुत शत एक, 'भरतादिक' नामिं सुविवेक ।
आप पाट 'भरतेसर' आप्यो, 'बहली देश' 'बाहूबलि' थाप्यो ॥१५॥
'भरत' तणा अठाणुं भाइ, तेमा एक'मरुदेव' सवाई ।
तिणि निज नामि वसाव्यो देश, तेह भणी भणियइ 'मरु देश' ॥१६॥
ईति अनीति नहीं लवलेश, धर्म तणो ते कहिइ देस ।
चोर चरड नी न पडइ धाडि,....... ....॥१७॥
वड़ा वड़ा जिहां छइ व्यवहारी, सत्रूकार करइ अनिवारी ।
मोटा तीरथ नी जिहा सेवा, मोतीचूर मिठाइ मेवा ॥१८॥
राजा पिण जिहां धरम करावइ, परमेसर नी पूजा मंडावइ ।
सहजिं जीव अमारि पलावइ, आहेडा उपरि नवि आवइ ॥१९॥
सूर सुभट माटी मुंछाला, करि झलकइ करवाल कराला ।
व्यापारी दीसइ दुंदाला, घरि घरि सुभिख सुगाला ॥२०॥

देस मोटो तिम मोटा कोस, भोला लोक नहीं मनि रोस ।
बोलइ भाषा प्राहि अटारी, कडि वाधइ बहु लोक कटारी ॥२१॥
लोक धरइ हाथि हथिआर, वाणिग पणि झूठा झूझार ।
रण रिडता पणि पाछा पग नापइ, साहमो साहमणि नइ थिर थापइ॥२२
कपट विहूणो बोलइ गाढिइ, गरढो पणि जिहा घुंघट काढइ ।
विधवा पणि पहरइ करि चूडि, राव रसोइ रावइ रूडी ॥२३॥
प्रह्रो पाहुणइ सबलै सजाइ, राय राणा नी परि भुजाइ ।
पाटभक्त मनमा नहीं द्रोह, स्वामिभक्त स्यु अधिको मोह ॥२४॥
पुण्यवन्त प्राहि नहि खुट, वाहण साहण चढवा ऊट ।
जिहा थाकइ तिहा लिइ विश्राम, चोर चरगार तणु नहीं नाम ॥२५॥
लोक लारा लीलाइ चालइ, सोना रूपी (या) हाथि उछालइ ।
दुस्मन नइ सिर देवा दोट मोटा 'मारूआडि' नवकोट॥२६॥
प्रथम कोट 'मडोवर' ए ठाम हुन (णा) 'जोवनयर' अभिराम ।
बीजो 'अर्बुद' गढ त जाण्यो, त्रीजो गढ 'जालोर' वखाण्यो ॥२७॥
चोथो गढ त 'नाहडमेर', पाचमो 'पारकरो' नहीं फेर ।
'जेसलमेरि' छठो कोट, जिणि लागइ नहिं व री चोट ॥२८॥
कोटडइ' सातमो कोट वडेरो, आठमो कोट कह्यो 'अजमेरो' ।
कोइ 'पुष्कर' कोइ कहइ 'फलवद्धी' नवकोटी 'मारू आडि' प्रसिद्धी ॥२९

दोहा।

धन 'मडोवर' मरुधरा, जिहा 'मडोवर' 'पास' ।
'गुणविजइ' कहइ प्रभु पूजता, पूरइ मननी आस ॥३०॥
आज सफल दिन मुझ हु(यो)उ, अवहु हु(य)उ सनाथ ।
'गुणविजय' कहइ जव मुझ मल्यो 'फलवधि' 'पारसनाथ' ॥३१॥

ढाल :- चौपाइ ।

'मरु' मण्डल माहि 'मेडतु', दालिद्र दुख दूरि फेडतउ ।
तेहनी कीरति जग मा घणी, एहवी लोक वात मइं सुणी ॥३२॥
जिन शासन माहि बोल्या बार, चक्रवर्ती 'भरतादिक' उदार ।
तिम शिव सासनि चक्री होइ, च्यार उपरि अधिका वलि दोइ ॥३३॥
तेमां धुरि 'मानधाता' भण्यो, चक्रवर्ती ते मूलि जण्यो ।
तव माता पहुती परलोक, राजलोक मधलइ तव शोक ॥३४॥
किम ए बाल वृद्धि पावस्यइ, इंद्र कहइ मुझ निधा(त्रा?) वसइ ।
तिण कारणि 'मानधाता' कह्यउ, चक्रवर्ती पहलिउ गहगह्यो ॥३५॥
दान देवा घरि साम्हो जाय, ते मोटो हुउ महाराय ।
कोडा कोडि वरस तसु आय, प्रजा तणुं पीहर कहवाय ॥३६॥
कृत युग मा ते (हुयउ) प्रसिद्ध, इन्द्रइ राज्य थापना किद्ध ।
तिणि नगर वास्युं 'मेडतुं', लीलाइं लखमी तेडतुं ॥३७॥
'मेडतुं'ते 'मानधाता पुरी', जेहथी लाजी 'अलकापुरि' ।
जे मांटइ तिहां धनपति एक, इणि नगरि धनवन्त अनेक ॥३८॥
लोक वात एहवो सांभलि, साच्युं ते जाणइ केवली ।
'मेडता' नी महिमा अति घणी, तिण वेला 'मेडतीआ' धणी ॥३९॥
चउपट चहुटां केरि ओली, गढ़ मढ़ मन्दिर मोटी प्रोलि ।
घरि घरि उछरंग कल्लोल, बाजइ मादल सुगल ढोल ॥४०॥
चिहु दिसि सजल सरोवर घणां, देराणी जेठाणी तणां ।
कुंडल सरवर सोहामणुं, जाणे कुण्डल धरणी तणुं ॥४१॥

गाजइ गयवर हय (व)र घट्ट, व्यवहारीआ नणा गज्ज घट्ट ।
वनवाडी ओपइ आराम, पासइ 'फल्वधि' तीरथ ठाम ॥४२॥
दश दश ना आवइ लोक, दादइ दीठइ नासइ सोक ।
परता पूरइ 'पास कुमार', रात्ति दिवस उघाडा वार ॥४३॥
इस्यु तीरथ नहीं भूमीतलि , माणस लाख एक जिहा मिलइ ।
पोस दसमी जिन जन्म कल्याण, 'मंडता' पासि इस्यु अहिनाण ॥४४॥
'मंडतु' दीठइ मन उलसइ, दवलोक ते दूरि वसइ ।
'मडतु' देखी लंका खिसी, पाणी आणइ वाणारसी' ॥४५॥
शिखर बद्ध ऊचा प्रासाद, नन्दीश्वर स्यु माडइ वाद ।
सत्तरभेद पूजा मडाण, रसिया श्रावक सुणइ वखाण ॥४६॥
महाजन नि मनि मोटी दया, राऊ लोक उपरि बहु मया ।
ठामि ठामि तिहा सत्रुकार, तिणि नगरी नित दय दयकार ॥४७॥
तणि नगरि महाजन मा वडो, 'चोरडिया' कुल नु दीवडो ।
'ओसवाल' अति अरडकमल, साह 'माडण' नन्दन 'नथमल्ल' ॥४८॥
तस घरि लक्ष्मी वासो वसइ, रूपि रति पति नइ ते हसइ ।
नाथू नइ घर गज गामिणी, 'नायक दे' नामि कामिनी ॥४९॥
मणि माणक मोटा मालिआ, सोना रूपा नी थालिया ।
सालि दालि मसाल सालणा, उपरि घल घल घी अति घणा ॥५०॥
'फुल्ला' दानी दिइ बहु दान, साहमी साहमणि नइ सन्मान ।
साधु साधवी घरि आवती, पाणी नी परि घी विहरति ॥५१॥
मीठाइ मेवा भरपूर, चोआ चदन अगर कपूर ।
'नायक दे' नवयौवन नारि, 'नाथू' सुख विलसइ ससारि ॥५२॥

पुण्यइ पामी ऋद्धि अपार, जग जण जपइ जै जैकार।
'सालिभद्र' सम सुख भोगवइ, सुखि समाधि दिन जोगवइ ॥५३॥
'नायक दे' नंदन दुइ जण्या, सकल कला गुण सहजि भण्या।
'जेसो' नइ 'कसो' तिस नाम, 'दशरथ' घरि जिम 'लखमण' 'राम'॥५४॥
त्रीजो सुत जायो तिण वलि, मात तात पुहती मनरली।
'मेडता' माहि हुआ आणंद, 'कर्मचंद' नामइ कुल चंद ॥ ५५ ॥
'कपूरचंद' चोथा नुं नाम, 'पंचायण' ते पंचम ठाम।
'नाथू' ना नंदण गुण भर्या, जाणिकि पाच पाडव अवतर्या ॥५६॥

दोहा

पाडव पाचइं माहि जिम, विचलो सुत सिरदार।
तिम 'नाथू' नंदन विचि, 'कर्मचंद' सुविचार ॥५७॥
विक्रम 'संवत सोलसइं' उपरि 'च्युंआलीस'।
शाके 'पनर नवोत्तरइ' पूरइ सजन जगीस ॥ ५८ ॥
उजल पखि फागुण तणइ, बीज दिवसि रविवार।
उत्तर भद्र पदा तणइ, चोथा चरण मझार ॥ ५९ ॥
राजयोग रलीयामणइ, फाग रमइ नर नारि।
'कर्मचंद' कुंवर जण्यो, जगि हुआ जय जयकार ॥६०॥
कर्क लगन मूरति भवनि, तिहा गुरु उंचइ ठामि।
बइठो तिणि तूठो दिइं, गुरु पदवी अभिराम ॥६१॥
त्रीजइ राहु सु खेत्रीउ, कन्या राशि निवास।
भाई भुज बलि दीपतौ, दुसमन थाइ दास ॥६२॥
रवि कवि बुध ए आठमइ, कुंभि लगन बईठ।
नवमइं भवनिं केतु कुज, पूरण चंद्र पइठ ॥६३॥

मंदि शनि नीचउ कहाउ, दशमइ भवनि उदार।
पणि फल उंचा नु दिइ, कद्र ठामि सुखकार ॥६४॥
ए शुभ वेला अवतर्या, 'कमचंद' सुखकन्द।
सुरि समाधि वाधतु, बीज थकी जिम चंद ॥६५॥

ढाल '—राग गोडी ।

इक दिन इम चिंतइ नायक द भरतार,
सुख सेजि सूतो, जाग्यो रयणि मझार।
मइ पून भव काइ कीधा पुण्य अपार,
तणि मही पाम्या सुख सघला संसार ॥ ६६ ॥
मुझ मंदिर मेड़ी, मणि माणक ना हार,
नित नवा पहरना नित नवला आहार।
नितु ? घर बार, अरथ गरथ भंडार
वलि पाम्या परिघल पुत्र कलत्र परिवार ॥ ६७ ॥
इणि भवि नवि कीधउ सूधो श्री जिन धर्म,
विष (य) रसि हुसी कीधा कोड कुकर्म।
'धन्नो' 'कयवन्नो' 'सालिभद्र' सुकमाल,
जोउ धर्मिइ तरिया वलि 'अवंति सुकमाल' ॥ ६८ ॥
ए विषय तणि रसि प्राणी नइ बहु रंग,
जिम नयण तणइ रसि दीवा पडइ पतंग।
रागि करि वध्यो बाँध्यो वाण कुरंग,
अम्नाडी पाडइ करिणी मद मातंग ॥ ६९ ॥

खारा नइ खोटा, मीठां मधुरा भक्ष,

काचा नइ कोरां, कंदा मूल अभक्ष ।

रयणि भोयण घण, परदारा गम(न) किद्ध,

तोहि तृपति नहीं मुझ, जिम खारइ जलि पिद्ध ॥७०॥

ए जरा धूतारी, धोइ देस विदेस,

विण साबू पाणी, उज्जल करस्यइ केस ।

तिणि विण आव्यइ जे, मइं कीधा बहु पाप ।

ते मुझ मनि जाणइ, जिम मा जाणइ बाप ॥ ७१ ॥

कोइ सुगुरु मिलइ सुं, निज पातिक आलोउं,

गुरु वाणी गंगा, पाप तणां मल धोऊं ।

एहवइं 'मेडता' मा, आव्या वड अणगार ।

श्री 'कमल विजय' गुरु, सकल शास्त्र भंडार ॥ ७२ ॥

साह 'नाथू' हरख्या, निरखी तस दीदार,

धन २ ए मुनिवर तपा गछ शृङ्गार ।

जाव जीव एहनिं द्रव्य सात आहार ।

मीठाइ मेवा, विगइ पंच परिहार ॥ ७३ ॥

ए गुरु संवेगी, वैरागी धन धन्न ।

ए मोटो पंडित, ठाणे पंचावन्न ।

आवी वंदी नइ, कही 'नायक दे' कंत ।

गुरुजी आलोयण आपो, मुझ एकंत ॥ ७४ ॥

चलता पंडित कहइ सुणिं तु 'नाथूसाह',

आलोयण लेयो, जब वंदउ गछनाह ।

આલોયણ ની વિધિ, ગીતારથ સમઝાઇ ।
दिइ अगीतार्थ तु, साम्हो पाप भराइ ॥ ७५ ॥
આલોયણ काजि, वीस वरस પડસીજઇ,
तिम जोअण सातसइ, गीतारथ शोधीजइ ।
तिणि कारणि तप गछ नायक गुरु नि पासि ।
लेयो आलोअण, अवसरि मनि उल्लासि ॥७६॥
वस्तु तव बोलइ, 'नायकदे' नु नाथ ।
ते दूर देशान्तरि, छइ तपगछ ना नाथ ॥
तुम्हे पणि गछ माहि, मोटा पण्डित राय ।
देस्यो આલોયણ, तउ छोडु तुम्ह पाय ॥७७॥
तव 'कमल विजय' गुरु, शास्त्र शाखि सव जाणी ।
'नाथू' मति दीठी, धर्म राग रंगाणी ॥
आलोयण दीधी, (मनवरी) बहु जगीस ।
उपवास छठ्ठ वहु, अट्ठम तिम चउवीस ॥७८॥
नायक दे' नायक, जोडी दुइ निज पाणी ।
तव बोलइ फरस्यु ए प्रमाण तुम्ह वाणी ॥
वलि तुम्ह पसायइ, हु(य)उ निर्मल प्राणी ।
आज थकी अभिग्रह, ठामि भात नइ पाणी ॥७९॥
આલોયણ करता चेत्यो, चतुर सुजाण ।
पूछइ निज नारी, तिम भाइ 'सुरताण' ॥
मुझ कह्यु करी नइ, लीजइ संजम जोग ।
जेहथी पामीजइ, अजरामर सुर भोग ॥८०॥

दोहा ।

साह 'मांडण' कुल जलधि नुं, हस्तिमल 'नथमल्ल' ।
विषम विषय रमि नवि छल्यो, चोखड चित्त छयल ॥८१॥
निज कुटम्ब तेडी करी, 'नाथू' कहइ निरधार ।
तुम्हे सहु(हुव)उ इकमना, लेस्युं संयम भार ॥८२॥
'कर्मचन्द' कुअर प्रमुख, सहु कहइ ए वात ।
अम्ह प्रमाण छइ तातजो, न करूं धर्म विघात ॥८३॥
जिम आलोयण अवशरि, मिल्या सुगुरु निकलङ्क ।
तिम हवि गछ नायक मिलइ, तो व्रत ल्युं निशङ्क ॥८४॥

ढाल राग तोडी:

इसा अवसरि 'लाहुर' सहरि करि, दुइ चउमासि ।
'विजयसेन सूरि' 'मेडतइ', आव्या जित कासी ॥
'नाथू' पाचइ पुत्र लेइ, गुरु नइ वंदावइ ।
'कर्मचन्द' मुख चन्द, देखि गुरुजी बोलावइ ॥८५॥
गछपति जंपति ए उदार, बालक शुभ लक्षण ।
जे चारित्र लेस्यइ सही, तो थास्यइ विचक्षण ॥
'नाथू' शाह चो भाव, संभलि मुनि नाथ ।
हरख्या चित माहि ज्युं, चढइ चिंतामणि हाथ ॥८६॥
गुरु कहइ 'नाथू' साह ! सुणो, चोमासा माहि ।
'हीरजी' दर्शन तणइ हेतु, पहुचुं उछाहिं ॥
'कर्मचन्द्र' कुंअर कुटम्ब सहु, साथ समेला ।
समय लेइ तु आवयो, थायो अम्ह मेला ॥८७॥

सीख दइ 'मेटता' थकी, 'सान्टी' पधारइ ।
पर्व पजूषण पारणइ, 'राणपुर' जोहारइ ॥
जगम थावर तीर्थ नेइ, मिलिआ 'वरकाणइ' ।
'जालोरउ' सघ वन्दवा, आ यो जग जाणइ॥८८॥
'कमल विजय' गुरु तिहा चउमासि, पूज्यना पग वन्दइ ।
'वीझो' वानु सघ रगि, नाचइ नव छदइ ॥
तिहा थी गुरु 'जेसवजी', 'सीरोही' आवइ ।
अनुक्रमि साम्हो सघ आवि, 'पाटण' पधरावइ ॥८६॥
पुण्यवन्त 'पाटण' प्रसिद्ध, नगरी सिरताज ।
तिहा 'हीरजी' निर्वाण जाणी, रहइ 'तप' गछ राज ॥
हवइ सुणउ जे 'मडत०', हुआ मटाण ।
चारित्र लेता 'कर्मचन्द्र', प्रत्यक्ष जग भाण ॥६०॥
जीमणवार जलेबीइ, बहु गाम जीमाडइ ।
'नायक द' पति पाति रगि, करि मोटी माडइ ॥
सोना रूपा ना कचोल, थाली सुनि ढाली ।
सालि दालि शुचि सालणा, घल घल घी नाली ॥६१॥
दही करम्भ घोल झोल, उपरि तम्बोळ ।
नागरवल्लि सोपारी पारी, यलि कुसुम रोल ॥
चन्दन केसर छाटणा, माणस लख मिलीया ।
वागा लाल गुलाल जाणि केसूडा फलिआ ॥६२॥
मिल्या महाजन माडवा, बइठा बहु टोला ।
चालीसा दिवसा लगइ, लीधा बन्नउला ॥

देव तणो वन भक्ति युक्ति, गुरु गुरुणो तेड्या ।
साहमी साहमिणी संविभाग, करि पानक फेड्या ॥६३॥
सणगार्या सत्र हाट पाट, चहुटा चउरासी ।
रूडो गूडी बहुत तेज, नेजा उल्लासी ॥
'मेडतीआ' म हराण तेणि, दीवा नीसाण ।
वाजइ मङ्गल तूर पूर, पडइ कुमती प्राण ॥६४॥
धवल गीत गाइं अपार, गोरी गुण उ(ओ?)री ।
'कर्मचन्द्र' मुखचन्द्र देखि, नाचंनि चकोरी ॥
भड (ट्ट) भोजिग बहु भट्ट नट्ट, बोलइ विरुदाली ।
लंख मंख खेलन्ति खग्र, कर देता ताली ॥६५॥
'कर्मचन्द' कुंअर उदार, शृङ्गार करावइ ।
तिम विहु वाधव मात तात, 'सुरताण' सुहावइ ॥
माथइ मउड विसाल भाल, कुण्डल दुइ दीपइ ।
हियडइ मोती तण (उ) हार, गंगाजल जीपइ ॥६६॥
बाजू वंधन वहरखा, कर कंकण जडीआ ।
दीख्या लेवा काज सज, सिंधुर शिरि चढ़िआ ॥
बोलइ इम गुण लोक थोक, परदेसी पाथू ।
छत्रीसे वरसे छयद्दा, धन २ ए नाथू ॥६७॥
धन २ कुअर 'कर्मचन्द', धन २ ए भाइ ।
धन २ शाह 'सुरताण' धन, 'नायक' दे माइ ॥
भुगल भेरि नफेरी नाद, वाजइ सरणाइ ।
एक भणइ ए 'वस्तुपाल', ए'भोज' सवाइ ॥६८॥

थानकि २ थाकणे, दीजइ जे मागइ ।
पच दण दया भरी, वलि चालइ आगइ ।
कप्पड कीधा कोट चोट, दमाम दीघो ।
'ओसवाल' भूपाल घन, इम कीरति कीधी ॥६६॥
याचक नइ धन कन कनक दान, देइ दालिद् खडइ ।
इम आडम्बर परिवर्या, आव्या वन खडइ ।
त्रिण प्रदक्षिण समोसरण, विधिस्यु गुरु वदइ ।
'कर्मचद' सकटुन लेइ, चारित्र आणदइ ॥१००॥

दोहा:—

'कर्मचद' रवि ऊगतउ तप गण गयण उद्योत ।
दुरित तिमिर दूरि किआ, तिम कुमती खद्योत ॥ १ ॥
'माडण' कुल मडण करइ, 'महमडलि' उल्लास ।
सवत 'सोलइ बावनइ, बीज' दिवसि 'माह' मास ॥ २ ॥
'जेसौ' थिर थापी घरे, तिम 'पचायण' पुत्र ।
ऊनी ऋद्धि छाडी लिय, छइ (६) माणसे चारित्र ॥ ३ ॥

ढाल राग धन्याश्री:—

तिहा थी त मुनि चालइ, निरत कषाय नइ पालइ ।
आव्या गूजर दस, पाटणि कीद्ध प्रवेस ॥ ४ ॥
'विजयसेन' सूरिराय, प्रणमि पातक जाय ।
ते छइ नड (६) दीधी दिक्षा, ग्रहणा सेवना शिक्षा ॥५॥
'नेमिविजय' 'नाथू' जाण, 'सूरविजय' 'सुरताण' ।
'कर्मचन्द' मुनि नाम, 'कनकविजय' गुणधाम ॥ ६ ॥

'केसा'मुनि तणुं नाम, 'कीर्त्ति विजय' अभिराम।
'कपुरचन्द' ते लहि(य)इ, 'कुंअरविजय' मुनि कहि(य)इ ॥७॥
सवला मा सिरदार, 'कनक विजय' अणगार।
ए मोटउ महाभाग, श्रीआचारज लाग ॥ ८ ॥
पोतानुं पटधारी, 'विजयदेव' गणधारी।
तेहनइ ते शिष्य दीनो, जडिउ कनक नगीनो ॥ ९ ॥
'कनक विजय' मुनि चेलो, कलपलता तणु वेलो।
'विजयदेवसूरि' पासि, सगला शास्त्र अभ्यासि ॥ १० ॥
गुरु नुं पास न मुकइ, विनय वडा नो न चूकइ।
नाममाला नइ व्याकरण, कीधा कंठ आभरण ॥ ११ ॥
जोतिष तर्क विचार, जाणइ अंग इग्यार।
'पण्डित' पदवी विशिष्टा, 'सोल सत्तरि' प्रतिष्टा ॥ १२ ॥
'विसा' 'वदो' वित्त वावइ, 'अम्हदावाद' सोहावइ।
खरची अति घणी आथि, 'विजयसेन सूरि' हाथि ॥१३॥
'जेसिग' नुं निरवाण, 'खंभाइति' जग भाण।
पाटि पटोधर पूरो, 'विजयदेव सूरि' सूरउ ॥ १४ ॥
'जेसिगजी' पाट दीपइ, तेजि सूरज जीपइ।
पूरइ संघ जगीस, 'श्रीविजयदेव सूरीस' ॥ १५ ॥
भलउ भटारक भावइ, 'पाटणि' चउमासु आवइ।
सोल तिहुतरा वर्षि, 'लाली' श्राविका हर्षी ॥ १६ ॥
प्रौढ़ प्रतिष्टा ते मंडइ, दानि दालिद खंडइ।
पोस बहुल छट्ठि सार, नही जिहां दोष अढार ॥१७॥

'श्रीविजयदेव' सूरिंद, सकल संघजि आणंदइ ।
'कनकविजय' कविराय, कीधा श्री उवझाय ॥ १८ ॥
इम जे गुरु नि आराधइ, ते सुख संपति साधइ ।
'विजयदेव' गणधार, भूतलि करइ विहार ॥ १९ ॥
माहि 'सलेम' उदार, करवा सुगुरु दीदार ।
'मांडवगढ' गुरु तेड्या, कुमति ना मद फेड्या ॥ २० ॥
दखी 'तपगछ नाह', खुसी भयो पातिसाह ।
जगगुरु पटि पूर, यह 'विजय देव' सूर ॥ २१ ॥
गाहि 'जहांगीरी' थापई, नाम 'महातपा' आपइ ।
चइक गुरु मोटे, तोडि करइ तहु खोटे ॥ २२ ॥
नुहिरा निसाण गाजइ, पाति साही वाजा वाजइ ।
मिलीया 'मालवी' संघ, 'दक्षिणी' श्रावक संघ ॥ २३ ॥
पामरी दोइ पग लागा, पड कसरि आदिक वागा ।
मिसरू मखमल साइ, पगि पटकूल विछाइ ॥ २४ ॥
वींटी वढ गाठोडा, वलि दीधा घणा घोडा ।
श्रावक श्राविका आवइ, मोती थाले वधावइ ॥ २५ ॥
लोक लाग गुरु पूजइ, तहना पातिक धूजइ ।
गुरुजी नइ पटि दीवउ, 'विजयदेव' चिरजीवउ ॥ २६ ॥
दोहा।
'विजय देव' गुरु गाजता, 'गूजर' देशि विहार ।
अनुक्रमि करता आविया, 'सोरठ' देश मझार ॥ २७ ॥
'विमलाचल' तीरथ वडउ, सकल तीर्थ शृंगार ।
जिहां श्री'ऋषभ' समोसर्या, पूर्व नवाणु वार ॥२८॥

तिहा थी आव्यउ उल्लासइ, 'सानली' नगरि 'माह' मासि ।
'अजुआली छट्ठि' वखाणी, ॥३९॥
तीन मास लगइ गुरु मौनी, अमारि पलावइ 'सोनी' ।
सघ मुख्य 'रतनसी' साह, लीधो लखमी नु लाह ॥ ४० ॥
श्री'कनक विजय' उवज्झाय, वखाण करइ मुनिराय ।
पालइ निज गुरुनी आण, थास्यइ ते तपगछ भाण ॥४१॥
गुरुमीह विधानि वइठा, पातक पायालि पइठा ।
छट्ठ(अ)ट्ठम करइ अनेक, उत्रपउस (उपवास?) घणा सुविवेक ॥ ४२ ॥
आंबिल करी धवलइ धानि, पूरव दिसि वइसइ ध्यानि ।
पचखाण जणाता माटि, आपइ अक्षर लिखी पाटि ॥ ४३ ॥
श्रावक तिहा अगर कपूर, उगाहइ परिमल पूर ।
इण परि आचारय मत्र, आराधइ पूज्य पवित्र ॥ ४४ ॥
वैसाख मास जव आव्यो सुहिणइ सुर वात जणावइ ।
वाचक नि निजपट आपउ, गछ भार 'कनकजी' नइ थापउ ॥४५॥
ए वाणि सुणी गुरु हरख्या, जिम शीतल जल थी तरस्या ।
मह(य)लि बहु मगल कीजइ, गुरु आया 'आसातीजइ' ॥४६॥
आवइ तिहा सघ अपार, अग पूजा ना अबार ।
दुख दालिद दूरी गमाया, याचक घर सुभर भराया ॥४७॥
'सावली' नइ 'इडरि' जुइ, प्रासाद प्रतिष्ठा हुइ ।
'राय' दगि शोभा लीधी, गुरु दोइ चोमासी कीधी ॥४८॥
हवइ 'राजनगरि' गुरु आवइ, चउमासु सघ करावइ ।
बीजु 'बीबीपुर' माहि, गुरु चतुर चउमासु चाहइ ॥४९॥

'पारणि पुंजाउल' आवइ, 'सीरोही' मोह चडावइ।
अभिनव उदयो 'तेजपाल', प्रागवंश तिलक 'तेजपाल' ॥५०॥
राय 'अखयराज' वडह वीर, तेहनि घरि जेह वजीर।
ते शाह तिहा किणि आवइ, गुरुनि वंदः मनि भावः ॥५१॥
करइ यात्र 'विमल गिरी' केरी, जिणि भाजइ भवनी फेरी।
आवइ 'कमीपुर' फेरी, ढमकावइ ढोल नफेरी ॥५२॥
पूज्य जी नइ कहइ परधान, एतलुं दिइ मुझनिं मान।
करि मेल वधारो वानो, गुरुराज कह्युं न मानो ॥५३॥
गुरु कहइ अम्ह मनि नहीं खेस, टालइ तुम्हे सयल किलेस।
तिहा लिखित भाषित करि लीया, साहि सहु को नि दीया ॥५४॥
ए लिखित थकी जे चूकइ, तेहनिं जगदीसर मुकइ।
मांहो माहि मेळ कराव्यउ, पुण्यइ भंडार भराव्यउ ॥५५॥
आचारज 'विजयाणंदि', गुरु जी वाद्या आणंदइ।
श्री 'नंदीविजय' उवझाय, जेहनु मोटउ भडवाय ॥५६॥
'धनविजय' 'धर्मविजय' नाम, वाचक दुइ अति अभिराम।
इत्यादिक मुनि जग जाण्या, पुणि गुरु चरणे आण्या ॥५७॥
साह कहइ 'सीरोही' पधारउ, वलि वीनति ए अवधारो।
'तेजपाल' सीरोही आवइ, 'श्रीविजय देव' गुण गावइ॥५८॥

दोहा

'राजनगर' थी विचरता, करता संघ कल्याण।
'गायदेसि' गुरु आविया, जिहां राजा 'कल्याण' ॥५९॥
'विजयदेव सूरि' वड वखत, वाचक पंच समेलि।
'ईडरगिरि' शिर 'ऋषभ जिन', भेटयइ हुइ रंग रेलि ॥६०॥

'इडरगढ' मुख मडणउ, साहिब सुख दातार।
'गुणविजय' कहइ मगल करउ, 'सुमगला' भरतार ॥६१॥
'रायदेश' रलिआमणउ' 'ईडरगढ' सिरदार।
घरि २ उत्सव अति घणा, फाग रमइ नरनारि ॥६२॥

ढाल—फागनी

तपगछको गुरु राजीयो, रमइ पुण्यनु फाग ।ललना।
परणी समता सुन्दरी, जिनआणा वर वाग । ललना
पुण्य फाग गुरु जी रमइ ॥६३॥
पहिलु पाप पखालवा, नेम तप निर्मल नीर ।ल०।
चुआ चदन चित भलु, छाटइ चारित्र चीर ॥ल०।पु०।६४॥
परपरा आगम वडउ, चढवा तुग तुरग ।ल०।
ज्ञान ध्यान नेजा घणा लीला लहरि तरग ॥ल०।६५॥
सकल सघ सेना मिली, वाजइ जग जस ढोल ।ल०।
वाचक पडित उवरा, सूरा साधु अडोल ॥ल० । पु० ।६६॥
इक दिनि गुरुनि वीनवइ, 'तपागछ' परिवार ।ल०।
एक अम्हारी वीनति, अवधारउ गणधार ।ल० ।पु० । ६७॥
तपगछ मल तुम्हे करी, कीधु उत्तम काज ।ल०।
हवइ एक इहा थापीइ, आचारिज युवराज ॥ल०।पु०।६८॥
आज अबा रायण फल्या, आयउ मास वसत ।
चपक केतक मालती, वासती विकसत ॥ल०।पु०।६९॥
तिम अम्ह आशा वेलडी, सफल करउ मुनिराज ।ल०।
'कनकविजय' वाचक वरु, करउ पटोधर आज ॥ल०।पु०।७०॥

चलता गछ भूपति भगइ, जोउ महुरत सुद्धि ।ल०।
आचारय वाचक वलि, वलि जोसी बहु बुद्धि ।।ल०।पु०।७१।।
मन मान्युं महूरत मल्युं, शकुनादिक नी साखि ।ल०।
'अजुवाली छट्ठि' अति भली, वडि मास 'वैशाखि' ।।ल०।पु०।७२।।
गुरुजी नइ सहु वीनवइ, ए छइ दिवस पवित्र ।ल०।
सोमवार सुहामणा, रुडु पुण्य नक्षत्र ।।ल०।पु०।७३।।
'ईडर'संघ शिरोमणि, 'सोनपाल' 'सोमचन्द' ।
अधिकारी सा 'सूरजी', सुत 'सादूल' अमंद ।। ल० ।पु०।७४।।
'सहसमल' 'सुन्दर' भला, 'सहजू' 'सोमा' जोडि ।ल०।
'धन जी' 'मनजी' 'इंदुजी', 'अमीचंद' नहि खोडि ।।ल०।पु०।७५।।
वासी 'राजनगर' तणा, संघवी 'कमलसीह' । ल० ।
'पारिख' 'अहमदपुर' तणा, 'वेला' सुत 'चापसींह' ।ल०।पुण्य०।७६।
'पारिख' 'देवजी' 'सूरजी', 'थान सींग' 'रा(य)सींग' । ल० ।
साह 'मामा' 'तोल्हा' भला, साह 'चतुर्भुज सिंघ' ।ल०।पुण्य०। ७७ ।
'जागा' 'जसू' 'जेठा' भला, भाई गुरु ना होइ । ल० ।
'कोठारी' 'मंडण' मुखी, 'वछराज' रहिआ जोइ ।ल०।पुण्य०।७८।
'कर्मसीह' नइ 'धर्मसी', 'तेजपाल' समउ न कोइ । ल० ।
'अखयराज' राचा वरु, मंत्री 'समरथ' सोइ ।ल०।पुण्य०।७९।
मंत्रि 'लखू' नइ 'भीमजी', 'मामा' 'भोजा' जोइ ।ल०।
'फडिआ' 'मालजी' 'माणजी', 'लखा' 'चोथिआ' दोइ ।ल०।पुण्य०।८०
'गांधी' 'वीरजी' 'मेवजी', तिम वलि 'वोरजी' साह ।ल०।
'देवकरण' 'पारिख' 'जसू', उ करडि उछाह ।ल०,पुण्य०।८१।

'भाणजी' शाह 'सूरजी', तिम वली 'तेजपाल' ।ल०।
इत्यादिक 'इडर' तणउ, मिल्यउ सघ सुविशाल ।ल०।पुण्य०।८२।
'चावड' सघ सहु मिल्यो, 'अहिम नगर' नु सघ ।
'सावली' नु सघ सामठउ, 'पदमसिंह' 'चापसीह' ।ल०।पुण्य०।८३।
साह 'नाथर' सुत हवि लिहा, 'सहजू' साह उदार ।ल०।
दानि मानि आगलउ, 'ईडर' शोभाकार ।ल०।पुण्य०।८४।
शिणगारी निज घर घणु, तेड्या 'तपगछ' नाथ ।ल०।
पट्ट देवान कारणि, सघ चतुविध साथि ।ल०।पुण्य०।८५।
इण अवसरि बोलविआ, 'धर्मविजय' उवझाय ।ल०।
'लावण्यविजय' नामइ वलि, वारू वाचक कहाय ।ल०।पुण्य०।८६।
वर चारित 'चारित्रविजय', वाचक कुल कोटीर ।ल०।
चोथा पण्डित परगडा 'कुशलविजय' वजीर ।ल०।पुण्य०।८७।
'कनकविजय' वाचक तुम्हो, तेडउ एणि आवासि ।ल०।
तब ते च्यार मळपता, पुहता वाचक पास ।ल०।पुण्य०।८८।
कहउ तुम्ह तुठउ गुरु, निज पद दिइ सुविवेक । ल० ।
विजयवंत वाचक वदइ, गुरनि शिष्य अनेक ।ल०।पुण्य०।८९।
तुम्हे कहउ छउ ते सही, पणि तुम्ह पुण्य अपार । ल० ।
लछि आवती लीजीइ, गुरुजी द्यइ गछ भार ।ल०।पुण्य०।९०।
इम गुरु चरणे आणिया, माणस दसइ थाट ।ल०।
'हीरइ' जिम 'जेसिंघजी', तिम थाप्या गुरु पाटि ।ल०।पुण्य०।९१।
वास थाल तव आणीउ, सा० 'सहजू' अभिराम ।ल०।
वास ठवइ गुरजी करइ, 'विजयसिंह सूरि' नाम ।ल०।पुण्य०।९२

'कीरतिविजय' 'लावण्यविजय', वाचक पद दोइ दीद्ध ।
आठ विबुध पद थापीआ, मया सुगुरु इम कीद्ध ।ल०।पुण्य०।६३।
श्रीफल करी प्रभावना, जीमण चार अवार ।
महमूदी 'सहजू' तिहा, खरची पंच हजार ।ल०।पुण्य०।६४।
'कल्याणमल्ल' राय रञ्जिआ, 'इडर नगर' मझार ।ल०।
सा० 'सहजू' उत्सव करइ, वरत्यो जयजयकार ।ल०।पुण्य०।६५।
वलि ज्येठ माहि तिहा, बिम्ब प्रतिष्टा एक । ल० ।
सा० 'रहीआ' उत्सव करइ, खरचइ द्रव्य अनेक ।ल०।पुण्य०।६६।
बीजइ पखवाडइ वली, अमराउत जस लिद्ध ।ल०।
'पारिख' 'देवजी' नी घरि, पूज्य प्रतिष्टा किद्ध ।ल०।पुण्य०।६७।
संवत 'सोल इक्यासी(य)इ', उत्सव हुआ आणंद ।ल०।
'विजय देव सूरि' थापीआ, 'विजयसिंह' सूरिंद ।ल०।पुण्य०।६८।
धवल मंगल दिइ कुल वहू, वाजइ ढोल नीसाण ।ल०।
'विजय देव' गुरु पाटवो, प्रगटिउ तप गछ भाण ।ल०।पुण्य०।६९।
गुरु आचारज जोडली, 'इडरगढ़' चउमासि ।ल०।
राय 'कल्याणई' राखीआ, पहुंचाडो मन आसि ।ल०।पुण्य०।२००।

दोहा :

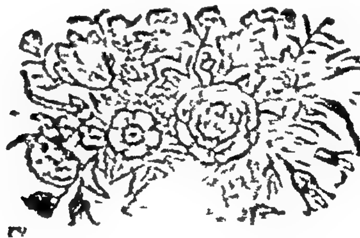
एहवइ 'सीर (ही)' थकी, तेडइ सा 'तेजपाल' ।
'आबू' पूज्यं पधारिइं, चैत्र मास सुर साल ।।१।।
तेह वीनति मन धरी, गुरुजी करइ विहार ।
सघ लोक बहुला मिलइ, उत्सव करइ अपार ।।२।।
साम्हा आवइ 'साहजी', 'दोसी' 'जोधा' जोडि ।
संघवी 'मेहाजल' मिली, गुरु पूजइ कर जोडि ।।३।।

गुरु उपरि करइ लूछणा, साह दिइ तरल तुरंग ।
घणा संघ स्यु गुरु करइ, 'आबू' यात्रा जंग ॥४॥
'गुण विजय' कहइ जग जस लि(य)उ, धन २ 'विमल' नरिंद ।
जिण 'अर्बुद' गिरि थापीउ, 'मरु देवी' नु नंद ॥५॥
'अर्बुद' गिरि तीरथ करी, 'वभणवाडि' वीर ।
सुगुरु 'सीरोही' आविया, जाणे अभिनवो'हीर' ॥६॥
चौमासु गुरुजी करइ, 'सीरोही' सुखठाम ।
'तेजपाल' शाह प्रमुख सहु संघ करइ शुभ काम ॥७॥
विजय दसमी दिन दीपतु, 'विजयदेव' गुरु पास ।
'विजयसिंह सूरी' तणो, गायउ विजय प्रकाश' ॥८॥

राग :—धन्याश्री ।

महावीर जिनपाटि धुरधर, स्वामि 'सुधर्मा' सोहइजी ।
'जंबू' 'प्रभव' 'शय्यंभव' सूरीय, 'यसोभद्र' मन मोहइजी ॥
इम अनुक्रमि 'जगचंद्र' महामुनि, च्युआलीसमि पाटिजी ।
'तपा' बिरुद तस राणइ थाप्यु, मेदपाटि 'आघाटि' ॥९॥
तिणि तप गणि गुणवन्नि पाटि, 'देवसुंदर' सुखकारीजी ।
पचासम पाटिइ गुरु सुन्दर, 'सोमसुन्दर' गणधारीजी ॥
तह थकी छपन्नमि पाटि, 'आणंदविमल' मुणि इंदोजी ।
'तपागछ' जेणि निरमल कीधउ, जिसो आसो॰ चंदोजी ॥१०॥
सत्तावनमि पाटि परम गुरु, 'विजयदान' वैरागीजी ।
अठावनमि पाटि हीरो, 'हीरजी' गुरु सोभागीजी ॥

उगुणसट्ठमि पाटि पुरन्दर, 'विजयसेन' गछ धोरीजी ।
पाटि साट्ठिमउ 'विजयदेव' गुरु, गुण गावइ सुर गोरीजी ॥११॥
'हीर' 'जेसंगजी' पाट दीपावइ, 'विजयदेव सूरि' मोहीजी ।
पूज्या नाम कर्म तप थापिउ, गावइ तप गछ लोहीजी ॥
तस पट दीपक रवि पतिजी, एक 'विजयसिंह' सूरीसीजी ।
इकसठमि पाटि पुरषोत्तम, पूरउ संघ जगीसीजी ॥१२॥
'सोलछयासीआ' वर्षि हर्षि, 'सीरोही' सुख पायउजी ।
'ऋषभदेव' प्रभु,पाय पसायउं, 'विजयसिंह सूरि' गायोजी ॥
'कमल विजय' जय मंडित पंडित, 'विद्याविजय' गुरु चेलोजी ।
'गुणविजय' पण्डित एम पयपइ, वाधउ तपगछ वेलोजी ॥१३॥
इति श्रीविजयसिंह सूरि विजय प्रकाश नाम रासि (संपूर्ण)
(पत्र ११ श्री तत्कालीन लिखित, जयचंद भण्डार बं० न' ६६)



ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह
चतुर्थ विभाग

(विभाग नं० १ की अनुपूर्ति)

कवि पल्ह विरचित।

जेसलमेर भाण्डागारे ताडपत्रीया खरतर पट्टावली

॥ श्री जिनदत्त सूरि स्तुतिः ॥



जिण दिट्ठइ आणंदु१ चडइ अइर रहसु चउग्गुणु।
जिण दिट्ठर झडहडइ पाउ तणु निम्मळ हुइ पुणु॥
जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ठु पुव्वुक्किउ नासइ।
जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दारिद्दु पणासइ३॥
जिण दिट्ठइ हुइ सुइ४ धम्ममइ अनुहहु काइ उव्वसहु५।
पहु नव फणि मंडिउ 'पास' जिणु 'अजयमेरि' किन पिक्खहु६ ॥१॥
मयण मकरि घरि धणुहु बाण पुणि पंच म पयडहि।
रूविण७ पिम्म पयावि वम हरि हरु मन(त) भिनडहि॥
रूउ८ पिम्मु ता बाण मयण ता दरिसहि थणुहर।
नम(व) फणि मंडिउ सीसि जाव नहु पक्खहि जिणवरु॥

१ आनंद, २ अइरहस, ३ पनासइ ४ सुइ, ५ उइ सहहु, ६ पिक्खहहु, ७ भूविण, ८ मूड

जइ पढ़िहसि 'पास' जिणिंद वसि नाणवंतह९ निम्मल रयण।
न सु धणुह९ बाण न रूव१० नहि न रूय११पिंमु हुइ हइमयण ॥२॥
नम (व) फणि 'पास' जिणिंदु गढिउ अन्नलि जु दिट्ठउ।
'अजयमेरि' 'सभरि१२नरिंदु' ता नियमणि तुट्ठउ॥
कंचणमउ अइ१३ कलसु सिहरि साणउ रज्जविअउ।
जणु सुतरणि तउ१४ तवइ तिव्वु (त्थु) आयासि सउन्नउ॥
जा वुक्कमिसिण ढक्कारविण करु१५ उब्भिवि फरहरइ धय१६।
'जिणदत्तसूरि' धर धम(व)लि जसि तापसिद्धि सुर भुयणि१७ कय॥३
'देवसूरि पहु' 'नेमिचंदु' बहु गुणिहिं पसिद्धउ।
'उज्जोयणु' तह 'वद्धमाणु' 'खरतर' वर लद्धउ॥
सुगुरु 'जिणेसरसूरि' नियमि 'जिणचंदु' सुसंजमि१८।
'अभयदेउ' सव्वंगु नाणि 'जिणवल्लहु' आगमि॥
'जिणइत्तसूरि' ठिउ पट्टि तहि जिण उज्जोइउ जिण-वयणु।
सावइहिं परिक्खिवि परिवरिउ मुल्लि महग्घउ जिव१९रयणु॥४॥
वणुह१९ धयवड२० वरिय सारि सिंगार सुसज्जिय।
सोहग्गिण गुडगुडिय पंच(व)र पडिम निमज्जिय॥
ति(नि)यड़ (रू)अ तेअ ग्गलिय२१ पिंम पडिकार निरुत्तिय।
रइ रणरह सुच्चलिय२२ गरुय माणिण म अमन्निय२३॥
करि कडयड२४ मुणि महिव्वइहिं रहिय रूवय संपुन्न भय।
'जिणदत्तसूरि सीहह' भयण मयण करडि२५ घड विहडि गय॥५॥

९ दंत, १० भूव, ११ भुय, १२ संभारि, १३ अह, १४ तओ, १५ कर उज्झिवि, १६ धर, १७ भवणि, १८ सुसंयमि, १९ जिम २० धरय, २१ आगलिय, २२ सुचलिय, २३ मइ अन्निय, २४ कडसड, २५ हकर घियड़,

तव तरप्फ भीसणह धम्म धीरिमसुरिम[२६] सुविसालह ।
संजम सिर भासुरह दुसहद(व)य दाढ करालह ॥
नाण नयण दारणह नियम निरु[२७] नहर समिद्धह ।
कम्म कोय(व)निठुरह[२८] विमलपह पुछ पसिद्धह ॥
उपसमण उयर[२९] धर दुव्विसह गुण गुजारव जीहह ।
'जिणदत्तसूरि' अणुसरहु पय पावक-रडि-घड-सीहह ॥६॥
जर-जल नहल-रउद्दु लोह-लहरिहि गज्जतउ ।
मोह मच्छ उच्छलिउ कोव कल्लोल वहतउ ॥
मयमयरिहि परिवरिउ वच वहु वल दुमचर ।
गव्व[३०] गरुय गभीरु असुह आवत्त भयकर ॥
ससार समुद्दु[३१] जु परिमउ जमु पुणु पिक्खिवि डरियइ ।
'जिणदत्तसूरि' उवएसु मुणि पर तरडड[३३] तरियइ ॥७॥
सावन किवि कोयलिन कवि सरह[३४] (य?) रिय पसिद्धिय ।
ठाइ ठाइ लक्खियइ[३५] मूढ निय चित्ति विरद्धिय ॥
दरहि न किवि पत्र[३६] ववितु परुपरु जुज्झहि ।
सुगुरु कुगुरु मणि मुणिवि न किवि पट्ट तर वुज्झहि ॥
'जिणदत्तसूरि' जिन नमहि पय पउम सच्चु[३७](गव्वु) निनमणि वहहि
ससार उयहि दुत्तरि पडिय 'तिनहु'[३८] तरडइ घडि तरिहि ॥८॥
तव सजम सयनियम-धम्म-कमिण वाचरियउ ।
लोह-कोह मय-मोह तहव मच्छिहि परिहरियउ ॥

२६ सुपि, २७ सनहर, २८ निट्ठुरह, २९ उपर, ३० गाथ, ३१ समुद्दु ३२ सुणिव, ३३ सुतरियइ, ३४ सरतरिय, ३५ लक्खियहि, ३६ परत्त, ३७ सच्चु, ३८ जिनहुँ

विसम छंदलक्खणिण सत्थ अत्थत्थ विसालह ।
'जिणवल्लह' गुरुभत्तिवंतु पयडउ कलिकालह ॥
अन्निहि वि गुणिहि संपुन्न तणु दीन दुहिय उद्धरणु धर ।
'जिणदत्तसूरि' 'पर पल्हम(?)णु तत्तवंतु सलहियइ धर ॥६॥
वक्खाणियइ त परम तत्तु जिण पाउ पणासइ ।
आरहियइ त 'वीरनाहु' कइ 'पल्हु' पयासइ ॥
धम्मु तु दय संजुत्तु जेण वरगइ पाविज्जइ ।
चाउ त अणखंडियउ जु बंदिणु सलहिज्जइ ॥
जइ ठाउ३९ त उत्तिमु मुणिवरहवि (पवर वसहिहो चउर नर ।
तिम सुगुरु सिरोमणि सूरिवर 'खरतर सिरि' 'जिणदत्त' वर ॥१०॥

१ इति श्री पट्टावली षट् पदानि । संवत् ११७० वर्षे अश्व युगाद्य पक्षे ११ तिथौ श्री मद्धारानगर्यां श्री खरतर गच्छे विधिमार्ग प्रकाशि वसतिवासि श्री जिणदत्त सूरीणां शिष्येण जिनरक्षित साधुना लिखितानि ।

२ इति श्री पट्टावली ॥ संवत् ११७१ वर्षे पत्तन महानगरे श्री जयसिंह देव विजयिराज्ये श्री खरतरगच्छे योगीन्द्र युगप्रधान वसति वासि जिनदत्त सूरीणा शिष्येण ब्रह्मचंद्र गणिना लिखिता ॥ शुभं भवतु श्री मत्पार्श्वनाथाय नमः सिद्धिरस्तु ॥



३९ ठाइ ।

॥ श्री नेमिचन्द्र भण्डारि कृत ॥

जिन वल्लभ सूरि गुरु गुणवर्णन



॥६०॥ पणमनि सामि वीरजिणु, गणहर गोयमसामि।
सुधरम सामिय तुलनि, सरणु जुगप्रधान सिवगामि ॥१॥
तिहुयु रणुद्ध स मुणिरयणु जुगप्रधान क्रमि पत्तु।
जिणवल्लह सूरि जुगपवर, जसु निम्मलउ चरित्तु ॥२॥
तसु सुहगुरु गुणकित्तणइ सुरराओवि असमत्थो।
तो भत्ति भर तर लिओ, कहिउ कहिसु हियत्थु ॥३॥
कह भवसायर दुहपवरु, कह पत्तउ मणुयत्तु।
कह जिणवल्लहसूरि वयणु, जाणिउ समय-पवित्तओ ॥४॥
कह सुबोह मणउल्लसिय, कइ सुद्धउ सामन्नु।
जुगसमिल्ला नाएण मइए, पत्तउ जिण-विहि-तत्तु ॥५॥
जिणवल्लहसूरि सुहगुरहे, बलिकिज्जउ सुरगुरुराय।
जसु वयणे विजाणियइ तुट्टइ कम्म कसाय ॥६॥
मूढा मिल्हहु मूढ पहु, लागहु सुद्धइ धम्मि।
जो जिणवल्लहसूरि कहिओ, गच्छहु जिम सिवधरमि ॥७॥
अधीर माय-पिय वज्जनह, अथार रिद्धि लिहगसु।
जिणवल्लहसूरि पय नमओ, तोडइ भव दुह पासु ॥८॥

परसप्पणय न केवि गुरु, निम्मल धम्मह हुंति ।
सव्व तिदस पुर मन्नियइं, जे जिणवयण मिलंति ॥९॥
गुरु गुरु गाइवि रंजियइं, मूढा लोउ अयाणु ।
न मुणइ जं जिण आण विणु, गुरु होइ सत्तु समाणु ॥१०॥
जिम सरुणाईय माणुसह, कोइ करइ शिरछेओ ।
न मुणइ जं जिण-भासियओ, तिम कुगुरुह संजोओ ॥११॥
हुंडा अवसप्पणि असम गहु, दूसम काल किलिट्ठु ।
जिणवल्लहसूरि भइ नमहु, जेण उसुत्तु न सिट्ठउ ॥१२॥
जो जिह कुलगुरु आइयउ, तहि ते भत्ति करंति ।
विरला जोइवि जिणवयणु, जहि गुण तहिं रच्चंति ॥१३॥
हाहा दूसम काल बलु, खल-वक्कत्तण जोइ ।
नासेगइ सुविहिय तणइ, मित्तु वि वयरिओ होइ ॥ १४ ॥
तिहि चेडाहि विहउं नमओ, सुमुणिय परम उछाह ।
हियउइ जिण विहिक्कु पर, अनुसुद्धउ गुण जाह ॥१५॥
जे जिणवरु पहु होलियइ, जणु रंजियइ हयासुं ।
सो वि सुगुरु पणमंतह, कुट्टिल हियइ हयासु ॥ १६ ॥
मरिय भवे जिओ वीर जिणु, इक्कि उसुत्त लवेणु ।
कोडाकोडि सागर भमिओ, किं न सुणहु मोहेण ॥१७॥
तव संजम सुत्तेण सउ, सव्ववि सहलउ होइ ।
सो वि उसुत्तलवेण सउ, भव-दुह-लक्खहं देइ ॥ १८ ॥
माया मोह चएउ जण, दुलहउं जिण विहि-धम्मुं ।
जो जिणवल्लह सूरि कहिओ, सिग्घं देइ शिव-संमुं ॥१९॥

ससओ कोइ म करहु मणि, ससइ हुइ मिच्छत्तु ।
जिणवल्लहसूरि जुग पवर, नमहु सु त्रिजग-पवित्तु ॥२०॥
जई जिणवल्लहसूरि गुरु, नय दिठओ नयणेहिं ।
जुगपहाणउ विजाणियए, निछई गुण-चरिएहिं ॥२१ ॥
त धन्ना सुकयत्थ नरा ते ससार तरंति ।
जे जिणवल्लहसूरि तणिय, आणा सिरे वहति ॥ २२ ॥
तेहि न रोगो दोहग्गु तहु, तह मगल कल्लाणु ।
जे जिणवल्लहसूरि थुणिहि, तिन्नि सझ सुविहाणु ॥२३॥
सुविहिय मुणि चूडा रयणु जिणवल्लह तुह गुणराओ ।
इक्क जीह किम सथुणेउ, भोलओ भत्ति सुहाओ ॥ २४ ॥
सपइ त मन्नामि गुरु, धम्माह उग्गइ सूर ।
जे जिणवल्लह पउ कहहि, गमइ अमग्गाउ दूरि ॥ २५ ॥
इक्क जिणवल्लह जाणिवइ, सद्दुति मुणियइ धम्मु ।
\ अवसुहु गुरु सवि मानयड, तित्थ जिम धरइ सुहम्मु ॥२६॥
इय जिणवल्लह थुइ भणिय, सुणिवइ करइ कल्लाणु ।
दओ वोहि चउवीस जिण, सासय-सोक्खु निहाणु ॥ २७ ॥
जिणवल्लह क्रमि जाणियइ हिवमइ तसु सुरीसु ।
जिणदत्तसूरि गुरु जुगपवरो, उद्धरियउ गुरुवसो ॥२८॥
तिणि नियपए पुण ठावियओ, वालओ सींह किसोर ।
पर-मयगल-दल-दलणु, जिणचदसूरि मुणीसरु ॥ २९ ॥
तस सुपट्टि हिव गुरु जयओ, जिणपति सूरि मुणिराओ ।
जिणमय विहिउज्जोय करु, दिणयर जिम विक्खाओ ॥३०॥

पारतंतुविहि विसयसुहु, वीरजिणेसर वयणु।
जिणवइ सूरि गुरु हिव कहओ, मिच्छड अन्नु कवणु ॥३१॥
धन्न तइं पुरवर पट्टगइं, धन्न ति देस विचित्त।
जहिं विहरइ जिणवइसुगुरु, देसण करइ पवित्त ॥३२॥
कवण सु होसइ देसडओ, कवण सु तिहि स मुहुत्त।
जहि वंदिसु जिणवइ सुगुरु, निसुण सुधम्मह तत्त ॥३३॥
सल्लुद्धार करेसु हउ. पालि सुदड्ढ सम्मत्तो।
नेमिचंद इम विनवइए, सुहगुरु-गुण-गण-रत्त(त्तो) ॥३४॥
नंदउ विहि जिण मंदिरहि, नन्दउ विहि समुदाओ।
नंदउ जिणपत्तिसूरि गुरु, विहि जिण धम्म पसाओ ॥३५॥

इति नेमिचंद भंडारि कृत गुरु गुणवर्णन ॥



कवि ज्ञानहर्ष कृत

श्रीजिनदत्तसूरि अवदात छप्पय

वत ज्ञान रिक्ख थिर ॥२१॥

जनम भयउ प्रातकउ, नामदियउ चाचक ताकउ ।
दुआदस वरस जब भए, कयंउ राज 'कनवज' भूपाकउ ॥
चढे 'सीह' 'द्वारिका', जाति करणण कु निश्चल ।
लयउ कुंवर 'आसथान', राणी जादु कउ अटूल ॥
राव 'वरनाथ' साहसीक मणि, जाति चले 'सीह' 'द्वारिका' ।
'ज्ञानहर्ष' लहे पचसै सुहड, परमु पर दल मारका ॥२२॥
असुवार सइ पच लेहु, 'सीहउ' यू चल्ले ।
पट्ट यप्पि लहु अनुज, सुहड सग रक्खे भल्ले ॥
सबहु सु करि भिक्ख, म 'द्वारामति' डेर ।
दिद्ध 'सींह' महाराज, सुम्म(न्न?) महुरत सबेर ॥
'आसथान' कुवर आसाढ सिधि, लेहु सग दरकूच चलि ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ तिस वार निच भयउ इक्क अचरिज्ज इलि ॥२३॥
'सिह' आए 'मरुदेस', सुपन इक्क देख्यउ रानी ।
घृम्भ पाहर सब देम, हम्म अन्तरि चींटानी ॥
वयण सुणि 'सीह' यू, चोट वाही हुइ समु त ।
दिवस ऊगात 'सीह' कहत, हुइगउ कर अपणउ जहा तहा ॥
मम करहु राणी क्रोध हम, नींद गमावण हेत हूय ।
ज्ञान हर्ष वदति तिस हेत करि, भए राज वर सव्व भूय ॥२४॥

अत्र आख्यान कवित्त ।

'मारुयारि' कइ देसि, सहिर 'पल्लीपुर' अक्खुं ।
तहां हइ पुर नाह, वं(चं ?)भ 'जग्सोहन' दक्खुं ॥
'खेरनगर' 'महेश', 'गुहिल-वंशी' हइ राजा ।
मारण 'पल्लीनगर', चल्यउ सो करत दिवाजा ॥
तिनवार 'वंभ जस्सोहरु', वडइ क्युंहि 'पल्ली' रहइ ।
कोऊ रखुं आणि आषाढ मिधि, 'ज्ञानहर्ष' कवि यूं कहइ ॥२५॥
'पल्लिनगर' चउमास, रहे खरतर गच्छ नायक ।
तिन गुरु कउ जस बहुत सुणयउ, विप(प्र ?) लोकां वाइक ॥
ताकउ नाम 'जिनदत्त सूरि', मंत्र धारी सूर वर ।
पंच नदी पंच पीर, साधि लिद्धउ सुर कउ वर ॥
'माणभद्द' जक्ख हाजर रहइ, तरउ खरउ सेवा करइ ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ गुरु कित्त बहु, पार न सुर गुरु नहु करइ ॥२६॥
गुरु पहुंचे 'मुलतान', पीर पंच आए नाम सुणि ।
पत्थर पारे पीर, गुरु वरसे कंचण मणि ॥
पीर ग्रहे गुरु पाइ, संघ पइसारउ कीनउ ।
मूयउ मुगल कउ पूत, जीउ गुरु घाले दीनउ ॥
सहु लोग देखि अचरिज भए, इन गुरुका अवदात बहु ।
'ज्ञानहर्ष' कहत 'जिणदत्त' की, करत देव कीरत सहु ॥२७॥
गुरु करत वखाण, धरे आगे चउसठि गिणी ।
छोटेसे पाटले, आइ बइठी तिहां जोगिणि ॥

चउसठि तिय कइ रूप, आई गुर छलनइ कु ।
गुरु यू तिण कू ठली, लेइ उठा पटलइ फु ॥
पट्टले रहे आसण चढे, करामत गुरुकी वडी ।
'ज्ञानहर्ष' कहत कर जोडि कर, रही देव चउसठ खडी ॥२८॥
करहु दूर पाटले, गुरु हारे हम तुम्ह पइ ।
चाहीजइ कछु बात, लेहु गुरु यू तुम हम पइ ॥
कहइ गुरु हम साधु, लोभ ममता नहीं करना ।
परतिख भइ तब देव रूप बहु चउसठि भइना ॥
वर सात दइत हरखित भइ, सहु लोगा सुणता सम्मुख ।
'ज्ञानहर्ष' कहत अवदात यउ, परसिध हइ सब लोक मुख ॥२९॥
इइ हइ देव वर मत्त, नाम गुरु लेता बिजुरी ।
परइ नहीं किस परइ, प्रथम अपउ वर थइ सगरी ॥
गाम नगर मणिमर्त्य, एकु हुइगउ तुम्ह श्रावग ।
तुम श्रावग 'सिन्धु' गयउ, धन ल्यावइ व्यापारग ॥
वर चउथउ भूत प्रेत ज्वर, आधि व्याधि सबही टरइ ।
'जिणदत्तसूरि' मुखि जप्पता, 'ज्ञानहर्ष' कवि उच्चरइ ॥३०॥
चोर धाडि सकट्ठ मिटति गुर नाम पञ्चम वर ।
छट्ठउ जलहु तरइ, जउ लू मुख समरइ सद्गुर ॥
सातमउ वर साधवी, ऋतु नावइ खरतर की ।
अपउ वर दे पग परी, बात सहु कही कइ उरकी ॥
समरता आइ खडी रहइ, बीर बावन्ने परवरी ।
'ज्ञानहर्ष' कहत निस निति प्रतइ, करइ नृत्य चउसठ सुरी ॥३१॥

'उज्जेनी' गुरु गए, देखि थाभइ गुरु हरख ।
जप्यउ मन्त्र करि ध्यान, लिद्ध पोथी आकरखे ॥
तिस विच सोवन सिद्ध, गुरु चहु विद्या पाउ ।
'चित्रोर' कउ भण्डार, तहा गुरु जाइ रखाइ ॥
इस पोथी की बात, 'कुंयरपाल' राजा सुणी ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ 'पाटणनगर' नवलख अनवारां धणी ॥३२॥
'कुंयरपाल' जिनधर्म, हइ श्रावक पूनम गच्छ ।
श्रावक सर्व बुलाइ, संघ नायक खरतर गच्छ ॥
गुरु यू कुं तुम लिखउ, हेम सिव पोथी आवइ ।
कागद संघ दरहाल, भेज पोथी मंगावइ ॥
गुरु लिख्यउ वचन पोथी परउ, छोर न पोथी वाचनी ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ भण्डार विच, सब कउ पोथी पूजनी ॥३३॥
गुरु 'कुंयरपाल' कउ, 'हेम' नामइ आचारिज ।
तिण पइ पोथी धरी, छोरि वाचइ गुरु आरिज ॥
कहत गुरु हम वत्तइ, अया छोरी नवि जावइ ।
साधवी गुरु की भइन, छोरितां आंख गमावइ ॥
पुस्तकिक उडि भण्डार विच, 'जेसलमेरन' कइ परी ।
'ज्ञानहर्ष' कहत तिम जाइगा, रक्खइ बहु चउसठ सुरी ॥३४॥
परकमणइ विच बीज, परत रक्खी गुरु ततखिण ।
'त्रिंबपुर' परो सृगी, गमी गुरु स्तोत्र तंज्यउ भण ॥
पतरइसइ गृह तहा, महेसरी डागा लूण्या ।
परबोधे श्रावक,....... .. .. ॥

१७वीं शताब्दी लि० (इस प्रतिका सातवा मध्य पत्र हमारे संग्रहमें)

*



श्री जिनेश्वर सूरिजी

(श्री जिनपति सूरि शिष्य)

कवि सोममूर्त्ति गणि कृत

श्रीजिनेश्वरसूरि संयमश्री विवाह वर्णन रास ।

चिंतामणि मण१ चिंतियत्थे,२ सुहियइ३ धरविणु पास जिणु ।
जुगपवरु 'जिणेसरसूरि' मुणिराउ,थुणिसु हउ ४ भत्ति आपणउ५गुरु १।
निय हियइ६ ठवहु वर ७मोतिय हारु, सुगुरु 'जिणेसरसूरि' चरिय ।
भविय जण जेण सा मुत्ति वर कामिणी,तुम्ह वरणमि एक ठियए८ ।।२
नयर 'मरुकोटु' मरुदेसु सिरिवर मउडु, सोहए६ रयण कचण पहाणु ।
जत्थ वज्जति नय मेरि भकारओ,१० पडिउ अन्नरस११ हियए घसक्को१२ ।।३।।
कन दसण कला कलि आवासु१३, महुर वाणी (य) अमिय झरतो ।
रहए तत्थ भण्डारिओ पुन्निमा,१४ चद जिम 'नेमिचदो' ।।४।।
सयल जण नयण आणद अमिय-छडा, रूव लावण्ण सोहग्ग चग१५ ।
पणइणी 'लखमिणी' तासु वक्खाणि,१६
पवर गुण गण रयण एग१७ खाणि ।।५।।

१c मणि, २c वि वियत्थे ३c सुहियय ४c हउ, ५a आपणउ, ६c हियय, ७a मोतिया, cमोतिय ८aए, ९bसोहइ, १०aभकारउ, ११cअ नयरस, १२bcधसक्को, १३cआ तासु १४cराउ पुनिम, १५cचद, १६cवरवाणि, १७b एक थाणि ।

वार पञ्चताल१८ विक्कम१९ संवच्छरे, मग्गसिर सुद्ध ग्गारसीए२० ।
'लखमा'ए विहि पुत्तु उपन्नु, नेमिचंद कुल मंडणउ [ए+] ॥६॥
'अंबा'ए विहि सुमिणउ२१ दिन्नु,२२
एउ२३ अम्हाणउ२४ मणि२५ धरिवि२६ + ।
'अंबडु'२७ नामु२८ तसु कियउं२९ पियरेहि,
रंग भरि गरूय-वद्धावणाए३० ॥७॥

धात: अत्थि पुहविहि अत्थि पुहविहि नयरु 'मरुकोट्टु',३१
भंडारिउ तहि३२ वसए, 'नेमिचंदु' गुण रयण सायरु ।
तस भज्जा 'लखमिणि', पवर सील+[वंत] लावन्न मणहर ॥
तह३३ उप्पन्नउ पुत्तु वरो,३४ रूविणि३५ देवकुमारु ।
'अंबडु' नाउं३६ पयट्ठियउ,३७ हूयउ जय जय कारु ॥८॥
अन्नि३८ दिसहो अंबडु कुयरु, पभणइ३९ मायह४० अग्गइ धीरु ।
इहु संसारु दुहह४१ भंडारु,
ता हउं४२ मेल्हिसु४३ अतिहि४४ असारु४५ ॥ ९ ॥
परणिसु संजम४६ सिरि वरनारी,
माइ माइए४७ मज्झु४८ मणह पियारी ।

१८b पचेताल, १९b विक्कम a विकम, २०b इकारसीए, २१b सुमिणए, २२b दोनु, २३b c एहु, २४b c अम्हारउ, २५a मगु bमनि, २६b cधरेवि, २७b cअंबडो, २८b नाउं, २९b कियउ, ३०b cवद्धावणए ।

३१c गरुकोट्टु, ३२a तह, + ab प्रति, ३३c तसु उपन्न, ३४a पुत्तुवरु, ३५a bरूविण, ३६a नामु, ३७a पयट्ठिउ, ३८b अन्निहि दिवसिहि अंबडु कुमर, c अन्निदिवसिहुउ अंबडु कुमरो, ३९a पभणय, ४०b माया आगइ धीरु (c रीह), ४१a b दुह, ४२a c ता हउ, ४३a मिल्हिसु, ४४a अत, ४५c असारो, ४६c संयमसिरि, ४७c माए b माइ, ४८b मुझ,

जासु पसाउण व छिउ४९ सिज्झए,५०

वलिवि न समारमि पडिज्जए५१ ॥ १० ॥

इह निसुणेविणु 'अरड' वयणु, पभणइ माया समलि लोयण।

तुहु नवि५२ जाणइ वालउ भोलउ,

इहु५३ व्रतु होइसइ५४ अरउ५५ दुहेलउ ॥ ११ ॥

मरु धरेविणु५६ निय भुयदंडिहि,५७

जलहि तरेवउ५८ अप्पुणि बाहहि५९।

हिंडेवउ असि धारह६० उय(व?)रि, लोह चिणा चावना इणिपरि ॥१ ॥

ता तुहु६१ रहि घर कहियइ लागि, ज तुह भावइ६२ वच्छ६३ तु मागि।

किंपि न भावइ६४ विणु संजमसिरि,

माइ६५ भणइ ज रुच्चइ६६ त करि ॥ १३ ॥

घातः—भणइ 'अनडु' भणइ 'अनडु' एहु संसार।

गुरु दुक्ख भरिपूरियउ,६७ माइ माइ ना वगि मिल्हिसु६८।

परणेविणु६९ दिक्खसिरि,७० विविह भोगि हउ सुक्ख माणिसु।

माइ७१ भणइ दुक्कर चरणु, तुहु पुणि अइ सुकुमालु।

कुमर भणइ दुक्करह७२ किणु, नहु छलियइ७३ कलिकालु७४ ॥ १४ ॥

४९a वछिर b वछिओ, ५०a सिज्झए b मीझए ५१a पडिज्जए b पडीजए, ५२a तुह b तुहु, ५३a एहु ५४b होसइ, a होसए ५ a सरओ दुहेलओ, ५६b c धरेवउ, ५७a भुयदंडहि, ५८c तरेवओ, ५९a अप्पण बाहइ c आपुण बाहुहि, ६०a धारा उयरि c धारह उवरे।

६१a तुह c तुहु, ६२a मागि, ६३c वछित ६४c भावए, ६५c माय, ६६b रुच्चइ, ६७b भरिपूरिवउ ६८a मेल्हिसु a मिल्हिसु, ६९b परिणेवा, ७०a दिक्खसिरे, ७१c माय, ७२a दुक्कर, ७३a छलिइ, ७४a किलिकालु,

'अंवडु' पभणइ साउ७५ सुणि, परिणिसु संजम लच्छि।
इग्गु जुग पहविविहि७६ सलहियइ, जायउ 'लखमिणि' कुच्छि७७ ॥१५॥
अभिनव ए चालिग जानउत्र, 'अंवडु' तणइ वीवाहि।
अप्पुगु७८ ए धम्मह चक्कवइ,७९ हूयउ८० जानह माहि ॥१६॥
आवहि आवहि रंगभरि, पंच-महव्वय राय।
गायहि गायहि महुर सरि८१, अट्ठय८२ पवयणमाय ॥१७॥
अठार८३ सहस८४ रहवरह,८५ जोत्रिय८६ तहि सीलग।
चालहिं चालहिं खंति सुह,८७ वेगिहि८८ चंग तुरंग ॥ १८ ॥
कारइ कारइ 'नेमिचंदु',८९ 'भंडारिउ' उच्छाहु।
वाघइ वाघइ जान९० देखि, 'लखमिणि' हरपु९१ अथाहु ॥ १९ ॥
कुसलिहि९२ खेमिहि९३ जानउत्र, पहुतिय९४ 'खेड' मज्झारि।
उच्छवु हूयउ९५ अइ ९६पवरो, नाचइ फरफर नारि ॥ २० ॥
'जिणवइ' सूरिण मुणि९७ पवरो, देसण अमिय रसेण।
कारिय जीमणवार९८ तहि, जानह हरिस भरेण९९ ॥ २१ ॥
'संति जिणेसर' वर भुयणि,१०० मांडिउ१०१ नंदि सुवेहि।
वरिसहि भविय१०२ दाण जलि, जिम गयणंगणि मेह ॥ २२ ॥

७५c म य, ७६a जुपउविहि, ७७b कुक्खि, ७८b अप्पुणि. c आपुणु, ७९a चक्कवय, ८०a हूयय, ८१a रंगभरि. ८२a अट्ठ, ८३a अट्ठार. ८४a सहस, ८५a रहवर, ८६a जोत्रिया, ८७b.c सुह, ८८a वेगहिं।

८९b नेमिचंद्र, ९०a जानह, ९१a हर्ष, ९२a कुशलहि. ९३a खेमहि, ९४a पहुतो. ९५a हुयउ, ९६a पवरु, ९७a पवर, b. पवरि, ९८b जीवणवार, ९९b भणो, १००a भुवणि–१०१b.c मंडिय, २b भाविय c. भविया,

तहि अगयारियउ३ नीपजइ,४ झाणानलि पजलति ।
तउ सवेगहि५ निम्मियउ, हथलेवउ६ सुमहुत्ति७ ॥ २३ ॥
इणि परि 'अड्डु' वर कुयरु८ परिणइ९ सजम नारि ।
वाजइ१० नदीय११ तूर घण१२, गूडिय१३ घर घर वारि ॥२४॥
धातः—कुमरु चल्लिउ कुमरु चल्लिउ गरय चिठ हु ।
परिणेवा दिक्खसिरि,१४ 'खेडनयरि' खेमेण पत्तउ१५ ।
सिरि 'जिणवइ' जुगपवरु१६ दिट्ठु (ह), तत्थ नियमणहि१७ तुट्ठउ१८।
परिणइ सजमसिरि१९ कुमर,२० वज्जहि न दय२१ तूर ।
'नेमिचदु'२२ अनु 'लखमिणि'-हि, सफिर२३ मणोहर पूर ॥२५॥
'वीरप्पहु'२४ तसु ठवियउ२५ नामु २६
जिण वयणु२७ अमिय रसु झरतो२८ ।
अह सयल नाण समुद्दु२९ अवगाहइ,
'वीरप्रभु'३० गणि [नियः] गुरु पसाए ॥२६॥
क्रमि क्रमि 'जिणवइ सूरिहि'३१ पाटु,
उद्धरिओ३२ ['जिणेसरसूरि' नाम ।
विहरए भविय लोयच पडिबोहए,
अवयरिउ] फिरि 'गोयम' गणिदो ॥२७॥

३b c अगियारीय, ४c नीपजए, ५b c सवेगिहि, ६c हथ लेवउ, ७b c सुमुहुत्ति, ८b कुमरु, c कुमरो, ९a c परिणइ, १०a b वाजहि, ११a नदी, १२b c घणा, १३a गूडी । १४a दिक्खसिरे, १५a पत्तओ, १६bcजुगपवरो, १७bc मणिहि, १८a तुट्ठओ, १९c सजमसिरो, २०c कुमर, २१a नन्दीतूर b नन्दियत्तर, २२bc नमिचद,२३a bफव्व, २४a cवीरपट्टु, २५a ठवियओ, २६ bनाउ २७b अवण, २८a b झुरता, c फिरि झरत्तो, २९c समुद्द, ३०a b वीरप्रभ xbप्रति, ३१a वय, ३२a उद्धरिगो, [२x] b c प्रति,

'अज्जसुहत्थि'३३ जिम जिण भवण३४ मंडियं,

महियलं निम्मियं अरिरि जेहिं ।

सिरि 'वयरसामि' जिम तित्थ३५ उन्नइ कया३६,

कटरि अच्छरिय सुचरिय पहूणं ॥२८॥

घातः—- जेण जिणवर जेण जिणवर भुवण उत्तुंग ।

किरि भवियण ववहारियह, पुन्न हट्ट संठविय३७ पुरि पुरि ।

जणु दुग्गइ३८ उद्धरिउ, धम्मरयण दाणेण बहुपरि ॥

नाण चरण दंसण जुवइ, केलि विलासु३९ पहाणु४० ।

साहु-राउ४१ सो वन्नियइ४२, 'जिणेसरसूरि'४३ जगि४४ भाणु ॥२९॥

सिरि 'जावालपुरंमि' ठिएहिं, जहि४५ निय अंत समयं मुणेवि४६ ।

नियय४७ पट्टंमि सइं हत्थि संठाविओ,

वाणारिउ४८ 'पव्वोहमुत्ति'४९ गणि ॥३०॥

सिरि 'जिणपव्वोह सूरि'५० दिन्नु तसु नामु,

तउ भणिउ५१ सयल संघरस अग्गे ॥

अम्ह जिम एहु नमेव५२ संघि,

जुगपवरु 'जिणपवोहसूरि' ५३ गुरु ॥३१॥

३३a महुत्थि, ३४c भुवण, ३५a उन्नय, ३६b कय, ३७a संटियउ, ३८a दुग्गय उद्धरिय, cदुग्गइउ दूरिउ। ३९b c विलास, ४०b पहाण, ४१a राय, ४२a वन्नियह, cवंनियइ, ४३c सुरि, ४४aजग, ४५ b-c जेहिं, ४६c सुयं मुणेवि, ४७b नियइ, ४८ b वाणारी, ४९b प्रवोहमूर्त्ति, c प्रवोधमूर्ति, ५०a जिण पवुद्द, b जिणप्रबह, cजिण प्रवोध, ५१a भणिउं, ५२b मानेवव c मानेवओ, ५३b जिण प्रवोधह सूरि, c जिणप्रबोधसूरि,

अणसणु लेवि५४ सुह झाणु धरवि, अरिरि सुजसु इम भाणिआ ।
[तर इगतीस आसोज५५ वदि छट्ठि, 'जिणेसरसूरि सग्गमि' पत्तु ।।×]
'जिणेसर सूरि' सग्गमि संपत्तु५६ पूरउ संघ मण वछियाउ५७ ॥३२॥

एहु वीवाहलउ५८ जे पढइ जे दियहि खेला खेली५९ रंग भर६० ।
ताह जिणसर सूरि सुपसन्नु६१,
इम भणइ भविय गणि 'सोममुत्ति'६२ ॥ ३३ ॥

॥ इति श्री जिनेश्वर सूरि संयमश्री विवाह वर्णन रास समाप्त ॥



५४ ऐविणु [×] abप्रति, ५५b आसोय ५६b-c संपत्तओ, ५७b वछियाइ
५८b वीवाहलउ ▫ वीवाहुलउ, ५९ b c खेलिय, ६० b c भरि
६१a सुपसन्न ६२b सोममूर्त्ति, ▫ सोममुत्ती ।

॥ कवि ज्ञानकलश कृत ॥

श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास

संति करणु सिरि संतिनाह, पय कमल नमेवी।
कासमीरह मंडणिय१ देवि, सरसति सुमरेवीर॥
जुगवर सिरि 'जिणउदयसूरि', गुरु३ गुण गाएसू।
पाट महोच्छवु४ रासु रंगि, तसु हउं पभणेसू॥ १॥
चन्द्र गच्छि सिरि वयर ५साखि, गुणमणि भंडारू।
'अभयदेवु'६ गुरु गहगहए, गरुयउ७ गणधारू॥
सरसइ८ कठाभरणु [न(न?)यण], जण नयणाणंदू।
'जिणवल्लह' सूरि चरण कमलु, जसु नमइ सुरिंदू॥ २॥
तासु पाट्टि९ 'जिणदत्तसूरि', विहि मग्गह मंडणु।
तउ 'जिणचंद' मुणिंद रूवि, मयणह मय खंडणु॥
वाईय१० मयगल११ कुंभ दलणु, कंठीर समाणू।
सिरि 'जिणपत्ति' मुणिंदु१२ पयडु, महियलि जिम भाणू॥ ३॥
तसु पय कमल मराल सरिसु१३, भवियण जण सुरतरु।
सूरि 'जिणेसरु' कटरि पुन्न, लच्छी केलीहरु।
निम्मल सयल कला कलाव, पउमिणि वण दिणमणि।
सुहगुरु सिरि 'जिणपबोह सूरि', पंडियह सिरोमणि॥ ४॥

१b कममीरह मंडगीय, २a समरेवो, ३a गुर, ४a महोच्छव, ५b साख, ६a अभयदेव, ×a प्रति, ७a गुरयउ, ८a सर.य, ९b पाटि, १०b वाइय, ११a मंगल, १२b मुणिंद, १३b सुरिह।

चउ धवल निय किति धार१४, धवलियह१५ वमंडु।
नयण सुगुरु 'जिणचंदसूरि', भवजलहि तरंडु॥
सिंधु देसि सुविहिय विहारु जिण धम्म पयासणु।
सुगुरु राउ 'जिणकुसलसूरि', जगि अखलिय सासणु॥ ५॥
तासु सीसु 'जिणपद्मसूरि', सुरगुरु१६ अवतारु।
न लहइ सरसति देवि, जासु विद्या गुण पारु॥
तयणतर विहि—संघ, नीरु-निहि१७ पूनिमचंदु।
जिण सासणि सिंगारु हारु, 'जिणलब्धि' मुणिंदु॥ ६॥
तासु पाटि जिणचंदसूरि तव तेय फुरंतउ।
जलहर जिम घणु नाण नीरु, पुरि पुरि वरिसंतउ१८॥
'खंभनयरि' संपत्तु तत्थ, गुरु वयणु सरई।
गच्छ सिक्ख निपुण सिक्ख१९, आयरियह देई॥ ७॥

॥ धात ॥

गच्छ मंडणु गच्छ मंडणु, सार सिंगारु२०।
जगमु किरि कप्पतरु, भवियलोय संपत्ति कारणु२१।
तव संजम नाण निहि, सुगुरु रयण संसार तारणु।
सुहगुरु सिरि 'जिणलब्धिसूरि', पट्ट कमल मायंडु२२।
झायहु २३सिरि, जिणचन्दसूरि', जो तव तेय पयंडु॥८॥

१४b धार, १५b धवलिय, १६b सरगुर, १७b निसमिहि, १८a वरसंतउ, १९a सिख, २०b सिणगारु, २१a कार।२२b मार्यंडु, २३a झायह,

सहि मंडलि 'ढीलिय नयरे',२४ कंचण रयणु विसालु२५ ।
तउ 'रूद्रपाल'२६ 'नीबउ' 'सधरो', निवसइ तहि 'श्रीमालु' ॥९॥
तसु नंदणु बहु गुण कलिउ, संघवइ 'रतनउ' साहु ।
त×सयल महोच्छव धुरि धवलो, 'पूनिग' मनि उछाहु ॥१०॥
सुहगुरु२७ वंदण 'खंभपुरे', दीण दुहिय साधारु ।
'रतनसीह' 'पूनिग' सहिउ, आवइ सपरिवार (रु) ॥११॥
वंदवि सुहगुरु विन्नविउ, 'तरुणप्पह' सुरि राउ ।
त×गुरु पय ठवणह२८ कारणिहि,२९ तिणि लाधउ सुपसाउ ॥१२॥
त×पाट ठवणि सुहगुरु३० तणए, आवइ विहि समुदाउ ।
त नयर लोउ३१ जोयण मिलए, खरतर विहि जसवाउ ॥१३॥
'आसाढ़ पनरोतरए, तेरसि पहिलइ पक्खि' ।
तउ३२ नंदि ठविय 'अजियह भुवणि', सलहीजइ नर लक्खि ॥१४॥
'तरुणप्पह' सुहगुरु रयणु, वाणारिउ सुविचारु ।
त ठविउ ३३पाटि गणि 'सोमप्पहो',३४ सयल गच्छ सिंगारु ॥१५॥
त दिन्नु नामु 'जिणउदयसूरि', सवणह अमिय पवाहु३५ ।
त+जय जयकार समुच्छलिउ, हूउ३६ संघु सणाहु ॥१६॥

॥ घात ॥

सयल मन्दिर सयल मन्दिर लच्छि गेहंमि ।
'खम्भाइत'३७ वर नयरि,३८ अजियनाह मन्दिरी मणोहरि ।
तहि मिलिउ संघु घणु३९ पंच, सब्द४० वज्जंति बहुपरि ॥

२४b ढिलियनयरो, २५b विसाल्ल, २६b त रूद्रपालु, ×a प्रति, २७b सुहगुर, २८b पयठवणा, २९a कारणहि, ३०b सुहगुर, ३१a नयरलोय ३२a त । ३३b ठविय, ३४b सोमपहो, ३५b प्रवाहु a ×प्रति, ३६a हूंयउ, ३७a खंभाईत, ३८a नयरे, ३९b यणू, ४०b सबद,

रतनउ' पूनउ' संघवइ, सुहगुरु४१ तणइ पसाइ ।
पाट महोच्छवु कारवइ४२, हियडइ हरषु न माइ ॥१७॥
इणि४३ परि ए गुरु आएसि, सुहगुरु पाटिहि४४ रुठविउ ।
तिहुयणि ए मंगलचारु, जय जयकारु समुच्छलिउ ॥१८॥
वाजए४५ नंदिय तूर, मागण जण कलिरवु करए ।
मीकरि ए तणइ झमालि,४६ नडि मडपु जण मणुहरए ॥१९॥
नाचई ए नयण विसाल, चंद वयणि मन रंग भर ।
नव रंगिए रासु रमंति, खेला खेलिय४७ सुपरिपर ॥२०॥
घरि घरिए वन्दुरवाल,४८ गीतह झुणि रलिआवणिय ।
तहि पुरि ए हुयउ४९ अमेवाउ, खरतर रीति सुहावणिय ॥२१॥
मल्हिसु५० ए विहि समुदाय 'सम्मनयरि' बहु गुण कलिउ ।
दीसइ ए दाणु दीयतु, जंगमु सुरतरु करि५१ फलिउ ॥२२॥
संघवई ए 'रतनउ'५२ साहु, 'वस्तपाल'५३ 'पूनिग' सहिउ ।
घणु जिमए वरिसन धार, धनु वरिसन्तउ५४ गहगहिउ५५ ॥२३॥
अहिणवु ए कियउ विवेकु, रंगिहि५६ जीमणवार हुय ।
गरुइ ए५७ मनहि आणंदि, चउविह संघह५८ पूय किय ॥२४॥
'रतनिगु' ए 'पूनिगु' बेवि, दाणु दियतउ नवि खिसए ।
माणिक ए मोतिय दानि, पणान कापडु५९ लेखइ किसए ॥२५॥

४१b सुहगुर, ४२b कारवइ, ४३b इण, ४४a पाटहि, ४५a वजए, ४६b जमालि, ४७b खेलखिलिय, ४८b वंदुरवाली, ४९a हुउ । ५०b सल्हाहिसु, ५१b किरि, ५२ a रतन ५३b वस्तपाल, ५४a वरसतउ, ५५a गहगहए, ५६a रंगहि, ५७b गरूयइ, ५८b संघह ५९a कापड,

'रतनिगु' ए 'पूनिगु'६० बेवि, बंधव प्रीतिहि६१ संमिलिय६२।
झालिहि६३ ए संघह भारु, निय निय६४ पूरहि मनि रलिय ॥२६॥

॥ घात ॥

तहि६५ जि उच्छवि तहि जि उच्छवि, रणइ वणतूर।
घर मंगल धवलु६६ झुणि, कमल नयणि नच्चंति६७ रस भरि ॥
तहि 'सालिहगु' घुरि धवलु६८, दियइ दाणु 'गुणराजु' बहुपरि।
मागण जण कलिरवु करइ, चमकिय चित्ति सुरिंदु।
पाट ठवणि सुहगुरु६९ तणए,७० संघि सयलि आणंदु ॥२७॥
संघु सयलि आणंदु, दंसण नाण चारित्त धरो।
सिरि'जिणउदय' मुणिंदु, जउ दीठउ नयणिहि७१ सुगुरो ॥२८॥
घरि घरि मंगल चारु, भविय कमल पडिबोह करो।
संजमसिरि उरि हारु, उदयउ ७२ सुहगुरु सहसकरो ॥२९॥
'माल्हूय'७३ साख सिंगारु, 'रूदपाल' कुल मंडणउ।
'धारलदेवि' मल्हारु, सुहगुरु भव दुह खंडणउ ॥३०॥
जिम जिण बिम्ब विहारि, नंदणवणि७४ जिम कप्पतरो।
सुरगिरि गिरिहि मझारि, जिम चिंतामणि मणि पवरो ॥३१॥
जिम धणि वसु भंडारु, फलह माहि जिम धम्म फलो।
राज माहि गज सारु, कुसुम माहि जिम वर-कमलो ॥३२॥

६०a पूनिग, ६१a प्रीतहि, ६२a संमिलय, ६३b झालहि, ६४a नितु नितु, ६५a तह, ६६a धवलु, ६७b नचंति, ६८a धवल, ६९b सुहगुर, ७०b तणइ, ७१a नयणहि। ७२b उदय, ७३b माल्हय, ७४b विणि,

जिम माणससरि हस, भाद्रव घणु दाजेसरहु७५।

जिम गह मडलि हसु, चट७६ जेम तारा—गणहु७७ ॥३३॥

जिम अमरावरि इन्दु, भूमंडलि जिम चक्कधरो।

सघह माहि मुणिंदु, तिम सोहइ 'जिणउदय' गुरो ॥३४॥

नवरस देसण वाणि, घणु७८ जिम गाजइ गुहिर सर।

नाणु७९ नीर वरिसतु८०, महिमडलि विहरइ सुपर ॥३५॥

नदउ विहि८१ समुदाउ, नदउ सिरि 'जिणउदयसूरि'।

नदउ 'रतनउ साहु, सपरिवार 'पूनिग' सहिउ८२ ॥३६॥

सुहगुरु गुण गायतु, सयल लोय वछिय लहए।

रमउ रासु इहु रगि, "ज्ञान-कलस" मुनि इम कहए ॥३७॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास समाप्त ॥



७५b दाजेसरहु, ७६b चादु, ७७b तारागणहु, ७८a घण, ७९a नाण, ८०b वारसंतु, ८१b विह, ८२b सहियउ।

॥ उपाध्याय मेरुनन्दन गणि कृत ॥

॥ श्री जिनोदयसूरि विवाहलउ ॥

सयल सण वंछियं१ काम कुम्भोवमं,
पास पय-कमलु पणमेवि भत्तिर२ ।
सुगुरु 'जिणउदयसूरि' करिसु वीवाहलउ,
सहिय ऊमाहलउ मुज्झ चित्ति ॥१॥

इक्कु३ जगि जुगपवरु अवरु नियदिक्खगुरु,
थुणिसुं हउं तेण निय ४ मइ बलेण, ।
सुरभि किरि कंचणं दुद्ध५सक्कर घणं,
संख किरि भरीउ गंगाजलेण ॥२॥

अत्थि 'गूजरधरा' सुंदरी सुंदरे६,
उरवरे रयण हारोवमाणं ।
लच्छि केलिहरं नयरु 'पल्हणपुरं' ७
सुरपुरं जेम सिद्धाभिहाणं ॥३॥

तत्थ मणहारि ववहारि चूडामणि
निवसए साहु वरु 'रुद्रपालो'८ ।
'धारला'९ गेहिणी तासु गुण रेहिणी,
रमणि गुणि१० दिप्पए जासु भालो ॥४॥

१a.c.d वंछिये, २b भत्ते, ३b एकु, ४b मय, ५d सुद्द, ६b सुंदरा, ७b पल्हणपरं, c पल्हुणपुरं, ८d रुद्रपालो, ९d धारलादेवी, १०a गणि,

तासु कुच्छी सरे पुन्न जल सुंभर,११
अवयरिउ कुमरवरु १२ रायहंसो ।
'तर पवदुत्तर' सुमिण ससूइउ,
आयउ१३ पुत्तु निय कुल वयसो ॥५॥
करिय१४ गुरु उच्छव सुणिय जय जयरव,
दिन्नु तसु नामु सोहग्ग सार ।
'समरिगो' भमर जिम रमइ निय सयण-मणि,१५
कमलवणि दिणि रयणि १६ बहु पयार ॥६॥
लोय लोयण दले अमिउ वरसतउ१७
वद्धए शुद्ध१८ जिम बीय चदो ।
निच्चु१९ नव नव कला धरइ गुणनिम्मला,
ललिय लावन्न सोहग्गकंदो ॥७॥

घात —

अत्थि 'गुज्जर' अत्थि गुज्जर, देसु सुविसालु ।
जहिं२० 'पल्हणपुर' नयरो, अलहिं जेम नर रयणि मंडिउ ।
तहिं निवसइ साहु—वरो २१, 'रुद्दपालु' गुणगणि२२ अखंडिउ२३ ।
तसु मंदिरि 'धारल' उयरे, उप्पन्नउ सुकुमारु ।
'समर' नामि सो समर जिम, वड्ढइ रूपि अपारु२४ ॥८॥

११b सोभरे, १२b कुमरवर कुमरुवर, १३b जाइउ c d जायउ, १४d करिउ १५b सयणगणि d अगणि १६b बोह, १७b d अमिय वरिसतउ, १८ सुद्दु । १९c d निच्च २०b तहिं, २१b c साहुवरो २२b गणह, २३b अखंडिय, २४ d रवि अमरु,

अह अवर वासरे 'पल्हणे-पुर' वरे,
भविय जण कमल वण बोहयंतो।
पत्तु सिरि 'जिण कुशलसूरि' सूरोवमो
महियले मोह तिमरं हरंतो ॥९॥

वंदए सत्ति रंगेण उक्कंठिउ 'रूदपालो', परिवार जुत्तो।
धम्मसरं२५ उवएस दाणेण आणंदए, सादरं सूरिराउ विन्नतो२६ ॥१०॥

मोह सयल लक्खणं जाणिर२७
सुवियक्खणं, सूरि दट्ठूण२८ 'समरं कुमारं'।
सवय तुह नंदणो नयण आणंदणो,
परिणओर२९ अम्ह दिक्खाकुमारिं ॥११॥

इय भणिय पत्तु गुरु 'भीमपल्लीपुरे'
तं वयणु३० रयण जिम 'रूदपालो'।
धरिवि ३१ निय चित्ति सयणिहिं आलोचए,
तं सुरूवं३२ सुणय सोजि बालो ॥१२॥

रायणु ३३ निय जणणि उच्छंगि निवडेवि,
मंडए ३४ राहड़ी विविह परि ३५।
भणइ 'जिणकुसलसूरि' पासि जा अच्छए,
माइ परिणावि मूं ३६ सा कुमारिं ३७, ॥१३॥

२५d धम्म, २६b.c.d वितत्तो, २७b.c d वाणि २८a दट्ठूण, २९b.c.d परिणउ, ३०b वयण, ३१b.d. धरवि, ३२b.d सरूवं। ३३b वयण, ३४d संवए, ३५b.d परे, ३६a जाणइ (परिणावि)सुं, ३७b कुमारी,

माइ भणइ निसुणि वच्छ भोलिम ३८ घणो,
तउ नवि ३६ जाणए ४० तासु सार।
रूपि न रीजए मोहि न भीजए,
दोहिलो जालवीजइ अपार ॥१४॥
लोभि न राचए मयणि न माचए,
काचए चित्ति४१ सा परिहरए।
अवर नारी अवलोयणि४२ रूसए,
आपणपइ४३ सयि४४ सत वरए ॥१५॥
हसिय४५ अनेरीय बात विपरीत, तासु तणी छड घणी सच्छ।
मरल४६ ममाव४७ मल्हणडा वाल,४८
कुणपरि रजिसि४६ कहि न वच्छ ॥१६॥
तेण कल कमल दल कोमल५०हाथ, बाथ५१ म बाउलि देसितउ।
रूपि अनोपम उत्तम वश५२, परणाविसु वर नारि हउ ॥१७॥
नव नव भगिहि पच पयार५३, भोगिवि भोग वल्लह कुमार।
क्रमि क्रमि अम्ह कुलि कलसु५४ चडावि,
होजि सघाहिवड५५ कित्तिसार ॥१८॥
इय जणणि वयण सो कुमर निसुणेवि,
कठि आलिगिउ५६ भणइ५७ माइ।
जा ५८सुहगुरि कहि माजि मू म (म?) नि रही,
अवर भलेरीय न सुहाइ५६ ॥॥१६॥

३८b नूलिम, ३६b सं, ४०d ४११ चित्ति, ४२b अवलोय ो, ४३b पय, ४४d रूपि, ४५b इसी ४६b सरण ४७b सम्भाव, ४८ l बाला, ४६b रजसि, ५०d कोमला, ५१d बाम, ५२d घर, ५३d पयारइ, ५४b कलस, ५५b सघाहिव, ५६b आलिगिय ५७b भणय, ५८c जास, ५६b सुहाए।

तउ कुमर निच्छय जणणि जाणेवि,

ढणहण नयणि नीरं झरंती ।

करिन तं६० वच्छ उं तुज्झ मण६१ भावए,

अच्छए६२ गद्द गद्द सरि भणंती ॥२०॥

॥ घात ॥

अन्न वासरि अन्न वासरि, तम्मि नयरंमि ।
'जिण कुसलु'६३ मुणिद वरो, महियलंमि विहरंतु पत्तउ ।
तहि वंदइ६४ भत्ति भरि, 'रूद्पालु' परिवार जुत्तउ ॥
गुरु पिक्खवि 'समरिगु'६५ कुमरो६६ आणंदिउ६७ नियचित्ति ।
भणइ अम्ह दिक्खाकुमरि परिणावउ६८ सुमुहत्ति ॥२१॥
तच सुवयणु तं च सुवयणु, धरिवि नियचित्ति ।
निय मंदिरि आवियउ, 'रूद्पालु', सयणिहि विमासइ ।
तं जाणि कुमर वरो, आगहेण६९ निय जणणि भासइ ॥
मूं परिणावि न दिक्खसिरि७० माइ भणइ वरनारि ।
कुमर भणइ विणु दिक्खसिरि अवर न मनह७१ मझारि ॥२२॥

॥ भास ॥

अह जाणेविणु 'समरिग' निच्छउ,७२

कारावइ७३ वय सामहणी तउ७४ ।

६०c तउं, ६१b मनि d मणि, ६२d अच्छर, ६३b कुसल, ६४b वंदय, ६५b समरग, ६६d कुमर, ६७b आणंदिय, ६८d परिणावहु, ६९b आगहेणि, ७०b दिक्खसिरे, ७१a मनहं ।७२b निच्छओ. ७३c कारविय, ७४b तओ.

मलियउ७५ साजण७६ चालइ नियपुर,७७
धवल७८ धुरधर जोत्रिय रहवर ।।७३।।
चालु चालु हल सही७९ वगिहि ८० सामहि,
धारल' नदण वर८१ परिणय महि ।
पभणतिय सुललिय सु दरी,
गायइ ८२ महुर सरि गीय८३ हरिम८४ भरि ।।७४।।
क्रमि क्रमि जान पहूतिय,८५ सुहदिणि,
भीमपली पुर'८६ गुर८७ हरसिउ मणि ।
अह८८ सिरि वीर जिणिदह मदरि,
मडिय वहलि८९ नदि सुवासरि९० ।।७५।।
तरल९१ तुरगमि चडियउ लाडणु,
मागण वछिय दाण दियइ घणु ।
फोलइ९२ भणइ९३ वरिसउ 'समरिग' वर,
जिम 'सरसइ'९४ किरि 'कालिग' कुमर ।।७६।।
आविउ जिणहरि वर मणहरयउ,
दीख कुमारिय मउ९५ हथलेवउ९६ ।
'जिणकुसलसूरि' गुरो आपुण पइ जोमिउ९७,
होमइ झाणानलि९८ अविरइ घिउ ।।७७।।

७५c मिलिय ७६d साजय, ७७d नियपुर, ७८c धवलु, ७९c हलि सिहि ८०b वगइ ८१b वर ८२b गाइ c गाइहि d गायहि, ८३d, धीय ८४b हरसि, ८५d पहुतिय, ८६b भीमपल्लीय, ८७b गुरु ८८b अन्निहि ८९b वहिकि c d वहकि ९०b सुवासरे dसुवारि ९१c तुरल ९२b फल्हय ९३b भणु ९४l सरसय,९५b स० ९६b हथिलवओ ९७b c जोसिय ९८ l कालानलि

वाजइ मंगल तूर गुहिर सरि,
ढियइं धवल वर नारि विविह परि ।
इणह९ परि 'तेर वियासिय'१०० वच्छरि,
'ससरिगु१०१ लाडगु१०२ परिणइ१०३ वय१०४ सिरि॥२८॥

॥ घात ॥

तयणु१०५ चल्लवि तयणु चल्लवि, 'भीम चरपल्लि',
सासहणी जान सउं 'रूदपालु' आविउ सुवित्थरि१०६ ।
परिणाविउ दिक्खसिरि, 'समरसिंहु'१०७ 'जिणकुसल' सुहगुरि ॥
जय जय रवु घणु८ उच्छलिउ,९ उद्धरिउ१० गुरु वंसु ।
'रूदपालु' अनु 'धारलहे', नच्चइ जगि जस हंसु११ ॥२९॥
दिन्नु 'सोमप्पहो' मुणि तसु नामु, सवण आणंदणं अमिय जेम१२ ।
जिम जिम चरण आचार १३ भरि सोहए,
मोहए दिक्खसिरि तेम तेम ॥३०॥
पढ़इ जिनागम पमुह विज्जावली,
रलिय १४सेविज्जए गुण गणेहिं ।
अह ठविउ१५ वाणारिउ१६ 'जेसलपुरे',
'चउद छडुत्तरे'१७ सुहगुरेहिं १८ ॥३१॥

९९d इणि.१००b विहासियइ. १०१dससरिग १०२bलाडण, १०३bपरिणय. १०४b वइ. १०५b तयण d. वयण. १०६b वच्छरि ।

१०७b समरसिंघु d. समरसिंह. ८b घण. ९b उच्छलिय. १०d उद्धरियउ. ११b निच्चइ जइ जगि हंस, १२a जिम d जेण. १३a.d आचार. १४b सेवज्जए. १५d ठविय. १६b वाणारिय १७b छडोत्तरे, १८a गुरेहि

सुविहियाचारि१९ विहारु२० करतउ,
वाणारिउ गणि 'सोमप्पहो'२१ ।
दुविह सिक्खो२२ सुगीयत्थु२३ सजायउ,
गच्छ गुरु भार उद्धरण२४ सीहो२५ ॥३२॥
तयणु२६ 'जिणचद सूरि' पट्टि, सठाविउ२७,
सिरि२८ 'तरणप्पह' (आ) यरियरायर२९ ।
'चउद पनरोतर'३० 'खभतित्थे'पुरे, मास 'असाढ वदि तेरसीए' ॥३३॥
सिरि 'जिणउदयसूरि' गुरुय नामेण, उदयउ भाग सोभाग निधि ।
विहरए 'गूजर' 'सिधु' 'मवाडि ,३१पमुह दसेसु रोपइ३२ सुविधि ॥३४॥

॥ घात ॥

नासु३३ निम्मिउ नामु निम्मिउ, तासु अभिरामु ।
'सोमप्पह' मुणि रयणु३४ सुगुरु, पाम सो पढइ अहनिसि ।
वाणारिउ क्रमि (क्रमि३५) हूयउ,
गच्छ भारु३६ धरु३७ आणि गुण वसि३८ ।
सिरि 'तरुगप्पह' आयरिए३९ सिरि 'जिणचदह' पाटि ।
थापिउ सिरि 'जिणउदय', गुरु४० विहरइ मुनिवर थाटि४१ ॥३५॥

१९b d सुविहि आचारि, २०b विहार २१a c d सोमपहो २२a सिक्ख २३b a सुगियत्थ, २४b भारु d भारुद्धरण, २५a c d सहो, २६b तयण, २७d सतावि०, २८d सिर, २९b तरुग पह आयरिय d तरुणप्पहायरिय राए, ३० पनोतरे ३१d सिन्धु मेवाड गूजर ३२b रोविधि ।

३३b तासु निमिउ (२) नासु अभिरासु a तासु नियउ (२) नासु अभिरासु d नासु निम्मिउ (२) नासु अभिरासु ३४b रयण, ३५b d ३६c भार, ३७d धरि, ३८d वसि, ३९b आयरिय, ४०d सूरि, ४१b थट्टि

पंच पइ्ठ४२ जिणि४३ सोस तेवोस,

चउद्द माहुणि घण संववड रज्य।

आयरिय उवज्झाय वाणारिय४४ ठविय,

मह महत्तरा पमुह पयि४५ ॥३६॥

जेण रंजिय मणा भणइ४६ पंडिय जणा,

वलि वलिथूणिवि४७ नियसिरायं४८।

कटरि गाभोरिमा४६ कटरि वय धीरिमा,

कटरि लावन्न सोहग्ग जायं ॥३७॥

कटरि गुण संचियं५० कटरि इंदिय जयं, कटरि संवेग निव्वेय रंगं।

वापु देसण कला वापु मइ निम्मला, वापु लीला कसायाण भंगं ॥३८॥

तस्स५१ एह५२ गुण गणं जेम तारायणं,

कहिउ किम सकउं५३ एक जीह।

पारु न५४ पामए सारया देवया,

सहस मुहि भणइ जइ रत्ति५५ दीह ॥३६॥

॥ घात ॥

अह अणुक्कमि अह अणुक्कमि, पत्तु विहरंतु।

सिरि 'पट्टणि' सूरिवरो, पवर सीसु जाणेवि नियमणि।

'वत्तीसइ भद्दवइ५६ मढ़म, पक्खि इकारसी' दिणि ॥

४२a पइ्ठ b पइ्ठा, ४३b.d जिण, ४४b वाणारिय, ४५b पय d पइ, ४६b भणय, ४७d थूणिविमिय, ४८a.cd सिराइं ४९b-cd गम्भीरिमा. ५०a c सञ्चयं, d सम्भयं,' ५१b तास ५२b पइ c d पहु ५३b सकए ५४a' पार ५५a रति b राति ५६b c d भद्दवए

सिर 'लोगहियायरि' यर५७ अप्पियर८ निय पय५६ सिक्खा६० ।
सपत्तउ सुरलोयि६१ पहु चोहेजा सुर लक्खा६२ ॥४०॥

धन्न६३ सो वासरो पुन्न भर भासुरो,
साजि६४ वेला मही अमिय ६५वला ।
जत्थ निय सुहगुर भाव कप्पतरू,
भत्ति गाइज्जए हरिस हला६६ ॥४१॥

महलु६७ मणुयत्तण ताण लोयाण, लहइ ते सुक्ख सपत्ति भूरि ।
सुद्ध६८ मण सठिय थूम६६ पडिमट्ठिय
जेय झायति 'जिणउदयसूरि' ॥४२॥

एहु सिरि 'जिणउदयसूरि' निय सामिणो,
कहिउ मइ चरिउ७० अइ मद७१ बुद्धि ।
अम्ह सो दिक्ख गुरु देउ सुपसन्नउ,
७२दसण नाण४चारित सुद्धि ॥४३॥

एहु गुरु राय वीवाहलउ जे पढइ,
जे सुणइ७३ जे थुणइ जे दियति ।
उभय लोगेवि ते लहइ ७४ मणवछिय,
"मेरुनदन"७५ गणि इम भणति ॥४४॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि गच्छनायक वीवाहलउ समाप्त ॥

५७b लोगह आयरिय d लोगहिं आयरिय ५८b आपिय ५९b नियनिय d नियमय ६०b c b सिक्ख ६१b सुरलोय d सर लोइ ६२b c d लक्ख ६३a d धनु ६४b साज ६५a d वल ६६a हेल ६७b सहल d सुहल ६८d सुहमणि सठिय ६९d एति ७०d चरिउ ७१b इय ७२d देसण ७३a जे गुणइ जे सुणति c d जे गुणइ जे सुणइ जे दियति (d देयन्ति) ७४b लहय ७५b मेरुन द ।।

॥ श्रीजयसागरोपाध्याय प्रशस्तिः ॥



संवत् १५११ वर्षे श्री जिनराजसूरि पट्टालङ्कारे श्रीमज्जिनभद्र सूरि-पट्टालङ्कार राज्ये ॥

श्री उज्जयन्त शिखरे, लक्ष्मीतिलकाभिधो वर विहार ।
'नरपाल' संघपतिना, यदादि कारयितुमारेभे ॥ १ ॥

दर्शयति तदाचार्म्यां, श्रीदेवी देवतां जन समक्षम् ।
अतिशय कल्पतरूणा, 'जयसागर' वाचकेन्द्राणाम् ॥ २ ॥

'सेरीपकाभिधाने', ग्रामे श्री पार्श्वनाथ जिन भवने ।
श्री शेषः प्रत्यक्षो येषा पद्मावती सहित. ॥ ३ ॥

श्री 'मेदपाट' देशे, 'नागद्रह' नामके शुभ निवेशे ।
नवखण्ड पार्श्व चैत्ये, सन्तुष्टा शारदा येषाम् ॥ ४ ॥

तेषां श्री 'जिन कुशल सूरि' प्रमुख, सुप्रसन्न देवतानाम् पूर्व देशवर्त्ति 'राजद्रह' नगरोद्दण्ड विहारादि । स्थानोत्तर दिग्वर्त्ति नगरकोटादि' स्थान पश्चिम दिग्वर्त्ति वलपाटक 'नागद्रहा'-दिषु । राज सभा समक्षं निर्जित पूर्व भट्टाद्यनेक वादि रांवेरमाणां । विरचित 'सन्देह दोलावली वृत्ति' लघु 'पृथ्वीचन्द्र चरित्र' 'पंच पर्वी' ग्रन्थ रत्नावली प्रमुख मेहा वृषभनाथ स्तवः श्री 'जिन वल्लभ सूरि' कृत 'भावारिवारण स्तव वृत्ति' ।संस्कृत प्राकृत बन्ध स्तवन सहस्राणाम् स्थापितानेक संघपतीनां कवित्व कला निर्जित सुर गुरूणां पाठितानेक शिष्य वर्गाणाम् इत्यादि

॥ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि फागु ॥



नं०—१ (प्रेषक)

सिगि नाजित्र घुम घुमइ ए, गयणगण गाजइ।
छल उल छपल कसाल ताल, महुरा-रवि वाजइ ॥ २८ ॥
भास—आव० कामिणी गहगहिय, गावइ मङ्गल चार।
खेला खेलइ अमिय रसि हरिषिउ सघ अपार ॥ २६ ॥
अहे नमि नमि आगम वेद छन्द, नाटक गण लक्खण।
पच्च वरिस विज्जा विचार, भणि हुअ वियक्खण ॥
पण्डिय मुणि तिणि गुरि पसाउ, करि "कीरतिराउ"।
वाणारी (स) पदि थापिउ, ए सो पयड पभाउ ॥ ३० ॥
नयर 'महेवा' हेन तेम, जिणभद्द" सूरिन्द।
उवझाया राय थापिउ ए, 'कीत्तिराय' मुणिन्द ॥
घरि घरि उच्छव वहुय रंगि, कामिणि जण गावइ।
'हरषि' 'दवल देवि ताम, मनि हरषि (म) न मावइ ॥ ३१ ॥
धारइ अङ्ग इग्यार सार, सुविचार रसाल।
टालइ दोष कषाय जाय (ल?), उवसम-सिरि माल ॥
जिण शासन जे अवर, वहुय सिद्धन्त प्रसिद्धि।
त जाणइ सवि भेय वय, वपु दे पिग वुद्धि ॥ ३२ ॥

|| भास ||

'सिन्धु' देश 'पूरव' पमुह, वहु विह देस विहार ।
करइ सुगुरु देसण हरस, वरिसइ सुह फल कार || ३३ ||
अहे क्रमि क्रमि 'जेसलमेरु' नयरि, पहुंतउ विहरन्तउ ।
'कित्तिराय' उवझाय चन्द, तव तेउ फुरन्तउ ||
सिरि 'जिणभद्रसूरि' सुणिय, पात्र आचारिज कीधउ ।
मोटइ ऊलटि 'कित्तिरयणसूरि', नाम प्रसिद्धउ || ३४ ||
सो सिरि 'कीरतिरयण सूरि' भवियण पड़िवोहइ ।
लवधिवन्त महिमानिवास, जिण शासनि सोहइ ||
खरतर गच्छि सुरतरुह जेम, वंछिय दाणेसर ।
वादिय मयंगल माण तिमिर, भर नाण दिणेसर || ३५ ||
एरिस सुहगुरु तणउ नाम, नितु मनिहि धरीजइ ।
तिमि तिम नव निहि सयल सिद्धि, वहु बुद्धि लहीजइ ||
ए फागु उछ रंगि रमइ, जे मास वसन्ते ।
तिहि मणिनाण पहाण कित्ति, महियल पसरन्ते || ३६ ||
|| इति श्री कीर्त्तिरत्नसूरि वराणां फागु समाप्त' ||

|| छः || शुभं भवतु श्री संघस्य || छः ||
|| लिखितं जयध्वज गणिना ||



॥ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि गीतम् ॥

न०—२

नवनिधि चवदे रयण आनन्द, तसु मन्दिर सम्पति रिति(द्धि?) पावइ ।
दूझे कामगवी भावें, श्री 'कीर्त्तिरत्न सूरि' जे ध्यावे ॥ न । आं० ॥
सुरतरु अगणि सफल फले, सुर कुंभ सिरोमणी हेली मिलइ ।
जागती जोति अमृत सवले, दुरत दारिद दोहग दूर टलै ॥१ । न० ॥
अविहड उछड उछव घणा, थिण दत्रिण पवत्यण कामुतणा ।
पसरइ महियल विमल गुणा, चगइ गुरु ध्यावो भविक जणा ॥२न०॥
महिम प्रतीति सुवर लगइ, डाइण साइण कनहु न लगै ।
प्रीति सु नीति थपइ त्रिजगइ, नहु नदि चल्इ तसि पूठि अगो ॥३न॥
श्री 'संखवालह' वंस वरइ, 'देपा' सुत 'देवल' दे उयरइ ।
दीक्षा'वद्धनसूरि'गुरुइ, संजम वासिरि व(ध?)रियउ धवल धुरइ॥४न॥
आचारिज करणी वृतणा, जिन सुतन पयठ्ठण पद ठवणा ।
मीस नादि मालारुहणा, गुरु पीर न होइ इणरि-सणा ॥ ५ । न० ॥
मून(ल?) 'महेवै' थिर ठाणइ, पगला 'अरबुद-गिरि' 'जोधाणे' ।
पूज करइ जे इकठाणा त सदा सुखी महुको जाणे ॥ ६ । न० ॥
दीप दिवस अतिसइ सोहइ, सुर नाद संगीत भुवण मोहइ ।
झिग मिग दीप कली बोहइ, गुरु जा मलीउ परकास व कोहइ ॥७न०॥
प्रगट प्रभाव प्रताप त(प इ, नर नारि नमी कर जोड जपइ ।
अनलाह सा(सन?)त्रला धार धपइ, श्री'खरतरगच्छ प्रभुता सुमपइ॥८न॥

दीण हीण दुखिया मरणे, विपुला कमला सथ वर परणइ।
असुभ करम आरति हरणइ, जे लीन चतुर सदगुरु चरणे ॥ ६ न०॥
कुटंब कलत्र सुत मर्यादा, चालइ शुभ कारिज अप्रमादा।
भोग संयोग सुजस वादा, करि 'कीर्त्तिरत्न' सहगुरु दादा ॥१०॥न०॥
भाग सुभाग सुमति संगइ, सुभ देस सुवास वसे रंगइ।
पाप संताप न के अंगइ, न्हावो गुरु ध्यान लहरि गंगइ ॥ ११ ।नव०॥
चाट उचाट उदेग अरी, ऊप (भूत?) पलीत आनीत दुरी।
चावति कूड कलंक मरी, नासे तत्क्षण गुरु नाम करी ॥ १२ । न० ॥
भास विलास उल्हास सवहु, आनन्द विनोद प्रमोद लहु।
भोगवइ सुर समृद्धि सहु, सुप्रसन्न सुदृष्टि सुगुरु पहु ॥१३ । नव०॥
सुहगुरु थ(स्त?)वणा पढ़इ गुणइ, वाचंता आपण वयण(वयण?)सुणइ।
कुशल मंगल तसु फ(पु?)ण्य थुणइ, श्री 'साधुकीरति' पाठक पभणइ॥१४॥
॥ इति श्री कीर्त्ति रत्न सूरि गीतं ॥

नं० ३

'कीर्त्तिरत्न सूरि' वंदिये, मूल महेवै थान।
संयमिया सिर सेहरो, 'संखवाल' कुलभाण ॥ १ । की० ॥
संवत् 'चवदे उपरै, अगुणपचासै' जास।
जन्म थयो 'दीपा' घरे, 'देवल दे' उल्हास ॥ २ । की० ॥
'डेल्ह' कुमर हिव नेम ज्युं, मूंकी निज वर वास।
'तेसठै' संयम लियो, श्री 'जिनवर्द्धन' पास ॥ ३ । की०॥

वाचक पद हिव 'सत्तर', 'असिये' पाठक सार ।
आचारज 'सताणवें' 'जेसलमेर' मझार ॥ ४ । की० ॥
सुर नर किन्नर कामिणी, गुण गावै सुविशाल ।
साधु गुणे करी सोहता, हार विचे जिम लाल ॥ ५।की०॥
पगला 'अरबुद गिरि' भला, 'जोधपुर' जयकार ।
'राजनगर' राजे सदा, थुम सकल सुखकार ॥ ६ । की०॥
जसु माथे गुरु कर ठवै, ते श्रावक धनधन ।
सीस सिद्धान्त सिरोमणी, 'राजसागर' गरजन्त ॥७ ।की ॥
अणसण लेइ नै आवस्यु, संवत् 'पनर पचीस' ।
अमर विमाने अवतर्या, श्री 'कीरतिरत्न सूरीस' ॥ ८ ।की०॥
अमीय भरै भल लोयणे, तु मुझ द दीदार ।
पाठक 'ललितकीर्ति' कहै, दिन प्रति जय-जयकार ॥९॥

न०—४

श्री 'कीर्त्तिरत्न सूरिंद' तणी, महिमा व्यापइ जग माहि घणी ।
यवि ध्याने धावइ भूमि-धणी, महियलमुनिजन सिर मुगट मणि ॥१॥
जगे घर जिम दीपक तरणी, सद्गुरु सेवा चिन्ता हरणी ।
भंडार सुधन सुभर भरणी, कमला विमला कामिन करिणी ॥२॥
अड वडीया सकट उद्धरणी, वरदायक जसु शोभा वरणी ।
घर पावै नर सुघरि घरणी, प्रेमइ अविकइ तरिणी परिणी ॥३॥
सव दोहग दूरइ संहरणी, फोटक न हुवइ अरिणी फिरणी ।
अग(ल?)गी अटवी थानक डरणी,साचउ तिहा गुरु असरण सरणी ॥४॥
न्याहि सरोमणि 'देप' घरै, 'देवल दे' जनन्यो उयरि वरौ ।

संवत 'गुणपंचास तरो', श्री 'संखवाल' कुल सहसकरो ॥५॥
संवत 'चवदै त्रयसठि' वरसे, 'आसाढ इग्यारीस' वहु हरसे ।
श्री 'जिनवरधन सूरि' गुरु पासे, संयम लीधो मन उल्हासै ॥६॥
'सितरइ' वाचक पद गुरु पायउ, 'असीयइ' उवझायक पद आयउ ।
'सताणुंयइ' वरसे दीयउ, आचारिज श्री 'जिनभद्र' कीयो ॥७॥
'लखइ' 'केल्हइ' तिहा मन लाइ, 'जेसलगिर' पुर तिहा किण जाई ।
'मा(हो)घ सुकल दसमी' आइ, महोछव करि पदवी दिवराइ ॥८॥
'पनरइ पचवीसइ' तिण वरसइ, 'आसाढ इग्यारस' वहु हरसे ।
अणसण लीधो मन ने हरसे, सुभगति पामी सुरवर सरसइ ॥९॥
'वीरमपुर' वधते वानै, थाप्यो थिर थूंभ भला थानइ ।
महीयल सहु को नइ मन मानइ, जस सोभा जग सगलौ जानो ॥१०॥
समर्‌यो सदगुरु सानिधकारी, सकलाप सजन जन साधारी ।
नरवर सुर(वे) वर नै नरनारी, थूंभे आवे जात्रा धारी ॥११॥
भूत प्रेत डर भय नावइ, जंजाल सवे दूरइ जावइ ।
गणि 'चन्द्रकीर्ति' गुरु गुण गावे, श्री 'कीरतिरत्नसूरि' ध्यावइ ॥१२

॥ इति गुरु गीतं ॥



कवि सुमतिरंग कृत

श्रीकीर्त्तिरत्न सूरि (उत्पत्ति) छन्द

नं०— ८

सुमति करण सारद सुखदाइ, सानिध कर सेवका सदाइ ।
'कीर्त्तिरत्न सूरिन्द' कहाइ उत्पति तास कहण मति आइ ।१।
'जालधर' दसै सवि जाणै, 'सरसालो' नगरी सुख माणै ।
'कोचर' साह ससार बखाणै, दे देकार घर आणे दाने ।।२।।
दोय घर घरणी दोलिन दावै, कामणि लघु सुत एक कहावै ।
'रोल्ह' रीति सुजस रहावै, पिता प्रेम धरि करि परणावे ।।३।।
आधी रातै 'रोल्ह' अङ्कण, डस्यो साप काले जम डङ्कण ।
मूवो जाणि रे चाल्या दङ्कण, सन्मुख मिल्या 'खरतर गच्छ' मण्डण ।४।
'जिनेश्वर सूरि' कहे गुण जाणी, विषधर भर नो लोक सुणि वाणी ।
खरतर करो जिम ए सही जीवै, 'कोचर' खरतर हुवो तद्दीवै ।।५।।
नहर कहर गुणगो करि जाव, मानदान हुआ सहि सुख पावै ।
आप पगे (रोल) घर आवे, खरै राग खरतर कहावे ।। ६ ।।
दूहा—तेरे सै तेरोत्तर,'कोचर' खरतर किद्ध ।
आदि प्रासाद प्रतिष्ठियो, सूरि जिनेश्वर सिद्ध ।। ७ ।।
'कोचर' साह 'कोरटैं' वसियौ, सत्तूकार दीयै जस रसीयो ।
दुल्गार (गुरु ?) आय घणे ही कसीयो,
खरतर विरद थकी नवि खसीयो ।। ८ ।।

'रोलू' सुत दोय कह्या रसीला, 'आपमल्ल' 'देपमल्ल' असीला ।
'देप' वरे 'देवलदे' वाला, चार सुत जनम्या चौसाला ॥६॥

॥ छन्द मोतियदाम ॥

'लखो' तिम 'भादो' 'केल्हो' साह, 'देल्हो' चोथो गुणे अगाह ।
'लखा' नै लिखमी तूठी तेह, परिया तिण सात तणो वर देह ॥१॥
'वीसलपुर' वसियो 'लखो' वास, 'जेसाणै' 'भादो' करै विलास ।
'मेहवै' 'केलो' मोटी मांम, चोथो तिण चारित लीधो आम ॥२॥
चवदै गुण पचासै' जम्म, धर्यो तिण बालक वय थी धम्म ।
तेरै वरसै जव हुयो तेह, 'राडद्रह' माग्यो गखण रेह ॥३॥
'चवदैसे तेसठे' चाल्या चूंप, विवाह करण जग राखण रूप ।
खीमज थल के पासै जांन, आवी नै उतरी तिण थान ॥४॥
सरली एक खेजड़ी देखी सोर, जुवांने जानी मांड्यो जोर ।
इण ऊपर बरछी काढै कोय, परणावुं पुत्री मेरी तोय ॥५॥
रजपूतै एकण कहियो आम, 'केलै' नै सेवक लीधी तांम ।
उलाली बरछी नांखी एम, तीर तणी पर काढी तेम ॥६॥
आतरै तिहा जोर आयो असमान, परलोक गयो ते छूटा प्राण ।
'दैल्है' सो देखी मन दिलगीर, नर भव अथिर ज्युं डाभै नीर ॥७॥
'खेमकीरति'वांदै मन (वैठो) खात,भांगी सहु मन(को)तन की भ्रात ।
साह सगा सहुनै समझाय, 'जिनवर्द्धनसूरि' पासे जाय ॥८॥
दीक्षा तब लीधी 'दैल्है आप, पुराणा तोडण पाप सन्ताप ।
मामा ते पारख मोटे मन्न, धरा सहु आखै धन हो धन्न ॥९॥

ग्यारह अग पढ्या इण रीत, गोतम स्वामी ज्यू वीर वदीत ।
वणारस कीयो गुरु गुरु वार, 'चवदैसैसत्तरै' चित्त विचार ॥१०॥
'जेसाणें' खेतरपाल को जोर, थापी माड्यो बाहिर ठौर ।
आचारज क्षेत्रपाले मेल, भट्टारक काढ्या गच्छ थी ठल ॥११॥
दोहा।—'नाल्हे' साह निकालने, थाप्यो 'जिनभद्र सूरि' ।
दोस दियो को देवता, भावी मिटै न दूर ॥१२॥
'पींपलीयो' गच्छ थापीयो, शुभ वेला सुभ वार ।
'साहण' सा सत करी, वादी वाद निवार ॥१३॥
'जिनवर्द्धन सूरि' जाण के, शिष्य सदा सुविनीत ।
आप दिसा आग्रह कियो, गुरु गच्छ परम रीत ॥१४॥
आधी राते आवि कै, वीर कही ए बात ।
आउखो गुरुनो अल्प, मास छ मास कहात ॥१५॥
'महेवे' म सामठी, च्यार करी चोमास ।
'जिनभद्रसूरि' बोलाविया, आवो हमार पास ॥१६॥
अनुमानें करि अटकलनो, उदयवत गच्छ एह ।
आवि मिल्या आन्द सहित, पाठक पदवी दह ॥१७॥
'चवदैसे असी' वरस, पाठक पदवी पाय ।
'जिनभद्रसूरि' 'जेसलनगर', तेडाव्या तिहा जाय ॥१८॥

॥ छन्द सारसो ॥

लखपति 'लखो' साह 'केल्हो', 'महव' थीं आविया ।
'जेसलमेरै' करी वीनती, पूज्य ने विधि वन्दिया ॥
जिनभद्र सूरै' मया करके, 'चवदैसैमताणवे' ।
'कीर्तिरत्नसूरि' आत्रीय, दीव पदवी तिण हेव ॥१।कौ०॥

बहु खरच कीया दान दीया, विविध लखमी वावरी।
'संखवाल' साचा विरुद खाटै, धर्मराग हीयै धरी ॥
'सैत्रुंज' संघ कराय साथै, संघ सहुको ध्रम धवै ॥२॥की०॥
'संखेसरै' 'गिरनार' 'गोड़ी', देस 'सोरठ' संचरी।
चितलाय चैत्यप्रवाडी कीधी, लाहिणा जिहां तिहा करी।
घर आय घणा घमंड सेती, संघ पूज करी लवै ॥३॥की०॥
आचारजां सुं अरज करिने, चतुरमासक राखिया।
गोत्रजा कुलगुरु दूर कीधा, भेद आगम भाखिया।
समझावीया सिद्धात सुवचन, वाणि जांणी अमी श्रवै ॥४॥की०
'मालवै' 'थट्टा' 'सिंध' सनमुख, 'संखवाल(चा)'मत जावजो।
पाट भगत हुइज्यो सुगुरु भाख्यो, गच्छ फाट मे नावजो।
दीक्षा न लेज्यो,संघ पद पिण, हलद्र ओषद(ध?)मत खवै॥५॥की०॥
'कोरटै' 'जेसलमेर' देहरा, करावजो गुरु इम भणै।
नगर चोहटा थकी जिमणै, पास वसज्यो धन घणै।
सीख सात मानै साह सहुको,सुखी हुइ इह परभवै ॥६॥की०॥
पंचास एक शिष्य पंडित, 'कीरतिरतनसूरि'नै।
गुरु गुणे गौतम जेम गिणियै, जुगति सुमति जगीसनै।
वासक्षेप जेहने सीस उपरि, करै तसु दालिद गमै ॥७॥की०॥

कलस आऊखा नै अंतपक्ष, अणसण पाली नै,
संवत 'पनरपचीस', मन वैराग वाली नै।
'वैसाख सुदी पंचमी', सुगुरु सुरलोक सिधाहे।
अण कीधे उद्योत हुवो, जिनभवनन माहे।
सुखकार सार श्रृंगार मणि, "सुमतिरंग"सानिध सदा।
रखवाल वाल गोपाल कूं, वाट घाट यदा तदा ॥८॥

न०—६

सोहे गुरु नगर 'महेव' परचा पूरै नित मेवे। सो०।
'संखवाल' कुले गुरु राजै, 'दीपचन्द' पिता घर छाजै हो ॥ १ सो०॥
'देवल दे' जसु वर माता, जनम्या केलार न विख्याता हो। सो०।
'चउदेसय तेसठ वरसे,' 'आषाढ वदी' शुभ दिवसै हो। २। सो०।
'इग्यारसै', दीक्षा लीधी 'जिनवरधन सूर' दीधी हो। सो०।
तप जप कर करम खपाया, नवि राखी काइ माया हो। ३। सो०।
नामै जसु नावै रोगा, सुख संपत पामे भोगा हो। सो०।
'जिनभद्र सूरि' तेडाया, 'जेसाण नगर' मे आव्या हो। ४। सो०।
'चवदसे सताणवै' वरसै, सूरि पद लीधो मन हरसे हो। सो०।
संवत पनरसे पचीसे, 'वैशाख पचम' शुभ दिवसे हो। ५। सो०।
इसाणैं सदगुरु पहुता, मनमे शुभ ध्यान ज धरता हो। सो०।
सा ग डाइण वेताला हो, भूत प्रेत न आल जंजाला हो ६। सो०।
सद्गुरु गुण पार न पावे, मुनिजन वर भावना भावै हो। सो०।
'जयकीर्त्ति' सदा गुण बोले, सदगुरु गुण कोइ न तोलै हो। ७। सो०

न०—७

'कीर्त्तिरतन' सुरीन्दा, वंदे नरनारी ना वृन्दा हो।सद्गुरु महिर करो।
महिर करो गुरु मेरा, हुतो चरण न छोडू तेरा हो। स०। १।
नगर 'महवे' राजे, सवता सब दुख भाजे हो। स०। २।
वछित पूरण दाता, नित करिजो संपति साता हो। ३। स०।
नव नव दसमे सोहे, पूरै परचा जन मोह हो। ४। स०।

चौरादिक भय वारे, सेवक ना कारिज सारे हो। स०। ५।
वंध्या पुत्र समापे, निरधनीया धन सव आपे हो। ६ स।
अलगा थी यात्री आवे, देखंता चरण सुहावे हो। स०। ७।
इम अनेक गुणधारी, प्रतिबोध्या नर ने नारी हो। ८। स०।
'अढारेसे गुणयासी', 'असाढ़ दसम' परकासी हो। स०। ९।
गांम 'गडालय' थाप्या, सेवक ना संकट काप्या हो। १०। स।
तासु प्रसाद करायो, देसा में सुजस सवायो हो। स०। ११।
'जयकीरति' गुण गावै, मन वंछित पद पावै हो। स०। १२।

न० ८

सदगुरु चरण नमो चितलाय, जिण भेटया दुख दालिद जाय।
आज करो रे ऊछाह सदगुरु चरण कमल आगे। आ ०।
नगर 'महेवे' 'डीपमल्ल' साह, 'देवलदे' घरणी जनम्यां सुनाह। आ१।
संवत् 'चवदे गुणपचास', 'डेल्ह' नाम दियो शुभ जास। आ०।
यौवन वय आव्यो तिण वार, कीनी सगाई हर्ष अपार। आ०। २
जान सजाय करी रे तैयार, चलता आव्या 'राडद्रह' वार। आ०।
तिहां इक खीमस्थल सुविशाल, जां विच सोहे समीय रसाल। ३।
तिण ही ठामे उतरी जान, रंग रली कीना सन्मान। आ०।
किणे इक ठाकुर वाह्यो वोल, इण पर वरछी काढे तोल। आ०। ४।
देवुं पुत्री तिणे परणाय, ऐसो वचन सुण्यो चितलाय। आ०।
'केल्हे' रो सेवक ऊठ्यो ताम, काढी वरछी छूटा प्राण। आ०। ५।
'डेल्हे' दीठो ए विरतंत, सदगुरु वचने भागी भ्रन्त। आ०।
'तेसठे' शुभ संयम लीद्ध, श्री 'जिनवरधन सूरे' दीध। आ० ६।

नेम तणी पर छोडो रिद्ध, जगमे सुजस हुवो परसिद्ध । आ० ।
इग्यार अग ह्या जाण, तेजे करी प्रतप जिम भाण । आ० । ७ ।
गोतम स्वामी ज्यु करय विहार, प्रतिबोधे सहु नर न नार । आ० ।
सिंघ तडाव्या 'जेसलमर', सदगुरु आया सुर नर घेर । आ० । ८ ।
'मताणर' सूरि पदवी जास, श्री 'जिनभद्रे' दीधो वास । आ० ।
तप जप तीरथ बम विहार, करता आव्या 'महव' बार । आ० । ६ ।
सिंघ सफल पसारो कीन, गुरें पिण सखरी देशना दीन । आ० ।
सवत 'पनरसे पचवीस', वदी वैशाख पचमि शुभ दीस । आ० । १० ।
अणसण कर पहुता सुरलोक, नर नारी सब दव धोक । आ० ।
गुरु परचा जग सगलै पूर, दुखिया आप सुख भरपूर । आ० । ११ ।
विरह पहुता नावे पार, इण कलि मे सुरगुरु अवतार । आ० ।
नगर 'महेवे' मूलगो थान, ठाम ठाम दीप परधान । आ० । १२ ।
'कीर्त्तिरत्नसूरी' गुरुराय, महिर करो ज्यु सपति थाय । आ० ।
'अठारेसे गुण्यासीये' वास, वदि वैशाख दसमी परगास ।आ०।१३।।
रच्यो प्रासाद 'गडालय' माहि, दोय थान सोहे दोनू थांह । आ० ।
सुगुरु चरण थाप्या घण प्रेम, सुजस उपायो 'कातिरतन' एम ।आ०१४
भलै दिहाडो उग्यो आज, भेटया सदगुरु साया काज । आ० ।
'अभैविलास'री विनती एह, नित प्रति करजो आनद अछेह ।आ०।१५

न०—९

बधारो कुल वल, महिर मवमाला मडै ।
वित्त वादल विस्तार, दुख दालिद निहडे ।
दोलत कर दामिनी, सुवाय सचारी ।
गुण गरजारव कर भर, सरवर नरनारी ।
वाल सुगाल तत्काल कर, सरसाल घर घर सही ।
'कीतिरत्नसूरि' कीजीयै, गरथ अरथ गुण गहगही ॥१॥

———

श्री जिनलाभ सूरि विहारानुक्रम॥

(सं० १८१५ से सं० १८३३)

॥ दोहा ॥

गच्छ नायक लायक गुणे, सागर जेम गम्भीर ।
निज करणी कर निरमला, जाणै गंगा नीर ॥१॥
तपसी तालावर तणो, गच्छपति किसी गरज ।
आसंगायत आपणा, इण परि करै अरज ॥२॥
पाच वरस रहिया प्रथम, दिन दिन वधतै डाण ।
गच्छ नायक 'जिनलाभ' गुरु, बड़ वखती 'वीकाण' ॥३॥
'५वाण १चन्द्र ८वसु १शशि' वरस, सरस भलौ श्रीकार ।
शुभ वेला 'वीकाण' सुं, वारु कियौ विहार ॥४॥
सधन घरे समझू सकल, घण श्रावक जसु वास ।
गुणवंतो 'गारब शहर', तिहां कीधौ चौमास ॥५॥
आठ मास तिहां थी उठे, वंदावी थल देश ।
'जेसाणै' गुरु जाय नै, परगट कियौ प्रवेश ॥६॥
च्यार वरस लगि चाहसुं, नित नित नवलै नेह ।
बड़ वखती श्रावक जिके, जतने राखै जेह ॥७॥
तिहां तीरथ छै 'लौद्रवौ', जूनौ जगहि वदीत ।
तिहां प्रभु पारस परसिया, सहसफणा शुभ रीत ॥८॥
सीख करे तिहां थी सुमन, पुलिया पच्छिम देस ।
सुख विहार आया सुगुरु, प्रणमेवा पासेस ॥९॥

विधि सु गौडी—राय नै, वादी कियौ विहार ।
गच्छपति चलि आया गुढै, चौमासो चित धार ॥१०॥
रहि चौमासो रग सु, विहलो करै विहार ।
माती धरा महेवची, वदावी तिण वार ॥११॥
नगर 'महेवै' आय नै, नमिवा नाकोडो पास ।
जाये कीध 'जलोल' मे, चित चोखै चौमास ॥१२॥
मिगसरमे वलि मलपिया, गज ज्यू श्री गुरुराज ।
आवै 'आवू' अरचिया, जगनायक जिनराज ॥१३॥
जस खाटै दाटै पिशुन, उर दुषणा पग दीध ।
'बोलाडै' बहु रग सु चतुर चौमासो कीध ॥१४॥
'खेजडलै' नै 'खारिये', रहिया वलि 'रोहीठ' ।
पिशुन किया सहु पाधरा, धरमे होता धीठ ॥१५॥
'मडोवर' महिमा घणी, 'जोधाणे' री जोड ।
मुनिपति आया 'मेडतै', हित सु तिमरी होड ॥१६॥
च्यार महीना चैन सु, झाझे जतने जार ।
'जैपुर' आया जुगति सु, सहिर वडै श्रीकार १७॥
सहिर किना साग सरग, इलमे वसियौ आय ।
वरस थयौ वासर जितौ, वासर घडी विहाय ॥१८॥
हठ कीधौ घण हेत सु, पिण नवि रहिया पूज ।
मुनि पति जाय 'मेवाड' मे, वरतायौ नामूज ॥१९॥
'उदयापुर' हुती अलगा, कठिन अठारै कोस ।
'रिसहेस' नै रग सु, नमने कियौ निरदोष ॥२०॥
वलता 'उदयापुर' वले, महिरा कर गहगाट ।
वीनति घणै विराजिया, 'पालीवालै' पाट ॥२१॥
अटकलना आसो अवस, निरख विचै 'नागौर' ।
पिण मन वसियो पूज रै, सहिर भलो 'साचोर' ॥२२॥

तिण वरसे 'सूरेत' ना, असपति अवसर देख ।
तिड़ावै सद्गुरु तुरत, लायक मूंकी लेख ॥२३॥

दया लाभ देखी घणो, ऊपजतो उण देस ।
सुमति गुपति संभालता, पुर तिण कीध प्रवेश ॥२४॥

सरस वर जुग श्रावके, करतां नव नव कोड़ ।
सुपरे सेवा साचवी, हित सुं होडा होड़ ॥२५॥

कर राजी श्रावक सकल, जग सगले जस खाट ।
'राजनगर' आया रहण, वहता पगवट वाट ॥२६॥

तिहां पिण तालेवर तुरत, उच्छव करे अपार ।
दोय वरस लगि राति दिन, सेवा कीधी सार ॥२७॥

मन थिर कर साथे थई, श्रावक सहु परिवार ।
सत्रुंजनी सेवा करे, गुरु चढ़िया गिरनार ॥२८॥

उतर तिहा थी आविया, 'वेलाउल' वंदाय ।
महिमा मोटी 'मांडवी', पूजण सद्गुरु पाय ॥२९॥

कोडी-धज तिण नगर मे, लखपति तणा लंगार ।
सहु श्रावक सुखिया जिहां, वारधि सुं विवहार ॥३०॥

वरस लगै तिहा वावर्यो, धन अगिणत धर्म काज ।
चोखे दिन 'भुज' चालिया, राजी हुए गुरुराज ॥३१॥

'भुज' तणो श्रावक भलो, सेवा कीध सवाय ।
भाग बली जिहा संचरै, थट सगला तिहा थाय ॥३२॥

इण विधि अट्ठारै वरस, दीन (दिन दिन?) नव नव देस ।
परचिया श्रावक प्रवल, वाणी तणै विशेष ॥३३॥

हिव वहिला विनती सुणो, करिज्यो पूज प्रयाण ।
'बीकानेर' वंदाविज्यो, सेवक अपणा जाण ॥३४॥

श्री जिनराजसूरि गीतम्

ढाल:—कपूर होवइ अति उजलुए।

गछपति वदन मनरली रे, गरुओ गुणह गभीर ।
'श्रीजिनराजसूरीसरू' र, सवि गछ फइ सिरि हीर रे ।१।
वदउश्री 'जिनराजसूरींद' । आकणी ।
श्री 'जिनसिंघसूरि' पटोधरू र, उन्नतिकार महत ।
चारित्र चगइ मन रमइ र, सेवइ भविजन सत रे ।२।व०।
'जेसलमेर' जिनद नी रे, कीधी प्रतिष्ठा चग ।
'भणसाली' 'थिरू' तिहा र, धन खरचइ मन रग र ।३।व।
'रूपजी' सघनी 'सेत्रुजइ' र, आठमउ कीध उद्धार ।
'मरुदेवीटुकइ' भलउ र, चउमुख आदि विहार ।४।व०।
मोटी माडी माडणी र, दहरा प्रोलि प्राकार ।
सकल महोछव तिहा सजी र, प्रतिष्ठा विधि विस्तार र ।५।व०।
चित चोखइ सा(ह) 'चापसी' र, 'भाणवडइ' भल भाव ।
सुगुरु प्रतिष्ठा तिहा करी र, जस बोलइ जन आवि र ।६।व०।
सघपति 'आसकरण' सही रे, ममाणीमइ कीध प्रसाद ।
बिंब महोछव माडीया र, 'मेडता' महा जस-वाद रे ।७।व०।
धन 'खरतर' गछि दीपता र श्रावक सब गुण जाण ।
आण मानइ गछराज नी र, तेजइ जाणे भाण रे ।८।व०।
'धरमसी' नन्दन दिन दिनइ र, दीपइ जिम रवि चद ।
'हरषवल्लभ' वाचक कहइ रे, आपइ परमाणद रे ।९।व०।

श्री जिनरत्नसूरि गीतम्

ढाल:- विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली।

श्री 'जिनरतनसूरिंद' तणी, महिमा जागइ जग मांहि घणी।
जसु सेवा सारइ स्वर्गधणी, मन वंछित पूरण देव मणी।१।

जसु नामइ न डसइ दुष्टफणी, टलि जायइ अरियण जुड्या अणी।
अहिनिसि जे ध्यावइ सुगुरु भणी, तसु कीरत वाधइ सहस गुणी।२।

निरमल व्रत सील सदा धारी, पट काया तणो रक्षाकारी।
कलियुग मइं 'गौतम' अवतारो, गुण गावइ सहु को नरनारी।३।

घसि केसर चंदन सुविचारी, फल ढोवइ नेवज सोपारी।
विधि जे वंदइ आगारी, ते लच्छि तणा हुवइ भरतारी।४।

जसु जम्म नगर 'सेरूणाणं', तिहां वसइ 'तिलोकसी' साहाणं।
गोत्रइ अति निरमल लूणीयाणं, तसु घरिणी 'तारादे' विधि जाणं।५।

जसु उयर सरोवर हंसाणं, तिण जायउ पुत्ररतनाणं।
सोलह सइ सत्तरि वरसाणं, पुनवंत पुरष दीवाणं।६।

चउरासीयइ चारित लीधउ, गुरुमुख उपदेस अमीय पीधउ।
सुभकारिज सतरइसइ कीधउ, सद्गुरु सइंहथि निज पट दीधउ।७।

सतरइसइ इग्यार सही, श्रावण वदि सातमि सुगति लही।
पग पूजण आवे जे उमही, गुरु आस्या पूरइ त्यां सवही।८।

'उग्रसेनपुरइ' सद्गुरु राजइ, जसु थूंभ तणी महिमा छाजइ।
'खरतर' श्री संघ सदा गाजइ, गुरु ध्यानइ दुखदोहग भाजइ।९।

श्री 'जिनराजसूरीस' तणउ, पाटोधर श्री 'जिनरतन' भणउ।
महियल मइं सुजस प्रताप घणउ, प्रहसमि ऊठी नित नाम थुणउ।१०।

एहवा सद्गुरु नइ जे ध्यावइ, चित चिंता तास सवे जावइ।
दिन-दिन चढती दउलति पावइ, 'जिनचंद' सगुरुना गुण गावइ।११।

इति श्री जिनरतनसूरि गीतं (संग्रहमें, ६३ प्रति नं० १३)

श्री दयातिलक गुरु गीतम्

राग—आसावरी

सरद ससी सम सुहगुरु सोहइ, सयल साधु मन मोहइ ।
देसना वारिद जिम वरसइ, जन मयूर चित हरसइ र ।१।
भाव स्यु भवीयण जण पणमइ, 'श्री दयातिलक' रिषराया ।
दीपता तपकरि दिणयर जिम, नरवर प्रणमइ पाया रे ।१।भा०।
नवविध परिग्रह छडि भली परि, सयम स्यु चितलाया ।
दोप बयाल निरतर टालइ, मनमथ आण मनाया रे ।२। भा०।
पच महाव्रत रगइ पालइ, पच प्रमाद निवारइ ।
नितु नितु सील रयण सभालइ, भव सायर थी तारइ र ।३।भा०।
चरण करण गुण सुहगुरु धारइ, आठ करम कु वारइ ।
क्रोध मान मद तजइ मुनीसर, मुनिवर धर्म सभारइ ।४।भा०।
'श्री क्षेमराज' पाटइ अति दीपइ, वादि विबुध जन जीपइ ।
वाणी श्रवणि सुहाणी छाजइ, खरतर गछि गुरु राजइ रे ।५।भा०।
'वाल्हाद' उरि मानसरोवर, रायहस अवतरिया ।
'बच्छा' कुलमडण ए सुहगुरु, गुण गण रयणे भरिया र ।६।भा०।
पूरव मुनि नी रीति भली पार, आगम करिय विचारइ ।
जाणि करी सूधीपरिए गुरु, गुण गरुआना धारइ र ।७।भा०।

इति श्री गुर गीत । (पत्र १ सग्रहमे)

—

वा० पद्महेम गीतम्

ढाल: विलसइ ऋद्धि समृद्धि मिली, ए ढाल: ।
'पद्महेम' वाचक वंदइ, ते भवियण दिन-दिन चिरनंदइ ।
सुरतरु सम वडि गुरु कहियइ, जसु नामइ मन वंछित लहियइ ।१।प०
'गोलवछा' वंसइ छाजइ, खरतर गछि सुरमणि जिम राजइ ।
आगम अरथ तणा जाण, पालइ जिणवर केरी आण ।२।प०
लघुवय जे संयम लीणउ, उपसम रस मधुकर जिम पीणउ ।
सुमति गुपति सहूजइ पालइ,वलि दोष बयालिस नितु टालइ ।३।प०
चरण करण सत्तरि सार, वलि धरइ महाव्रत ना भार ।
ध्यान विनय सिझाय करइ, इम असुभ करम मल दूरि हरइ ।४।प०
(श्री) जिन वचनइ अनुसारइ, देसन करि भवियण नर तारइ ।
निरमल शील रयण पालइ, पूरव मुनि मारग उजवालइ ।५।प०।
युगप्रधान 'जिणचंद' गुरु, विहरइ महियलि महिमा पवरु ।
धन ते जिण सय-हथि दिख्या, सीखावी वलि संयम सिख्या ।६।प०।
धन 'चोलग' जसु कुलि आयउ, धन धन 'चागादे' जिण जायउ ।
'तिलककमल' गुरु धन्न जयउ,जसु पाटइ दिनकर जिम उदयउ ।७।प०।
व्रत सइंतीस वरिस जोगइ, विहरी दिन दिन वधतइ जोगइ ।
ससि रस काय ससि वरिसइ,आया 'वालसीसर' चित हरिसइ।८।प०।
अन्त समय जाणि नाणइ,वलि करि आराधन सुह झाणइ ।
पहर छ अणशण पाली, माया ममता दूरइ टाली ।९।प०।

पच परमेष्टि तणइ ध्यानइं, विरुई गति सिगली करि कानइ ।
अम्मावसि भाद्रव मासइ, मध्यानइ पहुता सुर वासइ ।१०।प०।
भाव भगति गुरु पय पूजइ, तसु आस्या रग रली पूजइ ।
पुत्र कलत्र धन परिवार, गुरु नामइ दिन दिन जयकार ।११।प०।
उदय सदा उन्नति कीजइ, परतिख दरसन भगता दीजइ ।
महियलि महिमा विस्तारउ, सेवकनइ साहिब सभारउ ।१२।प०।
चित्त तणी चिंता चूरउ सुख सम्पत्ति मन चिंतित पूरउ ।
'सेवकसुन्दर' इम बोलइ, तुझ सेवा सुरतरु सम तोलइ ।१३।प०।
इति श्री पदमहेम गणि वाचक गीत, म रत्नों पठनार्थं ।।शुभ भवतु।।

चन्द्रकीर्त्ति कवित ।

पामीजै परमत्थ अत्थ पिण सयणा पावै,
पामीजै सब सिद्धि ऋद्धि पिण आफे आवे ।
पामे सीस सकज ससर सुख सेज समाई,
पामे तेज पडूर वलि बल बुद्धि वडाई ।
कहि 'सुमतिरग' सुण प्राणिया, अहि २ गुरु गुण गाइयै,
श्री 'चन्द्रकीर्त्ति' सदगुरु जिसा, प्रभु इसा कद पाइये ।।१।।
सवत सतरे-सात पोष वदी पडिवा पहली ।
अणसण लेइ आप, वली उत्तम मति वहिली ।।
नगर 'बिलाडे' माहि, काम गुरु अपणो कीधो ।
गीत गान गावता, सुगुरु नो अणसण सीधो ।।
शुभ ध्यान ज्ञान समरण करि, सुर सुलोक जइ सचरै ।
वदै 'सुमतिरग' हियडा विचै, घडी घडी गुरु सभरै ।।२।।

विमल सिद्धि गुरुणी गीतम् ।

गुरुणी गुणवंत नमीजइ रे, जिम सुख सम्पति पामीजइ रे ।
दुख दोहग दूरि गमीजइ रे, परभवि सुर साथि रमीजइ रे ॥१॥
जसु जन्म हूओ 'मुलताणइ' रे, प्रतिबूधा पिण तिण ठाणइ रे ।
महिमा सहु कोइ वखाणइ रे, दुक्कर किरिया सहिनाणइ रे ॥२॥
काकउ कलिमइ अवतारी रे, 'गोपो'लघुवय ब्रह्मचारी रे ।
तिणरइ प्रतिबोधइ दिख्या रे, मनमांहि धरी हित सिख्या रे ॥३॥
'विमल सिधि' वड वयरागइ रे, बालक वय ऊपसम जागइ रे ।
'लावण्य सिधि' गुरुणी संगइ रे, चारित लीवउ मन रंगइ रे ॥४॥
आगम नइ अरथ विचारइ रे, परवीण चरण गुण धारइ रे ।
मिथ्या मत दूरि निवारइ रे, कुमती जन नइ पिण डारइ रे ॥५॥
मद मच्छर मुंकी माया रे, जिण कीधी निरमल काया रे ।
तप जप संजम आराधी रे, नरभव निज कारिज साधो रे ॥६॥
अणसण करि धरि सुह झाणइ रे, पहुता परभव 'बीकाणइ' रे ।
पगला अति सुन्दर सोहइ रे, थाप्या थूंभइ मन मोहइ रे ॥७॥
श्री 'ललितकीरति' उवझायइं रे, परतिष्ठ्या शुभ वेलाइं रे ।
सुख साता परता पूरइरे, सेवक ना संकट चूरइ रे ॥८॥
धन धन्न पिता जसु माया रे, 'जयतसी' 'जुगतादे' जाया रे ।
'माल्हू' वंसय सुविसाला रे, कलिकालइ चन्दनवाला रे ॥९॥
मन शुद्धइं श्रावक आवी रे, वंदइ गुरुणी नइ आवो रे ।
तसु मन्दिर दय दयकारा रे, नितु होवइ हरष अपारा रे ॥१०॥
'विमलसिधि' गुरुणी महीयइ रे, जसु नामइ वंछित लहीयइ रे ।
दिन प्रति पूजइ नर नारी रे, 'विवेकसिद्धि' सुखकारी रे ॥११॥

इति विमलसिद्धि गुरुणी गीतं ॥ समाप्तं ॥

(पत्र १ संग्रहमें)

द्वितीय विभागकी अनुपूर्त्ति ।

श्री गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

दुहा :—

मन धरि सरस्वती स्वामिनी, प्रणमी 'गोयम' पाय ।
गुण गाइस सहगुरु तणा, चरिय 'प्रबन्ध' उपाय ॥१॥
'वीर' जिनेसर नामने, पचम गणि 'सोहम्म' ।
'जबू' अन्तिम पवली, तास पाटे अतिरम्म ॥२॥
तिण अनुक्रमे उद्योतकर, 'श्री उद्योतन सूरि' ।
'वर्धमान' वधत गुण, वन्दो आणद पूरि ॥३॥

ढाल फागनी :—

'जिनेश्वर' 'जिनचन्द्र' गुणागर, 'अभय' मुणीन्द ।
'जिनवल्लभ' 'जिनदत्त', युगोत्तम नमे नरीन्द ॥
'श्री जिनचन्द्र 'जिनपत्ति', 'जिनेसर' सभारि,
'जिनप्रबोध' 'जिनचन्द्र''कुशल गुरु', हिव सुखकार ॥४॥
श्री'जिनपद्म' विशारद, सारद करे वखाणि ।
श्री 'जिन लब्धि' लब्धि गोतम सम, अमृतवाणि ॥
'श्री जिनचन्द्र' 'जिनेसर', 'जिनशेखर' 'जिनधर्म' ।
'श्री जिनचन्द्र' गणाधिप, प्रगटित आगम मर्म ॥५॥
'श्री जिनमेरु' सूरीश्वर, सागर जेम गभीर ।
सवत पनर निहुतरे, देवगति हुओ धीर ॥६॥

ढाल: अढियानी :

तव आचारिज इंद, 'श्रीजेसिंह मुणींद' हिवे विमासियो ए।
भट्टारक पद ठामि, 'छाजेडा' कुलि काम,
बालक आपिसे ए, गुरुपद थापिस्यांए ॥ ७ ॥

श्रावक जन सुविचार, मिलिया मन्त्री उदार,
बालक जोइये ए, परिजण मोहि (ये)ए।
'ओशवंश' शृङ्गार, 'जूठिल' साख मझार,
मन्त्री 'भोदेवरू' ऐ, तसु देदागरूए ॥ ८ ॥

तसु सुत बुद्धि निधान, मन्त्री 'नगराज' प्रधान,
सावय जिनवरू ए, धर्मधुरन्धरू ए।
'नगराज' घरिणी नाम, 'नागलदे' अभिराम
'गणपति' साह तणी ए, पुत्रीसहु भणीए ॥ ६ ॥

तसु उरि जिस्या रतन्न, मन्त्री 'वच्छागर' धन्न,
कुमर 'भोजागरू' ए, चतुर हां सायरू ए।
मन आणी उछाह, जाणो धरमह लाह,
संघ आगल रहे ए, 'वछराज' इम कहेए ॥१०॥

ढाल: उलालानी :

महाजन सहित खमासमण, 'वछराज' करीय बिमासण,
उत्तम महूरत आणी, बतीस लक्षणो आंणी ॥११॥
'जयसिंहसूरि' उत्संगे, आप्या आपणे रंगे,
'भोज' भाई तिणवार, हरष्या स्वजन अपार ॥१२॥

ढाल:—धवल एक गाहीनी:—

संवत पनर पइसठे जाण, शाके चवदे इकत्रीस सम,
मिगसर सुदि चउथी गुरुवार, रात्री गत घटीय इग्यार जनम ॥१३॥
पल इग्यारह ऊपरे तास उतराषाढ नक्षत्र योग वृद्धि।
कर्क लग्ने गण वर्ग ग्रह योनि, जन्मपत्री तणी इसी सिद्धि ॥१४॥

ढाल:—उलोलानी :—

पनर पचुहत्तरिवर्षे, विहर्या मन तणे हर्षं।
शुभदिन दीधीय दीख, सीख्या गुरु नी सीख ॥१५॥
दिनदिन वाधए ताम, वीज कलानिधि जाम।
क्रमे क्रमे विद्या अभ्यास, करेतसु सुहगुरु पास ॥१६॥
सूधो सजम पाले, मयण सुहड मद टाले।
रायहंस गति हाले, वयणे अमृत रसाले ॥१७॥

ढाल:—भमरआलीनी :—

'योधनगर' रलियामणो, तओ भ० राज करे 'गंगेय'।
'राठोड' वंशे सिरि तिलो, तओ भ०, रिद्धि जिसो सुरदेव ॥१८॥
छाजेड गोत्रे वखाणिये, तओभ०, गागाओत 'राजसिंघ'।
'सता', 'पता' नोता गुरु तओ भ०, चाथनी आणि अलंघ ॥१९॥
चाचा'देवसूर'नग्नु तओ भमराली० 'सता' पुत्र 'दुल्हण' सहजपाल'।
('सहजपाल' सुत गुणनिलो—तो 'मानसिंघ' प्रथिवीराज'।
'सुरताण'' कसतूर दे' तणा तो भ० सारे उत्तम काज।
'सुरताण' सुत तीन भला, तो भ० 'जेत' 'प्रताप' 'चापसीह'।
मात 'लीलादेवी' तणा, तीने सांह अवीह *)
मिली सकुटुम्ब विमासियो तो भमराली०,वीनव्यो'राग महिपाल ॥२०॥

* किनारकी नोट।

निपुण 'नेतागर' इम कहे तो भ०, सुणज्यो श्री नरनाह ।
गुरुपद मह मंडिस्यां आ रे ! तो भ०, मांगाइ तुम बोलवाह ॥२१॥

पामी तसु आएस लो, तो भ०, चिहिदिशि मोकली लेख ।
संघ लोक सहु आवीया तो भ०, याचक वलीय विशेष ॥२२॥

सप्तक्षेत्र वित वावर्यो तो भ०, आरिम कारिम रीत ।
कीधी विगति सोहामणी तो भ०, सुहव गावे गीत ॥२३॥

लगन दिवस जब आवियो तो भ०, 'बडगछि' 'पुण्यप्रभसूरि' ।
सूरि मन्त्र गुरु आपियो भ०, वाजे मंगल तूर ॥ २४ ॥

'जिनमेरु सूरि' पाटे जयो तो भ०, 'जिनगुणप्रभुसूरि' नाम ।
गच्छ नायक पद थापियो तो भ०, दिन-दिन अधिको माम ॥२५॥

संवत् (१५८२) पनरबियासीए तो भ०, फागुण मास सुचंग ।
धवल चोथ गुरु वासरे तो भ०, थाप्या मन तणे रंग ॥२६॥

संघ पूज करि हर्ष सुं तो भ०, मागणां दीधा दान ।
'गंगराय' भेटण करे तो भ०, आपे ते बहुमान ॥२७॥

ढाल:- वाहणरी :

संवत् पनर पंच्यासिये ए संघसाथे शत्रुंजे सुरयात्रा करी ए ।
'जोध नयरे' श्रीपूज भवियण बूझवेरे ॥२८॥

चउमासा बारह क्रमें ए हुआ अतिशय गणनाथ आकारण ऊमह्याए ।
बात करे मिली एम,'जेसलमेरु' मन्त्री घणा ए ॥२९॥

धन धन वत्सर मास, धन धन ते दिनुं ए ।
चरण कमल गुरुराय तणा, जिण दिन भेटसुं ए ।
नामे हुए नव निद्धि, भय सब मेटीसुं ए ॥३०॥

श्रासे जनम सुकयत्थ, सुगुरुनो देसणा ए ।
सुणता सूत्र विचार, नहीं कीजे मनां ए ॥३१॥

'देवपाल' 'सदारंग', 'जीया' 'वस्ता' वरू ए।
'रायमल्ल' 'श्रीरंग', 'छुटा' 'भोजा' परू ए।

इण परे लघु समवाय, साखे लेख आवियो ए।
पठआया 'जण पच', सुजस तिहा व्यापियो ए ॥३२॥

विधि सु वदी पाय, सुगुरु ने वीनती ए।
करि आपी कर लेख, वदति उलसी छती ए ॥३३॥

मानसर जिम हम, पपीहा जलधरु ए।
तिम समर तुम्ह नाम, दसण सावय हरु ए ॥३४॥

ढाल'—गीता छदनी :—

हिवे शुभ दिन रे, गच्छपति गजपति चालता,
पुर मामो र वादी गय मद गालता।

मरुदेसे रे 'जेसलमेरु' महि मालता,
गुरु आया र, पच सुमति प्रतिपालता ॥३५॥

पालता पचाचार अनुपम, धर्म सूधो भासीए।
आषाढ वदि तरसी गुरु दिनि, सव (पनर सत्यासीए।
परमट्टि विजय सुवेल वाजिन, गीत गायति आविया
नर नारि सु मोटे मडाणे, पोषहशाले आविया ॥३६॥

नित नव नव र, सरस सधा देसण श्रवे,
सेवय जण र वछिय आशा पूरवे।
राय राणा रे, तप जप चारित्र गुण स्तवे,
गुरु इण परी र चन्द्र गछ कु सोभवे ॥३७॥

सोभवे पूनिमचन्द परगट, वदन नागा सुर गिरू।
नवखड नाम प्रसिद्ध सुणिये, तेज दीप दिणयरू।
कलिकाल लब्धि निधान गोयम, जम महिमा मदिरू।
मोतीया थाल भरी वधावे, सूहव रभा अणु सुदरू ॥३८॥

ढाल : संवत् पनरे चउराणुंइ, 'लूणकर्ण' भूपाला रे।
जल अभावे जन सीदता, देखी करला रे।३६।
संवत् पनर चउराणु ए, (भाग्यवंत भूमंडले) गच्छनायक वोलाया रे।
कर जोडी ने वीनवे वांदी पूजजीराय (?पाया) रे।सं० ॥४०॥
श्री खरतरगच्छ राजिया, तेरो सुजस अपारू रे।
कृपा करो सहु जीव नो, वरसावो जलधारू रे। सं० ॥४१॥
मोटी वात मने मनी, धर्मलाभ आशीसे रे।
उपाश्रये गुरु आवीने, श्रावक तणी जगीसे रे। सं० ॥४२॥
अट्ठम तप मंत्र साधना, आसन तणे प्रकंपे रे।
मेघमालि सुर आवीयो, करूं काज इम जंपे रे ॥४३॥
करि घट अंबर छाइयो, वरपि वरिप घन गाजे रे।
तामे चमके वीजली, जगि जस पडहो वाजे रे। सं० ॥४४॥
सर तलाव द्रह पूरीया, नीर निवाण न माई रे।
धर्मवृक्ष वधता हुआ, पापज घास सुकाई रे। सं० ॥४५॥
भाद्रव सित पडिवा तिथे, प्रथम पहुर सर पूर्यो रे।
सुहगुरु इण तप जप करी, काल निशाचर चूर्यो रे। सं ॥४६॥
दया धर्म दीपाववा, राय पास मुकाये रे।
बंदी वाणिक गुन्हे पड्यो, निगड बंध भंजावे रे।सं० ॥४७॥
भेरी नफेरी झलरी, ढोल दमामा वाजे रे।
पंच शब्द जिन परवर्या, गयणि पटोला राजे रे। सं ॥४८॥
रूपवती सूहव नारी, धवल मंगल मिली गावे रे।
संखनाद दिशि पूरिने, उपासरे गुरु आवे रे। सं ॥४६॥

ढाल:—अग दुवालस जाण, आण माने सव,मुनिवर मोटा गच्छपती ए।
गुरुगुण धरे छत्रीस,खरो क्षमा गुणे, वदन कमल वसे सरसती ए ।५०।
चारित चगो देह, मोह महाभड, जे जग गंजण वस कीयओ ए।
चो कपाय मद अट्ठ, अतर अरि दल,खडी सुजस सदा लीयो ए ।५१।
'जवू' जेम सुशील, 'वयर स्वामी' वली, तिण ओपम कवियण तुले ए।
आठ प्रभावक सूरि,जिनशासन क(ह)या,महिमा तसु समजण कलीए।५२
सायण डायण वीर वावन, भूपिपति, सूरि मत्र वले साधिया ए।
प्रगट्यो सद्गति पथ, रु धिओ दुर्गति राहू साहू, सघ वाधिया ए ।५३।

ढाल.—कोडी जाप एकासण तप सदा रे, करि इद्री वश पच।
सारणार ७ सीस समापी गण मुदा र ।।५४।।
काल ज्ञान अने आगम वले र, जाणी जीविय अत।
खामे र ७ चोराशी लाख प्राणिया र ।।५५।।
सवन सोळमे पचानने रे, राध अट्ठमि वदी (सु)र।
वार र २ आहार त्रय अणसण निय मने रे ।।५६।।
सघ साखि पचखाण इग्यारसे र, आरुही डभ्रा सथार।
भाव रे ७ भरत तणी परिभावना र ।।५७।।
पूजक निन्दक जिहुपरि सम मन रे, अरिहत सिद्ध सुसाव।
घ्याइर ७ पनर दिवश, जिनधर्म सलेखने रे ।।५८।।
सूत्र अरथ चिंतन चितलाइओ रे, आलोइय पडिकत।
सुहगुर र ७ काळमास, इम पचतु (त्व) पाइयो र ।।५६।।

वस्तु: वरस नेऊ २ मास वलि पंच, पण दिन ऊपरि तिहां गणिय ।
सुदि नऊमी वेशाह मासे प्रहचि, हसीय? अमृत घटिय सोमवार।
सुरलोक वासे जय २ कार करंति जण, गुण गावे सुर नारि ।
'श्रीजिनगुणप्रभुसूरि' गुरु, सयल संघ सुहकार ॥६०॥
इम गच्छ नायक कला गुणगण रयण रोहण भूधरो ।
संथार चारों तंगवारण, खंधवास स चोवरो ।
'श्रीजिनमेरु सूरींद्र' पाटे, 'जिनगुणप्रभु सूरि' गुरो ।
तसु धवल 'जिनेसर सूरि' जंपे, ऋद्धि-वृद्धि शुभंकरो ॥६१॥

श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्

ढाल: सकल भविक जिन सांभलो रे ।
'मरुधर' देशे मंडणो रे, श्रीपुर 'वोकानेर' ।
'रूपजी शाह'वसे तिहां रे, धनकर जेम कुबेर
धनकर जेम कुबेर रे साचो, 'रूपा दे' तसु घरणी वाचो ।
जायो पुत्र रतन्न जिण (जा)चो, भवियण लुल लुल चरणे राचो ।
जी हो 'जिणचंद' जी जी हो , तूं जिण सासण सिणगारके ।
गिरुओ गच्छपती हो तूं तो संवेगी सिरदारके । सेवे सुरपतोजी ।१।
कल्पवृक्ष जिम वाधतो रे, सरव कला परवीण ।
वालक वये धर्मनी दिसा, समता रस लवलीण रे ।
समता रस लवलीण रे जाणी, मात पिता मन उल्लट आणी ।
गुरुने विहरावे शुभ वाणी, वात एह श्रीसंघ घणी सुहाणी ।२।
मतिसागर विहरी करी रे, 'श्री जेसलमेर' गिरि आया ।
'वीरजी' ने देखो करी, श्रीपूज्य घणुं सुहाया ।
श्री पूज्य घणुं सुहाया रे भाइ, सेंहथ चारित्र दे सुखदाइ ।
'वीरविजय' ओ नाम सवाइ, आपणी विद्या सयल भणाइ । ४ ।

अवसर जाणी आपियो रे, सहर्ष आपणो पाट ।
श्रीसंघ 'जेसलमेरु' में रे, कीधो अति गहगाट ।
कीधो अति गहगाटो रे वड़ो, 'श्रीजिणचन्दसूरि' गच्छ चड़ो ।
कुमति ना मत दूरे निकन्दो, मेरु तणी पर निंदो । ५ ।
सोभागी जंबू जिसो रे, रूपे 'वयरकुमार' ।
शीले थूलभद्र सारिखो रे, लब्धे गोयम अवतारो ।
लब्धे 'गोयम' अवतारो र ऐसो, दूणको हे केसो ।
सूरके आगे खजुओ जेसो, इण आगे सम कुमती तैसो ।६।
'श्रीजिनेश्वर सूरि' ने र, पाट प्रगट भाण ।
'बाफणा' गोत्र कला निलो, गच्छ 'वेगड़' सुलताण ।
गच्छ 'वेगड़' सुलताण रे साचो, ओर कुमति कहावे काचो ।
'महिमसमुद्र' गुरु चरणे राचो, कवियण इम गुरुना गुण वाचो ।७।

न० २ राग गोडी भावननी

परम सवेगी परगडो रे, चावो जस चिहु खडो र ।
चीतार वडा छत्रपती र, नाम जपे नवखडो रे ।
कहो किम वीसरे, ते गुरु जुगपरधानो रे ।
'जिनचन्द सूरिजी' साधु सिरोमणि जाणो रे ।१।
पच महाव्रत पालता रे, करता उग्र विहार ।
भविक जीव प्रतिबोधता रे, कूड न कपट लिगारो र ।का२।
सूधो धरम सुणावता रे, अविरल वाण वखाण ।
मेघतणी पर गाजतो रे, साचा चतुर सुजाणो रे ।का३।
सुधा सशय भाजता रे, प्रवचन वचन प्रमाण ।
कुमति मति कु खडता रे, धरता नित्त धर्मध्यानो रे ।का४।
शुद्ध प्ररूपक साधुजी रे, हुता धरम जिहाज ।
गुणियोने आश्रय हुता रे, लेसवता महु लाजो रे । क ।५।

पंडित ना पालक वडा रे, दीनो तणा आधार ।
तेहने तुरत तेडाविया रे, कीधो सुं किरतारो रे । क ।६।
हंस तणी पर हालता रे, पंच सुमति प्रतिपाल ।
ते गुरु सां सङ्या नहीं रे, वालतणी परिकालो रे ।का७।
चन्द्रगच्छ ना चन्द्रमा रे, गच्छ 'खरतर' सिणगार ।
वेगड विरुद धरण वडा रे, जिनशासन जयकारो रे ।क ।८।
गच्छनायक दीसे घणा रे, पिण कुण तारा सरीख ।
तारागण सहु ए मिली रे, कहो किम सूरि सरीखो रे । क । ६ ॥
धन 'रूपा दे' मावडी रे, धन 'वाफणानो 'रे' वंश ।
धन कुल 'भरत' नरीन्दनो रे, जिहां उपना गुरुराय हंसो रे ।क ।१०।
सुगुरु 'जिनेश्वर सूरिजी' रे, थाप्या जिण निज पाट ।
ठाम ठाम धर्म दीपव्यो रे, वरताव्या गह गाटो रे ।का११।
संवत् सतर तिरोतरे रे, भृगु तेरस पोष मास ।
करि अणशण स्वर्गे गया रे, धर जिन ध्यान उल्हासो रे । का१२।
'श्री जिनचंद्र सूरीन्द्र' ना रे, गुण गावे नर नार ।
तिण घरि रंग वधामणा रे 'महिमसमुद्र' जयकारो रे ।का१३।

श्री जिनसमुद्रसूरि गीतम्

राग: तोडी:

आज सफल अवतार । सखीरी ।
श्री 'जिनसमुद्र' सूरिश्वर भेट्यो 'वेगड' गच्छ सिणगार । स० । १ ।
श्री 'ओश वंश' 'श्रीमाल' प्रमुख सहु श्रावका सिरदार ।
आदर सहित सुगुरु आण्या, तिण श्री 'सांस 'नगर' मझार ।२।
'श्री श्रीमाल' 'हरराज' को नंदन * जिनचन्द्रसूरि पटधार ।
'महिमा हर्ष' ~~कहे~~ चिर प्रतपो, जिन शासन जयकार । ३ ।

* अन्य गीतमें माताका नाम लखमादे लिखा है ।

मस्तयोगी ज्ञानसारजी-हस्तलिपि

(मूल पत्र हमारे संग्रहमें)

॥ श्रीमद् ज्ञानसार अवदात दोहा ॥



उदैचन्द्र सुत ऊपज्यो, लीयो विधाता लोच।
देवनरायण दासनु, को अजन गति आलोच ॥ १ ॥
अढारै इकडोतरै, छाक मेल री छाड।
मात जीवण दे जनमीया, साड जात नर साड ॥ २ ॥
वास जेगलै चैत सु, दीवा जनम उदार।
वरस बार बोली गया, बारोतरै री वार ॥ ३ ॥
श्री जिनलाभ सूरिसरु भट्टारक भूपाल।
बीकानेरज वदीयै, चढती गति चोसाल ॥ ४ ॥
सीस वडाला वडमती, वडभागी वडरीत।
रायचन्द राजा ऋषि, प्रगट्यो पुण्य प्रवीत ॥ ५ ॥
तिण पाटै इण कलि तपै, जाण्यो थो निरहेज।
बायै उम्मर वोसरै, तरुण पसारै तेज ॥ ६ ॥
प्रणमे सूरतसिंह पय, मिल्यो जनम रो मीत।
ज्ञानसार ससारमे, आखे लोक अदीत ॥ ७ ॥
सीस सदासुख साहरै, चलि आवे चौराज।
श्रवणे तो मे साभल्यो, आणर दीठो आज ॥ ८ ॥
चानाजी वायक अखै, अखै राठोडो राज।
खरतर गुर सगला अखै, रतन अखै महाराज ॥ ६ ॥

—


॥ इति ॥

कठिन शब्द-कोष

अ

अकयथ ९५ अकृतार्थ, निष्फल

अखिनात २९८ चिरस्थायी

अक्खीणमहाणसि ३० वह शक्ति जिससे भिक्षान्न सैकड़ों लोगों को खिलाने पर भी कम न हो जब तक कि लानेवाला स्वयं भोजन न करे।

अखोड ११५ अखरोट

अगम्नी ३३० नहीं किया हुआ, कठोर अभिग्रह।

अगजिउ २४ अपराजित।

अघोर ९१ जो घोर (विकट) नहीं है।

अज्जवि १ आज भी।

अजुआली ३३१ उज्ज्वल।

अट्ठ ३३ आठ।

अड्डगनिया १५७ कान का आभूषण विशेष।

अ[illegible]ले ३५९ अल्प।

अढलक दान ३०१ प्रचुर दान।

अणगार ६२,१६६ घर रहित, मुनि

अणभिडिउ २४ सामने नहीं हुआ, भिड़ा नहीं।

अणुक्कमि ३९८ अनुक्रम।

अणसरहु ३६७ अनुसरण करो।

अणुसरीए ३३९ अनुसरण।

अत्थय ३६८ अथ अर्थ।

अत्थि ३७८ अस्ति, है।

अनड्डा २५८ अनम्र।

अनलि(नाढिअ) १६६ अनल राजा का ग[illegible]।

अनिमिष ५५ बराबर, एकटक, देव।

अनेरिय ३९३ दूसरी।

अप्पिअउ १६ अर्पित किया, दिया।

अबलिन १८ बलहीन।

अबुहहु ३६५ अबोध।

अवञ्झ ५ अवन्ध्य, सफल।

अब्भक्खान २७९ मिथ्या कलङ्क।

अभिग्रह ३४९ प्रतिज्ञा।

अभिधा २७२ नाम।

अभिनवउ ९५ नया, अभिनव।

अभिहाण १७९ नाम।

अमग्गउ ३७१ कुमार्ग, मिथ्यात्व

अमलीमान ८९ निर्मल मानवाला।

अमारि	१०२	अहिंसा।
अमी	४१०	अमृत।
अमीझरउ	१७०	अमृत झरनेवाले
अमूलिक	३३७	अनमोल।
अयरावइ	३२	ऐरावत, हाथी
अयाण	४०	अज्ञान, मूर्ख
अरगचा	८४	अरगजा
अरचा	१९८	पूजा
अररि	३२	अरेरे
अर्भक	२७१	बालक
अलजयो	२९४	मनोरथ
अलजो	८७	विरहस्मरण, ओलूंआन।
अलिअ	८६	अलीक, अप्रिय, बुरा।
अलीय	१००	अलीक, मिथ्या
अवगाहए	६	अवगाहनकरना।
अवडा	१७	अयोध्या
अवदात	१७०, २६९	गुण, चरित्र, निर्मल।
अवधारो	२९९	स्वीकार करो
अवयरिउ	२२	अवतार लिया
अवरोह	३०	अन्तःपुर, घेरा प्रतिबन्ध, रोकना।
अवल	३३	अबला, नारी
अवहरइ	१	दूर करता है
अविहड़	१७८	अटल, अविहत
असमानो	८४	असमान
असराल	९०	वक्र, जहरीला
असिणि	१८०	अश्विन
असिय	३२	अशित, भक्षित
असिव	९६	अमङ्गल
अहिनाण	३४९	अभिज्ञान, पहचान, निशानी।
अहियासने	३२९	वेदते, अनुभवते
अहिठाण		अधिष्ठान
अंग	१८३	जैन शास्त्र
अंगोल	७	पुत्र
अंबाड़ी	३४७	हाथीकी अंबारी (हौदा)
अंबाएवि	३०	अम्बा देवी

आ

आउखउ	३०	आयुष्य
आउखो	२९६, ४०९	आयुष्य
आएसि	३८७	आदेश
आकरा	१४८	अत्यन्त कठिन
आखडी	३१६	निषेधात्मक प्रतिज्ञा, व्रत
आखातीजइ	३९७	अक्षयतृतीया
आगार	८१	घर, निवास
आण, आणा	३७०, ३७१	आज्ञा
आणंदिणि	१	आनन्ददायक(में)
आदेशकार	१०६	आज्ञाकारी
आनुपूरवी	१९६	कर्मका एक भेद, अनुक्रम

आपे	९७	देता है
आम	४०८	इस प्रकार
आम्नाय	२७३,२८४	परम्परा, सम्प्रदाय।
आम्बिल	११९	तपस्या,(६ विगया का त्यागविशेष)
आयरिय	२६	आचार्य
आरसे	१९०	प्रकार
आरा	२८२	चक्र
आराहण	८८	आराधन
आरिज	१६०,३७६	आर्य
आरवव	१६६	घन्ना
आलिगिड	३९३	आलिङ्गन
आलि	२४	व्यथ
आलीजा	१०८	प्रेमी
आलोय।	३४८	आलोचन
आवतिया	१०४	आ रहे है
आवत्त	३००	दोनो हाथ गुम्फ पेरोपर लगाकर अपने मस्तकपर लगानेकी वन्दन क्रिया।
आसन्नसिद्धि	२९०	निकट-मोक्षगामी
आसगावत	४१४	आश्रयवर्ती, आधीन

इ

इक्कक्क	३३	एक एक
इलि	२९३,३७३	पृथ्वीपर
इसहे	१९०	एस
इटाए	३२९	इटासे
इदा	२८९	इन्द्र

ई

ईति	३२७	धान्यादिको हानि पहुचाने वाले चूहादि प्राणी।
इया (समति)	२६२	विवेकपूर्वक चलना।

उ

उइक्खहु	३६९	उपेक्षा करना।
उकेश	३०७	उपकेश,ओसवाल
उक्कठिअ	३९२	उत्कण्ठितहुआ
उसेन	३३१	सेना
उग्गमणे	२८	उदय होनेपर
उच्छगि	६८,२१९,३४४	गोद
उच्छव		उत्साह, उत्सव
उज्जमाए।	२९३	उद्यम करना।
उज्जोइउ	१, ३६६	प्रकाशित किया।
उणह	४९	उसन
उत्तग	३३९	ऊचा
उत्थपिय	२९	उखाडा।
उत्सूत्रविधि	२६	उत्सूत्रओरविधि
उथप्पिय	४५	उखाडा।

उद्वेग ४०४ उद्वेग
उद्गता २९२ उदय हुई
उद्घोषणा २८८ घोषणा, ढंढोरा
उपदिसि ९४ उपदेशकर, कहकर
उपधान ८७ तप विशेष
उपनले ११ उत्पन्न हुए
उपशम ६२,१३०, ३२०,३२३ शान्ति
उपसमण ३६७ उपशमन
उप्पलु २७ उत्पल कमल
उबरन ३२ उदुम्बर
उभगउ १६२ उद्विग्न हुआ,
उम्मूलिय ३९ उन्मूलित किया
उयरइ ३३३,४०३,२२ उदरमें
उलट १४९ हर्षोत्साह
उल्लास ३९२,४०६ प्रसन्नता
उवज्झाय २८,९६,९७, १३४,१३९, २३१,३९९, ३४०,४०२ उपाध्याय
उवसग्ग २० उपसर्ग
उसभ २ ऋषभ
उस्सासहि ४० आनन्दित, उत्साहित
उंबरा ८७ उमराव

ऊ

ऊमाहउ ९६ ढोकना, चढ़ाना
ऊनघां (थां) २९८ उद्दंड
ऊनविउ १४ उमड़ना
ऊभविय १८ ऊंचा किया जाना
ऊमाहो २२९ उमंग उत्साह

ए

एकरस्सु ३०२ एक बार
एरिस ३७ ऐसे
एषणासुमति २६२ एषणा समिति, निर्दोष आहार का ग्रहण।

ऐ

ऐरावण २६४ हाथी

ओ

ओठीडा ३०२ ऊंट सवार
ओलगइ ८४ सेवा करता है
ओसउ १९४ औषध

क

कई १ कृत, किया
कइयइ १९७ कब
कए १ करनेपर
कचकडउ ११४ वस्तु विशेष
कचोल ३९१ कटोरा
कज्जारंभ ९ कार्यारंभ
कटरि ३९८ आश्चर्य और प्रशंसा बोधक अव्यय
कटारिआ १८८ गोत्रका नाम
कट्ठ ३६९ कष्ट
कडयड ३६६ कडकडी आवाज

कणय	३८७	कनक, सोना, गेहूँ
कणयाचल	३९	कनकाचल, मेरु
कणीपानह	९३	घासविशेष, गुरुके चलनेके समय पैर धरनेके लिये घास बिछाया जाता है
कदग्गही	३१६	दुराग्रही
कवड	३९३	कपट।
कप्पयरु	४०	कल्पतरु कल्पवृक्ष
कप्पतरो	१७	" "
कप्पम्	१	कल्प, कथा
कमला	३९४	लक्ष्मी
कय	२१०	कृत किया
कम्मपयडी	२६६,२७०	कर्म प्रकृति
करड	३८	हाथीका गण्डस्थल
करटि	३८	हाथी
करतउ	३१७	करता हुआ
कल्याणु	३७१	कल्याण।
कविराय	३१०	कविराज
कव्व	१	काव्य
कव्वह	३	कवित्त, काव्य
कसाय	३५३	क्रोध, मान, माया लोभ (४ संसार वृद्धि हेतु)
कम्मयोको	१५७	जडाऊ, चित्रित
कहर	४०७	मौत
कंस	६४	चिन्ता, दुविधा
काउसग्ग	३२९	कायोत्सर्ग
कागल	१३३	कागज
काप्या	४१२	फाटे
कामगवी	१२३,२५७	कामधेनु
कामकुंभोपम	[illegible]	कामकुंभके समान
कामित	९५,१२३	इच्छित
कारवइ	३८७	कराता है
कात्तस्वर	२६४	स्वर्ण।
कित्ति	३८५	कीर्त्ति
किन्ह	१७	कृष्ण
किवाणि	३२	कृपाण
किसन	१	कृष्ण पक्ष
किंपि	३६७,३७९	किमपि, कुछ
किलिट्ठ	३४०	क्लिष्ट
कीन्हइ	११३	कीनी
कुग्गह	१६	कुग्रह, दुष्ट ग्रह
कुच्छि	३९१	कुक्षि
कुडि	२८४	मिथ्या
कुर्गति	१	कवना
कुंकवती	१७	कुंकुम पत्रिका
कुट्ट	३११	कोने
केदारा	१०४	राग विशेष
केरड	१०४	का
केसूआ	३५१	केसूके फूल
कोटीर	३६१	श्रेष्ठ, अग्रणी
कोड	३११	कौतुक
कोडि	८७,९९	कोटि
कोडीधज	४१६	करोड़पति
कोतिल	२९३	कोतल तेज घोड़े
कचूअड	१५७	कचको

कंठीर(व)	३८४	सिंह
कंपिनइ	१२	कांपकर
कंमिण	३६७	कर्म, कृत्य
कंसाल	३,१६४	कांसीका वाद्य विशेष
क्रमि	३६९	चलकर, क्रमसे
क्रिया उधार	२७७	शुद्ध मार्गका उद्धार

ख

खइडां	१६३	खड्ग
खग्ग	३९२	''
खटण	३११	प्राप्त करना
खपाया	४११	पूरे किए, नाश किए
खमाया	२०९	क्षमा करवाया
खमाविनइ	३३०	क्षमा करवाकर
खरउ	३७९	सचा, खरा
खरहत्थ	३६७	खरतर
खंति	३८०	ध्यान
खंति क्खर	३४	क्षांति, तेज
खम्यो	२९१	सहन करना
खाटीजइ	१६२	संचय करना, प्राप्त करना
खाटै	४१०,४१९	स्थापित करना
खांत	४०८	ध्यान, क्षांति
खान	१९३	मुसलमान सरदार
खामी	२८४	कमी, त्रुटि
खिजमति	२८२	खिदमत, सेवा
खित्तवाल	४	क्षेत्रपाल
खिसणु	३८७	हटना
खिहाला	१९४	खाद्य वस्तु विशेष
खीरह	३०	क्षीर, दुग्ध
खेतरपाल	४०९	क्षेत्रपाल
खोणि	३६	क्षोणी, पृथ्वी

ग

गउड	१०६	गौडी रागणी
गउ (ड) यड्ड	३७	गिडगिडाना
गउरी	१०४	गौरी
गच्छ	२८६	समुदाय
गजगाह	१६०	हाथियोंकी घटा
गजगति गेलि	१९९	हाथीकी चालके समान चलना
गजथाट	१६८	हाथियोंका समूह
गणहरु	२	गणधर
गय	३३	गज
गयणु	२	गगन
गरहिउ	३३	गरिष्ठ, बड़ा
गरढी	३४३	वृद्धा स्त्री
गरीठो	२७०	बड़ा
गरुयड	१७९	बड़ा भारी
गलिय	३३	गल गया
गहगहइ	३४०	प्रसन्न होना
गहगहिय	४०१	,, होकर
गहगाट	१६९,१६८, ३०१,३१९	प्रसन्नता सूचक शोर

गहिर	३	गहरा
गहली	३३७, ३३८	गेहूंकी डगली गुरगीत
गजणू	४९	गाजनकरनेवाला
गापसू	३८४	गाऊं गा
गायसिए	३४०	,,
गारवउ	८०	गलाया पिताया
गिडगिडी	१६४	वाद्यविशेष
गिरुआ	२००	बडा
गुजरी	१०५	रागका नाम
गुणनिलो	९७, १४७	गुणोंका आवास
गुणनिहाण	३१	गुणनिधान
गुदराणो	१४२	अरज की
गुपति	११६,१७५,२९७ ४१६	सयमित करना
गुरुपसाय	२९७	गुरुके प्रसादसे
गुली	१५७	नजर नहीं लगनेके लिये बाधा जाता है
गूडिय	३८१	पताका
गूडी	१८, ३१६	,,
गोइक	२४	गाय और आक

घ

घट्टि (थट्टि)	२९	ठाठ
घमतूर	३८८	बहुतसे बाजे
घरणि	१७	गृहिणी
घातल	३०१	डालना
घुराया	३०३	बजाये
घुर	३३८	बजे
घोल	१५६	कपडसे छाना हुआ दही

च

चउपर्वी	१४३	४ पर्व तिथी
चउसठि	१८०	चौसठ
चउसाल	१००	चौसाल, चतुशाला चारोंओर
चकरडी	१५८	चकरी
चक्कधरो	३८९	चक्रधर चक्रवर्ती राजा
चमक्किय	३८८	चमका
चंग	३७७	अच्छा
चारण	१६०	जाति
चारित्त	१६३	चारित्र
चियवास	४९	चैत्यवास
चूका	१६३	भ्रष्ट होना विचलित होना
चूडावयस	२१	चूडावतंश
चूनडी	३३३	वस्त्र विशेष
चो	२५८	का
चोल	१५८,१८०	मजीठ
चोवा	८५	सुगंधित पदार्थ विशेष

छ

छछेद	१८३	आगम छेद सूत्र

झालिहि	३८८	समलता
झीलता	६२	अवगाहन करना, नहाना, गरकाव होना
झुणि	३८७	ध्वनि
झोलड	११३	झोली, झोला

ट

ट्ठियउ	२	स्थित

ठ

ठरे	२७२	ठण्डा होना
ठवणान्कि	२८०	स्थापनादि ४ निक्षेपा
(पय) ठवणुच्छव	२१,२२	पदस्थापनोत्सव
ठविउ	२	स्थापित किया
ठविज्जय	३९	स्थापितकिया जाता है
ठविय	२७	स्थापितकरके
ठवीया	२७७	स्थापित किया
ठिकरि	१९४	ठीकरा

ड

डमडोलइ	१६०	चचल होना
डमर	९,१०४	उपद्रव
डाक डमाल	२६२	आडम्बर (झाकझमाल)
डाण	२६०,४१४	तेज
डोकरपणि	१६३	वृद्धावस्थामें
डोहइ	१९७	गिराना
डोहर	१९४,१८०	दोहद

ढ

ढक,बुक	१७	वाद्य विशेष
ढकारविण	३६६	ढका (वाद्य) के रव शब्दसे
ढलहण	३९४	झरझर
ढलकती	३३३	धीरे धीरे चलती हुई
ढाल	६०	रागकी रीति विशेष
ढीक	३४९	गरीब
ढूकडा	४००	पहुचे, पास
ढेल	३३३	ढेलनी, मयूरी

त

तक	१	तक
ततवंतु	३६८	तत्ववान
तत्थ	३९०	वहा, तत्र
तपग	१४१	तपा गच्छीय
तयणु	३९५,३९६	तब
तयणतह	१६	तदनतर
तरणि	३६६	सूय
तरतउ	१९७	तैरता हुआ
तरडउ	३६७	नौका
तलीया	३१६	विस्तृत
तव	३८९	तप
तलपटे	२९२	उसके पाटपर
तह	३७१	तथा
तहति	१९३	तथति, ठीक है ऐसा

दहणु	४०७	जलाना
दंसण	३८८	दर्शन
दासनु	३२१	कहूं
दादह	३४९	दान
दिक्खा	३९	दीक्षा
दिणि	१	दिन
दिवाजड	६७	शोभा
दिवाने	१४७	दरबार
दिनायर	७	दिवाकर, सूय
दिवायर	२०	"
दीठली	१२	देखी हुई
दीदार	३०३,३४८	आस, दर्शन
दीवमि	१	दीपक
दुक्कर	३७९	दुष्कर
दीस	४१३	दिन
दुक्करकार	१६३,१६४	दुष्कर कारक
दुग्गय	४०	दुर्गति
दुद्धर	४	दुष्कर
दुरन्ती	१९५	जल्दी
दुत्तरि	३६७	दुस्तर
दुतारो	१६४	दुस्तार
दुरग	१६७	किला, दुर्ग
दुल्लह	१९	दुर्लभ
दुन्निसह	३६७	दुर्विषय
दुसम	२६१	कठिन, बुरा
दुहेलड	३७९	दुष्कर
देवाणुप्रिय	२६९,३२३	देवानांप्रिय
देशना	११६	व्याख्यान
दसण	४९,८९	"
दातार	१६४	तपकी आवाज
दोगंदुक	१९१	देवताकी जाति
दोहग्गु	३७१	दौर्भाग्य
दोहिला	१६३,३२३,३९३	दुष्कर
द्रुग	२६८	दुर्ग
द्रू(?ह)यमणि	३३	रश्मि ?

ध

धसाव	२७९	सरगाने, जगाव,
धनदाण	९१	धन देनेवाला
धणुहर	३६९,३६६	धनुधर
धम्ममइ	३३९	धर्ममति
धय	२२	ध्वजा
धयड	३६६	ध्वजप- ध्वजा
धवरावह	१९७	दुलाना, प्यार करना
धवल मंगल	३६२,३८८	मंगल गायन
धाहि	७७	डाका
धींगड	३१४	मोटे, जबरदस्त मजबूत, पुष्ट
धींगा	१९३	,,
धुयरय	३१	धुतरज ?
धुरहि	३९	प्रथम आदिम
धूतारी	३४८	धूर्त स्त्री
धोक	४१३	साष्टांग प्रणाम

न

नगीनो	३९४	जवाहिरात
नन्दी	१८३	सूत्र
नमेवी	३८४	नमस्कार करके

नयनिमल	३२	नीतिमें निर्मल
नयरि	१	नगर
नरभव	२४	मनुष्यभव
नरवय	२	नरपति
नवगीय	२९	नव ग्रैवेयक
नव्याणु	३२६	निनानवे ९९
नही	१०	नहीं
नाइसक्या	२९४	नहीं आसके
नाडय	१	नाटक
नाण	१,६,३८९	ज्ञान
नाणवंत	३६६	ज्ञानी
नाणिहि	४९	ज्ञान रूपी
नाथणा	२९८	नाथ डालना, वशमें करना
नादो	८०	आवाज
नान्हडियउ	१६३	छोटा
नामउ	१६६	नाम
नारिंग	३२	नारिंग, मीठा नीबू
निकाचिय	३९६	निविड रूपसे बन्धन
निगोद	३२९	अनन्त जीवोंका एक साधारण शरीर विशेष
निग्रंथ	२७०	परिग्रह रहित
निच्चु	३०१	नित्य
निज्जणवि	३९,३९	जीता
निज्जिणिउ	३१,४९	जीता
निटोल	५१,१२०	व्यर्थ
निद्दइइ	३६	परास्त करना
निब्भत	३३	निर्भ्रान्त
निय	१६	निज
नियुमणि	३६७	अपने मनमें
नियमन	६२	निज मन
नियर	१	निकर, समूह
निरीहो	१३	अनासक्त
निरुत्तउ	३९	निश्चित
निलउ	६,१७९	निलय, घर
निलो	३१४, ३१६	”
निलवट	१८१, २९९	ललाट
निबड	१९९	घनिष्ठ
निवस	१७९	स्थान
निप्पन्न	२७१	सम्पन्न
निसुम्ने	२७६	सुनकर
निसाले	३२२	पाठशाला
निसियर	३३	निशाचर,राक्षस
निसुणवि	२१	सुनकर
निसुणेवि	३९३	”
निहतरइ	१९६	नोतरना, आमंत्रित करना
नीकउ	११८	अच्छा, भला
नीगमउ	२४	गमादो
नीआमता	३३०	पार पहुंचाता
नीलवण	३३०	लीलोती, हरियाली
नीवाणो	१३०	नीचा स्थान
नेजा	३९३	भाले
न्यात	३११	ज्ञाति, जाति

न्हवराबइ	१५७	नहलाता है
प		
पउम	३६८	पद्म
पउमण्वि	१९	पद्मादेवी
पउम पह	३१	पद्मप्रभ
पइसरइ	२	प्रवेशके समय
पक्खरिय	३२	पाखरना (प्रक्षरित)
पाउरा	२५७,३३२,४०५	पादुका
पचखाण	११३,३२६, ३५७	प्रत्याख्यान
पचखना	३३०	प्रत्याख्यान किया
पजूसण	३५१	पयूसण पव
पचमाचार	४९	ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चरित्राचार, तपाचार, वीर्याचार।
पञ्चगि	३४०	पाच अग
पञ्च विषय	४९	पाच इन्द्रियो के ५ विषय
पञ्चाणणु	३३	पचानन, सिंह
पञ्चासम	३६३	पचासवा
पञ्चुत्तर	२९	पाचअनुत्तर विमान विजय, वेजयत, जयत, अपराजित, ५ सर्वार्थसिद्ध

पच्चक्खु	१९	प्रत्यक्ष
पट्टतर	३६७	उपमा
पओधर	१७६	पट (पद) को धारण करनेवाले
पोला	५३	रेशमी वस्त्र
पलोजइ	३४९	प्रतीक्षा करना
पडह	३,३१८	पटह बाजा
पडाय	२२	पताका
पडिक्कमणउ	१८२,१३३	प्रतिक्रमण
पडियार	३८६	प्रतिकार
पडिपुन्न	८९	प्रतिपूर्ण, पूर्ण
पडिबिम्ब	४	प्रतिबिम्ब
पडिबोह	२,१९,२७, ३८८ ४०२	प्रतिबोध
पडिरवण	१८	प्रतिरवस, प्रतिध्वनिसे
पडीमा	२८०	प्रतिमा
पउर	६८ ७७,२९९	प्रचुर।
पणासइ	२०,३६२	नाश करता है
पणासणु	१६	प्रनाश करनेवाला
पत्त	४	प्राप्त
पतीठी	१४१	प्रतिष्ठि
पतीनउ	१४१	प्रतीति हुइ
पत्ति	३३	वृक्षके पत्ते
पत्तु	३६९,३१२	पहुचा, प्राप्त किया
पम्म	१५७	पद्म कमल

पयट्ठावइ ३९१ स्थापित करता है
पभणेइ ४०४ कहता है
पभणेसो ३१२ कहूंगा
पमुह १,११८,४०२ प्रमुख, आदि
पमुहाणं १ प्रमुखानां
पमोउ २२ प्रमोद
पयड १,२,१९,३१, ९१,२१९,३६९, ४०१, प्रकट
पयडिय ३१२ प्रकृति
पयडिहि ३९ पाडित्यसे
पयतलि ३७,६३ पदतल, पगतली
पयन्ना (द्रव) १८३ प्रकरण १०
पयार ३९१,३९३ प्रकार
पयावि ३६९ प्रतापी, प्रजापति
पयासइ ६,३६ प्रकाशित करता है
पयासणु ३८९ प्रकाशन करनेवाला
पयासिउ २ प्रकाशित किया
पयंडु ३८९ प्रचण्ड
परगडा ९७,२९६,३६१ प्रधान, चतुर, कुशल
परगच्छी १४१ अन्यगछीय
परघल १०० खूब
परणालियां १३० प्रणाली, परनाले
परत ३७६ पड़ती हुई
परत्थी २४ परस्त्री
परत्र ३६७ परलोकमें
परवाली ८१ पखाली, पानी भरनेवाला
परषद ७ परिषद
परि,पर ४१४,४०८ भांति, तरह
परिकर ३३८ परिवार
परिक्खिवि ३६६ परिपढि
परिग्रह २७७ धन,वस्तु संचय
परिघल ३४७ खूब
परिणिति ३३० प्रवृत्ति
परिवर्या २९९,३३६ परिवेष्ठित, परिवार सहित
परिहरवि १ छोड़कर
परप्पर ३६७ परस्पर, अन्योन्य
परे ४१३ भांति
पल्योपम २९१ ३९६ कालका प्रमाण विशेष
पल्हम(?)णु ३६८ पल्हकवि कहता है
पवज्जंति १६४ प्रवर्त्त होते हैं
पव(य) ट्ठरत्ति ३१ रात्रिको प्रतिष्ठा
पवतणि ३३९ प्रवर्त्तिनी (पदविशेष)
पवर ३६९ प्रवर

पवरपुरि	१	प्रवर नगरी
पवर	२२ ३८८	प्रवर
पवय	२७	पर्वत
पवित्तिग	१	पवित्र होकर
पससिजइ	१	प्रशंसा की जाती है
पसाउ (य)	४,१७७	प्रसाद कृपा
पमायवसु	३३९	प्रमादसे
पसिद्ध	१	प्रसिद्ध
पहु	२७	प्रभु
पहाण	२४ ४०२	प्रधान
पहिलु	२७८	पहला
पहु	१	प्रभु
पहुत्तउ	४०	प्रभूत, पहुंचा हुआ
पहुतणी	२१४	प्रवर्तिनी,पद विशेष
पहुव	४	प्रभवति, समर्थ होता है
पहवि सउ	२	पृथिवी प्रसिद्ध
पहुतिय	३९९	पहुंचा
पासाट	११३	पलान, हौदा
पासवउ	१७८	सज्ज किया
पागरउ ६४ ८६,९८, १८८,३००	३१४	विहार करना
पाट	१ ८	पट्ट रेशमी वस्त्र
पाटोधर	१६६,२९४	पट्टधारक, पट्टका उद्धारक
पाउइ	३४७	बिछाता है
पाडल	१९२	पाटल
पाथरइ	९३	बिछाता है
पाथू	३९३	पथिक ।
पाधरा	४१९	सीधा ।
पामरी	१९९,१९८ ३४९	वस्त्रविशेष
पारका	३११	पराया
पाव	६	पाप
पावघोर	२०	भयानक पाप
पासु	३६	पार्श्वनाथ
पासेस	४१४	पार्श्वनाथ
पिक्खउ	३५९	देखो ।
पिक्खहि	३६९	देखे
पिक्खवि	३५७	देखकर
पिच्छणय	२२	प्रेक्षणक, दृश्य
पिच्छेवि	३३	देखना ।
पिय	४ ९	भी पर्
पिम्म	३६९,३६६	प्रेम
पिम्मु	३६९	"
पिसुन	४१९	दुष्ट
पीलीया	३२९	पीले (कोल्हूमें पील दिये)
पुणति	१	पवित्र करता है
पुन्नाउ	२८०	पन्नाग नामसे प्रसिद्ध
पुरउ	१०	पूर्ण करो
पुरंधिय	१९	बहुपरिवार या पुत्र पतिवाली स्त्रियां
पुरोसावाणी	२६४	पुरस्सर प्रधान, प्रसिद्ध

पुलिया	४१४	चले
पुव्वुक्किकउ	३६९	पूर्वकृत
पुहपां	१७७	पुष्प
पुहवि	१	पृथ्वी
पूठो	१४८	पीछे
पूय	३८७	पूजा
पेसारो	४१३	प्रवेश
पैशुन	२७९	निन्दा
पैसारे	३०४	प्रवेश कराया
पोसउ	१९४,१८२	पौषध
पो महा	११४	पौषध
पोहोती	२९०	पहुंचो
पौषधशाला	३०४	उपाश्रय
पंथीड़ा	३०३	पथिक, यात्री
पंकय	५९	पंकज
पंडिय	१	पण्डित
प्रबल	४१६	खूब
प्रजालियो	३२९	जलाया
प्रतइं	१९६	तरफ
प्रतिबोधीयो	१४८	समझाया, ज्ञान दिया
प्रभावना	३३८	जिस कार्यके द्वारा प्रभाव पड़े
प्ररूपणा	२६९	कथन, वक्तव्य
प्रवरु	२९७	प्रवर
प्रभव्यो	३२२,२७१	पैदा हुआ
प्रह	३२०	पौ, प्रभात

प्रहफाटी	१३३	पौ फटी
प्रहसमि	९७	प्रभात समय
प्ररूपीयो	१४८	प्ररूपा, कहा
प्राहिं	३४३	प्रायः
प्रोल	३३९	प्रतोली, दरवाजा

फ

फरहर	२९३	फहरानेवाली पताकायें
फासूय	३१	फासू, प्राशुक
फुडवि	३६	स्पष्ट, व्यक्त, विशद।
फेड़्या	३९२	नष्ट किये।
फोक	१४३,२७७	व्यर्थ
फोफल	६७	नारियल

ब

बईठ	३४६	बैठा
बजडाव्या	१४६	बजवाये
बड आरू	३२	बड़का फल
बडवखती	१४६,४१४	बड़भागी
बत्रीस	१९७	बत्तीस
बन्नउला	३९१	बनोला
बरास	११४	कर्पूर निर्मित सुगन्धित द्रव्य
बरीस	३३८	वर्ष
बहरखा	३९२	बाहूका गहना, भुजबन्ध
बंभ	३६९	ब्रह्मा, ब्राह्मण
बाकुला	१२०	बाकले

बाजू ब धन	३९२ गहना विशेष	भलके	३०३ चमक
बाटडो	३०३ बाट, प्रतीक्षा, राह, मार्ग	भलहलीयो	३०३ चमका
बाबीयडा	१३० पपीहा	भवणिट्ठिय	१ भवनमें स्थित
बाबोहा	२१३ पपीहा	भविपण १,६७,११८,२६८ ४०२	भविकजन, भव्य व्यक्ति
बालपाप	३९ बाल्यावस्था	भवियणहु	२४,३१ ,, ,,
बालूभ	१६९ (प्यार) बालम	भम्रीय	३९३ भला
बाल्हेसर	८६ प्यारा	भल्ला	३७८ भाया
बीकाण	४१४ बीकानेर	भंभी	१०९ वाद्य विशेष
बीहूंना	१६३ डुगना, इधा डाबना	भाखसो	८१ क्रैद, अधेरी कोठरी
बीहानी	३७३ बहिन हो गया	भाट	१६९ जाति विशेष
बुक्क	७० वाद्य विशेष	भाण	२९८ भानु सूर्य
बुल्लंति	१६० बोलते हैं	भाभर	३०४ पागल भोली
बूठा	३३७ बरसा हुई	भा डि	१९९ कष्ट, दुख
बेकर २९४,	३३४ दोनों हाथ	भाउरह	३६७ चमकता
बेलाडु	२७२ विलाड़ा ग्राम का नाम	भिछ	१ भिक्षा
बेवि	३८७ दो, दोनो	भुगल २९३,३३१,३४४	३९२ वाद्य विशेष
बोहद	२ बोधना, शिक्षा देना	भूतलय	३७ पृथिवीमें
बोहय तो	३९२ बोध(ज्ञान)दाता	भृ गल	७९ वाद्य विशेष
बाहिय	७ बाघ दकर	भैरवी	१०९ भैरवी रागका नाम
ब्हा	३१० बहु, बहुत	भक	२८९ सेवक
		भय	४०१ मद
भ		भाजग	१६९,३९२ भाजक जाति
		भायग	३४८ भाजन
भण्डारठ	८९ भंडारा	भालिम	३९३ भालापन, अज्ञानता
भत्तिवतु	३६८ भक्तिवत		
भमिऊण	३० भ्रमण करके	**म**	
भराव्या	२७४ भराया	महडो	३४७ कमरा

मउड	३९२	मौड, मुकुट	महव्वय	९	महाव्रत
म	३६९	मत	महमद	११	मुहम्मद
मंख	३९२	चित्रपट दिखा-कर जीवन-निर्वाह करने वाला एक भिक्षुक जाति	महागसि	२०	महानस रसोई
			महियलि	२८	महीतल पर
मच्चु	३६७	मृत्यु	महिर	४११	मेहर, कृपा
मछराले	३१९	मगरीश	महिराग	१६७	समुद्र
मगळिउ	२	मन चाहित	महायते	९	दूसरा तलवार
मणयतु	३६९	मनुष्यत्व	महुर	३९९	मधुर
मगमगा	१९८	बालककी भाषा	महुअर	४९	मधुकर
मणिमथ	९२	शिरोमणि	महुय	३२	मधूक,महुवा
मणु	२	मन	मडए	३९२	माडना, रचना करना
मणुय	२८	मनुष्य			
मदान्ति	३६	वेदान्ती, वेदान्तज्ञाता	माकंद	१७७	इन्द्र!
			मागण	३८७	याचक
मदल	१४४	तबला वाद्य विशेष	माणिण	३६६	गर्जन
			मांडवइ	३९१	मंडपमें
मधुमाधवइ	१०९	रागिणी	मांडो	१७७	वनाकार
मनभितरि	२७	मनके भीतर	मादल	१६४,३४४	वाद्य विशेष
मनरली	३४६	मनकी उमंग, आनन्दित मनसे	मायंड	२३	मार्तण्ड, सूर्य
			मारुणि	१०९	रागका नाम, मल्हारको
मयगळ	३७	मदगल, हाथी			
मयण	३४	मदन	मालिया	३४९	महल
मयरहरो	१६४	समुद्र	मालोवम	१९	मालोपम
मरुपिया	४१२	चले	मिछत	११,१७	मिथ्यात्व
मरडपाउ	१९०	चलता हुआ	मितुत्ति	३७०	मित्र भी
मल्हार	१७७	राग विशेष	मिथ्यात्वशल्य	२८	मिथ्यात्व रूपी शल्य
मल्हार	१७	,,			
महव्वइए	३४०	व्यय करना	मिसरू	३९९	वस्त्र विशेष

मिठु	२७८	मीठा
मिच	३६८	मिश्र युक्त
मुक्कीयो	२५९	छोडा
मुक्वदलि	२९	मोक्ष स्थल
मुक्या	२८१	छोडे
मुणइ	३००	कहता है
मुणिंद	२,३८५	मुनींद्र
मुणिवि	३०७	जानकर
मुनिवाय	७	मुनि का पद
मुरगी	९१	मृदुअंगी-स्त्री
मुरमेहडे	८	मह मडर
मुहपत्ति	३३	मुखवस्त्रिका
मुछाला	३८२	मूछोंवाला सुन्दर बाल
मू	३९१	मत
मूकी	४१६	छोडकर
मेरउ	१०४	मेरा
मेलिय	३९५	मिलकर
मेवडा	३२१ ६३	दूत
मोकर्	३२२	मत्र
मोटिमि, मोटम्म	८५, १८९	गौरव,
मोरउ	९८	मेरा
मोम	२६१	कृपा
महणवलि	१०८	मन हरनेवाली दल, मनोहर जल
मोहिरेयाजी	३ २	मोह रहे है।

य

यशनामिक	, २६४	यशस्वी
युगवर	१७९	युगम प्रधान

र

रत्न	२५	रत्न
रत्नचियउ	३६६	प्रसन्न किया
रंजया	३६२	,,
रचवति	३७७	राग करते हैं
रणइ	३८०	बजता है
रणकार	३३१	आवाज विशेष
रतनागर	२८	रत्नाकर, शाह का नाम
रत्नावली	१८०	रत्नों की आवली (समूह)
रमझोल	१५५	हर्षोल्लास
रमिस्तइ	२४	रमण करना
रम्म	२२	रम्य
रयणागर	३२४	रत्नाकर
रयणायर	९	रत्नाकर
रयणाइ	२३	रत्न
रलिआता	१४७	आनन्द
रलिय	३३, ३८८	उमग
रली	११६ ४१२	उमंग इच्छा, हर्ष
रलियावणिय	३०७	सुन्दर मनोहर
रलियामणउ	३,३३२,३३६ ५ ८१,	रमणीय
रह	६७, ३९५	रथ
राक	२७१	गरीब
रांधइ	३४३	राधना, पकाना

रायस्स ३१ राजाके
रिक्षा १६६ रक्षा
रुडी २६३, २८४ अच्छी
रुणझिणइ ४९ मंडराते हैं
रुद्धि २८६ ऋद्धि, धन
रुलिय ३७ रुला, पड़ गया
(रू) अ ३६६ रूप
रूड़उ ३७९ सुन्दर, अच्छा
रूड़ा १६९ ,,
रूड़ी ३४३ ,, अच्छी
रूडु २६३ अच्छा
रूव ९, ३६६ रूप
रूवयं ३६६ रूपक
रूविणि ३६९ रूपसे
रूसण १५७ रोसकर
ऋषिमती १४१ तपोंका उपनाम
रेलो १३१ प्रवाह
रेहिणी ३९० रोहिणी
रोल्ह ४०७ नाम

ल

लक्खणिय ३६८ लक्षणोंके ज्ञाता
लखण १५७ लक्षण
लखणवन्तो १५९ लक्षणवन्त
लच्छि २९, ३६१ लक्ष्मी
लद्धिवर ३० उत्तम लब्धि
लबधिवन्त ३०२ लब्धि (शक्ति विशेष) सम्पन्न
लवण्ड १५४ लेवड़े, दर्द वालकी पपड़ी
लंख ३५२ बड़े बांसपर खेल करनेवाली नटजाति
लाइक ३०४ लायक
लाखपसाव ३०३ एक दान विशेष
लाडकडो २७० प्यारा
लाडो ३०४ स्वामी
लाहिण ६४,६८,११५,४१० लंभनिका
लिगार २५९ थोड़ा, किञ्चित
लिद्ध १४० लिया
लुललुल ३०२, ३६५ झुक झुककर
लूंछणा ३६३ न्यौछावर ?
लेखइ ३८७ हिसाब
लोइ २ लोग
लोकणरओ १०४ लोकोंका
लोह न ९२ लोभ नहीं

व

व (च) क्कु २ चक्र, मंडल
वखतवन्त १९० भागवान
वछ ३२३ पुत्र
वछरि २१,२५,३९६ वत्सर, वर्ष
वडउ ३५९ बडा
वत्थु ३५ वस्तु
वदात ९८, ४ ४ प्रसिद्ध
वद्धए ३९१ वृद्धि पाता है
वधारो ३५८ वृद्ध करो
वनभृङ्ग ९४ वनका असर
वनियां १५७ आभूषण विशेष
वन्निज्जइ ३५ वर्णन किया जाता है।

वट्टइ १६८ वर्तमान, घट रही हो
वनोरह १६९ वनोल।
वरीय ६ वरकर, अङ्गीकार, स्वीकार
वलगि। २९ अवलम्बनकर, पकड़कर
वलतु ३४९ प्रत्युत्तरमें, लौटता हुआ
वलि १७६, ४१९ फिर, लौटकर
वली २५७ फिर
वले ३०३ फिर
वशालि(षि)का ३६ वैशेषिकदर्शन
वसहि ४९ वसती
वसीट्ठी १४१ दूर।
वहिरमा। ३१९ विचरने वाले महाविदेह क्षेत्र के तीर्थङ्कर
वहिरउ १८ बहरा होगया
वहिला ४१६ जल्दी
वहुराव्यो २७२ बहराया,प्रदान किया
बहुरिवा ११४ लेनेको लानेको
वहन्ति ३७१ चलता है ?
वाइ १६ वादी
वाइक ३१० कथन योग्य ! (प्रश्नात्मक काव्य)
वाइमल्ल १४२ नाम वादिया में मल्ल

वाणारसि १७ } बनारसि वाचक वाचनाचार्य
वाणारी(स)४ १ }
वादना २६९ वदना करनेको
वादस्या ३०० वदना करेंगे
वादी ३७ वाद करनेवाला
वादीजीत २६६ वादियां को जीतनेवाला
वान ९२,१६६,३९८४०६, वाना
वादवा २६९ वदना करनेको
वादस्या ३०० वदना करेंगे
वारउपग १८३ १२ उपाग (आगमसूत्र)
वालीनै ४१० वाकर,
वावइ १३० बोना
वावरइ ३४० व्यय करना, उपयोग करना
वावरियउ ३६७, ४१६ व्यय किया
वाविय ३३ वापी
वावु १६४ व्यय करूं
वास १ आवास, घर।
विगुआणा २७९ विगोये गये
विग्यत्त १ विज्ञाको
विचरवउ १६३ विहारकरना। चलना
विज्ञावर्गीय ९ विद्याका समूह
विज्जा १,४०१ विद्या
विट ३८ भाड
विचित्तिरुह १९ वृत्तिकता
वित्थरि २७ विस्तारसे

विनडहि	३६९	विडम्बन करता है
विनाण	३३	विज्ञान
विन्नाणी	१४, १६६	विज्ञानी
विप्फुरइ	९	प्रगट होना, स्फुरायमान होना, स्फुटित होना।
विभूषीय	४	विभूषित
विमासइ	१६८,३९४	विमर्श करता है
विमासे	३२१	सोचकर
विन्हें	३१८	दोनों
विहोत	११९	विरुद्धवाला
विवहप्परि	३१	विविध प्रकारसे
विविह	२	विविध
विवहु	२७	विविध
विवाहलु	३३९	विवाह का काव्य
विश्वानर	८९	वैश्वानर
विषवाद	१९०	कलह, विरोध
विसहर	९६	विषधर
विहलो	४१९	शीघ्र
विहाणु	३७१	प्रभात
विहि	१	विधि
विहिमग्ग	३६	विधिमार्ग
विहूणा	८४	रहित
वींटी	३५९	वेष्टित किया
वीवाहलउ	३९०	विवाहलो, वह काव्य जिसमें किसी विवाह का वर्णन हो
वुंक	३६३	वाद्य-विशेष
वृन्दारक	२७१	देवता
वेउव्विय	३३	विकुर्वना को
वेगड़	३१३,३१४	विरुद और नाम
वेढ	३९९	लड़ाई
वेयावच्चसार	११९	वैयावृत्य रूपी सेवा
वेहलि	३९९	विलम्ब न करके, शीघ्र

श

शाश्वतो	३००	शाश्वत
शीयल	६२	शील
श्रवै	४१०	श्रवना, गिरना टपकना, बरसना
श्रीकार	४१९	उत्कृष्ट, उत्तम
श्रुतज्ञाने	२७०	श्रुत (शास्त्रीय) ज्ञानसे

ष

षट्काया	१००	छ शरीर,
षडावश्यक	२७२	सामायिकादि छ आवश्यक कार्य

स

सईहथ	१४६	अपने हाथसे
सउन्नउ	३६६	सदा उन्नत
सकउं	१,३९८	सकना, शक
सखर	१९९	अच्छा

सखरो ४१३ अच्छो
सखाइ १६० मित्रपना, मित्रता, सहायक
सागै ४०८ साथ
सगहि,सगि ८,२६३ स्वगम
सुवेवि ५१ समेपत
संघव १३,१८ सम्पत
सघातइ १४२ साथमें
सवाग ३०१ साज ?
सजम ६ सयम
सजुत्त ३६८ सयुक्त सहित
संझ ३०९ सन्ध्या
सठविउ ३८७ सस्थापित किया
सठाविउ ३९९ ,,
सठिउ १ सस्थित
सठियउ १ ,,
सतुट्ठ १ सतुष्ट
सट्ठ वि ३७१ श्रेष्ठ, श्रेष्ठ
सतर १५४,१९६ सतरह
सतरभेदी २७९ ,, प्रकारकी
सत्तु ३७० सत्र
सत्थ ३६८ सार्थ सघ
सदीव ३२९ हमेशा, सदैव
सद्दहणा ११४ श्रद्धा
सद्दहे २८८ श्रद्धावरो
सद्दि २ शब्दमें
सनूर, सनूरी ६८, ८९ दीप्तमान स्वरूप, स दूर
सनाउ ३ २०४,३१९ सम्नायक
सणुणिउ ९ सम्नत्र किया
सन्नाणइ २८ स ज्ञानसे
समकित ४९,१३०,२२५,२८० सम्यकुत्व
समग्ग २१ समग्र
समणह २१ श्रमण
समरणो १९९ स्मरण
समयउ ९६ याद किया
समद्धि ९४,१३८ समान
समवाय ९६ समूह
समापे ४१२ देता है
समिद्धह ३६७ समृद्ध
समाश्रम ५९ १ श्रम
समासरे ३३८ समवसर,पधारे
सम्मुचइ २०४ सामने
सपत्तु ३८९ पहुचा
संपय २९ संप्रति
सवेग ११६ ससार स उदासीनता वैराग्य मोक्षाभि ।षा,
सजोगी १७७,३२५ स नवाले
सयल ६,१३४,३३२,३९८ सकल
सरणा २९९ शरण
सरणाइ ३३१,३९२ वाद्य विशेष
सरभरि १४३ बराबरी
सर ३९४ स्वर
सरे ३८९ स्वरसे
सलहिउ १३ प्रशंसित

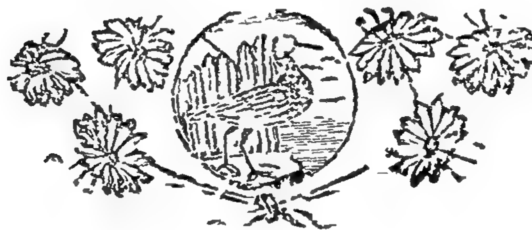
सलहियइ ३५,९६,३६८,३८६ प्रशंसा की जाती है
सवट्ठसिद्धि २९ सर्वार्थसिद्ध (अनुत्तरविमानो)
सलूणड़ा ३९३ सलोने
सवि २७७ सब
सव्व ३० सर्व
सव्वरिय ३१ रातमें
ससहर ३५ शशधर, चंद्र
सहलउ २३,३७० सुगम
सहसकूट २७४ हजार शिखर-वाला मन्दिर
सहसक्कर १५ सूर्य, १००० किरणवाला
सहिए ९८ ठीक, निश्चय, हे सखी
सहियर २९३ सखी
सहुनठिया ४४ सब नष्ट हुए
साचवउ १३३ सम्हालो
साचवी ४१६ सम्हाली
साता ४११ कुशल
साते ११७ सातों
सानिध ३४० सान्निध्य
साबू ३४८ साबुन
सामाइक १६१ १८२, सामायिक
सामि ३६९ स्वामी

साम्हले ३३८ सामेला नामक कृत्य, सामने
सावय ४,२२० श्रावक
सासण ८९ शासन
साहमीनी १५४ स्वधर्मीबन्धुकी
साहमिमय २३ स्वधार्मिक
साहिय ४ साधन किया
साहुणि ३० साध्वी
सिजवाला ६८ पालखी, वाहण विशेष
सिज्झइ ३० सिद्ध होजाना
सिझत ३५ सिद्धांत, सिद्ध होना
सिझाय ११३ स्वाध्याय
सिरतिलौ ५८ सिरमौर
सिरि ३२ सिरमें
सिरीय ६ श्रीको (संजम रूपी लक्ष्मीको)
सिय १ शित, शुक्ल
सिंधुया १०५ सिन्धुराग
सीखविय १३४ सिखाया
सीझइ १७९ सिद्ध होता है
सीलि ३४ शील
सीस, सीसि ६२,१४५ शिष्य
सीह, सीहो १७६,३९७ सिंह
सुइ ३६५ श्रुति
सुकड ३३१ सुगन्धित द्रव्य विशेष

सुकडि	११४	घिसा प दन सूखनपर
सुकनरक	३७१	स[illegible]
सुकलोणी	६७	सुश्रोन, कोमल गात्रवाली
सुकिय	३३	सुकृत
सुजाणीन	१४६	सुन्दर, इच्छा
सुणय	३९२	नीतिमान्, सदाचारी
सुनिछ्छ	१	सुनिश्चित ।
सुपन	१८०	स्वप्न
सुपनाध्याय	२७०	स्वप्नाध्याय
सुरपरि	१	अच्छी तरह
सुपवित्त ।	२	सुपवित्र
सुपसमिय	२१२	स प्रश मित
सुपमाइ	२५७,२९	अप्रमाद, सद्नुष्ठ
सुप्रम इ (द)	३१०	सोमन कृपासे
सुमति	११६	इयासमिती आदि
सुमरिज्जत	१	स्मरण किये जानेपर
सुमरेवि	३८४	याद करके
सुमिगउ	३७८	स्वप्न
सुयदेवि	४	श्रुतदेवी
सुरगवि	१४९	कामधेनु
सुरगुरवि	१	बृहस्पतिके समान
सुरगी	३३३	अच्छे गावाली
सुरदम	५१	सुरद्रुम-कल्पवृक्ष
सुरवर	२०	उत्तम देव, इन्द्र
सुरसार	२६२	उत्तम
सुरुव	३९२	सरूप
सुलताण	८९	सुलतान
सुविहिय	२४,२८,४१,२६	सु विहित
सुहम्म	२	सुधर्मास्वामी
सुहिणं	३५७	स्वप्नमें
सुहु	३७२	सुख
सुगडी	१८१	मीठाई
सूरयोपम	२९२	सूर्यके समान
सुविमंतु	३	सुविमन्त्र
सूहवि	३४१	सधवा
सूहय	६७,३१६ १३४	सुभग सौभाग्यवती
सोगत	३६	सुगत, बौद्ध
सोस	२६१ २६६	अफसोस, सो
सोहम्माहिवइ	३०	सौधर्म देवलोकका इन्द्र
सोहामणो	१३०	सुहावना
सोध	३६	महल, प्रासाद
स्तुप	२९०	स्तूप, थूम
स्यु	१६५	से

ह

हइसयण	३६६	हत मदन
हथलेवउ	३९५	पाणिग्रहण संस्कार
हयांछ, हयाछ	३७०	हताश
हरि	९८	सूर्य
हरिस	३९९	हर्ष
हवालइ	१४२	सुपुर्द
हारिय	३३	हार जाना
हिव	३७२	अब
हीचइ	१५७	हीडे (५८)
हीला	८१	अवहेला ?
हिलियइ	३७०	निन्दा करता है
हुइगउ	३७५	हांगा
हुसि	९९	हौंस, अभिलाषा
हुसेनी	१११	रागका भेद विशेष
हुडा अवसप्पणि	३७०	हूंडावसर्पिणी, वर्तमान हीन समय
हुति	३७०	से, की अपेक्षा
हेला	३९९	उच्च स्वर



विशेष नामोंकी सूची



शुद्धाशुद्धिपत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१०	आविं	अविहि
२	२	मणच्छिउ	मणिच्छिउ
२	३	दिनु	दिन्नु
२	७	वक्कु	चक्कु
३	१०	दिणण	दिणणु
५	५	सट्ठमि	भट्ठमि
५	९	वैशाखाह	वैशाखह
५	१६	अवंझ	अवंझ
५	१९	संथिणिउ	मंथुणिउ
६	१२	बधाविउ	वधाविउ
६	१४	बाधइ	वाधइ
७	२२	अन्नं	अन्न
८	१७	बधावीउ	वधावीउ
१०	११	०नो जनदा	०नौ जिनंदा
१०	१२	क्षीरे नीरे	क्षीरैर्नीरैः
१०	१२	स्नपयस्तुतरां	स्नपयतुतरां
१०	१४	गौतमःश्रीसुधर्मा	गौतमश्रीसुधर्म
१०	१७	कलशराघ्या	कलशराज्या
११	९	०वोहणु	०बोहणु
११	१३	मनइ	नमइ
१२	११	सासउ	सीसउ
१२	१२	कंपि	किंपि
१२	१४	ढाल	ढोल
१३	३	जिणप्रभु	जिणप्रभ
१३	४	जिणत्रासण	जिणशासण
१६	११	निहि	नहि
१६	११	निहि	नहि
१७	१७	किन्नग	किन्न
१८	१३	वार	चार
१८	१७	जइसइ	अइसइ
१९	१४	बिंविवि	बिंबि
१९	१८	ञा	जा
२०	६	सवणंजल	सवणंजलि
२०	८	जिण	जण
२०	११	अनुकमि	क्रमि
२०	१७	कण्ठीर	कण्ठीरव
२१	१	संधयण	संथवण
२१	८	धत्ता	धत्ता
२१	१३	तिहुपति	तिहुयणि
२१	१९	चन्दि	वंदि
२१	२२	पाट ठवण	पाठवण
२१	२२	कुंकुवत्रिय	कुंकुमपत्रिय
२१	२३	वच्छरि	वित्थरि
२२	१३	धत्ता	धत्ता

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	१२	सहलउ किउ इत्थु कलि तिह	सहलउ तिहि किउ इत्थु कलि
२३	१४	सूर	सूरि
२४	९	विसम	विस
२४	१३	परकरिय	परयरिय
२५	१०	गच्छाहवइ	गच्छाहिवइ
२५	१७	जेता०	जिता०
२५	१७	हुम्यारह	हुम्यारहसय
२६	१	वइसालनइ	वइसाल्यइ
२६	७	आलोज	आसोजवदि
२६	८	अनुतर	अनुतेर
२७	१	वत्थिरि	वित्थरि
२७	७	लोपआयरिय	लोगइ आयरिय
२७	१६	सूरि	सूर
२८	८	क्षुन्नाउत सुपससि—	छन्नाउत सुपमसि
२८	९	पनरेतिरइ	पनरोतिरइ
२८	१०	रतनागरवरसि—	रतना पुन्निग उच्छव रसि
२९	६	सूरहि	
२८	१८	अठारहवी पत्तिको	सोलहवीं पत्ति पढो
२९	१४	सविह तह	सविहि तह
३०	२	तिलउ	निलउ
३०	३	लठिवर	लद्धिवर
३०	६	पख	पक्खी
३०	९	वहिय	विहिय
३०	९	पवमि(घाउ)	पवमियाओ
३०	८	उज्जेण	उज्जेणी
३०	१३	जिणदत्त	जिणदत्त सूरि
३०	१३	सुपहु	सुपहू
३०	१४	वि नाउ	विन्नाओ
३०	१८	सय	सोय
३०	१८	जवाइय	जु वाइय
३०	२१	फुलगाण	फग्गु।
३०	२२	वजयाणदो	विजयाणदो
३०	२२	निउज्जणिय	निज्जिणिय
३१	५	ता(?)उ हउ	ताउन्हउ
३१	६	ति(लि) हि	लिहि
३१	७	रमनरमणि	नरमणि
३१	८	जिणेसर(७वीं पत्तिमेंपढो)	
३१	८	न दिन	नदिन
३१	९	पयह	पयह
३१	११	अवहि	अविहि
३१	२२	स	स हस
३२		पट्टु	पहु
३२	९	पुने	पन
३२	८	बडआलय	वडयालअ
३२	१०	वच	चच
३२	११	नसि	निसि
३२	२०	वडवि	चडवि
३२	२०	घिविहि	विविहि
३३	१	गुडिर	गुडिय

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३	४	न(?ना)विय	ठाविय
३३	९	घड	पयड
३३	९	बत्तास	बत्तीस
३३	११	सुणिहु उहारिय	मुणिहुउ हारिय
३३	१२	आणग थुणि	अणेगे पुणि
३४	१	सऊहिं	सझिहिं
३४	१	वंदु	चंदु
३४	६	वरण	चरण
३४	९	एररिसउ	एरिसउ
३४	१५	सघोस	सुघोस
३५	३	निज्जणवि	निज्जिणिवि
३५	९	पटदुद्धरणु	पट्टुद्धरणु
३५	१८	जिम	तिम
३५	२१	अगाइ	अग्गइ
३६	१२	व्रजा	व्रज
३७	१३	नरनाह	नरनाहा
३९	६	दुग्ग	दुग्गम
३९	७	वितु	वित्तु
३९	१०	विन्नउं	विन्नविउं
३९	२०	निवारइ	निवारउ
४०	४	तूय	तुय
४०	९	दिज्जय	दिज्जइ
४०	६	०विति	०चित्ति
४१	९	नंदि	नंदि
४१	१२	लोढच्चिय	लोढिच्चय
४१	१४	वंदेहिं	वदेहं
४२	३	तिढऊय०	तिहुय०
४२	६	०विजय०	०विजिय०
४२	६	सूर०	सुर०
४२	७	पहोदय	पट्टोदय
४२	१०	कुम०	कुंभ०
४२	११	परंपरा०	परंपर०
४२	११	०मिण जो	०मिणं जो
४२	१२	०जतो	०जणो
४४	२	हंउ	हउं
४७	७	ढेरउरि	देराउरि
४७	१८	नदेन	नवीन
४८	३	गुरि	गुरो
४८	१४	गुरुणा	गुरूणां
५०	१२	सुवर०	सु वर०
५१	६	सुरद्म	सुरदुम
५१	९	रुपइ	रुपइ
५३	७	वेची	खरची
५३	९	पामदत्त	पासदत्त
५३	२०	सव नारी	सवइ नारी
५४	९	जणियइ	जाणियइ
५९	२१	भटेता	भेटता
६३	९	अविया	आविया
६३	१२	हर्ष	हर्ष
६४	१७	घणी	घणी
७०	१	गोड़ा	गोडी
७३	१४	ऐकज	रोकज
७६	११	विधि	निधि
७७	१९	रि	सुरि
७७	१९	लगाइ	लगाइ ए

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९३	६	चिणचन्द	जिणचंद	१३१	१७	साचा	साची
९४	१७	कल्लाल	कल्लोल	१३२	८	(ज्ञा ?)	(ना !)
९६	१	समय माद	समयप्रमोद	१३४	१०	सोरतरइ	सोरीतरइ
९६	१	समुद्धमा	समुद्धमी	१३६	२१	इथ	स्थ
९६	१८	पुप्प	पुप्य	१३८	१४	आ० यड	आव्यड
१०४	२	गर्भित्	गर्भित	१४२	४	वाइमल	बाइमल्ल
१०६	१२	१२(२)	(४२)	१४३	९	वावइ	वाजइ
१०८	२१	जनचन्द	जिनचन्द	१४६	२	०सुदर	सुन्दर
११०	८	जिणिंद	निणिंद	१४७	१८	०मुदरा	सुंदरो०
१११	८	विने	विते	१४८	७	पूठों	पूठी
११२	९	विहु	चिहु	१४९	६	जिर	चिर
"	२०	आज्ञा	आज्ञा	१५४	१९	पिहाला	पिहारा
११२	२२	वारह	बारह	१५६	१२	सहू	सामन सहू
११३	१	करुणा	करुणा	१५[illegible]	१५	[illegible]	[illegible]
११५	१३	प्रभु	प्रभु	"	"	०गेति	०गति
११५	१९	जावड	नावड	१६१	२	सदा	सदाजी
११[illegible]	८	शिवमता	शिवमती	१६२	६	तो	ते
११९	१०	गुणधा	गुणधी	१६३	९	भोज	भाग
१२०	८	ठीतर	छीतर	१६४	५	तूगो	तुगो
"	१३	उग्घाडा	उग्घाडा	"	६	कजागइ	कजागइ
१२१	९	दली	टाली	१७०	१०	पच	पच
१२[illegible]	[illegible]	प्रधान	प्रधान	१७१	१२	०निछम	निछद्म
१२६	१६	चापडा	चोपडा	"	"	सूरिश्वरा	०सूरीश्वरा०
१२७	१५	जिन	जिम	"	१३	प्रबध	प्रबन्ध
१२८	६	पच	पद्म	१७२	२०	शृङ्गार	शृङ्गार
"	१५	अछश	जस जश	१७५	२१	ठवणउ	ठवणउ
१३०	१४	आसू आस	आसू मास	१८०	२	वित	वित्त
			आसा	१८१	२१	कारे	काल

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८८	१९	साचउार	साचउरि
१९०	६	दिन	दिनदिन
१९५	१०	सूर	सूरि
”	११	थापना	थापना
१९७	१८	०ना	०नी
१९८	२२	संपूर्णस	संपूर्णम्
१९९	५	जावालपुरे	जावालिपुरे
”	११	स्तथा	तथा
”	१२	द्वीपे	द्वीपे
”	१३	पूरे	पुरे
”	२०	प्रौढः प्र०	प्रौढ प्र०
”	१९	नाम्नां	नाम्ना
२००	६	त्वां	०स्त्वां
”	१०	सागरा	सागराः
२०१	४	देखिने	देखिने रे
”	१०	नूर	नूर रे
२०२	६	परमात्म	परमार्थ
२०३	६	धणुं	घणुं
२०९	६	ब	वा०
२१२	५	अधिक	अधिक
२१८	१६	मधुर	मधुर
२१९	४	अतले	अवर
”	४	ने (?) छइ	नेछइ
”	६	पद्वति	पद्धति
”	”	जाइसर	जईसर
२२०	१६	देस	दस
२२१	१	दुर्बलिकापक्ष	दुर्बलिका पुष्प
२२१	१७	दुरयह	दुरियह
२२२	९	सुविहव	सुविहित
”	१३	कह्यो	कर्यो
२२७	६	नमइ	नमउ
”	९	सूरिश्वर	सूरीश्वर
२२८	८	संत्रति	संप्रति
”	१५	कुमद्र	कुमुद
२३०	१	श्री०	ढाल श्री०
”	११	जिनरायो	जिनराजो
२३६	११	साह	लाह
२३७	६	हीडोलइ	होडोलइ
”	७	अवसार	अवसर
२३९	३	बालावी	बोलावी
”	८	०विचइम	०विचमइ
”	८	मको	मूकी
२४०	६	सोंहणवण	सीहपणइ
२४१	६	पूज्य	श्रीपूज्य
”	८	सहेरउ	सेहरउ
२४२	४से१३	स०	सु०
२४३	१५	श्रा०	श्री०
२४४	१६	स्वग	स्वर्ग
२५३	१३	जाणिन	जाणिनइ
२५४	११	पादुका अधिक	पादुका
”	१२	धरि	अधिक घरि
२५६	९	लुलि	लुलि लुलि
२६०	७	०पाध्याय०	०पाध्याया०
२६३	६	मावर्ता, रूडुंख	खमावर्ता, रूडुं

पृष्ट	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६५	१६	प्रसाद	प्रमाद
२६७	३	आनान	आजानु
२७२	६	चीघडीए	चोघडीए
२७३	२१	कह्यो	कह्यो
२७४	३	स्नाद्वाद	स्याद्वाद
२७५	१३	शठ	शेठ
२७६	११	सूल्क्ष	सूक्ष्म
२७८	२०	जडीयु	नडीयु
२८१	३	ओगणीस	ओगणीसी
२८४	४	आज्यो	आवज्यो
२८४	१०	पायो	पाये
२८८	१	ब्याधि	व्याधि
"	१३	उपर	उपर हो
२८९	९	हाथ	बे हाथ
२८९	२२	धम	धम
२९०	२	भवे	भव हो
२९०	२२	गुरुतणी	गुरुतणो
२९१	१४	शङ्क्लेश	सङ्क्लेश
"	१४	बाग्वाद	बागवाद
"	१७	टले	टलेरे
"	२२	कीधो	कीधार
२९५	८	रद्या	रह्या
२९६	१२	पाम्यो पाम्यो	पाम्यो
२९७	४	वद्यि	वद्यिँ
२९७	१३	आचरज	आचारज
२९८	७	सदगुरु	सदगुरु
२९८	१५	श्वगार	शृङ्गार
३००	१३	ध्याचो	धम्यो
३००	१४	ओलख्या	ओलख्या
३०२	८	रजण	रजण
३०३	१५	पथीडा	पथीडा
३०४	७	गच्छपति	गच्छपति
३०५	८	दशा०	दशा०
३०५	९	विनिर्मित	विनिर्मित
"	१३	०द्वि०	०द्धि०
"	१४	गर्ब्भित	गर्भित
३०६	५	०बन्ध	बन्ध
३०७	३	सज्ञा	सज्ञा
"	५	उकेश	ऊकेश
"	"	कछ	कच्छ
"	१६	गुरुव	गुरव
३०८	९	महोक्ला	महोत्कला
"	१४	हप्टे	हष्टे
"	'	भवत्वर	भवत्पर
"	१८	गागेय	गाङ्गेय०
३०९	८	साधूना	साधना
'	९	जडस्त्र	ऽजस्त्र
"	१२	०स्तपखिन	०स्तपस्विन
"	१८	लुनोहि	लुनीहि
३११	३	जेतो	जतो
३१५	१	वहु	सहु
३१५	१२	जोसा (घा?)ण	जेसाण
३१६	६	पू०	प०
३१६	११	खरतरजू खरतर	ज०प०
३२४	७	जाणो	जाणे
३२४	२२	रे हरे	एह रे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२६	६	जिणंद	जिणंद ।म०।
३२८	२३	'जिनचंद	'शिवचंद
३२९	११	रह्या	रह्या
३२९	२१	आप्या (थप्पा)	अप्पा
३३२	६	थाप्या	थाप्या।
३३५	१४	विघि	विधि
३३५	१६	वूढा	वूठा
३३७	१९	अमूलिरु	अमूलिक
३३८	१९	निघान	निधान
३३८	१८	चद	चंद
३३८	२४	हो पूज	पूज
३३९	२०	लिलग्रन	लिओ लग्न
३३९	२२	आवरा	आवए
३४०	४	शवचुला	शिवचूला
३४०	३	ना दि	नांदि
३४०	२१	द्रुपदि	द्रूपदि
३४१	८	ग्रे थाप्यो	जे थाप्यो
३४१	१३	भुजिङ्गिद	भुजगिन्द
३४३	३	झूठा	जूठा
३४३	४	विढतां	चिढतां
३४४	८	निधा(श्रा?)व०	निधाव०
३४४	१७	घणी	धणी
३५१	६	'वीझो'वा	०'वोझोवा'
३५२	१०	खय	खिग
३५३	१७	पालइ	वालइ
३५६	१८	पवारइ	पधारइ
३६१	९	वोला०	वोला०
३६२	१८	सी र (ही)	सिरोही
३६२	२३	जाडि	जोडी
३६३	१९	थाप्यु	थाप्युं
३६३	१९	आघाटि	आघाटिजी
३६५	१५	थणुहरु	धणुहरु
३६५	१६	पक्खहि	पिक्खहि
३६६	१९	घणुहर	धणुहर
३६७	६	पावक-रढि	पाव-करढि
३६७	१३	को यलिय	कोवलिय
,,	१९	वेवि	वेवि
३६८	१२	पद्ये	पक्षे
३६९	९	तित्थुरणुद्ध	तित्थुद्धरणु
,,	१६	पतरइ	पनरइ
३७७	९	नयभेरि	जयभेरि०
३८४	९	[त (न)यण]	तयणु
३८८	१९	कृप्पतरो	कप्पतरो
३९२	९	भवय	भविय !
३९४	३	०न तं	तउं
४००	२	पट्टालंकारे	पट्टालङ्कार०
,,	७	०तरुणा	०तरुणां
,,	१०	'नागइह'	'नागद्रह'
,,	१३	'राजह'	'राजगृह'
,,	१७	स्तवः	०स्तव०
४०३	९	हले	टले
४०३	९	नहु	वहु
४०४	१८	धरे	घरे
४०५	९	थुम	थुभ
४०५	२०	फोटक	फोकट
४०५	८	राजसागर	राजसभा
४१५	६	'जलोल'	'जसोल'
४१७	१७	विंव	विंब
४७३	२०	दुर्पलिकापक्ष	दुर्वलिकापक्ष

पृष्ठ	पंक्ति अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति अशुद्ध	शुद्ध
४७३	२४ द्रगाहड़	द्रणाहड़	११	१७ प्रतिबोध	प्रतिबोध
४७६	२० नमचन्द	पुनचन्द		कर	प्राकर
४७९	२९ महकोट	मरकोट	१७	१ मेरुनदन	मेरुनन्दन
४८१	१७ राजगृ(ह)ह,राजगृ(द)ह		१८	१ विद्याध्यन	विद्याध्ययन
४८२	८ लकरह	लखरह	१८	९ प्राप्त	प्राप्ति
४८५	२२ श्रायर	श्रीधर	१९	२ प०	पृ०
४८६	२५ सावक्ति	सावलि	१९	१६ लोकहिता	लोकहिता-
४८८	९ हपकुल	हपकुल		थाथ	थाय
प्राक्कथन-प्रस्तावना			२२	२२ सातड	सातड
III	११ विपय	विषय	२४	१० *	* फुटनोट पृ० २९
IV	६ अपभ्रश	अपभ्रंश	२९	८ *	×
XVII	१ खिजली	खिलजी	२९	१३ फ	फो
XVII	७ जिनदत्तसूरि	जिनहंससूरि	२९	१९ असकरण	आसकरण
XVII	१७ १६२८	१६६८	२६	१४ बोसी	बाग०
XVIII	१४ भावसत्त	भविसयत्त	२७	११ तजसी	तजसी ×
XXIII	११ मुद्रित	मुद्रित	२७	१५ शुम्रा ९	शुम्रा ९ ×
सूची-अनुक्रमणिका			२७	१९ धाहर	थाहर
II	७ राजसामा	राजसोम	२७	२२ ×	*
II	२३ सरि	सूरि	२७	२२ तजम	तेजसी
V	१३ सरि	सूरि	२७	२२ नी	न०
V	१५ अभयतिक	अभयतिलक	२७	२२ सदामी	सप्तमी
VIII	१५ राजममुद	राजसमुद्र	२८	२२ क्षमणा	क्षामणा
रासमार			३०	१५ सुर	सूरि
२	२२ शान्तिस्तव	शान्तिस्तव	३१	१९ गुढ	गुढा
८	१९ दहल्लदे	दल्हणदे	३२	२२ आव	आबू
९	१४ जिनचन्द्र	जिनचन्द्र	३३	१ द्रव्य	द्रव्य व्यय
१०	६ कल्याण	कल्याण	४०	९, ७	७ औषधि

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
			निमित्त हल्दी न लेवे	७१	१९	विरुद्ध	त्रिरुद्द
				७३	१०	मट्टोत्सव	पट्टोत्सव
४१	३	शिक्षा	दीक्षा	७६	२२	घर्प	वर्प
४९	१	लधि	लब्धि	७७	१९	हरिसागर	हीरसागर
५३	११	मेताराज	मेतारज	७९	१८	इवदन्त	दवदन्त
५३	१३	सम्यक्ख	सम्यक्त्व	७९	२२	सरिजी	सूरिजी
५४	१	लक्ष्मीचंद	लक्ष्मीचंद्र	८९	२१	जपकीर्ति	जयकीर्ति
५४	११	कुशललाभ	कुशलधीर	९०	६	चका	चूका
६४	६	सवेगरग	संवेग रग	९१	२२	छोटा	छोटे
६६	१६	श्वास	सास	९२	१७	सुन्दर	सुन्दर
६८	४	शय्यंभद्र	शय्यंभव	१०४	६	चारित्र	चरित्र
७१	४	पट्टा	पट्ट	१०७	९	लाघशाह	लाधाशाह

हाल ही में "श्रीजिनरत्नसूरि निर्वाणरास" की एक प्रति उपलब्ध हुई है जो हमारे संग्रह (नं० ३६१०) मे है। उस प्रतिके पाठान्तर यहां लिखे जाते हैं :

२३४	९	जुगति	जगत
२३४	११	शोभामें	सोभागइ
२३४	१९	बान	भाग
२३५	१६	तेथी	तिहांथी
२३५	२१	सीठ	सेठ
२३६	१	वांदिवि	वंदावि
२३६	४	वेणइउच्छव	उच्छवसखर
२३६	११	साह	लाह
२३६	१४	सावाश	जसवास
२३७	२१	याचक	श्रावक
२३७	२२	सुनि	सुखि
२३८	६	श्रीपूज्यजी	सुविध श्री पूज्यजी

२३६ गाथा ४ के बाद अतिरिक्त गाथा -

"पालता पांचे सुमति, भावना मन भाव रे।
जोधपुर नौ संघ सगलौ, देवझर वदावरे॥"

२३९ गाथा ११ वींका चतुर्थपाद
"किण हा घावी घात"

२३८	७	बड़	बहु
२३९	२	भूल तिका-करी	सूल न कां-करो
२३९	६	अनवइ	अनवड़
२३९	१८	विगत	वीतग
२४०	१०	बखाण	विचार
२४०	११	आदिस्यउ	उपदिस्यउ

सम्पादकोंकी साहित्य प्रगति

(प्रकाशित लेखादिकोंकी सूची)

स्वतन्त्र ग्रन्थ	प्रकाशन स्थान	लेखक
विधवा कर्तव्य	अभय जैन ग्रन्थमाला पुष्प ४	अ०
सती मृगावती	,, ,, ,, ३	भ०
युग प्रधान जिनचन्द्र सूरि	,, ,, ,, ७	अ० भ०
ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	,, ,, ,, ८	अ० भ०
अन्य ग्रन्थोंमे		
मूर्तिपूजा विचार	जिनराज भक्ति आदर्श ,, ६	अ०
पल्लीवालगच्छ पट्टावली	श्रीआत्मानन्द शताब्दी स्मारक ग्रंथ	अ०
जिन कृपाचन्द्र सूरि गहुली २२	गहुँली संग्रह	अ०
जिन कृपाचन्द्र सूरि ,, ३	,,	भ०
स्तवन ७	पूजा संग्रह अ० जै० ग्र० पु २	अ०
स्तवन ४	,, ,,	भ०
प्रश्नोत्तर १८९ ३१	सादा अने सरल प्रश्नोत्तर भाग २	अ०
सामयिक पत्रोंमे		
बीकानेरके जैन मन्दिर,	आत्मानन्द (गुजरांवाला) वर्ष ३ अंक ११,१२	अ०भ०
,, ,,	,, वर्ष ४ अंक १, २	,,
श्रीनाकोडतीर्थ वीनति	, ,, वर्ष ४ अंक १	भ०
बीकानेरके ज्ञान मन्दिर,	ओसवाल नवयुवक म० १९९० पो मा०फा०, न	भ०
महत्तियाण जाति	,, ,, वर्ष ७ अंक ६	अ० भ०
ओसवाल जाति भूषण भैरूसाह	,, वर्ष ७ अङ्क ७	अ०
ओसवाल वस्ती पत्रक	,, ,, वर्ष ७ अंक ११	अ०
जैन समाजके सामयिक वर्तमान पत्र,	ओसवाल नवयुवक वर्ष ८ अंक १	अ०
मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र (यु० जिनचन्द्रसूरिसे उद्धृत)	,, वर्ष ८ अं० २	अ०भ०
कलकत्तेके जैन पुस्तकालय	ओसवाल नवयुवक वर्ष ८ अं० ३	अ०
सती प्रथा और ओसवाल समाज	,, ,, वर्ष ८ अं० ९	अ०भ०
पूर्वकालीन ओसवाल ग्रन्थकार	,, ,, (प्रेषित)	अ० भ०
जैन साहित्यका प्रकाशन	ओसवाल सुधारक वर्ष २ अं० ३	अ०

लेखोंको हड़प जानेकी गजब करामात, ओस० सुधारक वर्ष २ अं० १९		अ०
महावीर जयन्तीकी सार्थकता ,, ,, वर्ष २ अं० २१		अ०
भ्रमात्मक इतिहास	जैन सन् १९३०	भ०
कविवर समयसुन्दर साहित्य	जैन, पुस्तक ३३ अंक २३, २९	अ, भ०
पट्टावलियोंमें संशोधनकी आवश्यकता	जैन पु० ३३ अंक २८	अ०
अलभ्य ग्रन्थोंकी खोज (अपूर्ण प्र०)	जैन पु० ३३ अंक ४०	अ०
सती वा० सम्बन्धी एक गम्भीर भूल,	जैन पु० ३५ अंक	अ० भ०
वा० मो० शाहकी महत्वपूर्ण भूल	जैन १०।१२।३७	अ० भ०
भानुचन्द्र चरित्र परिचय	जैनजागृति (मासिक)	अ०
कविवर विनयचन्द्र	जैनज्योति (मासिक) सं० १९८८ अक ९	अ० भ०
पुंजा ऋषिरास	जैन ज्योति सं० १९८८ अक ११	अ० भ०
जैन कवियोंका हीयाली साहित्य	,, सं० १९८९ अंक ३	अ० भ०
महाराष्ट्री और पारसी भाषामें दो स्तवन,	जैनज्योति सं० १९८९ अंक ७	भ०
बाल्यकाल और धार्मिक शिक्षा,	जैनज्योति (साप्ताहिक) सं० १९९०	अ०
विचार प्रकाश	,, वर्ष १ अंक २८	अ०
स्थानक वासी इतिहास परिचय	जैनध्वज वर्ष २ अंक ८	अ०
सती चन्दनबाला आलोचना	,, वर्ष २ अंक १४	भ०
सिन्ध प्रान्त और खरतरगच्छ	जैनध्वज	अ० भ०
प्रश्नोत्तर ३०	जैनधर्मप्रकाश पुस्तक ४७ अंक ११	अ०
प्रश्नोत्तर ११, १४, १४, २६	जैनधर्म प्रकाश पुस्तक ४८ अंक ४ ५,८	अ०
प्रश्नोत्तर २०, २१, २९	,, ,, ४९ अंक १,४,६	अ०
प्रश्नोत्तर २७,२२,११,१५,१५,२०,८	,, ,, ५० अं० १,३,५ से ९	अ०
प्रश्नोत्तर १९	,, ,, ५१ अंक ६	अ०
प्रश्नोत्तर ३१	,, ,, ५३ अंक ८,९	अ०
देवचन्द्रजी कृत अप्रकाशित स्तवनपद	,, ,, ४९ अंक ४,८	अ०
,, ,, ,, ,,	,, ५० अंक ४,८	अ०
,, ,, ,, ,,	,, ५१ अंक ६,७	अ०
मस्तयोगी ज्ञानसारजी कृत ४ पद	,, ,, ४८	अ०
साधु मर्य्यादा पट्टक	जैन सत्य प्रकाश वर्ष २ अंक ३	अ०
श्री महावीर स्तव (कविता)	,, वर्ष २ अंक ४-५	अ०

लुप्तप्राय जैनग्रन्थोंकी सूची	जैनसत्यप्रकाश	वर्ष २ अंक १०,११	अ०
दो ऐतिहासिक रासोंका सार	,,	वर्ष २ अंक १२	अ०
(सौभाग्यविजय और तपा देवचंद्र रासका)			
युगप्रधान जिनचंद्रसूरि और सम्राट अकबर	,,	वर्ष ३ अंक २-३	अ०भ०
दो खरतरगच्छीय ऐ० रासोंका सार	,,	वर्ष ३ अंक ८,९	अ०भ०
(जिनसिंहसूरि, जिनराजसूरि रासका)			
कोचरशाहका समय निर्णय	,,	प्रेषित	अ० भ०
दूत काव्य सम्बन्धी कुछ ज्ञातव्य बातें,	जैन सिद्धान्तभास्कर	भा०३कि०१	अ०
जैन पादपूर्ति काव्य साहित्य	,,	भाग ३ किरण २, ३	अ०
लौंका शाह और दिगम्बर साहित्य,	,,	भाग ४ किरण १	अ०
जैन ज्योतिष और वैद्यक ग्रन्थ	,,	वर्ष ८ कि० २, ३	अ०
क्या दिगम्बर सम्प्रदायमें खरतरगच्छ तपागच्छ थे ?	,,	(प्रेषित)	
राजस्थानी भाषा और जैन कवि धर्मवर्द्धन,	राजस्थान	वर्ष २ अंक २	अ०
कविवर लक्ष्मीवल्लभ	,,	,,	अ०
अलवरके शिलालेखपर विशेष प्रकाश	वीर सन्देश	वर्ष १	अ०
जिनदत्तसूरि जयन्ती और हमारा कर्त्तव्य	,	वर्ष ,,	अ०
तीर्थ गिरिराजके रास्ते	,,	वर्ष २ अंक १	अ०
बुद्धि वर्द्धक प्रश्न	शिक्षण सन्देश	वर्ष ३ अंक २ ३,४	अ०
बाल्यकाल और धार्मिक शिक्षा	श्वेताम्बर जैन	भाग ४ अंक ३१	अ०
कविवर विनयचंद्र (कृत राजुल रहनेमि गीत)	,	भाग ८ अंक २९	भ०
प्रमाणात्मक इतिहास (जैनमें भी)	,, ,,	भाग ९ संख्या ३०	भ०
जैन साहित्यकी वर्तमान दशा	,, ,,	भाग ६ अंक १९	अ०
सिन्धी भाषामें जैन साहित्य (अपूर्ण प्र०)	,,	भाग ६ अंक २१	अ०
फलोधी पार्श्व जिन स्तवन (विनयसागरकृत)	,,	भाग ६ संख्या ३०	अ०
श्वेताम्बरी मिथ्यात्वी और अपात्र हैं ?	,, ,	भाग ८ अंक ३१	अ०
साम्प्रदायिकताका उग्र विष	,, ,,	भाग १० अंक ११	अ०
दादाजीकी वीनती (कविता)	,, ,,		भ०
जैन साहित्यका महत्व (अपूर्ण प्र०)	,, ,		अ०

और भी कई लेख जैन, जैन ज्योति, वीर, जैन धर्म प्रकाश आदिके सम्पादकोंको भेजे हुए हैं पर वे अब तक प्रकाशित नहीं हुए हैं।

अप्रकाशित विशिष्ट निबन्धादि

सांकेतिक शब्दाङ्क कोष
जैनेतरग्रन्थोंपर जैन टीकाएं
सिन्ध प्रान्त और खरतरगच्छ (विस्तृत इतिवृत्त)
कविवर जटमल नाहर और उनके ग्रन्थ
लोंकामत और उसकी मान्यताएँ
बीकानेर नरेश और जैनाचार्य
श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र
बीकानेर जैन लेख संग्रह
प्राचीन तीर्थमाला संग्रह
अभय जैन पुस्तकालयका प्रशस्ति संग्रह
खरतर विरुद प्राप्ति
खरतरगच्छ साहित्य सूची
खरतरगच्छाचार्यादि प्रतिष्ठित लेख सूची
खरतरगच्छकी ८४ नन्दियें
भूतकालीन जैन सामयिक पत्रोंका इतिहास
जैन पूजा साहित्य, कल्पसूत्र साहित्य
सम्यक् दर्शन, मनुष्यभवकी दुर्लभता
कविवर लक्ष्मीवल्लभ और उनका साहित्य
मस्तयोगी ज्ञानसारजी और उनका साहित्य
कविवर समयसुन्दर और उनका साहित्य
उपाध्याय क्षमाकल्याणजी
कविवर धर्मवर्द्धन (साहित्य)
कविवर जिनहर्ष (साहित्य)
कविवर रघुपति (साहित्य)
छतीसीयें ४, स्तवन, पद, चन्द्रदूत काव्य आदि

श्रीकीर्त्तिरत्न सूरि, सागरचन्द्रसूरि आदि शाखाओंका इतिहास, अनेक भण्डारोंके सूचीपत्र और अनेकों ग्रन्थाकी प्रेस कॉपियां इत्यादि।

और वकील मोहनलाल दलीचद देसाइ बी० ए०, एलएल० बी० ने विद्वत्ता-पूर्ण विस्तृत प्रस्तावना लिखी है। इसकी उपयोगिताके विषयमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अल्पकालमें ही १००० प्रतियोंमें केवल ६० प्रतियां रही हैं और इसका संस्कृत काव्य निर्माण होनेके साथ साथ इसके आधारसे बम्बईसे ५००० गुजराती ट्रेक्ट भी प्रकाशित हो गये हैं। अनेक विद्वानों और पत्र-सम्पादकोंकी संख्याबद्ध सम्मतियोंमेंसे केवल "जैन ज्योति" के विद्वान सम्पादक शतावधानी श्रीधीरजलाल टोकरसी शाहकी सम्मतिका कुछ अश उद्धृत करते है

"सम्पूर्ण ग्रन्थ प्रमाण, उक्तिने आधार ग्रन्थो ना अवतरणो थी भरेलो छे। ऐतिहासिक ग्रन्थो केवो रीते रचावा जोइए तेनो आ एक नमूनो छे। एम कही सकाय। अने आ नमूनो जोतां ऐतिहासिक ग्रन्थो केटलो परिश्रम मांगे छे ते स्पष्ट तरी आवे छे × × आवा ग्रन्थ नी कीमत एक रुपियो जरूर सस्ती लेखाय।"

८ ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह आपके कर-कमलोंमें विद्यमान है।

९ संघपति सोमजी शाह लेखक तेजमल बोथरा।

इसमें अहमदाबादके सेठ शिवा, सोमजीके आदर्श साहमीवच्छल व धर्म कार्योंका वर्णन बहुत ही रोचक और सुन्दर शैलीसे अंकित है।

निकट भविष्यमें ही खरतरगच्छ गुर्वावली अनुवाद एवं श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र आदि अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थ प्रकाशित होंगे।